|| ओम शान्ति || परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय

(A. I. V. V)

गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए भी,

कमल पुष्प समान पवित्र बनो ...।

5/26 A, सिकत्तरबाग,

जिला : फर्रूखाबाद - 209 625 (यू.पी)

फोन नं. : (05692) 228930

विषय — मुरली सेट, खंड-१

३०-३-६८ तारीख से

२-९-२००२ तारीख तक

आध्यात्मिक सच्ची गीता पाठशाला,

पता

मूल्य : रू. 75/- (रूपया पचहत्तर मात्र)

"अभी नहीं तो, कभी नहीं"

ॐ शान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

सृष्टि चक्र

स्वदर्शन चक्र सन. २००० में फिर से घूमा..... ।

१. सतयुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a)	सतो प्रधान	(४ साल)	१९६०-६१ से १९६४ तक
b)	सतो सामान्य	(४ साल)	१९६५ से १९६८ तक
c)	रजो प्रधान	(४ साल)	१९६९ से १९७२ तक
d)	तमो प्रधान	(४ साल)	१९७३ से १९७६ तक

(१९७६ + १ साल रूँग = १९७७)

२. त्रेतायुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a)	सतो प्रधान	(३ साल)	१९७८ से १९८० तक
b)	सतो सामान्य	(३ साल)	१९८१ से १९८३ तक
c)	रजो प्रधान	(३ साल)	१९८४ से १९८६ तक
d)	तमो प्रधान	(३ साल)	१९८७ से १९८९ तक

(१९८९ + १ साल रूँग = १९९०)

३. द्वापूर युगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a)	सतो प्रधान	(२ साल)	१९९१ से १९९२ तक
b)	सतो सामान्य	(२ साल)	१९९३ से १९९४ तक
c)	रजो प्रधान	(२ साल)	१९९५ से १९९६ तक
d)	तमो प्रधान	(२ साल)	१९९७ से १९९८ तक

(१९९८ + १ साल रूँग = १९९९)

४. कलियुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a)	सतो प्रधान	(१ साल)	२०००
b)	सतो सामान्य	(१ साल)	२००१
c)	रजो प्रधान	(१ साल)	२००२
d)	तमो प्रधान	(१ साल)	२००३

(२००३ + १ साल रूँग = २००४)

ॐ शान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

बाप के साकार पार्ट के प्रति ईश्वरीय महावाक्यों (मुरली या अ. वाणी) के प्रूफ एवं प्रमाण।

१. मुरली ०२-०९-२००२

a) प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढ़ेर बच्चे है। बाप हैं गरीब निवाज़। बाप कहते है मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें ही मज़ा है।

b) पूछो तुम्हारा बाप कहाँ गया ?

c) बाबा शुरू में बहुत सहज तोतली बाते सुनाते थे। बहुत बच्चे साधारण रूप देख मूँझते हैं।

d) साकार बिना निराकार को याद नहीं कर सकता।

२. मुरली १२-०३-९९

a) वह है रावण मत, यह है भगवान की मत।

b) मैं आता ही एकी बार हूँ। बाप कब प्रवेश करता है, किसीको पता नहीं पडता।

c) यह बेहद के बाप का घर है।

d) जिस तन में भी प्रवेश करता हूँ, उसका नाम ब्रह्मा रखना पडें। (मु. ८-३-८३)

२. e) प्रजापिता ब्रह्माकुमार, कुमारियाँ है। प्रजापिता अक्षर न डालने से मनुष्य मूँझते हैं। (मु. १०-६-८७, पृ.-१)

३. मुरली ६-११-९७

a) मैं सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा में प्रवेश नहीं करता हूँ।

b) उन्होंने त्रिमूर्ति ब्रह्मा का नाम रख दिया है।

c) सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे।

d) अब है ही नर्क तो जरूर पुनर्जन्म नर्क में लेंगे। संगम पर आत्मा परमात्मा मिल रहा है।

४. मुरली २५-०२-२०००

a) अल्फ और बे, इन्ही दो शब्दों में तुम्हारी सारी पढाई आ जाती है।

b) बेहद का बाप बेहद की बात समझाते है। माया दुश्मन सामने खड़ी है।

c) नर से नारायण बनना। गीता पाठशाला। शिव और शंकर को इकट्ठा कर दिया है।

d) बिन्दी का साक्षात्कार हो तो कुछ समझ न सकें। नाम रूप से न्यारी कोई चीज़ थोडेही होती है।

e) विनाश ज्वाला इस रूद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हूई है।

f) बेहद के बाप से बेहद की बादशाही मिलती है। गंगा पहाड़ पर थोडी आयेगी।

५. अव्यक्त वाणी २४-११-२०००

a) आज बापदादा अपना प्यारे ते प्यारे, मीठे ते मीठे छोटे से ब्राह्मण परिवार को ही देख र हे है।

b) बाप का प्रत्यक्षता। साकार ब्रह्मा मदर।

c) केवल चित्र को मत देखो, चरित्र को याद करो।

d) कहेंगे नहीं दादी आप समझती नहीं हो, यह माया नहीं है।

e) एड़वान्स पार्टी में पार्ट बजाएंगे अपना।

६. मु. १७-७-९८

a) उन्हें पहले-पहले सात रोज की भट्टी में बिठाओ।

b) मैं परमधाम से एकी बार आता हूँ। इस समय कोई पावन नहीं है।

b) बाप मनुष्य सृष्टि का बीज़रूप है।

c) प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान। तुमही पहले-पहले आये थे। अभी लास्ट में भी तुम हो।

d) बेहद के सन्यासी।

७. **मु. १६-९-९८**

a) फॉम भरना है। बहेद के बाप द्वारा बेहद का वर्सा लेना है।

b) जब पिता कहते हो तो उनका नाम तो लिखो। चित्र बहुत अच्छा है। दो बाप हैं। दोनों से वर्सा मिलता है।

c) झाड़ पर ले आओ। यहाँ तपस्य कर रहे हैं। इनसे यह लक्ष्मी नारायण बनते है।

d) साक्षात्कार से कोई कनेक्शन नहीं है।

e) अब वह रावण ने छीना हूआ है।

८. **मु. १७-१-२०००**

a) यह दादा माँ भी है। वह बाप तो अलग है।

b) ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा, फिर त्रिमूर्ती।

c) कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे।

d) बाप टीचर के रूप में बैठ तुमको समझाते है। साथ ले जाता है।

e) वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए।

f) सबको इस चक्र और झाड़ पर समझाना है।

g) सूक्ष्म वतन में तो नहीं आयेंगे।

९. **मु. १४-१-२०००**

a) यह तीसरा नेत्र तब काम करता है जब तक बाप से सच्ची प्रीत हो।

b) मूलवतन में नहीं जाना है।

c) त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है।

d) प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्मवतन में तो नहीं होगी।

e) सबजेक्ट एक ही है अल्फ और बे ।

f) त्रिमूर्ति दिखाते है परन्तू शिव को उड़ा दिया है। अब तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो।

१०. **अव्यक्त वाणी ७-२-९९**

a) बाप को भी तीन मूर्तियाँ द्वारा काम करना पडता है।

b) विदेशियों के पास माया नहीं आना चाहिए। विदेशी विनाश कार्य में विशेष निमित्त बनेंगे।

c) साकार और निराकार दोनों को प्रत्यक्ष करने का समय समीप आ रहा है।

११. **मुरली : ११-१२-२००१**

a) यहाँ सम्मुख तुम मुझे मात पिता कहते हो।

b) वह है सरस्वती बेटी। तुमको याद मुझे करना है। ब्रह्मा को याद नहीं करना है।

c) संगम पर कृष्ण की आत्मा जरूर है।

d) मुरली को कोई ५-८ बारी अच्छी रीति पढे तो ब्रह्मणी से भी ऊँची जा सकते हैं।

e) राधा-कृष्ण के माँ बाप।

f) सबसे बडे ते बडा गृहस्थ धर्म, मैं पालन करता हूँ।

१२. **मु. ३-११-९९**

a) मूरली कभी मिस नहीं करनी है।

b) देहधारी नम्बरवन है कृष्ण, उनको बाप, टीचर, सत्गुरू कह नहीं सकते। एक आत्मा को ही तीनों सर्विस इकट्ठी करनी है।

c) शरीर द्वारा ही नॉलेज देंगे ना।

d) सन शोज़ फादर। सबका चित्र रखना माना व्यभिचारी पूजा।

१३. मु. २-११-९९

a) ध्यान को कोई योग नहीं कहा जाता। भोग भी, डायरेक्शन अनुसार ही जाना है।

b) यहाँ इस समय कोई शरीर छोडते हैं तो इसी दुनिया में आकर जन्म लेते हैं।

c) ६० वर्ष के बाद प्रवेश करता हूँ।

d) सूक्ष्मवतन में जो कुछ भी देखते हो, सब है साक्षात्कार की बातें।

१४. मु. १५-५-२०००

a) जिसे सब पुकार रहे हैं, वह हमारा सन्मुख हैं।

b) मैं साधारण तन में आकर पतित से पावन होने का रास्ता बताते है।

c) भिन्न-भिन्न चित्र भक्ति मार्ग में है।

d) ड्रेस आदि सब वही है।

e) सन्यासी ब्रह्मा को ही भगवान समझते रहते।

f) ज्ञानी बच्चे साक्षात्कार आदि की बातों में खुश नहीं होंगे।

१५. मु. २३-६-९९

a) ट्राँस नही जाना है।

b) यह भोग आदि की ड्रामा में नूँध है।

c) याद करो,योग नहीं करना है।

d) तुम म्यूजियम खोलो।

e) यह सब है मनुष्य मत।

f) तुम है गुप्त वारियेंस। तुम आशिक हो एक माशूक के।

१६. मु. १७-११-२०००

a) कृष्ण तो बाप हो नहीं सकता। एक-एक बात में बहुत ही गुह्य राज भरा हूआ है।

b) देवी देवताओं को पूजा करके फिर डूबो देते हैं।

c) कोई कनवर्ट होकर चले जाते हैं।

d) यह प्रजापिता है, मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। समझने वाले ही समझेंगे।

e) अब शंकर क्या करता है ? यूगल तो वास्तव में बस विष्णु ही है।

f) अल्फ नहीं समझा है तो, बे को कुछ नहीं समझेंगे।

१७. मुरली : १९ -१२-२००१

a) निराकार को मुख जरूर चाहिए।

b) प्रजापिता ब्रह्मा को भी पिता कहते हैं। तो माता कहाँ।

c) ३० वर्ष वाले से भी मासवाले तीखे चले जाते हैं।

d) नाम राम का राईट है। लक्ष्मी नारायण 'आधाकल्प' विश्व के मालिक थे।

e) बेहद का बाप अपने बच्चों को ही समझाते है।

f) यह मेरा शरीर भी मुकरर है।

१८. मु. २०-११-८८

a) फरूखाबाद में मालिक को बहुत मानते हैं ना।

b) अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है। फिर 'रचना' में मुख्य है लक्ष्मी नारायण।

अ. वा. १८-६-२०००

c) झाड़ और बीज के बारे में इशारा

d) पंजाब के बारे में इशारा।

e) स्टेज पर आओ तो आबूवाले कैसे आपके पीछे पीछे पडते है।

१९. मु. १३-११-९५ (कटिंग मुरली)

a) प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ चाहिए ना।

b) विश्व तो इस दुनिया को ही कहा जाता है। पवित्र होते ही है सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आयें।

(बाकी भाग मु. १५-१०-६९ से कट किया हूआ है।

मुरली १५-१०-६९ (ओरिजिनल मुरली)

c) पवित्र कन्या के तन में आयें परन्तू कायदा नहीं है।

d) पहले पहले बाप का निश्चय बैठना चाहिए।

e) साधारण तन।

f) अगर यहाँ आकर बैठ जाएँ, यह तो सन्यासियों का ज्ञान हो गया।

२०. मु. १७-४-९२

a) पहले ७ रोज़ भट्ठी में पडना पडे। ७ दिन कोई की याद न आये।

b) ऐसे नहीं बुदबुदे मिसल आत्मा परमत्मा में लीन हो जायेगी। ये सब झूठ तो बिलकुल झूठ है।

c) अभी तुम भी देते हो तो बाबा भी रिटर्न में देते हैं।

मु. १७-२-८६

d) तुम्हारा सब कुछ गुप्त है। प्रव्रतिमार्ग वालों को मालूम है कि भगवान किसी न किस रूप में यहाँ आयेंगे ज़रूर।

e) तुम बुद्धि से समझते हो 'इनमें बाबा ने' प्रवेश किया है हमको यह राज्य भाग्य देने। कपडे आदि सब वही हैं।

f) ऋषि मुनि आदि को रचयिता और रचना को नहीं जानते हैं और कहते है परमात्मा मेरे में भी है, तेरे में भी है। सन्यासी समझते हैं ब्रह्म की याद में रहने से शरीर छोड़ने से बह्म में लीन हो जायेगा।

g) ऐसे नहीं की ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखायेंगे। प्रेरणा अक्षर है नहीं।

h) शंकर की प्रेरणा से विनाश कहा जाता है। स्थापक को भी गुरू कह देते हैं।

i) मैं कोई उन्हों को पुकारने पर नहीं आता हूँ। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ। वर्सा देनेवाला एक ही बाप ठहरा। भाई, भाई को वर्सा दे नहीं सकते।

j) ऐसे नहीं बाबा का आवाहन करते हैं। नहीं बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते।

२१. अ. वा. १०-५-९८

a) लास्ट बाम्ब है परमात्मा प्रत्यक्षता का (बाप की प्रत्यक्षता)।

b) ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हूआ है।

c) जब तक बाप की सम्पूर्ण प्रत्यक्षता नहीं हो जाती तब तक बच्चों और बाप का मिलन तो होना ही है। लेकिन चाहे व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन और चाहे अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन, लेकिन मिलन तो अन्त तक है ना? (अ. वा. १०-१०-९४ रिवाइज २१-०७-७३)

२२. मु. २-१०-९९

a) रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते है।

b) बाप आते ही हैं पतित से पावन बनाकर घर ले जाने। योग सन्यासियों का है।

c) सन्यासियाँ ब्रह्मा को ही याद करते हैं। वो ड्रेस ही बदल लेते हैं।

d) सीढ़ी के चित्र तुम्हारे (ब्राह्मण दुनिया) ऊपर ही बने हूए हैं।

e) मैं कल्प-कल्प संगमयुम में आता हूँ।

f) स्लोगन

२३. <u>मु. २७-१-९९</u>

a) इस पढ़ाई में और <u>उस जिसमनी</u> पढ़ाई में सबजेक्ट बिल्कुल अलग है।

b) गृहस्थ व्यवहार में रहकर ज्ञानयोग में, 'अन्दर वालों' से भी तीखे जा सकते हैं।

c) बाबा की आत्मा और इनकी आत्मा इकट्ठी है।

d) रूद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है।

e) इन लक्ष्मी-नारायण में देखो कितनी सयापन है। प्रदर्शनी द्वारा प्रजा तो बहुत बनती है।

f) अभी करनहार और करावनहार कम्बाइन्ड हो गया।

२४. <u>मु. २१-८-९९</u>

a) यह ब्रह्मा को याद नहीं करना है।

b) राधे-कृष्ण,अलग-अलग महाराजाओं के बच्चे हैं।

c) तुमही इस ज्ञान से नर से नारायण बनते हो।

d) ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल में बाप आकर पढ़ाते है।

e) लक्ष्मी नारायण के बच्चे थे (मु. २३-७-९९)

२५. <u>मु. ५-२-९७</u>

a) जिन द्वारा रचना करता है उसको कहा जाता है मात-पिता।

b) यह मुरव्बी बच्चा (ब्रह्म भी) ग्लानी करता था।

c) इस यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है।

d) गुरू ब्रह्मा कहते हैं।

२६. <u>मु. १६-४-९९</u>

a) जगतजीत यह लक्ष्मी नारायण है।

b) मैं खुद डायरेक्ट आया हूँ। कुम्भ के मेले आदी बुहत लगाते हैं।

c) बेहद के बाप सिवाए बेहद के बातें ओर कोई समझा नहीं सकता।

d) परन्तु <u>इन तीनों</u> में से भगवान किसमें प्रवेश करते है, अर्थ नहीं जानते।

२७. <u>अव्यक्त वाणी ९-६-९७ (रिवाईज - २४-५-७७)</u>

a) आप आत्मायें डायरेक्ट बच्चे हो।

b) विदेश से तो नाम निकलेगा, लेकिन पहूँचेगा दिल्ली में (क्यों कि दिल्ली सेवा का आदि स्थान है)।

c) यज्ञ की स्थापना का कार्य में दिल्ली वाले बहुत काम मे आयेंगे।

d) जब विनाश शुरू हो जायेगा फिर समझेंगे जरूर कहीं भगवान गुप्त वेश में है। (मु. १५-८-९२, पृ.-२)

e) यह है राजयोग से सन्यास। वह है हठयोग से सन्यास। तुम गोप-गोपियाँ हो। वह मुरली टेप में भरती होगी।

f) २१ जन्मों के लिए प्रालब्ध देने के बाद, बाबा भी परमधाम जाकर बैठ जाता है।

g) बाप है राम पण्डा।

२८. <u>मुरली १७-८-९९</u>

a) भगवान कहते है <u>वह</u> बाप है, हम बच्चे हैं।

b) ब्रह्मा का रात और दिन माना ब्राह्मणों के लिए भी है।

c) ऊपर जाना माना मरना।

d) तुम कहेंगे हमारा मम्मा बाबा की पाठशाला है।

e) बाप कहते है मैं जिस तन में आया हूँ, उनको भी नहीं जानते।

२९. **<u>मुरली ६-५-९२</u>**

a) बाप कहते है भल घर में रहो परन्तू पवित्र बनो। (मु. ६-५-९२)

b) बाप महलों में रहते ? (मु. ६-५-९२)

c) इनमें कुछ भी हो जाता है, बाबा रेस्पोनसिबुल हैं। (मु. २५-१-८५)

d) एक को ही पैसा के लिए पकड लिया। रावण तुमको एकदम बेसमझ बना दिया।

e) मैं पतित दुनिया, पतित शरीर में आता हूँ। तत् त्वम (मु. ४-१०-८६)

f) सर्प का मिसाल देते हैं।

g) ब्रह्मा के सँकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हूआ ? रूह रूहान करना। (अ. वा. १-१-७९)

h) बाप को प्रत्यक्ष करने वाले रूहानी सौशल वर्कर ग्रूप अभी पर्दे के अन्दर है। (अ. वा. १-१-७९)

i) डबल विदेशी बच्चों में कई ऐसे रतन है जो बापदादा गले के मणके है (रूद्रमाला) (अ. वा. १-१-७९)

३०. **<u>मुरली २-१२-८४</u>**

a) बाप आकर तुमको अपना परिचय देते हैं। बाप की ड्यूटि है नई दुनिया स्थापन करने का।

b) बाप कैसे, कहाँ जाता है, किसको कुछ पता नहीं। तुमजानते हो मगध देश में आते है। जहाँ मगरमछ होते हैं।

c) अभी एक दो वर्ष के अन्दर हाहाकार हो जायेगा।

<u>मुरली ११-१०-८७</u>

d) बाप की भी सर्विस का पार्ट बजाते तो टीचर का भी पार्ट बजाते तो सतगुरू का भी पार्ट बजाते है।

e) सन्यासी प्रवृत्ति मार्ग नहीं बना सकते है।

f) पुरानी जूत्ती है ना। राम फेल हूआ तो ३३ से कम मार्क्स मिला।

g) अब पूछता हूँ - स्वदर्शन चक्र कौन सा है ? जगत अम्बा का पिता कौन है ? वो किसको पता नहीं है।

h) मात-पिता जो गाते है वह ब्रह्मा-सरस्वती को नहीं कह सकते।

<u>मुरली ११-११-९८</u>

i) रूद्र माला के नज़दीक हो।

j) वह तो है ही मुरलीधर पर यह बाबा भी जानता है ना।

k) सन्यासी लोग भी जागेंगे।

l) स्वर्ग स्थापन करनेवाले बाप की शरणागति ली है।

३१. **<u>मुरली ४-३-८८</u>**

a) गीता को भगवान कृष्ण को कर दिया-'पिताश्री'। (मु. ४-३-८८)

b) इतने बच्चे सिवाए प्रजापिता ब्रह्मा के और किसीके होते नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा जो होकर गये है। वह इस समय प्रजेन्ट है। (४-३-८८)

c) वह कैसे होते है देखो इन लक्ष्मी नारायण को। ८४ जन्म वही लेते है जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है (मु. ४-३-८८)

d) मम्मा बाबा भी जायेंगे, अनन्य बच्चे भी एड्वान्स में जायेंगे। (मु. १०-११-८८)

e) स्कूल खोलना गवर्मेन्ट का काम है।

f) कुमारका बताओ बाबा को कितने बच्चे हैं। राईर्टयस बच्चे दो हूए, 'ब्रह्मा और शंकर।'
ब्रह्मा के तन से बाप ब्राह्मणों से ही बात करते है। **(यह वाक्य रिवाइज़ मुरली २१-५-२००२, पृ.-३ में कट किया है)**

g) उस तरफ हैं रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना।

h) यह प्रजापिता ब्रह्मा है, सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। हम ब्र. कुमार कुमारियाँ साकार में है तो प्र. ब्रह्मा भी साकार में होना चाहिए (मु. ३-११-८७)

i) पहले-पहले पावन है यह ल. ना.। यह व्यक्त ब्रह्मा - वह अव्यक्त ब्रह्मा सूक्ष्मवतन में सृष्टि नहीं रची जाती है (मु.. ३-११-८७)

j) कलियुग में संगम पर आत्मा परमात्मा मिल रहे है (३-११-८७)

३२. <u>मुरली ६-१०-८८</u>

a) अब वह मातपिता कौन है ? पिता है तो जरूर माता भी होना चाहिए। नहीं तो बाप क्रियेट कैसे करें।

b) पहले है परमपिता परमात्मा रचता। ब्रह्मा विष्णु शंकर को रचते है। ब्रह्मा द्वारा विनाश भी करता है।

c) बाप तो खुद है फिर इन द्वारा एडाप्ट करते है तो यह बड़ी माता हो गई।

d) इस बेहद के झाड का जब तक बाप न आकर समझाए तब तक कोई समझा नहीं सकते। श्राप कौन देते माया रावण।

e) भारत हैं परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस। मैं कालों का भी काल हूँ। इन कालों को बतलाने वाला बेहद का बाप ही है। (मु. ३-६-९२)

f) सबका मनोकामनायें पूरी करने वाली - जगत अम्बा है। जगत की माता - जगत अम्बा, और विश्व की महाराणी लक्ष्मी को कहा जाता है। (मु. ३-६-९२)

g) सभी आत्मायें 'उस बाप' को याद करते हैं। भक्ति मार्ग में भी साक्षात्कार करते है। (मु. ३-६-९२)

h) जिन्हों का आदि से यही संकल्प हैं कि साथ जीयेंगे,साथ मरेंगे किसी भिन्न संबन्ध में साथ रहेंगे, वायदा किया हूआ हैना। (अ. वा. १-१-७९)

i) फर्रूखाबाद में एक पंथ है - जो एक मालिक कहते हैं। (मु. १९-६-९२/२८-६-०२ - **कटिंग मुरली**)

j) पतित पावन सीताराम। वह गंगा तो चलती आयी है। यही समझानी है कि परमपिता से तुम्हारा क्या संबन्ध है। (मु. २२-१-८७)

k) फरूखाबाद में बच्चियाँ तो है, वहाँ तो मालिक को मानते हैं। (मु. २-१-८७)

l) शिवबाबा ऊपर में तो है नहीं। तुम बच्चों को ऊँच बनाने के लिए मधुबन में इनके तन में है। तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे। भक्त लोग ऊपर में याद करेंगे। (मु. २९-११-८४)

m) बाप आकर वेराइटी झाड का राज समझाते है। (मु. २९-११-८४)

३३.

a) पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। मैं सुक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा द्वारा प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहाँ पतितों का पावन बनाना है। त्रिमूर्ति चित्र दिखाने बिगर समझाना मुशिकिल है। (मु. ३-११-८७)

<u>मुरली १९-२-२०००</u>

b) बाप एक ही बार आते हैं, उनको यथार्थ रीति जानकर याद करना है।

c) रचता द्वारा ही रचना को जाना जा सकता है।

d) बाप कहते है हम तो आते है पतितों को पावन बनाने।

e) यहाँ शास्त्रों की बात नहीं, ब्राह्मण धर्म को कोई किताब है क्या ?

३४. <u>मुरली – २१–१–२०००</u>

a) विकार दृष्टि वृत्ति नहीं करना है। नारी से लक्ष्मी, नर से नारायण बनेंगे।

b) बाप को पहचानते हो तब तो यहाँ बैठे है ना।

c) बाप जब तक साकार में न आयें तब तक बाप से वर्सा कैसे मिलें ?

d) बि. के को मत जाँच करनी होती है।

e) पुराने दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना अभी हो रही है।

३५. <u>मुरली : २९ –३–२००२</u>

a) इस जन्म में हम विश्व के मालिक बनेंगे। हम जिनके बने हैं उससे वर्सा पाना है।

b) बेहद के माँ बाप को कभी छोड़ना नहीं चाहिए।

c) अभी प्राक्टिकल में पार्ट चल रहा है।

d) हमको वाणी कट करके भेज देते हैं।

e) टू, लेट बोर्ड।

३६. <u>मुरली १३–५–९९</u>

a) यह स्कूल वा बड़ी यूनिवेर्सिटी है। वह है बेहद का बाप।

b) तुम अपने धर्म को भूल कितने धर्मों में घुस पडे हो। इसमें रावण का राज्य है। रावण को देखा है ?

c) ब्रह्मा किसका बच्चा ? शिवबाबा का। तुम जानते हो बाप भी है और बड़ी मम्मा भी तो यह है।

d) मैं कोई छोटे बच्चे का आधार नहीं लेता हूँ (बच्चा बुद्धी)।

e) रूहानी बाप रूहानी बच्चों से ही बात करते है।

f) तुम बन्दरों की सेना लेता हूँ, रावण पर जीत पाने के लिए।

३७. <u>मुरली २१–३–९९</u>

a) बाप कहते है मैं आता भी वानप्रस्थ अवस्था में हूँ। कोलेजों भी बहुत खराब हो पडते हैं।

b) बाप तो बिल्कूल साधारण है। ड्रेस आदि सब बही है।

c) बाकी धर्मों का विनाश होना हैं। माया कहती है हम भी कम नहीं।

d) गृहस्थ व्यवहार में रह पवित्र बनना है।

३८. <u>अव्यक्त वाणी २–५–९९ रिवाइज २५–१–८०</u>

a) दो प्रकार के आत्मायें हैं।

b) डबल फॉरेनर्स और गुजरात की, डान्स करने में राशि एक ही है।

c) 'एडवान्स पार्टी' तो <u>साकार शरीर द्वारा</u> सेवा कर रहे हैं।

d) स्लोगन

३९. <u>मुरली ४–५–२०००</u>

a) भक्ति के कनेक्शन रावण के साथ। ज्ञान के कनेक्शन राम के साथ।

b) शंकर जन्म-मरण से न्यारा है। इसलिए शिव और शंकर को मिला दिया है।

c) परन्तू ब्रह्मा के पीछे क्या हिस्ट्री - जॉग्राफी है, यह कोई नहीं जानते।

d) इनको मेला कहा जाता है। सेन्टर्स पर तुम जाते हो वहाँ कोई आत्मांओं, परमात्मा का मेला नहीं कहेंगे। पहले स्थापना, विनाश फिर पालना।

e) लक्ष्मी, महालक्ष्मी, जगत अम्बा के बारे में इशारा।

f) यहाँ ३ से ५ बजे तक आकर बैठो। बाबा भी आ जायेंगे। यह भी सीखनेवाला है तो दोनों बाप और दादा आ जायेंगे। फिर यहाँ और वहाँ योग में बैठने के फर्क भी पता पडेगा।

४०. **मुरली १-१२-२०००**

a) बाप है बहुत साधारण। बाप जो है, जैसा है उनको जानने में बड़ी बुद्धी चाहिए।

b) शिवबाबा हम आत्माओं का बाप है ना। मैं गरीब निवाज़ हूँ। यहाँ तुम सम्मुख बैठे हो।

c) नर से नारायण बनने की। अमरपुरी जाने की।

d) मात पिता बापदादा। रूहानी बाप।

४१. **मुरली ८-६-९९**

a) सृष्टि चक्र को जनने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे।

b) वेदान्ती बच्ची के बारे में।

c) तुमको चित्र रखने की दरकार नहीं है। तुम आते हो बाप से वर्सा लेने।

d) उनको याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बीच में यह भी है।

४२. **मुरली २७-६-९३**

a) 'पिताश्री'। कोटों में कोई, कोई में कोई बाप को समझते है।

b) जिसके लिए तुम गाते थे - तुम मात पिता उनके सम्मुख तुम बैठे हो।

c) अच्छे-अच्छे फ़स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरेक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे। आज वह है नहीं।

d) गीता में सिर्फ नाम बदल दिया है। संगम होने के कारण यह भूल कर दी है।

e) जगत अम्बा आदि देवी कौन है ? मालूम तो होना चाहिए ना।

f) इस रूद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हूई है।

४३

a) सिवाएं ब्रह्मा, बाप और जगदम्बा के। सब सीट खाली है। कोई भी ले सकते हैं। (अव्यक्त वाणी २५-११-९५)

मुरली १४-५-९४

b) जो मम्मा - बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे, डायरेक्शन देते थे .... ।

c) मनुष्य सृष्टि का सबसे पहला पन्ना है प्रजापिता ब्रह्मा।

d) मैं वानप्रस्थ अवस्था में इनमें प्रवेश करता हूँ।

अव्यक्त वाणी २-४-२००० रिवाइज़ १-११-८१

e) यु. पि. को साकार और निराकार, डबल लाटरी मिली है।

f) अभी एकदम बड़ा वी.आई.पी. नहीं निकला है। ऐसे कोई वी.आई.पी., यू.पी. का लाओ।

g) संगठन की शक्ति को बढ़ाना यह ब्राह्मण जीवन का पहला श्रेष्ठ कार्य है।

४४ **मुरली १२-५-९८**

a) गीता खण्डन होने से सभी मनुष्य आत्माओं का बुद्धियोग परमात्मा से टूट गया है।

b) बाबा रस्सी खीच लेते है। अब तो बाप सम्मुख है। बाप - टीचर - सतगुरू से अपना वर्सा लेने का हक हर एक को है।

c) बाप एक ही बार सम्मुख आकर बादशाही देते हैं।

४५. **मुरली २४-५-९९**

a) वह कहते हैं मैं परमात्मा हूँ, यह कहते मैं आत्मा हूँ।

b) दिलवाले मंन्दिर में प्रजापिता ब्रह्मा बैठा है ना।

c) सारे झाड़ का राज़ तुम्हारी बुद्धि में बैठ गया है।

d) अल्फ और बे, रचयिता और रचना है (इशारा)

e) रावण और राम का खेल है। नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं।

f) शिवबाबा वह है बेहद का बाप।

g) मैं आया हूँ आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन लगाने। माला के दाने तुम अनन्य बच्चे बनते हो।

४६. अव्यक्त वाणी ११-११-२०००

a) पैदा होते ही बाप के वर्सा के अधिकारी बन गये। क्योंकि बाप पतितों को मिलने के लिए आये है।

b) शिव के साथ शक्तियाँ, पांडव प्रत्यक्ष हो गये। पर्दे में कहाँ तक रहेंगे।

c) सी ब्रह्मा मदर। मन है मुख्य मन्त्रि।

d) डबल विदेशी मेहमानों से आप भी कोटों में कोई निकलेना।

४७. मुरली १-११-२०००

a) रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते है।

b) बाप है आत्माओं का। इस समय ब्राह्मण कुल में प्रजा पर प्रजा का राज्य चलता है।

c) बच्चे बाप का जीवन न जानें तो वर्सा कैसा मिलेगा। तुम अभी डायरेक्ट प्रजापिता ब्रह्मा के रन्तान बने हो। हाहाकार के बाद जयजयकार होनी है।

d) त्रिमूर्ति अक्षर भी जरूर लिखना है और प्रजापिता अक्षर भी जरूरी है क्योंकि ब्रह्मा नाम तो बहुतों के हैं।

e) इस चित्र को (लक्ष्मी-नारायण के) बहुत महत्त्व देना है। चित्रतो बदलते जाते हैं।

f) कृष्ण तो है सतयुग का प्रिन्स। सतगुरू को छोड़ वह फिर गुरू कह देते।

g) मैं गरीब निवाज़ हूँ। ईश्वर अर्थ दान पुण्य करते हैं तो उसका रिटर्न इस ही सृष्टि में मिलता है। डायरेक्ट और इनडायरेक्ट में कितना फर्क है।

४८.

a) अभी मैं आया हूँ तुमको ले चलने। घर चलना है परन्तू पवित्र भी जरूर बनना है। (मु. १७-९-६८)

b) प्रजापिता ब्रह्मा भी १०० वर्ष के बाद चले जाते है। बाप आते हि है ६० वर्ष के बाद। तो ४० वर्ष बाप बैठ समझाते है। (मु. १७-९-६८)

c) बाप आये है पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाने। पावन दुनिया है ही 'दो'।
मुक्ति और जीवनमुक्ति। (मु. १७-९-६८)

मुरली ५-१-७७

d) वो है ऊँच ते ऊँच। अमरनाथ अथवा शंकर है वो शिवबाबा। ब्रह्मा के बाप है शिव। जब तक मनुष्य तन न ले तो ज्ञान सुनाये कैसे ?

e) मात पिता नालेज दे रहे हैं। गोड़ तो एक है। ब्रह्मा गोडेज है।

f) बाप सम्मुख बैठे है। परमात्मा ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है।

g) सन्यासियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का ला नहीं।

h) बाबा वीरेन्द्रदेव दीक्षित के बारे में स्पेशल सूचना।

i) राम राज्य बनाने का काम केवल बाप का ही है। वह ल. ना. विश्व के मालिक कैसे बनें। (मु. ३०-३-६८)

j) पारलौकिक बाप हो गया आत्माओं का बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है एडाप्टेड बाप। (मु. ४-९-६८)

k) रावण तुम्हारा पुराना दुश्मन है। पतित पावन सीताराम, कृष्ण को पतित पावन नहीं कहेंगे। (मु. ४-९-६८)

<u>मुरली १३-९-६८</u>

l) ८ वर्ष कोई बड़ी बात थोडेही है सारी दुनिया विनाश होना है। सबसे पुराने शिव का लिंग है। पुराने से पुराने किके रामचन्द्र के मिलेंगे। —**(अर्थात् १९६६ में किये हूए १० वर्षीय घोषणा के इशारा)**

m) इतनी छोटी बिन्दी का तुम साक्षात्कार क्या करेंगे। पहले और अब की समझानी में कितना फर्क है।

n) बाप आये है हमको रामराज्य ले जाने। पिछाडी में लड़ाई इन्हों की लगनी है।

o) म्युजियम में (चैतन्य) समझाना बहुत पड़ता है। तुम सेना ही हो गुप्त। समय है थोडा। ६-८ वर्ष।

४९. मुरली ४-११-९९ **(विनाश की घोषणा - ६८ की वाणी)**

a) वह भी जब तक शरीर का आधार न लें तब तक पढ़ा नहीं सकते। उनमें प्रवेश कर पार्ट बजाता हूँ।

b) भक्ति का भी पार्ट है, ज्ञान का भी पार्ट है।पतित ही भगवान से मिलते है।

c) साक्षात्कार को कहा जायेगा अल्पकाल क्षण भंगुर सुख।

d) बाप से एक ही बार ज्ञान का वर्सा मिलता है। घडी-घडी नहीं मिल सकता।

e) मैं बीज़रूप, चैतन्य ज्ञान का सागर हूँ। मुख्य गपोड़ा बहुत खराब है।

f) बाप यहाँ आया हूआ है तो तुम ऊपर में नहीं समझते हो। अज्ञान लोग ऊपर समझते हैं। कहाँ भी तुम बैठे होंगे तो भी ब्रह्मा के तन में ही याद करना पडें।

g) बाप इस संगमयुग पर ही कल्प-कल्प आते है। आकर इस वराईटी झाड़ का और चक्र का राज समझाते है।

५०.

a) जो बाबा कहते है, उस एक २ बात को धारण करने वाली ही पद्मापदम भाग्यशाली बनते हैं।

<u>मुरली १६-१०-८४</u>

b) बच्चा जन्म लेता है तो पहले बाप से योग लगना है। फिर टीचर से। तो उनसे योग लगाना पड़े ना।

c) बाप कहते है मैं इन शरीरों को ६० के बाद वानप्रस्थ अवस्था में थोडा समय के लिए लोन लेता हूँ।

d) मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है। जब नालेज देते है। मैं शिव कब कैसे आता हूँ। वो किसको पता नहीं है।

e) ब्रह्मा की आयू मृत्यूलोक में खत्म होगी। कोई कोई लव से भी बच्चे को बाबा कह देते हैं। जैसे तुमने कृष्ण (बच्चा बुद्धि) को कह दिया है।

<u>मुरली १८-१२-८४</u>

f) बाप इस शरीर द्वारा समझाते है, इनको दादा कहा जाता है। यह निश्चय बच्चों को बहुत पक्का होना चाहिए।

g) एक ज्ञान सागर के पुस्तक ही एक होनी चाहिए।

h) वह है सभी आत्माओं का बाप। यह फिर है सभी मनुष्यात्माओं का बेहद का बाप। नाम है प्र. ब्रह्मा। ब्र. वि. श. इन तीनों का तो बाप कोई होगा ना।

i) बाप चैतन्य मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है।

j) वास्तविक दाता का दर अपना घर तो मधुबन है ना। हेड आफिस,माऊण्ड आबू है तो वहाँ रहते हो वह क्या हूई ? यहाँ भी ३-४ बार भोग लगता है। (अ. वा. ११-१-८५)

५१. <u>मुरली २५-९-९८</u>

a) तुम रूद्र ज्ञान यज्ञ में बैठे हो। रूद्र शिवबाबा तुम्हें सुनाते हैं।

b) रूद्र कौन है ? परमपिता परमात्मा के सिवाए ज्ञान का तीसरा नेत्र कोई दे नहीं सकता।

c) रूद्र ज्ञान यज्ञ रचने के लिए जरूर शरीर धारण करना पड़ेगा। दादा प्रजापति के बारे में इशारा।

d) इस रूद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला प्रज्वलित हूई है। वहाँ शान्ति का बड़ा आवाज़ करते हैं।

e) बड़ों बड़ों को बोलो यह तुम जो यज्ञ रचते हो, उसमें भूल है। उन ब्राह्मणों को तो अनेक सेठ होते हैं। यह तुम ब्राह्मणों का एक ही सेठ है।

f) सिर्फ अर्पणमय होने से क्या फायदा ? लेकिन वह कनवर्ट हो गये हैं तो कैसे निकलें।

g) प्र. ब्रह्मा भी तो ज़रूर यहाँ होगा ना। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा का थोडेही दिन और रात बतायेंगे। जरूर स्वर्ग की राजाई देनेवाला होगा।

h) बिगर आरगन्स आकर क्या करेंगे ? तुम बच्चे बापदादा के सामने बैठे हो।

i) तुम निराकार की गोद में जाकर दिखाओ ? निराकार की साथ खाओ, पियो। तुम इनके पास क्यों आते हो ?

j) आवेंगे तो पतित दुनिया पतित शरीर में। हम आत्माओं का बाप सामने बैठे है (मु. २५-४-७७)। जो यहाँ से शरीर छोडकर जाते हैं फिर आवेंगे बाप से वर्सा लेंगे। मिलेंगे भी (मु. २५-४-७७)

k) रावण क्या चीज़ है ? दुनिया में कोई नहीं जानते। तुम बच्चों को बाप-टीचर-सतगुरू तीनों से इकट्ठा वर्सा मिलता है। (मु. ३१- ३-७७)

l) याद इसको नहीं करना है। पहले इनमें प्रवेश कर इनको पावन बनाता है। (मु. ३१-३-७७)

५२. <u>मुरली २४-८-२०००</u>

a) रूहानी बच्चों से रूहानी बाप रूहानी बात समझाते है।

b) भारत ही रेस्पोन्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने। रावण का राज्य सारी बेहद की दुनिया पर है।

c) बीज़ और झाड़ की नॉलेज होगी ना। बाप आते ही है जब मौत सामने होता है। सुदामा का मिसाल।

d) इतने ढ़ेर बि. के हैं। तुम भी बि. के हो। प्र. ब्रह्मा के भी बच्चे हो।

e) तुम एक दिन देखेंगे - एक एक पण्डा अपने साथ १००-२०० यात्री भी ले आयेंगे।

५३. <u>मुरली २७-९-९७</u>

a) यह बेहद के रावण की लंका है जो विनाश होनी है। इनको (भारत को) अविनाशी खण्ड कहा जाता है।

b) यह विनाश ज्वाला इस यज्ञ से प्रज्वलित हूई है। लडाई शुरू यहाँ से ही हूई है।

c) बाप कहते है महामूर्ख देखना है तो यहाँ देखो। कहाँ तो हमारी २-४ हज़ार मुरलियाँ, हाँ उन्हें की करोडों के अन्दाज़ में गीतायें।

d) यह भी तुम समझ गया कि शंख, चक्र, गदा, पदमधारी .... तुमको क्यों कहते हो।

e) बाबा एक दो बजे उठकर मुरली लिखते थे।

f) त्रिमूर्ति भी बहुत बड़ा होना चाहिए। हम तो यहाँ बैठे हैं, चित्र बहाँ बन रहे है।

५४. <u>मुरली ९-२-२०००</u>

a) यह जो सब बच्चे हैं सब तो ८४ जन्म लेने वाले नहीं है।

b) ८४ के सीढ़ी का राज़ कोई समझा न सके सिवाए निराकार बाप के।

c) तुमको दो फादर है। सी फादर,मदर और अनन्य ब्रदर्स, सिस्टर्स। बाप का वर्सा,टीचर का वर्सा और गुरू का वर्सा सब देते हैं।

d) अन्धे की औलाद अन्धे अज्ञान नींद में सोये पड़े है।

५५ <u>मुरली २२-३-९९</u>

a) शरीर बिगर आत्मा को नहीं याद किया जा सकता। बाबा इनके शरीर में बैठा है तो ज़रूर शरीर याद आयेगा।

b) शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा ? शिवबाबा परमधाम जाकर क्या करेंगे ?

c) बाप है टीचर, टीचर को तो रोज़ पढ़ाना है। कोई तो निमित्त तो होगा। वह है रावण।
d) सन्देशियों को भक्तों को साक्षात्कार कराना पड़ता है। है तो यहाँ ही।
e) शान्ति का सागर तो एक बाप ही है, वह साथ ले जाते हैं।
f) बड़ी बिल्डिंगस आदि होंगी तो अवश्य याद पडेगी। मुक्तिधाम में जाने वालों के लिए वृहस्पति की दशा नहीं कहेंगे।

५६.

a) रचता बाप के परिचय, रचना के विस्तार की प्वाईन्टस स्मृति में रखो।
b) बंगाल जोन में गरीब भी है और भोलेनाथ के भोले भी है। साकार तन को ढूँडा भी यहाँ से ही है। तो स्थान की विशेषता रही ना।

<u>अव्यक्त वाणी १७-११-९४</u>

c) आज बापदादा अपने प्यार स्वरूप बच्चों से मिलन मना रहे है। बाप स्वयं भी साधारण तन में आते है।
d) लेकिन सभी का वायदा यह है कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे - यही वायदा है ना ? साथ हैं और साथ रहेंगे। 'पता नहीं का संकल्प' कभी नहीं करना।
e) आगे चलकर वृद्धि होगी तो बदलेगा ना।
f) आबू में सबका याद प्यार देने के लिए पाँच मुखी ब्रह्मा है। एक मधुबन है दूसरा ज्ञान सरोवर है।
g) बाप को जानने के साथ-साथ जिसको पाना था वो पा लिया। आप श्रेष्ठ आत्मायें डायरेक्ट मुख द्वारा सुनते हो। अलौकिक मात-पिता के डायरेक्ट बच्चे हो। **(पुराना अव्यक्त वाणी)**

५७.

a) ३६ प्रकार के भोजन भी मधुबन वालों को बार-बार मिलते है। जहाँ माल-ठाल ३६ प्रकार के भोजन मिल सकते वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। मैं बन्दरों की महफिल में आता हूँ।
b) बाप यहाँ सम्मुख आकर यह सब बाते सम्मुख समझाते है।
c) यह जानते है क्राईस्ट को इतना समय हूआ। बाप कब ज्ञान देते, पूरा कब होगा सभी याद है।
d) सन सोज़ फादर। अरे परमपरा से रावण होता ही नहीं।
e) मैं साधारण बुड़े तन में आता हूँ।
f) यह है सच्ची गीता पाठशाला तो इसमें सिद्ध है कि बाकी सब झूठ है।
g) हमारे में शिव बाबा आते है यह आते हैं वो सब है माया की प्रवेशता।
h) प्र. ब्रह्मा तो मशहूर है। प्रजा तो यहाँ ही होगी ना।
i) बाप तो आते है पढ़ाने के लिए। सभी को वापस ले जाने के लिए आया हूँ।
j) ज्ञान सूर्य और ज्ञान चन्द्रमा विशेष सितारों को देख रहे हैं।
k) बाप के साकार रूप और प्रत्यक्ष होने के इशारे।
l) ऐसा कालेज कब देखा जहाँ 'एडवांस' बतावे कि तुम यह बनेंगे। जब बहाँ एक भी नहीं रहता है, तब फिर चले जाते है।
m) आत्माओं की है रूद्र माला।
n) पहले पहले बाप का पूरा निश्चय हो। रचयिता और रचना को न जानने के कारण 'नेती नेती' कर देते हैं।
o) बाप कहते है बहुत जन्मों के अन्त में जब वानप्रस्थ अवस्था में जाने का समय होना है तब मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। सबको भी ले जाते है।

५८. <u>मुरली ३-१२-९८</u>

a) मूलवतन और सूक्ष्म वतन में कोई ड्रामा नहीं है। अब स्वयं भगवान हमें मिला है।
b) सर्वशक्तिमान बाप के बनते हैं तो माया भी सर्वशक्तिमान होकर लड़ती है।

c) हम कोई दूर थोडेही है। हम तो यहाँ बैठे हैं। यहाँ प्राक्टिकल में बैठे हैं। अब भगवान स्वयं आकर मिला है।

d) बच्चा बना तो बाप डायरेकशन देंगे। पहले तो एक हफ्ता भट्ठ में बैठो।

e) पढ़ानेवाला एक ही है, एक ही पढ़ाई है, एक ही इम्तहान है। आगे चलकर बहुत कुछ पता लग जायेगा।

f) तुम राम की सेना बैठे हो। अब यह रावण की नगरी को आग लगनी है।

g) बाप है है गरीब निवाज़। दान गरीब को दिया जाता है।

५९.

a) बाप को भी भोलानाथ कहते हैं ना। (मु. २-३-८७)

<u>मुरली (९-१२-८७)</u>

b) जो आत्मा दूसरे के शरीर में आता है, फिर उनका नाम होता है।

c) धर्म राज भी शरीर धारण करके सज़ा देंगे।

d) बाबा दूर थोडेही है। हमेशा पहले स्थापना फिर विनाश फिर पालना ऐसा कहना चाहिए।

e) बाप तो गरीब निवाज़ है ना। ब्रह्मा से सेकण्ड में श्री नारायण बन जाते है।

f) एक है आत्माओं का बाप। एक है बेहद का बाप (गॉड फॉदर)। ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाय। (मु. १४-६-८९)

g) अब शंकर कौन हूआ ? यह भी गुह्य रहस्य है। रूहानी सोशल वर्कर ग्रुप अभी पर्दे के अन्दर है। (अ. वा. १-१-७९)

h) डबल विदेशी बच्चों में कई रतन है जो बापदादा के मण्के बनते हैं और बाप को प्रत्यक्ष करने का निमित्त बनते हैं। (अ. वा. १-१-७९)

i) मैं आत्माओं का बाप हूँ। हम आत्माओं से बात करते है। (मु. ११-९-८४)

j) संन्यासी जैसे घरबार छोड़ यहाँ आकर रहना नहीं। बाबा पिछाडी तक समझाते हो रहेंगे। जब राजधानी स्थापन हो जायेगी। (मु. ११-९-८४)

६०. <u>मुरली : २-१०-२००१</u>

a) बाबा करन करावर है ना। **'वह साकार'** है, **'वह निराकार'** है। सूक्ष्मवतन की सृष्टि का चक्र नहीं गाया जाता है।

b) लाऊड स्पीकर पर कभी पढ़ाई होती है क्या ? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे ? लाऊड स्पीकर पर रेस्पान्ड कैसे दे सकेंगे ? इसलिए थोडे-थोडे स्टुडेन्ट को पढाते हैं।

६१. <u>मुरली २९-६-२००१</u>

a) यह तो सिर्फ बीच में मारफत है। सब रावण की जेल में है।

b) ऐसे नहीं की सेन्टर में जाकर एक जगह बैठना है।

c) अब सूक्ष्मवतन वासी शंकर डमरू कैसे बजाएगा ?

६२. <u>मुरली ३०-६-०१</u>

a) विष्णु और शंकर क्या करते है, कुछ भी नही जानते। भगवती सीता, भगवान राम भी बनने का है।

b) एक है हद का सन्यास।

c) बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते है। इनमें प्रवेश करते है।

d) राम का कितना छोटा परिवार होगा सतयुग में।

६३. मु. २०-५-९८ (ओरिजिनल)

रिवाइज़ - मु. १४-०६-२००१ (कटिंग मुरली) - बहुत जगे पर कटिंग किया हूआ है।

a) बाप परमधाम से हमको पढ़ाने, राजयोग सीखाने आया हूआ है। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर **'वह'** है, याद उनको करना है। - **('वह' कहकर दूर कर दिया।)**

b) ब्रह्मा विष्णु शंकर है सूक्ष्मवतनवासी। बाप पहले सूक्ष्म शरीर रचते हैं। यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी अपना पार्ट बजाए फिर वापस चले जायेंगे। **(यह वाक्य रिवाइज़ मुरली १४-६-२००१, पृ-२ में कटिंग किया हूआ है - प्रूफ एटाच किया है।)**

c) हम जानते हैं जो कुछ चलता है, ड्रामा शूट होता जाता है।

d) नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ। उस समय इतना ज्ञान नहीं था।
परन्तु निराकार परमपिता परमात्मा कैसे आकर पढ़ाते हैं - यह बात गुम कर दी है।

e) तो इनको कभी याद नहीं करना है। इन ब्रह्मा से मीठा वह है।

६४. मु. १६-०३-१९९०

a) जैसे सर्प की खल ऑटोमेटीकली छूट जाती है। उनसे ममत्व मिट जाता है वह जानता है हमको नई खल मिलती है पुरानी उतर जायेगी।

b) सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।

c) विष्णु के दो रूप लक्ष्मीनारायण अलग-अलग बनेंगे।

d) मै आया हूँ पतितों को पावन बनाए ले जाता हूँ।

e) गाते भी है पतित पावन सीताराम। परन्तु अर्थ उल्टा निकाल दिया है।

f) अच्छा कोई जास्ती नहीं याद कर सकते तो बाप कहते हैं सिर्फ अल्फ और बदेशाही कोयाद करो।

e) गाते भी है पतित पावन सीताराम। परन्तु अर्थ उल्टा निकाल दिया है।

६५. प्रुफ - (एक अनोखा अनुभव - बी. के. दादा विश्व रतन की जीवित चरित्र से)

a) ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज), १८ जनवरी १९६९ में हार्ट फेल होकर शरीर छोड़े थे, क्योंकि **कोरामिन की इन्जेक्शन** हार्ट संबन्ध बिमारी के लिए यूज़ करते है।

मु. १४-१०-२००२ [ब्रह्मा बाबा शरीर छोडनेसे एक महीने पहले (१७-१२-१९६८) चलाया है।]

b) बाप समझाते हैं बच्चे, हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा है।

६६. प्रूफ - (ज्ञानामृत पुस्तिका - १९८६)

a) १९३६ में दादा लेखराज का उम्र ५० साल के थे।

b) सन १८७६ में सिन्ध में लेखराज ने जन्म लिया। **(ज्ञानामृत पुस्तिका-१९९२)**

(ज्ञानामृत पुस्तिका - १९९१)

b) मिस्टर सेवाकरम (भागीदार, कलकत्ता) के बारे में ....।

c) दादा लेखराज साहूकार और पावन थे (इशारा)।

d) दादा लेखराज में शिवबाबा की प्रवेशता कराची में हूई थी।

६७. प्रूफ - (ज्ञानामृत पुस्तिका - १९९१)

a) बी. के. वेदान्ती बहन (आफ्रीका), का परिचय ....।

संदेश के लिए इशारा

1 बेहद के बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते हैं।

इशारा : 5 (a), 36 (e), 56 (c), 22 (a), 4 (b), 4 (f)

2 मैं कल्प में एक ही बार आता हूं और सबको साथ में लेकर जाता हूं ।

इशारा : 6(b), 7(c), 63(c), 56(d), 48(a), 27(f), 49(f), 2(b), 33(b), 22(b), 24(d), 45(g), 33(b)

3 जो कुछ भी होता है वह साकार में ही होता है।

इशारा : 1(d), 3(c), 47(d), 9(f), 10(c), 12(c), 17(a)

4 बाप का पार्ट अभी चल रहा है।

इशारा : 51(b), 21(c), 11(a), 19(a), 28(a), 30(d), 51(a), 51(j), 31(b)

5 बाप है गुप्त, बच्चे भी गुप्त है। बाप गरीब निवाज़ हैं। → 27(d)

इशारा : 1(a), 15(f), 20(d), 27(d)

6 सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा और सूक्ष्म वतन के बारे में ....

इशारा : 3(a), 60(a), 8(g), 11(b), 13(d), 24(a), 31(i), 33(a), 46(c)

7 प्र. ब्रह्मा और सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मां अलग है।

इशारा : 3(c), 9(d), 17(b), 31(i), 47(d), 8(a), 63(d), 9(d), 16(d), 17(b), 18(b), 20(e), 23(f), 41(d), 51(g)

8 यह ब्रह्मा है बच्चा बुद्धि (कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे)

इशारा : 25(b), 36(d), 12(b)

9 30 वर्ष वाले से भी मासवाले तीखे चले जाते है।

इशारा : 17(c)

10 बि के का मत जाँच करनी होती है।

इशारा : 34(d)

11 विकार दृष्टि वृत्ति नहीं करनां है।

इशारा : 34(a)

12 यहाँ इस समय कोई शरीर छोड़ा तो इसी दुनिया में पुनर्जन्म लेंगे।

इशारा : 13(b), 3(d), 51(j)

13 मुरली कट करके भेजते है।

इशारा : 35(d),11(d), 12(a),—[19(b), 31(f), 32(i) और 63(b) - कटिंग मुरली]

14 माया रावण ब्राह्मण कुल में मशहूर है।

इशारा : 4(b), 37(c), 7(e), 55(c), 31(g), 37(c)

15 बिन्दी का साक्षात्कार से कोई मतलब नहीं (ऊपर जाना माना मरना)

इशारा : 4(d), 28(c), 9(b), 49(f), 28(c), 32(l), 7(d), 14(f), 20(b), 49(f), 48(m), 49(c), 55(d)

16 प्रेरणा अक्षर है नहीं।

इशारा : 20(g) , 17(a)

17 ट्रांस नहीं जाना है। भोग भी डायरेक्शन अनुसार जाना है।

इशारा : 15(a), 15(b), 55(d), 13(a)

18. अपने नाम के आगे 'प्रजापिता' अक्षर जरूर डालना है।

इशारा : 2(e)

18 यह मेरा शरीर भी मुकरर है।

इशारा ः 17(f)

19 बाप कहते है मैं मगध देश में आते हैं, जहाँ मगरमच्छ होते है ।

इशारा ः 30(b)

20 जब तक बाप की सम्पूर्ण प्रत्यक्षता नहीं हो जाती तब तक बच्चों और बाप का मिलन तो होना ही हैं। लेकिन चाहे व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन और चाहे अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन............।

इशारा ः 21(c)

माऊण्ट आबू में शिवबाबा नहीं आता

1 मैं वानप्रस्थ अवस्था में पतित कामी काटे बुड़े तन में प्रवेश करता हूँ। साधारण तन और गरीब निवाज़।

इशारा ः13(c), 50(c), 29(b), 57(e), 40(a), 43(d), 48(h), 29(e)

2 जिस तन में भी प्रवेश करता हूँ , उसका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।

इशारा ः 2(d)

3 मैं पवित्र कन्या के तन में नहीं आता हूँ ।

इशारा ः 19(c) **[19(b)- में यह भाग कट किया हुआ हैं]**

4 लाउड़स्पीकर में बात नहीं करता हूँ।

इशारा ः 60(b)

5 मैं कब आता, किस तन में आता, किसी को पता नहीं पड़ता।

इशारा ः2(b), 28(e), 30(b), 50(d)

6 बाबा का आवाहन नहीं कर सकता।

इशारा ः 20(i), 20(j), 26(b), 30(a), 17(g)

7 मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ।

इशारा ः 62(c)

8 जहाँ 36 प्रकार के भोजन मिल सकता, वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ।

इशारा ः 57(a)

9 मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में प्रवेश नहीं करता हूँ।

इशारा ः 3(a)

एड़वान्स धारणा के लिए पॉईन्टस्

1 उन्हें पहले पहले सात रोज भट्टी में बिठाओ।

इशारा ः 6(a), 20(a), 58(d)

2 फॉर्म भरना है।

इशारा ः 7(a)

3 जब पिता कहते है तो उनका नाम तो लिखो। → 2(e)

इशारा ः 7(b), 47(d)

4 मुरली को कोई 5 - 7 बार अच्छी रीति से पढ़े तो ब्राहमणी से भी ऊँची जा सकते है।

इशारा ः 11(d)

5 मुरली कभी मिस नहीं करनी है।

इशारा ः 12(a)

6 एक एक बात में बहुत ही गुह्य राज भरा हुआ है।

इशारा : 16(a)

7 बाबा की आत्मा और इनकी आत्मा इकट्ठी है

इशारा : 23(c)

8 यह ब्रह्मा को याद नहीं करना है और चित्र भी नहीं रखना है।

इशारा : 63(e), 24(a), 41(c)

9 इस जन्म में ही हम विश्व के मालिक बनेंगे.........।

इशारा : 35(a)

10 यहाँ 3 से 5 बजे तक आकर बैठो बाबा भी आ जायेंगे।

इशारा : 39(f)

11 मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है, जब नॉलेज देते है।

इशारा : 50(d)

12 बाबा एक दो बजे उठकर मुरली लिखते थे ....। फिर बाबा बैठ सुनते थे ......।

इशारा : 53(e)

13 सिवाय ब्रह्मा . बाप और जगदम्बा के । सब सिट खाली है । कोई भी ले सकते है।

इशारा : 43(a)

14 शिवबाबा परमधाम जाकर क्या करेंगे ......।

इशारा : 55(b)

15 धर्म राज भी शरीर धारण करके सज़ा देंगे।

इशारा : 59(c)

16 ऐसे नहीं की सेन्टर में जाकर एक जगह बैठना है।

इशारा : 61(b)

17 वायदा है ना साथ रहेंगे साथ चलेंगे ....।

इशारा : 56(d), 32(h)

18 बाप जो है जेसा है उसे यथार्थ रीति जानकर याद करना है ।

इशारा : 33(b), 19(d)

19 बाप है निराकार, माँ है साकार.........।

इशारा : 5(b), 9(f), 46(c)

20 ज्ञान सुर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है।

इशारा : 21(b), 57(j)

21 संगम पर कृष्ण की आत्मा ज़रूर है।

इशारा : 11(c)

22 ईश्वर अर्थ जो भी करते है तो उसका रिटर्न इस ही सृष्टि में मिलता है ।

इशारा : 47(g), 51(j), 35(a)

23 मैं तुम बच्चों से बात करता हूँ, यह बीच में सुन लेता है।

इशारा : 61(a)

24 महामुर्ख देखना है तो यहाँ देखो.........।

इशारा : 53(c)

25 साकार तन को ढुँडा भी यहाँ से है।

इशारा : 56(b)

२६. १९६६ में किये गये १० वर्षीय विनाश की घोषणा......।

इशारा : 48 (i), 48 (o)

26 कुमारका बताओ बाबा को कितने बच्चे है ? दो हुए । ब्रह्मा और शंकर।

इशारा : 31(f) **(यह वाक्य रिवाइज़ मुरली २१-५-२००२, पृ.-३ में कट किया है)**

27 फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो फादर कैसे हो सकता।

इशारा : 59(f)

28 त्रिमुर्ति का अर्थ ही यह है स्थापना, विनाश, पालना।

इशारा : 9(c)

29 सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।

इशारा : 64(b)

28 अभी एक दो वर्ष के अन्दर हाहाकार हो जायेगा **(84 की मुरली)**

इशारा : 30(c)

30 बाप खुद अपने परिचय देते है।

इशारा : 30(a)

31 पुरानी जूती है ना । राम फैल हुआ तो **33** मार्कस कम मिला।

इशारा : 30(f)

32 वेदान्ती बच्ची के बारे में......।

इशारा : 41(b), 67

33 बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षित के बारे में ......।

इशारा : 48(h)

34 ऐसे ऐसे बच्चियाँ थी जो मम्मा बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे.........।

इशारा : 42(c), 53(e), 43(b)

35 विनाश का घोषणे के बारे में ....।

इशारा : 48(l)

36 ब्रह्मा की आयु सौ साल और मृत्यूलोक में खतम होगी।

इशारा : 50(e)

37 प्रवृति मार्ग वालों को मालूम है कि भगवान किसी न किसी रूप में यहाँ आयेंगे जरूर।

इशारा : 20(d)

38 सन् शोज़ फादर.........।

इशारा : 12(d)

39 कोई कनवर्ट होकर चले जाते है।

इशारा : 16(c)

40 ब्रह्मा नाम तो बहुतों का है।

इशारा : 47(d)

41 राधे-कृष्ण अलग-अलग राजाओं के बच्चें हैं।

इशारा : 24(b)

42 सबका चित्र रखना माना व्यभिचारी पूजा ।

इशारा : 12(d)

43. तुम्ही पहले-पहले आये थे। अभी लास्ट में भी तुम हो।

इशारा : 6 (b)

चित्रों के बारे में

1 त्रिमूर्ति चित्र में सब कुछ राज भरा हूआ है।
इशारा ः 33(a), 60(e), 53(f), 39(c)
2 संगम युगी लक्ष्मी-नारायण के बारे में ....।
इशारा ः 59(e), 24(c), 35(a), 23(e), 26(a), 24(e), 18(b), 31(c)
3 सीढ़ी के चित्र तुम्हारे ऊपर ही बने हुए है।
इशारा ः 22(d), 54(b)
4 सबको इस चक्र और झाड़ पर समझना है।
इशारा ः 8(f), 18(c), 32(d), 32(m), 45 (c)
5 लक्ष्मी - नारायण के चित्र को बहुत महत्त्व देना है।
इशारा ः 47(e)
6 जो कुछ चलता है ड्रामा शूट होता जाता है।
इशारा ः 63(c)
7 आ.ऊ.म(ॐ)त्रिमूर्ति के बारे में क्लियर इशारा ।
इशारा ः 10(a)
8 ब्रह्मा बाबा 18 जनवरी 69 में हार्ट फेल होकर शरीर छोड़ गये थे।
इशारा ः 65(a) , ६५(b)
9 1936 में दादा लेखराज का उम्र 50 साल के थे।
इशारा ः 66(a) , ६६(b)
10 मिस्टर सेवाकराम और दादा लेखराज के बारे में...........।
इशारा ः 66(b), (c), (d)
11 बी के वेदान्ती बहन (अफ्रिका) की परिचय.........।
प्रूफ ः 67

बाप का पार्ट (शंकर के रूप में) अभी प्रेक्टिकल चल रहा है

1 अल्फ और बे......
इशारा ः 4(a),16(f), 45(d), 64(f)
2 सिर्फ शिवजयन्ती नहीं त्रिमूर्ती शिवजयन्ती कहना चाहिए।
इशारा ः 47(d), 8(e), 10(a), 32(b), 9(c), 9(f), 26(d)
3 शंकर (राम वाली आत्मा) के बारे में। पहले स्थापना विनाश फिर पालना......।
इशारा ः 59(g), 61(c), 9(c), 31(f), 39(b), 16(e), 29(g), 36(f), 21(c), 60(b), 62(a), 27(g), 34(e), 39(d), 48(d), 50(b), 59(a), 59(d), 62(d), 58(f)
4 एड़वान्स पार्टि (डबल विदेशी) के बारे में ....
इशारा ः 38(c), 5(e), 31(d), 42(a), 46(d)
5 संगमयुगी लक्ष्मी नारायण के बारे में ......।
इशारा ः 59(e), 24(c), 23(e), 26(a), 24(e), 18(b), 31(c)
6 फरूखाबाद में मालिक को बहुत मानते है।
इशारा ः 18(a), 32(i), 32(k)

7 यू पी को साकार और निराकार डबल लौटरी मिली हैं। ...ऐसा कोई बड़ा वी आई पी. यू पी का लाओ ......।

इशारा : 43(e), 43(f)

8 साकार तन को ढूँढ़ा भी यहाँ से है।

इशारा : 56(b)

9 रचयिता और रचना के बारे में.........।

इशारा : 32(b), 25(a), 33(c), 25(a), 45(d), 56(a)

10 जगतपिता-जगदम्बा (मात-पिता) के बारे में.........।

इशारा : 32(a), 30(h), 42(e), 43(b), 53(e), 30(g), 32(c)

11 शिव आत्माओं का बाप है और प्रजापिता साकार मनुष्य सृष्टि के बाप हैं।

इशारा : 7(b), 50(h), 59(f), 6(c), 32(g), 6(c), 47(b)

कटिंग मुरली

मुरली नं. 19 [१५-१०-६९, पृ.-२ (ओरिजिनल); १३-११-९५, पृ.-२ (कटिंग)]

मुरली नं. 31 [९-५-९२, पृ.-२ (ओरिजिनल); २१-५-२००२, पृ.-३ (कटिंग)]

मुरली नं. 32 [१९-६-९२, पृ.-१ (ओरिजिनल); २८-६-२००२, पृ.-२ (कटिंग)]

मुरली नं. 63 [२०-५-९८, पृ.-२ (ओरिजिनल); १४-६-२००१, पृ.-२ (कटिंग)]

2-9-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बाप है गरीब-निवाज़, तुम गरीब बच्चे ही बाप से ज्ञान की मुट्ठी ले साहूकार बनते हो, बाप तुम्हें आप समान बनाते हैं"

प्रश्न:- असुरों के विघ्न जो गाये हुए हैं वह इस रूद्र यज्ञ में कैसे पड़ते रहते हैं?
उत्तर:- मनुष्य तो समझते हैं असुरों ने शायद यज्ञ में गोबर आदि का किचड़ा डाला होगा—परन्तु ऐसा नहीं है। यहाँ जब किसी बच्चे को अहंकार आता है, कोई ग्रहचारी बैठती है तो जैसे किचड़ा बरसने लगता है, क्रोध में आकर मुख से जो फालतू बोल बोलते हैं, यही इस रूद्र यज्ञ में बहुत बड़ा विघ्न डालते हैं। कई बच्चे संगदोष में आकर अपना खाना खराब कर देते हैं। माया थप्पड़ मार इनसालवेन्ट बना देती है।

ओम् शान्ति। याद में बैठे हो तो जैसे योग में बैठे हो। हर एक जानते हैं कि हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है गुप्त मेहनत। इसमें कोई बड़ाई की बात नहीं। बाप कितना निरहंकारी रहते हैं, जिसमें प्रवेश करते हैं वह भी कितना निरहंकारी है। प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे हैं। चलन कितनी साधारण है, जैसे घर में बड़ा बाबा चलते हैं। निराकार के लिए भी कहा जाता है—निरहंकारी है। गुप्त है ना। इनको यह नहीं रहता कि हमारा शो हो। भभके से सबको पता पड़े। भभके से नाम तो होता है ना। बाप कहते हैं यह सब रसम-रिवाज कलियुगी देह-अभिमानियों की है। यहाँ तो शान्त में आते जाते हैं। बाबा तो हमेशा कहते हैं स्टेशन पर भी कोई ना आवे। कोई हंगामा नहीं। बाप कहते हैं मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें ही मज़ा है। बड़े भभके वालों को, बड़े आदमी को मारने में भी देरी नहीं करते। बाबा तो है ऊंच ते ऊंच। चलन गरीब से गरीब चलते हैं। बाप गरीब-निवाज़ है ना। गरीबों से ही मिलने आते हैं। साहूकार लोग तो नामीग्रामी मनुष्यों से ही मिलते हैं। इनको तो गरीब ही प्यारे लगते हैं। गरीबों पर ही तरस पड़ता है। तो बाप गरीबों पर तरस खाते हैं। ज्ञान की मुट्ठी भर देते हैं तो तुम साहूकार बनो। साहूकारों का ठहरना मुश्किल है। दरकार ही नहीं है इस ज्ञान मार्ग में। गवर्मेन्ट को तो धनवान लोग बहुत मदद करते हैं ना। नामीग्रामी हैं ना। वहाँ तो बहुत दान करने वालों का नाम अखबार में निकाला जाता है। यहाँ गरीब दान करते हैं तो अखबार में डालना चाहिए। चावल की मुट्ठी देकर फिर महल ले लेते हैं। बाप गरीब-निवाज़ गाया हुआ है। सबसे मिलते जुलते रहते हैं। बड़ा आदमी मसाला बेचने वाले से मिलेगा नहीं। यहाँ तो हैं ही गरीब। उन्हों को ही साहूकार बनाना है। बाप तो है गुप्त। गरीब ही बाप से अपना वर्सा कल्प पहले मुआफ़िक ले लेंगे। ड्रामा में नूँध ही है। साहूकार तो बलि चढ़ न सकें। हाँ इनको (शिवबाबा को) कोई वारिस बनाये तो कमाल कर दिखावे। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ साधारण तन में। गाया हुआ है निराकार, निरहंकारी। गाते भी हैं ना—गोदरी में करतार... देखो बाबा ठण्डी में गोदरी ले आकर बैठते हैं ना। पतित-पावन बाप को कोई जानते नहीं है। बाबा बैठकर समझाते हैं कि हे भारतवासी बच्चों—तुमको स्वर्ग का मालिक किसने बनाया? लक्ष्मी-नारायण के चित्र भी यहाँ रखे हैं। यहाँ तुम अविनाशी ज्ञान

रत्न प्राप्त कर और दान करते हो। तन-मन-धन सब समर्पण करते हो तो इसका एवज़ा मिलना चाहिए। अज्ञान काल में भी बहुत दान करने वाले बड़े आदमियों पास जन्म लेते हैं। यहाँ तुम बाप के आगे सरेन्डर करते हो तो पिछाड़ी में जो साहूकार बनते हैं, उनके पास जाकर जन्म लेते हैं। फिर तुम वहाँ महल माडियाँ बनायेंगे। दुनिया तो यही होगी। वैकुण्ठ कोई छत में थोड़ेही रखा है। पूछो–तुम्हारा बाप कहाँ गया? कहेंगे काशीवास किया और मुक्ति को पाया अर्थात् स्वर्ग पधारा। परन्तु अब तुम समझते हो मुक्ति जीवनमुक्ति किसको मिली नहीं है। सब यहाँ ही आते जाते हैं। कर्मो अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। बाप कर्म-अकर्म-विकर्म की गति समझाते हैं। रावण राज्य में जो भी कर्म मनुष्य करते हैं वह विकर्म बन जाते हैं। बालिग अवस्था में ही हिसाब-किताब बनता है। छोटे बच्चे का कुछ जमा नहीं होता है। बच्चा बड़ा होता है तो उनके माँ बाप काम कटारी पर चढ़ा देते हैं। यह भी कर्म विकर्म हुआ। वहाँ माया का राज्य ही नहीं। यह एक भी मनुष्य जानते नहीं।

तुम बच्चों को बाप देही-अभिमानी बनना सिखलाते हैं। और कोई सतसंग में ऐसे नहीं कहेंगे कि तुम्हारी आत्मा में सारा पार्ट बजाने की नूँध है। आत्मा शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाती है। आत्मा ही कानों से सुनती है। अब तुमको सेल्फ रियलाइजेशन कराया है। हम आत्मा ही 84 जन्म लेते हैं। आत्मा को अब निश्चय हुआ है देह-अभिमान खत्म। पहला अवगुण ही यह है। देह-अभिमान आने से ही और विकार चटकते हैं। तो अब देही-अभिमानी बनना है। बाबा हम आत्मायें बस आई कि आई। 84 जन्म पूरे किये हैं। ड्रामा अब पूरा हुआ। अब हमको नया जन्म मिलेगा। खुशी होनी चाहिए ना। सर्प खल छोड़ता है फिर नई लेता है। सन्यासी यह मिसाल दे नहीं सकते। यहाँ तुम भी नई खाल लेने के पहले पुरानी छोड़ते हो। फिर वहाँ हर जन्म में आपेही पुरानी खाल छोड़ नई ले लेते हो। बच्चे समझते हैं कि अब हम यह पुरानी खाल छोड़ घर जायेंगे। फिर स्वर्ग में समय पर पुराना शरीर छोड़ दूसरा लेते रहेंगे। सर्प तो बहुत बार खाल उतारता है। तुमको तो यहाँ प्रैक्टिस कराई जाती है। यह 84 जन्मों की सड़ी हुई खाल है, इनको श्याम कहा जाता है। चमड़ी (शरीर) काली तो आत्मा भी काली है। सोना 24 कैरेट होता है तो जेवर भी ऐसे बनते हैं। आगे खाद डालने का कायदा नहीं था। सच्चा सोना चलता था। यह गिन्नी आदि विलायत से निकली है। विलायत में सच्ची मुहरें बनती नहीं, यहाँ ही सच्चे सोने की मुहरे थी। अब तो सब मंहगा हो गया है। सोने में खाद डालनी ही है। तुम्हारे दिल में गुप्त खुशी है कि हम तो जाकर सोने के महल बनायेंगे। जैसे यहाँ पत्थरों की दीवार है, वहाँ सोने की दीवार होगी। हम पारसबुद्धि बनते हैं तो महल भी सोने के बनाते हैं। पुराना सब खलास हो जायेगा। इस ड्रामा को बड़ा युक्ति से समझना होता है। नई दुनिया में सब कुछ नया होता है। यह कितनी सहज बातें हैं। अच्छा यह भी समझ में न आये तो बाप को बड़े प्यार से याद करो। इसलिए यह सब महीन बातें बाबा ने देर से समझाई हैं। शुरू में बहुत सहज तोतली बातें सुनाते थे। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि बाबा ने यह सब पहले क्यों नहीं सुनाया कि आत्मा इतनी छोटी है। ड्रामा अनुसार जो कुछ पास हुआ, कल्प पहले मुआफ़िक जैसे समझाया था–ऐसे समझा रहे हैं। मनुष्य इस ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ है। कल्प बाद ही फिर ऐसे समझा रहे हैं।

फिर भी ऐसे ही समझायेंगे। बहुत बच्चे साधारण रूप देख मूँझते हैं, उल्टा बोलने लग पड़ते हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे उनको भी माया चमाट मार देती है। समझते हैं - बस जो कुछ है निराकार ही है। सो तो ठीक है ना। निराकार नहीं होता तो हम तुम कैसे होते। परन्तु निराकार को तो रथ जरूर चाहिए ना। रथ बिगर क्या करेंगे, शिवबाबा क्या करेगा? रथ में आये तब तो तुम उनसे मिलेंगे। तुम्हीं से सुनूँ, तुम्ही से बैठूँ। तो रथ जरूर चाहिए ना। अच्छा साकार बिगर निराकार को याद कर दिखाओ। क्या तुमको ज्ञान प्रेरणा से मिलेगा? फिर मेरे पास आये ही क्यों हो? यह बाबा भी कहता है कि वर्सा तो शिवबाबा से लेना है। शिवबाबा कहते हैं मैं इस साधारण तन में बैठ पढ़ाता हूँ। पढ़ाई तो जरूर चाहिए ना। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चों का माथा ही फिर जाता है। दो चार सेन्टर खोलते तो बस अहंकार आ जाता है। फिर उल्टा बोलते रहते हैं। फिर कभी बुद्धि में आ भी जाता है कि यह हमने ठीक नहीं कहा, फिर पश्चाताप करते हैं। बाबा कहते हैं मैं साकार बिगर कैसे समझाऊंगा। इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। मैं टीचर के रूप में बैठता हूँ। गरीबों पर माथा मारते हैं। गरीबों को ही दान करना चाहिए। कोई भी बात समझ में न आये तो बोलो अच्छा बाबा से पूछकर बतायेंगे क्योंकि ज्ञान की अभी बहुत मार्जिन है। आगे चलकर समझते जायेंगे। दिन-प्रतिदिन तुम नई-नई प्वाइंटस सुनते रहेंगे। तुम बच्चों को तो बिल्कुल ही निरहंकारी बनकर रहना है। अहंकार आने से ही फिर सारा क़िचड़ा बाहर निक़ल आता है। किचड़े की जैसे वर्षा होती है। कहते भी हैं रूद्र यज्ञ में असुरों का किचड़ा पड़ा—वह समझते हैं शायद गोबर आदि डालते होंगे। सचमुच यह गोबर है। फालतू बोलने लग पड़ते हैं। क्रोध आदि करते यह जैसे गोबर डालते हैं। चलते-चलते किसको ग्रहचारी बैठती है तो छटेले बन जाते हैं। माया थप्पड़ मार एकदम इनसालवेंट बना देती है। कमाई में ग्रहचारी होती है ना। तब तो कहते हैं आश्चर्यवत सुनन्ती, संगदोष में आकर अपना खाना खराब कर देते हैं। बाप कहते हैं बहुत खबरदार रहना है। संग तारे, कुसंग बोरे... बाबा बिल्कुल मना कर देते हैं। बड़े आदमी के दुश्मन बहुत बन पड़ते हैं। यहाँ फिर विष का खाना न मिलने से कामेशु, क्रोधेशु बन पड़ते हैं। बस हम इनको मारेंगे। बाप तो कहते हैं - काम तो तुम्हारा दुश्मन है। तुम पावन देवी-देवता थे। अभी कहते हो कि हम पतित दु:खी हैं। बाबा कहते हैं—इस ज्ञान यज्ञ में असुरों के विघ्न बहुत पड़ेंगे। शुरू से ही पड़ते आये हैं। मुख्य है ही पवित्रता की बात। तुम पुकारते भी हो कि हे पतित-पावन आओ। तो अब आये हैं—पावन बनाते हैं। फिर क्यों पतित बनने चाहते हो? विकारों पर ही शुरू से झगड़ा चलता है। बच्चियाँ भी कहती हैं—हमको तो बाप से वर्सा जरूर लेना है—कुछ भी हो जाए। बाप क्या करेगा? मारेगा ना। लड़ाई में कितने मरते हैं। तुमको बाप कोई मार नहीं डालेगा। हाँ सहन जरूर करना पड़ता है, इसमें महावीरता चाहिए। शिव शक्ति का गायन तुम्हारा ही है। आदि देव को महावीर कहते हैं। परन्तु अर्थ थोड़ेही समझते हैं। अब तुम समझते हो कि माया पर जीत पाते हैं और दूसरों को मायाजीत बनाते हैं। देलवाड़ा मन्दिर में जगत अम्बा भी बैठी है। कोठरियों में बच्चियाँ भी बैठी हैं। महावीर बच्चे सब ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ ठहरे। तुम्हारी बुद्धि में कितना राज़ है। हूबहू तुम्हारा ही यादगार है। लक्ष्मी-नारायण का मन्दिर भी यादगार है। गांधी की बरषी मनाते हैं। यह-यह

किया, टैगोर ऐसा था, अच्छा काम करते थे। कितनी बड़ी-बड़ी जीवन कहानियाँ लिखीं हुई हैं। कितने वाल्युम्स हैं। यहाँ तुम्हारी बुद्धि ही बड़ा वाल्यूम है। सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ तुम्हारी बुद्धि में है। बुद्धि में ही ज्ञान की धारणा होती है। किनकी बुद्धि विशाल है—किनकी कम है। नम्बर हैं ना। यह है नई नॉलेज, जो बाप के सिवाए कोई सुना नहीं सकते। इस बाप पर बलि चढ़ने से तुमको स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। बेहद का बाप पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर बच्चों के लिए कितनी मेहनत करते हैं। तो जरूर बच्चों को बलि चढ़ना पड़े। वह शिवबाबा तो है ही निराकार, दाता है ना। कहते हैं शिवबाबा हम आपको पैसे भेज देते हैं, मकान बनाने के लिए। मैं तो निराकार हूँ तो जरूर ब्रह्मा द्वारा ही बनाऊंगा। डायरेक्शन देता हूँ—तुम्हारे लिए बनावें। हम तो आये हैं थोड़े समय के लिए, फिर निर्वाणधाम चले जायेंगे। कितना प्यार से बैठ समझाते हैं—कितनी सहज बात है, देह सहित देह के सब सम्बन्ध त्याग एक बाप को याद करो। चाहे तो स्वराज्य पाओ, चाहे प्रजा पद पाओ। तुम्हारे पुरूषार्थ पर है। एक-एक राजा रानी के पास प्रजा कितनी लाखों के अन्दाज में आती है। यह ज्ञान तो ढेर सुनेंगे। आप समान बनाने की मेहनत करनी है। पावन यहाँ बनना है। तुम जानते हो पतित-पावन बाप आया हुआ है। कल्प पहले मुआफ़िक हमको समझा रहे हैं। बाबा ने राज्य दिलाया था—रावण ने छीन लिया है। हार कैसे हुई है फिर जीतना कैसे है—यह भी बुद्धि में हैं। बहुत बच्चे यह भी भूल जाते हैं। माया नाक से पकड़ लेती है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाते हैं फिर झट जीवनबंध भी हो जाते हैं। देरी नहीं करते। बाप कहते हैं बच्चे खबरदार रहो। तुम रूप-बसन्त बन सदा मुख से रत्न ही निकालो। किचड़ा सुनना भी नहीं चाहिए। समझो हमारा यह दुश्मन है। ज्ञान के सिवाए और सब बातें सुनना ईविल है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- पहला अवगुण जो देह-अभिमान का है, उसे निकालकर पूरा-पूरा देही-अभिमानी बनना है।

२- अविनाशी ज्ञान धन जो बाप से मिल रहा है, उसका दान करना है। बाप समान निरहंकारी बनना है। मुख से रत्न निकालने हैं। ईविल बातें नहीं सुननी है।

वरदान:- मास्टर स्नेह के सागर बन घृणा भाव को समाप्त करने वाले नॉलेजफुल भव

नॉलेजफुल अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा बच्चे हर एक के प्रति मास्टर स्नेह के सागर होते हैं। उनके पास स्नेह के बिना और कुछ है ही नहीं। आजकल सम्पत्ति से भी ज्यादा स्नेह की आवश्यकता है। तो मास्टर स्नेह के सागर बन अपकारी पर भी उपकार करो। जैसे बाप सभी बच्चों के प्रति रहम और कल्याण की भावना रखते हैं, ऐसे बाप समान क्षमा के सागर और रहमदिल बच्चों में भी किसी के प्रति घृणा भाव नहीं हो सकता।

स्लोगन:-

हदों को समाप्त कर बेहद की दृष्टि और वृत्ति को अपनाना ही युनिटी का आधार है।

(2) मुरली नं. - (२)

12-3-99 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – सत्य सुनाने वाला एक बाप है, इसलिए बाप से ही सुनो, मनुष्यों से नहीं, एक बाप से सुनने वाला ही ज्ञानी है"

प्रश्नः- जो आत्मायें अपने देवी-देवता घराने की होंगी, उनकी मुख्य निशानी क्या होगी?
उत्तरः- उन्हें यह ज्ञान बहुत अच्छा और मीठा लगेगा। वह मनुष्य मत को छोड़ ईश्वरीय मत पर चलने लग पड़ेंगी। बुद्धि में आयेगा कि श्रीमत से ही हम श्रेष्ठ बनेंगे। अभी यह पुरूषोत्तम संगमयुग चल रहा है, हमें ही उत्तम पुरूष बनना है।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे आत्म-अभिमानी भव। देह का अभिमान छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह भी जानते हो परमात्मा एक है। ब्रह्मा को परमात्मा नहीं कहा जाता है। ब्रह्मा के 84 जन्मों की कहानी को तुम जानते हो। उनका यह है अन्तिम जन्म। मुझे आना भी इसमें ही होता है, जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं। उनको ही बताता हूँ, तुम 84 जन्मों को नहीं जानते हो, मैं ही तुमको बताता हूँ। पहले-पहले तुम यह देवी-देवता थे। अब यह बनने लिए फिर पुरूषार्थ करना है। पुनर्जन्म तो पहले जन्म से ही शुरु होता है। अब बाप कहते हैं–मैं जो तुमको सुनाता हूँ, वह है राइट। बाकी जो कुछ तुमने सुना है, वह है रांग। मुझे कहते हैं ट्रुथ, सत्य बोलने वाला। मैं सत्य धर्म की स्थापना करने आता हूँ। कहा जाता है सच तो बिठो नच अर्थात् सच्चे हो तो खुशी में डांस करो। यह है ज्ञान डांस। वो लोग कृष्ण को दिखाते हैं–मुरली बजाई, रास किया। वह हैं सच खण्ड के मालिक। लेकिन इनको भी बनाने वाला कौन? सचखण्ड की स्थापना करने वाला कौन? वह है सचखण्ड, यह है झूठ खण्ड। भारत सचखण्ड था, जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, उस समय और कोई खण्ड नहीं था। मनुष्य यह नहीं जानते कि स्वर्ग कहाँ है? कोई मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। बाप समझाते हैं तुम उल्टे लटक पड़े हो। माया के अधीन हो पड़े हो। अब तुमको बाप आकर सुल्टा बनाते हैं। तुम जानते हो भक्तों को भक्ति का फल देने वाला है भगवान्। इस समय सब भक्ति में हैं। जो भी शास्त्र आदि हैं, सब हैं भक्ति मार्ग के। यह गीत गाना आदि सब है भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग में भजन होता नहीं। तुम जानते हो हमको आवाज़ से परे जाना है, वापिस जाना है। बाप कहते हैं–मीठे बच्चों, मुख से 'हे भगवान्' भी कभी नहीं कहना। यह भी भक्ति मार्ग है। कलियुग के अन्त तक भक्ति मार्ग चलता है। अब यह है पुरूषोत्तम संगमयुग, जबकि बाप आकर ज्ञान से तुमको उत्तम पुरूष बनाते हैं। तुम एक ईश्वरीय मत पर चलो। जो ईश्वर कहते हैं वह राइट। बाबा मनुष्य तन में आकर सुनाते हैं–तुम कितने समझदार थे, अब कितना बेसमझ बन पड़े हो। तुम गोल्डन एज में थे, अब आइरन एज में आ गये हो। यहाँ का जो होगा उनको यह ज्ञान बहुत अच्छा लगेगा। यहाँ वालों को मीठा लगेगा। यह बाबा खुद भी गीता पढ़ते थे। बाबा मिला तो सब-कुछ छोड़ दिया। गुरु भी बहुत किये। बाप ने कहा–यह सब भक्ति मार्ग के गुरु हैं। ज्ञान मार्ग का गुरु मैं एक ही हूँ। ज्ञान जब मेरे से सुनें तब उनको ज्ञानी कह सकते हैं। बाकी सब हैं भक्त। श्रीमत ही श्रेष्ठ है, बाकी सब है मनुष्य मत, यह है ईश्वरीय मत। वह है रावण मत, यह है भगवान् की मत। भगवानुवाच–तुम कितने महान् भाग्यशाली हो, इसलिए तुम्हारा हीरे जैसा जन्म अभी है। अंगूठी में भी हीरा बीच में

डालते हैं। माला में ऊपर फूल होता है, फिर मेरू। नाम भी है आदम-बीबी। तुम कहेंगे मम्मा-बाबा। आदि देव और आदि देवी, यह हैं संगम के। संगमयुग ही सबसे उत्तम है, जबकि इस राज्य की स्थापना हो रही है। तुम बच्चों को 16 कला सम्पूर्ण यहाँ बनना है। पुरानी दुनिया को नया बनाने बाप आते हैं। इस दुनिया का ड्युरेशन कितना है—यह भी तुम बच्चों के सिवाए कोई नहीं जानते। लाखों वर्ष कह देते हैं। यह सब हैं झूठी बातें। झूठी माया, झूठी काया... कहा जाता है। सच्ची-सच्ची है ही नई दुनिया। यह है झूठ खण्ड। फिर झूठखण्ड को सचखण्ड बनाना बाप का ही काम है। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग में जो कुछ पढ़ा है, वह सब भूलो। यह है तुम्हारा बेहद का वैराग्य। वो तो सिर्फ घरबार छोड़ फिर इस दुनिया में, जंगल में चले जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। क्यों का सवाल नहीं उठता। यह तो बना-बनाया खेल है। तुम बच्चों को बाप समझाते हैं, ऐसे-ऐसे होता है। और जो भी धर्म वाले हैं वह स्वर्ग में नहीं आ सकते। बौद्ध डिनायस्टी, क्रिश्चियन डिनायस्टी कोई भी स्वर्ग में नहीं आते हैं। वह पीछे आते हैं। पहले-पहले है डीटी डिनायस्टी, फिर इब्राहम, बुद्ध, क्राइस्ट आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं। बाबा पुरूषोत्तम संगमयुग पर आकरके यह डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं।

कोई भी आत्मा आती तो गर्भ में ही है। छोटा बच्चा सो बड़ा हुआ। शिवबाबा तो छोटा-बड़ा नहीं होता। न वह गर्भ से जन्म लेता है। (बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया, बुद्ध धर्म पहले तो होता नहीं। जरूर यहाँ के कोई मनुष्य में प्रवेश करेंगे। फिर गर्भ में तो जरूर जायेंगे) बुद्ध धर्म एक ने ही स्थापन किया फिर उनके पीछे और आते गये। फिर वृद्धि होती गई। जब लाखों हो जाते हैं तो फिर राजाई चलती है। बौद्धियों का भी राज्य था, बाप समझाते हैं यह सब पीछे आते हैं। इनको गुरु नहीं कहा जाता है। गुरु होता है एक। वह तो अपने धर्म की स्थापना कर फिर नीचे आ जाते हैं। बाप ने सबको ऊपर भेज दिया था फिर मुक्तिधाम से एक-एक करके नीचे आते हैं। तुम भी जीवनमुक्ति से नीचे आते हो। वैसे वह फिर मुक्ति से नीचे आते हैं। उनकी महिमा काहे की। ज्ञान तो उस समय प्राय:लोप हो जाता है। बाप ज्ञान देते हैं गति-सद्गति के लिए। वह गर्भ में नहीं आते, इसमें बैठे हैं। इनका दूसरा नाम नहीं। औरों के शरीरों का नाम है। यह है ही परम आत्मा। यह ज्ञान का सागर है। यह ज्ञान पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाली आत्माओं को मिलता है क्योंकि उन्हें ही भक्ति का फल मिलना है। भक्ति तुम ही शुरू करते हो। तुमको ही फल देता हूँ। बाकी दूसरे सब हैं बाईप्लाट। वह 84 जन्म भी नहीं लेते हैं। बाप समझाते हैं—बच्चे, तुम अब देही-अभिमानी बनो। वहाँ भी समझते हैं—एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे, दु:ख की बात नहीं। विकारों की बात नहीं। विकार होते हैं रावण राज्य में। वह है निर्विकारी दुनिया। तुम समझायेंगे फिर भी मानते नहीं हैं। कल्प पहले मिसल जो मानते हैं, वही पद पाते हैं, जो नहीं मानते है वह नहीं पाते हैं। सतयुग में सभी पवित्र, सुख, शान्ति में रहते हैं। सब मनोकामनायें 21 जन्म के लिए पूरी हो जाती हैं: सतयुग में कोई कामना नहीं। अनाज आदि सब-कुछ अथाह मिल जाता है। यह बाम्बे पहले नहीं थी। देवतायें खारे जमीन पर नहीं रहते हैं। मीठी नदियां जहाँ थी, वहाँ देवतायें थे। मनुष्य थोड़े थे, एक-एक को बहुत जमीन होती है। दिखाते हैं—सुदामा ने दो मुट्ठी चावल दिये, महल मिल गये। मनुष्य दान पुण्य करते हैं ईश्वर अर्थ। अब वह कोई भिखारी है क्या? ईश्वर तो दाता है। समझते हैं ईश्वर दूसरे जन्म में बहुत कुछ देगा। तुम दो मुट्ठी देते हो, नई दुनिया

में बहुत कुछ लेते हो तुम खर्चा करके सेन्टर आदि बनाते हो, सबको शिक्षा मिले। अपना धन खर्च करते हो फिर राजाई भी तुम ही लेते हो। बाप कहते हैं मैं ही तुमको अपना परिचय देता हूँ। मेरा परिचय कोई को है नहीं। न मैं किस तन में आता हूँ। मैं आता ही एक बार हूँ। जब पतित दुनिया को चेन्ज करना है। मैं हूँ ही पतित-पावन। मेरा पार्ट ही संगमयुग पर है। सो भी एक्युरेट समय पर आता हूँ। तुमको यह थोड़ेही पता पड़ता है कि शिवबाबा इनमें कब प्रवेश होता है। कृष्ण की तिथि तारीख, मिनट, घड़ियां लिखते हैं। इनका कोई मिनट आदि नहीं निकाल सकते। यह ब्रह्मा भी नहीं जानते थे। जब नॉलेज सुनाई तब मालूम पड़ा। कशिश होती है। इसमें तो कट चढ़ी हुई थी। जब परमपिता परमात्मा ने प्रवेश किया तो तुमको कशिश हुई और तुम भागे। कोई भी तुमने परवाह नहीं की। बाप कहते हैं मैं तो सम्पूर्ण पवित्र हूँ। तुम आत्माओं पर कट चढ़ी हुई है, अब वह कैसे निकले? ड्रामा में सब आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। यह बहुत गुह्य बात हैं। आत्मा कितनी छोटी है। दिव्य दृष्टि के बिगर उनको कोई देख न सके। बाप आकर तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। तुम जानते हो हम आत्माओं को ही बाप पढ़ाते हैं। भक्ति मार्ग में तो ज्ञान है आटे में नमक। जैसे भगवानुवाच अक्षर राइट है, फिर कृष्ण कहने से रांग हो जाता है। मनमनाभव अक्षर ठीक है परन्तु अर्थ नहीं समझते। मामेकम् अक्षर राइट है। यह है गीता का एपक (युग)। भगवान इस समय ही इस रथ में आते हैं, उन्होंने दिखाया है घोड़ा गाड़ी। उसमें कृष्ण बैठा है। अब कहाँ भगवान का यह रथ, कहाँ घोड़ा गाड़ी! कुछ भी समझते नहीं। यह बेहद के बाप का घर है। बाप सब आत्माओं (बच्चों) को 21 जन्मों के लिए हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस देते हैं। यह भी अनादि अविनाशी बना बनाया ड्रामा है। कब शुरू हुआ, कह नहीं सकते। चक्र फिरता ही रहता है। इस संगम का तो किसको मालूम ही नहीं। बाप बतलाते हैं यह ड्रामा 5 हजार वर्ष का है। आधा में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी, आधा में अर्थात् 2500 वर्ष में बाकी और सब धर्म। तुम जानते हो सतयुग में है ही वाइसलेस वर्ल्ड। तुम अभी योगबल से विश्व की राजाई लेते हो। क्रिश्चियन लोग खुद समझते हैं – हमको कोई प्रेर रहा है, जो हम विनाश के लिए यह सब कुछ बनाते हैं। कहते हैं हम ऐसे बाम्ब्स बनाते हैं जो एक दुनिया तो क्या 10 दुनिया खत्म कर सकते हैं। बाप कहते हैं मैं हेविन स्थापन करने आया हूँ। बाकी विनाश तो यह करेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात - कुमारियों से

सदा अपने इस ब्राह्मण जीवन के आदि से अब तक की सर्व प्राप्तियाँ स्मृति में रहती हैं? अगर प्राप्तियों की लिस्ट निकालो तो कितनी लम्बी है? सार रूप में यही कहेंगे कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मण जीवन में। तो ऐसे अनुभव करते हो? सदा काल के लिये सब प्राप्तियाँ प्राप्त हो गई हैं?

कुमारियों को नशा रहता है? सदा रहता है या कभी-कभी? कभी मूड ऑफ होता है? रोती नहीं हो लेकिन चुप हो जाती हो? कितने समय से नहीं रोया है? जब से ब्रह्माकुमारी बनी हो तब से नहीं रोया है या अभी नहीं रोती हो? मन में भी नहीं रोया है? कुमारियों को कोमल

होने के कारण रोना जल्दी आता है। अच्छा, पुरूषार्थ में भी उड़ती कला वाली हो या चढ़ती कला वाली हो? सभी उड़ती कला वाली हो? अच्छा है, कभी नीचे, कभी ऊपर नहीं होना, सदा उड़ते रहना क्योंकि समय कम है और मंज़िल श्रेष्ठ है। तो बिना उड़ती कला के मंज़िल पर पहुँचना मुश्किल है। इसलिये सदा उड़ते रहो और उड़ने का साधन है सदा सर्व प्राप्तियों को स्मृति में रखना। इमर्ज रूप में, मर्ज नहीं। जानते ही हैं, नहीं, मर्ज से इमर्ज करो। क्या-क्या मिला! क्या थे और क्या बने गये! कल क्या और आज क्या! तो प्राप्तियों की खुशी कभी नीचे, हलचल में नहीं लायेगी। नीचे आना तो छोड़ो लेकिन हलचल भी नहीं, अचल। जो सम्पन्न होता है वो हलचल में नहीं आता है। जो खाली होता है वह हिलता है। कोई भी चीज़ हिलने वाली होती है तो उसको चारों ओर से सम्पन्न कर देते हैं, भरपूर कर देते हैं तो हिलती नहीं है। अगर कोना भी खाली होगा तो हिलेगी और हिलते-हिलते टूटेगी। तो सम्पन्नता अचल बनाती है। हलचल से छुड़ा देती है। तो सर्व प्राप्तियों में सम्पन्न हो ना? ये भी नशा है कि हम दाता के बच्चे हैं, साधारण बाप के बच्चे नहीं। तो जो स्वयं दाता है तो वो मास्टर दाता बनायेगा ना। तो सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा हो? जरा भी अप्राप्ति नहीं। कोई अप्राप्ति है? कोई चीज़ चाहिये, नाम चाहिये, सेवा चाहिये, थोड़ा चांस मिल जाये, मेरा नाम हो जाये, मेरे को आगे रखा जाये, यह अप्राप्ति तो नहीं है? किसी को है तो बता दो। मकान अच्छा मिल जाये, कार मिल जाये। कार हो तो सेवा अच्छी तरह से कर सकें। जितने साधन, उतनी बुद्धि भी जाती है। जैसे हैं, जहाँ हैं, सदा राज़ी। जो थोड़े में सन्तुष्ट रहता है उसको सदा सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होती है। सन्तुष्टता सबसे बड़े से बड़ा खजाना है। जिसके पास सन्तुष्टता है, उसके पास सब-कुछ है। जिसके पास सन्तुष्टता नहीं है तो सब-कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है क्योंकि असन्तुष्ट आत्मा सदा इच्छाओं के वश होगी। एक इच्छा पूरी होगी और 10 इच्छायें उत्पन्न होगी। इसलिए हद के इच्छा मात्रम् अविद्या। सदा यह गीत गाते रहो पाना था वो पा लिया। अच्छा, सभी सन्तुष्ट मणियाँ हो ना?

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बेहद का वैरागी बन जो कुछ अब तक भक्ति में पढ़ा वा सुना है, वह सब भूलना है। एक बाप से सुनकर, उनकी श्रीमत से स्वयं को श्रेष्ठ बनाना है।

२. जैसे बाप सम्पूर्ण पवित्र है, उस पर कोई कट (जंक) नहीं। ऐसे पवित्र बनना है। ड्रामा के हर पार्टधारी का एक्यूरेट पार्ट है, इस गुह्य रहस्य को भी समझकर चलना है।

वरदान:- ब्राह्मण जन्म की जन्मपत्री को जान सदा खुशी में रहने वाले श्रेष्ठ भाग्यवान भव

ब्राह्मण जीवन नया जीवन है, ब्राह्मण आदि में देवी-देवता हैं और अभी बी.के. हैं। ब्राह्मणों की जन्म पत्री में तीनों ही काल अच्छे से अच्छा है। जो हुआ वह भी अच्छा और जो हो रहा है वो और अच्छा और जो होने वाला है वह बहुत-बहुत अच्छा। ब्राह्मण जीवन की जन्मपत्री सदा ही अच्छी है, गैरन्टी है। तो सदा इसी खुशी में रहो कि स्वयं भाग्य विधाता बाप ने भाग्य की श्रेष्ठ रेखा खींच दी, अपना बना लिया।

स्लोगन:-

दिलरूबा वह है जिसके दिल में सदा यही अनहद गीत बजता रहे
कि मैं बाप की, बाप मेरा।

दुखी ही दुखी है। भक्त भगवान को बुलाते हैं तो जरूर भगवान एक होना चाहिए। भक्त अनेक हैं। शिव भगवानुवाच मैं शिव भगवान तुम बच्चों को राजयोग और सृष्टि चक्र का ज्ञान समझा रहा हूँ अर्थात् अब तुम्हारी आत्मा को सृष्टि चक्र का ज्ञान है। जैसे मुझ बाप को सृष्टि के चक्र का ज्ञान है, मैं आता हूँ तुमको सिखलाने, सृष्टि चक्र फिरना तो जरूर है। पतित से पावन बनना है कोई तो निमित्त बनते हैं ना। 5विकारों रूपी जेल से लिबरेट करने मैं आता हूँ। मैं शिव हूँ जो अभी इस तन में बैठा हूँ। तुम कहेंगे मैं आत्मा इस शरीर में बैठा हूँ। मेरे शरीर का नाम फलाना है। शिवबाबा कहते हैं मेरा निराकारी शरीर तो है नहीं। मुझ परमात्मा का नाम शिव ही है। मैं परमपिता परमात्मा स्टार मिसल हूँ। मेरा शिव नाम एक ही है। तुम भी सालिग्राम हो। परन्तु तुम्हारा नाम 84जन्मों में बदलता रहता है। मेरा तो एक ही नाम है। मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ। गीता में जिसका नाम डाल दिया है वह तो पूरे 84जन्म लेता है। ऐसे नहीं कि कृष्ण ने गीता सुनाई, यह बड़ी समझने की बात है। मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है, जो कुछ करते हैं सो परमपिता परमात्मा करते हैं। मनुष्य को शान्ति सुख देना यह बाप का काम है। हमेशा महिमा एक बाप की ही करनी है। और कोई की महिमा है नहीं। ल०ना० की भी महिमा है नहीं। परन्तु राज्य करके गये हैं तो समझते हैं यह स्वर्ग के मालिक थे। बन्दर तो देखो वह जड़ चित्र और यहाँ चैतन्य बैठे हैं। शिव भगवानुवाच तुम राजाओं का राजा पूज्य बनते हो। फिर पुजारी बनेंगे। पूज्य ल०ना०से फिर आपेही पुजारी बनेंगे। तो जो पास्ट हो गये हैं उनका फिर मन्दिर बनाकर पूजन करते हैं। यह सिद्ध कर बताना है। ऐसे नहीं कि ईश्वर आपेही पूज्य आपेही पुजारी बनता है। नहीं। मनुष्य यह भी नहीं जानते कि मैं परमात्मा कहाँ निवास करता हूँ। मेरे जो बच्चे सालिग्राम हैं वह भी यह नहीं जानते कि हम कहाँ के रहने वाले हैं। आत्माओं और परमात्मा का घर एक ही है स्वीट होम। सिर्फ स्वीट फादर होम नहीं कहेंगे। अभी तुम जानते हो निर्वाणधाम [illegible] स्वीट फादर है। सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म के साथ योग हो गया। उनमें विकर्म विनाश हो नहीं सकते। भल ब्रह्म योगी तत्व योगी हैं। परन्तु उनके विकर्म विनाश नहीं हो सकते। हाँ भावना से करके अल्पकाल के लिए सुख मिलता है। जितना याद करेंगे उतनी शान्ति मिलेगी। तो बाप कहते हैं उनका योग रांग है। तुमको याद करना है एक बाप को। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। कृष्ण ऐसे कह न सके वह तो वैकुण्ठ का मालिक ठहरा। वह थोड़ेही कहेगा अशरीरी बन शिवबाबा को या मुझे याद करो। सारा मदार गीता को करेक्ट कराने पर है। गीता खण्डन होने कारण भगवान की हस्ती गुम हो गई है। कह देते ईश्वर का कोई नाम रूप है नहीं। अब नाम रूप काल तो आत्मा का भी है। आत्मा का नाम आत्मा है। वह भी परमपिता परमात्मा है। परम अर्थात् सुप्रीम। ऊँच ते ऊँच। वह जन्म मरण रहित। अवतार लेते हैं। ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ब्रह्मा नाम कब बदल नहीं सकता। ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना करते हैं। तो वह श्रीकृष्ण के तन में थोड़ेही आयेंगे। अगर वह दूसरे में आवे तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। मनुष्य कहते हैं दूसरे कोई में क्यों नहीं आता। अरे वह भी किसके तन में आये? वह आते ही हैं ज्ञान देने लिए। दिनप्रतिदिन मनुष्य समझते जायेंगे। तुम्हारी वृद्धि होती जायेगी। अवस्था बड़ी अच्छी चाहिए। जैसे ड्रामा में एक्टर्स को मालूम होता है हम घर से स्टेज पर पार्ट बजाने आये हैं, वैसे हम आत्मा यह शरीर रूपी चोला ले आकर पार्ट बजाती हैं। फिर वापिस जाना है। शरीर छोड़ना पड़ता है। इसमें तो खुशी होनी चाहिए। डरना नहीं चाहिए। तुम बहुत कमाई कर रहे हो। शरीर छोड़ने वाला खुद भी समझ सकते हैं। हमने कितनी कमाई की है। तुम समझते हो जो शरीर छोड़कर गये हैं उनमें से किसका मर्तबा बड़ा कहें, फलाना बहुत सर्विस करते थे। जाकर दूसरा शरीर लिया। इनएडवान्स गये। उनका इतना ही पार्ट था। फिर भी कुछ न कुछ ज्ञान लेने लिए आ जाए। हो सकता है। वारिस तो बन गये ना। किसके साथ हिसाब किताब चुक्तू करना होगा। वह क्लास करने गये। आत्मा में तो ज्ञान के संस्कार भी हैं। संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। वह गुम नहीं हो सकते। कहाँ अच्छी जगह सर्विस करते

10.6.87। प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम ब्राह्मण कुल से विष्णुकुल का बनने वाले हो इसलिए तुम्हें पक्का वैष्णव बनना है, कोई भी बेकायदे चीजें प्याज आदि भी नहीं खाना है"

प्रश्न:-तुम बच्चों को किस परीक्षा से डरना वा मूँझना नहीं है?उत्तर:-अगर चलते2 इस पुरानी जुत्ती(शरीर)को कोई तकलीफ होती है, बीमारी आदि आती है तो इससे डरना वा मूँझना नहीं है और ही खुश होना है। क्योंकि तुम जानते हो यह कर्मभोग है, पुराना हिसाब किताब चुक्तू हो रहा है। हम योगबल से हिसाब किताब नहीं चुक्तू कर सके तो कर्मभोग से चुक्तू हो रहा है। यह जल्दी खत्म हो तो अच्छा है।

गीत:-हमारे तीर्थ है.. ओम शान्ति। निराकार शिव भगवानुवाच। उनका तो एक ही नाम है। शिव भगवानुवाच- यह कहना पड़ता है। समझाने के लिए। पक्का निश्चय कराने के लिए। बाप को कहना पड़ता है-मैं जो हूँ, मेरा नाम कभी नहीं बदलता। सतयुग के जो देवी देवतायें है वह तो पुनर्जन्म में आते ही है। बच्चे जानते हैं जिस मात पिता को याद करते थे वह अब सामने बैठे हैं। बाप इस तन से बच्चों को समझा रहे हैं। हम रूहानी यात्रा पर है। बाप भी गुप्त है। दादा भी गुप्त है। कोईभी नहीं जानते। ब्रह्मा तन में परमपिता परमात्मा आते है। बच्चे भी गुप्त हैं। कौन जान सकते कि यह ब्राह्मणियां है। यह आवाज है, गुप्त है। बच्चे भी पूरा समझ नहीं सकते। कहतेहै हम शिवबाबा की सन्तान हैं सो उनसे वर्सा लेना है। उनकी श्रीमत पर चलना है। यह तो निश्चय है ही कि वह हमारा सुप्रीम बाप है। टीचर सतगुरू है। कितनी मीठी2बातें हैं। हम निराकार शिवबाबा के स्टूडेन्ट है। हमको राजयोग सिखलाते है। भगवानुवाच हे बच्चे मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। मेयर तो ऐसे नहीं कहेंगे, हे बच्चे। सन्यासी भी ऐसे कह न सकें। बच्चे कहना तो बाप का ही फर्ज है। बच्चे भी जानते है हम निराकार बाप के बच्चे हैं। उनके सम्मुख बैठे हैं। प्रजापिता बी0के0कुमारियां है। प्रजापिता अक्षर न डालने से मनुष्य मूँझते हैं। समझते हैं ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतनवासी देवता है। वह फिर यहाँ कहां से आया। कहते है ब्रह्मा देवताए नम:, शंकर देवताए नम: फिर गुरू भी कहते गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु, अब विष्णु वा शंकर तो गुरू है नहीं। समझते है पार्वती को कथा सुनाते है तो गुरू ठहरा। गुरू विष्णु भी नहीहै। सतयुग में ल0ना0गुरू बनते नहीं है। कृष्ण को भी बड़ा गुरू गीता का भगवान बना दिया है। लेकिन भगवान एक है, यह बात तुम बच्चों को सिद्ध करनाहै। तुम गुप्त सेना हो। रावण पर जीत पाते हो अर्थात् माया जीते जगतजीत बनतेहो। माया धन को नहीं कहा जाता। धन को सम्पत्ति कहा जाताहै। तो बाप बच्चों को समझाते हैं, बच्चे अब मौत सामने खड़ा है। यह वही 5हजार वर्ष पहले वाले अक्षर है। सिर्फ निराकार भगवानुवाच के बदले साकार कृष्ण का नाम लिख दिया है। बाप कहते है- यह नालेज जो तुमको अभी मिलती है। यहहै भविष्य प्रालब्ध केलिए। प्रालब्ध मिल गई फिर नालेज की दरकार नहीं। यह नालेज है ही पतित से पावन बनने की। पावन दुनिया मेंफिर किसी को गुरू करने की दरकार नहीं। वास्तव में गुरू तो एक ही परमपिता परमात्मा है। पुकारते भी हैं हे पतित पावन आओ तो समझाना चाहिए ना। वही सुप्रीम गुरू है। सर्व का सद्गति दाता राम गाया जाता है। तो वह जरूर तब आयेंगे जब सभी दुर्गति में है। कहते भी है हम पतित भ्रष्टाचारी हैं। विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। वहाँ तो है क्षीरसागर, सुख का सागर। विषय वैतरणी नदी वहाँ होगी नहीं। विष्णु क्षीर सागर में रहेंगे तो जरूर उनके बच्चे भी साथ रहेंगे। अभी तुम ब्राह्मण कुल के हो फिर विष्णु कुल के बनेंगे। वह तो कम्पलीट वैष्णव है ना। देवताओं के आगे कभी बेकायदे चीज प्याज आदि नहीं रखेंगे। फिर से ऐसा देवता बनना है। तो यह सब छोड़ना पड़ेगा। यह है संगम युग। समझाया गया है तुम ब्राह्मण ही संगम पर हो। बाकी सब कलियुग में हैं। जब तक ब्राह्मण न बनें तब तक समझ नहीं सकेंगे। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगम पर आता हूँ। वह समझते ही नहीं। यह कोई संगम है। दुनिया बदलती है ना। गाते भी हैं परन्तु कैसे बदलती यह कोई भी नहीं जानते। ऐसे ही सिर्फ मुख से कह देते हैं। तुम अच्छी रीति समझते हो...

6-11-97 प्रात:मुरली - ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

मीठे बच्चे - तुम्हें मनुष्य से देवता बनना है, इसलिए दैवी फ़ज़ीलत (मैनर्स) धारण करो, आसुरी अवगुणों को छोड़ते जाओ, पावन बनो

प्रश्न:- दैवी मैनर्स धारण करने वालों की परख किस एक बात से हो सकती है?

उत्तर:- सर्विस से। कहाँ तक पतित से पावन बने हैं और कितनों को पावन बनाने की सेवा करते हैं! अच्छे पुरुषार्थी हैं या अभी तक आसुरी अवगुण है? यह सब सर्विस से पता चलता है। तुम्हारी यह ईश्वरीय मिशन है ही दैवी फजीलत सिखलाने की। तुम श्रीमत पर पतित मनुष्य को पावन बनाने की सेवा करते हो।

गीत:- ओम नमो शिवाए...ओम् शान्ति।

भक्ति मार्ग में महिमा करते हैं–शिवाए नम: .. ऊंच ते ऊंच शिव, उनको ही शिव परमात्माए नम: कहा जाता है। ब्रह्मा देवताए नम:, विष्णु देवताए नम: कहा जाता है और शिव परमात्माए नम: ...फ़र्क हुआ ना। परमात्मा एक है, वह ऊंच ते ऊंच है। उनकी महिमा भी ऊंच है। इस समय ऊंचे ते ऊंचा कर्तव्य करते हैं। उनका धाम भी ऊंचे ते ऊंचा है। नाम भी ऊंच है और किसको परमात्मा नहीं कहते। परमात्मा के लिए ही गायन है–हे पतित-पावन, आते भी हैं पतित दुनिया और पतित शरीर में। पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इसमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करता हूँ। सूक्ष्मवतन वासी सम्पूर्ण ब्रह्मा में नहीं आते हैं। खुद कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ। बहुत जन्म लेते ही हैं राधे-कृष्ण। उनके बहुत जन्मों के अन्त का जन्म साधारण है। ऐसे तो कहते नहीं हैं कि मैं पावन शरीर में प्रवेश करता हूँ। भगवानुवाच मैं साधारण तन में आता हूँ। अब भगवान जरूर आकरके इस साधारण तन द्वारा आत्माओं को बैठ समझाते हैं कि मैं परमपिता परमात्मा हूँ। मैं कृष्ण की आत्मा नहीं हूँ, न ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की आत्मा हूँ। मैं परमपिता परमात्मा हूँ, जिसको शिव परमात्माए नम: कहा जाता है। मैं इसमें आया हूँ। मैं सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा में प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहां पतितों को पावन बनाना है। मेरे द्वारा ही वह सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा पावन बना है, इसलिए उनको सूक्ष्म में दिखाया है। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। परन्तु मनुष्य सुनी अनसुनी कर उल्टी बातों पर चलते रहते हैं। आसुरी बुद्धि से सुनते हैं। ईश्वरीय बुद्धि से सुनें तो संशय सब मिट जायें। त्रिमूर्ति का चित्र दिखाने बिगर समझाना मुश्किल है। उन्होंने त्रिमूर्ति ब्रह्मा नाम रख दिया है क्योंकि शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की रचना रचते हैं। तुम बच्चे अभी सम्मुख बैठे हो। सब पतित से पावन बन रहे हैं। जितना जो बनेगा वह सर्विस से दिखाई

पड़ेगा। यह अच्छा पुरुषार्थी है, इनमें अजुन अवगुण हैं। देवताओं में दैवीगुण थे। हर एक अपने आसुरी गुण और उन्हों के दैवीगुण वर्णन करते हैं। अभी आसुरी अवगुणों को छोड़ना है। नहीं तो ऊंच पद नहीं पा सकेंगे।

बाप समझाते हैं – बच्चे दैवीगुण धारण करो। खान-पान, चलन में फ़ज़ीलत चाहिए। पतित मनुष्यों को बदफ़ज़ीलत कहेंगे। देवतायें फ़ज़ीलत (मैनर्स) वाले हैं, तब तो उन्हों का गायन है। हर एक को पुरुषार्थ करना है – जो करेगा, सो पायेगा। अब भगवान तुमको सहज राजयोग और ज्ञान सिखला रहे हैं। ज्ञान सागर एक बाप है, जो तुम्हें ज्ञान देकर सद्गति में ले जाते हैं। उन्हें ही सुखदेव भी कहा जाता है। तो यहां की सब बातें न्यारी हैं। जो ब्राह्मण बनने वाले होंगे उन्हों की ही बुद्धि में यह ज्ञान बैठेगा। बहुत करके पुछते हैं – दादा को ब्रह्मा क्यों बनाया है? बोलो, इन बातों को बैठकर समझो। हम तुमको इनके 84 जन्मों की कहानी सुनायें। सब ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियाँ पावन बन देवता बन जायेंगे। पावन बनने बिगर वर्सा मिल नहीं सकता। भगवान ऊंच ते ऊंच निराकार शिवबाबा है। वर्सा देने के लिए जरूर ब्रह्मा तन में आयेगा। यह प्रजापिता ब्रह्मा है, सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोड़ेही प्रजा रचेंगे। हम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ साकार में हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा भी साकार में है। यह राज़ आकर समझो। हम इस दादा को भगवान नहीं कहते। यह प्रजापिता है, इनके तन में शिवबाबा आते हैं, पावन बनाने। यहां कोई पावन है नहीं। त्रिमूर्ति शिव के बदले त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह दिया है। परन्तु त्रिमूर्ति ब्रह्मा का कोई अर्थ नहीं है। ब्रह्मा को मनुष्यों का रचयिता भी कहते हैं इसलिए प्रजापिता कहा जाता है। इसमें वह निराकार प्रवेश कर वर्सा देते हैं। सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा पावन है। वह पतित से पावन बनते हैं। हम ब्राह्मण भी पतित से पावन देवता बनते हैं। शिव परमात्माए नमः कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को देवता कहा जाता है। भगवान ही भक्तों का रक्षक है। वही सबको सद्गति देंगे। पतित-पावन हैं तो जरूर आकर पतितों को पावन बनायेंगे। पहले-पहले पावन हैं लक्ष्मी-नारायण। वे जरूर पुनर्जन्म लेते होंगे। 84 जन्म पूरे होने से फिर साधारण मनुष्य बन जाते हैं। उनमें फिर बाप प्रवेश करते हैं। तो यह व्यक्त ब्रह्मा, वह अव्यक्त ब्रह्मा। सूक्ष्मवतन में सृष्टि नहीं रची जाती है। अक्सर करके लोग इस बात पर मूँझते हैं तो तुमको समझाना है, बाप कहते हैं मैं बहुत जन्मों अर्थात् 84 जन्मों के अन्त के जन्म में प्रवेश करता हूँ। भारत में पहले देवी-देवता आये, वह फिर पिछाड़ी में हो जायेंगे। फिर पहले वही जाकर देवी-देवता बनेंगे। विराट रूप का चित्र भी जरूर होना चाहिए। बच्चों ने अर्थ सहित बनाया है। ब्राह्मण चोटी, देवता सिर, क्षत्रिय भुजायें, वैश्य पेट, शूद्र पैर। शूद्र के बाद फिर ब्राह्मण। वर्णो का भी चक्र हुआ ना। यह भी समझना और समझाना है।

बाबा ने बहुत बार समझाया है कि अखबार में पड़ता है फलाना स्वर्गवासी हुआ, तो उनको चिट्ठी लिखनी चाहिए कि स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्क में था। और अब है ही नर्क तो जरूर पुनर्जन्म नर्क में लेंगे। अगर स्वर्ग में गया फिर तुम उनको बुलाकर नर्क का भोजन क्यों खिलाते हो? तुम रोते क्यों हो? परन्तु इतनी बुद्धि नहीं है जो समझें कि स्वर्ग की स्थापना तो बाप ही आकर करते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। तुम ब्राह्मण संगम पर बाप से वर्सा ले रहे हो, बाकी सब हैं कलियुग में। संगम पर आत्मा परमात्मा मिल रहे हैं, इनको कुम्भ का मेला कहा जाता है। तुम ज्ञान गंगायें ज्ञान सागर से निकली हो। भक्ति में समझते हैं — गंगा में स्नान करने से पावन बन जायेंगे। पावन बनाना तो तुम्हारी मिशन का कर्तव्य है। यह है ईश्वरीय मिशन। तुम ही पतित मनुष्य को पावन देवता बनाते हो श्रीमत पर। श्रीकृष्ण पतित-पावन नहीं है। वह पूरे 84 जन्म लेते हैं। पहले हैं लक्ष्मी-नारायण फिर अन्त में ब्रह्मा सरस्वती। आदि देव, आदि देवी बनते हैं, अभी यह बातें किसने समझाई? शिव परमात्माए नम: गाते भी हैं — हे परमपिता परमात्मा आपकी गत मत सबसे न्यारी है। वह श्रीमत देते हैं गति के लिए। गति और सद्‌गति। दुर्गति वालों की सद्‌गति करने वाला। उनकी श्रीमत सब मनुष्यों से न्यारी है। बाकी भक्ति मार्ग है घोर रात्रि, आधाकल्प है ज्ञान दिन। शिवबाबा कहते हैं मैं अन्धियारी रात को आता हूँ, रात को दिन बनाने। यह ज्ञान एक ही ज्ञान सागर शिवबाबा के पास है। ऋषि मुनि आदि सब कहते आये हैं कि परमात्मा बेअन्त है। बाप को नहीं जानते तो गोया नास्तिक ठहरे। आधाकल्प है नास्तिक, आधाकल्प है आस्तिक। तुम अब बाप को, बाप की रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो और कोई नहीं जानते। इसलिए कहा जाता है - निधन के। अनेक धर्म अनेक मतें हो गई हैं। अब बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया का सन्यास करना है। याद करना है शान्तिधाम और सुखधाम को। जितना याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। गृहस्थ व्यवहार में भल रहो सिर्फ पवित्र बनो। धन्धे बिगर गृहस्थ कैसे चलेगा। सिर्फ पवित्र बनना है और बाप को याद करना है। बाप कहते हैं मैं सोनार भी हूँ। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। इसलिए तुम्हारी आत्मा जब पावन बनें तब फिर शरीर भी पावन मिले। सच्चे सोने का जेवर भी ऐसा बनेगा ना। अब तो आत्मा और शरीर दोनों ही आइरन एजड हैं। फिर पावन बनाने की युक्ति बाप बताते हैं। इसलिए कहते हैं तुम्हारी गत मत, श्रीमत सबसे न्यारी है। अभी तुम जानते हो यह सद्‌गति का रास्ता कोई बतला नहीं सकते हैं। गायन होता है तो जरूर कुछ करके गये हैं। अभी कलियुग है फिर सतयुग होना है। संगम पर तुम बैठे हो। तुम ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण हो। कमल फूल सम पवित्र रहते हो। तुम्हारी माया के साथ युद्ध है। माया से ही कई फेल हो जाते हैं। काम का घूँसा जोर से लगता है। बाबा कहते हैं

खबरदार रहो। अगर गिरा तो फिर किसी को कह नहीं सकेंगे कि काम महाशत्रु है। बाप कहते हैं फिर भी पुरुषार्थ करो, एक बार हराया, दूसरी बार हराया फिर अगर तीसरी बार हराया तो खत्म। पद भ्रष्ट हो जायेगा। प्रतिज्ञा की है तो उस पर पूरा रहना है। प्रतिज्ञा कर फिर पतित नहीं बनना चाहिए। परन्तु सब तो प्रतिज्ञा पर कायम नहीं रहते हैं। गिरते भी रहते हैं। कोई फिर बाप को छोड़ भी देते हैं। बहुत भागने वाले भी हैं। अन्त में तुमको पूरा साक्षात्कार होगा कि कौन क्या बनेंगे! पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए। जो दु:ख देते हैं वह दु:खी होकर मरते हैं। बाप तो सबको सुख देने वाला है। तुम्हारा भी काम है सबको सुख देना। कर्मणा में भी किसको दु:ख दिया तो दु:खी होकर मरेंगे। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। बेहद के बाप के साथ पूरा फरमानबरदार, वफ़ादार होकर रहना है । अच्छा-

मीठे-मीठे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप के साथ वफ़ादार, फरमानबरदार होकर रहना है। कभी किसी को दु:ख नहीं देना है।

२- बाप से पूरा वर्सा लेने के लिए पवित्र बनने का पुरुषार्थ करना है। काम की चोट कभी नहीं खानी है। इससे बहुत सावधान रहना है।

वरदान:- सदा खुशी की खुराक खाने वाले और खुशी बांटने वाले, खुशनसीब बेफिक्र भव

ब्राह्मण जीवन की खुराक खुशी है। जो सदा खुशी की खुराक खाने वाले और खुशी बांटने वाले हैं वही खुशनसीब हैं। उनके दिल से यही निकलता कि मेरे जैसा खुशनसीब और कोई नहीं। भले सागर की लहरें भी डुबोने आ जाएं तो भी फिक्र नहीं क्योंकि जो योगयुक्त हैं वह सदा ही सेफ हैं। इसलिए सारे कल्प में इस समय ही आप बेफिक्र जीवन का अनुभव करते हो। सतयुग में भी बेफिक्र होंगे लेकिन ज्ञान नहीं होगा।

स्लोगन:-

सहज पुरुषार्थी बनना है तो सर्व की दुआओं से स्वयं को भरपूर करो।

25-2-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – माया दुश्मन तुम्हारे सामने है इसलिए अपनी बहुत-बहुत सम्भाल करनी है, अगर चलते-चलते माया में फँस गये तो अपनी तकदीर को लकीर लगा देंगे" (b)

प्रश्न:- तुम राजयोगी बच्चों का मुख्य कर्तव्य क्या है?

उत्तर:- पढ़ना और पढ़ाना, यही तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है। तुम हो ईश्वरीय मत पर। तुम्हें कोई जंगल में नहीं जाना है। घर गृहस्थ में रहते शान्ति में बैठ बाप को याद करना है। अल्फ और बे, इन्हीं दो शब्दों में तुम्हारी सारी पढ़ाई आ जाती है। (a)

(a) अव्यक्त पढ़ाई

ओम् शान्ति। बाप भी ब्रह्मा द्वारा कह सकते हैं कि बच्चों गुडमॉर्निंग। परन्तु फिर बच्चों को भी रेसपान्ड देना पड़े। यहाँ है ही बाप और बच्चों का कनेक्शन। नये जो हैं जब तक पक्के हो जाएं, कुछ न कुछ पूछते रहेंगे। यह तो पढ़ाई है, भगवानुवाच भी लिखा है। भगवान है निराकार। यह बाबा अच्छी रीति पक्का कराते हैं, किसको भी समझाने के लिए क्योंकि उस तरफ है माया का जोर। यहाँ तो वह बात नहीं है। बाप तो समझते हैं जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया है वह आपेही आ जायेंगे। ऐसे नहीं कि फलाना चला न जाए, इनको पकड़ें। चला जाए तो चला जाए। यहाँ तो जीते जी मरने की बात है। बाप एडाप्ट करते हैं। एडाप्ट किया ही जाता है कुछ वर्सा देने के लिए। बच्चे माँ-बाप के पास आते ही हैं वर्से की लालच पर। साहूकार का बच्चा कभी गरीब के पास एडाप्ट होगा क्या! इतना धन दौलत आदि सब छोड़ कैसे जायेंगे। एडाप्ट करते हैं साहूकार। अभी तुम जानते हो बाबा हमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। क्यों न उनका बनेंगे। हर एक बात में लालच तो रहती है। जितना बहुत पढ़ेंगे उतनी बड़ी लालच होगी। तुम भी जानते हो बाप ने हमको एडाप्ट किया है बेहद का वर्सा देने। बाप भी कहते हैं तुम सबको हम फिर से 5 हज़ार वर्ष पहले मुआफ़िक एडाप्ट करते हैं। तुम भी कहते हो बाबा हम आपके हैं। 5 हज़ार वर्ष पहले भी आपके बने थे। तुम प्रैक्टिकल में कितने ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो। प्रजापिता भी तो नामीग्रामी है। जब तक शूद्र से ब्राह्मण न बनें तो देवता बन न सकें। तुम बच्चों की बुद्धि में अब यह चक्र फिरता रहता है—हम शूद्र थे, अभी ब्राह्मण बने हैं फिर देवता बनना है। सतयुग में हम राज्य करेंगे। (तो इस पुरानी दुनिया का विनाश जरूर होना है। पूरा निश्चय नहीं बैठता है तो फिर चले जाते हैं। कई कच्चे हैं जो गिर जाते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। माया दुश्मन सामने खड़ी है, तो वह अपनी तरफ खींच लेती है। बाप घड़ी-घड़ी पक्का कराते हैं, माया में फँस नहीं पड़ना, नहीं तो अपनी तकदीर को लकीर लगा देंगे। बाप ही पूछ सकते हैं कि आगे कब मिले हो? और कोई को पूछने का अक्ल आयेगा ही नहीं। बाप कहते हैं मुझे भी फिर से गीता सुनाने आना पड़े। आकर रावण की जेल से छुड़ाना पड़े। बेहद का बाप बेहद की बात समझाते हैं। अभी रावण का राज्य है, पतित राज्य है जो आधाकल्प से शुरू हुआ है। रावण को 10 शीश दिखाते हैं, विष्णु को 4 भुजा दिखाते हैं। ऐसे कोई मनुष्य होता नहीं। यह तो प्रवृत्ति मार्ग दिखाया जाता है।) यह है एम आब्जेक्ट, (b)

विष्णु द्वारा पालना। विष्णुपुरी को कृष्णपुरी भी कहते हैं। कृष्ण को तो २ बाहें ही दिखायेंगे ना। मनुष्य तो कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप हर एक बात समझाते हैं। वह सब है भक्ति मार्ग। अभी तुमको ज्ञान है, तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है नर से नारायण बनने की। यह गीता पाठशाला है ही जीवनमुक्ति प्राप्त करने के लिए। ब्राह्मण तो जरूर चाहिए। यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। शिव को रूद्र भी कहते हैं। अब बाप पूछते हैं ज्ञान यज्ञ कृष्ण का है या शिव का है? शिव परमात्मा ही कहते हैं, शंकर को देवता कहते हैं। उन्होंने फिर शिव और शंकर को इकट्ठा कर दिया है। अब बाप कहते हैं हमने इनमें प्रवेश किया है। तुम बच्चे कहते हो बापदादा। वह कहते हैं शिवशंकर। ज्ञान सागर तो है ही एक।

अभी तुम जानते हो ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं ज्ञान से। चित्र भी बरोबर बनाते हैं। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। इसका अर्थ भी कोई समझ नहीं सकते। ब्रह्मा को शास्त्र हाथ में दिये हैं। अभी शास्त्रों का सार बाप बैठ सुनाते हैं या ब्रह्मा? यह भी मास्टर ज्ञान सागर बनते हैं। बाकी चित्र इतने ढेर बनाये हैं, वह कोई यथार्थ है नहीं। वह हैं सब भक्ति मार्ग के। मनुष्य कोई 8-10 भुजा वाले होते नहीं। यह तो सिर्फ प्रवृत्ति मार्ग दिखाया है। रावण का भी अर्थ बताया है—आधाकल्प है रावण राज्य, रात। आधाकल्प है रामराज्य, दिन। बाप हर एक बात समझाते हैं। तुम सब एक बाप के बच्चे हो। बाप ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना करते हैं और तुमको राजयोग सिखाते हैं। जरूर संगम पर ही राजयोग सिखायेंगे। द्वापर में गीता सुनाई, यह तो रॉंग हो जाता है। बाप सच बतलाते हैं। बहुतों को ब्रह्मा का, कृष्ण का साक्षात्कार होता है। ब्रह्मा का सफेद पोश ही देखते हैं। शिवबाबा तो है बिन्दी। बिन्दी का साक्षात्कार हो तो कुछ समझ न सकें। तुम कहते हो हम आत्मा हैं, अब आत्मा को किसने देखा है, कोई ने नहीं। वह तो बिन्दी है। समझ सकते हैं ना। जो जिस भावना से जिसकी पूजा करते हैं, उनको वही साक्षात्कार होगा। दूसरा अगर रूप देखें तो मूँझ पड़ें। हनूमान की पूजा करेगा तो उनको वही दिखाई पड़ेगा। गणेश के पुजारी को वही दिखाई पड़ेगा। बाप कहते हैं हमने तुमको इतना धनवान बनाया, हीरे जवाहरों के महल थे, तुमको अनगिनत धन था, तुमने अभी वह सब कहाँ गँवाया? अभी तुम कंगाल बन गये हो, भीख माँग रहे हो। बाप तो कह सकते हैं ना। अभी तुम बच्चे समझते हो बाप आये हैं, हम फिर से विश्व के मालिक बनते हैं। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। हरेक ड्रामा में अपना पार्ट बजा रहे हैं। कोई एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेते हैं, इसमें रोने की क्या बात है। सतयुग में कभी रोते नहीं। अभी तुम मोहजीत बन रहे हो। मोहजीत राजायें यह लक्ष्मी-नारायण आदि हैं। वहाँ मोह होता नहीं। बाप अनेक प्रकार की बातें समझाते रहते हैं। बाप है निराकार। मनुष्य तो उसे नाम-रूप से न्यारा कह देते हैं। लेकिन नाम-रूप से न्यारी कोई चीज थोड़ेही होती है। हे भगवान, ओ गॉड फादर कहते हैं ना। तो नाम-रूप है ना। लिंग को शिव परमात्मा, शिवबाबा भी कहते हैं। बाबा तो है ना बरोबर। बाबा के जरूर बच्चे भी होंगे। निराकार को निराकार आत्मा ही बाबा कहती है। मन्दिर में जायेंगे तो उनको कहेंगे

शिवबाबा फिर घर में आकर बाप को भी कहते हैं बाबा। अर्थ तो समझते नहीं, हम उनको शिवबाबा क्यों कहते हैं! बाप बड़े ते बड़ी पढ़ाई दो अक्षर में पढ़ाते हैं–अलफ और बे। अलफ को याद करो तो बे-बादशाही तुम्हारी है। यह बड़ा भारी इम्तहान है। मनुष्य बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो पहले वाली पढ़ाई कोई याद थोड़ेही रहती है। पढ़ते-पढ़ते आखरीन तन्त (सार) बुद्धि में आ जाता है। यह भी ऐसे है। तुम पढ़ते आये हो। अन्त में फिर बाप कहते हैं मन्मनाभव, तो देह का अभिमान टूट जायेगा। यह मन्मनाभव की आदत पड़ी होगी तो पिछाड़ी में भी बाप और वर्सा याद रहेगा। मुख्य है ही यह, कितना सहज है। उस पढ़ाई में भी अभी तो पता नहीं क्या-क्या पढ़ते हैं। जैसे राजा वैसा वह अपनी रसम चलाते हैं। आगे मन, सेर, पाव का हिसाब चलता था। अभी तो किलो आदि क्या-क्या निकल पड़ा है। कितने अलग-अलग प्रान्त हो गये हैं। देहली में जो चीज एक रूपया सेर, बाम्बे में मिलेगी दो रूपया, क्योंकि प्रान्त अलग-अलग हैं। हरेक समझते हैं हम अपने प्रान्त को भूख थोड़ेही मारेंगे। कितने झगड़े आदि होते हैं, कितना रोला है।

भारत कितना सालवेन्ट था फिर 84 का चक्र लगाते इन्सालवेन्ट बन पड़े हैं। कहा जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक कौड़ी बदले खोया रे.......बाप कहते हैं तुम कौड़ियों के पिछाड़ी क्यों मरते हो। अब तो बाप से वर्सा लो, पावन बनो। बुलाते भी हो–हे पतित-पावन आओ, पावन बनाओ। तो इससे सिद्ध है पावन थे, अब नहीं हैं। अभी है ही कलियुग। बाप कहते हैं मैं पावन दुनिया बनाऊंगा तो पतित दुनिया का जरूर विनाश होगा। इसलिए ही यह महाभारत लडाई है जो इस रूद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। ड्रामा में तो यह विनाश होने की भी नूँध है। पहले-पहले तो बाबा को साक्षात्कार हुआ। देखो इतनी बड़ी राजाई मिलती है तो बहुत खुशी होने लगी, फिर विनाश का साक्षात्कार भी कराया। मन्मनाभव, मध्याजीभव। यह गीता के अक्षर हैं। कोई-कोई अक्षर गीता के ठीक हैं। बाप भी कहते हैं तुमको यह ज्ञान सुनाता हूँ, यह फिर प्राय: लोप हो जाता है। कोई को भी पता नहीं है कि लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। उस समय जनसंख्या कितनी थोड़ी होगी, अब कितनी है। तो यह चेन्ज होनी चाहिए। जरूर विनाश भी चाहिए। महाभारत लड़ाई भी है। और कोई शास्त्र में इनका वर्णन नहीं है, जरूर भगवान भी होगा। कृष्ण तो हो न सके। तब किसने बनाया? शिव जयन्ती मनाते हैं। शिवबाबा ने क्या आकर किया? वह भी नहीं जानते हैं। अब बाप समझाते हैं, गीता से कृष्ण की आत्मा को राजाई मिली। मात-पिता कहेंगे गीता को, जिससे तुम फिर देवता बनते हो। इसलिए चित्र में भी दिखाया है–कृष्ण ने गीता नहीं सुनाई। कृष्ण गीता के ज्ञान से राजयोग सीख यह बना, कल फिर कृष्ण होगा। उन्होंने फिर शिवबाबा के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। तो बाप समझाते हैं, यह तो अपने अन्दर पक्का निश्चय कर लो, कोई उल्टी-सुल्टी बात सुनाकर तुम्हें गिरा न दे। बहुत बातें पूछते हैं–विकार बिगर सृष्टि कैसे चलेगी? यह कैसे होगा? अरे, तुम खुद कहते हो–वह वाइसलेस दुनिया थी। सम्पूर्ण निर्विकारी कहते हो ना फिर विकार की बात कैसे हो सकती है? अब तुम

जानते हो बेहद के बाप से बेहद की बादशाही मिलती है, तो ऐसे बाप को क्यों नहीं याद करेंगे? यह है ही पतित दुनिया। कुम्भ के मेले पर कितने लाखों जाते हैं। अब कहते हैं वहाँ एक नदी गुप्त है। अब नदी गुप्त हो सकती है क्या? यहाँ भी गऊमुख बनाया है। कहते हैं गंगा यहाँ आती है। अरे, गंगा अपना रास्ता लेकर समुद्र में जायेगी कि यहाँ तुम्हारे पास पहाड़ पर आयेगी। भक्ति मार्ग में कितने धक्के हैं। ज्ञान, भक्ति फिर है वैराग्य। एक है हद का वैराग्य, दूसरा है बेहद का। सन्यासी घरबार छोड़ जंगल में रहते हैं, यहाँ तो वह बात नहीं। तुम बुद्धि से सारी पुरानी दुनिया का सन्यास करते हो। तुम राजयोगी बच्चों का मुख्य कर्तव्य है पढ़ना और पढ़ाना। अब राजयोग कोई जंगल में थोड़ेही सिखाया जाता है। यह स्कूल है। ब्रांचेज निकलती जाती हैं। तुम बच्चे राजयोग सीख रहे हो। शिवबाबा से पढ़े हुए ब्राह्मण-ब्राह्मणियां सिखाते हैं। एक शिवबाबा थोड़ेही सबको बैठ सिखायेगा। तो यह हुई पाण्डव गवर्मेन्ट। तुम हो ईश्वरीय मत पर। यहाँ तुम कितना शान्ति में बैठे हो, बाहर तो अनेक हंगामें हैं। बाप कहते हैं 5 विकारों का दान दो तो ग्रहण छूट जायेगा। मेरे बनो तो मैं तुम्हारी सब कामनायें पूरी कर दूँगा। तुम बच्चे जानते हो अभी हम सुखधाम में जाते हैं, दु:खधाम को आग लगनी है। बच्चों ने विनाश का साक्षात्कार भी किया है। अब टाइम बहुत थोड़ा है इसलिए याद की यात्रा में लग जायेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और ऊंच पद पायेंगे। अच्छा!

मीठें-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप के वर्से का पूरा अधिकार लेने के लिए जीते जी मरना है। एडाप्ट हो जाना है। कभी भी अपनी ऊंची तकदीर को लकीर नहीं लगानी हैं।

२. कोई भी उल्टी-सुल्टी बात सुनकर संशय में नहीं आना है। ज़रा भी निश्चय न हिले। इस दु:खधाम को आग लगने वाली है इसलिए इससे अपना बुद्धियोग निकाल लेना है।

वरदान:- सम्पूर्णता की रोशनी द्वारा अज्ञान का पर्दा हटाने वाली पुरुषोत्तम आत्मा भव

आप पुरूषोत्तम आत्मायें विश्व को सुख-शान्ति की सांस देने के निमित्त हो, आप धरती के सितारे इस विश्व को हलचल से बचाए सुखी संसार, स्वर्णिम संसार बनाने वाले हो। इसलिए ऐसे सर्च लाइट बनो जो आपके सम्पूर्णता की रोशनी से अज्ञान का पर्दा हट जाए। अभी प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है इसलिए अन्तर्मुखी बन गुह्य अनुभवों के रत्नों से स्वयं को भरपूर बनाओ।

स्लोगन:-

जब गुणों वा विशेषताओं का अभिमान न हो तब कहेंगे ज्ञानी तू आत्मा।

"बाप समान बनने के लिए दो बातों की दृढ़ता रखो- स्वमान में रहना है और सबको सम्मान देना है"

आज बापदादा अपने प्यारे ते प्यारे, मीठे ते मीठे छोटे से ब्राह्मण परिवार कहो, ब्राह्मण संसार कहो, उसको ही देख रहे हैं। यह छोटा सा संसार कितना न्यारा भी है तो प्यारा भी है। क्यों प्यारा है? क्योंकि इस ब्राह्मण संसार की हर आत्मा विशेष आत्मा है। देखने में तो अति साधारण आत्मायें आती हैं लेकिन सबसे बड़े से बड़ी विशेषता हर एक ब्राह्मण आत्मा की यही है जो परम आत्मा को अपने दिव्य बुद्धि द्वारा पहचान लिया है। चाहे 90 वर्ष के बुजुर्ग हैं, बीमार हैं लेकिन परमात्मा को पहचानने की दिव्य बुद्धि, दिव्य नेत्र सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के नामीग्रामी वी.वी.आई.पी. में भी नहीं है। यह सभी मातायें क्यों यहाँ पहुंची हैं? टाँगे चलें, नहीं चलें लेकिन पहुँच तो गई हैं। तो पहचाना है तब तो पहुँचा हैं ना! यह पहचानने का नेत्र, पहचानने की बुद्धि सिवाए आपके किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकता। सभी मातायें यह गीत गाती हो ना - हमने देखा, हमने जाना। यह नशा है माताओं को! हाथ हिला रही हैं। बहुत अच्छा। पाण्डवों को नशा है? एक दो से आगे हैं, न शक्तियों में कमी है, न पाण्डवों में कमी है। लेकिन बापदादा को यही खुशी है कि यह छोटा सा संसार कितना प्यारा है। जब आपस में भी मिलते हो तो कितनी प्यारी आत्मायें लगती हैं।

बापदादा देश-विदेश की सर्व आत्माओं द्वारा आज यही दिल का गीत सुन रहे थे - बाबा, मीठा बाबा हमने जाना, हमने देखा। यह गीत गाते-गाते चारों ओर के बच्चे एक तरफ खुशी में, दूसरी तरफ स्नेह के सागर में समाये हुए थे। जो भी चारों ओर के यहाँ साकार में नहीं हैं लेकिन दिल से, दृष्टि से बापदादा के सामने हैं और बापदादा भी साकार में दूर बैठे हुए बच्चों को सम्मुख हो देख रहे हैं। बापदादा को चाहे देश है, चाहे विदेश है, कितने में पहुंच सकते हैं, चक्कर लगा सकते हैं? बापदादा चारों ओर के बच्चों को रिटर्न में अरब-खरब से भी ज्यादा याद-प्यार दे रहे हैं। चारो ओर के बच्चों को देख-देख सबके दिलों में एक ही संकल्प देख रहे हैं, सभी नयनों से यही कह रहे हैं - हमें परमात्म 6 मास का होम वर्क याद है। आप सबको भी याद है ना! भूल तो नहीं गया? पाण्डवों को याद है? अच्छी तरह से याद है? क्यों बापदादा बार-बार याद दिलाता है? कारण? समय को देख रहे हो, ब्राह्मण आत्मायें स्वयं को भी देख रही हैं। मन जवान होता जाता है, तन बुजुर्ग होता जाता है। समय और आत्माओं की पुकार अच्छी तरह से सुनने में आ रही है। तो बापदादा देख रहे थे - आत्माओं की पुकार दिल में बढ़ती जा रही है, हे सुखदेवा, हे शान्ति देवा, हे सच्ची खुशी देवा थोड़ी सी अंचली हमें भी दे दो। सोचो, पुकार करने वालों की लाइन कितनी बड़ी है! आप सभी सोचते हो - बाप की प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी हो जाए लेकिन प्रत्यक्षता किस कारण से रुकी हुई है? जब आप सभी भी यही संकल्प करते हो और दिल की चाहना भी रखते हो, मुख से कहते भी हो - हमें बाप समान बनना है। बनना है ना? है बनना? अच्छा, फिर बनते क्यों नहीं हो? बापदादा ने बाप समान बनने को कहा है, क्या बनना है, कैसे बनना है। समान शब्द में यह दोनों क्वेश्चन उठ नहीं सकते। क्या बनना है? उत्तर है ना बाप समान बनना है। कैसे बनना है? समान शब्द में ये दोनो ही क्वेश्चन उठ नहीं सकते। क्या बनना है? उत्तर है ना बाप समान बनना है। कैसे बनना है? फालो फादर - फुटस्टैप फादर-मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर। क्या फालो करना भी नहीं आता? फालो तो आजकल के जमाने में अंधे भी कर लेते हैं। देखा है आजकल, वह लकड़ी के आवाज़ पर, लकड़ी को फालो करते-करते कहा के कहा पहुँच जाते हैं। आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान है। त्रिनेत्री हैं, त्रिकालदर्शी हैं। फालो करना आपके लिए क्या बड़ी बात है! बड़ी बात है क्या, बोलो बड़ी बात है? है नहीं लेकिन हो जाती है। बापदादा ने देखा है, हर एक ब्राह्मण आत्मा के पास, बापदादा सब जगह चक्कर लगाते हैं। सेन्टर पर भी, प्रवृत्ति में भी। हर एक सेन्टर पर, हर एक की

प्रवृत्ति के स्थान पर जहाँ-तहाँ ब्रह्मा बाप के चित्र बहुत रखे हुए हैं। चाहे अव्यक्त बाप के, चाहे ब्रह्मा बाप के, जहाँ तहाँ चित्र ही चित्र दिखाई देते हैं। अच्छी बात है। लेकिन बापदादा यह सोचते हैं कि चित्र को देख चरित्र तो याद आते हैं ना! कि नहीं? सिर्फ चित्र ही देखते हो! चित्र को देख प्रेरणा तो मिलती है ना! तो बापदादा और तो कुछ कहते नहीं हैं सिर्फ एक ही शब्द कहते है - फोलो करो, बस। सोचो नहीं, ज्यादा प्लैन नहीं बनाओ, यह नहीं वह करें, ऐसा नहीं वैसा, वैसा नहीं ऐसा। नहीं। जो बाप ने किया, कापी करना है, बस। कापी करना नहीं आता! आजकल तो साइन्स ने फोटो कापी की भी मशीन निकाल ली है। निकाली है ना! फोटो कापी है ना यहाँ? तो यह चित्र रखते हैं ब्रह्मा बाप का। भल रखो, अच्छी तरह से रखो, बड़े बड़े रखो। लेकिन फोटो कॉपी तो करो ना!

तो बापदादा आज चारों ओर का चक्कर लगाते यह देख रहे थे, चित्र से प्यार है या चरित्र से प्यार है? संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है, बाकी क्या चाहिए? बापदादा ने देखा, कोई भी चीज को अच्छी तरह से मजबूत करने के लिए चार ही कोनों से उसको पक्का किया जाता है। तो बापदादा ने देखा तीन कोने तो पक्के हैं, एक कोना और पक्का होना है। संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है, किसी से भी पूछो क्या बनना है? हर एक कहता है, बाप समान बनना है। कोई भी यह नहीं कहता है - बाप से कम बनना है, नहीं। समान बनना है। अच्छी बात है। एक कोना मजबूत करते हो लेकिन चलते-चलते ढीला हो जाता है, वह है दृढ़ता। संकल्प है, लक्ष्य है लेकिन कोई पर-स्थिति आ जाती है, साधारण शब्दों में उसको आप लोग कहते हैं बात आ जाती है, वह दृढ़ता को ढीला कर देती है। दृढ़ता उसको कहा जाता है, मर जाये, मिट जाये लेकिन संकल्प न जाये। झुकना पडे, मरना पडे, जीते जी अपने को मोड़ना पडे, सहन करना पडे, सुनना पडे लेकिन संकल्प नहीं जाये। इसको कहा जाता है दृढ़ता। जब छोटे-छोटे बच्चे ओम निवास में आये थे तो ब्रह्मा बाबा उन्हों को हँसी-हँसी में याद दिलाता था, पक्का बनाता था कि इतना-इतना पानी पियेंगे, इतनी मिर्ची खायेंगे, डरेंगे तो नहीं। ऐसे हाथ से आंख के सामने करते हैं.....। तो ब्रह्मा बाप छोटे-छोटे बच्चों को पक्का करते थे, चाहे कितनी भी समस्या आ जाए, संकल्प की आँख हिले नहीं। तो बापदादा आज भी बच्चों से पूछते हैं। वह तो लाल मिर्ची और पानी का मटका था, छोटे बच्चे थे ना। आप तो सभी अभी बड़े हो, तो बापदादा पूछते हैं कि आपका दृढ सकल्प है, सकल्प में दृढ़ता है कि बाप समान बनना ही है? बनना है नहीं, बनना ही है। अच्छा - इसमें हाथ हिलायें। टी.वी. वाले निकालो। टी.वी. काम में आना चाहिए ना। बड़ा-बड़ा हाथ करो। अच्छा - मातायें भी उठा रही हैं। पीछे वाले और ऊँचा हाथ करो। अच्छा। बहुत अच्छा। केबिन वाले नहीं उठा रहे हैं। केबिन वाले तो निमित्त हैं। अच्छा। थोड़ी घड़ी के लिए तो हाथ उठाके बापदादा को खुश कर दिया।

अभी बापदादा सिर्फ एक ही बात बच्चों से कराना चाहते है, कहना नहीं चाहते, कराना चाहते हैं। सिर्फ अपने मन में दृढ़ता लाओ, थोड़ी सी बात में संकल्प को ढीला नहीं कर दो। कोई इनसल्ट करे, कोई घृणा करे, कोई अपमान करे, निंदा करे, शुभ भावना मिट नहीं जाए। कभी भी कोई दुःख दे, आप चेलेन्ज करते हो हम माया को, प्रकृति को परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक है, अपना आक्यूपेशन तो याद है ना? विश्व परिवर्तक तो हो ना! अगर कोई अपने संस्कार के वश आपको दुःख भी दे, चोट लगाये, हिलाये, तो क्या आप दुःख की बात को सुख में परिवर्तन नहीं कर सकते हो? इनसल्ट को सहन नहीं कर सकते हो? गाली को गुलाब नहीं बना सकते हो? समस्या को बाप समान बनने के सकल्प में परिवर्तन नहीं कर सकते हो? आप सबको याद है जब आप ब्राह्मण जन्म में आये और निश्चय किया, चाहे आपको एक सेकण्ड लगा या एक मास लगा लेकिन जब से आपने निश्चय किया, दिल ने कहा ''मैं बाबा का, बाबा मेरा।'' संकल्प किया ना, अनुभव किया ना! तब से आपने माया को चैलेन्ज किया कि मैं मायाजीत बनूँगा। बनूँगी। किया था यह चैलेन्ज माया को? मायाजीत बनना है कि नहीं? मायाजीत आप ही हैं ना या दूसरे आने हैं अभी? जब माया को चैलेन्ज किया तो यह समस्यायें, यह बात, यह हलचल माया के ही तो रॉयल रूप हैं। माया और तो कोई रूप में आयेगी नहीं। इन रूपों में ही मायाजीत बनना है। बात नहीं बदलेगी, सेन्टर नहीं बदलेगा, स्थान नहीं बदलेगा, आत्मायें नहीं बदलेंगी, हमें बदलना है। स्लोगन तो आपका बहुत अच्छा सबको लगता है - बदला

दिखाना है. बदला नहीं लेना है. बदलना है। यह तो पुराना स्लोगन है। नये-नये रूप, रॉयल रूप बनके माया और भी आने वाली है, घबराओ नहीं। हाँ बापदादा अण्डरलाइन कर रहा है - माया एस, एस रूप में आना है, आ रही है। जो महसूस हो नहीं करेंगे कि यह माया है, कहेंगे नहीं दादी आप समझती नहीं हो, यह माया नहीं है। यह तो सच्ची बात है। और भी रॉयल रूप में आने वाली है, डरो मत। क्या? देखा कोई भी दुश्मन चाहे हार खाता है, चाहे जीत होती है, जो भी उनके पास छोटे मोटे शस्त्र अस्त्र होंगे, यूज करेगा या नहीं करेगा। करेगा ना! तो माया का भी अन्त तो होना है लेकिन जितना अन्त समीप आ रहा है, उतना वह नये-नये रूप से अपने अस्त्र शस्त्र यूज कर रहा है. करेगा भी। फिर आपके पांव में झुकेगा। पहले आपको झुकाने की कोशिश करेगा, फिर खुद झुक जायेगा। सिर्फ इसमें आज बापदादा एक ही शब्द बार-बार अण्डरलाइन करा रहा है। अपने लक्ष्य - बाप समान बनना है। इसके स्वमान में रहो और सम्मान देना अर्थात सम्मान लेना. लेने से नहीं मिलेगा, देना अर्थात लेना है। सम्मान दे – यह यथार्थ नहीं है, सम्मान देना ही लेना है। तो स्वमान. बॉडी कान्सस का स्वमान नहीं। ब्राह्मण जीवन का स्वमान, श्रेष्ठ आत्मा का स्वमान. सम्पन्नता का स्वमान। तो स्वमान और सम्मान लेना नहीं है लेकिन देना ही लेना है - इन दो बातों में दृढता रखो। आपकी दृढता को कोई कितना भी हिलाये, दृढता को ढीला नहीं करो। मजबूत करो। अचल बनो। तब यह जो बापदादा से प्रॉमिस किया है, 6 मास का। प्रॉमिस तो याद है ना। यह नहीं देखते रहना कि अभी तो 15 दिन पूरा हुआ है, साढे पांच मास तो पड़े हैं। जब रूहरिहान करते हैं ना - अमृतवेले रूहरिहान तो करते हैं, तो बापदादा को बहुत अच्छी-अच्छी बात सुनाते हैं। जानते तो हो ना अपनी बात? दृढता को अपनाओ। उल्टी बातों में दृढता नहीं रखनी, क्रोध करना ही है, मुझे दृढ निश्चय है। ऐसे नहीं करना। क्या? आजकल बापदादा के पास रिकार्ड में मेजॉरिटी क्रोध के भिन्न-भिन्न प्रकार का रिपोर्ट पहुंचता है। महारूप में कम है लेकिन अंश रूप में भिन्न-भिन्न प्रकार का क्रोध का रूप ज्यादा है।

इस पर क्लास कराना - क्रोध के कितने रूप हैं? फिर क्या कहते हैं, हमारा न भाव था, न भावना थी, ऐसे ही कह दिया। इस पर क्लास कराना। टीचर्स बहुत आई हैं ना? (1200 टीचर्स हैं,) 1200 ही दृढ संकल्प करे ले तो कल ही परिवर्तन हो सकता है। फिर इतने एक्सीडेंट नहीं होंगे, बच जायेंगे सभी। टीचर्स हाथ उठाओ। बहुत हैं। टीचर अर्थात निमित्त फाउण्डेशन। अगर फाउण्डेशन पक्का अर्थात दृढ रहा तो झाड तो आपही ठीक हो जायेगा। आजकल चाहे संसार में, चाहे ब्राह्मण संसार में हर एक को हिम्मत और सच्चा प्यार, मतलब का प्यार नहीं, स्वार्थ का प्यार नहीं। एक सच्चा प्यार और दूसरा हिम्मत, माना 95 परसेंट किसने संस्कार के वश, परवश होके नाच-ऊपर कर भी लिया लेकिन 5 परसेन्ट अच्छा किया, फिर भी अगर आप उसके 5 परसेन्ट अच्छाई को लेकर पहले उसमें हिम्मत भरो, यह बहुत अच्छा किया फिर उसको कहो बाकी यह ठीक कर लेना, उसका फॉल नहीं होगा। अगर आप कहेंगे यह क्या किया, ऐसा थोडेही किया जाता है, यह नहीं करना होता है, तो पहले ही बिचारा संस्कार के वश है, कमजोर है, तो वह नरवश हो जाता है। प्रोग्रेस नहीं कर सकता है। 5 परसेन्ट का पहले हिम्मत दिलाओ, यह बात बहुत अच्छी है आपमें। यह आप बहुत अच्छा कर सकते हैं, फिर उसको अगर समय और उसके स्वरूप को समझकर बातें देंगे तो वह परिवर्तन हो जायेगा। हिम्मत दो, परवश आत्मा में हिम्मत नहीं होती है। बाप ने आपका कैसे परिवर्तन किया? आपकी कमी सुनाई, आप विकारी हो, आप गन्दे हो, कहा? आपको स्मृति दिलाई आप आत्मा हो, और इस श्रेष्ठ स्मृति से आपमें समर्थी आई, परिवर्तन किया। हिम्मत से स्मृति दिलाओ। स्मृति समर्थी स्वतः ही दिलायेगी। समझा। तो अभी तो समान बन जायेंगे ना? सिर्फ एक अक्षर याद करो - फॉलो फादर-मदर। जो बाप ने किया, वह करना है। बस। कदम पर कदम रखना है। तो समान बनना सहज अनुभव होगा।

ड्रामा छोटे-छोटे खेल दिखाता रहता है। आश्चर्य की मात्रा तो नहीं लगती? अच्छा।

अनेक बच्चों के कार्ड, पत्र, दिल के गीत बापदादा के पास पहुंच गये हैं। सभी कहते हैं हमारा भी याद देना, हमारा भी याद देना। तो बाप भी कहते हैं हमारा भी यादप्यार दे देना। याद तो बाप भी करते, बच्चे भी करते, क्या इस छोटे से संसार में हैं ही बापदादा और बच्चे और विस्तार तो है ही नहीं। तो कौन याद आयेगा? बच्चों को बाप, बाप को बच्चे। तो देश-विदेश के बच्चों को बापदादा भी बहुत-बहुत-बहुत-बहुत

(२०)

(5)

(५)

याद-प्यार देते हैं।

यह माताओं का झुण्ड बहुत अच्छा आया है। सदैव बुजुर्ग मातायें यही सोचकर आती हैं, अभी एक बार तो मिलकर आयें, फिर देखा जायेगा। ऐसे सोचते-सोचते भी कई बार आ चुकी हैं। अच्छा करती हैं। बापदादा माताओं की हिम्मत देखकर खुश होते हैं। ताली बजाओ हाजिर हो जाती हैं। (सभी ने खूब तालियां बजाई) अच्छा है ताली बजाने में खुशी होती है। अच्छा रौनक है, माताओं की भी रौनक अच्छी है। देखा ड्रामा में माताओं से बाप का, परिवार का प्यार है इसीलिए पहला चांस देखो माताओं को ही मिला है। माताओं के टर्न में पानी भी पहुंच गया है। कोई तकलीफ हुई क्या! नहीं ना! एकानामी की या नहीं? एकानामी किया? सबकी दिल बड़ी है ना। जब दिल बड़ी होती है तो सब ठीक चलता है। थोड़ा बहुत खिटखिट तो होता है, वह कोई बड़ी बात नहीं। ठीक है ना - मधुबन के, शान्तिवन के पाण्डव। मजबूत हैं ना! तोड़ निभायेंगे ना। कहा दादी अगर पानी नहीं आया तो हम बाल्टियां भरकर भी आयेंगे। पानी कैसे नहीं हाजिर होगा। जब इतने बच्चे हाजिर हो जायेंगे तो पानी कैसे नहीं हाजिर होगा। अच्छा।

चारों ओर के ब्राह्मण संसार की विशेष आत्माओं को, सदा दृढ़ता द्वारा सफलता प्राप्त करने वाले सफलता के सितारों को, सदा स्वयं को सम्पन्न बनाए आत्माओं की पुकार को पूर्ण करने वाली सम्पन्न आत्माओं को सदा निर्बल को, परवश को अपने हिम्मत के वरदान द्वारा हिम्मत दिलाने वालों, बाप के मदद के पात्र आत्माओं को, सदा विश्व परिवर्तक बन स्व परिवर्तन से माया, प्रकृति और कमजोर आत्माओं को परिवर्तन करने वाली परिवर्तक आत्माओं को, बापदादा का चारों ओर के छोटे से संसार की सर्व आत्माओं को सम्मुख आई हुई श्रेष्ठ आत्माओं को अरब-खरब गुणा यादप्यार और नमस्ते।

(कर्नाटक के सेवाधारी आये हैं:) अच्छा पार्ट बजा रहे हैं, सभी को अच्छी सैलवेशन दी है। तो कर्नाटक निवासियों को सेवा के सन्तुष्टता की बहुत-बहुत मुबारक हो। आलराउण्ड पार्ट अच्छा बजाया। सन्तुष्टता का सबसे सहज आधार है "पहले आप"। पहले आप कहते जाओ, साथी बनाते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। पहले मैं नहीं, पहले आप। तो कर्नाटक वालों ने भी हिम्मत अच्छी दिखाई है। परिवार भी बापदादा भी खुश, सेवाधारी हाथ उठाओ। सर्व के सहयोग से सन्तुष्टता का वरदान ले लिया, अच्छा।

दादा जी से:- आप को बापदादा ने मेहनत बहुत दी है। मुहब्बत के कारण मेहनत नहीं लगती है। (बाबा आप बैठे हैं हम तो कठपुतलियां हैं) फिर भी अच्छा, बहुत अच्छा पार्ट बजा रही है। अच्छा बजा रही हो। कोई बात नहीं, जब कान ढीले होते हैं ना, तो नयनों की भाषा से जल्दी कैच करते हैं। प्यार तो सभी से है। आप सभी दादियों में सभी की जान है जैसे। अच्छा है। जो भी निमित्त बने हैं ना, चाहे गुप्त रूप में, चाहे प्रत्यक्ष रूप में सहयोग देना यह पार्ट बहुत अच्छा बजा रही हो, दुखने में भल यह दो दादियां आती हैं लेकिन आप लोग समाये हुए हैं। आप लोगों का मधुबन में हाजिर होना ही मदद है। जो भी निमित्त बने हुए हैं क्योंकि आप लोगों में रग-रग में हुजूर हाजिर है। जब हुजूर हाजिर है, तो आपको हाजिर होना ही सब कुछ है। पालना ली हुई है। ऐसा भाग्य कितने थोड़ों का है। एक पालना लेना और दूसरा निमित्त बनना, यह भी एक ड्रामा में हीरो पार्ट है। रिटर्न कर रहे हो ना! तो रिटर्न करने का गुप्त में जमा होता रहता है। सुना।

(24 तारीख को मधुबन आते समय आगरा सेवाकेन्द्र की माताओं की गाड़ी एक ट्रक से टकरा गई, जिसमें करीब 6 मातायें, एक टीचर तथा ड्राइवर टोटल - 8 ने अपना पुराना शरीर छोड़ दिया। एक दिल्ली की पुरानी माता ने शान्तिवन में शरीर छोड़ा है, यह समाचार बापदादा को सुना रहे हैं)

यह कोई-कोई होता है। उन्हों की दिल में उस समय भी बाबा ही बाबा था। बाबा-बाबा ही कर रहे थे। सभी को बाबा-बाबा ही याद था। नजदीक आकर ऊपर चले गई। पुरानी-पुरानी थी ना इसीलिए उन्हों को बाबा-बाबा ही याद था और बाबा-बाबा कहते ही गई है। अवस्था अच्छी रही, चिल्लाया नहीं। दर्द तो काफी हुआ ना। फिर भी अवस्था अच्छी रही। देखो, एडवांस पार्टी में सब चाहिए। अभी आप लोग जायेंगे तो एडवांस पार्टी भी तैयार चाहिए ना। इतने सारे चाहिए। तो एडवांस पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि सभी मातायें पक्की थीं। साकार बाप की पालना लेने वाली, तो पालना तो देगी ना। (एक कुमारी 18 साल की थी) वह भी लगन वाली थी। एडवांस पार्टी में पार्ट बजायेंगे अपना। समय नजदीक आ रहा है तो तैयारी सब चाहिए ना।

(e)

"मीठे बच्चे – पावन बनने के लिए अपने स्वधर्म में रहो और अशरीरी बन एक बाप को याद करो"

प्रश्न:- किस विधि से नये स्टूडेन्ट्स पर ज्ञान का रंग लग सकता है?

उत्तर:- (उन्हें पहले-पहले सात रोज़ की भट्ठी में बिठाओ। कायदा है—जब कोई भी आता है तो उनसे फार्म भराओ। पहले सात रोज़ भट्ठी में पड़े तब पूरा रंग लगे। तुम भ्रमरियां ज्ञान की भूँ-भूँ कर आप समान बनाती हो। तुम जानती हो—अभी देवता धर्म की सैपलिंग लग रही है। जो इस घराने की आत्मायें होंगी वह महा-रोगी से निरोगी बनने के पुरुषार्थ में लग जायेंगी।) (a) तीसरी पन्नी

(a) तीसरी पन्नी

गीत:- महफिल में जल उठी शमा........

ओम् शान्ति। बच्चों को ओम् शान्ति का अर्थ तो समझाया हुआ है। ओम् अर्थात् अहम्। अहम् कौन? आत्मा और मेरा शरीर कर्मइन्द्रियाँ। आत्मा का स्वधर्म है ही साइलेन्स। आत्मा किसकी सन्तान है? कहेंगे परमपिता परमात्मा की। वह भी साइलेन्स है। आत्मायें साइलेन्स वर्ल्ड शान्तिधाम में रहती हैं। फिर पार्ट बजाने टॉकी वर्ल्ड में आती हैं। अब बेहद का बाप कहते हैं—हे बच्चे, अपने स्वधर्म में रहो। अशरीरी होकर बैठो। बाप को याद करो। उस बाप को शमा भी कहते हैं। अब यह है महफिल पतित मनुष्यों की। इस समय यह पतित दुनिया है। मनुष्य मात्र पतित हैं। समझाया गया है—सतयुग में भारत पावन था। गृहस्थ धर्म कहा जाता है, जिसको सुखधाम कहते हैं। भारत पावन था, अभी पतित है। दु:खधाम है। यह चक्र फिरता रहता है। अभी यह है कल्याणकारी संगमयुग, जबकि पतित मनुष्य-सृष्टि पर बाप को आना पड़ता है – पतित मनुष्य सृष्टि को पावन बनाने। पुरानी दुनिया से नई दुनिया बाप रचता ही बनाते हैं, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। सब भक्तों का भगवान् एक है। (तो बाप कहते हैं – मुझे भी पतित दुनिया, पतित शरीर में आना पड़ता है। परमधाम से एक ही बार आता हूँ - भारत को पावन दैवी राज्य बनाने। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई नहीं जानते क्योंकि सब नास्तिक हैं।) (b) एक भी आस्तिक मनुष्य नहीं। बाप को न जानने के कारण निधन के बन पड़े हैं। आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। घर-घर में कितनी अशान्ति है! सतयुग आदि में वन ऑलमाइटी अथॉर्टी देवी-देवता राज्य था, सुखधाम था फिर दु:खधाम कैसे बना – यह कोई नहीं जानते।

ज्ञान है ब्रह्मा का दिन। भक्ति है ब्रह्मा की रात। सन्यासी लोग कहते हैं – ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। अब वह तो घरबार छोड़ जंगलों में चले जाते हैं। वैराग्य आ जाता है। वह है रजोगुणी सन्यास, यह है सतोप्रधान सन्यास। इस पाप आत्माओं की दुनिया में एक भी पुण्य आत्मा नहीं। तो यह खेल सारा भारत पर है। भारत सोने की चिड़िया था। भारत में सोना और हीरे बहुत अथाह थे। सोने के महल बनते थे और हीरे-जवाहरों की जड़त होती थी। अभी तो भारत कौड़ी जैसा बना हुआ है। फिर उनको हीरे जैसा बाप ही बनाते हैं। तुम जानते हो – हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। अभी वह बाप पतितों की महफिल में आये हैं। मनुष्य समझते हैं – पतित-पावनी गंगा है, स्नान करने जाते हैं। फिर भी कोई पाप आत्मा से पुण्य आत्मा नहीं बनते। (फिर साल बाई साल जाकर गंगा स्नान करते हैं। इस समय कोई भी पावन नहीं है। जब तक पावन बनाने वाला बाप न आये तब तक पावन बन न सकें। पावन बनाते हैं गीता का भगवान्। वह भगवान् (b)

तो सभी आत्माओं का बाप एक ही है। ऐसे नहीं कि सब भक्त भगवान् हैं वा सर्वव्यापी भगवान् है। यह तो भगवान् की ग्लानी करते हैं इसलिए यदा यदाहि........ यह भारत के लिए ही गाया हुआ है। जो बाप आकर भारत को हीरे जैसा बनाते हैं उनकी कितनी निंदा करते हैं। ऋषि-मुनि फिर कहते आये — रचता और रचना बेअन्त है अथवा नेती-नेती है, हम नहीं जानते। और आजकल के मनुष्य फिर कह देते सर्वव्यापी है। बाप कहते हैं — ऐसे जब बन जाते हैं तब मैं आकर पाप आत्मा से पुण्य आत्मा, देवता बनाता हूँ। सबका सद्गति दाता है ही एक। वही आकर पतित से पावन बनाए लायक बनाते हैं। बच्चों को वर्सा देते हैं। लौकिक बाप से मिला है अल्पकाल का वर्सा। बेहद का बाप कहते हैं — मैं तुमको 21 जन्मों लिए वर्सा देता हूँ पवित्रता, शान्ति और सुख का, जो लौकिक बाप दे न सके। वह बाप भी है, शिक्षक भी है, ज्ञान का सागर भी है। बाप की महिमा बडी ऊंच है, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप भी है। यह मनुष्य सृष्टि का वैरायटी धर्मों का झाड़ है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म है सतयुग का। उनसे फिर और धर्म इमर्ज होते हैं। अभी तुम ब्राह्मण धर्म के बने हो। इनसे पहले शूद्र धर्म के थे। अभी ब्राह्मण से फिर सो देवता फिर सो क्षत्रिय बनेंगे। यह 84 का चक्र लगाना पड़ता है। सतयुग में भी पहले-पहले तुम आयेंगे। गाया भी जाता है — आत्मा परमात्मा अलग रहे........। गीत में भी सुना — चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे अर्थात् बाप से मिल न सके।

अभी है रावण राज्य। राम राज्य है डीटी राज्य। मनुष्य तो समझते हैं — स्वर्ग-नर्क यहां ही है। परन्तु ऐसे हो नहीं सकता। मनुष्य मरता है तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्क में था। तो जरूर पुनर्जन्म नर्क में ही लेना पड़े। मनुष्यों की तो अनेक मतें हैं। एक न मिले दूसरे से। अनेक प्रकार की द्वैत मतें हैं। आधाकल्प भारत में होती है दैवी मत। अब है आसुरी मत। भारतवासी जिस भगवान् को याद करते हैं, उस पारलौकिक बाप को तो जानना चाहिए ना। अभी भारत कौड़ी मिसल है। उनको हीरे जैसा बनाना है। गांधी अथवा नेहरु भी चाहते थे — भारत में वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी रामराज्य हो। समझते हैं — कोई समय भारत में था, अभी नहीं है इसलिए रामराज्य की कोशिश करते हैं। परन्तु यह कोई मनुष्य के हाथ में नहीं है। तुम हो ब्राह्मण, प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान। निराकार आत्मायें हैं परमपिता परमात्मा की सन्तान। वर्सा है ब्रह्माकुमार कुमारियों को। ब्रह्मा को भी वर्सा शिवबाबा से मिलता है। यह भी भाई हो गया। बच्चे सब हैं भाई-भाई तो जरूर एक बाप है सब आत्माओं का। अभी तुम ब्रह्मा की मुख वंशावली ब्राह्मण आपस में भाई-बहन ठहरे। तुमको वर्सा मिलता है दादे से। दादे के वर्से पर सभी आत्माओं का हक है। चाहे स्त्री, चाहे पुरुष के चोले में हो। लौकिक दादे का वर्सा सिर्फ बच्चों को मिलता है। यह तो बेहद का बाप है ना। भारतवासियों को सतयुग-त्रेता में बेहद के बाप से 21 पीढ़ी का बहुत सुख मिला हुआ है। तुम 84 के चक्र को अभी समझ गये हो। बाप कहते हैं — मैं गाइड बनकर आया हूँ तुम सबको ले जाने। तुम ही पहले-पहले आये थे। अभी लास्ट में भी तुम हो। फिर पहले-पहले तुम ही मनुष्य से देवता बनने वाले हो। देवी-देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं। फिर नम्बरवार सबके कम जन्म होते जाते हैं। और धर्म वालों के जरूर कम जन्म होंगे। अभी वह आदि सनातन देवी-देवता धर्म नहीं है। फिर से स्थापन हो रहा है। तुम जानते हो इब्राहम फिर कब आयेगा? क्राइस्ट कितने समय बाद आयेगा? यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी मनुष्य ही तो जानेंगे ना। बाप समझाते हैं — जब सभी पाप आत्मा बन जाते हैं तब मैं आकर पुण्य आत्मा बनाता हूँ। जो कल्प

पहले बने थे उनका सैपलिंग लगा रहा हूँ। सतयुग में था ही एक धर्म। अभी तो कलियुग में अनेक धर्म हैं। पतित आत्माओं की महफिल है। बाप आते हैं सबको पावन बनाने। सद्गति देने वाला वही एक है। माया रावण दुर्गति करती है। इसलिए देवताओं के आगे जाकर गाते हैं — मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। बाप आकर पतित से पावन बनाए दैवी गुणों वाला बनाते हैं। अभी तुम दैवी गुण धारण करते जाते हो। फिर भारत में दैवी राज्य बन जायेगा। अभी यह दुनिया बदल रही है।

(e) (तुम हो बेहद के सन्यासी। उन्हों का है हद का वैराग्य। यह है बेहद का वैराग्य। तुम सारी पुरानी सृष्टि को भूल अपने बाप को याद कर वर्सा लेते हो। बाप कहते हैं — मुझे याद करेंगे तो उस याद अथवा योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे) फिर तुम विकर्माजीत बनेंगे। (a) (बाबा ने समझाया है — जब कोई 4-5 इकट्ठे आते हैं तो फार्म अलग अलग भराओ। तो मालूम पड़े कि वह किस धर्म का है? अनेक धर्म, अनेक मतें हैं ना। देवी-देवता धर्म वालों को ही तीर लगेगा। कराची में हमेशा अलग-अलग समझाते थे। फार्म भराने का कायदा भी जरूरी है। 7 रोज़ भट्ठी में पड़ना पड़े क्योंकि महारोगी बन पड़े हैं। (भ्रमरी का मिसाल) तुम बच्चे भ्रमरियाँ हो। भूँ-भूँ कर आप समान बनाना पड़ता है। देवता धर्म वालों की ही सैपलिंग लगेगी। बच्चों को युक्तियाँ भी सीखनी है। बोलो — सात रोज़ जब समझो तब मुलाकात हो सकेगी और तुम पर रंग भी तब लगेगा। तुम सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हो। मनुष्य इतना भी नहीं पूछते इतने ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ क्या हैं? कौन हैं? अरे, प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान तो जरूर ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ कहेंगे ना। क्रिमिनल एसाल्ट हो न सके।) यह है राजयोग, गॉड फादरली, युनिवर्सिटी। भगवानुवाच — मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। अच्छा —

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

अव्यक्त मुरली से :-

अपनी स्थिति को सदा त्याग और सदा भाग्यशाली बनाने के लिए चेकिंग तो करनी है लेकिन चेकिंग में भी मुख्य चेकिंग कौनसी करनी है, जिस चेकिंग करने से आटोमेटिकली चेंज आ जाए? क्या चेकिंग करनी है उसके लिए एक स्लोगन है जो बहुत बार सुनाया है — कम खर्च बाला नशीन। अब कम खर्च बाला नशीन कैसे बनना है?

वो लोग तो स्थूल धन में कम खर्च बाला नशीन बनने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन आप लोगों के लिए संगमयुग में कितने प्रकार के खजाने हैं, मालूम है? समय, संकल्प, श्वाँस तो है ही खजाना लेकिन उसके साथ अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना भी है और पांचवा स्थूल खजाने से भी इसका सम्बन्ध है। तो यह चेक करो — संकल्प के खजाने में भी कम खर्च बाला नशीन बने हैं? ज्यादा खर्च नहीं करो। अपने संकल्प के खजाने को व्यर्थ नहीं गंवाओ तो समर्थ और श्रेष्ठ संकल्प होगा। श्रेष्ठ संकल्प से प्राप्ति भी श्रेष्ठ होगी ना। ऐसे ही जो समय का खजाना है संगमयुग का, इस संगमयुग के समय को अगर व्यर्थ न खर्च करो तो क्या होगा? एक-एक सेकेण्ड में अनेक जन्मों की कमाई का साधन कर सकेंगे। इसलिए यह समय व्यर्थ नहीं गंवाना है। ऐसे ही हर श्वाँस में बाप की स्मृति रहे, अगर एक भी श्वाँस में बाप की याद नहीं तो समझो व्यर्थ गया। तो श्वाँस को भी व्यर्थ नहीं गंवाना। ऐसे ही ज्ञान का खजाना जो है उसमें भी अगर खजाने को सम्भालने नहीं

आता, मिला और खत्म कर दिया तो व्यर्थ चला गया। मनन नहीं किया ना। मनन के बाद उस खजाने से जो खुशी प्राप्त होती है उस खुशी में स्थित रहने का अभ्यास नहीं किया तो व्यर्थ चला गया। जैसे भोजन किया, हज़म करने की शक्ति नहीं तो व्यर्थ जाता है ना। इसी प्रकार यह ज्ञान के खज़ाने अपने प्रति वा दूसरी आत्माओं को दान देने के प्रति न लगाया तो व्यर्थ गया ना। ऐसे ही यह स्थूल धन भी अगर ईश्वरीय कार्य में, हर आत्मा के कल्याण के कार्य में वा अपनी उन्नति के कार्य में न लगाकर अन्य कोई स्थूल कार्य में लगाया तो व्यर्थ लगाया ना क्योंकि अगर ईश्वरीय कार्य में लगाते हो तो यह स्थूल धन एक का लाख गुणा बनकर प्राप्त होता है और अगर एक व्यर्थ गंवा दिया तो एक व्यर्थ नहीं गंवाया लेकिन लाख व्यर्थ गंवाया। इसी प्रकार जो संगमयुग का सर्व खजाना है उस सर्व खजाने को चेक करो कि कोई भी खजाना व्यर्थ तो नहीं जाता है? तो ऐसे कम खर्च बाला नशीन बने हो या अब तक अलबेले होने के कारण व्यर्थ गंवा देते हो? जो अलबेले होते हैं वह व्यर्थ गंवाते हैं और जो समझदार होते हैं, नॉलेजफुल होते हैं, सेन्सीबुल होते हैं वह एक छोटी चीज भी व्यर्थ नहीं गंवाते। ऐसे के लिए ही कहा जाता है — कम खर्च बाला नशीन। ऐसे हो? जैसे साकार बाप ने कम खर्च बाला नशीन बन करके दिखाया ना। तो क्या फालो फादर नहीं करना है? कोई भी स्थूल धन, अगर स्थूल धन नहीं है तो जो यज्ञ-निवासी हैं उनके लिए यह स्थूल यज्ञ की हर वस्तु ही स्थूल धन के समान है। अगर यज्ञ की कोई भी वस्तु व्यर्थ गंवाते हैं तो भी कम खर्च बाला-नशीन नहीं कहेंगे। जो प्रवृत्ति में रहने वाले हैं, स्थूल धन से अपना पद ऊंच बना सकते हैं, वैसे ही यज्ञ निवासी भी अगर यज्ञ की स्थूल वस्तु कम खर्च बाला-नशीन बनकर यूज़ करते हैं, अपने प्रति वा दूसरों के प्रति, उनका भी इस हिसाब से भविष्य बहुत ऊंच बनता है। ऐसे नहीं कि स्थूल धन तो प्रवृत्ति वालों के लिए साधन है लेकिन यज्ञ निवासियों के यज्ञ की सेवा भी, यज्ञ के वस्तु की इकॉनामी रूपी धन स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है। अच्छा!

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- विकर्माजीत बनने के लिए सारी पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य कर, इसे भूल एक बाप की याद में रहना है।

२- भ्रमरी मिसल ज्ञान रंग लगाने की सेवा करनी है। युक्ति से महारोगियों को निरोगी, नास्तिक को आस्तिक बनाना है।

वरदान:- अपने आदि अनादि स्वरूप की स्मृति द्वारा सर्व बन्धनों को समाप्त करने वाले बन्धनमुक्त स्वतन्त्र भव

आत्मा का आदि अनादि स्वरूप स्वतन्त्र है। मालिक है। यह तो पीछे परतन्त्र बनी है। इसलिए अपने आदि और अनादि स्वरूप को स्मृति में रख बन्धनमुक्त बनो। मन का भी बंधन न हो। अगर मन का भी बंधन होगा तो वह बंधन और बन्धनों को ले आयेगा। बंधनमुक्त अर्थात् राजा, स्वराज्य अधिकारी। ऐसे बन्धनमुक्त स्वतन्त्र आत्मायें ही पास विद आनर बनेंगी अर्थात् फर्स्ट डिवीज़न में आयेंगी।

स्लोगन:-

अवगुण धारण करने वाली बुद्धि का नाश कर सतोप्रधान दिव्य बुद्धि धारण करो।

G

(7)

''मीठे बच्चे – तुम्हारे दर पर कोई भी आये उसे कुछ न कुछ ज्ञान धन देना है, पहले फॉर्म भराओ फिर दो बाप का परिचय दो'' (a)

प्रश्न:- जादूगर बाप की जादूगरी कौन सी है?

उत्तर:- जादूगर बाप की जादूगरी देखो – इतना ऊंचा बाप कहते हैं मैं तुम्हारी सेवा में आया हूँ, मैं तुम्हारा बच्चा भी बन जाता हूँ। तुम बच्चे जब मेरे पर बलि चढ़ो तो फिर मैं 21 जन्मों के लिए तुम्हारे पर बलि चढ़ूँ। यह भी वन्डरफुल बातें हैं। बाप कितने प्यार से तुम्हें पढ़ाई पढ़ाते हैं। तुम्हारी सब मनोकामनायें पूरी करते हैं। तुमसे कोई भी फीस आदि नहीं लेते हैं। उन्हें कहा जाता है – राझू-रमज़बाज।

गीत:- जो पिया के साथ है..........

ओम् शान्ति। पिया और वर्षा। जो पिया के साथ है उसके लिए बरसात है। किस प्रकार की? इसको ज्ञान वर्षा कहा जाता है। ज्ञान वर्षा कौन करते हैं? ज्ञान का सागर। अब यह गीत जिन्होंने गाया या बनाया वह तो कुछ नहीं जानते। तुम हो लक्की ज्ञान सितारे। तुम ज्ञान सागर के बच्चे बने हो इसलिए तुमको ज्ञान सितारे कहा जाता है। बाप से ज्ञान ले रहे हो। नॉलेज की हमेशा एम-ऑब्जेक्ट होती है। कुछ न कुछ प्राप्ति का रास्ता मिलता है। अब तुम बच्चे जानते हो बेहद के बाप द्वारा बेहद का वर्सा लेना है। वह है पारलौकिक बाप। तुम्हारे पास कभी कोई नये जिज्ञासु आते हैं तो फॉर्म भरने से डरते हैं। तो उनको समझाना चाहिए क्योंकि फिर भी तुम्हारे पास आये हैं तो कुछ न कुछ बिचारों को मिलना चाहिए। बहुत गरीब हैं। तुम्हारे पास तो अथॉरिटी है। हाँ, नम्बरवार कोई फुल पास होते हैं, कोई कम। यह तो नशा है हमारे पास ज्ञान रत्न ढेर हैं। ज्ञान सागर कोई महल में तो नहीं रहते हैं, झोपड़ी में रहते हैं। झोपड़ी में रहना पसन्द करते हैं। जब कोई कहे हम फॉर्म नहीं भरेंगे तो बोलो – अच्छा, अपना नाम तो लिखेंगे, हम बड़ी बहन जी को दिखायें कि फलाना आया है। कुछ समझने के लिए तो आये हो। अच्छा, अपना नाम लिखो। लौकिक फादर का भी नाम लिखना पड़े फिर समझाना है – दो बाप तो हैं। एक है लौकिक बाप, दूसरा है पारलौकिक परमपिता परमात्मा। जब पिता कहते हो तो उनका नाम तो लिखो। परमपिता कहते हो तो वह सबका बाप है। हर एक को लौकिक और पारलौकिक बाप होते हैं। भक्ति मार्ग में दोनों बाप हैं। सतयुग-त्रेता में लौकिक फादर तो है, पारलौकिक का नाम भी नहीं लेंगे। यह बातें तुम बच्चों को समझकर फिर समझाना है। कितनी सहज बातें समझाई जाती हैं। जिसको गॉड फादर कहा जाता है - वह है परलोक में रहने वाला। बुद्धि में आता है – बरोबर, सतयुग-त्रेता में पारलौकिक बाप को याद नहीं करते। यहाँ तो सब याद करते हैं। तो समझाना है लौकिक फादर का नाम लिखा, अब पारलौकिक फादर का नाम लिखो। सब जीव की आत्मायें उस पारलौकिक परमपिता को याद करती हैं। वह एक ही है। जैसे आत्मा निराकार है, वैसे वह भी निराकार है। उनका तो कोई सूक्ष्म वा स्थूल

(a) (b) (b) अगला पन्ना

शरीर नहीं है। उनको सर्वव्यापी तो कह नहीं सकते। लौकिक बाप को कभी सर्वव्यापी नहीं कह सकते हैं। क्या सर्वव्यापी कहने से वर्सा मिल सकता है? फिर पारलौकिक बाप को सर्वव्यापी क्यों कहते हो? पारलौकिक बाप को सब इतना याद करते हैं तो जरूर उनसे भी वर्सा मिलना चाहिए। रचना को रचता से वर्सा तो चाहिए ना। ऐसे नई-नई बातें समझाने से झट समझ जायेंगे। तुम अनुभव से बतलाते हो उस बाप से वर्सा पाने की युक्ति बताई जाती है। वह बाप है स्वर्ग का रचयिता। तुम जानते हो भारत जीवनमुक्त था। अब जीवनबंध है। दु:ख से लिबरेट करने वाला बाप ही है।

यह त्रिमूर्ति सहित लक्ष्मी-नारायण का चित्र बहुत अच्छा है। हर एक के पास होना चाहिए। इस पर समझाओ कि बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण भारत के आदि सनातन देवी-देवता थे, सतयुग के मालिक थे। स्वर्ग का वर्सा जरूर पारलौकिक बाप स्वर्ग का रचयिता ही दे सकते हैं। कोई फॉर्म न भी भरे लेकिन यह बात लिखाना तो सहज है। दो बाप हैं, दोनों से वर्सा मिलता है। लक्ष्मी-नारायण अथवा उनके बच्चों आदि की जीवन कहानी तो है नहीं। कृष्ण के लिए कहते हैं उनको टोकरी में ले गया, यह हुआ। अच्छा, इन लक्ष्मी-नारायण को राज्य कहाँ से मिला? बरोबर आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था, इनमें पहला नम्बर लक्ष्मी-नारायण हैं। उन्हों को यह स्वर्ग का वर्सा किसने दिया? यह प्रजापिता ब्रह्मा भी बैठा है, यह वर्सा लक्ष्मी-नारायण सामने खड़े हैं। फिर झाड़ पर ले आओ। यहाँ तपस्या कर रहे हैं – राजयोग की। इनसे यह लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह समझाना कितना सहज है। लक्ष्मी-नारायण के भक्तों को समझाना बहुत सहज है। अब अन्दर कोई आते हैं तो कुछ न कुछ शिक्षा जरूर देनी पड़े। तुम्हारे द्वारा इन वेश्याओं, भीलनियों आदि का भी उद्धार होना है। परन्तु तुम्हारे में अभी वह ताकत नहीं है। बाबा ने समझाया है तुम अपने पति को भी भूं भूं करती रहो। स्त्री अपने पति से भी पूछ सकती है – तुम अपने लौकिक बाप का नाम बताओ। अच्छा, पारलौकिक बाप का नाम बताओ? जिसको तुम घड़ी-घड़ी जन्म बाई जन्म याद करते हो, जरूर उनसे कुछ जास्ती मिलता है। लक्ष्मी-नारायण को याद करने से तो कुछ मिलता नहीं है।

(margin notes: ६ आगला पन्ना; ८ आगला पन्ना)

बाप आकर तुम्हारी कितनी सेवा करते हैं। बिगर मांगे तुमको पढ़ाते हैं। कहते हैं – आओ, तुमको स्वर्ग में ले चलें। सभी मनोकामनायें पूर्ण करते हैं। नर-नारायण का भी चित्र है ना। पूजा लक्ष्मी की होती है। समझते हैं लक्ष्मी से सम्पत्ति मिलेगी। यह सब भक्ति मार्ग की बातें हैं। लक्ष्मी (स्त्री) धन कहाँ से लायेगी? उनको जरूर पति से मिलता है। पुजारी लोग यह कुछ भी नहीं जानते। तुम बच्चों को समझाना पड़े। तुम भी अभी समझते हो – आगे हम क्या करते थे? कुछ भी नहीं समझते थे। अब अच्छी रीति जान गये हैं कृष्ण-जन्माष्टमी होती है तो सवेरे में उनको दूध पिलाते हैं, झूला झुलाते हैं और रात को फिर पूरी-तस्मई (खीर) आदि खिलाते हैं। क्या इतने में इतना बड़ा हो गया, जो पूरी तस्मई खाने लायक हो गया! यह भी समझने की बातें हैं ना। तुम जानते हो यह राधे-कृष्ण ही फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। शिवबाबा इन्हों को यह पद दिलाते हैं। शिव को कभी पूरी-

तस्मई आदि नहीं खिलाते। उन पर सिर्फ दूध चढ़ाते हैं। अब शिवबाबा तो है निराकार, जिसका कोई नाम-रूप नहीं, उन पर दूध आदि चढ़ाने का मतलब क्या है? उनको कुछ खिलाते नहीं हैं। निराकार है ना, श्रीकृष्ण को रोटी आदि खाने के लिये मुख है। (शिव पर कुछ नहीं चढ़ाते। शंकर पर चढ़ाते हैं, शिव पर नहीं। शंकर का तो फिर भी आकार रूप है ना। दोनों एक तो हो नहीं सकते। अब बाबा कितनी नॉलेज देते हैं। कितनी गुप्त बातें हैं।)

तुम गोपिकायें शिवबाबा की हो। शिव को फिर बालक भी कहते हैं। यह भी शिवबाबा पूछते हैं तुमने शिव को बालक क्यों बनाया है? वर्सा बालक को दिया जाता है। पहले जब तुम बलि चढ़ो तब ही शिवबाबा बलि चढ़े। यह भी है बाप बच्चों पर बलि चढ़ते हैं परन्तु कहते हैं पहले तुमको बलि चढ़ना है, तब मैं चढ़ूँ। बलि चढ़ना अर्थात् उनको अपना बच्चा बनाना, उनकी पालना करना। कितनी वन्डरफुल बातें हैं! मातायें हैं ना। पुरुष भी शिव बालक को अपना वारिस बनाते हैं। शिवबाबा को जादूगर कहते हैं ना। लक्ष्मी-नारायण जादूगर नहीं हैं। यह बड़ी गुप्त बातें हैं। विरला कोई समझ सकते हैं। अपरोक्ष भी बतलाते हैं। (तुम बच्चे अनुभवी हो बाबा ने साक्षात्कार किया, मम्मा ने कोई साक्षात्कार नहीं किया फिर भी मम्मा सबसे तीखी गई। सबको तो साक्षात्कार नहीं होगा। ऐसे तो बहुतों को साक्षात्कार हुए, आज हैं नहीं। साक्षात्कार से कोई कनेक्शन नहीं है। यह तो हैं धारण करने और कराने की मीठी बातें। जादूगर राझू रमज़बाज तो है ना। जादूगर लोग बहुत तीखे-तीखे होते हैं। संतरे निकाल दिखाते हैं, सिर काटकर फिर जोड़ देते हैं। आगे बहुत जादूगरी दिखाते थे।)

अब बच्चे जान गये हैं बाबा की ही महिमा गाई जाती है। तुम्हारी लीला अपरम-अपार है, तुम्हारी गति मत न्यारी है। बाप कितनी श्रीमत देते हैं। श्रीमत से तुमको श्रेष्ठ देवता बना रहे हैं? श्री श्री कहा जाता है निराकार शिवबाबा को। लक्ष्मी-नारायण को ऐसा श्रेष्ठ किसने बनाया? जरूर उनसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ होगा। बाबा से हम यह इलम (विद्या) सीखते हैं कि मनुष्य को देवता कैसे बनाया जाए। (अभी तुम सब सीतायें रावण की जेल में, शोक वाटिका में दु:ख उठा रही हो। रामराज्य में कभी शोक होता ही नहीं। तो जिससे वर्सा मिलता है उनको याद करना है ना) हम आत्मा हैं यह भी मानते हैं। पूछो तुम्हारे लौकिक बाप का नाम क्या है? पारलौकिक बाप का नाम क्या है? बाप को सर्वव्यापी तो नहीं कहेंगे। बाप माना वर्सा। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। (अब वह रावण ने छीना हुआ है। इसलिए कहा जाता है माया जीते जगत जीत। माया पर जीत पानी है। मन तो तूफानी घोड़ा है। खूब पछाड़ने की कोशिश करेगा।) बाबा ने अब तुम्हारी बुद्धि का ताला खोल दिया है। तुम राइट और रांग को समझ सकते हो। तुम समझा सकते हो अब यह दुनिया बदल रही है। महाभारी लड़ाई तो जरूर लगनी है, उसमें सब विनाश होंगे। यादव मूसलों से अपने ही यादव कुल का विनाश करते हैं। पाण्डव कुल की जीत होनी है। परन्तु दिखाया है 5 पाण्डव बचे, वह भी पहाडों पर गल मरे। बाकी क्या हुआ? कुछ नहीं। राजयोग

सिखाया तो कुछ तो बचे होंगे। प्रलय थोड़ेही हो जाती है। यह सब बातें तुम अभी जानते हो। दिखाते हैं कृष्ण सागर में पत्ते पर आया। श्रीकृष्ण तो गर्भ महल में आते हैं। गर्भ जेल में दु:ख होता है। सागर तो गर्भ महल है। बड़े आराम से बैठा रहता है। जन्म-जन्मान्तर से यह गीता का ज्ञान भागवत आदि सुनते आये, भक्ति मार्ग के धक्के खाते आये, अभी बाप तुमको एक सेकेण्ड में स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। इसको भावी कहते हैं, परन्तु भावी किसकी? भावी ड्रामा की कहेंगे। बना-बनाया ड्रामा है ना। मनुष्य तो सिर्फ भावी कहते रहते हैं, समझते कुछ भी नहीं। तो जब कोई आये पहले-पहले यह बताओ कि दो बाप हैं। पारलौकिक बाप स्वर्ग का रचयिता है। उसने तो स्वर्ग का वर्सा दिया था। आज से 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग था। अभी तो नर्क है फिर तुम वर्सा ले सकते हो। हम भी बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हैं। यह भारत भगवान् की जन्म भूमि है। जैसे इब्राहम, बुद्ध आदि की अपनी जन्म भूमि है। तुम बच्चे जानते हो बाप आये हुए हैं, वर्सा दे रहे हैं। तुम बच्चों को रहमदिल बनना है। कोई को भी यह समझाना तो बहुत सहज है। पारलौकिक बाप की पहचान देनी है। पारलौकिक फादर एक ही बार आते हैं। उनकी याद से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बहुत सहज है। ऐसी-ऐसी बातें अच्छी रीति धारण करो और समझाओ। दान करो। पारलौकिक बाप स्वर्ग की राजाई देते हैं। लक्ष्मी-नारायण को दी है ना। इस सूर्यवंशी लक्ष्मी-नारायण का बाप कौन है? हम आपको बताते हैं स्वर्ग की स्थापना करने वाला फादर अब उन्हों को स्वर्ग की राजाई दे रहे हैं। बाकी आशीर्वाद क्या करेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे लक्की ज्ञान सितारों प्रति मात-पिता बापदादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- राइट और रांग को समझ बुद्धि बल से मन रूपी तूफानी घोड़े को वश करके मायाजीत, जगतजीत बनना है। हार नहीं खानी है।

२- शिव को बालक बनाकर उनकी पालना करनी है अर्थात् पहले उन्हें अपना वारिस बनाना है। उन पर पूरा बलि चढ़ना है।

वरदान:- बुद्धि रूपी विमान द्वारा सेकण्ड में तीनों लोकों का सैर करने वाले सहजयोगी भव

बापदादा बच्चों को निमन्त्रण देते हैं कि बच्चे संकल्प का स्विच आन करो और वतन में पहुंच कर सूर्य की किरणें लो, चन्द्रमा की चांदनी भी लो, पिकनिक भी करो और खेलकूद भी करो। इसके लिए सिर्फ बुद्धि रूपी विमान में डबल रिफाइन पेट्रोल की आवश्यकता है। डबल रिफाइन अर्थात् एक निराकारी निश्चय का नशा कि मैं आत्मा हूँ, बाप का बच्चा हूँ, दूसरा साकार रूप में सर्व संबंधों का नशा। यह नशा और खुशी सहजयोगी भी बना देगी और तीनों लोकों का सैर भी करते रहेंगे।

स्लोगन:-

श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान ही श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम है।

(8) मुरली नं० - (6)

17-1-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

"मीठे बच्चे – ज्ञान की धारणा के साथ-साथ सतयुगी राजाई के लिए याद और पवित्रता का बल भी जमा करो"

प्रश्न :- अभी तुम बच्चों के पुरूषार्थ का क्या लक्ष्य होना चाहिए?

उत्तर :- सदा खुशी में रहना, बहुत-बहुत मीठा बनना, सबको प्रेम से चलाना.... यही तुम्हारे पुरूषार्थ का लक्ष्य हो। इसी से तुम सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।

प्रश्न :- जिनके कर्म श्रेष्ठ हैं, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर :- उनके द्वारा किसी को भी दुःख नहीं पहुँचेगा। जैसे बाप दुःख हर्ता सुख कर्ता है, ऐसे श्रेष्ठ कर्म करने वाले भी दुःख हर्ता सुख कर्ता होंगे।

गीत:- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन. . . . . . .

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना। यह मीठे-मीठे रूहानी बच्चे किसने कहा? दोनों बाप ने कहा। निराकार ने भी कहा तो साकार ने भी कहा। इसलिए इनको कहा जाता है बाप व दादा। दादा है साकारी। अभी यह गीत तो भक्तिमार्ग के हैं। बच्चे जानते हैं बाप आया हुआ है और बाप ने सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान बुद्धि में बिठाया। तुम बच्चों की भी बुद्धि में है–कि हमने 84 जन्म पूरे किये, अब नाटक पूरा होता है। अब हमको पावन बनना है, योग वा याद से। याद और नॉलेज यह तो हर बात में चलता है। बैरिस्टर को जरूर याद करेंगे और उनसे नॉलेज लेंगे। इसको भी योग और नॉलेज का बल कहा जाता है। यहाँ तो यह है नई बात। उस योग और ज्ञान से बल मिलता है हद का। यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का क्योंकि सर्वशक्तिमान् अथॉरिटी है। बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर भी हूँ। तुम बच्चे अब सृष्टि चक्र को जान गये हो। मूल-वतन, सूक्ष्मवतन... सब याद है। जो नॉलेज बाप में है, वह भी मिली है। तो नॉलेज को भी धारण करना है और राजाई के लिए बाप बच्चों को योग और पवित्रता भी सिखलाते हैं। तुम पवित्र भी बनते हो। बाप से राजाई भी लेते हो। बाप अपने से भी ज्यादा मर्तबा देते हैं। तुम 84 जन्म लेते-लेते मर्तबा गँवा देते हो। यह नॉलेज तुम बच्चों को अभी मिली है। ऊंच ते ऊंच बनने की नॉलेज ऊंच ते ऊंच बाप द्वारा मिलती है। बच्चे जानते हैं अभी हम जैसेकि बापदादा के घर में बैठे हैं। यह दादा - माँ भी है। वह बाप तो अलग है, बाकी दादा - माँ भी है। परन्तु यह मेल का चोला होने कारण फिर माता मुकरर की जाती है, इनको भी एडाप्ट किया जाता है। उनसे फिर रचना हुई है। रचना भी है एडाप्टेड। बाप बच्चों को एडाप्ट करते हैं, वर्सा देने के लिए। ब्रह्मा को भी एडाप्ट किया है। प्रवेश करना वा एडाप्ट करना बात एक ही है। बच्चे समझते हैं और समझाते भी हैं - नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सबको यही समझाना है कि हम अपने परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर इस भारत को फिर से श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाते हैं, तो खुद को भी बनना पड़े। अपने को देखना है कि हम श्रेष्ठ बने हैं? कोई भ्रष्टाचार का काम कर किसको दुःख तो नहीं देते हैं? बाप कहते हैं मैं तो आया हूँ बच्चों को सुखी बनाने तो तुमको भी सबको सुख देना है। बाप कभी किसको दुःख नहीं दे सकता। उनका नाम ही है दुःख हर्ता सुख कर्ता। बच्चों को अपनी जांच करनी है--मन्सा, वाचा, कर्मणा हम किसको दुःख

तो नहीं देते है? शिवबाबा कभी किसको दुःख नहीं देते। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प तुम बच्चों को यह बेहद की कहानी सुनाता हूँ। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम अपने घर जायेंगे फिर नई दुनिया में आयेंगे। अब की पढ़ाई अनुसार अन्त में तुम ट्रांसफर हो जायेंगे। वापिस घर जाकर फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आयेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है।

बच्चे जानते हैं अभी जो पुरूषार्थ करेंगे वही पुरूषार्थ तुम्हारा कल्प-कल्प का सिद्ध होगा। पहले-पहले तो सभी को बुद्धि में बिठाना चाहिए कि रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज को बाप के सिवाए कोई नहीं जानते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप का नाम ही गुम कर दिया है। त्रिमूर्ति नाम तो है, त्रिमूर्ति रास्ता भी है, त्रिमूर्ति हाउस भी है। त्रिमूर्ति कहा जाता है ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को। इन तीनों का रचयिता जो शिवबाबा है उस मूल का नाम ही गुम कर दिया है। अभी तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा, फिर है त्रिमूर्ति। बाप से हम बच्चे यह वर्सा लेते है। बाप की नॉलेज और वर्सा यह दोनों स्मृति में रहें तो सदैव हर्षित रहेंगे। बाप की याद में रह फिर तुम किसको भी ज्ञान का तीर लगायेंगे तो अच्छा असर होगा। उसमें शक्ति आती जायेगी। याद की यात्रा से ही शक्ति मिलती है। अभी शक्ति गुम हो गई है क्योंकि आत्मा पतित तमोप्रधान हो गई है। अब मूल फिकरात यह रखनी है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें। मन्मनाभव का अर्थ भी यह है। गीता जो पढ़ते हैं उनसे पूछना चाहिए - मन्मनाभव का अर्थ क्या है? यह किसने कहा मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा? नई दुनिया स्थापन करने वाला कोई कृष्ण तो नहीं है। वह प्रिन्स है। यह तो गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अब करनकरावनहार कौन? भूल गये हैं। उनके लिए सर्वव्यापी कह देते हैं। कह देते हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि सबमें वही है। अब इसको कहा जाता है अज्ञान। बाप कहते हैं तुमको 5 विकारों रूपी रावण ने कितना बेसमझ बनाया है। तुम जानते हो बरोबर हम भी पहले ऐसे थे। हाँ, पहले उत्तम से उत्तम भी हम ही थे फिर नीचे गिरते महान् पतित बनें। शास्त्रों में दिखाया है राम भगवान ने बन्दर सेना ली, यह भी ठीक है। तुम जानते हो हम बरोबर बन्दर मिसल थे। अभी महसूसता आती है यह है ही भ्रष्टाचारी दुनिया। एक-दो को गाली देते कांटा लगाते रहते हैं। यह है कांटों का जंगल। वह है फूलों का बगीचा। जंगल बहुत बड़ा होता है। गार्डन बहुत छोटा होता है। गार्डन बड़ा नहीं होता है। बच्चे समझते हैं बरोबर इस समय यह बड़ा भारी कांटों का जंगल है। सतयुग में फूलों का बगीचा कितना छोटा होगा। यह बातें तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझते हैं। जिनमें ज्ञान और योग नहीं है, सर्विस में तत्पर नहीं हैं तो फिर अन्दर में इतनी खुशी भी नहीं रहती। दान करने से मनुष्य को खुशी होती है। समझते हैं इसने आगे जन्म में दान-पुण्य किया है तब अच्छा जन्म मिला है। कोई भक्त होते हैं, समझेंगे हम भक्त अच्छे भक्त के घर में जाकर जन्म लेंगे। अच्छे कर्मों का फल भी अच्छा मिलता है। बाप बैठ कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बच्चों को समझाते हैं। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। तुम जानते हो अभी रावण राज्य होने कारण मनुष्यों के कर्म सब विकर्म बन जाते हैं। पतित तो बनना ही है। 5 विकारों की सबमें प्रवेशता है। भल दान-पुण्य आदि करते हैं, अल्पकाल के लिए उसका फल मिल जाता है। फिर भी पाप तो करते ही हैं। रावण राज्य में जो भी लेन-देन होती है वह है ही पाप की। देवताओं के आगे कितना स्वच्छता से भोग लगाते है। स्वच्छ बनकर आते है परन्तु जानते कुछ भी नहीं। बेहद के बाप की भी कितनी

ग्लानि कर दी है। वह समझते हैं कि यह हम महिमा करते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है, परन्तु बाप कहते हैं यह इन्हों की उल्टी मत है।

तुम पहले-पहले बाप की महिमा सुनाते हो कि ऊंच ते ऊंच भगवान एक है, हम उनको ही याद करते हैं। राजयोग की एम ऑब्जेक्ट भी सामने खड़ी है। यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे, वह तो बच्चा है. शिव को बाबा कहेंगे। उनको अपनी देह नहीं। यह मैं लोन पर लेता हूँ इसलिए इनको बापदादा कहते हैं। वह है ऊंच ते ऊंच निराकार बाप। रचना को रचना से वर्सा मिल न सके। लौकिक सम्बन्ध में बच्चे को बाप से वर्सा मिलता है। बच्ची को तो मिल न सके।

अब बाप ने समझाया है तुम आत्मायें हमारे बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे-बच्चियाँ हो। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलना है। बाप का बनने से ही वर्सा मिल सकता है। यह बाप तुम बच्चों को सम्मुख बैठ समझाते हैं। इनके कोई शास्त्र तो बन नहीं सकते। भल तुम लिखते हो, लिटरेचर छपाते हो फिर भी टीचर के सिवाए तो कोई समझा न सके। बिना टीचर किताब से कोई समझ न सके। अब तुम हो रूहानी टीचर्स। बाप है बीजरूप, उनके पास सारे झाड के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। टीचर के रूप में बैठ तुमको समझाते हैं। तुम बच्चों को तो सदैव खुशी रहनी चाहिए कि हमको सुप्रीम बाप ने अपना बच्चा बनाया है, वही हमको टीचर बनकर पढ़ाते हैं। सच्चा सतगुरु भी है, साथ में ले जाते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक है। ऊंच ते ऊंच बाप ही है जो भारत को हर 5 हज़ार वर्ष बाद वर्सा देते हैं। उनकी शिव जयन्ती मनाते हैं। वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए। तुम त्रिमूर्ति शिव जयन्ती मनाते हो। सिर्फ शिवजयन्ती मनाने से कोई बात सिद्ध नहीं होगी। बाप आते हैं और ब्रह्मा का जन्म होता है। बच्चे बने, ब्राह्मण बने और एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। बाप खुद आकर स्थापना करते हैं। एम आब्जेक्ट भी बिल्कुल क्लीयर है सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से सारी गीता का महत्त्व चला गया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह भूल फिर भी होने वाली ही है। खेल ही सारा ज्ञान और भक्ति का है। बाप कहते हैं लाडले बच्चे, सुखधाम, शान्तिधाम को याद करो। अलफ और बे, कितना सहज है! तुम किसी से भी पूछो मन्मनाभव का अर्थ क्या है? देखो क्या कहते हैं? बोलो भगवान किसको कहा जाए? ऊंच ते ऊंच भगवान है ना। उनको सर्वव्यापी थोड़ेही कहेंगे। वह तो सबका बाप है। अभी त्रिमूर्ति शिवजयन्ती आती है। तुमको त्रिमूर्ति शिव का चित्र निकालना चाहिए। ऊंच ते ऊंच है शिव, फिर सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। वह भारत को स्वर्ग बनाते हैं। उनकी जयन्ती तुम क्यों नहीं मनाते हो? जरूर भारत को वर्सा दिया था। उनका राज्य था। इसमें तो तुमको आर्य समाजी भी मदद देंगे क्योंकि वह भी शिव को मानते हैं। तुम अपना झण्डा चढ़ाओ। एक तरफ त्रिमूर्ति गोला, दूसरे तरफ झाड़। तुम्हारा झण्डा वास्तव में यह होना चाहिए। बन तो सकता है ना। झण्डा चढ़ा दो जो सब देखें। सारी समझानी इसमें है। कल्प वृक्ष और ड्रामा इनमें तो बिल्कुल क्लीयर है। सबको मालूम पड़ जायेगा कि हमारा धर्म फिर कब होगा। आपेही अपना-अपना हिसाब निकालेंगे। सबको इस चक्र और झाड़ पर समझाना है। क्राइस्ट कब आया? इतना समय वह आत्मायें कहाँ रहती हैं? जरूर कहेंगे निराकारी दुनिया में हैं। हम आत्मायें रूप बदलकर यहाँ आकर साकार बनते हैं। बाप को भी कहते हैं ना—आ

भी रूप बदल साकार में आओ। आयेंगे तो यहाँ ना। सूक्ष्मवतन में तो नहीं आयेंगे। जैसे हम रूप बदलकर पार्ट बजाते हैं, आप भी आओ फिर से आकर राजयोग सिखलाओ। राजयोग है ही भारत को स्वर्ग बनाने का। यह तो बड़ी सहज बातें हैं। बच्चों को शौक चाहिए। धारणा कर औरों को करानी चाहिए। उसके लिए लिखापढ़ी करनी चाहिए। बाप भारत को आकर हेविन बनाते हैं। कहते भी हैं बरोबर क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले भारत पैराडाइज़ था इसलिए त्रिमूर्ति शिव का चित्र सबको भेज देना चाहिए। त्रिमूर्ति शिव की स्टैम्प बनानी चाहिए। इन स्टैम्प बनाने वालों की भी डिपार्टमेंट होगी। देहली में तो बहुत पढ़े लिखे हैं, यह काम कर सकते हैं। तुम्हारी कैपीटल भी देहली होनी है। पहले देहली को परिस्तान कहते थे। अब तो कब्रिस्तान है। तो यह सब बातें बच्चों की बुद्धि में आनी चाहिए।

अभी तुम्हें सदा खुशी में रहना है, बहुत-बहुत मीठा बनना है। सबको प्रेम से चलाना है। सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनने का पुरूषार्थ करना है। तुम्हारे पुरुषार्थ का यही लक्ष्य है परन्तु अभी तक कोई बना नहीं है। अभी तुम्हारी चढ़ती कला होती जाती है। धीरे-धीरे चढ़ते हो ना। तो बाबा हर प्रकार से शिव जयन्ती पर सेवा करने का इशारा देते रहते हैं। जिससे मनुष्य समझेंगे कि बरोबर इन्हों की नॉलेज तो बड़ी है। मनुष्यों को समझाने में कितनी मेहनत लगती है। मेहनत बिगर राजधानी थोड़ेही स्थापन होगी। चढ़ते हैं, गिरते हैं फिर चढ़ते हैं। बच्चों को भी कोई न कोई तूफान आता है। मूल बात है ही याद की। याद से ही सतोप्रधान बनना है। नॉलेज तो सहज है। बच्चों को बहुत मीठे ते मीठा बनना है। एम आब्जेक्ट तो सामने खड़ी है। यह (लक्ष्मी-नारायण) कितने मीठे हैं। इन्हों को देख कितनी ख़ुशी होनी है। हम स्टूडेन्ट की यह एम ऑब्जेक्ट है। पढ़ाने वाला है भगवान। अच्छा!

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज और वर्से को स्मृति में रख सदैव हर्षित रहना है। ज्ञान और योग है तो सर्विस में तत्पर रहना है।

२. सुखधाम और शान्तिधाम को याद करना है। इन देवताओं जैसा मीठा बनना है। अपार खुशी में रहना है। रूहानी टीचर बन ज्ञान का दान करना है।

वरदान:- संगमयुग पर प्रत्यक्षफल द्वारा शक्तिशाली बनने वाली सदा समर्थ आत्मा भव

संगमयुग पर जो आत्मायें बेहद सेवा के निमित्त बनती हैं - उन्हें निमित्त बनने का प्रत्यक्ष फल शक्ति की प्राप्ति होती है। यह प्रत्यक्षफल ही श्रेष्ठ युग का फल है। ऐसा फल खाने वाली शक्तिशाली आत्मा किसी भी परिस्थिति के ऊपर सहज ही विजय पा लेती है। वह समर्थ बाप के साथ होने के कारण व्यर्थ से सहज मुक्त हो जाती है। जहरीले सांप समान परिस्थिति पर भी उनकी विजय हो जाती है इसलिए यादगार में दिखाते हैं कि श्रीकृष्ण ने सर्प के सिर पर डांस किया।

स्लोगन:-

आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा हट जायेगा।

9 (९) त्रिमूर्ती ने त्रिथ को उडा दिया। स्थापना - विनाश - पालना। (१)

14-1-2000 प्रात: मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम अशरीरी बन जब बाप को याद करते हो तो तुम्हारे लिए यह दुनिया ही खत्म हो जाती है, देह और दुनिया भूली हुई है"

प्रश्न:- बाप द्वारा सभी बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र क्यों मिला है?

उत्तर:- अपने को आत्मा समझ, बाप जो है जैसा है, उसी रूप में याद करने के लिए तीसरा नेत्र मिला है। परन्तु यह तीसरा नेत्र काम तब करता है जब पूरा योगयुक्त रहें अर्थात् एक बाप से सच्ची प्रीत हो। किसी के नाम-रूप में लटके हुए न हों। माया प्रीत रखने में ही विघ्न डालती है। इसी में बच्चे धोखा खाते हैं।

गीत:- मरना तेरी गली में ....

ओम् शान्ति। सिवाए तुम ब्राह्मण बच्चों के इस गीत का अर्थ कोई समझ न सके। जैसे वेद-शास्त्र आदि बनाये हैं परन्तु जो कुछ पढ़ते हैं उसका अर्थ नहीं समझ सकते, इसलिए बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा मुख द्वारा सब वेदों-शास्त्रों का सार समझाता हूँ, वैसे ही इन गीतों का अर्थ भी कोई समझ नहीं सकते, बाप ही इनका अर्थ बताते हैं। आत्मा जब शरीर से न्यारी हो जाती है तो दुनिया से सारा संबंध/टूट जाता है। गीत भी कहता है अपने को आत्मा समझ अशरीरी बन बाप को याद करो तो यह दुनिया खत्म हो जाती है। यह शरीर इस पृथ्वी पर है, आत्मा इनसे निकल जाती है तो फिर उस समय उनके लिए मनुष्य सृष्टि है नहीं। आत्मा नंगी बन जाती है। फिर जब शरीर में आती है तो पार्ट शुरू होता है। फिर एक शरीर छोड़ दूसरे में जाकर प्रवेश करती है। वापिस महतत्व में नहीं जाना है। उड़कर दूसरे शरीर में जाती है। यहां इस आकाश तत्व में ही उनको पार्ट बजाना है। मूलवतन में नहीं जाना है। जब शरीर छोड़ते हैं तो न यह कर्मबन्धन, न वह कर्मबन्धन रहता है। शरीर से ही अलग हो जाते हैं ना। फिर दूसरा शरीर लेते तो वह कर्मबन्धन शुरू होता है। यह बातें सिवाए तुम्हारे और कोई मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है सब बिल्कुल ही बेसमझ हैं परन्तु ऐसे कोई समझते थोड़ेही हैं। अपने को कितना अक्लमंद समझते हैं, पीस प्राइज़ देते रहते हैं। यह भी तुम ब्राह्मण कुल भूषण अच्छी रीति समझा सकते हो। वह तो जानते ही नहीं कि पीस किसको कहा जाता है? कोई तो महात्माओं के पास जाते हैं कि मन की शान्ति कैसे हो? यह तो कहते हैं वर्ल्ड में शान्ति कैसे हो! ऐसे नहीं कहेंगे कि निराकारी दुनिया में शान्ति कैसे हो? वह तो है ही शान्तिधाम। हम आत्मायें शान्तिधाम में रहती हैं परन्तु यह तो मन की शान्ति कहते हैं। वह जानते नहीं कि शान्ति कैसे मिलेगी? शान्तिधाम तो अपना घर है। यहाँ शान्ति कैसे मिल सकती? हाँ, सतयुग में सुख, शान्ति, सम्पत्ति सब है, जिसकी स्थापना बाप करते हैं। यहाँ तो कितनी अशान्ति है। यह सब अब तुम बच्चे ही समझते हो। सुख, शान्ति, सम्पत्ति भारत में ही थी। वह वर्सा था बाप का और दुःख, अशान्ति, कंगालपना, यह वर्सा है रावण का। यह सब बातें बेहद का बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप परमधाम में रहने वाला नॉलेजफुल है, जो सुखधाम का हमको वर्सा देते हैं। वह हम आत्माओं को समझा रहे हैं। यह तो जानते हो नॉलेज होती है आत्मा में। उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वह ज्ञान का सागर इस शरीर द्वारा वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। वर्ल्ड की आयु तो होनी चाहिए ना। वर्ल्ड

तो है ही। सिर्फ नई दुनिया और पुरानी दुनिया कहा जाता है। यह भी मनुष्यों को पता नहीं। न्यु वर्ल्ड से ओल्ड वर्ल्ड होने में कितना समय लगता है?

तुम बच्चे जानते हो कलियुग के बाद सतयुग जरूर आना है। इसलिए कलियुग और सतयुग के संगम पर बाप को आना पड़ता है। यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा, ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है—स्थापना, विनाश, पालना। यह तो कॉमन बात है। परन्तु यह बातें तुम बच्चे भूल जाते हो। नहीं तो तुमको खुशी बहुत रहे। निरन्तर याद रहनी चाहिए। बाबा हमको अब नई दुनिया के लिए लायक बना रहे हैं। तुम भारतवासी ही लायक बनते हो, और कोई नहीं। हाँ, जो और-और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं, वह आ सकते हैं। फिर इसमें कनवर्ट हो जायेंगे, जैसे उसमें हुए थे। यह सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है। मनुष्यों को समझाना है यह पुरानी दुनिया अब बदलती है। महाभारत लड़ाई भी जरूर लगनी है। इस समय ही बाबा आकर राजयोग सिखलाते हैं। जो राजयोग सीखते हैं, वह नई दुनिया में चले जायेंगे। तुम सबको समझा सकते हो कि ऊंच ते ऊंच है भगवान, फिर ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, फिर आओ यहाँ, मुख्य है जगत अम्बा, जगत पिता। बाप आते भी यहाँ हैं ब्रह्मा के तन में, प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है ना। ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्मवतन में तो नहीं होगी ना। यहाँ ही होती है। यह व्यक्त से अव्यक्त बन जाते हैं। यह राजयोग सीख फिर विष्णु के दो रूप बनते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझनी चाहिए ना। मनुष्य ही समझेंगे। वर्ल्ड का मालिक ही वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझा सकते हैं। वह नॉलेजफुल, पुनर्जन्म रहित है। यह नॉलेज किसकी बुद्धि में नहीं है। परखने की भी बुद्धि चाहिए ना। कुछ बुद्धि में बैठता है या ऐसे ही है, नब्ज देखनी चाहिए। एक अजमल खाँ नामीग्रामी वैद्य होकर गया है। कहते हैं देखने से ही उनको बीमारी का पता पड़ जाता था। अब तुम बच्चों को भी समझना चाहिए कि यह लायक है या नहीं? बाप ने बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ, बाप जो है, जैसा है, उसको उसी रूप में याद करते हो। परन्तु ऐसी बुद्धि उनकी होगी जो पूरा योगयुक्त होंगे, जिनकी बाप से प्रीत बुद्धि होगी। सब तो नहीं है ना। एक दो के नाम-रूप में लटक पड़ते हैं। बाप कहते हैं प्रीत तो मेरे साथ लगाओ ना। माया ऐसी है जो प्रीत रखने नहीं देती है। माया भी देखती है हमारा ग्राहक जाता है तो एकदम नाक-कान से पकड़ लेती है। फिर जब धोखा खाते हैं तब समझते हैं माया से धोखा खाया। मायाजीत, जगतजीत बन नहीं सकेंगे, ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। इसमें ही मेहनत है। श्रीमत कहती है मामेकम् याद करो तो तुम्हारी जो पतित बुद्धि है वह पावन बन जायेगी। परन्तु कइयों को बड़ा मुश्किल लगता है। इसमें सब्जेक्ट एक ही है अलफ और बे। बस, दो अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं! बाबा कहे अलफ को याद करो फिर अपनी देह को, दूसरे की देह को याद करते रहते हैं। बाबा कहते हैं देह को देखते हुए तुम मुझे याद करो। आत्मा को अब तीसरा नेत्र मिला है मुझे देखने-समझने का, उससे काम लो। तुम बच्चे अभी त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनते हो। परन्तु त्रिकालदर्शी भी नम्बरवार हैं। नॉलेज धारण करना कोई मुश्किल नहीं है। बहुत ही अच्छा-अच्छा समझते हैं परन्तु योगबल कम है, देही-अभिमानी-पना बहुत कम है। थोड़ी बात में क्रोध, गुस्सा आ जाता है, गिरते रहते हैं। उठते हैं, गिरते हैं। आज उठे कल फिर गिर पड़ते

हैं। देह-अभिमान मुख्य है, फिर और विकार लोभ, मोह आदि में फंस पड़ते हैं। देह में भी मोह रहता है ना। माताओं में मोह जास्ती होता है। अब बाप उससे छुड़ाते हैं। तुमको बेहद का बाप मिला है फिर मोह क्यों रखते हो? उस समय शक्ल, बातचीत ही बन्दर मिसल हो जाती है। बाप कहते हैं—नष्टोमोहा बन जाओ, निरन्तर मुझे याद करो। पापों का बोझा सिर पर बहुत है, वह कैसे उतरे? परन्तु माया ऐसी है, याद करने नहीं देगी। भल कितना भी माथा मारो घड़ी-घड़ी बुद्धि को उड़ा देती है। कितनी कोशिश करते हैं हम मोस्ट बिलवेड बाबा की ही महिमा करते रहें। बाबा, बस आपके पास आये कि आये, परन्तु फिर भूल जाते हैं। बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह नम्बरवन में जाने वाला भी पुरुषार्थी है ना।

बच्चों की बुद्धि में यह याद रहना चाहिए कि हम गॉड फादरली स्टूडेन्ट हैं। गीता में भी है—भगवानुवाच, मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। सिर्फ शिव के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। वास्तव में शिवबाबा की जयन्ती सारी दुनिया में मनानी चाहिए। शिवबाबा सबको दुःख से लिबरेट कर गाइड बन ले जाते हैं। यह तो सब मानते हैं कि वह लिबरेटर, गाइड है। सबका पतित-पावन बाप है, सबको शान्तिधाम-सुखधाम में ले जाने वाला है तो उनकी जयन्ती क्यों नहीं मनाते हैं? भारतवासी ही नहीं मनाते हैं इसलिए ही भारत की यह बुरी गति हुई है। मौत भी बुरी गति से होता है। वह तो बॉम्बस ऐसे बनाते हैं, गैस निकला और खलास, जैसे क्लोरोफॉर्म लग जाता है। यह भी उन्हों को बनाने ही हैं। बन्द होना इम्पॉसिबुल है। जो कल्प पहले हुआ था सो अब रिपीट होगा। इन मूसलों और नैचुरल कैलेमिटीज़ से पुरानी दुनिया का विनाश हुआ था, सो अभी भी होगा। विनाश का समय जब होगा तो ड्रामा प्लैन अनुसार एक्ट में आ ही जायेंगे। ड्रामा विनाश जरूर करायेगा। रक्त की नदियाँ यहां बहेंगी। सिविलवार में एक-दो को मार डालते हैं ना। तुम्हारे में भी थोड़े जानते हैं कि यह दुनिया बदल रही है। अब हम जाते हैं सुखधाम। तो सदैव ज्ञान के अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए। जितना याद में रहेंगे उतना सुख बढ़ता जायेगा। छी-छी देह से नष्टोमोहा होते जायेंगे। बाप सिर्फ कहते हैं अलफ को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी है। सेकण्ड में बादशाही, बादशाह को बच्चा हुआ तो गाया बच्चा बादशाह बना ना। तो बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो और चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती महाराजा बनेंगे। इसलिए गाया जाता है सेकण्ड में जीवनमुक्ति, सेकण्ड में बेगर टू प्रिन्स। कितना अच्छा है। तो श्रीमत पर अच्छी रीति चलना चाहिए। कदम-कदम पर राय लेनी होती है।

बाप समझाते हैं मीठे बच्चे, ट्रस्टी बनकर रहो तो ममत्व मिट जाये। परन्तु ट्रस्टी बनना मासी का घर नहीं है। यह खुद ट्रस्टी बने हैं, बच्चों को भी ट्रस्टी बनाते हैं। यह कुछ भी लेते हैं क्या? कहते हैं तुम ट्रस्टी हो सम्भालो। ट्रस्टी बने तो फिर ममत्व मिट जाता है। कहते भी हैं ईश्वर का सब कुछ दिया हुआ है। फिर कुछ नुकसान पड़ता है या कोई मर जाता है तो बीमार हो पड़ते हैं। मिलता है तो खुशी होती है। जबकि कहते हो ईश्वर का दिया हुआ है तो फिर मरने पर रोने की क्या दरकार है? परन्तु माया कम नहीं है, मासी का घर थोड़ेही है। इस समय बाप कहते हैं तुमने हमको बुलाया है कि इस पतित दुनिया में हम नहीं रहना चाहते हैं, हमको पावन दुनिया में ले चलो, साथ ले चलो परन्तु इसका अर्थ भी समझते नहीं। पतित-पावन आयेगा तो जरूर शरीर खत्म होंगे ना तब तो आत्माओं को ले जायेंगे। तो ऐसे बाप

के साथ प्रीत बुद्धि होनी चाहिए। एक से ही लव रखना है, उनको ही याद करना है। माया के तूफान तो आयेंगे। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना चाहिए। वह बेकायदे हो जाता है। बाप कहते हैं मैं आकर इस शरीर का आधार लेता हूँ। यह इनका शरीर है ना! तुमको याद बाप को करना है। तुम जानते हो ब्रह्मा भी बाबा, शिव भी बाबा है। विष्णु और शंकर को बाबा नहीं कहेंगे। शिव है निराकार बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। अब तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो। दादा इनमें प्रवेश करते हैं तब कहते हैं दादे का वर्सा बाप द्वारा हम लेते हैं। दादा (ग्रैन्ड फादर) है निराकार, बाप है साकार। यह वन्डरफुल नई बातें है ना। त्रिमूर्ति दिखाते हैं परन्तु समझते नहीं। शिव को उड़ा दिया है। बाप कितनी अच्छी-अच्छी बात समझाते हैं तो खुशी रहनी चाहिए-हम स्टूडेन्ट हैं। बाबा हमारा बाप, टीचर, सतगुरु है। अभी तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बेहद के बाप से सुन रहे हो फिर औरों को सुनाते हो। यह 5 हज़ार वर्ष का चक्र है। कॉलेज के बच्चों को वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझानी चाहिए। 84 जन्मों की सीढ़ी क्या है, भारत की चढ़ती कला और उतरती कला कैसे होती है, यह समझाना है। सेकण्ड में भारत स्वर्ग बन जाता है फिर 84 जन्मों में भारत नर्क बनता है। यह तो बहुत ही सहज समझने की बात है। भारत गोल्डन एज से आइरन एज में कैसे आया है-यह तो भारतवासियों को समझाना चाहिए। टीचर्स को भी समझाना चाहिए। वह है जिस्मानी नॉलेज, यह है रूहानी नॉलेज। वह मनुष्य देते हैं, यह गॉड फादर देते हैं। वह है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, तो उनके पास मनुष्य सृष्टि का ही नॉलेज होगा। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. इस छी-छी देह से पूरा नष्टोमोहा बन ज्ञान के अतीन्द्रिय सुख में रहना है। बुद्धि में रहे अब यह दुनिया बदल रही है हम जाते हैं अपने सुखधाम।

२. ट्रस्टी बनकर सब कुछ सम्भालते हुए अपना ममत्व मिटा देना है। एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। कर्मेन्द्रियों से कभी भी कोई विकर्म नहीं करना है।

वरदान:- शुभचिंतक और शुभचिंतन स्थिति के अनुभव द्वारा ब्रह्मा बाप समान मास्टर दाता भव

ईर्ष्या, घृणा और क्रिटिसाइज़-इन तीन बातों से मुक्त रहकर सर्व के प्रति शुभचिंतक बनो और शुभचिंतन स्थिति का अनुभव करो क्योंकि जिसमें ईर्ष्या की आग होती है वे स्वयं जलते हैं, दूसरों को परेशान करते हैं, घृणा वाले खुद भी गिरते हैं, दूसरे को भी गिराते हैं और हँसी में भी क्रिटिसाइज करने वाले, आत्मा को हिम्मतहीन बनाकर दुःखी करते हैं। इसलिए इन तीनों बातों से मुक्त रह शुभचिंतक स्थिति के अनुभव द्वारा दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो।

स्लोगन:-

ऐसे खुश रहो जो आपके खुशनुमः चेहरे को देख रोने वाले भी खुश हो जाएं।

7-2-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" 4.1.80 मधुबन

वर्तमान राज्य-अधिकारी ही भविष्य राज्य-अधिकारी

सभी अपने को डबल राज्य-अधिकारी समझते हो? वर्तमान भी राज्य-अधिकारी और भविष्य में भी राज्य-अधिकारी। वर्तमान, भविष्य का दर्पण है। वर्तमान की स्टेज अर्थात् दर्पण द्वारा अपना भविष्य स्पष्ट देख सके हो। वर्तमान व भविष्य के राज्य-अधिकारी बनने के लिए सदा यह चेक करो कि मेरे में रूलिंग पावर कहाँ तक है, पहले सूक्ष्म शक्तियाँ, जो विशेष कार्यकर्ता हैं, उनके ऊपर कहाँ तक अपना अधिकार है। संकल्प शक्ति के ऊपर, बुद्धि के ऊपर और संस्कारों के ऊपर। यह विशेष तीन शक्तियाँ राज्य-अधिकारी बनाने में सदा सहयोगी अर्थात् राज्य की कारोबार चलाने वाले मुख्य सहयोगी कार्य-कर्ता हैं। अगर यह तीनों कार्य-कर्ता आप आत्मा अर्थात राज्य-अधिकारी राजा के इशारे पर चलते हैं तो सदा वह राज्य यथार्थ रीति से चलता है। जैसे बाप को भी तीन मूर्तियों द्वारा कार्य कराना पडता है, इसलिए त्रिमूर्ति का विशेष गायन और पूजन है। त्रिमूर्ति शिव कहते हो। एक बाप के तीन विशेष कार्य-कर्ता हैं जिन द्वारा विश्व का कार्य कराते हैं। ऐसे आप आत्मा रचयिता हो और यह तीन विशेष शक्तियाँ अर्थात् त्रिमूर्ति शक्तियाँ आपके विशेष कार्यकर्ता हैं। आप भी इन तीन रचना के रचयिता हो। तो चेक करो कि त्रिमूर्ति रचना आपके कन्ट्रोल में है?

मन है उत्पत्ति करने वाला अर्थात् संकल्प रचने वाला। बुद्धि है निर्णय करना अर्थात् पालना के समान कार्य करना। संस्कार है अच्छा व बुरा परिवर्तन कराने वाला। जैसे ब्रह्मा आदि देव है वैसे पहले आदि शक्ति है मन अर्थात् संकल्प शक्ति। आदि शक्ति यथार्थ है तो और भी कार्य-कर्ता उनके साथी यथार्थ कार्य करने वाले हैं। पहले यह चेक करो मुझ राजा का पहला आदि कार्य-कर्ता सदा समीप के साथी के समान इशारे पर चलता है क्योंकि माया दुश्मन भी पहले इसी आदि शकति को बागी अर्थात् ट्रेटर बनाती है। और राज्य-अधिकार लेने की कोशिश करती है। इसलिए आदि शक्ति को सदा अपने अधिकार की शक्ति के आधार पर सहयोगी, विशेष कार्यकर्ता करके चलाओ। जैसे राजा स्वयं कोई कार्य नहीं करता, कराता है। करने वाले राज्य कारोबारी अलग होते हैं। अगर राज्य कारोबारी ठीक नहीं होते तो राज्य डगमग हो जाता है। ऐसे आत्मा भी करावनहार है, करनहार ये विशेष त्रिमूर्ति शक्तियाँ हैं। पहले इनके ऊपर रूलिंग पावर है तो यह साकार कर्मेन्द्रियाँ उनके आधार पर स्वत:ही सही रास्ते पर चलेंगी। कर्मेन्द्रियों को चलाने वाली भी विशेष यह तीन शक्तियाँ हैं। अब रूलिंग पावर कहाँ तक आई है – यह चेक करो।

जैसे डबल विदेशी हो वैसे डबल रूलर्स हो? हरेक का राज्य-कारोबार अर्थात् स्वराज्य ठीक चल रहा है? जैसे सतयुगी सृष्टि के लिए कहते हैं एक राज्य एक धर्म है। ऐसे ही अब स्वराज्य में भी एक राज्य अर्थात् स्व के ईशारे पर सर्व चलने वाले हैं। एक धर्म अर्थात् एक ही धारणा सबकी है कि सदा श्रेष्ठाचारी चढ़ती कला में चलना है। मन अपनी मनमत पर चलावे, बुद्धि अपनी निर्णय शकति की हलचल करे, मिलावट करे, संस्कार आत्मा को भी नाच नचाने वाले हो जाएं तो इसको एक धर्म नहीं कहेंगे, एक राज्य नहीं कहेंगे। तो आपके राज्य का क्या हाल है? त्रिमूर्ति शक्तियाँ ठीक हैं? कभी संस्कार बन्दर का नाच तो नहीं

नचाते हैं? बन्दर क्या करता है नीचे ऊपर छलांग मारता है ना। संस्कार की भी अभी-अभी चढ़ती कला, अभी-अभी गिरती कला। यह बन्दर का नाच है ना। तो ये संस्कार नाच तो नहीं नचाते हैं ना? कन्ट्रोल में हैं ना सब? कभी बुद्धि मिलावट तो नहीं करती है? जैसे आजकल मिलावट करते हैं तो निर्णय शक्ति भी मिलावट कर देती है, कभी बुद्धि मिलावट तो नहीं कर देती है? अभी-अभी यथार्थ अभी-अभी व्यर्थ तो मिलावट हुई ना।

कारण को निवारण के रूप में कर लो तो माया समाप्त हो जायेगी

विदेश में माया आती है? विदेशियों के पास माया नहीं आनी चाहिए क्योंकि विदेश में वर्तमान समय थोड़े ही समय में ऊंचे भी चढ़ते और नीचे भी गिरते हैं। तो थोड़े समय में सब प्रकार के अनुभव करके अब पूरे कर लिए हैं। जैसे कोई चीज़ बहुत खाई जाती है तो दिल भर जाता है। वैसे विदेश में भी सब प्रकार का फुल फोर्स होने के कारण विदेश की आत्मायें अब इनसे थक गई हैं। तो जो थके हुए होते हैं उनको अगर आराम मिल जाता है तो बिल्कुल लेटते ही गुम हो जाते हैं। डीप स्लीप का अनुभव करते हैं। तो विदेशियों को माया ने थोड़े ही समय में बहुत अनुभव करा दिया है। अब क्या करना है? अब जो नई चीज़ की तलाश थी वह मिल गई फिर माया क्यों आवे? नहीं आनी चाहिए ना, फिर आती क्यों है? (माया के पुराने ग्राहक हैं) माया को भी अगर नये ग्राहक अच्छे मिल जायेंगे तो पुरानों को आपेही छोड़ देगी। रूलिंग पावर वाले के पास माया आ नहीं सकती। माया जहाँ देखती है कार्यकर्ता सब होशियार हैं, अटेन्शन में हैं तो वहाँ हिम्मत नहीं रख सकती। रूलिंग पावर कहाँ तक हैं – उसकी चेकिंग करो और अगर पावर नहीं है तो उसका कारण क्या है? कारण को निवारण के रूप में परिवर्तित करो। कारण खत्म हो जाना अर्थात् माया खत्म हो गई। माया का मुख्य स्वरूप कारण के रूप में आता है। कारण को निवारण के रूप में कर लो तो माया सदा के लिए समाप्त हो जायेगी।

आज तो मिलने आये हैं। मुरलियाँ तो बहुत सुनी अब ऐसे मुरलीधर बनो जो माया मुरली के आगे न्योछावर (सरेन्डर) हो जाए। ऐसे मुरलीधर हो ना कि वह स्थूल साज़ की मुरली चलाने वाले हो? वह तो बहुत अच्छी चलाते हो। इसमें भी मुरलीधर बनो। माया को सरेन्डर कराने की मुरली। यह साज़ भी बजा सकते हो ना? साज़ बजाने का मैजारटी को शौक है। जिस समय भी कोई साज़ बजाओ उस समय यह सोचो कि मायाजीत बनने के राज़ का साज़ भी आता है? यह राज़ का साज़ अगर सदैव बजाते रहो तो माया सदा के लिए सरेन्डर हो जायेगी। ऐसे साज़ बजाना आता है? विदेशी भी पदमगुणा भाग्यशाली हैं। दूर से आते हैं लेकिन चान्स भी पदमगुणा मिलता है। जितना देश वाले वर्ष में लेते हैं उससे ज्यादा विदेशियों को थोड़े समय में प्राप्त होता है। विशेष पालना मिल रही है।

सबकी नज़र आप विदेशियों के ऊपर विशेष रहती है। तो विशेष पालना का रूप, प्रत्यक्षफल के रूप में विशेष दिखाना पड़े। जैसे स्थापना में विशेष पालना चली वैसे अभी भी आप लोगों की विशेष पालना चल रही है। तो पहले पालना वालों ने उस पालना का रिटर्न सेवा की स्थापना की। अब आप लोग क्या करेंगे? सेवा की समाप्ति करेंगे और सम्पूर्णता का व प्रत्यक्षता का नाम बाला करेंगे। विदेशियों को ही समाप्ति की डेट फिक्स करनी पड़ेगी। पहले वालों ने स्थापना की डेट फिक्स की और अब आप लोगों को समाप्ति की डेट फिक्स

करनी पड़ेगी। अभी सबका इन्तज़ार आपके ऊपर होगा। बापदादा से पूछेंगे कि विनाश कब होगा, तो कहेंगे विदेशियों से पूछो। देश वालों ने स्थापना की ज़िम्मेवारी ली। विदेशी भी कोई तो ज़िम्मेवारी लेंगे ना। है भी विदेश विनाशी और भारत अविनाशी तो भारतवासियों ने स्थापना का किया और विदेशी विनाश के कार्य में विशेष निमित्त बनेंगे। भारतवासी बच्चों ने यज्ञ की स्थापना में अपनी आहुतियाँ डाल कर स्थापना की। यज्ञ रचा। और आप लोग फिर अन्तिम आहुति डालकर समाप्त करो। फिर जय-जयकार हो जायेगा। अब जल्दी-जल्दी अन्तिम आहुति डालो। सब मिल करके एक संकल्प का स्वाहा करो तो समाप्ति हो जायेगी। इसकी डेट कब बतायेंगे? यह डेट बताना। (एक बार मधुबन में फिर से आयें) विनाश शुरू होगा तो सदा के लिए आ जायेंगे, इसलिए तो यहाँ बड़ा हाल बना रहे हैं। सिर्फ वायरलेस का सेट अपना ठीक रखना। यहाँ की वायरलेस है वाइसलेस की वायरलेस। तो वायरलेस द्वारा आवाज़ आपको पहुँच जायेगी कि आप आ जाओ। अगर वायरलेस सेट नहीं होगा तो आवाज़ भी पहुँच नहीं सकेगा। डायरेक्शन नहीं मिल सकेगा। स्थूल साधन द्वारा आवाज़ नहीं आयेगा। वाइसलेस बुद्धि ही यह अन्तिम डायरेक्शन कैच कर सकेगी। इसलिए जल्दी-जल्दी करेंगे तो जल्दी समय आ जायेगा। पहले तो पावरफुल माइक तैयार करो। जिस माइक द्वारा आवाज़ भारत में पहुँचे और फिर जैसे उनका इलेक्शन होता है तो एक दिन पहले एडवरटाइज़मेन्ट साधन सब बन्द कर देते हैं। पीछे वोटिंग होती है। तो पहले तो माइक द्वारा आवाज़ फैलाओ फिर वो भी साइलेन्स हो जायेगी फिर रिज़ल्ट आउट होगी। अभी एडवरटाइज़मेन्ट माइक कहाँ तक तैयार किये हैं, पहले आवाज़ फैलेगा फिर ऐसी डेड साइलेंस होगी जो यह आवाज़ फैलाने का पार्ट भी समाप्त हो जायेगा और फिर परिवर्तन होगा। अभी तो पहली स्टेज चल रही है ना। पहली स्टेज में टाइम लगेगा, दूसरी में टाइम नहीं लगेगा।

"शिव जयन्ती महोत्सव धूम-धाम से मनाने के लिए अव्यक्त बाप-दादा का विशेष प्लैन"

अभी सेवा के अच्छे चान्स आ रहे हैं। साकार और निराकार दोनों को प्रत्यक्ष करने का समय सपीप आ रहा है। इसमें क्या नवीनता करेंगे? हर फँक्शन में कोई-न-कोई नवीनता तो करते हो ना। तो इस शिवरात्री पर विशेष क्या करेंगे?

1. जैसे पिछली बारी लाइट एण्ड साउण्ड का संकल्प रखा तो हरेक ने अपने-अपने स्थान पर यथाशक्ति किया। शिवरात्री पर जैसे गीता के भगवान को सिद्ध करने का लक्ष्य रखते हो ना, लेकिन कटाक्ष करते हो तो लोगों को समझ में नहीं आता है। इसके लिए इस बार शिवरात्री के दिन दो चित्रों को विशेष सजाओ — एक निराकार शिव का दूसरा श्रीकृष्ण का। विशेष दोनों चित्रों को ऐसे सज़ाकर रखो जैसे किरणों का चित्र बनाते हो ना। शिव का भी किरणों वाला चित्र सज़ाया हुआ हो और श्रीकृष्ण का भी किरणों का चित्र सज़ाया हुआ हो और श्रीकृष्ण का भी किरणों का चित्र सजाया हुआ हो। विशेष दोनों चित्रों की आकर्षण हो। कृष्ण के चित्र की महिमा अलग और शिव की महिमा अलग। कटाक्ष नहीं करो लेकिन दोनों के अन्तर को सिद्ध करो। स्टेज का विशेष शो यह दो चित्र हों। जैसे कोई भी कान्फ्रेंस आदि करते हो तो कॉनफ्रेंस का सिम्बल सज़ाकर रखते हो, फिर उसका अनावरण कराते हो। ऐसे शिवरात्री पर कोई भी वी.आई.पी. द्वारा इन दोनों चित्रों का अनावरण कराओ और उन्हें थोड़े में पहले उसका अन्तर स्पष्ट कर सुनाओ। फिर सभा में भी इसी टॉपिक पर जिस समय शिव

की महिमा करो तो भाषण के साथ-साथ चित्र भी रखो। भाषण करने वाले साथ-साथ चित्र दिखाते जायें। यह ये हैं — यह ये हैं। तो सभी का अटेन्शन जायेगा। पहले अन्तर सुनाकर फिर उनको कहो अब आप जज करो कि रचयिता कौन और रचना कौन। तो गीता का ज्ञान रचयिता ने दिया या रचना ने। तो इस शिवरात्री पर इन दो विशेष चित्रों का महत्व रखो।

2. जैसे पिछली बारी लाइट एण्ड साउण्ड की टेप में कमेन्ट्री भरी हुई थी वैसे नहीं लेकिन प्रोग्राम के बीच में शिवबाबा का सज़ा हुआ लाइट का चित्र सामने लाओ और सामने रखते हुए सब लाइट बन्द कर दो, उस चित्र की लाइट ही हो फिर धीरे-धीरे डायरेक्ट उस समय बाप की महिमा करते जाओ। महिमा करते उनको भी महिमा में लेते चलो। महिमा सुनाते हुए अनुभव कराओ। शान्ति का सागर कहो तो शान्ति की लहर फैल जाए। जो भी गुण वर्णन करो उसकी लहर फैल जाए। उस समय सब लाइट बन्द होनी चाहिए। सिर्फ एक उस चित्र की तरफ सबका अटेन्शन हो। धीरे-धीरे ऐसे अनुभवी मूर्त होकर महिमा करो। जैसे साथ में लिए जा रहे हैं। शान्ति का सागर कहा तो जैसे उसी सागर में सब नहा रहे हैं, ऐसा अनुभव कराओ। जैसे योग की कॉमेन्ट्री करते हो धीरे-धीरे वैसे उनको लक्ष्य देकर उसी रीति से बिठाओ तो एक अटेन्शन जायेगा और दूसरा अन्तर का मालूम पड़ जायेगा। कट करने की जरूरत नहीं होगी। स्वत: ही सिद्ध हो जायेगा।

3. हर फँक्शन में योग शिविर के प्रोग्राम का एनाउन्स ज़रूर करो। चाहे एक दिन का फँक्शन करते हो लेकिन योग शिविर के फार्म ज़रूर भराओ। योग शिविर के फार्म का विशेष टेबल बना हुआ हो, उसमें नज़दीक स्थान के लिए फार्म भराओ। तो जो पीछे योग शिविर करने आयेंगे वह सम्पर्क में आ जायेंगे। योग शिविर के फार्म भराकर पीछे भी उनका सम्पर्क बनाते रहो। कोई भी प्रोग्राम करो उसमें योग शिविर को विशेष महत्व दो।

4. जो भी चान्स मिलते हैं और जो भी सम्पर्क में आये हैं, या कोई विघ्नों के कारण भागन्ती हो चले गये हैं, उनको ऐसे मौके पर विशेष निमन्त्रण दो। जो अपनी कमजोरियों के कारण पीछे रह गये हैं उनको स्नेह से आगे बढ़ाना चाहिए। ऐसे प्रोग्राम से उनमें भी जागृति आयेगी। उमंग में आ जायेंगे।

वरदान:- स्वयं को निमित्त समझ व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ वृत्ति से मुक्त रहने वाले विश्व कल्याणकारी भव

मैं विश्व कल्याण के कार्य अर्थ निमित्त हूँ - इस जिम्मवारी की स्मृति में रहो तो कभी भी किसी के प्रति वा अपने प्रति व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ वृत्ति नहीं हो सकती। जिम्मेवार आत्मायें एक भी अकल्याणकारी संकल्प नहीं कर सकते। एक सेकण्ड भी व्यर्थ वृत्ति नहीं बना सकते क्योंकि उनकी वृत्ति से वायुमण्डल का परिवर्तन होना है। इसलिए सर्व के प्रति उनकी शुभ भावना, शुभ कामना स्वत: रहती है।

स्लोगन:-

जो सदा शुभ-चिन्तक और शुभ-चिन्तन में रहते हैं वह व्यर्थ चिन्तन से छूट जाते हैं।

11-12-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हें अथाह ईश्वरीय सुख मिला है, इसलिए तुम्हें मायावी सुखों की परवाह नहीं करनी है, वह सुख काग विष्टा समान है"

प्रश्न:- बाप की सर्व बच्चों के प्रति एक ही आश है - वह कौन सी?

उत्तर:- मेरे सब बच्चे अच्छी रीति पढ़कर तख्तनशीन बनें अथवा बाप के कन्धे पर चढ़ें। बाबा देखते हैं कौन कितना अपनी खुशबू फैलाता है। बच्चे में कोई बदबू तो नहीं है। तो बच्चों को भी ऐसे पुरूषार्थ में लग जाना चाहिए। कभी भी कर्मेन्द्रियों से कोई उल्टा काम नहीं करना चाहिए।

गीत:- बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम....

ओम् शान्ति। इस गीत का थोड़ा तात्पर्य बाप बतलाते हैं इसमें कोई बदलने की बात ही नहीं। बच्चे बाप को कह नहीं सकते कि हम आपके बच्चे नहीं हैं, परन्तु कोई समय बदल जायेंगे। वैसे बच्चे कभी बाप से बदलते नहीं हैं। बच्चे तो हैं ही परन्तु कुटुम्ब से जुदा हो जाते हैं। अब यह तो है बेहद का बाप। कहते हैं मैं अपने परमधाम में रहता था। जैसे तुम आत्मायें यहाँ आकर पार्ट बजाती हो, गृहस्थी बनती हो वैसे मुझे भी आकर गृहस्थी बनना पड़ता है। यहाँ सम्मुख तुम मुझे माता पिता कहते हो। भल आगे भी तुम पुकारते थे तुम मात-पिता... परन्तु उस समय मैं गृहस्थी नहीं था। इस समय आकर गृहस्थी बना हूँ। गृहस्थी भी दो चार बच्चों का नहीं। ढेर के ढेर बच्चे आते जाते हैं। भल कहते हैं - हम बदलेंगे नहीं, परन्तु माया बदला देती है। बाप है ऊंचे ते ऊंच। इनसे ऊंच बाप कोई हो नहीं सकता। साधारण मनुष्य तन में प्रवेश किया है। बच्चे जानते हैं भविष्य 21 जन्मों के लिए पुरुषार्थ अनुसार जायदाद मिलती है। बहुत हैं जो चलते-चलते फिर बदल जाते हैं क्योंकि यह है माया की लड़ाई। आगे तुम माया के थे। अभी बाप ने एडाप्ट किया है। उस तरफ है माया का सुख, यहाँ तो वह सुख नहीं है। तो माया के सुख अपनी तरफ खींच लेते हैं। यहाँ तुमको है गुप्त सुख। जानते हो भविष्य में अथाह सुख लेंगे। यहाँ के सुख में अगर बुद्धि गई तो वह सुख याद आते रहेंगे। अन्त में भी वही याद आयेंगे। इसलिए इन मायावी सुखों की परवाह नहीं रखनी है। गाते भी हैं यह सुख काग विष्टा के समान है। अब तुम बच्चे जानते हो सुख तो हमको सतयुग में मिलेगा, वह सुख प्राप्त करने के लिए हम मात-पिता के बने हैं। बाप जरूर कोई समय गृहस्थी बने हैं, जिस कारण उनको तुम मात-पिता कहा जाता है। गाते तो हैं परन्तु समझते नहीं हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप भी है तो माँ भी है। इस माँ द्वारा अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया है। अब प्रजापिता और शिव दोनों ही बाप ठहरे। बाप तो माता द्वारा एडाप्ट करेंगे ना। अब त्वमेव माताश्च पिता... इनको कहें या ब्रह्मा को कहें। गाते तो हैं हम सब ब्रदर्स हैं, वह फादर है। उसमें तो माता का प्रश्न ही नहीं। गाया जाता है - तुम

मात-पिता। अब माता-पिता कैसे बनते हैं, यह वन्डरफुल बातें हैं समझने की। मनुष्य मूँझते भी हैं क्योंकि शरीर तो मेल का है ना, इसलिए माता एडाप्ट की गई। वह है सरस्वती बेटी। परन्तु बेटी द्वारा तो एडाप्ट नहीं किया जाता है। यह माता भी है तो पिता भी है। उसने इसमें प्रवेश किया है। तब ब्रह्मा को खुद कहते हैं तुम हमारा बच्चा भी हो, वन्नी (पत्नी) भी हो। बरोबर बाप इन द्वारा एडाप्ट करते हैं। तो यह माता भी हो जाती है। फिर भी बाप कहते हैं, तुमको याद मुझे करना है। ब्रह्मा को याद नहीं करना है। मनुष्य तो दुनिया में बहुत लॉकेट पहनते हैं। यह तो बाप है। बाप कहते है बच्चे तुम्हें अपना भी सब कुछ भूल जाना है, देह सहित देह के जो भी सम्बन्धी हैं, सबको भूल परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाओ। तुम बच्चों को फरमान है मुझ बाप को याद करो। मैं इनमें प्रवेश होकर तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, इसमें प्रेरणा की कोई बात नहीं है। प्रेरणा से बाबा काम नहीं करता है। यह ड्रामा अनुसार सब कुछ होना ही है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। बाकी किसी देहधारी को याद करने से टाइम वेस्ट हो जाता है। दूसरे के साथ बुद्धियोग लगाते हो तो गोया बाप से नाफरमानबरदार बनते हो। बाप को याद करने में मेहनत है, इसमें ही भूल होती है। बाप कहते हैं तुम हो आशिक। चलते-फिरते मुझ माशूक को याद करने का पुरुषार्थ करो। गीत में भी भगवानुवाच है - मामेकम् याद करो। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह कौन कहते हैं? शिवबाबा या श्रीकृष्ण? किसको याद करना है? श्रीकृष्ण तो संगम पर हो न सके। हाँ, कृष्ण की आत्मा जरूर है। वह भी सीखकर औरों को सिखाते हैं। यह है मुख्य पहला नम्बर प्रिन्स। इनके साथ और भी तो हैं ना, राधे भी साथ में है। परन्तु फर्स्ट प्रिन्स यह है। राधे तो फिर भी बाद में है। पहले इनका नाम है। यह कितनी गुह्य बातें हैं। इसलिए बाप कहते हैं मुख्य एक ही बात को उठाओ। गीता कृष्ण ने नहीं गाई। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। इस बात में ही सारी बात है जीतने की। एक बाप ही ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय यह तीन धर्म स्थापन करते हैं। पहले डिटीज्म, फिर इस्लामिज्म, बुद्धिज्म, क्रिश्चियनीज्म... बस और छोटे-छोटे धर्म तो बहुत हैं। सद्गति होती है गीता के भगवान द्वारा। सर्व का सद्गति दाता बाप है। सर्व का जगत गुरू भी एक ही सतगुरू है। सतगुरू अर्थात् सद्गति करने वाला। यह सबको अच्छी तरह समझा सकते हो।

जो बाबा की मुरली निकलती है, सब स्टूडेन्ट को हक है मुरली अच्छी तरह पढ़ने का। जिनको मुरली का शौक होगा वह तीन चार बारी मुरली जरूर पढ़ेंगे। मुरली बिगर और कुछ सूझना ही नहीं चाहिए। मुरली को कोई 5-8 बारी अच्छी रीति पढ़े तो ब्राह्मणी से भी ऊंच जा सकते हैं। सबको अपनी उन्नति करनी है। वास्तव में ब्राह्मणियां हैं मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट। कोई की अच्छे खान-पान तरफ बुद्धि गई तो मरने समय भी वह याद आ जायेगा। इस समय ही सर्विस लेते रहे तो खलास। सर्विस पर रहने वाले सदैव ओबीडियन्ट होकर रहेंगे। जैसे जनक बच्ची है, कभी कोई से काम नहीं लेगी। कोई-

कोई को तो आदत पड़ जाती है तो फिर बात मत पूछो। कपड़े धोने वाले न मिलने से बीमार हो पड़ते हैं। कहाँ जा नहीं सकते। इसमें जास्ती नवाबी चल न सके। सर्वेन्ट बन सर्विस करनी है। बाप भी सर्वेन्ट है ना। कहते हैं मैं ऊंचे ते ऊंच, कितने साधारण तन में आया हूँ। मैं कोई घोड़ा गाड़ी आदि नहीं मांगता हूँ। यह तो फिर भी बाप है। वानप्रस्थ के बाद बच्चों का फर्ज होता है - बाप की सेवा करना। शिवबाबा का रथ है फिर भी बाबा कोई सेवा नहीं लेता है बच्चों से। बच्चों को अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान देना है। कायदेसिर पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे तो सतयुग में भी कायदेसिर राज्य करेंगे। सतयुग में बेकायदे कोई बात होती नहीं। हर एक बात में एक्यूरेट बनना है। हम विश्व के राजकुमार राजकुमारी बनते हैं तो वह मैनर्स यहाँ सीखते हैं। कृष्ण की कितनी महिमा है - महाराजकुमार। बाप से भी कृष्ण का नाम जास्ती है। राधे-कृष्ण के माँ-बाप कोई भी इतनी मार्क्स नहीं उठा सकते हैं, जितने राधे-कृष्ण उठाते हैं। ऊंची पढ़ाई यह पढ़ते हैं। सबसे जास्ती मार्क्स कृष्ण लेते हैं। परन्तु जन्म तो फिर कहाँ लेना ही पड़ेगा। तो जिसके पास जन्म लिया उनका इतना मान नहीं होता है। पहले जरूर उनके माँ-बाप जन्म लेते होंगे। फिर भी कृष्ण बच्चे का नाम बाला होता है। यह बातें बड़ी गुप्त है। यह है निटनैट की बातें। मूल बात है अपने को अशरीरी आत्मा समझो। हम बेहद बाप की औलाद हैं। हमको सर्वगुण सम्पन्न यहाँ बनना है। अभी कोई भी सम्पूर्ण नहीं बने हैं। सभी पुरुषार्थी हैं। इनकी रिजल्ट भी बाबा देखते तो हैं ना - यह (ब्रह्मा) सबसे ऊंच जायेगा, इसलिए फालो फादर कहा जाता है। अन्त तक फादर को ही फालो करना पड़े। ड्रामा में जो कुछ होता है समझा जाता है - यही राइट है। कोई भी बात में संशय नहीं आ सकता है। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना... तुमको तो मनमनाभव होकर रहना है। दु:ख की कोई बात ही नहीं। ड्रामा में जो नूँध होगी वह होता ही रहेगा। अनादि बना बनाया ड्रामा है। जो नूँध है वह होता रहेगा। बच्चों का काम है पुरुषार्थ कर अपना जीवन हीरे जैसा बनाना। कर्मेन्द्रियों से कोई उल्टा काम नहीं करना है। ऐसे नहीं जो भाग्य में होगा। पुरुषार्थ करना है। बाबा को पूरा समाचार भी देना है। कोई सेन्टर का तो बिल्कुल पता भी नहीं पड़ता है। कई सेन्टर्स चलते हैं। कोई तो बिगर ब्राह्मणी भी गीता पाठशाला खोल सर्विस करते रहते हैं। नम्बरवार तो हैं ना। जो अच्छी सर्विस करते हैं वही बाबा की दिल पर चढ़ते हैं। तख्तनशीन होते हैं। बाप तो चाहते हैं बच्चे अच्छी रीति पढ़कर बाप के कन्धे पर चढ़ जाएं। इम्तहान तो एक ही है परन्तु मर्तबे की वैरायटी कितनी है। हर एक फूल अपनी-अपनी खुशबू देते हैं। कोई तो एकदम बदबू वाले भी हैं। कई बच्चे कमाल करने वाले भी हैं ना। प्रेम है, मनोहर है, दीदी है... इनकी सब महिमा करते हैं। कोई का तो नाम भी नहीं लेते हैं। बाप को पतित से पावन बनाने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बन्दरों को मन्दिर लायक बनाते हैं। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजा, प्रजा, गरीब, साहूकार सब बनते हैं ना। पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है। नहीं तो जन्म-जन्मानतर के लिए वही बन जायेंगे। फिर

(e) Imp. very very. (e)

बहुत पछताना पड़ेगा। बाबा से हमने पूरा वर्सा नहीं लिया। टीचर गुरू भी कहेगा फालो करो। यह तो बाप टीचर गुरू एक ही है। सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम गुरू भी है। वह निराकार ही नॉलेजफुल है। उनसे ही वर्सा मिलता है। सर्व का सद्गति दाता वह है, जिसकी सब साधना करते हैं। साधू अर्थात् साधना करने वाले। फिर किसको मुक्ति दे कैसे सकते। समझाने की युक्ति बड़ी अच्छी चाहिए। प्रदर्शनी का उद्घाटन करने वाले भी कुछ समझे हुए होने चाहिए। जो कह सकें कि यह प्रदर्शनी मनुष्य को हीरे जैसा बनाने वाली है। यह प्रदर्शनी परमपिता परमात्मा के डायरेक्शन से बनाई हुई है। उद्घाटन ऐसे से कराना चाहिए जो कुछ समझा भी सके। एक दिन बड़े भी आकर तुम्हारे पास समझेंगे। सन्यासी आदि भी आयेंगे। उस ड्रेस में बैठ समझेंगे। अब बाबा डायरेक्शन देते हैं मनमनाभव, बाप को याद करो तो पावन बनेंगे। विनाश भी सामने खड़ा है। बाप कहते हैं - मैं कितना बड़ा गृहस्थी बना हूँ। सबसे बड़े से बड़ा गृहस्थ धर्म मैं पालन करता हूँ। ड्रामा में मेरा पार्ट ही ऐसा है। बच्चों को ऊंच पद पाने में मेहनत करनी चाहिए। पुरुषार्थ कर माँ-बाप के गद्दी-नशीन बनना चाहिए। शिवबाबा के हम बच्चे हैं, अन्दर में वह नशा रहना चाहिए। हम बाबा से कम थोड़ेही जायेंगे। अच्छा।

मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१) बाप समान सच्चा सेवाधारी बनना है। किसी से भी सेवा नहीं लेनी है। ओबीडियन्ट (आज्ञाकारी) होकर रहना है।

२- ड्रामा में जो भी सीन चलती है, वही राइट है। उसमें संशय नहीं उठाना है। अपनी जीवन को हीरे तुल्य बनाने का पुरूषार्थ करना है।

वरदान:- एक बाप से योग रख सर्व का सहयोग प्राप्त करने वाले सच्चे योगी व सहयोगी भव

जो जितना योगी है उतना उसे सर्व का सहयोग अवश्य प्राप्त होता है। योगी का कनेक्शन अथवा स्नेह बीज से होने के कारण स्नेह का रिटर्न सबका सहयोग प्राप्त हो जाता है। तो बीज से योग लगाने वाला, बीज को स्नेह का पानी देने वाला सर्व आत्माओं द्वारा सहयोग रूपी फल प्राप्त कर लेता है क्योंकि बीज से योग होने के कारण पूरे वृक्ष के साथ कनेक्शन हो जाता है।

स्लोगन:-

पुराने संस्कारों को मेरा कहना अर्थात् पुरूषार्थ को ढीला करना।

12.

Imp?

3-11-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हारी याद बहुत वन्डरफुल है क्योंकि तुम एक साथ ही बाप, टीचर और सतगुरु तीनो को याद करते हो"

प्रश्न:- बाबा अपने बच्चों को किस बात में ताकीद करते हैं?

उत्तर:- बाबा कहते – मीठे बच्चे, कभी भी मुरली मिस नहीं करना। जिन्हें माया मगरुर बना देती है वह देह-अभिमान में आकर मुरली को भी डोन्ट-केयर करते हैं। कहेंगे हमारा तो शिवबाबा से ही कनेक्शन है। लेकिन बच्चों को मुरली कभी मिस नहीं करनी है। इस पर बहुत अटेन्शन रहे। (a)

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों से रुहानी बाप पूछते हैं यहाँ तुम बैठे हो, किसकी याद में बैठे हो? (बाप, शिक्षक, सतगुरु की) सभी इन तीनों की याद में बैठे हो? हर एक अपने से पूछे यह सिर्फ यहाँ बैठे याद है या चलते-फिरते याद रहती है? क्योंकि यह है वन्डरफुल बात। और कोई आत्मा को कभी ऐसे नहीं कहा जाता। भल यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक हैं परन्तु उनकी आत्मा को कभी ऐसे नहीं कहेंगे कि यह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। बल्कि सारी दुनिया में जो भी जीव आत्मायें है, कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कहेंगे। तुम बच्चे ही ऐसे याद करते हो। अन्दर में आता है यह बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। सो भी सुप्रीम। तीनों को याद करते हो या एक को? भल वह एक है परन्तु तीनो गुणों से याद करते हो। शिवबाबा हमारा बाप भी है, टीचर और सतगुरु भी है। यह एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी कहा जाता है। जब बैठे हो अथवा चलते फिरते हो तो यह याद रहना चाहिए। बाबा पूछते हैं ऐसे याद करते हो कि यह हमारा बाप, टीचर, सतगुरु भी है। ऐसा कोई भी देहधारी हो नहीं सकता। देहधारी नम्बरवन है कृष्ण, उनको बाप, टीचर, सतगुरु कह नहीं सकते। यह बिल्कुल वन्डरफुल बात है। तो सच बताना चाहिए तीनों रुप में याद करते हो? भोजन पर बैठते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद करते हो या तीनों बुद्धि में आते हैं? और तो कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कह सकते। यह है वन्डरफुल बात। विचित्र महिमा है बाप की। तो बाप को याद भी ऐसे करना है। तो बुद्धि एकदम उस तरफ चली जायेगी जो ऐसा वन्डरफुल है। बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं फिर सारे चक्र का भी नॉलेज देते हैं। ऐसे यह युग हैं, इतने-इतने वर्ष के हैं जो फिरते रहते हैं। यह ज्ञान भी वह रचयिता बाप ही देते हैं। तो उनको याद करने में बहुत मदद मिलेगी। बाप, टीचर, गुरु वह एक ही है। इतनी ऊंच आत्मा और कोई हो नहीं सकती। परन्तु माया ऐसे बाप की याद भी भुला देती है तो टीचर और गुरु को भी भूल जाते हैं। यह हर एक को अपने-अपने दिल से लगाना चाहिए। बाबा हमको ऐसा विश्व का मालिक बनायेंगे। बेहद के बाप का वर्सा जरूर बेहद का ही है। साथ-साथ यह महिमा भी बुद्धि में आये। चलते-फिरते तीनों ही याद आयें। इस एक आत्मा का ही तीनों सर्विस इकट्ठी है। इसलिए उनको सुप्रीम कहा जाता है। (b)

अब कॉन्फ्रेन्स आदि बुलाते हैं, कहते हैं विश्व में शान्ति कैसे हो? वह तो अब हो रही है आकर समझो। कौन कर रहे हैं? तुमको बाप का आक्यूपेशन सिद्ध कर बताना है। बाप के आक्यूपेशन और कृष्ण के आक्यूपेशन में बहुत फर्क है। और तो सबका नाम शरीर का ही (c)

लिया जाता है। उनकी आत्मा का नाम गाया जाता है। वह आत्मा बाप भी है, टीचर, गुरु भी है। आत्मा में नॉलेज है परन्तु वह दे कैसे? शरीर द्वारा ही देंगे ना। जब देते हैं तब तो महिमा गाई जाती है। अब शिव जयन्ती पर बच्चे कॉन्फ्रेन्स करते हैं। सब धर्म के नेताओं को बुलाते हैं। तुमको समझाना है ईश्वर सर्वव्यापी तो है नहीं। अगर सबमें ईश्वर है तो क्या हर एक आत्मा भगवान बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है! बताओ सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज है? यह तो कोई भी सुना न सके।

तुम बच्चों के अन्दर में आना चाहिए ऊंच ते ऊंच बाप की कितनी महिमा है। वह सारे विश्व को पावन बनाने वाला है। प्रकृति भी पावन बन जाती है। कान्फ्रेन्स में पहले-पहले तो तुम यह पूछेंगे कि गीता का भगवान कौन है? सतयुगी देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला कौन? अगर कृष्ण के लिए कहेंगे तो बाप को गुम कर देंगे या तो फिर कह देते वह नाम-रूप से न्यारा है। जैसेकि है ही नहीं। तो बाप बिगर आरफन्स ठहरे ना। बेहद के बाप को ही नहीं जानते। एक-दो पर काम कटारी चलाकर कितना तंग करते हैं। एक-दो को दुःख देते हैं। तो यह सब बातें तुम्हारी बुद्धि में चलनी चाहिए। कॉन्ट्रास्ट करना है—यह लक्ष्मी-नारायण भगवान-भगवती हैं ना, इन्हों की भी वंशावली है ना। तो जरूर सब ऐसे गॉड-गॉडेज होने चाहिए। तो तुम सब धर्म वालों को बुलाते हो। जो अच्छी रीति पढ़े-लिखे हैं, बाप का परिचय दे सकते हैं, उनको ही बुलाना है। तुम लिख सकते हो जो आकर रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का परिचय देवे उनके लिए हम आने-जाने, रहने आदि का सब प्रबन्ध करेंगे—अगर रचता और रचना का परिचय दिया तो। यह तो जानते हैं कोई भी यह ज्ञान दे नहीं सकते। भल कोई विलायत से आवे, रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का परिचय दिया तो हम खर्चा दे देंगे। ऐसी एडवरटाइज़ और कोई कर न सके। तुम तो बहादुर हो ना। महावीर-महावीरनियाँ हो। तुम जानते हो इन्हों ने (लक्ष्मी-नारायण) विश्व की बादशाही कैसे ली? कौन-सी बहादुरी की? बुद्धि में यह सब बातें आनी चाहिए। कितना तुम ऊंच कार्य कर रहे हो। सारे विश्व को पावन बना रहे हो। तो बाप को याद करना है, वर्सा भी याद करना है। सिर्फ यह नहीं कि शिवबाबा याद है। परन्तु उनकी महिमा भी बतानी है। यह महिमा है ही निराकार की। परन्तु निराकार अपना परिचय कैसे दे? जरूर रचना के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज देने लिए मुख चाहिए ना। मुख की कितनी महिमा है। मनुष्य गऊमुख पर जाते हैं, कितना धक्का खाते हैं। क्या-क्या बातें बना दी है। तीर मारा गंगा निकल आई। गंगा को समझते हैं पतित-पावनी। अब पानी कैसे पतित से पावन बना सकता। पतित-पावन तो बाप ही है। तो बाप तुम बच्चों को कितना सिखलाते रहते हैं। बाप तो कहते हैं ऐसे ऐसे करो। कौन आकर बाप रचयिता और रचना का परिचय देंगे। साधु-सन्यासी आदि यह भी जानते हैं कि ऋषि-मुनि आदि सब कहते थे—नेती-नेती, हम नहीं जानते हैं, गोया नास्तिक थे। अब देखो कोई आस्तिक निकलता है? अभी तुम बच्चे नास्तिक से आस्तिक बन रहे हो। तुम बेहद के बाप को जानते हो जो तुमको इतना ऊंच बनाते हैं। पुकारते भी हैं—ओ गॉड फादर, लिबरेट करो। बाप समझाते हैं, इस समय रावण का सारे विश्व पर राज्य है। सब भ्रष्टाचारी हैं फिर श्रेष्ठाचारी भी होंगे ना। तुम बच्चों की बुद्धि में है — पहले-पहले पवित्र दुनिया थी। बाप अपवित्र दुनिया थोड़ेही बनायेंगे। बाप तो आकर पावन दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको

शिवालय कहा जाता है। शिवबाबा शिवालय बनायेंगे ना। वह कैसे बनाते हैं सो भी तुम जानते हो। महाप्रलय, जलमई आदि तो होती नहीं। शास्त्रों में तो क्या-क्या लिखा है। बाकी 5 पाण्डव बने जो हिमालय पहाड पर गल गये, फिर रिजल्ट का कोई को पता नहीं। यह सब बात बाप बैठ समझाते हैं। यह भी तुम ही जानते हो—वह बाप, बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। वहाँ तो यह मन्दिर होते नहीं। यह देवतायें होकर गये हैं, जिनके यादगार मन्दिर यहाँ हैं। यह सब ड्रामा में नूँध है। सेकण्ड बाई सेकण्ड नई बात होती रहती है, चक्र फिरता रहता है। अब बाप बच्चों को डायरेक्शन तो बहुत अच्छे देते हैं। बहुत देह-अभिमानी बच्चे हैं जो समझते हैं हम तो सब कुछ जान गये हैं। मुरली भी नहीं पढते हैं। कदर ही नहीं है। बाबा ताकीद करते हैं, कोई-कोई समय मुरली बहुत अच्छी चलती है। मिस नहीं करना चाहिए। 10-15 दिन की मुरली जो मिस होती है वह बैठ पढनी चाहिए। यह भी बाप कहते हैं ऐसी-ऐसी चैलेन्ज दो—यह रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज कोई आकर दे तो हम उनको खर्चा आदि सब देंगे। ऐसी चैलेन्ज तो जो जानते हैं वह देंगे ना। टीचर खुद जानता है तब तो पूछते हैं ना। बिगर जाने पूछेंगे कैसे।

कोई-कोई बच्चे मुरली की भी डोन्टकेयर करते हैं। बस हमारा तो शिवबाबा से ही कनेक्शन है। परन्तु शिवबाबा जो सुनाते हैं वह भी सुनना है ना कि सिर्फ उनको याद करना है। बाप कैसे अच्छी-अच्छी मीठी-मीठी बातें सुनाते हैं। परन्तु माया बिल्कुल ही नाकरूर कर देती है। कहावत है ना—चूहे को हल्दी की गांठ मिली, समझा मैं पंसारी हूँ.......। बहुत हैं जो मुरली पढ़ते ही नहीं। मुरली में तो नई-नई बातें निकलती हैं ना। तो यह सब बातें समझने की हैं। जब बाप की याद में बैठते हो तो यह भी याद करना है कि वह बाप टीचर भी है और सतगुरु भी है। नहीं तो पढेंगे कहाँ से। बाप ने तो बच्चों को सब समझा दिया है। बच्चे ही बाप को शो करेंगे। सन शोज़ फादर। सन का फिर फादर शो करते हैं। आत्मा का शो करते हैं। फिर बच्चों का काम है शो करना। फिर बाप थोड़ेही छोड़ेंगे। कहेंगे आज फलानी जगह जाओ। आज यहाँ जाओ। इनको थोड़ेही कोई ऑर्डर करने वाले होंगे। तो यह निमन्त्रण आदि अखबारों में पड़ेंगे। इस समय सारी दुनिया है नास्तिक। बाप ही आकर आस्तिक बनाते हैं। इस समय सारी दुनिया है वर्थ नाट ए पेनी। अमेरिका के पास भल कितना भी धन दौलत है परन्तु वर्थ नाट ए पेनी है। यह तो सब खत्म हो जाना है ना। सारी दुनिया में तुम वर्थ पाउण्ड बन रहे हो। वहाँ कोई कंगाल होगा नहीं।

तुम बच्चों को सदैव ज्ञान का सिमरण कर हर्षित रहना चाहिए। उसके लिए ही गायन है—अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। यह संगम की ही बातें हैं। संगमयुग को कोई भी जानते नहीं। विहंग मार्ग की सर्विस करने से शायद महिमा निकले। गायन भी है अहो प्रभू तेरी लीला। यह कोई भी नहीं जानते थे कि भगवान बाप, टीचर, सतगुरु भी है। अब फादर तो बच्चों को सिखलाते रहते हैं। बच्चों को यह नशा स्थाई रहना चाहिए। अन्त तक नशा रहना चाहिए। अब तो नशा झट सोडावाटर हो जाता है। सोडा भी ऐसे होता है ना। थोड़ा टाइम रहने से जैसे खाराणी हो जाता है। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। किसको ऐसा समझाओ जो वह भी कन्डर खाये। अच्छा-अच्छा कहते भी हैं परन्तु वह फिर टाइम निकाल समझें, जीवन बनायें तो बड़ा मुश्किल है। बाबा कोई मना नहीं करते हैं कि धन्धा आदि नहीं करो। पवित्र

बनो और जो पढ़ाता हूँ वह याद करो। यह तो टीचर है ना। और यह है अनकॉमन पढ़ाई। कोई मनुष्य नही पढ़ा सकते। बाप ही भाग्यशाली रथ पर आकर पढ़ाते है। बाप ने समझाया है - यह तुम्हारा तख्त है जिस पर अकाल मूर्त आत्मा आकर बैठती है। उनको यह सारा पार्ट मिला हुआ है। अभी तुम समझते हो यह तो रीयल बात है। बाकी यह सब हैं आर्टीफिशल बातें। यह अच्छी रीति धारण कर गांठ बाँध लो। तो हाथ लगने से याद आयेगा। परन्तु गाँठ क्यों बाँधी है, वह भी भूल जाते हैं। तुमको तो यह पक्का याद करना है। बाप की याद के साथ नॉलेज भी चाहिए। मुक्ति भी है तो जीवनमुक्ति भी है। बहुत मीठे-मीठे बच्चे बनो। बाबा अन्दर में समझते हैं कल्प-कल्प यह बच्चे पढ़ते रहते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही वर्सा लेंगे। फिर भी पढ़ाने का टीचर पुरुषार्थ तो करायेंगे ना। तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो इसलिए याद कराया जाता है। शिवबाबा को याद करो। वह बाप, टीचर, सतगुरु भी है। छोटे बच्चे ऐसे याद नहीं करेंगे। कृष्ण के लिए थोड़ेही कहेंगे वह बाप, टीचर, सतगुरु है। सतयुग का प्रिन्स श्रीकृष्ण वह फिर गुरु कैसे बनेगा। गुरु चाहिए दुर्गति में। गायन भी है - बाप आकर सबकी सद्‌गति करते हैं। कृष्ण को तो सांवरा ऐसा बना देते जैसे काला कोयला। बाप कहते हैं इस समय सब काम चिता पर चढ़ काले कोयले बन पड़े हैं तब सांवरा कहा जाता है। कितनी गुह्य बातें समझाने की हैं। गीता तो सब पढ़ते हैं। भारतवासी ही हैं जो सभी शास्त्रों को मानते हैं। सबके चित्र रखते रहेंगे तो उनको क्या कहेंगे? व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना। अव्यभिचारी भक्ति एक ही शिव की है। ज्ञान भी एक ही शिवबाबा से मिलती है। यह ज्ञान ही डिफरेन्ट है। इनको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुड मॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. विनाशी नशे को छोड़ अलौकिक नशा रहे कि हम अभी वर्थ नाट पेनी से वर्थ पाउण्ड बन रहे है। स्वयं भगवान् हमें पढ़ाते हैं, हमारी पढ़ाई अनकॉमन है।

२. आस्तिक बन बाप का शो करने वाली सर्विस करनी है। कभी भी मगरूर बन मुरली मिस नहीं करनी है।

वरदान:- सहज योग की साधना द्वारा साधनों पर विजय प्राप्त करने वाले प्रयोगी आत्मा भव

साधनों के होते, साधनों को प्रयोग में लाते योग की स्थिति डगमग न हो। योगी बन प्रयोग करना इसको कहते हैं न्यारा। होते हुए निमित्त मात्र, अनासक्त रूप से प्रयोग करो। अगर इच्छा होगी तो वह इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी। मेहनत करने में ही समय बीत जायेगा। उस समय आप साधना में रहने का प्रयत्न करेंगे और साधन अपनी तरफ आकर्षित करेंगे। इसलिए प्रयोगी आत्मा बन सहजयोग की साधना द्वारा साधनों के ऊपर अर्थात् प्रकृति पर विजयी बनो।

स्लोगन:-

मेरे पन के अनेक रिश्तों को समाप्त करना ही फरिश्ता बनना है।

13.

2-11-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपने ऊपर पूरा-पूरा नज़र रखो, कोई भी बेकायदे चलन नहीं चलना, श्रीमत का उल्लंघन करने से गिर जायेंगे"

प्रश्न:- पद्मापद्मपति बनने के लिए कौन-सी खबरदारी चाहिए?

उत्तर:- सदैव ध्यान रहे – जैसा कर्म हम करेंगे हमें देख और भी करने लगेंगे। किसी भी बात का मिथ्या अहंकार न आये। मुरली कभी भी मिस न हो। मन्सा-वाचा-कर्मणा अपनी सम्भाल रखो। यह आंखें धोखा न दें तो पद्मों की कमाई जमा कर सकेंगे। इसके लिए अन्तर्मुखी होकर बाप को याद करो और विकर्मों से बचे रहो।

ओम् शान्ति। रुहानी बच्चों को बाप ने समझाया है, यहाँ तुम बच्चों को इस ख्याल से जरूर बैठना होता है, यह बाबा भी है, टीचर और सतगुरू भी है। और यह भी महसूस करते हो—बाबा को याद करते-करते पवित्र बन, पवित्रधाम में जाकर पहुँचेंगे। बाप ने समझाया है कि पवित्रधाम से ही तुम नीचे उतरते हो। उसका नाम ही है पवित्रधाम। सतोप्रधान से फिर सतो, रजो, तमो..... अभी तुम समझते हो कि हम नीचे गिरे हुए हैं अर्थात् वेश्यालय में हैं। भल तुम संगमयुग पर हो, परन्तु ज्ञान से तुम जानते हो कि हमने किनारा किया हुआ है फिर भी अगर हम शिवबाबा की याद में रहते हैं तो शिवालय दूर नहीं। शिवबाबा को याद नहीं करते तो शिवालय बहुत दूर है। सजायें खानी पड़ती हैं तो बहुत दूर हो जाता है। तो बाप बच्चों को कोई जास्ती तकलीफ नहीं देते हैं। एक तो बार-बार कहते हैं मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र बनना है। यह आंखें भी बड़ा धोखा देती हैं, इनसे बहुत सम्भालकर चलना होता है। बाप ने समझाया है कि ध्यान और योग बिल्कुल अलग है। योग अर्थात् याद। आंखें खुली होते भी तुम याद कर सकते हो। ध्यान को कोई योग नहीं कहा जाता। भोग भी ले जाते हैं तो डायरेक्शन अनुसार ही जाना है। इसमें माया भी बहुत आती है। माया ऐसी है जो एकदम नाक में दम कर देती है। जैसे बाप बलवान है, वैसे माया भी बड़ी बलवान है। इतनी बलवान है जो सारी दुनिया को वेश्यालय में ढकेल दिया है इसलिए इसमें बहुत खबरदारी रखनी होती है। बाप की कायदे अनुसार याद चाहिए। बेकायदे कोई काम किया तो एकदम गिरा देती है। ध्यान आदि की कभी कोई इच्छा नहीं रखनी है। इच्छा मात्रम् अविद्या..... बाप तुम्हारी सब मनोकामनायें बिगर मांगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चले तो। अगर बाप की आज्ञा न मान उल्टा रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग के बदले नर्क में ही गिर जाएं। गायन भी है गज को ग्राह ने खाया। बहुतों को ज्ञान देने वाले, भोग लगाने वाले आज हैं कहाँ, क्योंकि बेकायदे चलन के कारण पूरे मायावी बन जाते हैं। डीटी बनते-बनते डेविल बन जाते हैं। बाप जानते हैं कि बहुत अच्छे पुरुषार्थी जो देवता बनने वाले थे वह असुर बन असुरों के साथ रहते हैं! ट्रेटर हो जाते हैं। बाप का बनकर फिर माया के बन जाते, उन्हें ट्रेटर कहा जाता है। अपने ऊपर नज़र रखनी होती है। श्रीमत का उल्लंघन किया तो यह गिरे। पता भी नहीं

आदि होने का कायदा ही नहीं। लूट मार आदि वहाँ होती नहीं। नाम ही है स्वर्ग। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है हम स्वर्ग में थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते नीचे उतरते हैं। बाप कहानी भी उन्हों को ही बताते हैं। 84 जन्म नहीं लिये होंगे तो माया हरा देगी। यह भी बाप समझाते रहते हैं। माया का कितना बड़ा तूफान है। बहुतों को माया हराने की कोशिश करती है, आगे चल तुम बहुत देखेंगे, सुनेंगे। बाप के पास सबके चित्र होते तो तुमको वन्डर दिखाते—यह फलाना इतना दिन आया, बाप का बना फिर माया खा गई। मर गया, माया के साथ जा मिला। यहाँ इस समय कोई शरीर छोडते हैं तो इसी दुनिया में आकर जन्म लेते हैं। तुम शरीर छोड़ेंगे तो बाबा के साथ बेहद घर में जायेंगे। वहाँ बाबा, मम्मा, बच्चे सब हैं ना। परिवार ऐसा ही होता है। मूलवतन में बाप और भाई-भाई हैं, और कोई सम्बन्ध नहीं। यहाँ बाप और भाई-बहन हैं फिर वृद्धि को पाते हैं। चाचा, मामा आदि बहुत संबंध हो जाते हैं। इस संगम पर तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बनते हो तो भाई-बहिन हो। शिवबाबा को याद करते हो तो भाई-भाई हो। यह सब बातें अच्छी रीति याद करनी हैं। बहुत बच्चे भूल जाते हैं। बाप तो समझाते रहते हैं। बाप का फ़र्ज है बच्चों को सिर पर उठाना, तब तो नमस्ते-नमस्ते करते रहते हैं। अर्थ भी समझाते हैं। भक्ति करने वाले साधू-सन्त आदि कोई तुमको जीवनमुक्ति का रास्ता नहीं बताते, वह मुक्ति के लिए ही पुरूषार्थ करते रहते हैं। वह हैं ही निवृत्ति मार्ग वाले। वह राजयोग कैसे सिखलायेंगे। राजयोग है ही प्रवृत्ति मार्ग का। प्रजापिता ब्रह्मा को 4 भुजायें देते हैं तो प्रवृत्ति मार्ग हुआ ना। यहाँ बाप ने इनको एडाप्ट किया तो नाम रखा है ब्रह्मा और सरस्वती। ड्रामा में नूँध देखो कैसी है। वानप्रस्थ अवस्था में ही मनुष्य गुरु करते हैं 60 वर्ष के बाद। इसमें भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप, टीचर, गुरु बन गये। अभी तो कायदे भी बिगड़ गये हैं। छोटे बच्चे को भी गुरु करा देते हैं। यह तो है ही निराकार। तुम्हारी आत्मा का यह बाप भी बनते, टीचर, सतगुरु भी बनते हैं। निराकारी दुनिया को कहा जाता है आत्माओं की दुनिया। ऐसे तो नहीं कहेंगे दुनिया ही नहीं है। शान्तिधाम कहा जाता है। वहाँ आत्मायें रहती हैं। अगर कहें परमात्मा का नाम, रूप, देश, काल नहीं तो बच्चे फिर कहाँ से आयेंगे।

तुम बच्चे अब समझते हो यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। हिस्ट्री चैतन्य की होती है, जॉग्राफी तो जड़ वस्तु की है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम कहाँ तक राज्य करते हैं। हिस्ट्री गाई जाती है जिसको कहानी कहा जाता है। जॉग्राफी देश की होती है। चैतन्य ने राज्य किया, जड़ तो राज्य नहीं करेंगे। कितने समय से फलाने का राज्य था, क्रिश्चियन ने भारत पर कब से कब तक राज्य किया। तो इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई जानते ही नहीं। कहते है सतयुग को तो लाखों वर्ष हुआ। उसमें कौन राज्य करके गये, कितना समय राज्य किया—यह कोई नहीं जानता। इसको कहा जाता है हिस्ट्री। आत्मा चैतन्य, शरीर जड़ है। सारा खेल ही जड़ और चैतन्य का है। मनुष्य जीवन ही उत्तम गाया जाता है। आदमशुमारी भी मनुष्यों की गिनी जाती है। जानवरों की तो कोई गिनती कर भी न सके। सारा खेल तुम्हारे पर है। हिस्ट्री-जॉग्राफी भी तुम सुनते हो। बाप इसमें आकर तुमको सब बातें समझाते हैं, इसको कहा जाता है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी। यह नॉलेज न होने कारण तुम कितने बेसमझ

बन पड़े हो। मनुष्य होकर दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी को न जानें तो वह मनुष्य ही क्या काम का। अभी बाप द्वारा तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुन रहे हो। यह पढ़ाई कितनी अच्छी है, कौन पढ़ाते हैं? बाप। बाप ही ऊंच ते ऊंच पद दिलाने वाला है। इन लक्ष्मी-नारायण का और जो उन्हों के साथ स्वर्ग में रहते हैं उन्हों का ऊंच ते ऊंच पद है ना। वहाँ बैरिस्टरी आदि तो करते नहीं। वहाँ तो सिर्फ सीखना है। हुनर न सीखें तो मकान आदि कैसे बनें। एक-दो को हुनर सिखलाते हैं। नहीं तो इतने मकान आदि कौन बनायेंगे। आपेही तो नहीं बन जायेंगे। यह सब राज़ अभी तुम बच्चों की बुद्धि में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार रहते हैं। तुम जानते हो यह चक्र फिरता रहता है, इतना समय हम राज्य करते थे फिर रावण के राज्य में आते हैं। दुनिया को इन बातों का पता नहीं है कि हम रावण राज्य में हैं। कहते हैं हमको बाबा रावण के राज्य से लिबरेट करो। कांग्रेसी लोगों ने क्रिश्चियन राज्य से अपने को लिबरेट किया। अब फिर कहते हैं गॉड फादर हमको लिबरेट करो। स्मृति आती है ना कोई भी यह नहीं जानते कि ऐसे क्यों कहते हैं। अभी तुमने समझा है सारे सृष्टि पर ही रावण राज्य है, सब कहते हैं रामराज्य चाहिए तो लिबरेट कौन करेगा? समझते हैं गॉड फादर लिबरेट कर गाइड बन ले जायेंगे। भारतवासियों को इतना अक्ल नहीं है। यह तो बिल्कुल तमोप्रधान हैं। वह न इतना दुःख उठाते हैं, न इतना सुख ही पाते हैं। भारतवासी सबसे सुखी बनते हैं तो दुःखी भी बने हैं। हिसाब है ना। अभी कितना दुःख है। जो रिलीजस माइन्डेड हैं वह याद करते हैं—ओ गॉड फादर, लिबरेटर। तुम्हारी भी दिल में है बाबा आकर हमारे दुःख हरो और सुखधाम ले चलो। वह कहते हैं शान्तिधाम ले चलो। तुम कहेंगे शान्तिधाम और सुखधाम ले चलो। अब बाप आया हुआ है तो बहुत खुशी होनी चाहिए। भक्ति मार्ग में कनरस कितना है। उनमें रीयल बात कुछ भी है नहीं। एकदम आटे में नमक है। चण्डिका देवी का भी मेला लगता है। अब चण्डियों का फिर मेला क्यों लगता है? चण्डी किसको कहा जाता है? बाबा ने बताया है चण्डाल का जन्म भी यहाँ के ही लेते हैं। यहाँ रहकर, खा पीकर कुछ देकर फिर कहते हैं—हमने जो दिया वह हमको दो। हम नहीं मानते। संशय पड़ जाता है तो वह क्या जाकर बनेंगे। ऐसी चण्डिका का भी मेला लगता है। फिर भी सतयुगी तो बनते हैं ना। कुछ समय भी मददगार बने तो स्वर्ग में आ गये। वह भक्त लोग तो जानते नहीं, ज्ञान तो कोई के पास है नहीं। वह चित्रों वाली गीता है, कितना पैसा कमाते हैं। आजकल चित्रों पर तो सब आशिक होते हैं। उसको आर्ट समझते हैं। मनुष्यों को क्या पता देवताओं के चित्र कैसे होते हैं। तुम असुल में कितने फर्स्टक्लास थे। फिर क्या बन गये हो। वहाँ कोई अंधा, काना आदि होता नहीं। देवताओं की नैचुरल शोभा होती है। वहाँ नैचुरल ब्युटी होती है। तो बाप भी सब समझाकर फिर भी कहते हैं—बच्चे, बाप को याद करो। बाप, बाप भी है, टीचर, सतगुरु भी है। तीनों रूप में याद करो तो तीनों वर्से मिलेंगे। पिछाड़ी वाले तीनों रूप में याद कर नहीं सकेंगे। फिर मुक्ति में चले जायेंगे।

बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन आदि में जो कुछ देखते हो यह तो सब हैं साक्षात्कार की बातें। बाकी हिस्ट्री-जॉग्राफी सारी यहाँ की है। इनकी आयु का किसको पता नहीं है। अभी तुम बच्चों को बाप ने समझाया है तुम फिर कोई को भी समझा सकते हो। पहले-पहले तो बाप का (८)

वाले हैं। सारा दिन यही झरमुई झगमुई की बातें करते रहते हैं। यह बहुत खराब है। कोई भी बात हो तो बाप को रिपोर्ट करनी चाहिए। सुधारने वाला तो एक ही बाप है। तुम अपने हाथ में लॉ नहीं उठाओ। तुम बाप की याद में रहो। सभी को बाप का परिचय देते रहो तब ऐसा बन सकेंगे। माया बहुत कड़ी है। किसको नहीं छोड़ती। सदैव बाप को समाचार लिखना चाहिए। डायरेक्शन लेते रहना चाहिए। यूँ तो डायरेक्शन सदैव मिलते रहते हैं। ऐसे तो बच्चे समझते हैं बाबा ने तो आपेही इस बात पर समझा दिया, बाबा तो अन्तर्यामी है। बाबा कहते नहीं, मैं तो नॉलेज पढ़ाता हूँ। इसमें अन्तर्यामी की बात ही नहीं। हाँ, यह जानता हूँ कि यह सब मेरे बच्चे हैं। हर एक शरीर के अन्दर मेरे बच्चे हैं। बाकी ऐसे नहीं कि बाप सभी के अन्दर विराजमान है। मनुष्य तो उल्टा ही समझ लेते हैं। बाप कहते हैं मैं जानता हूँ कि सभी तख्त पर आत्मा विराजमान हैं। यह तो कितनी सहज बात है। सभी चैतन्य आत्मायें अपने-अपने तख्त पर बैठी हैं फिर भी परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं, यह है एकज भूल। इस कारण ही भारत इतना गिरा हुआ है। बाप कहते हैं तुमने मेरी बहुत ग्लानि की है। विश्व के मालिक बनाने वाले को तुमने गाली दी है। इसलिए बाप कहते हैं यदा यदाहि......। बाहर वाले यह सर्वव्यापी का ज्ञान भारतवासियों से सीखते हैं। जैसे भारतवासी उनसे हुनर सीखते हैं वह फिर उल्टा सीखते हैं। तुम्हें तो एक बाप को याद करना है और बाप का परिचय भी सबको देना है। तुम हो अन्धों की लाठी। लाठी से राह बतलाते हैं ना। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप की आज्ञा अनुसार हर कार्य करना है। कभी भी श्रीमत का उल्लंघन न हो। तब ही सर्व मनोकामनायें बिना मांगे पूरी होंगी। ध्यान दीदार की इच्छा नहीं रखनी है, इच्छा मात्रम् अविद्या बनना है।

२. आपस में मिलकर झरमुई झगमुई (एक दूसरे का परचिंतन) नहीं करना है। अन्तर्मुख हो अपनी जांच करनी है कि हम बाबा की याद में कितना समय रहते हैं, ज्ञान का मंथन अन्दर चलता है?

वरदान:- सर्व पदार्थो की आसक्तियों से न्यारे अनासक्त, प्रकृतिजीत भव

अगर कोई भी पदार्थ कर्मेन्द्रियों को विचलित करता है अर्थात् आसक्ति का भाव उत्पन्न होता है तो भी न्यारे नहीं बन सकेंगे। इच्छायें ही आसक्तियों का रूप हैं। कई कहते हैं इच्छा नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। तो यह भी सूक्ष्म आसक्ति है - इसकी महीन रूप से चेकिंग करो कि यह पदार्थ अर्थात् अल्पकाल सुख के साधन आकर्षित तो नहीं करते हैं? यह पदार्थ प्रकृति के साधन हैं, जब इनसे अनासक्त अर्थात् न्यारे बनेंगे तब प्रकृतिजीत बनेंगे।

स्लोगन:-

मेरे-मेरे के झमेलों को छोड़ बेहद में रहो तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी।

14.

ज्ञानी बच्चे साक्षात्कार से खुश नहीं होंगे

(१४)

15-5-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – सदा नशा रहे कि हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं, हम ब्राह्मण ही नशे से कहते हैं – बाबा आया हुआ है, जिसे सब पुकार रहे हैं, वह हमारे सम्मुख है" (a)

प्रश्न:- जिन बच्चों का बुद्धियोग ठीक होगा, उन्हें कौन-सा साक्षात्कार होता रहेगा?

उत्तर:- सतयुगी नई राजधानी में क्या-क्या होगा, कैसे हम स्कूल में पढ़ेंगे फिर राज्य चलायेंगे। यह सब साक्षात्कार जैसे-जैसे नज़दीक आते जायेंगे, होता रहेगा। परन्तु जिनका बुद्धियोग ठीक है, जो अपने शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते हैं, धंधा धोरी करते भी एक बाप की याद में रहते हैं, उन्हें ही यह सब साक्षात्कार होंगे।

गीत:- ओम् नमो शिवाए ....

ओम् शान्ति। भक्ति मार्ग में और जो भी सतसंग होते हैं, उनमें तो सब गये होंगे। वहाँ या तो कहेंगे बोलो सब वाह गुरु या राम का नाम बतायेंगे। यहाँ बच्चों को कुछ कहने की भी जरूरत नहीं रहती। एक ही बार कह दिया है, घड़ी-घड़ी कहने की दरकार नहीं। बाप भी एक है, उनका कहना भी एक ही है। क्या कहते हैं? बच्चों मामेकम् याद करो। पहले सीखकर फिर आकर यहाँ बैठते हैं। हम जिस बाप के बच्चे हैं उनको याद करना है। यह भी तुमने अभी ब्रह्मा द्वारा जाना है कि हम सभी आत्माओं का बाप वह एक है। दुनिया यह नहीं जानती। तुम जानते हो हम सब उस बाप के बच्चे हैं, उनको सभी गॉड फादर कहते हैं। अब फादर कहते हैं मैं इस साधारण तन में तुमको पढ़ाने आता हूँ। तुम जानते हो बाबा इनमें आये हैं, हम उनके बने हैं। बाबा ही आकर पतित से पावन होने का रास्ता बताते हैं। यह सारा दिन बुद्धि में रहता है। यूँ शिवबाबा की सन्तान तो सब हैं परन्तु तुम जानते हो और कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चे समझते हो हम आत्मा हैं, हमको बाप ने फरमान किया है कि मुझे याद करो। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। सब चिल्लाते रहते हैं कि पतित-पावन आओ, हम पतित बने हैं। यह देह नहीं कहती। आत्मा इस शरीर द्वारा कहती है। 84 जन्म भी आत्मा लेती है ना। यह बुद्धि में रहना चाहिए कि हम एक्टर्स हैं। बाबा ने हमको अब त्रिकालदर्शी बनाया है। आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दिया है। बाप को ही सब बुलाते हैं ना। अभी भी वह कहेंगे, कहते रहते हैं कि आओ और तुम संगमयुगी ब्राह्मण कहते हो बाबा आया हुआ है। इस संगमयुग को भी तुम जानते हो, यह पुरूषोत्तम युग गाया जाता है। पुरूषोत्तम युग होता ही है कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच में। सतयुग में सत पुरूष, कलियुग में झूठे पुरूष रहते हैं। सतयुग में जो होकर गये हैं, उन्हों के चित्र हैं। सबसें पुराने ते पुराने यह चित्र हैं, इनसे पुराने चित्र कोई होते नहीं। ऐसे तो बहुत मनुष्य फालतू चित्र बैठ बनाते हैं। यह तुम जानते हो कौन-कौन होकर गये हैं। जैसे नीचे अम्बा का चित्र बनाया है अथवा काली का चित्र है, तो ऐसी भुजाओं वाली हो थोड़ेही सकती है। अम्बा को भी दो भुजायें होंगी ना। मनुष्य तो जाकर हाथ जोडते पूजा करते हैं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के चित्र बनाये हैं। मनुष्य के ऊपर ही भिन्न-भिन्न प्रकार की सजावट करते हैं तो रूप बदल जाता है। यह चित्र आदि वास्तव में कोई है नहीं। यह सब

है भक्ति मार्ग। यहाँ तो मनुष्य लूले लंगडे निकल पडते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं होते। सतयुग को भी तुम जानते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। यहाँ तो ड्रेस देखो हर एक की अपनी-अपनी कितनी वैराइटी है। वहाँ तो यथा राजा रानी तथा प्रजा होते हैं। जितना नज़दीक होते जायेंगे तो तुमको अपनी राजधानी की ड्रेस आदि का भी साक्षात्कार होता रहेगा। देखते रहेंगे हम ऐसे स्कूल में पढ़ते हैं, यह करते हैं। देखेंगे भी वह जिनका बुद्धियोग अच्छा है। अपने शान्तिधाम-सुखधाम को याद करते हैं। धंधाधोरी तो करना ही है। भक्ति मार्ग में भी धंधा आदि तो करते हैं ना। ज्ञान कुछ भी नहीं था। यह सब है भक्ति। उसको कहेंगे भक्ति का ज्ञान। वह यह ज्ञान दे न सकें कि तुम विश्व के मालिक कैसे बनेंगे। अभी तुम यहाँ पढ़कर भविष्य विश्व के मालिक बनते हो। तुम जानते हो यह पढ़ाई है ही नई दुनिया, अमरलोक के लिए। बाकी कोई अमरनाथ पर शंकर ने पार्वती को अमरकथा नहीं सुनाई है। वह तो शिव-शंकर को मिला देते हैं।

अभी बाप तुम बच्चों को समझा रहे हैं, यह भी सुनते हैं। बाप बिगर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज कौन समझा सकेंगे। यह कोई साधु-सन्त आदि नहीं है। जैसे तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते थे, वैसे यह भी। ड्रेस आदि सब वही है। जैसे घर में माँ बाप बच्चे होते हैं, फ़र्क कुछ नहीं है। बाप इस रथ पर सवार हो आते हैं बच्चों के पास। यह भाग्यशाली रथ गाया जाता है। कभी बैल पर सवारी भी दिखाते हैं। मनुष्यों ने उल्टा समझ लिया है। मन्दिर में कभी बैल हो सकता है क्या? कृष्ण तो है प्रिन्स, वह थोडेही बैल पर बैठेंगे। भक्ति मार्ग में मनुष्य बहुत मूंझे हुए हैं। मनुष्यों को है भक्ति मार्ग का नशा। तुमको है ज्ञान मार्ग का नशा। तुम कहते हो इस संगम पर बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। तुम हो इस दुनिया में परन्तु बुद्धि से जानते हो हम ब्राह्मण संगमयुग पर हैं। बाकी सब मनुष्य कलियुग में हैं। यह समझने की बातें हैं। बुद्धि कहती है हम कलियुग से अब निकल आये हैं। बाबा आया हुआ है। यह पुरानी दुनिया ही बदलने वाली है। यह तुम्हारी बुद्धि में है, और कोई नहीं जानते। भल एक ही घर में रहने वाले हैं, एक ही परिवार के हैं, उसमें भी बाप कहेगा हम संगमयुगी हैं, बच्चा कहेगा नहीं, हम कलियुग में हैं। वन्डर है ना। बच्चे जानते हैं – हमारी पढ़ाई पूरी होगी तो विनाश होगा। विनाश होना जरूरी है। तुम्हारे में भी कोई जानते हैं, अगर यह समझें दुनिया विनाश होनी है तो नई दुनिया के लिए तैयारी में लग जाएं। बैग-बैगेज तैयार कर लें। बाकी थोड़ा समय है, बाबा के तो बन जायें। भूख मरेंगे तो भी पहले बाबा फिर बच्चे। यह तो बाबा का भण्डारा है। तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। ब्राह्मण भोजन बनाते हैं इसलिए ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। जो पवित्र ब्राह्मण हैं, याद में रहकर बनाते हैं, सिवाए ब्राह्मणों के शिवबाबा की याद में कोई रह नहीं सकते। वह ब्राह्मण थोडेही शिवबाबा की याद में रहते हैं। शिवबाबा का भण्डारा यह है, जहाँ ब्राह्मण भोजन बनाते हैं। ब्राह्मण योग में रहते हैं। पवित्र तो हैं ही। बाकी है योग की बात। इसमें ही मेहनत लगती है। गपोडा चल न सके। ऐसे कोई कह न सके कि मैं सम्पूर्ण योग में हूँ वा 80 परसेन्ट योग में हूँ। कोई भी कह न सके। ज्ञान भी चाहिए। तुम बच्चों में योगी वह है जो अपनी दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दे। यह भी ताकत है। एकदम

सन्नाटा हो जायेगा, जब तुम अशरीरी बन जाते हो फिर बाप की याद में रहते हो तो यही सच्ची याद है। फिर से यह प्रैक्टिस करनी है। जैसे तुम यहाँ याद में बैठते हो, यह प्रैक्टिस कराई जाती है। फिर भी सब कोई याद में रहते नहीं हैं। कहाँ-कहाँ बुद्धि भागती रहती है। तो वह फिर नुकसान कर लेते हैं। यहाँ संदली पर बिठाना उनको चाहिए जो समझें हम ड्रिल टीचर हैं। बाप की याद में सामने बैठे हैं। बुद्धियोग और कोई तरफ न जाये। सन्नाटा हो जायेगा। तुम अशरीरी बन जाते हो और बाप की याद में रहते हो। यह है सच्ची याद। सन्यासी भी शान्ति में बैठते हैं, वह किसकी याद में रहते हैं? वह कोई रीयल याद नहीं। कोई को फायदा नहीं दे सकेंगे। वह सृष्टि को शान्त नहीं कर सकते। बाप को जानते ही नहीं। ब्रह्म को ही भगवान समझते रहते। वह तो है नहीं। अभी तुमको श्रीमत मिलती है — मामेकम् याद करो। तुम जानते हो हम 84 जन्म लेते हैं। हर जन्म में थोड़ी-थोड़ी कला कम होती जाती है। जैसे चन्द्रमा की कला कम होती जाती है। देखने से इतना मालूम थोड़ेही पड़ता है। अभी कोई भी सम्पूर्ण नहीं बना है। आगे चल तुमको साक्षात्कार होंगे। आत्मा कितनी छोटी है। उनका भी साक्षात्कार हो सकता है। नहीं तो बच्चियां कैसे बताती हैं कि इनमें लाइट कम है, इनमें जास्ती है। दिव्यदृष्टि से ही आत्मा को देखती हैं। यह भी सभी ड्रामा में नूँध है। मेरे हाथ में कुछ नहीं है। ड्रामा मुझ से कराते हैं, यह सब ड्रामा अनुसार चलता रहता है। भोग आदि यह सब ड्रामा में नूँध है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड एक्ट होता है।

अभी बाप शिक्षा देते हैं कि पावन कैसे बनना है। बाप को याद करना है। कितनी छोटी आत्मा है जो पतित बनी है फिर पावन बननी है। वन्डरफुल बात है ना। कुदरत कहते हैं ना। बाप से तुम सब कुदरती बातें सुनते हो। सबसे कुदरती बात है — आत्मा और परमात्मा की। जो कोई नहीं जानते हैं। ऋषि मुनि आदि कोई भी नहीं जानते। इतनी छोटी आत्मा ही पत्थरबुद्धि फिर पारसबुद्धि बनती है। बुद्धि में यही चिन्तन चलता रहे कि हम आत्मा पत्थरबुद्धि बनी थी, अब फिर बाप को याद कर पारसबुद्धि बन रही हैं। लौकिक रीति तो बाप भी बड़ा फिर टीचर गुरु भी बड़े मिलते हैं। यह तो एक ही बिन्दी बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। सारा कल्प देहधारी को याद किया है। अब बाप कहते हैं — मामेकम् याद करो। तुम्हारी बुद्धि को कितना महीन बनाते हैं। विश्व का मालिक बनना — कोई कम बात है क्या! यह भी कोई ख्याल नहीं करते कि यह लक्ष्मी-नारायण सतयुग के मालिक कैसे बनें। तुम भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हो। नया कोई इन बातों को समझ न सके। पहले मोटे रूप से समझा फिर महीनता से समझाया जाता है। बाप है बिन्दी वह फिर इतना बड़ा-बड़ा लिंग रूप बना देते हैं। मनुष्यों के भी बहुत बड़े-बड़े चित्र बनाते हैं। परन्तु ऐसे है नहीं। मनुष्यों के शरीर तो यही होते हैं। भक्ति मार्ग में क्या-क्या बैठ बनाया है। मनुष्य कितना मूँझे हुए हैं। बाप कहते हैं जो पास्ट हो गया वह फिर होगा। अभी तुम बाप की श्रीमत पर चलो। इनको भी बाबा ने श्रीमत दी, साक्षात्कार कराया ना। तुमको हम बादशाही देता हूँ, अब इस सर्विस में लग जाओ। अपना वर्सा लेने का पुरूषार्थ करो। यह सब छोड़ दो। तो यह भी निमित्त बना। सब तो ऐसे निमित्त नहीं बनते हैं, जिनको नशा चढ़ा तो आकर बैठ गये। हमको तो राजाई मिलती है। फिर

यह पाई पैसे क्या करेंगे। तो अब बाप बच्चों को पुरूषार्थ कराते हैं, राजधानी स्थापन हो रही है, कहते भी हैं हम लक्ष्मी-नारायण से कम नहीं बनेंगे। तो श्रीमत पर चलकर दिखाओ। चूँ चां मत करो। बाबा ने थोड़ेही कहा -- बाल बच्चों का क्या हाल होगा। एक्सीडेंट में अचानक कोई मर जाते हैं तो कोई भूखा रहता है क्या। कोई न कोई मित्र-सम्बन्धी आदि देते हैं खाने के लिए। यहाँ देखो बाबा पुरानी झोपड़ी में रहते हैं। तुम बच्चे आकर महलों में रहते हो। बाप कहेंगे बच्चे अच्छी रीति रहें, खायें, पियें। जो कुछ भी नहीं ले आये हैं उनको भी सब कुछ अच्छी रीति मिलता है। इस बाबा से भी अच्छी रीति रहते हैं। शिवबाबा कहते हैं हम तो हैं ही रमता योगी। कोई का भी कल्याण करने जा सकता हूँ। जो ज्ञानी बच्चे हैं वह कभी साक्षात्कार आदि की बातों में खुश नहीं होंगे। सिवाए योग के और कुछ भी नहीं। इन साक्षात्कार की बातों में खुश नहीं होना। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. योग की ऐसी स्थिति बनानी है जो दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दें। एकदम सन्नाटा हो जाए। इसके लिए अशरीरी बनने का अभ्यास करना है।

२. ज्ञान के सच्चे नशे में रहने के लिए याद रहे कि हम संगमयुगी हैं, अब यह पुरानी दुनिया बदलने वाली है, हम अपने घर जा रहे हैं। श्रीमत पर सदा चलते रहना है, चूँ चाँ नहीं करनी है।

वरदान:- **श्रेष्ठ पुरूषार्थ द्वारा फाइनल रिजल्ट में फर्स्ट नम्बर लेने वाले उड़ता पंछी भव**

फाइनल रिजल्ट में फर्स्ट नम्बर लेने के लिए :-1- दिल के अविनाशी वैराग्य द्वारा बीती हुई बातों को, संस्कार रूपी बीज को जला दो। 2-अमृतवेले से रात तक ईश्वरीय नियमों और मर्यादाओं का सदा पालन करने का व्रत लो और 3-मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा या सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा निरन्तर महादानी बन, पुण्य आत्मा बन दान पुण्य करते रहो। जब ऐसा श्रेष्ठ हाई जम्प देने वाला पुरूषार्थ हो तब उड़ता पंछी बन फाइनल रिजल्ट में नम्बर वन बन सकेंगे।

स्लोगन:-

कर्मयोगी वह हैं जो साधनों को कमल पुष्प बनकर यूज़ करते हैं।

(15) मुरली न.- (१५)

23-6-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – याद से विकर्म विनाश होते हैं, ट्रांस से नहीं। ट्रांस तो पाई पैसे का खेल है, इसलिए ट्रांस में जाने की आश नहीं रखो"

प्रश्न:- माया के भिन्न-भिन्न रूपों से बचने के लिए बाप सब बच्चों को कौन-सी एक सावधानी देते हैं?

उत्तर:- मीठे बच्चे, ट्रांस की आश मत रखो। ज्ञान-योग में ट्रांस का कोई कनेक्शन नहीं। मुख्य है पढ़ाई। कोई ट्रांस में जाकर कहते हैं हमारे में मम्मा आई, बाबा आया। यह सब सूक्ष्म माया के संकल्प हैं। इनसे बहुत सावधान रहना है। माया कई बच्चों में प्रवेश कर उल्टा कार्य करा देती है इसलिए ट्रांस की आश नहीं रखनी है।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं कि एक तरफ है भक्ति, दूसरे तरफ है ज्ञान। भक्ति तो अथाह है और सिखाने वाले अनेक हैं। शास्त्र भी सिखाते हैं, मनुष्य भी सिखाते हैं। यहाँ न कोई शास्त्र हैं, न मनुष्य हैं। यहाँ सिखाने वाला एक ही रूहानी बाप है जो आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा ही धारण करती है। परमपिता परमात्मा में यह सारा ज्ञान है, 84 के चक्र का उनमें नॉलेज है, इसलिए उनको भी स्वदर्शन चक्रधारी कह सकते हैं। हम बच्चों को भी वह स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं। बाबा भी ब्रह्मा के तन में है, इसलिए उनको ब्राह्मण भी कहा जा सकता है। हम भी उनके बच्चे ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। अब बाप बैठ याद की यात्रा सिखलाते हैं, इसमें हठयोग आदि की कोई बात नहीं। वह लोग हठयोग से ट्रांस आदि में जाते हैं। यह कोई बड़ाई नहीं है। ट्रांस की बड़ाई कुछ भी नहीं है। ट्रांस तो एक पाई पैसे का खेल है। तुम्हें ऐसे कभी किसी को नहीं कहना है कि हम ट्रांस में जाते हैं क्योंकि आजकल विलायत आदि में जहाँ-तहाँ ढेर के ढेर ट्रांस में जाते हैं। ट्रांस में जाने से न उनको कोई फ़ायदा है, न तुमको कोई फ़ायदा है। बाबा ने समझ दी है। ट्रांस में न तो याद की यात्रा है, न ज्ञान है। ध्यान अथवा ट्रांस वाला कभी कुछ भी ज्ञान नहीं सुनेगा, न कोई पाप भस्म होंगे। ट्रांस का महत्व कुछ भी नहीं है। बच्चे योग लगाते हैं, उनको कोई ट्रांस नहीं कहा जाता है। याद से विकर्म विनाश होंगे। ट्रांस में विकर्म विनाश नहीं होंगे। बाबा सावधान करते हैं कि बच्चे ट्रांस का शौक मत रखो।

तुम जानते हो इन सन्यासियों आदि को ज्ञान तब मिलता है जबकि विनाश का समय होता है। भल तुम उन्हें ऐसे निमन्त्रण देते रहो लेकिन यह ज्ञान उनके कलष में जल्दी नहीं आयेगा। जब विनाश सामने देखेंगे तब आयेंगे। समझेंगे अब तो मौत आया कि आया। जब नज़दीक देखेंगे तब मानेंगे। उन्हों का पार्ट ही अन्त में है। तुम कहते हो अब विनाश आया कि आया, मौत आना है। वह समझते हैं इन्हों के यह गपोड़े हैं। जैसे तुम भक्ति को गपोड़ा समझते हो, वैसे वह फिर तुम्हारे ज्ञान को गपोड़ा समझते हैं। तुम्हारा झाड़ धीरे-धीरे बढ़ता है। सन्यासियों को सिर्फ कहना है कि बाप को याद करो। यह भी बाप ने समझाया है कि तुमको आँखें बन्द नहीं करनी हैं। आंखे बन्द होंगी तो बाप को कैसे देखेंगे। हम आत्मा हैं,

परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। वह देखने में नहीं आता है, लेकिन यह ज्ञान बुद्धि में है। (तुम बच्चे समझते हो परमपिता परमात्मा हमको पढ़ा रहे हैं - इस शरीर के आधार से।) ध्यान आदि की कोई बात ही नहीं। ध्यान में जाना कोई बड़ी बात नहीं है। (यह भोग आदि की ड्रामा में सब नूँध है। सर्वेन्ट बन भोग लगाकर आते हो। जैसे सर्वेन्ट लोग बड़े आदमी को खिलाते हैं। तुम भी सर्वेन्ट हो, देवताओं को भोग लगाने जाते हो। वह हैं फ़रिश्ते। वहाँ मम्मा-बाबा को देखते हैं। वह सम्पूर्ण मूर्ति भी एम आब्जेक्ट है। उनको ऐसा फ़रिश्ता किसने बनाया?) बाकी ध्यान में जाना तो कोई बड़ी बात नहीं है। (जैसे यहाँ शिवबाबा तुमको पढ़ाते हैं, वैसे वहाँ भी शिवबाबा इन द्वारा कुछ समझायेंगे। सूक्ष्मवतन में क्या होता है? यह सिर्फ जानना होता है। बाकी ट्रांस आदि को कुछ भी महत्व नहीं देना है। कोई को ट्रांस दिखलाना - यह भी बचपन है। बाबा सबको सावधान करते हैं — ट्रांस में मत जाओ।)

यह पढ़ाई है, कल्प-कल्प बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। अभी है संगमयुग। तुमको ट्रांसफर होना है। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम पार्ट बजा रहे हो, पार्ट की महिमा है। बाप आकर पढ़ाते हैं ड्रामा अनुसार। (तुमको बाप से एक बार पढ़कर मनुष्य से देवता जरूर बनना है।) इसमें बच्चों को तो खुशी होती है। हम बाप को भी और रचना के आदि मध्य अन्त को भी जान गये हैं। बाप की शिक्षा पाकर बहुत हर्षित होना चाहिए। तुम पढ़ते ही हो नई दुनिया के लिए। वहाँ है ही देवताओं का राज्य तो जरूर पुरूषोत्तम संगमयुग पर पढ़ना होता है। तुम इस दु:ख से छूटकर सुख मे जाते हो। यहाँ तमोप्रधान होने कारण तुम बीमार आदि होते हो। यह सब रोग मिट जाने हैं। (मुख्य है ही पढ़ाई, इनसे ट्रांस आदि का कनेक्शन नहीं है। यह बड़ी बात नहीं। बहुत जगह ऐसे ध्यान में चले जाते हैं फिर कहते मम्मा आई, बाबा आया। बाप कहते हैं यह कुछ भी नहीं है। बाप तो एक ही बात समझाते हैं—तुम जो आधाकल्प देह-अभिमानी बन पड़े हो, अब देही-अभिमानी बन बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों, इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा नहीं सिद्ध होती।) तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। (तुम अभी यात्रा कर रहे हो। उन्हों का जो योग है, उसमें यात्रा की बात नहीं। हठयोगी तो ढेर हैं। वह है हठयोग, यह है बाप को याद करना।) बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा समझो। ऐसे और कोई कभी नहीं समझायेंगे। यह तो है पढ़ाई। बाप का बच्चा बना फिर बाप से पढ़ना और पढ़ाना है। कोई को बुलाना नहीं है। (बाबा कहते हैं तुम म्यूज़ियम खोलो, आपेही तुम्हारे पास आयेंगे।) बुलाने की तकलीफ़ नहीं होगी। कहेंगे यह ज्ञान तो बड़ा अच्छा है, कभी सुना नहीं है। इसमें तो कैरेक्टर सुधरते हैं। मुख्य है ही पवित्रता, जिस पर ही हंगामें आदि होते हैं। बहुत फेल भी होते हैं। तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जाती है जो इस दुनिया में होते हुए उनको देखते नहीं हैं। खाते पीते भी तुम्हारी बुद्धि उस तरफ हो। जैसे बाप नया मकान बनाते हैं तो सबकी बुद्धि नये मकान तरफ चली जाती है ना। (अभी नई दुनिया बन रही है। बेहद का बाप बेहद का घर बना रहे हैं।) तुम जानते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। अब चक्र पूरा हुआ है। अब हमको घर और स्वर्ग में जाना है तो उसके लिए

पावन भी जरूर बनना है। याद की यात्रा से पावन बनना है। याद में ही विघ्न पड़ते हैं। इसमें ही तुम्हारी लड़ाई है। पढ़ाई में लड़ाई की बात नहीं होती। पढ़ाई तो बिल्कुल सिम्पल है। 84 के चक्र की नॉलेज तो बहुत सहज है। बाकी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसमें है मेहनत। बाप कहते हैं याद की यात्रा भूलो मत। कम से कम 8 घण्टा तो जरूर याद करो। शरीर निर्वाह के लिए कर्म भी करना है। नींद भी करनी है। सहज मार्ग है ना। अगर कहें नींद न करो, तो यह हठयोग हो गया। हठयोगी तो बहुत हैं। बाप कहते हैं उस तरफ कुछ भी नहीं देखो, उससे कुछ फ़ायदा नहीं। कितने हठयोग आदि सिखलाते हैं। यह सब है मनुष्य मत। तुम आत्मायें हो, आत्मा ही शरीर ले पार्ट बजाती है, डॉक्टर आदि बनती है। परन्तु मनुष्य देह-अभिमानी बन पड़े हैं—मैं फलाना हूँ....।

अभी तुम्हारी बुद्धि में है--हम आत्मा हैं। बाप भी आत्मा है। इस समय तुम आत्माओं को परमपिता पढ़ाते हैं। इसलिए गायन है—आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल.. कल्प-कल्प मिलते हैं। बाकी जो भी सारी दुनिया है, वह सब देह-अभिमान में आकर देह समझकर ही पढ़ते पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूँ। जज, बैरिस्टर आदि भी आत्मा बनती है। तुम आत्मा सतोप्रधान पवित्र थी फिर तुम पार्ट बजाते-बजाते सब पतित बने हो तब पुकारते हो बाबा आकर हमको पावन आत्मा बनाओ। बाप तो है ही पावन। यह बात जब सुनें तब धारणा हो। तुम बच्चों को धारणा होती है तो तुम देवता बनते हो। और कोई की बुद्धि में बैठेगा नहीं क्योंकि यह है नई बात। यह है ज्ञान। वह है भक्ति। तुम भी भक्ति करते-करते देह-अभिमानी बन जाते हो। अब बाप कहते हैं—बच्चे, आत्म-अभिमानी बनो। हम आत्माओं को बाप इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। घड़ी-घड़ी याद रखो यह एक ही समय है जब आत्माओं का बाप परमपिता पढ़ाते हैं। बाकी तो सारे ड्रामा में कभी पार्ट ही नहीं है, सिवाए इस संगमयुग के। इसलिए बाप फिर भी कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा निश्चय करो, बाप को याद करो। यह बड़ी ऊंची यात्रा है – चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस। विकार में गिरने से एकदम चकनाचूर हो जाते हैं। फिर भी स्वर्ग में तो आयेंगे, लेकिन पद बहुत कम होगा। यह राजाई स्थापन हो रही है। इसमें कम पद वाले भी चाहिए, सब थोड़ेही ज्ञान में चलते हैं। फिर तो बाबा को बहुत बच्चे मिलने चाहिए। अगर मिलते हैं तो भी थोड़े टाइम के लिए। तुम माताओं की बहुत महिमा है, वन्दे मातरम् भी गाया जाता है। जगत अम्बा का कितना बड़ा भारी मेला लगता है क्योंकि बहुत सर्विस की है। जो बहुत सर्विस करते हैं वह बड़ा राजा बनते हैं। देलवाड़ा मन्दिर में तुम्हारा ही यादगार है। तुम बच्चियों को तो बहुत टाइम निकालना चाहिए। तुम भोजन आदि बनाती हो तो बहुत शुद्ध भोजन याद में बैठ बनाना चाहिए, जो किसको खिलायें तो उनका भी हृदय शुद्ध हो जाये। ऐसे बहुत थोड़े हैं, जिनको ऐसा भोजन मिलता होगा। अपने से पूछो—हम शिवबाबा की याद में रहकर भोजन बनाते हैं, जो खाने से ही उनके हृदय पिघल जायें। घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। बाबा कहते हैं भूलेंगे... क्योंकि तुम 16 कला तो अभी बने नहीं हो। सम्पूर्ण बनना जरूर है। पूर्णिमा के चन्द्रमा में कितना तेज़ होता है, फिर कम होते-होते लकीर जाकर रहती

है। घोर अन्धियारा हो जाता है फिर घोर सोझरा। यह विकार आदि छोड़ बाप को याद करते रहेंगे तो तुम्हारी आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी। तुम चाहते हो महाराजा बनें परन्तु सब तो बन न सकें। पुरूषार्थ सबको करना है। कोई तो कुछ पुरूषार्थ नहीं करते इसलिए महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे कहा जाता है। महारथी थोड़े होते हैं। प्रजा वा लश्कर जितना होता है, उतने कमान्डर्स वा मेजर्स नहीं होते हैं। तुम्हारे में भी कमान्डर्स, मेजर्स, कैप्टन हैं। प्यादे भी हैं। तुम्हारी भी यह रूहानी सेना है ना। सारा मदार है याद की यात्रा पर। उनसे ही बल मिलेगा। तुम हो गुप्त वारियर्स। बाप को याद करने से विकर्मों का जो किचड़ा है वह भस्म हो जाता है। बाप कहते हैं धन्धाधोरी भल करो। बाप को याद करो। तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो, एक माशूक के। अब वह माशूक मिला है तो उनको याद करना है। आगे भल याद करते थे परन्तु विकर्म विनाश थोड़ेही होते थे। बाप ने बताया है तुमको यहाँ तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। आत्मा को ही बनना है। आत्मा ही मेहनत कर रही है। इसी जन्म में तुम्हें जन्म-जन्मान्तर की मैल को उतारना है। यह है मृत्युलोक का अन्तिम जन्म फिर जाना है अमरलोक। आत्मा पावन बनने बिगर तो जा नहीं सकती। हिसाब-किताब सबका चुक्तू हो जाना है। फिर अगर सजायें खायेंगे तो पद कम हो जायेगा। जो सज़ा नहीं खाते हैं वह सिर्फ माला के 8 दाने कहे जाते हैं। 9 रत्नों की ही अंगूठी आदि बनती है। ऐसा बनना है तो बाप को याद करने की बहुत मेहनत करनी है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. संगमयुग पर स्वयं को ट्रांसफर करना है। पढ़ाई और पवित्रता की धारणा से अपने कैरेक्टर सुधारने हैं, ट्रांस आदि का शौक नहीं रखना है।

२. शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है, नींद भी करनी है, हठयोग नहीं है, लेकिन याद की यात्रा को कभी भूलना नहीं है। योगयुक्त होकर ऐसा शुद्ध भोजन बनाओ और खिलाओ जो खाने वाले का हृदय शुद्ध हो जाये।

वरदान:- अलबेलेपन की लहर को विदाई दे सदा उमंग-उत्साह में रहने वाली समझदार आत्मा भव

कई बच्चे दूसरों को देखकर स्वयं अलबेले हो जाते हैं। सोचते हैं ये तो होता ही है....चलता ही है..क्या एक ने ठोकर खाई तो उसे देखकर अलबेलेपन में आकर खुद भी ठोकर खाना - यह समझदारी है? बापदादा को रहम आता है कि ऐसे अलबेले रहने वालों के लिए पश्चाताप की घड़ियाँ कितनी कठिन होंगी, इसलिए समझदार बन अलबेलेपन की लहर को, दूसरों को देखने की लहर को मन से विदाई दो। औरों को नहीं देखो, बाप को देखो।

स्लोगन:-

अचल बनना है तो व्यर्थ और अशुभ को समाप्त करो।

R

17-11-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अभी तुम सत्य बाप द्वारा सत्य देवता बन रहे हो, इसलिए सतयुग में सतसंग करने की जरूरत नहीं"

प्रश्नः- सतयुग में देवताओं से कोई भी विकर्म नहीं हो सकता है, क्यों?
उत्तरः- क्योंकि उन्हें सत्य बाप का वरदान मिला हुआ है। विकर्म तब होता है जब रावण का श्राप मिलने लगता है। सतयुग-त्रेता में है ही सद्गति, उस समय दुर्गति का नाम नहीं। विकार ही नहीं जो विकर्म हो। द्वापर-कलियुग में सबकी दुर्गति हो जाती इसलिए विकर्म होते रहते हैं। यह भी समझने की बातें हैं।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप बैठ समझाते हैं - यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम सतगुरू भी है। (बाप की ऐसी महिमा बताने से ऑटोमेटिकली सिद्ध हो जाता है कि कृष्ण किसी का बाप हो नहीं सकता। वह तो छोटा बच्चा, सतयुग का प्रिन्स है। वह टीचर भी नहीं हो सकता। खुद ही बैठकर टीचर से पढ़ते हैं। गुरू तो वहाँ होता नहीं क्योंकि वहाँ सब सद्गति में हैं। आधाकल्प है सद्गति, आधाकल्प है दुर्गति। तो वहाँ है सद्गति, इसलिए ज्ञान की वहाँ दरकार नहीं रहती। नाम (१) भी नहीं है क्योंकि ज्ञान से 21 जन्मों के लिए सद्गति मिलती है फिर द्वापर से कलियुग अन्त तक है दुर्गति। तो कृष्ण फिर द्वापर में कैसे आ सकता। यह भी किसको ध्यान में नहीं आता है। एक-एक बात में बहुत ही गुह्य राज भरा हुआ है, जो समझाना बहुत (१) जरूरी है। वह सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर है। अंग्रेजी में सुप्रीम ही कहा जाता है। अंग्रेजी अक्षर कुछ अच्छे होते हैं। जैसे ड्रामा अक्षर है।) ड्रामा को नाटक नहीं कहेंगे, नाटक में तो अदली-बदली होती है। यह सृष्टि का चक्र फिरता है—ऐसा कहते भी हैं, परन्तु कैसे फिरता है, हूबहू फिरता है या चेंज होती है, यह किसको भी पता नहीं है। कहते भी हैं बनी-बनाई बन रही......जरूर कोई खेल है जो फिर से चक्र खाता रहता है। इस चक्र में मनुष्यों को ही चक्र लगाना पड़ता है। अच्छा, इस चक्र की आयु क्या है? कैसे रिपीट होता है? इसको फिरने में कितना समय लगता है? यह कोई नहीं जानते। इस्लामी-बौद्धी आदि यह सब हैं घराने, जिनका ड्रामा में पार्ट है।

तुम ब्राह्मणों की डिनायस्टी नहीं है, यह है ब्राह्मण कुल। सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल कहा जाता है। इस्लामी-बौद्धी आदि को कुल कहेंगे। देवी-देवता का यह कुल है। यह तो समझाना बहुत सहज है। सूक्ष्मवतन में फरिश्ते रहते हैं। वहाँ हड्डी-मांस होता नहीं। देवताओं को तो हड्डी-मांस है ना। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। विष्णु की नाभी कमल से ब्रह्मा क्यों दिखाया है? सूक्ष्मवतन में तो यह बातें होती नहीं। न जवाहरात आदि हो सकते, इसलिए ब्रह्मा को सफेद पोशधारी ब्राह्मण दिखाया है। ब्रह्मा साधारण मनुष्य बहुत जन्मों के अन्त में गरीब हुआ ना। इस समय हैं ही खादी के कपड़े। वह बिचारे समझते नहीं सूक्ष्म शरीर क्या होता है। तुमको बाप समझाते हैं – वहाँ हैं ही फरिश्ते, जिनको हड्डी-मांस होता नहीं। सूक्ष्मवतन में तो यह श्रृंगार आदि होना नहीं चाहिए। परन्तु चित्रों में दिखाया

है तो बाबा उसका ही साक्षात्कार कराए फिर अर्थ समझाते हैं। जैस हनूमान का साक्षात्कार कराते हैं। अब हनूमान जैसा कोई मनुष्य होता नहीं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के चित्र बनाये हैं, जिनका विश्वास बैठ गया है उनको ऐसा कुछ बोलो तो बिगड़ पड़ते। (देवियों आदि की कितनी पूजा करते हैं फिर डुबो देते हैं। यह सब है भक्ति मार्ग। भक्ति मार्ग के दलदल में गले तक डूबे हुए हैं तो फिर निकाल कैसे सकेंगे। निकालना ही मुश्किल हो जाता है। कोई-कोई तो औरों को निकालने निमित्त बन खुद ही डूब जाते हैं। खुद गले तक दुबन में फंसते अर्थात् काम विकार में गिर पडते हैं। यह है सबसे बड़ी दुबन (दलदल)। सतयुग में यह बातें होती नहीं।) अभी तुम सत्य बाप द्वारा सत्य देवता बन रहे हो। फिर वहाँ भक्ति मार्ग में सतसंग होते नहीं। सतसंग यहाँ करते रहते हैं। समझते हैं सब ईश्वर के रूप हैं। कुछ भी नहीं समझते। बाप बैठ समझाते हैं—कलियुग में हैं सब पाप आत्मायें, सतयुग में होते हैं पुण्य आत्मायें। रात-दिन का फर्क है। तुम अभी संगम पर हो। कलियुग और सतयुग दोनों को जानते हो। मूल बात है इस पार से उस पार जाने की। क्षीरसागर और विषय सागर का गायन भी है परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। अभी बाप बैठ कर्म-अकर्म का राज़ समझाते हैं। कर्म तो मनुष्य करते ही हैं फिर कोई कर्म अकर्म होते हैं, कोई विकर्म होते हैं। रावण राज्य में सब कर्म विकर्म हो जाते हैं, सतयुग में विकर्म होता नहीं क्योंकि वहाँ है रामराज्य। बाप से वरदान पाये हुए हैं। रावण देते हैं श्राप। यह सुख और दु:ख का खेल है ना। दु:ख में सब बाप को याद करते हैं। सुख में कोई याद नहीं करते। वहाँ विकार होते नहीं। बच्चों को समझाया है—सैपलिंग लगाते हैं। यह सैपलिग लगाने की रसम भी अभी पड़ी है। बाप ने सैपलिंग लगाना शुरू किया है। आगे जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट थी तो कभी अखबार में नहीं पड़ता था कि झाड़ों का सैपलिंग लगाते हैं। अब बाप बैठ देवी-देवता धर्म का सैपलिंग लगाते हैं, और कोई सैपलिंग नहीं लगाते। बहुत धर्म हैं, देवी-देवता धर्म प्राय: लोप है। धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट होने के कारण नाम ही उल्टा-सुल्टा रख दिया है। जो देवता धर्म के हैं उन्हों को फिर उसी देवी-देवता धर्म में आना है। हर एक को अपने धर्म में ही जाना है। क्रिश्चियन धर्म का निकलकर फिर देवी-देवता धर्म में आ नहीं सकेंगे। मुक्ति तो हो न सके। हाँ, (कोई देवी-देवता धर्म का कनवर्ट होकर क्रिश्चियन धर्म में चला गया होगा तो वह फिर लौटकर अपने देवी-देवता धर्म में आ जायेगा। उनको यह ज्ञान और योग बहुत अच्छा लगेगा, इससे सिद्ध होता है कि यह अपने धर्म का है। इसमें बड़ी विशालबुद्धि चाहिए समझने और समझाने की। धारणा करनी है, किताब पढ़कर नहीं सुनानी है। जैसे कोई गीता सुनाते हैं, मनुष्य बैठकर सुनते हैं। कोई तो गीता के श्लोक एकदम कण्ठ कर लेते हैं। बाकी तो इनका अर्थ हर एक अपना-अपना बैठ निकालते हैं।) श्लोक सारे संस्कृत में हैं। यहाँ तो गायन है कि सागर को स्याही बना दो, सारा जंगल कलम बना दो तो भी ज्ञान का अन्त नहीं होता। गीता तो बहुत छोटी है। 18 अध्याय हैं। बस इतनी छोटी गीता गले में पहने हैं। बहुत पतले अक्षर होते हैं। गले में पहनने की कोई हॉबी (आदत) होती है। कितना छोटा लॉकेट बनता है। वास्तव में है तो सेकण्ड की बात। बाप का बना जैसेकि

विश्व का मालिक बना। बाबा हम आपका एक दिन का बच्चा हूँ, ऐसे भी लिखने शुरू करेंगे। एक दिन में निश्चय हुआ और फट से पत्र लिखेंगे। बच्चा बना तो विश्व का मालिक हुआ। यह भी कोई की बुद्धि में मुश्किल बैठता है। तुम विश्व का मालिक बनते हो ना। वहाँ और कोई खण्ड नहीं रहता है, नाम-निशान गुम हो जाता है। कोई को मालूम भी नहीं रहता कि यह खण्ड थे। अगर थे तो जरूर उनकी हिस्ट्री-जॉग्राफी चाहिए। वहाँ यह होते ही नहीं। इसलिए कहा जाता है तुम विश्व के मालिक बनने वाले हो। बाबा ने समझाया है — मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, ज्ञान का सागर हूँ। यह तो बहुत ऊंच ते ऊंच ज्ञान है जिससे हम विश्व के मालिक बनते हैं। हमारा बाप सुप्रीम है, सत्य बाप, सत्य टीचर है। सत्य सुनाते हैं। बेहद की शिक्षा देते हैं। बेहद का गुरू है, सबकी सद्गति करते हैं। एक की महिमा की तो वह महिमा फिर दूसरे की हो नहीं सकती। फिर वह आप समान बनाये तब हो सकते। तो तुम भी पतित-पावन ठहरे। सत नाम लिखते हैं। पतित-पावनी गंगायें यह मातायें हैं। शिव शक्ति कहो शिव वंशी कहो। शिव वंशी ब्रह्माकुमार-कुमारियां। शिव वंशी तो सब हैं। बाकी ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं तो संगम पर ही ब्रह्माकुमार-कुमारियां होते हैं। ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं। पहले-पहले होते हैं ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। कोई भी एतराज उठाते हैं तो उसको बोलो यह प्रजापिता है, इनमें प्रवेश करते हैं। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश करता हूँ। दिखाते हैं विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। अच्छा विष्णु फिर किसकी नाभी से निकला? उसमें एरो का निशान दे सकते हो कि दोनों ओत-प्रोत हैं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। यह उनसे, वह उनसे पैदा हुआ है। इनको लगता है एक सेकेण्ड, उनको लगता है 5 हज़ार वर्ष। यह वन्डरफुल बातें हैं ना। तुम बैठ समझायेंगे। बाप कहते हैं लक्ष्मी-नारायण 84 जन्म लेते हैं फिर उनके ही बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश कर यह बनाता हूँ। समझने की बात है ना। बैठो तो समझायें कि इनको ब्रह्मा क्यों कहते हैं। सारी दुनिया को दिखाने के लिए यह चित्र बनाये हैं। हम समझा सकते हैं, समझने वाले ही समझेंगे। नहीं समझने वाले के लिए कहेंगे यह हमारे कुल का नहीं है। बिचारा भल वहाँ आयेगा परन्तु प्रजा में। हमारे लिए तो सब बिचारे हैं ना—गरीब को बिचारा कहा जाता है। कितनी प्वाइंट्स बच्चों को धारण करनी हैं। भाषण करना होता है टॉपिक्स पर। यह टॉपिक कोई कम है क्या। प्रजापिता ब्रह्मा और सरस्वती, 4 भुजाएं दिखाते हैं। तो 2 भुजा बेटी की हो जाती हैं। युगल तो है नहीं। युगल तो वास्तव में बस विष्णु ही है। ब्रह्मा की बेटी है सरस्वती। शंकर भी युगल नहीं है, इस कारण शिव-शंकर कह देते हैं। अब शंकर क्या करते हैं? विनाश तो एटॉमिक बाम्ब्स से होता है। बाप कैसे बैठ बच्चों का मौत करायेंगे, यह तो पाप हो जाए। बाप तो और ही सबको शान्तिधाम वापिस ले जाते हैं, बिगर मेहनत। हिसाब-किताब चुक्तु कर सब घर जाते हैं क्योंकि कयामत का समय है। बाप आते ही हैं सर्विस पर। सबको सद्गति देते हैं। तुम भी पहले गति में फिर सद्गति में आयेंगे। यह बातें समझने की हैं। इन बातों को ज़रा भी कोई नहीं जानते। तुम देखते हो कोई तो बहुत माथा खपाते, बिल्कुल समझते नहीं। जो कुछ अच्छा समझने वाले होंगे, वह आकर समझेंगे। बोलो, एक-एक बात पर

समझना है तो टाइम दो। यहाँ तो सिर्फ हुक्म है, सबको बाप का परिचय दो। यह है ही कांटों का जंगल क्योंकि एक-दो को दुःख देते रहते हैं, इसको दुःखधाम कहा जाता है। सतयुग है सुखधाम। दुःखधाम से सुखधाम कैसे बनता है यह तुमको समझायें। लक्ष्मी-नारायण सुखधाम में थे फिर यह 84 जन्म ले दुःखधाम में आते हैं। यह ब्रह्मा का नाम भी कैसे रखा। बाप कहते हैं मैं इसमें प्रवेश कर बेहद का सन्यास कराता हूँ। फट से सन्यास करा देते हैं क्योंकि बाप को सर्विस करानी है, वही कराते हैं। इनके पिछाड़ी बहुत निकले जिसका नाम बैठ रखा। वह लोग फिर बिल्ली के पूंगरे बैठ दिखाते हैं। यह सब हैं दन्त कथायें। बिल्ली के पूंगरे हो कैसे सकते। बिल्ली थोड़ेही बैठ ज्ञान सुनेगी। बाबा युक्तियां बहुत बतलाते रहते हैं। कोई बात किसको समझ में न आये तो उनको बोलो–जब तक अल्फ को नहीं समझा है तो और कुछ समझ नहीं सकेंगे। एक बात निश्चय करो और लिखो, नहीं तो भूल जायेंगे। माया भुला देगी। मुख्य बात है बाप के परिचय की। हमारा बाप सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर है जो सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं, जिसका कोई को पता नहीं है। इस समझाने में टाइम चाहिए। जब तक बाप को नहीं समझा है तब तक प्रश्न उठते ही जायेंगे। अल्फ नहीं समझा है तो बे को कुछ नहीं समझेंगे। मुफ्त संशय उठाते रहेंगे–ऐसे क्यों, शास्त्र में तो ऐसे कहते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति को बुद्धि में रख अब कोई विकर्म नहीं करने हैं, ज्ञान और योग की धारणा करके दूसरों को सुनाना है।

२. सत्य बाप की सत्य नॉलेज देकर मनुष्यों को देवता बनाने की सेवा करनी है। विकारों के दलदल से सबको निकालना है।

वरदान:- दातापन की भावना द्वारा इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव करने वाले तृप्त आत्मा भव

सदा एक लक्ष्य हो कि हमें दाता का बच्चा बन सर्व आत्माओं को देना है, दातापन की भावना रखने से सम्पन्न आत्मा हो जायेंगे और जो सम्पन्न होंगे वह सदा तृप्त होंगे। मैं देने वाले दाता का बच्चा हूँ–देना ही लेना है, यही भावना सदा निर्विघ्न, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव कराती है। सदा एक लक्ष्य की तरफ ही नज़र रहे, वह लक्ष्य है बिन्दू और कोई भी बातों के विस्तार को देखते हुए नहीं देखो, सुनते हुए भी नहीं सुनो।

स्लोगन-

श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ाओ तो विकर्मों का खाता समाप्त हो जायेगा।

*19-12-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - ऊंच पद का आधार पढ़ाई और याद की यात्रा पर है इसलिए जितना चाहो उतना गैलप कर लो"

प्रश्नः- कौन सा गुह्य राज़ पहले-पहले नहीं समझाना है? क्यों?

उत्तरः- ड्रामा का जो गुह्य राज़ है, वह पहले-पहले नहीं समझाना है क्योंकि कई मूँझ जाते हैं। कहते हैं ड्रामा में होगा तो आपेही राज्य मिलेगा। आपेही पुरुषार्थ कर लेंगे। ज्ञान के राज़ को पूरा न समझ मतवाले बन जाते हैं। यह नहीं समझते कि पुरुषार्थ बिगर तो पानी भी नहीं मिलेगा।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति गुडमार्निंग। बाबा ने इतने भभके से बच्चों से गुडमार्निंग की। बच्चों ने रेसपान्ड नहीं किया। बच्चों को तो और ही जास्ती आवाज से बोलना चाहिए। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से गुडमार्निंग करते हैं। बच्चे भी जानते हैं कि हम इस शरीर द्वारा रूहानी बाप को गुडमार्निंग करते हैं। तो बच्चों को इतना हुल्लास से कहना चाहिए ना - वाह बाबा! आखिर वह दिन आया आज, जिसको सारी दुनिया पुकारती रहती वह बाप सम्मुख हमसे गुडमार्निंग कर रहे हैं। फिर जब सतोप्रधान बन जायेंगे तो पतित-पावन को याद नहीं करेंगे। अभी तमोप्रधान हैं तभी याद करते हैं कि हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। अब तुम जानते हो कि बरोबर पतित-पावन बाबा को ही आना पड़ता है। वही सुप्रीम फादर, गॉड फादर है। क्राइस्ट को सुप्रीम फादर तो नहीं कहेंगे। क्राइस्ट को सन आफ गॉड मानते हैं। सबसे सुप्रीम वह एक ही है। वह भी समझते हैं कि वह गॉड फादर ही इन पैगम्बरों को भेजते हैं। यह भी जरूर है कि पतितों को पावन बनाने सुप्रीम फादर को ही आना है। अब वह तो है निराकार। कहते भी हैं कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं। यह भी किसको पता नहीं कि ब्रह्मा और विष्णु का आपस में क्या सम्बन्ध है। निराकार को मुख जरूर चाहिए इसलिए इनको भागीरथ भी कहा जाता है। मुख द्वारा ही तो समझायेंगे ना। डायरेक्शन देते हैं कि मनमनाभव। तो मुख द्वारा कहेंगे ना। इसमें प्रेरणा की तो बात हो नहीं सकती। बाप तो ब्रह्मा द्वारा बैठ सब वेदों शास्त्रों का सार समझाते हैं। हर चीज़ का सार निकालते हैं ना। गाते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे...तो वही इसमें प्रवेश कर तुमको नॉलेज देते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। प्रजापिता ब्रह्मा को भी पिता कहते हैं। तो माता कहाँ? बाप बैठ समझाते हैं कि यह प्रजापिता भी है तो माता भी है। मैं तो सभी आत्माओं का बाप हूँ। मुझे ही गॉड फादर कहते हैं। भारतवासी पुकारते भी हैं तुम मात-पिता... परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं जानते। निराकार को माता कैसे कह सकते। वह इसमें प्रवेश कर एडाप्ट करते हैं। तो यह ब्रह्मा माता बन जाती है। इन द्वारा ही देवी रचना रचते हैं। वह भी एडाप्टेड मदर है। वह फादर है। इसको फिर नंदीगण, बैल भी दिखाते हैं। गाय को कभी भी नहीं दिखाते। यह बहुत वन्डरफुल बातें हैं। कोई-कोई नये आते हैं तो डिटेल में

सुनाना पड़ता है। नहीं तो इन बातों को वह समझ नहीं सकेंगे। कोई शुरूड बुद्धि होते हैं तो झट समझ जाते हैं। 30 वर्ष वाले से भी मास वाले तीखे चले जाते हैं। इसलिए ऐसे नहीं समझना चाहिए कि हम तो बहुत देरी से आये हैं। बाप कहते हैं बच्चे पुरुषार्थ करो। जैसे कॉलेज में आने वाले पढ़ाई कर गैलप कर लेते हैं। यहाँ भी ऐसे है। सारा मदार पढ़ाई और याद पर है। बच्चे जानते हैं कि मूलवतन में तो आत्मायें सतोप्रधान होती हैं। तमोप्रधान आत्मायें तो वहाँ जा नहीं सकती। फिर सब एक्टर अपने-अपने पार्ट अनुसार स्टेज पर आते हैं। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। हद के ड्रामा में तो 50-60 एक्टर होंगे। यहाँ तो कितना बड़ा बेहद का ड्रामा है। बाबा ने हमारी बुद्धि का ताला खोल दिया है। तो अब समझते हैं कि यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे, कितने साहूकार थे। आधाकल्प विश्व के मालिक थे। उसको कहा जाता है अद्वेत राज्य। वहाँ है ही एक धर्म। वह है रामराज्य, यह है रावण राज्य। रामराज्य में विकार होते ही नहीं। वास्तव में इसको ईश्वरीय राज्य कहेंगे। ईश्वर को राम नहीं कहा जाता। बहुत लोग राम-राम की माला जपते हैं परन्तु याद तो भगवान को करते हैं। नाम राम का राइट है क्योंकि यह तो कोई जानते नहीं कि ईश्वर का नाम रूप क्या है? मनुष्य तो बहुत मूँझे हुए हैं। रावण कौन है - यह नहीं जानते। रावण को जलाने पर कितना खर्चा करते हैं। आगे दशहरा दिखाने के लिए बाहर वालों को भी बुलाते थे। साइंस का भी देखो अभी कितना जोर है। वह साइंस सुख के लिए भी है तो दु:ख के लिए भी है। सुख तो इससे अल्पकाल का ही मिलता है। इससे ही इस दुनिया का विनाश होता है। तो यह दु:ख हुआ ना। तुम्हारी है साइलेन्स पावर। उन्हों की है साइंस पावर। तुम साइलेन्स से अपने स्वधर्म में रहते हो तो पवित्र बन जाते हो। याद से विकर्म विनाश होते हैं। तुम योगबल से राजाई लेते हो, इसमें लड़ाई आदि की बात नहीं। तुम बाबा से राजाई का वर्सा पाते हो। बाहुबल की तो बात ही अलग है। कल्प-कल्प तुम बच्चे ही पतित से पावन बनते हो फिर पावन से पतित बनेंगे। यह ड्रामा है हार जीत का। परन्तु यह बातें सबकी बुद्धि में नहीं बैठेंगी। सब तो सतयुग में आयेंगे नहीं। बेहद का बाप अपने बच्चों को ही समझाते हैं। दूसरे धर्म वाले आते ही बाद में हैं। यह पुरानी दुनिया है, दैवी धर्म का फाउन्डेशन ही सड़ गया है बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउन्डेशन था ही नहीं। था मगर अब नहीं है। प्राय: गुम हो गया है। अब अनेक धर्म हैं, इनको रावण राज्य कहते हैं। कहते हैं विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। कोई से भी पूछो कि इस चित्र का अर्थ बताओ क्या है? तो बता नहीं सकेंगे। आत्मा तो एक ही है। उनको कहेंगे विष्णु। विष्णुपुरी भी दिखाते हैं। यह है संगम, ब्रह्मापुरी। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर चाहिए। ब्राह्मण हैं चोटी। यह विराट रूप का चित्र भी खास भारतवासियों के लिए है और भारत में फिर बहुत धर्म वाले रहते हैं, इसलिए इनको वैरायटी धर्मों का झाड़ भी कहा जाता है। यह है मनुष्य सृष्टि का झाड़, परन्तु इसमें वैरायटी धर्म हैं। पहले डिटीज्म फिर इस्लामिज्म, यह है ब्राह्मण। इस संगम का तो किसको पता नहीं है। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम ब्राह्मण धर्म, जबकि सोशल सर्विस करते हैं। तुम बच्चों को रूहानी सोशल वर्कर कहा जाता है। सोशल वर्कर भारत में बहुत हैं, उन्हों को भी

सिखाते हैं कि नम्रता भाव से सेवा करो। जो पक्के कांग्रेसी थे वह तो झाडू आदि भी लगाते थे। मेहतर आदि का काम भी किया करते थे। आगे जो पक्के थे वह चीनी के बर्तन में खाना नहीं खाते थे। जो पास्ट हुआ वह ड्रामा है। वही रिपीट होगा। इन बातों को समझते नहीं तो मूँझते हैं। इसलिए ड्रामा का राज़ शुरू में किसी को समझाना नहीं है। कहेंगे अगर ड्रामा में नूँध होगा तो हमको आपेही राज्य मिलेगा और पुरुषार्थ भी आपेही करेंगे। ऐसे मतवाले भी होते हैं। ज्ञान के राज़ों को पूरा समझते ही नहीं हैं। अरे पुरुषार्थ बिगर तो पानी भी नहीं मिलेगा। आपेही थोड़ेही पानी आकर मुँह में पड़ जायेगा।

बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। वह आकर सहज रास्ता बताते हैं कि आत्मा को पावन बनाने के लिए मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप ही पावन बनाने के लिए श्रीमत देते हैं, मुझे याद करो। परन्तु वह निराकार है तो जरूर साकार में आकर श्रीमत देंगे। बाप कहते हैं – यह मेरा शरीर भी मुकरर है। यह बदली हो नहीं सकता। यह भी नूँध है। गाया भी जाता है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना कराते हैं। यह भगवानुवाच है ना। तो बोलने लिए मुख चाहिए। प्रेरणा से थोड़ेही पढ़ाई होती है। बाप आकर इन द्वारा डायरेक्शन देते हैं। यह चित्र आदि इस ब्रह्मा ने थोड़ेही बनाये हैं। यह भी तो पुरुषार्थी है ना। यह कोई नॉलेजफुल नहीं है। यह तो भक्तिमार्ग में था। भक्तों का उद्धार तो भगवान को ही करना है। भक्ति का फल आकर देते हैं। तुम बच्चों को मनुष्य से देवता बनाते हैं। बाप इसमें प्रवेश कर राजयोग सिखलाते हैं, इनका नाम है शिवबाबा। वह कहते हैं मेरा यह जन्म दिव्य अलौकिक है। मेरा आने का पार्ट एक ही बार संगम पर है। ऐसे भी नहीं कि तुम्हारी आत्मा के बुलाने पर आता हूँ। जब मेरे आने का समय होता है - तो एक सेकेण्ड भी नीचे-ऊपर नहीं होता है। एक्यूरेट टाइम पर आ जाता हूँ। मुझे आरगन्स ही कहाँ हैं जो तुम्हारी पुकार सुनूँगा। यह ड्रामा बना बनाया है। जब समय होता है तो आकर पतितों को पावन बनाता हूँ। ऐसे नहीं कि हमारी रड़ियाँ कोई भगवान सुनते हैं। बहुत बच्चे बाबा को बोलते हैं कि बाबा आप तो जानी-जाननहार हो, बताओ हम इम्तहान में पास होंगे। यह काम होगा? बाबा कहते हैं अरे हम तो आते ही हैं पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताने। मेरा जो पार्ट होगा, वही बजाऊंगा। जो नहीं सुनाने का है वह तो सुनाऊंगा नहीं। मैं यह बातें बताने थोड़ेही आता हूँ। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। हर एक का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। जो निश्चयबुद्धि नहीं हैं वह स्वर्ग में चलने के लायक नहीं। और वह बातें भी ऐसी ही करेंगे। बाकी जो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी घराने की आत्मायें हैं, उन्हों को तो बाबा से जरूर आकर सुनना है और वर्सा लेना है। बाकी जो जास्ती पुरूषार्थ नहीं करते हैं वह भी स्वर्ग में तो आयेंगे जरूर। लेकिन सज़ा खाकर कोई पद पा लेंगे। कहते तो बहुत हैं बाबा हम तो सूर्यवंशी बनेंगे, नारायण बनेंगे। परन्तु बच्चों को पुरुषार्थ भी इतना करना चाहिए। बाबा को फालो करने की भी ताकत चाहिए। फालो फादर कहते हैं तो इनको देखो यह कैसे सरेन्डर हुआ। सब कुछ ईश्वर अर्थ अर्पण कर दिया। ईश्वर अर्थ सब कुछ देकर अपना ममत्व मिटा देना चाहिए। पहले भट्ठी से बहुत निकले, अब ऐसे थोड़ेही भट्ठी हो सकती है।

इस कार्य में मातायें, कन्यायें आगे जाती हैं। इसमें भी कन्यायें तीखी जाती हैं। देह और देह के सम्बन्धों को भूल जाना है क्योंकि अब घर चलना है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो। अब नाटक पूरा होता है, बाकी समय थोड़ा है। जैसे आशिक माशूक होते हैं। यह बाबा माशूक है, आशिक नहीं है। बाप कहते हैं - तुम पतित बने हो तो याद भी तुमको करना है। मैं थोड़ेही पतित बना हूँ, जो तुमको याद करूँ। मैं तो युक्ति बताता हूँ उस पर चलो। इस दुनिया से ममत्व मिटाते जाओ। अब तो वापिस जाना है। यह बुद्धि में ज्ञान है। यह शरीर भी पुराना है। सतयुग में निरोगी शरीर मिलेगा। फिर हम गोरे बन जायेंगे। सांवरे से गोरा कैसे बनते हैं, यह भी तुम ही जानते हो। राम को भी काला बनाया है। शिव का लिंग भी काला बनाया है। वह तो कभी काला बनता नहीं है। वह एवर प्योर है, उनको तो सफेद बनाना चाहिए।

बाबा कहते हैं - चित्र ऐसे-ऐसे बनाओ जो देखने से आकर्षण करें। अखबारों में कितने चित्र पड़ते हैं। तुम्हारे नहीं पड़ते हैं। बाबा तुम बच्चों को तो बेअक्ल से अक्लमंद बनाते हैं। इस लक्ष्मी-नारायण को अक्लमंद किसने बनाया? बाप ने योग द्वारा ऐसा बनाया। तुम बच्चों को यह नॉलेज मिली है वह फैलाना है, विचार सागर मंथन करना है। गवर्मेन्ट कितना पब्लिक के लिए खर्चा करती है। यहाँ जो तुम बच्चों का सो बाप का और जो बाप का वह तुम बच्चों का। बाप कहते हैं - मैं हूँ निष्काम सेवाधारी। मैं तो दाता हूँ। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं। शिवबाबा 21 जन्म के लिए विश्व का मालिक बनाते हैं। यह बाप लेता नहीं, देता है। बाबा तो दाता है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- जैसे ब्रह्मा बाप सरेन्डर हुआ, ऐसे फालो फादर करना है। अपना सब कुछ ईश्वर अर्थ कर ट्रस्टी बन ममत्व मिटा देना है।

२- लास्ट आते भी फास्ट जाने के लिए याद और पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है।

वरदान:- आवाज से परे की स्थिति में स्थित हो सर्व गुणों का अनुभव करने वाले मा. बीजरूप भव

जैसे बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ होता है वैसे ही आवाज से परे की स्थिति में संगमयुग के सर्व विशेष गुण अनुभव में आते हैं। मास्टर बीजरूप बनना अर्थात् सिर्फ शान्ति नहीं लेकिन शान्ति के साथ ज्ञान, अतीन्द्रिय सुख, प्रेम, आनंद, शक्ति आदि-आदि सर्व मुख्य गुणों का अनुभव करना। यह अनुभव सिर्फ स्वयं को नहीं होता लेकिन अन्य आत्मायें भी उनके चेहरे से सर्वगुणों का अनुभव करती हैं। एक गुण में सर्वगुण समाये हुए रहते हैं।

स्लोगन:-

अच्छाई धारण करो लेकिन अच्छाई में प्रभावित नहीं हो जाओ।

18.

फर्रुखाबाद में मालिक को मानते हैं

(१८)

खिलायेंगे, जो पहनायेंगे, जहाँ बिठायेंगे, वह करेंगे। ऐसे कोई तो बाप को मत पर चलते हैं, कोई को कोई वस्तु नहीं मिलती तो झट बिगड़ पड़ते। सब थोड़ेही एक जैसे सपूत बच्चे हो सकते हैं। दुनिया में तो ढेर की ढेर मत वाले हैं। अजामिल जैसी पापात्मायें गणिकायें बहुत हैं। यह तो है ही रावणराज्य। यह भी समझाना पड़ता है। ईश्वर सर्वव्यापी कहना रांग है। सर्वव्यापी तो 5 विकार हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह आसुरी दुनिया है। सतयुग में 5 विकार होते नहीं। कहते हैं शास्त्रों में यह बात लेकिन है। परन्तु शास्त्र तो सब मनुष्यों ने बनाये हैं। जो [illegible] मनुष्य हुए [illegible] [illegible] [illegible] वह मनुष्य। व्यास ने लिखा वह भी मनुष्य था ना। यह तो निराकारी बाप बैठ समझाते हैं। धर्म स्थापकों ने जो आकर के सुनाया उसका फिर बाद में शास्त्र बनता है। जैसे गुरुनानक ने सुनाया, बाद में फिर ग्रंथ बनता है। तो जिसने सुनाया उसका नाम हो गया। गुरु नानक ने भी उसकी महिमा गाई है। सबका बाप वह एक है। वह है पैगाम ले आने वाला। बाप कहते हैं जाकर धर्म स्थापन करो। यह बेहद का बाप कहते हैं-मुझे तो कोई भेजने वाला नहीं। शिवबाबा खुद बैठ समझाते हैं। यह है मैसेज ले आने वाले, मुझे कोई भेजने वाला नहीं। मुझे मैसेन्जर वा पैगम्बर नहीं कहेंगे। मैं तो आता हूँ बच्चों को सुख शान्ति देने। मुझे कोई ने कहा नहीं। मैं तो खुद मालिक हूँ। फर्रुखाबाद में मालिक को मानते हैं ना। तुमने मालिक का अर्थ भी समझा है। वह है मालिक, हम उनके बच्चे हैं। तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए बच्चे कहते हैं-हमारा बाबा। तो बाप के धन के तुम मालिक हो। "मेरा बाबा" बच्चे ही कहेंगे। मेरा बाबा तो फिर बाबा का धन भी मेरा है। अभी हम क्या कहते हैं-हमारा शिवबाबा। बाप भी कहेंगे यह हमारे बच्चे हैं। बाप से बच्चों को वर्सा मिलता है। बाप की प्रापर्टी जरूर होती है। बेहद का बाप है ही स्वर्ग का रचयिता। भारतवासियों को भी प्रापर्टी किससे मिलती है? शिवबाबा से। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। शिव जयन्ती के बाद फिर होगी कृष्ण जयन्ती। फिर राम जयन्ती। बस गंगा ब्रह्मा की जयन्ती या जगदम्बा की जयन्ती तो कोई गाते नहीं। शिव जयन्ती फिर राधे कृष्ण जयन्ती फिर राम सीता जयन्ती। जब शिवबाबा आये तब शूद्र राज्य विनाश हो। यह राज़ भी कोई समझते नहीं। बाप बैठ समझाते हैं वह आते हैं जरूर। बाप को क्यों बुलाते हैं। श्रीकृष्णपुरी स्थापन करने। तुम जानते हो शिव जयन्ती बरोबर होती है। शिवबाबा नालेज दे रहे हैं। आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। शिव जयन्ती है बड़े से बड़ी जयन्ती। फिर है ब्रह्मा विष्णु शंकर। अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है। फिर रचना में मुख्य है लक्ष्मी नारायण। तो शिव है मात पिता, फिर मात पिता ब्रह्मा और जगदम्बा भी आ जाते हैं। यह समझने और धारण करने की बातें हैं। पहले2 समझाना पड़ता है कि परमपिता परमात्मा आते हैं पतितों को पावन करने वह नाम रूप से न्यारा हो तो उनकी जयन्ती कैसे हो सकती। गाँड को फादर कहा। फादरको तो सब जगह मानते हैं। निराकार है ही आत्मा और परमात्मा। आत्माओं को साकार शरीर मिलता है, यह बड़ी समझने की बातें हैं। जो कुछ भी शास्त्र आदि नहीं पढ़ा हुआ हो उनके लिए और ही सहज है। आत्माओं का बाप वह परमपिता परमात्मा स्वर्ग की स्थापना करने वाला है। स्वर्ग में होती है राजाई, तो जरूर उनको आना पड़े। सतयुग में तो आ न सकें। यह है प्रारब्ध, 21 जन्मों का वर्सा संगम पर ही मिलता है। यह संगमयुग है ब्राह्मणों का। ब्राह्मण चोटी हैं फिर हैं देवताओं का युग। हरेक युग करीब 1250 वर्ष है। अभी 3 धर्म स्थापन होते हैं। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय। क्योंकि फिर आधाकल्प कोई धर्म स्थापन नहीं होता। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी पूज्य थे फिर तुम पुजारी बन जाते हो। वह ब्राह्मण तो किसम2 के होते हैं। अभी तुम अच्छे कर्म बना रहे हो जो फिर सतयुग में भोगेंगे। बाप अच्छे कर्म सिखलाते हैं। तुम जानते हो हम भी यहाँ पर जैसे कर्म करेंगे औरों को आपसमान बनायेंगे। तो उसकी प्रारब्ध मिलेगी। अभी सारी राजधानी स्थापन होती है। आदि सनातन देवी देवताओं की राजधानी होती है। यह है प्रजा का प्रजा पर राज्य। अनेक पंच हैं। नहीं तो 5 पंच होते हैं। यहाँ तो सब पंच ही पंच है। सो अभी आज हैं, कल नहीं। आज मिनिस्टर हैं-कल उनको उतार देते हैं एग्रीमेंट कर फिर कैन्सिल कर देते हैं। यह है अल्पकाल का क्षणभंगुर राज्य किसको भी उतारने में देरी नहीं [illegible]

(a) (b) (b)

(७०)

आप पूर्वजों से सर्व आत्माओं की आशाएं

आज ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर अपनी सारी वंशावली से मिल रहे हैं। कितनी बड़ी वंशावली है, इसको आप सब जानते हो। आप सभी इस वंशावली के आदि फाउन्डेशन हो वा वंशावली के वृक्ष के मूल तना हो। आप लोगों द्वारा वंशावली कैसे वृद्धि को पाती है, यह सब राज़ अच्छी तरह से जानते हो ना? किसी भी आत्मा को देखते हो वा सम्पर्क में आते हो तो यह स्मृति में आता है कि सर्व आत्माओं के हम पूर्वज हैं वा सारे वृक्ष की शाखायें, उपशाखायें, सबके मूल आधार हैं अर्थात् फाउन्डेशन हैं। यह स्मृति सदा इमर्ज रुप में रहती है? इस श्रेष्ठ स्मृति से स्वत: ही समर्थ स्वरुप हो ही जायेंगे। अगर तना अर्थात् मूल फाउन्डेशन कमज़ोर होता है तो सारा वृक्ष कमज़ोर बन जाता है। तना शक्तिशाली है तो वृक्ष भी शक्तिशाली है। सारे वृक्ष के हर पत्ते का सम्बन्ध बीज के साथ-साथ तना से भी होता है। बीज की शक्ति तना द्वारा ही शाखाओं, उपशाखाओं को पहुंचती है। तो आज आपकी सर्व वंशावली को आप पूर्वजों द्वारा वा मूल आधार द्वारा कौन-सी शक्ति चाहिए? सर्व आत्मायें आप पूर्वजों को किस आशाओं से याद कर रही हैं? कौन-सी शुभ चाहना आप मास्टर दाता, वरदाताओं द्वारा चाहते हैं? सर्व आत्माओं की अर्थात् अपनी बेहद की वंशावली के शुभ संकल्प वा इच्छाओं को जानते हो?

आज सर्व आत्माओं का एक ही आवाज़ सुनने में आ रहा है। सबका एक ही आवाज़ है - दो घड़ी के लिए भी सुख और चैन से जीना चाहते हैं। बेचैन हैं। सम्पत्ति और साधन होते हुए भी सुख और चैन की नींद आंखों में नहीं है। आजकल मैजारिटी सच्चे सुख और शान्ति के वा सच्ची खुशी के प्यासे होने के कारण रास्ता ढूंढ रहे हैं। अनेक अल्पकाल के रास्ते अनुभव करते, सन्तुष्टता न मिलने के कारण अब धीरे-धीरे उन अनेक रास्तों से लौट रहे हैं, यह भी नहीं, यह भी नहीं। अब नेती-नेती के अनुभव में आ रहे हैं। अभी, ''सही रास्ता कुछ और है'', ऐसी अनुभूति करने लगे हैं। ऐसे समय पर आप पूर्वजों का कार्य है - ऐसी आत्माओं को शमा बन रास्ता दिखाना। अमर ज्योति बन अंधकार से ठिकाने पर लाना। ऐसे संकल्प आते हैं? यह स्मृति रहती है कि हम पूर्वज आत्मायें सर्व वंशावली के आगे जो करेंगे वो ही सारे वंशावली तक पहुंचता है? आप पूर्वजों की वृत्ति विश्व के वातावरण को परिवर्तन करने वाली है। आप पूर्वजों की दृष्टि सर्व वंशावली को ब्रदरहुड की स्मृति दिलाने वाली है। आप पूर्वजों की बाप की स्मृति, सर्व वंशावली को स्मृति दिलायेगी कि हमारा बाप आया है। आप पूर्वजों के श्रेष्ठ कर्म वंशावली को श्रेष्ठ चरित्र अर्थात् चरित्र निर्माण की शुभ आशा उत्पन्न करेंगे।

सबकी नज़र आप पूर्वजों को ढूंढ रही है। अब बेहद के स्मृति स्वरुप बनो, तो हद की व्यर्थ बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। उल्टे वृक्ष के हिसाब से बीज के साथ तना भी ऊपर ऊंचा है। डायरेक्ट बीज और मुख्य दो पत्ते, त्रिमूर्ति के साथ समीप के सम्बन्ध वाले तना हो। कितनी ऊंची स्टेज हो गई! इसी ऊंची स्टेज पर स्थित रहो तो हद की बातें क्या अनुभव होंगी! बचपन के अलबेलेपन की बातें अनुभव होंगी। अपने बेहद के बुजुर्गपन में आओ तो सदा सर्व अनुभवी मूर्त हो जायेंगे। जो बेहद के पूर्वज-पन का आक्यूपेशन है, उसको सदा स्मृति में रखो। अब कितना कार्य रहा हुआ है? सदा यह स्मृति में रखो। लेकिन यह सारा कार्य सहज सम्पन्न कैसे होगा? जैसे आपकी

रचना साइंस वाले विस्तार को सार में समा रहे हैं। अति सूक्ष्म और शक्तिशाली साधन बना रहे हैं। जिससे समय, समपत्ति और शस्त्र कम से कम खर्चा हो। पहले विनाश के कार्य में कितनी बड़ी सेना, कितने शस्त्र और कितना समय लगता था। और अब विस्तार को सार में लाया है ना! ऐसे आप मास्टर रचयिता बन स्थापना के कार्य में ऐसे ही सूक्ष्म द्वारा निमित्त स्थूल साधन कार्य में लगाओ। नहीं तो स्थूल साधनों के विस्तार में सूक्ष्म शक्ति गुप्त हो जाती है। स्थूल साधन का विस्तार, जैसे वृक्ष का विस्तार बीज को छुपा देता है, वैसे सूक्ष्म शक्ति की परसेन्टेज गुप्त हो जाती है। आप पूर्वज आत्माओं की अलौकिकता-''सूक्ष्म शक्ति'' है। जो सब अनुभव करें कि पूर्वजों द्वारा कोई विशेष शक्ति उत्पन्न हो रही है। वंशावली आप आत्माओं द्वारा कोई नवीनता चाहती है। साधनों की शक्ति, वाणी की शक्ति यह तो सबके पास है। लेकिन अप्राप्त शक्ति कौन-सी है? वह है श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृत्ति की शक्ति। स्नेह और सहयोग की दृष्टि। यह किसके पास नहीं है। तो हे पूर्वज आत्मायें! अपनी वंशावली की प्राप्ति के, आशाओं के दीपक जलाए यथार्थ मंजिल तक लाओ। समझा क्या करना है? जो लोग करते हैं वह किया तो क्या किया। आप तो अल्लाह लोग हो, न्यारे लोग हो। अभी वाणी के बाम्बस फेंकते हो लेकिन यह अभी बेबी बाम्बस हैं। अभी प्राप्ति के अनुभूति के बाम्बस चलाओ, जो सीधा जीवन परिवर्तन कर दें। दिमाग तक तीर लगाये हैं, दिल का तीर नहीं लगाया है।

आगे क्या करना है, वह प्लैन तो देना पड़ेगा ना। अभी मुख का आवाज़ निकलता है कि अच्छा कार्य कर रहे हैं। लेकिन दिल से आवाज़ निकले कि, ''यही एक मार्ग है''। मुख क़ा सौदा करने वाले बहुत होते हैं, दिल से सौदा करने वाले कोटों में कोई होते हैं। लेकिन आप सभी दिलवाला के बच्चे हो, दिल से सौदा कराने वाले हो। तो अब क्या करेंगे? ऐसा शक्तिशाली सेवा का चक्र चलाओ जो सर्व आत्मायें अपने पूर्वजों को पहचान प्राप्ति के अधिकार को प्राप्त कर लें। कुछ सुना, अच्छा सुना, इसके बदले, कुछ मिला - ऐसी अनुभूति करें। समझा? सुनाते अच्छा हैं, नहीं, बनाते अच्छा हैं। कम खर्चा, कम शक्ति, कम समय - इसी विधि से सिद्धि स्वरुप बनो।

पंजाब का ज़ोन है ना? पंजाब को क्या बनायेंगे? ऐसी कुछ नवीनता करके दिखाओ - अनुभव कराना अर्थात् वारिस बनाना। अच्छा सुनने वाले, अच्छा-अच्छा कहने वाले, वह हो गई प्रजा। अब चाहिए वारिस क्वालिटी। एक वारिस के पीछे प्रजा तो आपेही भी आ जायेगी। पंजाब क्या करेगा? क्वान्टिटी नहीं बढ़ती तो क्वालिटी तो निकाल सकते हो। क्या करेंगे? अभी वारिस क्वालिटी चारों ओर कम है। तो पंजाब इसमें नम्बरवन हो जाओ। कोई क्वान्टिटी में नम्बरवन, तो कोई क्वालिटी में नम्बरवन हो जाओ। समझा - पंजाब वाले क्या करेंगे? क्वालिटी वाला एक और क्वान्टिटी कितनी होगी क्योंकि एक क्वालिटी वाला क्वान्टिटी को स्वत: ही ले आता है। उनके नाम से आपका काम हो जायेगा। यह तो सहज है ना? अच्छा।

आज पंजाब और मधुबन का टर्न है। पंजाब वाले सबको मधुबन में आकर सरेन्डर करायेंगे। पंजाब से नदिया निकलेंगी और समायेंगी कहाँ? मधुबन है ही सागर का कण्ठा। तो पंजाब और मधुबन का मेल हो गया। विशेष टर्न पंजाब का है इसीलिए पंजाब को कह रहे हैं। बाकी तो उसमें सब आ गये। मधुबन में तो सब आ गये। सबको किसमें समाना है? मधुबन में ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व पूर्वज आत्माओं को, सदा सर्व की आशायें सदाकाल के लिए पूर्ण करने वाले, अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति के अंचली की अनुभूति कराने वाले, सर्व को अनेक रास्तों से निकाल एक रास्ते पर लाने वाले, ऐसे सर्व आत्माओं के मूल आधार, सदा सर्व को एक बाप के

अधिकारी बनाने वाले ऐसी श्रेष्ठ पूर्वज आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सुना तो बहुत है अब विशेषता है स्वरुप बन स्वरूप बनाना। जितना स्वयं सर्व प्राप्ति स्वरुप होंगे उतना सर्व को प्राप्ति स्वरुप बना सकेंगे। आजकल सर्व आत्मायें पाना चाहती हैं न कि सुनना। जब पा लेते हैं तब ही खुशी से यह गीत गायेंगे कि पाना था वो पा लिया। जैसे आप लोग यह खुशी का गीत गाते हो ना! पा लिया। ऐसे अन्य आत्मायें भी यह खुशी का गीत गायेंगी। वर्तमान समय आत्माओं को यही आवश्यकता है। जो आवश्यकता है उसी को पूर्ण करना, यही आप श्रेष्ठ आत्माओं का कर्तव्य है। इसी कर्तव्य में सदा अनुभवी मूर्त अनुभव कराते चलो। यही चाहते हैं ना, इसी चाहना को पूर्ण करने वाले अर्थात् सर्व को तृप्त आत्मा बनाने वाले। तो सदा तृप्त आत्मा हो? सदा सर्व खजानों से सम्पन्न। जो सम्पन्न होगा वही तृप्त होगा। और जो स्वयं के पास होगा वही औरों को भी जरुर देगा। तो सदा प्राप्ति स्वरुप के नशे और खुशी में रहो - यही संगमयुग के जीवन की विशेषता है। बाप को पाया अर्थात् संगमयुग का प्रत्यक्षफल पाया। प्रत्यक्षफल है सर्व प्राप्ति। इसी स्थिति से सर्व सिद्धि हो जायेंगे।

मधुबन निवासी भाई-बहिनों के साथः-

मधुबन निवासी इतने खुशनसीब हो जो सब देखकर खुश हो रहे हैं। इतनी अपनी तकदीर को जानते हो ना! कितने तकदीरवान हो जो सदा सागर के कण्ठे पर रहते हो। सदा स्थूल में भी बाप और श्रेष्ठ आत्माओं का साथ है तो कितना बड़ा भाग्य हो गया! तो सदा अपने भाग्य के गुण गाते रहते हो? बस यही गुण गाते और खुशी के झूले में झूलते रहो। मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधु के समान मीठे। तो सदा मुख मीठा रहना और सदा सर्व का मुख मीठा करने वाले। सागर के कण्ठे पर रहने वाले होलीहंस हो। हंस क्या करते हैं? सदा मोती चुगते हैं। कंकड़ को देखते नहीं, रत्नों को देखते हैं। तो सभी रत्नों को ग्रहण करने वाले हो ना! महान तीर्थ स्थान पर रहने वाली महान आत्मायें हो। तो यह महात्माओं का ग्रुप हो गया ना! महात्मा अर्थात् जो सदा महान वस्तु को देखे। तो महान वस्तु कौन-सी है? (आत्मा) तो महात्मा की नज़र कहाँ जायेगी? महान वस्तु पर। तो सदा महान देखने वाले, महान बोल बोलने वाले और महान कर्म करने वाले, इसको कहा जाता है महात्मा। तो पाण्डव सभी महात्मा हो! बापदादा की सबसे ज्यादा आशायें किसमें हैं? मधुबन निवासियों में। मधुबन वालों को आशाओं के दीपक जगाने आते हैं ना? तो सदा मधुबन में दीवाली है ना! सदा शुभ आशाओं के दीप जग रहे हैं तो रोज़ दीपावली हो गई। तो मधुबन में कभी अंधकार हो नहीं सकता। मधुबन वाले मास्टर शिक्षक हो। आप सिखाओ न सिखाओ लेकिन आपका हर कर्म हरेक आत्मा को शिक्षा देता रहता है। चाहे साधारण भी करेंगे तो भी सीखकर जाते हैं और श्रेष्ठ करते हो तो भी सीखकर जाते हैं। शिक्षा देते नहीं हो लेकिन मधुबन निवासी बनना अर्थात् मास्टर शिक्षक बनना। तो सदा याद रखो कि मैं मास्टर शिक्षक हूँ। तो हर कर्म, हर बोल शिक्षा देने वाला हो। आप लोगों को खास तख्त पर बैठकर सिखाने की जरुरत नहीं। चलते-फिरते शिक्षक हो। जैसे आजकल चलती-फिरती लाइब्रेरी होती है ना! तो आप चलते-फिरते मास्टर शिक्षक हो। आपका स्कूल अच्छा है ना! तो सदा अपने सामने स्टूडेन्ट को देखो, अकेले नहीं हो, सदा स्टूडेन्ट के सामने हो। सदा स्टडी कर भी रहे हो और करा भी रहे हो। योग्य शिक्षक कभी भी स्टूडेन्ट के आगे अलबेले नहीं होंगे, अटेन्शन रखेंगे। आप सोते हो, उठते हो, चलते हो, खाते हो, हर समय समझो - हम बड़े कालेज में बैठे हैं, स्टूडेन्ट देख रहे हैं, तो वन्डरफुल

शिक्षक हो गये ना!

आप सबकी क्या महिमा करें? मधुबन वालों की जो भी महिमा है वह सब है। ऐसे महान समझते हुए सदा चलो। बाप जितनी महिमा करेंगे उतनी फिर निभानी भी पड़ेगी। तो निभाने में भी होशियार हो ना! मधुबन का नक्शा सारे विश्व में चला जाता है। सबकी बुद्धि में सदा क्या याद रहता है? मधुबन में क्या हो रहा है। तो सर्व की बुद्धि में स्मृति स्वरुप हो। मधुबन निवासी हरेक लाइट, माइट का गोला बनो। तो लाइट और माइट के अन्दर स्वयं ही सभी आकर्षित होकर आयेंगे। अभी तो बाप का कर्तव्य चल रहा है, उसके कारण बाप के बनने वाले बच्चे सहज ही अनुभव कर रहे हैं और करते रहेंगे। आपका कर्तव्य अभी गुप्त है। आप अभी अपने शक्ति स्वरुप से वायुमण्डल बनाओ। यह तो ड्रामा अनुसार होना ही है, बढ़ना ही है, चलना ही है इसलिए चलाने वाला चला रहा है लेकिन अभी ऐसे ही फालो फादर करो। अभी हर आत्मा शक्ति स्वरुप हो जाए। जिसके भी सम्पर्क में आते हो वह अलौकिकता का अनुभव करे। अभी वह पार्ट चलना है। सुनाया ना अभी अच्छा-अच्छा कहते हैं, लेकिन अच्छा बनना है - यह प्रेरणा नहीं मिल रही है। उसका एक ही साधन है - संगठित रुप में ज्वाला स्वरुप बनो। एक-एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लग जाएं। अभी सिर्फ बाप शमा की आर्कषण है और सर्व शमा की आकर्षण हो जाए तो क्या होगा? शमा तो हो लेकिन अभी स्टेज पर नहीं आये हो। स्टेज पर आओ तो देखो आबू वाले कैसे आपके पीछे-पीछे दौड़ते हैं। आप लोगों को जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी वह स्वयं आकर कहेंगे जी हजूर, कोई सेवा!

अभी लाडले बच्चे बने हो, इसमें तो ठीक, बच्चे और बाप के साथ लाडकोड में, सम्बन्ध निभाने में ठीक हो लेकिन अब मास्टर शिक्षक बनकर, मास्टर सतगुरु बनकर स्टेज पर आओ। अभी यह दो पार्ट रहे हुए हैं। समझा - अच्छा। मधुबन निवासियों को बापदादा सदा विशेष आत्मा के रुप में देखते हैं। सदा बाप की आंशाओं के दीपक मधुबन निवासी हैं। सभी सन्तुष्ट तो सदा हो ना? सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना यही आप सबका सदा का स्लोगन हो। सदा आपके बोर्ड पर कौन सा स्लोगन लिखा है? सन्तुष्ट रहना भी है और करना भी है। इसी सर्टीफिकेट वाले भविष्य में भी राज्य भाग्य का सर्टीफिकेट ले लेंगे। तो मधुबन वालों ने यह सर्टीफिकेट तो लिया है ना। सदा अमृतवेले इस स्लोगन को स्मृति में लाओ। जैसे बोर्ड पर स्लोगन लिखते हो वैसे सदा अपने मस्तक के बोर्ड पर यह स्लोगन दौड़ाओ। तो सभी सन्तुष्ट मूर्तियां हो जायेंगे। अच्छा।

वरदान:- याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा चढ़ती कला का अनुभव करने वाले राज्य अधिकारी भव

याद और सेवा का बैलेन्स है तो हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव करते रहेंगे। हर संकल्प में सेवा हो तो व्यर्थ से छूट जायेंगे। सेवा जीवन का एक अंग बन जाए, जैसे शरीर में सब अंग जरूरी हैं वैसे ब्राह्मण जीवन का विशेष अंग सेवा है। बहुत सेवा का चांस मिलना, स्थान मिलना, संग मिलना यह भी भाग्य की निशानी है। ऐसे सेवा का गोल्डन चांस लेने वाले ही राज्य अधिकारी बनते हैं।

स्लोगन:-

सर्व शक्तियों वा ज्ञान के खजानों से सम्पन्न बनना ही संगमयुग की प्रालब्ध है।

कटिंग मुरली पृ-2

19. पवित्र कन्या के तन में आवे?
1964 प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ ही चाहिए ..

ओरिजिनल मुरली (15.10.69) आगे इमर्ज है

(१९)

13-11-95 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपने कैरेक्टर्स सुधारने के लिए याद की यात्रा में रहना है, बाप की याद ही तुम्हें सदा सौभाग्यशाली बनायेगी"

प्रश्न:- अवस्था की परख किस समय होती है? अच्छी अवस्था किसको कहेंगे?
उत्तर:- अवस्था की परख बीमारी के समय होती है। बीमारी में भी खुशी बनी रहे और खुशमिज़ाज़ चेहरे से सबको बाप की याद दिलाते रहें, यही है अच्छी अवस्था। अगर खुद रोयेंगे, उदास होंगे तो दूसरों को खुशमिज़ाज़ कैसे बनायेंगे? कुछ भी हो जाए – रोना नहीं है।

ओम् शान्ति। दो अक्षर गाये जाते हैं – दुर्भाग्यशाली और सौभाग्यशाली। सौभाग्य चला जाता है तो दुर्भाग्य कहा जाता है। स्त्री का पति मर जाता है तो वह भी दुर्भाग्य कहा जाता है। अकेली हो जाती है। अभी तुम जानते हो हम सदा के लिए सौभाग्यशाली बनते हैं। वहाँ दुख की बात नहीं। मृत्यु का नाम नहीं होता है। विधवा नाम ही नहीं होता। विधवा को दुख होता है, रोती रहती है। भल साधू-सन्त हैं, ऐसा नहीं कि उन्हें कोई दुख नहीं होता है। कोई पागल बन पड़ते हैं, बीमार रोगी भी होते हैं। यह है ही रोगी दुनिया। सतयुग है निरोगी दुनिया। तुम बच्चे समझते हो हम भारत को फिर से श्रीमत पर निरोगी बनाते हैं। भारत की बदचलन अर्थात् मनुष्यों के कैरेक्टर्स बहुत खराब हैं। अब कैरेक्टर्स ~~को सुधारने की जरूर डिपार्टमेंट होगी। स्कूलों में भी स्टूडेन्ट्स का रजिस्टर रखा जाता~~ है। उनके कैरेक्टर्स का पता चलता है। इसलिए बाबा ने भी रजिस्टर रखवाया था। हर एक अपना रजिस्टर रखो। कैरेक्टर देखना है कि हम कोई भूल तो नहीं करते हैं। पहली बात तो बाप को याद करना है। उनसे ही तुम्हारा कैरेक्टर्स सुधरता है। आयु भी बड़ी होती है एक की याद से। यह तो है ज्ञान रत्न। याद को रत्न नहीं कहा जाता। याद से ही तुम्हारे कैरेक्टर सुधरते हैं। यह 84 जन्मों का चक्र तुम्हारे सिवाए और कोई समझा न सके। इस पर ही समझाना है – विष्णु और ब्रह्मा। शंकर के तो कैरेक्टर नहीं कहेंगे। तुम बच्चे जानते हो ब्रह्मा और विष्णु का आपस में क्या कनेक्शन है। विष्णु के दो रूप हैं यह लक्ष्मी-नारायण। वही फिर 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्मों में ही आपेही पूज्य और आपेही पुजारी बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ ही चाहिए ना। साधारण तन चाहिए। (a) बहुत करके इसमें ही मूँझते हैं। ब्रह्मा तो है ही पतित पावन बाप का रथ। कहते भी हैं – दूरदेश का रहने वाला आया देश पराये........ पावन दुनिया बनाने वाला पतित पावन बाप पतित दुनिया में आया। पतित दुनिया में एक भी पावन नहीं हो सकता। अभी तुम बच्चों ने समझा है कि 84 जन्म हम कैसे लेते हैं। कोई तो लेते होंगे ना। जो पहले-पहले आते होंगे उनके ही 84 जन्म होंगे। सतयुग में देवी-देवता ही आते हैं। मनुष्यों का जरा भी ख्याल नहीं चलता, 84 जन्म कौन लेंगे। समझ की बात है। पुनर्जन्म तो सब मानते हैं। 84 पुनर्जन्म हुए यह बड़ी युक्ति से समझाना है। 84 जन्म तो सभी नहीं लेंगे ना। एक साथ सब थोड़ेही आयेंगे और शरीर छोड़ेंगे। भगवानुवाच भी है कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, भगवान ही बैठ समझाते हैं। तुम आत्मायें 84 जन्म लेती हो।

यह 84 की कहानी बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं। यह भी एक पढ़ाई है। 84 का चक्र तो जानना बहुत सहज है। दूसरे धर्म वाले इन बातों को समझेंगे नहीं। तुम्हारे में भी कोई सभी 84 जन्म नहीं लेते हैं। सभी के 84 जन्म हों तो सब इकट्ठे आ जाएं। यह भी नहीं होता है। सारा मदार पढ़ाई और याद पर है। उसमें भी नम्बरवन है याद। डिफीकल्ट सब्जेक्ट पर मार्क्स जास्ती मिलती हैं। उनका प्रभाव भी होता है। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट सब्जेक्ट होती हैं ना। इनमें हैं दो मुख्य। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सम्पूर्ण निर्विकारी बन जायेंगे और फिर विजय माला में पिरो जायेंगे। यह है रेस। पहले तो खुद को देखना है कि मैं कहाँ तक धारणा करता हूँ? कितना याद करता हूँ? मेरे कैरेक्टर्स कैसे हैं? अगर मेरे में ही रोने की आदत है तो दूसरे को खुशमिज़ाज़ कैसे बना सकता हूँ? बाबा कहते हैं जो रोते हैं सो खोते हैं। कुछ भी हो जाए लेकिन रोने की दरकार नहीं है। बीमारी में भी खुशी से इतना तो कह सकते हो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बीमारी में ही अवस्था की परख होती है। तकलीफ में थोड़ा कुड़कने की आवाज़ भल निकलती है परन्तु अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप ने पैगाम दिया है। पैगम्बर-मैसेन्जर एक शिवबाबा है, दूसरा कोई है नहीं। बाकी जो भी सुनाते हैं, सारी भक्ति मार्ग की बातें। इस दुनिया की जो भी चीजें हैं सब विनाशी हैं, अभी तुमको वहाँ ले जाते हैं जहाँ टूट-फूट नहीं। वहाँ तो चीजें ही ऐसी अच्छी बनेंगी जो टूटने का नाम ही नहीं होगा। यहाँ साइन्स से कितनी चीजें बनती हैं, वहाँ भी तो साइंस जरूर ~~होगी। क्योंकि~~ तुम्हारे लिए बहुत सुख चाहिए। बाप कहते हैं तुम बच्चों को कुछ भी पता नहीं था। भक्ति मार्ग कब शुरू हुआ, कितना तुमने दुख देखा – यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। देवताओं को कहा ही जाता है – सर्वगुण सम्पन्न....... फिर वह कलायें कैसे कम हुई? अभी तो कोई कला नहीं रही है। चन्द्रमा की भी धीरे-धीरे कला कम होती है ना।

तुम जानते हो कि यह दुनिया भी पहले नई है तो वहाँ हर चीज़ सतोप्रधान फर्स्टक्लास होती है। फिर पुरानी होते कलायें कम होती जाती हैं। सर्वगुण सम्पन्न यह लक्ष्मी-नारायण हैं ना। अभी बाप तुमको सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं। अभी है रात फिर दिन होता है। तुम सम्पूर्ण बनते हो तो तुम्हारे लिए फिर सृष्टि भी ऐसी ही चाहिए। 5 तत्व भी 16 कला सम्पूर्ण बन जाते हैं। इसलिए शरीर भी तुम्हारे नेचुरल ब्युटीफुल होते हैं। सतोप्रधान होते हैं। यह सारी दुनिया 16 कला सम्पूर्ण बन जाती है। अभी तो कोई कला नहीं है, जो भी बड़े से बड़े लोग हैं अथवा महात्मा आदि हैं, यह बाप की नॉलेज उनकी तकदीर में ही नहीं है। उन्हों को अपना ही घमण्ड है। बहुत करके है ही गरीबों की तकदीर में। कोई कहते हैं इतना ऊंच बाप है, उनको तो कोई बड़े राजा अथवा पवित्र ऋषि आदि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आये। बाप बैठ समझाते हैं मैं किसमें आता हूँ। मैं आता ही उसमें हूँ जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। एक दिन भी कम नहीं। कृष्ण पैदा हुआ उस समय से 16 कला सम्पूर्ण ठहरा। फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं। हर चीज़ पहले सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो में आती है। सतयुग में भी ऐसा होता है। बच्चा सतोप्रधान है फिर बड़ा होगा तो कहेगा

अब हम यह शरीर छोड़ सतोप्रधान बच्चा बनता हूँ। तुम बच्चों को इतना नशा नहीं है। खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। जो अच्छी मेहनत करते हैं, खुशी का पारा चढ़ता रहता है। शक्ल भी खुशनुमः रहती है। आगे चल तुमको साक्षात्कार होते रहेंगे। जैसे घर के नज़दीक आकर पहुँचते हैं तो फिर वह घरबार मकान आदि याद आता है ना। यह भी ऐसे है। पुरूषार्थ करते-करते तुम्हारी प्रालब्ध जब नज़दीक होगी तो फिर बहुत साक्षात्कार होते रहेंगे। खुशी में रहेंगे। जो नापास होते हैं तो शर्म के मारे डूब मरते हैं। तुमको भी बाबा बता देते हैं फिर बहुत पछताना पड़ेगा। अपने भविष्य का साक्षात्कार करेंगे, हम क्या बनेंगे? बाबा दिखलायेंगे यह-यह विकर्म आदि किये हैं। पूरा पढ़े नहीं, ट्रेटर बनें, इसलिए यह सज़ा मिलती है। सब साक्षात्कार होगा। बिगर साक्षात्कार सज़ा कैसे देंगे? कोर्ट में भी बताते हैं – तुमने यह-यह किया है, उसकी सज़ा है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो जाए तब तक कुछ न कुछ निशानी रहेगी। आत्मा पवित्र हो जाती है फिर तो शरीर छोड़ना पड़े। यहाँ रह न सके। वह अवस्था तुमको धारण करनी है। अभी तुम वापिस जाए फिर नई दुनिया में आने के लिए तैयारी करते हो। तुम्हारा पुरूषार्थ ही यह है कि हम जल्दी-जल्दी जायें, फिर जल्दी-जल्दी आयें। जैसे बच्चों को खेल में दौड़ाते हैं ना। निशान तक जाकर फिर लौट आना है। तुमको भी जल्दी-जल्दी जाना है, फिर पहले नम्बर में नई दुनिया में आना है। तो तुम्हारी रेस है यह। स्कूल में भी रेस कराते हैं ना। तुम्हारा है यह प्रवृत्ति मार्ग। तुम्हारा पहले-पहले पवित्र गृहस्थ धर्म था। अभी है विशश फिर वाइसलेस वर्ल्ड बनेगा। इन बातों को तुम सिमरण करते रहो तो भी बहुत खुशी रहेगी। हम ही राज्य लेते है फिर गँवाते हैं। हीरो-हीरोइन कहते हैं ना। हीरे जैसा जन्म लेकर फिर कौड़ी जैसे जन्म में आते हैं।

अभी बाप कहते हैं – तुम कौड़ियों पिछाड़ी टाइम वेस्ट मत करो। यह कहते हैं हम भी टाइम वेस्ट करते थे। तो हमको भी कहा अब तो तुम मेरा बनकर यह रूहानी धंधा करो। तो झट सब कुछ छोड़ दिया। पैसे कोई फेंक तो नहीं देंगे। पैसे तो काम में आते हैं। पैसे बिना कोई मकान आदि थोड़ेही मिल सकता। आगे चल बड़े-बड़े धनवान आयेंगे। तुमको मदद देते रहेंगे। एक दिन तुमको बड़े-बड़े कॉलेज, युनिवर्सिटी में भी जाकर भाषण करना होगा कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। हिस्ट्री रिपीट होती है आदि से अन्त तक। गोल्डन एज से आइरन एज तक सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी हम बता सकते हैं। कैरेक्टर्स के ऊपर तो तुम बहुत समझा सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण की महिमा करो। भारत कितना पावन था, दैवी कैरेक्टर्स थे। अब तो विशश कैरेक्टर्स हैं। जरूर फिर चक्र रिपीट होगा। हम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुना सकते हैं। वहाँ जाना भी अच्छे-अच्छे को चाहिए। जैसे थियोसोफिकल सोसायटी है, वहाँ तुम भाषण करो। कृष्ण तो देवता था, सतयुग में था। पहले-पहले है श्रीकृष्ण जो फिर नारायण बनते हैं। हम आपको श्रीकृष्ण के 84 जन्मों की कहानी सुनायें, जो और कोई सुना न सके। यह टॉपिक कितनी बड़ी है। होशियार को भाषण करना चाहिए।

तुम्हारे दिल में आता है, हम विश्व के मालिक बनेंगे, कितनी खुशी होनी चाहिए। ... फिर तुमको इस दुनिया में कुछ भासेगा नहीं। यहाँ तुम आते

ही हो – विश्व का मालिक बनने – परमपिता परमात्मा द्वारा। विश्व तो इस दुनिया को ही कहा जाता है। ब्रह्मलोक वा सूक्ष्मवतन को विश्व नहीं कहेंगे। बाप कहते हैं मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। इस विश्व का मालिक तुम बच्चों को बनाता हूँ। कितनी गुह्य बातें हैं। तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। फिर तुम माया के दास बन जाते हो। यहाँ जब सामने योग में बिठाते हो तो भी याद दिलानी है – आत्म अभिमानी हो बैठो, बाप को याद करो। 5 मिनट बाद फिर बोलो। तुम्हारे योग के प्रोग्राम चलते हैं ना। बहुतों की बुद्धि बाहर चली जाती है इसलिए 5-10 मिनट बाद फिर सावधान करना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बैठे हो? बाप को याद करते हो? तो खुद का भी अटेन्शन रहेगा। बाबा यह सब युक्तियां बतलाते हैं। घड़ी-घड़ी सावधान करो। अपने को आत्मा समझ शिवबाबा की याद में बैठे हो? तो जिनका बुद्धियोग भटकता होगा वह खड़े हो जायेंगे। घड़ी-घड़ी यह याद दिलाना चाहिए। बाबा की याद से ही तुम उस पार चले जायेंगे। गाते भी हैं खिवैया, नईया मेरी पार लगाओ। परन्तु अर्थ को नहीं जानते। मुक्तिधाम में जाने के लिए आधाकल्प भक्ति की है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो मुक्तिधाम में चले जायेंगे। तुम बैठते ही हो पाप कटने लिए तो फिर पाप करने थोड़ेही चाहिए। नहीं तो फिर पाप रह जायेंगे। नम्बरवन यह पुरूषार्थ है – अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ऐसे सावधान करते रहने से अपना भी अटेन्शन रहेगा। खुद को भी सावधान करना है। खुद भी याद में बैठे तब औरों को बिठायें। हम आत्मा हैं, जाते हैं अपने ~~घर। फिर आकर राज्य करेंगे। अपने को शरीर समझना - यह भी एक कड़ी बीमारी है इसलिए~~ हो सब रसातल चले गये हैं। उनको फिर सैलवेज करना है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अपना टाइम रूहानी धन्धे मे सफल करना है। हीरे जैसा जीवन बनाना है। अपने को सावधान करते रहना है। शरीर समझने की कड़ी बीमारी से बचने का पुरुषार्थ करना है।

२. कभी भी माया का दास नहीं बनना है, अन्दर में बैठ जाप जपना है कि हम आत्मा हैं। खुशी रहे हम बेगर से प्रिन्स बन रहे हैं।

वरदान:- सम्पूर्ण आहुति द्वारा परिवर्तन समारोह मनाने वाले दृढ़ संकल्पधारी भव

जैसे कहावत है "धरत परिये धर्म न छोड़िये", तो कोई भी सरकमस्टांश आ जाए, माया के महावीर रूप सामने आ जाएं लेकिन धारणायें न छूटे। संकल्प द्वारा त्याग की हुई बेकार वस्तुयें संकल्प में भी स्वीकार न हों। सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान, श्रेष्ठ स्मृति और श्रेष्ठ जीवन के समर्थी स्वरूप द्वारा श्रेष्ठ पार्टधारी बन श्रेष्ठता का खेल करते रहो। कमज़ोरियों के सब खेल समाप्त हो जाएं। जब ऐसी सम्पूर्ण आहुति का संकल्प दृढ़ होगा तब परिवर्तन समारोह होगा। इस समारोह की डेट अब संगठित रूप में निश्चित करो।

स्लोगन:-

रीयल डायमण्ड बनकर अपने वायब्रेशन की चमक विश्व में फैलाओ।

कांटेंग ओरिजिनल (53) 15.10.69 (19)

[illegible] नहीं [illegible]। वास्तव में उनकी किताब (शास्त्र) को भी पता नहीं है [illegible] बाईबल [illegible] में [illegible] लिखा हुआ है। वेदशास्त्र आदि में क्या है? गीता भी कोई काम की नहीं है। [illegible] [illegible]-शोधर है। टूटते-फूटने रहते हैं। तुम भी टूटते फूटते रहते हो। इस दुनियां की जो भी [illegible] है [illegible] [illegible] तुमको वहां ले जाते हैं। जहां टूट-फूट नहीं होते हैं। वहां तो चीजें भी, [illegible] [illegible] [illegible] नहीं होगा। यहां साईंस से कितनी चीजें बन जाती हैं। वहां भी साईंस [illegible] [illegible] बहुत सुख पायेंगे। बाप कहते हैं कि तुम बच्चों को [illegible] भी पता नहीं है। [illegible] [illegible] तुमने दुःख देखा है। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि [illegible] [illegible] कहा जाता है सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण। फिर दो कलायें कम हुईं। आगे [illegible] [illegible] नहीं [illegible] है। चन्द्रमा की भी आहिस्ते-2 कलायें कम होती हैं ना। तुम समझते हो कि [illegible] दुनिया भी एक [illegible] नई। तो वहां पर हर चीज फर्स्ट क्लास होती है। कलायें कम होती जाती है। सर्वगुण सम्पन्न [illegible] हैं ना। अभी बाप तुमको बच्चा-2 लक्ष्मीनारायण बनने की कथा सुनाते हैं। अभी है बात फिर [illegible] होना है। तुम [illegible] हो तो तुम्हारे लिये सृष्टि भी तो फिर वैसी ही चाहिये। पांच तत्व भी 16 कला सम्पूर्ण बन जाते हैं। इसलिये वहां तुम्हारे शरीर भी नेचुरल ब्यूटीफुल होते हैं। यह सारी दुनियां 16 कला सम्पूर्ण बन जाते हैं। [illegible] कोई [illegible] नहीं है। उनको [illegible] भी [illegible] थोड़े ही है। मनुष्य थोड़े ही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आदि है कोई की भी तस्वीर तो नहीं है। बहुत [illegible] के ही गरीबों को [illegible] है। इतना ऊंच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र किसी के तन में आना चाहिये। पवित्र होते [illegible] है [illegible] पवित्र कन्या के तन में आवें। परन्तु कायदा नहीं है। बाप को [illegible] फिर कुमारी पर कैसे स्वारी [illegible] करेंगे। बाप बैठ समझाते हैं कि मैं किस में आता हूं। मैं [illegible] ही उसमें हूं जो कि पूरे 84 जन्म लेते हैं। एक दिन भी कम नहीं। कृष्ण पैदा हुआ उस समय वो 16 कला सम्पूर्ण ठहरा। फिर सतो-रजो-तमो में आते हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

तुम बच्चों को [illegible] नशा नहीं है। खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। जो अच्छी मेहनत करते हैं खुशी का पारा चढ़ा रहता है। शक्ल भी खुशनुमा रहती है। आगे चलकर तुमको सब [illegible] दीखते रहेंगे। जैसे घर के पास आ [illegible] हैं तो घर-बार [illegible] आदि याद आता है ना। यह भी ऐसे ही है। पुरुषार्थ करते-2 तुम्हारी [illegible] जब [illegible] होगी तो फिर बहुत [illegible] होते रहेंगे। खुशी में रहेंगे। जो नापास होते हैं तो शर्म के मारे डूब [illegible] हैं। [illegible] बच्चों को भी [illegible] देते हैं। फिर बहुत [illegible] पड़ेगा। आगे भविष्य का [illegible] करते [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] कि यह भी चोरी चकारी शैतानी आदि की है। पूरा पढ़े नहीं हो। [illegible] [illegible] इसलिये ही यह सजायें मिलती हैं। [illegible] होगा। बिगर [illegible] सजा [illegible] देंगे। [illegible] में भी बताते [illegible] [illegible] तो [illegible] है। उसकी सजा यह है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो जावे तब तक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो जाती है तो फिर शरीर छोड़ना पड़े। [illegible] नहीं [illegible] है। [illegible] [illegible] नहीं है। अभी तुम वापस जाकर फिर नई दुनिया में आने लिये तैयारी करते हो। तुम्हारी [illegible] [illegible] है [illegible] जल्दी-2 जायें फिर जल्दी आवें। जैसे बच्चों को खेल में दौड़ाते हैं ना। [illegible] तक [illegible] [illegible] आना होता है। तुमको भी जल्दी-2 जाना है फिर जल्दी ही नई दुनियां में [illegible] [illegible] है। [illegible] नहीं हो। जल्दी जावें फिर आवें। [illegible] [illegible] से जल्दी पिरायेंगे तो [illegible] [illegible] से जल्दी आयेंगे। तुम बच्चों को यहां [illegible] [illegible] है। [illegible] की बात [illegible] [illegible] समझाते हैं? आत्माओं को [illegible] बैठ [illegible] हैं। [illegible] परे से परे तो आत्मायें भी रहती हैं। परन्तु इस समय परम आत्मा [illegible] भी नहीं कहेंगे। जब [illegible] [illegible] को [illegible]। फिर परमधाम में चले जायेंगे। तो तुम्हारी रेस है ना। स्कूल में भी रेस कराते हैं ना। [illegible]

मुरली नं. (20)

सके हो। पहले 7 रोज़ भट्ठी में पड़ना पड़े। 7 दिन कोई की याद न आये। कोई को चिट्ठी न लिखो। बिल्कुल सबको भूल जाना है। तुम बहुत वर्ष भट्ठी में रहे। फिर भी तकदीर में कोई को तो माया खींच लेती है। ऐसी माया प्रबल है। बाप कहते हैं- धीरे2 परिपक्व अवस्था में आते जाओ। तुम जानते हो हमारे 84 जन्म पूरे हुए हैं। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। धर्म हैं। वहाँ भी अलग-अलग सेक्शन हैं। यहाँ भी ऐसे हैं, वहाँ भी ऐसे हैं। बाकी मोक्ष किसको भी मिल नहीं सकता। ऐसे नहीं बुदबुदे मिसल आत्मा परमात्मा में लीन हो जायेगी। फिर तो सारा पार्ट ही खलास हो जाये। सब ज्योति ज्योत में समा जायें, खेल ही न चले। यह सब झूठ बोलते हैं। झूठ तो बिल्कुल झूठ, सच की रत्ती भी नहीं। भक्ति में कोई मुख मीठा थोड़ेही होता है। तुम बच्चे जानते हो- मुख मीठा कौन कराते हैं। तो बाप की पढ़ाई में पूरा ध्यान देना चाहिए। पुरानी दुनिया को देख लट्टू मत बन जाओ। देह अभिमान में मत आओ। अब तो अपनी बैग बैगेज तैयार कर ट्रांसफर कर दो। अब यह दुनिया खलास होनी है। बाबा कहते हैं सब कुछ इन्श्योरेन्स कर दो। भक्ति मार्ग में करते हो- अल्पकाल के लिए तो फल मिल जाता है। समझते हैं ईश्वर ने दिया। अभी तुम भी देते हो तो बाबा फिर रिटर्न में देते हैं। डायरेक्ट होने के कारण तुमको 21 जन्म का इन्श्योरेन्स मिलता है। बाबा कहते हैं देखो हमने फुल इन्श्योर किया तो फुल राजाई मिलती है। यह है जिस्मानी इन्श्योरेन्स। यह है रूहानी बाप के साथ। ईश्वर अर्थ दान करते हैं ना। तो ईश्वर रिटर्न में देते हैं। वह तो दाता हैं ना। भक्ति मार्ग में यह तो ज्ञान मार्ग में भी दाता है। यह है बेहद की पढ़ाई बेहद की बादशाही लिए। अब जितना चाहो उतना लो। विश्व की राजाई ले सकते हो। पुरुषार्थ की जय है। कोशिश करो- विजय माला में पिरो जाओ। मूंझते हो तो सर्जन राय बताने वाला बैठा है। तुम जानते हो हमने अनेक बार बादशाही ली है और गंवाई है। यह ज्ञान अभी है, सतयुग में फिर भूल जायेगा। अच्छा

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- [1] पुरानी दुनिया को देख लट्टू नहीं बनना है। अपनी बैग बैगेज ट्रांसफर कर देनी है। अपना सब कुछ इन्श्योर कर देना है।

[2] कोई भी वस्तु में अगर ममत्व नहीं है तो फिर कौड़ी से हीरे जैसा बनाने की सेवा करनी है। दान करने से ही ज्ञान धन बढ़ेगा।

17-2-86 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

मीठे बच्चे-तुम्हें याद की गुप्त मस्ती रहनी चाहिए,तुम्हारा सब कुछ गुप्त है, तुम्हें कोई भी ठाठ नहीं रखना है

प्रश्न:-प्रवृतिमार्ग के भक्त और निवृति मार्ग के सन्यासियों के मन्तव्य में ईश्वर के लिए कौन सा मतभेद है? उत्तर:- प्रवृतिमार्ग के भक्तों का मन्तव्य(मान्यता) है कि भगवान किस न किस रूप में यहां आयेंगे जरूर और निवृतिमार्ग वाले समझते ब्रह्म ही ईश्वर है, हम वहां जाकर लीन हो जायेंगे। अब राइट कौन? .....

गीत:-तुम्हें पाके हमने...ओमशान्ति।मीठे2रूहानी बच्चों ने गीत सुना,रूहानी बच्चे ही कहते हैं बाबा।बच्चे जानते हैं यह बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है।अर्थात् वह सभी का बाप है।उनको सभी बेहद के बच्चे आत्मायें याद करती रहती हैं।किस न किस प्रकार से याद करते हैं।परन्तु उनको यह पता नहीं है कि हमको कोई उस परमपिता परमात्मा से विश्व की बादशाही मिलती है।तुम जानते हो हमको बाप जो सतयुगी विश्व की बादशाही देते हैं,वह अटल,अखण्ड,अडोल है।वह हमारी बादशाही 21जन्म लिये कायम रहती है।सारे विश्व पर हमारी राजाई रहती है।जिसको कोई छीन नहीं सकता।लूट नहीं सकता।हमारी राजाई है अडोल।क्योंकि वहां एक ही धर्म है। द्वैत है नहीं।वह है अद्वैत राज्य।बच्चे जब यह गीत सुनते हैं तो अपनी राजधानी का नशा बुद्धि में आना चाहिए।ऐसे2ऐसे गीत घर में रहने चाहिए।जिससे बाप और वर्से की झट याद आती है।बाप की याद की मस्ती गुप्त रहनी चाहिए।तुम्हारा सब कुछ है गुप्त और बड़े बड़े आदमियों का बहुत ठाठ होता है। तुमको कोई ठाठ नहीं है।तुम देखते हो बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है उसमें भी ठाठ की कोई बात नहीं।कपड़े आदि सब वही हैं। तुम बुद्धि से समझते हो इनमें बाबा ने प्रवेश किया है हमको यह राज्य भाग्य देने।यह भी बच्चे जानते हैं यहां हरेक मनुष्य अनराइटियस छी2 काम ही करते हैं।जो भी इस समय मनुष्य मात्र हैं,विद्वान पण्डित,साधु,राजायें...आदि2 सब अनराइटियस काम करते हैं।इसलिए बेसमझ कहा जाता है।बुद्धि को बिल्कुल ही ताला लगा हुआ है।तुम कितने समझदार थे।विश्व के मालिक थे।अभी माया ने इतना बेसमझ बना दिया है।जो कोई काम के न रहे हैं।बाप के पास जाने के लिए यज्ञ तप तीर्थ आदि बहुत करते रहते हैं।परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है।ऐसे ही धक्के खाते रहते हैं।कोई आरफन जैसे धक्के खाते हैं ना।दिन प्रतिदिन अकल्याण ही होता जाता है।जितना2मनुष्य तमोप्रधान होते जाते हैं। उतना2 अकल्याण होना ही है।ऋषि मुनि जिनका गायन है,वह पवित्र रहते थे जब सतोप्रधान थे तो साफ कहते थे हम रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। नेति नेति कहते थे अभी तमोप्रधान बन गये हैं तो कहते हैं शिवोहम् ततत्वम् परमात्मा सर्वव्यापी है। तेरे में भी है, मेरे में भी है।वह लोग सिर्फ परमात्मा कह देते हैं परमपिता कब नहीं कहेंगे। परमपिता उनको फिर सर्वव्यापी कहना यह तो राँग हो जाता है।--इसलिए फिर ईश्वर परमात्मा कह देते।पिता अक्षर बुद्धि में नहीं आता है।करके कोई कहते भी हैं हेविनली गाड फादर,फिर हम कहेंगे नर्क में क्यों पड़े हैं।अब हम मुक्ति वा जीवनमुक्ति कैसे पा सकते हैं।यह किसकी भी बुद्धि में नहीं आता है।फिर सतो रजो तमो में आती हैं, बेसमझ बन जाते हैं।अभी तुमको समझ आई है।बाबा ने हमको यह स्मृति दिलाई है।जब नई दुनिया नया भारत था तो हमारा राज्य था।एक ही मत, एक ही भाषा,एक ही महाराजा महारानी थी।सतयुग में महाराजा महारानी,त्रेता में राजा रानी कहा जाता है।फिर द्वापर में वाम मार्ग शुरू होता है।फिर हरेक के कर्मों पर मदार हो जाता है।कर्मों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं।अभी बाप कहते हैं - मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो 21जन्म-तुम बादशाही ही पावें हो।भल वहां भी हद का बाप तो मिलता है।परन्तु वहां यह ज्ञान नहीं रहता कि यह राजाई का वर्सा बेहद के बाप का दिया हुआ है।फिर द्वापर से रावणराज्य शुरू होता है विकारी सम्बन्ध हो जाता है।फिर जैसे2कर्म ऐसा फल मिलता है।देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं।फिर सतयुग का सुख खलास हो जाता है।फिर कर्मों अनुसार जन्म लेते हैं।भारत में पूज्य राजायें भी थे। तो पुजारी राजायें भी थे।सतयुग त्रेता में यथा राजारानी तथा प्रजा

Brahma Kuma World Spiritual University
" SATYA DHAM "
C1-240, Sector-11

पूज्य होते हैं। वहाँ पूजा वा भक्ति कोई होती नहीं। फिर द्वापर में जब भक्तिमार्ग शुरू होता है तो यथा राजा रानी तथा प्रजा पुजारी भक्त बन जाते हैं। बड़े ते बड़ा राजा जो सूर्यवंशी पूज्य था वही पुजारी बन जाते हैं। फिर वैश्यवंशी, शूद्रवंशी बन जाते हैं। अभी तुम जो वाइसलेस बनते हो उसकी प्रालब्ध 21 जन्म चलती है। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है। जो जो पूज्य देवी देवताएं होकर गये हैं उन्हों के मन्दिर बनाकर पूजा करते रहते हैं। यह सिर्फ भारत में ही होता है। यह 84 जन्मों की कहानी जो बाप सुनाते हैं। यह भी भारतवासियों के लिए है और धर्म वाले तो आते ही बाद में हैं। फिर तो वृद्धि होते2 ढेर हो जाते हैं। वैराइटी भिन्न2 धर्म वालों के फीचर्स, हरेक बात में भिन्न2 हो जाते हैं। रसम रिवाज भी भिन्न2 देवी देवताओं की जो रसम थी वह भारत के गुरूओं की नहीं है। आधाकल्प बाद रावणराज्य शुरू होने से सारी रसम रिवाज ही बदल जाती है। फिर पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। पूजा भी पहले शुरू होती है अव्यभिचारी। पहले शिव की ही पूजा करते हैं, उनके मन्दिर बनाते हैं, फिर लक्ष्मीना० के बनायेंगे। एक ने ल०ना० का मन्दिर बनाया तो दूसरे भी बनायेंगे फिर राम सीता के मन्दिर बनाने लग पड़ेंगे। फिर कलियुग में तो देखो, गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि2 अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं भक्ति के लिए। भक्तिमार्ग के लिए सामग्री भी चाहिए ना। जैसे बीज छोटा होता है, झाड़ कितना बड़ा होता है। कितनी बड़ी सामग्री हो जाती है। झाड़ के पत्ते आदि गिनती कर नहीं सकते हैं। वैसे भक्ति का भी विस्तार हो जाता है। ढेर के ढेर शास्त्र बनाते जाते हैं। बाप बच्चों को कहते हैं यह भक्तिमार्ग की सामग्री सब खत्म होनी है। अ मुझ बाप को याद करो। भक्ति का प्रभाव भी तो बहुत है ना। कितनी खूबसूरती है। नाच तमाशा गायन आदि कितना खर्चा करते हैं। अभी बाप कहते हैं मुझ बाप को और वर्से को याद करो। आदि सनातन अपने धर्म को याद करो। अनेक प्रकार की भक्ति जन्म जन्मान्तर तुम करते आये हो। कितने शास्त्र पढ़ते हैं जो बहुत शास्त्र पढ़ते हैं उनको घमण्ड भी रहता है। अपने को शास्त्रों की अथार्टी समझते हैं। बड़ा घमण्ड आ जाता है। बाप कहते हैं वह अथार्टी है भक्ति मार्ग की जिससे मनुष्य दुर्गति को ही पाते हैं। गृहस्थ धर्म वाले भक्ति शुरू करते हैं। सन्यासियों को तो भक्ति नहीं करनी है। यज्ञ, तप, दान, पुण्य, तीर्थ आदि यह सब सन्यासियों का काम है नहीं। यह तो सब गृहस्थियों का काम है। वह हैं ही निवृतिमार्ग वाले। उन्हों के लिए असल कायदा है घर बार छोड़ जंगल में रहना और ब्रह्म वा तत्व को याद करना। वह हैं ही तत्व ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी। तत्व अथवा ब्रह्म को ही ईश्वर कह देते हैं। जैसे भारतवासी असल हैं आदि सनातन देवी देवता धर्म के परन्तु हिन्दुस्तान में रहते हैं तो अपना धर्म हिन्दू समझ लिया है। सन्यासी भी आत्माओं के रहने के स्थान ब्रह्म महतत्व को परमात्मा समझ लेते हैं। उसे ही याद करते हैं। वास्तव में सन्यासी जब सतोप्रधान हैं तो उन्हों को जंगल में जाकर रहना है शान्त में। ऐसे नहीं कि उन्हों को ब्रह्म में जाकर लीन होना है। बाप कहते हैं यह उन्हों का मिथ्या ज्ञान है। समझते हैं ब्रह्म की याद में रहने से शरीर छोड़ने से ब्रह्म में लीन हो जायें। बाप समझाते हैं लीन कोई हो नहीं सकते। आत्मा तो अविनाशी है। वह लीन कैसे हो सकती। भक्तिमार्ग के लिए कितनी माथा कूट करते हैं। फिर कहते रहते भगवान कोई न कोई रूप में कब आयेंगे। अब राइट कौन? वह कहते हैं हम ब्रह्म से योग लगाकर ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। गृहस्थ धर्म वाले कहते भगवान किस न किस रूप में आयेंगे। पतितों को पावन बनाने आयेंगे। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखायेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे क्या? प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम होता नहीं। भल शंकर की प्रेरणा से विनाश कहा जाता है परन्तु यह ड्रामा की नूंध है। या तो कहते शंकर की आँख खुलने से ही प्रलय हो गई। अर्थ कुछ भी नहीं समझते। किसके मन्दिर में जायेंगे कहेंगे अच्युतम् केशवम्... अर्थ कुछ नहीं, अगड़म बगड़म जो आया सो कह देते। जानते कुछ नहीं। कोई भी अपने बड़ों की महिमा नहीं जानते। स्थापक को भी गुरू कह देते। लेकिन वे तो सिर्फ धर्म स्थापन करने आते हैं। उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली आती रहती है। सद्गति तो किसकी करते ही नहीं तो उनको गुरू कैसे कहेंगे। गुरू तो एक ही है जिसको सर्व का सद्गतिदाता कहा जाता है। भगवान बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। मु० जीवनमुक्ति देते हैं। उनकी याद कब किससे छूट नहीं सकती। भल पति से

कितना भी प्यार हो फिर भी हे भगवान हे ईश्वर जरूर कहेंगे क्योंकि वही सर्व का सदगति दाता है। बाप बैठ समझाते हैं यह सारी रचना है। रचता बाप मैं ही हूँ। सभी को सुख देने वाला, वर्सा देने वाला एक ही बाप ठहरा। भाई2को वर्सा दे नहीं सकते। हमेशा वर्सा बाप से मिलता है। मैं तुम सभी बेहद के बच्चों को बेहद का वर्सा देता हूँ। इसलिए ही मुझे याद करते हैं हे परमपिता परमात्मा क्षमा करो। रहम करो। समझते कुछ भी नहीं। भक्तिमार्ग में अनेक प्रकार की महिमा करते रहते हैं। यह भी ड्रामा अनुसार अपना2पार्ट बजाते रहते हैं। बाप कहते हैं मैं कोई उन्हों के पुकारने पर नहीं आता हूँ। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा में मेरे आने का भी पार्ट है। अनेक धर्म विनाश एक धर्म की स्थापना वा कलियुग का विनाश, सतयुग की स्थापना करनी होती है। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ। यह भक्ति-मार्ग भी ड्रामा में नूँध है। अभी जब भक्तिमार्ग का पार्ट पूरा होता है तब मैं आया हूँ बच्चे भी कहते हैं अभी हम जान गये 5000 वर्ष बाद फिर से आकर आपके साथ मिले हैं। कल्प पहले भी बाबा आप ब्रह्मा तन में ही आये थे। यह ज्ञान तुमको अभी मिलता है, फिर कब नहीं मिलेगा। यह है ज्ञान वह है भक्ति। ज्ञान की प्रालब्ध है चढ़ती कला। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है। जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली थी ना। यह भी अक्षर है राधे जाकर अनुराधे बनती है। जनक भी जाकर फिर सीता का बाप अनुजनक बना इस ज्ञान से। यह भी एक मिसाल दे रखा है। समझते कुछ भी नहीं हैं, कहते हैं सेकेण्ड में जनक ने जीवनमुक्ति पाई। क्या सिर्फ एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाई? जीवनमुक्ति तो सबको मिलती है ना, सारी विश्व पाती है। सदगति वा जीवनमुक्ति एक ही अक्षर है। जीवनमुक्ति अर्थात् जीवन को मुक्त करते हैं इस रावणराज्य से। बाप जानते हैं सभी बच्चों की कितनी दुर्गति हो गई है। बिल्कुल दुखी हो गये हैं। उन्हों की फिर सदगति होनी है। दुर्गति से फिर ऊँच गति मुक्ति जीवनमुक्ति को पाते हैं। पहले मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे। शान्तिधाम से फिर सुखधाम में आयेंगे। यह चक्र का राज बाप ने ही समझाया है। तुम्हारे साथ और भी धर्म वाले आते जाते हैं। मनुष्य सृष्टि वृद्धि को पाती जाती है। बाप कहते हैं इस समय यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ तमोप्रधान जड़जड़ीभूत हो गया है। आदि-सनातन देवी देवता धर्म का फाउण्डेशन सारा सड़ गया है। बाकी सभी धर्म खड़े हैं। भारत में एक भी अपने को आदि सनातन देवी देवता धर्म का समझता नहीं है। हैं आदि सनातन देवी देवता धर्म के परन्तु इस समय यह समझते नहीं हैं कि हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के थे क्योंकि देवतायें पवित्र थे। समझते हैं हम तो पवित्र हैं नहीं। हम अपवित्र पतित अपने को देवता कैसे कहलावें। यह भी ड्रामा प्लैन रसम पड़ जाती है - हिन्दू कहलाने की। जन गणना में भी हिन्दू धर्म लिख देते हैं। भल गुजराती होंगे तो भी हिन्दू गुजराती कह देंगे। मुख्य धर्म हिन्दू कह देते हैं। गुजराती मराठी आदि टोटल इतने हिन्दू हैं। उनसे पूछो तो भी हिन्दू धर्म कहाँ से आया कोई को पता नहीं है। सिर्फ कह देते हैं - हमारा धर्म कृष्ण ने स्थापन किया। कब? द्वापर में। द्वापर से ही ये लोग अपने धर्म को भूल हिन्दू कहलाने लगे हैं। इसलिए उनको कहा जाता है देवी देवता धर्म भ्रष्ट है। वहाँ सब अच्छा कर्म करते हैं यहाँ सब छी2कर्म करते हैं इसलिए देवी देवता-धर्म, कर्म भ्रष्ट कहा जाता है। अब फिर श्रेष्ठ धर्म की स्थापना हो रही है? इसलिए कहा जाता है अब इन 5विकारों को छोड़ते जाओ। यह विकार आधाकल्प से रहे हैं। अब एक जन्म इनको छोड़ना है। इसमें ही मेहनत है। मेहनत बिगर कोई विश्व की बादशाही थोड़े ही मिलेगी। बाप को याद करेंगे तब ही अपने को तुम राजाई तिलक देते हो। अर्थात् राजाई के अधिकारी बनते हो। जितना अच्छी रीति याद में रहेंगे श्रीमत पर चलेंगे तो तुम राजाओं का राजा बनेंगे। अच्छा" मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:- 1- सदा यह स्मृति रखनी है कि हम एक मत, एक राज्य, एक धर्म की स्थापना के निमित्त हैं इसलिए एकमत होकर रहना है।
2-स्वयं को राजाई का तिलक देने के लिए विकारों को छोड़ने की मेहनत करनी है।

Brahma Kuma[ris] World Spiritual University
"SATYA DHAM"
[illegible] 210, Sector-II
S[illegible] Calcutta-91

-76 प्रातःक्लास ओमशान्ति 'पिताश्री' शिवबाबा याद है?

याद के रात्रि वक मत जाना..ओमशान्ति। बच्चे याद की यात्रा में बैठे हैं। जिसको कहते हैं नेष्टा में अथवा याद में बैठे हैं। सिर्फ शान्ति में नहीं बैठते हैं, कुछ कर रहे हैं, स्वधर्म में टिके हुए हैं। परन्तु यात्रा पर भी हो, यह यात्रा सिखलाने वाला बाप साथ में ले ही जाते हैं। वह होते हैं जिस्मानी ब्राह्मण जो साथ ले जाते हैं, तुम हो रूहानी ब्राह्मण, ब्राह्मणों का वर्ण अथवा कुल कहेंगे, अब बच्चे याद की यात्रा में बैठे हैं (ऐसे नहीं बाबा का आवाहन करते हैं। नहीं, बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते। बाबा को आपेही आना है, बाकी तुम क्या करते हो? आत्मा में जो खाद पड़ी है उनको गलाने लिए याद की यात्रा में बैठे हो। और सतसंगों में बैठते होंगे तो गुरु की याद आवेगी। गुरु आकर प्रवचन सुनावे, है तो सारा भक्ति मार्ग। यह याद की यात्रा है) जिससे विकर्म विनाश होने हैं, तुम याद में बैठते हो, जंक अर्थात कट निकलने के लिए। बाप की डायरेक्शन है याद से कट निकलेगी। क्योंकि पतित पावन मैं ही हूँ। मैं किसकी याद से नहीं आता हूँ। मेरा आना यह ड्रामा में नूँध है। जब पतित दुनिया को पावन दुनिया होना होता है, आदि सनातन देवी देवता धर्म जो प्रायः लोप है, उसकी स्थापना फिर से ब्रह्मा द्वारा करते हैं। जिस ब्रह्मा के लिए ही समझाया है ब्रह्मा सो विष्णु सेकेण्ड में बनते हैं। फिर विष्णु सो ब्रह्मा बनने में 5000 वर्ष लगते हैं। यह भी बुद्धि से समझने की बातें हैं। तुम जो शूद्र थे, अब ब्राह्मण वर्ण में आये हो। तुम ब्राह्मण बने हो तो शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा तुमको यह याद की यात्रा सिखलाते हैं। खाद निकलने लिए, यह रचना का चक्र कैसे फिरता है, सो तो समझ गये। इसमें कोई देरी नहीं लगती है। अभी है भी बरोबर कलियुग। वह सिर्फ कहते हैं कलियुग की अजुन आदि है और बाप बताते हैं कलियुग का अन्त है, घोर अन्धियारा है ना। बाप कहते हैं तुमको यह मिथ्या ज्ञान सुनाया कि कलियुग अजुन बच्चा है। इन सब वेद शास्त्रों आदि का तुमको पार [illegible] में बैठना होगा, नहीं तो माया के तूफान आवेंगे। बुद्धि चारों तरफ बुद्धियोग जावेगा। यह सब बाहर की पंचायत है ना। जैसे मकड़ी कितनी जाल निकालती है, सारा हप भी कर लेती है, वैसे का कितना परपंच है। काका, चाचा, मामा, गुरु गोसाई, कितने जाल दिखाई पड़ते हैं। वह सारे हप करने हैं देह सहित। अकेला देही बनना है। मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो सब कुछ भूल जाते हैं। आप मुये मर गई दुनिया। यह तो बुद्धि में ज्ञान है कि यह दुनिया खत्म होनी है, बाप समझाते हैं जिसका मुख नहीं खुलता है तो सिर्फ याद करो। जैसे बच्चा बाप को याद करता है, कन्या पति को याद करती है। क्योंकि पति परमेश्वर ही बाता है। इसलिए घर से बुद्धि निकल पति में चली जाती है (यह तो पतियों का पति है, गाडफादर है ना। तुम सब हो ब्राइड्स भगवान की भक्त भक्ति करते हैं। सब भक्तियाँ रावण के पिंजड़े में कैद हैं। [illegible] बाप को जरूर तरस पड़ेगा ना। बाप रहमदिल है। जिसको ही रहमदिल कहा जाता है। यह जो अपने को श्री श्री 108 जगतगुरु कहलाते हैं, जगतगुरु कहलाना बिल्कुल रांग है। गुरु तो बहुत प्रकार के हैं, जो कुछ शिक्षा देते हैं उसको गुरु कह देते हैं, यह तो बाप प्रैक्टिकल में राजयोग सिखलाते हैं। यह राजयोग किसको सिखलाना आवेगा ही नहीं) परमात्मा के सिवाय। परमात्मा ने ही भारत में आकर राजयोग सिखाया था, फिर उससे क्या हुआ? यह किसको पता नहीं है। गीता का प्रमाण तो बहुत देते हैं। छोटी2 कुमारियाँ भी गीता कण्ठ कर लेती हैं। गीता में किसका लव है तो कुछ न कुछ महिमा होती है। गीता कोई कम नहीं है। गीता की बड़ी महिमा है। गीता ज्ञान से ही बाप सारी दुनिया को रज्युनेट कर लेते हैं। तुम्हारा काया रूपान्तर, कल्प वृक्ष समान अथवा अमर बनाए देते हैं। तो तुम बाप की याद में रहते हो, बाबा का आवाहन नहीं करते। तुम बाप की याद में रह अपनी उन्नति कर रहे हो। बाप के डायरेक्शन इन्क्वार रहनी चाहिए। हम शिवबाबा को याद कर ही भोजन खावेंगे। गोया शिवबाबा से खाते हैं। दफ्तर में भी [illegible] टाइम मिलता है। बाबा को लिखते हैं कुर्सी पर बैठे2 याद में बैठ जाते हैं। आफीसर आकर देखते हैं यह [illegible] हो गये हैं अर्थात अशरीरी हो जाते हैं। किसी की आँख बन्द हो जाती है, किसी की खुली रहती है।

... ऐसे बैठा होगा, कुछ भी जैसे देखेगा नहीं, जैसे गुम रहते हैं। ऐसे२ होता है। बाबा ने दृष्टि दी, और मौज में बैठा है, उनसे पूछेंगे तुमको क्या हुआ? कहेंगे हम तो बाप की याद में बैठे हैं। बुद्धि में रहता है हमको जाना है। बाबा के पास। बाप कहते हैं सोल कान्शेस बनने से तुम हमारे पास आ जावेंगे, यहाँ प्योर होने बिगर थोड़ेही आ सकेंगे। सब प्योर बनें कैसे? वह बाप ही बतला सकते हैं: मनुष्य बतला न सकें: तुम सबको डेमफूल सिद्ध करेंगी। सारी दुनिया बेसमझ है। डेमफूल है। बहुत बड़ा फूल है। फूल भी है तो डेमफूल भी है, डेमफूल उनको कहेंगे जो न याद में रहते, न ज्ञान में रहते हैं। टीचर से पढ़ेंगे नहीं तो कहेंगे डेमफूल। तुम कुछ नहीं पढ़ते हो। कुछ न कुछ समझा हुआ होगा तो औरों का भी कल्याण करेंगे। तुमको कोई का कल्याण करने, बाप का परिचय देने पुरुषार्थ जरूर करना है। भक्ति मार्ग में भी जो गॉड फादर कह याद करते हैं, गॉड फादर रहम करो। पुकारने की एक आदत हो गई है। बाप तुम बच्चों को भी कल्याणकारी बनाते हैं। विचार किया जाए तो सभी मनुष्य इस समय डेमफूल तो हैं ही। हम भी क्या थे, माया ने कितना डेमफूल बनाया है, बाप ने कितना धनवान बनाया, माया ने कितना डेमफूल बनाया है। बाप ने कितना धनवान बनाया, माया ने क्या बना दिया है, लौकिक बाप भी बच्चों की चलन ठीक नहीं देखेंगे तो कहेंगे ना कि तुम तो डेमफूल हो, एक वर्ष में सारी बाप की मिलकियत उड़ा देते हो। तो बेहद का बाप भी कहते हैं तुमको क्या बनाया था- अभी अपनी चलन देखो। अब तुम समझते हो, कैसा वन्डरफुल खेल है। भारत कितना डाउनफाल हो जाता है। डाउन फाल आफ भारतवासी, वह अपने को ऐसे समझते नहीं हैं कि हम गिरे हैं, हम कलियुगी तमोप्रधान बने हैं। भारत स्वर्ग था अर्थात मनुष्य स्वर्गवासी थे, वही मनुष्य अब नर्कवासी हैं। यह बात कोई में है नहीं। ब्रह्म (बाप) भी कहाँ जानता था। अभी बुद्धि में समझ आया है। 84 जन्म लेते२ सीढ़ी जरूर उतरनी पड़ेगी। ऊपर चढ़ने की जगह ही नहीं है। उतरते२ पतित बनना है। यह बात कोई की भी बुद्धि में नहीं है। बाप ने तुम बच्चों को समझाया है। तुम फिर भारतवासियों को समझाते हो। तुम स्वर्गवासी थे, अब नर्कवासी बने हो। 84 जन्म भी तुमने लिए हैं। पुनर्जन्म तो मानते हैं ना। तो जरूर नीचे उतरना है। कितना पुनर्जन्म लिया है यह भी बाप ने समझाया है। इस समय तुम फील करते हो, हम पावन दैवी देवता थे - फिर रावण ने पतित बनाया, बाप को आकर पढ़ाना पड़ता है। हम से देवता बनाने लिए। बाप को ही लिबरेटर गाइड कहते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। अभी वह समय जल्दी आवेगा जो सबको पता पड़ेगा। तुम्हारी बात को सुनते ऐसे हैं जैसे पत्थर। और उनकी महिमा कितनी करते हैं। अपने को कहेंगे डेमफूल हैं। क्योंकि गॉड फादर को तो नहीं जानते हैं। फादर कहते भी हैं। फिर कह देते सर्वव्यापी है तो डेमफूल हुआ ना। जो बाप को सर्वव्यापी कह देते, वह और ही जास्ती डेमफूल ठहरे। बरोबर देखो क्या से क्या बन गये हैं। ड्रामा कैसे बना हुआ है। किसको स्वप्न में भी नहीं था कि हम लक्ष्मी नारायण बनेंगे। बाप कितनी ऊंचाई में ले आते हैं। अब बाप से वर्सा लेना है, तो श्रीमत पर चलना है। याद की यात्रा की प्रैक्टिस करनी है। तुमको मालूम है कि पादरी लोग पैदल करने जाते हैं- कितना साइलेन्स में ऐसे चलते हैं वह क्राइस्ट की याद में रहते हैं। उन्हों का क्राइस्ट से लव है। तुम रूहानी पण्डों की ही प्रीत बुद्धि है। परमप्रिय परमपिता परमात्मा के साथ, सभी जानते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, कि कल्प पहले मुआफिक राजधानी जरूर स्थापन होगी। जितना पुरुषार्थ कर श्रीमत पर चलेंगे, बाप तो बहुत अच्छी२ मत देते हैं। फिर भी ग्रहचारी ऐसी बैठ जाती है जो श्रीमत को भी समझते नहीं हैं। तुम इस दादा की मत न समझो। मत हमेशा शिवबाबा से मिलती है। उनकी मत पर चलने से विजय है। निश्चय में ही विजय है। बाप कहते हैं तुम मेरी मत पर चलो। भले समझते हैं ब्रह्मा मत देते हैं? हमेशा समझो शिवबाबा राय देते हैं। वह तो सर्विस की ही मत देवेंगे। कोई कहेंगे बाबा यह व्यापार धन्धा करूँ? बाबा कोई इन बातों में मत नहीं देंगे। बाप कहते हैं मैं आया हूँ पतित से पावन बनाने की युक्ति बताने। न कि इन बातों के लिए। मुझे बुलाते भी हैं हे पतित पावन आकर

दुखी ही दुखी है। भक्त भगवान को बुलाते हैं तो जरूर भगवान एक होना चाहिए। भक्त अनेक हैं। शिव भगवानुवाच मैं शिव भगवान तुम बच्चों को राजयोग और सृष्टि चक्र का ज्ञान समझा रहा हूँ अर्थात् अब तुम्हारी आत्मा को सृष्टि चक्र का ज्ञान है। जैसे मुझ बाप को सृष्टि के चक्र का ज्ञान है, मैं आया हूँ तुमको सिखलाने, सृष्टि चक्र फिरना तो जरूर है। पतित से पावन बनना है कोई तो निमित्त बनते हैं ना। 5 विकारों रूपी जेल से लिबरेट करने मैं आता हूँ। मैं शिव हूँ। जो अभी इस तन में बैठा हूँ। तुम कहेंगे मैं आत्मा इस शरीर में बैठा हूँ। मेरे शरीर का नाम फलाना है। शिवबाबा कहते हैं मेरा निराकारी शरीर तो है नहीं। मुझ परमात्मा का नाम शिव ही है। मैं परमपिता परमात्मा स्टार मिसल हूँ। मेरा शिव नाम एक ही है। तुम भी सालिग्राम हो। परन्तु तुम्हारा नाम 84 जन्मों में बदलता रहता है। मेरा तो एक ही नाम है। मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ। गीता में जिसका नाम डाल दिया है वह तो पूरे 84 जन्म लेता है। ऐसे नहीं कि कृष्ण ने गीता सुनाई, यह बड़ी समझने की बात है। मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है, जो कुछ करते हैं सो परमपिता परमात्मा करते हैं। मनुष्य को शान्ति सुख देना यह बाप का काम है। हमेशा महिमा एक बाप की ही करनी है। और कोई की महिमा है नहीं। ल०ना० की भी महिमा है नहीं। परन्तु राज्य करके गये हैं तो समझते हैं यह स्वर्ग के मालिक थे। वन्डर तो देखो वह जड़ चित्र और यहाँ चैतन्य बैठे हैं। शिव भगवानुवाच तुम राजाओं का राजा पूज्य बनते हो। फिर पुजारी बनेंगे। पूज्य ल०ना० से फिर आपेही पुजारी बनेंगे। तो जो पास्ट हो गये हैं उनका फिर मन्दिर बनाकर पूजन करते हैं। यह सिद्ध कर बताना है। ऐसे नहीं कि ईश्वर आपेही पूज्य आपेही पुजारी बनता है। (नहीं। मनुष्य यह भी नहीं जानते कि मैं परमात्मा कहाँ निवास करता हूँ। मेरे जो बच्चे सालिग्राम हैं वह भी यह नहीं जानते कि हम कहाँ के रहने वाले हैं। आत्माओं और परमात्मा का घर एक ही है स्वीट होम। सिर्फ स्वीट फादर होम नहीं कहेंगे।) अभी तुम जानते हो निर्वाणधाम उनका [illegible] भी [illegible] फादर है। सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म के साथ योग हो गया। उनमें विकर्म विनाश हो नहीं सकते। भल ब्रह्म योगी तत्व योगी हैं। परन्तु उनके विकर्म विनाश नहीं हो सकते। हाँ भावना से करके अल्पकाल के लिए सुख मिलता है। जितना याद करेंगे उतनी शान्ति मिलेगी। तो बाप कहते हैं उनका योग रांग है। तुमको याद करना है एक बाप को। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। कृष्ण ऐसे कह न सके वह तो वैकुण्ठ का मालिक ठहरा। वह थोड़ेही कहेगा अशरीरी बन शिवबाबा को या मुझे याद करो। सारा मदार गीता को करेक्ट कराने पर है। गीता खण्डन होने कारण भगवान की हस्ती गुम हो गई है। कह देते ईश्वर का कोई नाम रूप है नहीं। अब नाम रूप काल तो आत्मा का भी है। आत्मा का नाम आत्मा है। वह भी परमपिता परमात्मा है। परम अर्थात् सुप्रीम। ऊँच ते ऊँच वह जन्म मरण रहित। अवतार लेते हैं (ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ब्रह्मा नाम कब बदल नहीं सकता। ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना करते हैं। तो वह श्रीकृष्ण के तन में थोड़ेही आयेंगे। अगर वह दूसरे में आवे तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।) मनुष्य कहते हैं दूसरे कोई में क्यों नहीं आता। अरे वह भी किसके तन में आये? वह आते ही हैं ज्ञान देने लिए। दिनप्रतिदिन मनुष्य समझते जायेंगे। तुम्हारी वृद्धि होती जायेगी। अवस्था बड़ी अच्छी चाहिए। जैसे ड्रामा के एक्टर्स को मालूम होता है हम घर से स्टेज पर पार्ट बजाने आये हैं, वैसे हम आत्मा यह शरीर रूपी चोला ले आकर पार्ट बजाती हैं। फिर वापिस जाना है। शरीर छोड़ना पड़ता है। इसमें तो खुशी होनी चाहिए। डरना नहीं चाहिए। तुम बहुत कमाई कर रहे हो। शरीर छोड़ने वाला खुद भी समझ सकते हैं। हमने कितनी कमाई की है। तुम समझते हो जो शरीर छोड़कर गये हैं उनमें से किसका मर्तबा बड़ा कहें, फलाना बहुत सर्विस करते हैं। जाकर दूसरा शरीर लिया। इनएडवान्स गये। उनका इतना ही पार्ट था। फिर भी कुछ न कुछ ज्ञान लेने लिए आ जाए। हो सकता है। वारिस तो बन गये ना। किसके साथ हिसाब किताब चुक्तू करना होगा। वह क्लास करने गये। आत्मा में तो ज्ञान के संस्कार हैं ना। संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। वह गुम नहीं हो सकते। कहाँ अच्छी जगह सर्विस करते

21.

(२१)

10-5-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज-28-12-78 मधुबन

परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता और सत्यता का आधार स्वच्छता और निर्भयता

आज बाप-दादा सर्व बच्चों को शक्ति सेना वा पाण्डव सेना के रुप में देख रहे हैं। सेनापति अपनी सेना को देख हर्षित भी हो रहे हैं और साथ-साथ अपनी सेना के महारथी वा घोड़े सवार दोनों के कर्तव्य को देख रहे हैं - महारथी क्या कर रहे हैं, घोड़े सवार क्या कर रहे हैं! दोनों ही अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं। अब तक ड्रामा अनुसार जो भी हरेक ने पार्ट बजाया वह नम्बरवार अच्छा कहेंगे। लेकिन अब क्या करना है? महारथियों को अब अपनी कौन-सी महावीरता दिखानी है? बाप-दादा विशेष महावीरनियों और महावीरों की सेवा के पार्ट को देख रहे थे। अब तक सेवा के क्षेत्र में कहाँ तक पहुँचे हैं? जैसे स्थूल सेना का सेनापति नक्शे के आधार पर सदा देखते रहते हैं कि सेना कहाँ तक पहुँची है! कितनी एरिया के विजयी बने हैं? अस्त्र शस्त्र, बारुद अर्थात् सामग्री कहाँ तक स्टाक में जमा है? आगे क्या लक्ष्य है? लक्ष्य की मंज़िल से कहाँ तक दूर हैं? किस स्पीड़ से बढ़ते जा रहे हैं? वैसे आज बाप-दादा भी आदि से अब तक के सेवा के नक्शे को देख रहे थे। रिजल्ट क्या देखा? महावीर वा महावीरनियाँ सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ते जा रहे हैं - शस्त्र भी सब साथ में हैं, एरिया भी बढ़ाते जा रहे हैं, लेकिन अभी तक आत्मिक बाम्ब लगाया है, अभी परमात्म बाम्ब लगाना है। आत्मिक सुख वा आत्मिक शान्ति की अनुभूति, रुहानियत की अनुभूति के भिन्न-भिन्न शस्त्र नम्बरवार समय प्रमाण कार्य में लगाया है लेकिन लास्ट बाम्ब अर्थात् परमात्म बाम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने, उनके द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गये हैं। डायरेक्ट आलमाइटी अर्थारिटी का कर्तव्य चल रहा है। यह अन्तिम बाम्ब है जिससे चारों ओर से आवाज़ निकलेगा। अभी यह कार्य रहा हुआ है। यह कैसे होगा और कब होगा? परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। सत्यता ही प्रत्यक्षता है। एक स्वयं के स्थिति की सत्यता, दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई-सफाई की कमी है तो कर्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती।

सच्चाई और सफाई - सच्चाई अर्थात् मैं जो हूँ, जैसा हूँ — सदा उस ओरीज़नल सतोप्रधान स्वरुप में स्थित रहना है। रजो और तमो स्टेज सच्चाई की ओरीज़नल स्टेज नहीं। यह संगदोष की स्टेज है। किसका संग? माया अथवा रावण का। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। तो पहली यह सच्चाई है। दूसरी बात - बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात् सत्यता की स्टेज सतोप्रधानता है वा अभी रजो और तमो मिक्स है? सत्यता नेचुरल संस्कार रुप में है वा पुरुषार्थ से सत्यता की स्टेज को लाना पड़ता है? जैसे बाप को ट्रुथ अर्थात् सत्य कहते हैं वैसे ही आत्मिक स्वरुप की वास्तविकता भी सत्य अर्थात् ट्रुथ

है, तो सत्यता सतोप्रधानता को कहा जाता है, ऐसी सच्चाई है?

सफाई अर्थात् स्वच्छता। ज़रा भी संकल्प द्वारा भी अशुद्धि अर्थात् बुराई को वा अवगुण को टच किया वा धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे। जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना भी बुराई को टच करना हुआ। सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं। सफाई अर्थात् स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो। इसको कहा जाता है सच्चाई और सफाई अर्थात् स्वच्छता। दूसरी बात है निर्भयता। निर्भयता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है।

पहली बात - अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता। क्या करूँ, होता नहीं, संस्कार बहुत प्रबल हैं — यह भी निर्भयता नहीं। अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना - इसमें भी निर्भयता हो। पता नहीं चल सकेंगे, निभा सकेंगे, मेरा मानेंगे वा नहीं मानेंगे इसमें भी अगर भयता है तो इसको सम्पूर्ण निर्भयता नहीं कहेंगे। तीसरी बात - विश्व की सेवा में अर्थात् सेवा के क्षेत्र में वायुमण्डल वा अन्य आत्माओं के सिद्धान्तों की परिपक्वता को देखते हुए संकल्प में भी उन्हों की परिपक्वता का या वातावरण, वायुमण्डल का प्रभाव पड़ना - यह भी भयता है। यह बिगड़ जायेंगे, हंगामा हो जायेगा, हलचल हो जायेगी इससे भी निर्भयता हो। जब आत्म ज्ञानी, आप तना द्वारा निकली हुई शाखाएं वह भी अपने अल्पज्ञ मान्यता में निर्भयता का प्रभाव डालती हैं, अपनी अल्प मत को प्रत्यक्ष करने में निर्भय होती हैं, झूठ को सच करके सिद्ध करने में अटल और अचल रहती हैं, तो सर्वज्ञ बाप के श्रेष्ठ मत वा अनादि आदि सत्य को प्रत्यक्ष करने में संकोच करना भी भय है। शाखाएं हिलने वाली होती हैं, तना अचल होता है तो शाखाएं निर्भय हो और तना में संकोच के भय की हलचल हो तो इसको क्या कहेंगे? इसलिए जो प्रत्यक्षता का आधार स्वच्छता और निर्भयता है उसको चेक करो। इसी को ही सत्यता कहा जाता है। इस सत्यता के आधार पर ही प्रत्यक्षता है। इसलिए अन्तिम पावरफुल बाम्ब परमात्म प्रत्यक्षता अब शुरु नहीं की है। अब तक की रिजल्ट में राजयोगी आत्माएं श्रेष्ठ हैं, राजयोग श्रेष्ठ है, कर्तव्य श्रेष्ठ है, परिवर्तन श्रेष्ठ है - यह प्रत्यक्ष हुआ है लेकिन सिखाने वाला डायरेक्ट आलमाइटी है, ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है, यह अभी गुप्त है। परमात्म बाम्ब की रिज़ल्ट क्या होगी?

विश्व की सर्व आत्माओं के अल्पकाल के सब सहारे समाप्त हो एक बाप का सहारा अनुभव होगा। जैसे साइन्स के बाम्ब्स द्वारा देश का देश समाप्त हो पहला दृश्य कुछ भी नज़र नहीं आता, सब समाप्त हो जाता है ऐसे इस अन्तिम बाम्ब द्वारा सर्व अल्पकाल के साधना रुपी साधन समाप्त हो एक ही यथार्थ साधन राजयोग द्वारा हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्व पिता स्पष्ट दिखाई देगा। हर धर्म की आत्मा द्वारा एक ही बोल निकलेगा कि हमारा बाप, हिन्दुओं वा मुसलमानों का नहीं - सबका बाप। इसको

कहा जाता है परमात्म बाम्ब द्वारा अन्तिम प्रत्यक्षता। अब रिज़ल्ट सुनो कि क्या कर रहे हैं और क्या करना है? अब के दर्द परमात्म बाम्ब फैंको। स्वच्छता और निर्भयता के आधार से सत्यता द्वारा प्रत्यक्षता करो। अच्छा।

ऐसे बाप को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने वाले, सदा निर्भय, सदा एक ही धुन में मस्त रहने वाले रमता सहज राजयोगी, अन्तिम समय को समीप लाने वाले अर्थात् सर्व आत्माओं की मनोकामनाएं पूर्ण करने वाले बाप समान दया वा रहम के सागर, ऐसे रहमदिल बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ बातचीत - सभी अपने श्रेष्ठ भाग्य के गुणगान करते हुए सदा खुशी में रहते हो? ऐसा श्रेष्ठ भाग्य जिसका गायन स्वयं भगवान करे, ऐसा भाग्य फिर कभी मिलेगा? भविष्य में भी ऐसा भाग्य नहीं होगा, अब नहीं तो कब नहीं, ऐसी खुशी होती है? भाग्य का सितारा सदैव चमकता रहे तो चमकती हुई चीज़ की तरफ स्वत: ही सबका अटेन्शन जाता है, यह क्या है? ऐसे हरेक के मस्तक बीच भाग्य का सितारा सदैव चमकता रहे तो विश्व की नज़र आटोमेटिकली जायेगी कि यह कौन से भाग्य का सितारा चमकता हुआ दिखाई दे रहा है। जैसे कोई विशेष सितारा विशेष रुप से चमकता है तो आटोमेटिक सबका अटेन्शन जाता है, ऐसे भाग्य का सितारा सबको आकर्षित करे। ऐसा चमकता हुआ सितारा स्वयं को भी दिखाई दे और विश्व को भी। चमकती हुई चीज़ न चाहते भी, नज़र घुमाते भी दिखाई देती है, तो भले चारों तरफ नज़र घुमायें लेकिन आखिर में आपके तरफ ही नज़र आएगी, ऐसा चमकता हुआ भाग्य अनुभव होता है?

इस समय की ऊंची स्थिति की रिज़ल्ट सारे कल्प में ऊंचे

इस समय की ऊंची स्थिति वाले उच्च पद पाने वाले होंगे, विश्व में पूज्य के रुप में भी ऊंचे होंगे, बाप के बच्चे भी ऊंचे, भक्ति में भी ऊंचे और ज्ञान में भी ऊंचा राज्य करने में भी ऊंच होंगे। हर पार्ट ऊंचा बजाने कारण, ऊंचे ते ऊंची आत्मा अनुभव करेंगे।

वरदान:- दिलाराम बाप की याद द्वारा तीनों कालों को अच्छा बनाने वाले इच्छा मुक्त भव

जिन बच्चों की दिल में एक दिलाराम बाप की याद है वह सदा वाह-वाह के गीत गाते रहते हैं, उनके मन से स्वप्न में भी "हाय" शब्द नहीं निकल सकता क्योंकि जो हुआ वह भी वाह, जो हो रहा है वह भी वाह और जो होना है वह भी वाह। तीनों ही काल वाह-वाह है अर्थात् अच्छे ते अच्छा है। जहाँ सब अच्छा है वहाँ कोई इच्छा उत्पन्न नहीं हो सकती क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्तियां हैं। प्राप्ति सम्पन्न बनना ही इच्छा मुक्त बनना है।

स्लोगन:-

संस्कारों को ऐसा शीतल बना लो जो जोश वा रोब के संस्कार इमर्ज ही न हों।

मीटिंग प्रति अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश (गुल्जार दादी)

आज दादी ने खास मीटिंग के लिए सन्देश दिया था, तो बाबा के पास जाना हुआ। जैसे ही मैं वतन में बाबा के पास गई तो देखा बाबा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे और मैं जितना आगे जाती रही उतना बाबा की मुस्कराहट में जैसे भिन्न-भिन्न राज़ से चेन्ज आती जाती थी। मैं भी देख-देख मुस्करा रही थी। तो जब मैं आगे पहुँची तो बाबा ने कहा - आओ मेरे सर्विसएबुल बच्चे, आओ। ऐसे कहते बाबा ने कहा बच्ची, आज सर्विस का समाचार लाई हो! तो मैंने कहा बाबा आपके पास तो पहले ही पहुँच जाता है, अभी मैं क्या सुनाऊं। तो बाबा ने कहा कि बच्ची मीटिंग तो मैं भी देखता हूँ और इस साल बच्चों ने दो थीम रखी है – एक स्व-उन्नति की और दूसरे तरफ विशाल प्रोग्राम्स की। वैसे दोनों ही इकट्ठी चलनी चाहिए, उसके लिए बाबा ने कहा कि वर्ष के मास भिन्न-भिन्न हैं तो भिन्न-भिन्न मास में प्रोग्राम को बांटों। कुछ मास विशेष स्व उन्नति की लहर फैले, उसमें फिर विशाल प्रोग्राम नहीं रखो। उसमें भी साल में बरसातों के दो मास हरेक अपने-अपने एरिया के हिसाब से ऐसे रखो जो स्व उन्नति के सिवाए कोई और बड़ा प्रोग्राम उन समय नही हो। बाकी छोटे-छोटे प्रोग्राम की बात दूसरी है लेकिन जो विशाल प्रोग्राम रखते हैं जिसमें सब तरफ की बुद्धि लगानी पड़ती है तो उसमें फिर स्व उन्नति नहीं हो सकती है। इसीलिए बाबा ने कहा कि इस वर्ष बैलेन्स का अभ्यास जरूर करो। विशेष स्व उन्नति के दो मास में सर्विस कोई भी विघ्न नहीं डाले। और जब सर्विस करते हो तो स्व उन्नति की स्थिति तो चाहिए ही।

तो बाबा ने कहा कि इस साल कुछ नवीनता तो करेंगे ना, क्योंकि नवीनता के बिना तो मज़ा भी नहीं आता है। तो बाबा ने एक काम तो दिया ही है कि मुक्ति वर्ष में 18 जनवरी में मैं सबसे पुछूँगा - कौन-कौन मुक्ति वर्ष में मुक्त हुआ? यह तो बाबा ने डेट फिक्स कर दी है। लेकिन इस वर्ष बाबा मीटिंग वालों को खास कहते है क्योंकि सब सेन्टर्स की विशेष आत्मायें आई हुई हैं। तो इस साल बाबा बैलेन्स देखना चाहते हैं। जो बच्चे कहते हैं कि सेवा में लग गये इसलिए स्व उन्नति के तरफ अटेन्शन कम हो गया। तो इस वर्ष बाबा यह नहीं सुनना चाहता कि सेवा के कारण स्व उन्नति पर ध्यान कम हो गया। इसलिए बाबा इस साल किसी भी रीति से बैलेन्स का देखना चाहते हैं। तो स्व उन्नति भी साथ-साथ रहे और सेवा भी हो।

उसके बाद बाबा ने कहा कि सभी मीटिंग वाले बच्चों का एक गुण देखकर बाबा को बहुत प्यार आ रहा है। वह कौनसा गुण? बाबा ने कहा एक गुण यह है कि जब प्रोग्राम बनता है, तो सब बड़े उमंग-उत्साह से पहुँच जाते हैं। अपने सरकमस्टांश को किनारे कर, मधुबन से दादी का जब बुलावा होता है तो एवररेडी बन बुलावे पर एक्यूरेट पहुँच जाते हैं, यह गुण सभी का बहुत अच्छा है। इस गुण को देख करके बाबा मुबारक देते हैं। तो जैसे इस समय यह गुण बहुत प्रिय लग रहा है ऐसे जब भी बड़े निमित्त बने हुए कोई सेवा के लिए भी आर्डर देवें तो आप समय प्रमाण, डायरेक्शन प्रमाण वहाँ पहुँच करके वह कार्य करो। तो यह भी एक बड़ों को रिगार्ड देना है, हाँ जी का पाठ पढ़के बड़ों की बहुत दुआयें लेनी हैं, इसलिए बाबा इस गुण के ऊपर हरेक बच्चे को अरब गुणा, खरब गुणा मुबारक देते हैं।

बाकी बाबा की दृष्टि में तो सब समाये हुए ही थे, और जब मैं वतन में जाती हूँ तो बाबा की आंखें ही मेरे लिए टी.वी. होती हैं। और बाबा का जो एक एक बच्चे प्रति प्यार है, वह प्यार की तस्वीर बाबा की आंखों की टी.वी. से ही मैं देखती रहती हूँ। अच्छा – ओम् शान्ति।

(२१)

प्रातःमुरली 10-10.94 ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज-21.7.73 मधुबन

अपने को जस्टिस समझते हो ? क्या अपने आपको और सर्व-आत्माओं को जज कर सकते हो ? वह जस्टिस तो सिर्फ बोल और कर्म को ही जज करते हैं लेकिन आप तो संकल्प को भी जज कर सकते हो । ऐसे जस्टिस जो अपने और दूसरी आत्माओं के भी संकल्प को जज कर सकें व परख सकें, ऐसे बन गये हो ? ऐसा जस्टिस कौन बन सकता है ? जिसकी बुद्धि का काँटा एकाग्र हो । जैसे तराजू की सही परख तब होती है जब काँटा एकाग्र हो जाता है, हलचल बन्द हो जाती है और दोनों तरफ समान हो जाती है । ऐसे ही जिसका बुद्धि-योग रूपी काँटा एकाग्र है जिसकी बुद्धि में कोई हलचल नहीं और निर्विकल्प स्टेज व स्थिति है और जिसके बोल और कर्म में, लव और लॉ में, स्नेह और शक्ति में अर्थात् इन दोनों में बैलेन्स है तो ऐसा जस्टिस यथार्थ जजमेन्ट दे सकता है, ऐसी आत्मा सहज ही किसी को परख सकती है । क्या ऐसी परखने की शक्ति व जजमेन्ट करने की शक्ति अपने में अनुभव करते हो ?

लौकिक जज अगर जजमेन्ट रॉंग करते हैं तो किसी आत्मा का एक जन्म व्यर्थ गँवा सकते हैं या उसका कुछ समय व्यर्थ गँवा सकते हैं अथवा उसको कई प्रकार के नुकसान पहुँचाने के निमित्त बन सकते हैं, लेकिन आप रुहानी जस्टिस अगर किसी को परख न सके तो आत्मा के अनेक जन्मों की तकदीर को नुकसान पहुँचाने के निमित्त बन जायेंगे क्या अपने ऊपर ऐसी जिम्मेवारी महसूस करते हो ? जब आप लोग सर्व-आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनते हो, अनेक आत्माओं का बाप से मिलन मनाने के निमित्त बनते हो, तो ऐसी आत्माओं को अपने ऊपर कितनी बड़ी जिम्मेवारी महसूस करनी चाहिए । यदि कोई तड़पती हुई प्यासी आत्मा आपके सामने आये, उनकी तड़प व प्यास को जान कर उसकी प्यास मिटाने के निमित्त कौन है ? बाप या आप ? बाप तो बैकबोन है, लेकिन निमित्त शक्ति सेना और पाण्डव सेना ही है । तो निमित्त बनने वालों के ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेवारी है जो किसी भी आत्मा को किसी भी बात से या किसी प्रॉपर्टी से भी वंचित नहीं कर सकते क्या ऐसे सर्व के महादानी और वरदानी बने हो ? क्या एक सेकेण्ड में किसी को परख सकते हो ? अगर किसी को आवश्यकता हो शान्ति की और आप उसको सुख का रास्ता बताओ (परखने की शक्ति कम होने के कारण) तो भी वह सन्तुष्ट नहीं होगा । इसलिये हरेक की प्राप्ति की इच्छा को परखने वाला ही सम्पूर्ण और यथार्थ जजमेन्ट कर सकता है । ऐसी सर्व की इच्छाओं को जानने वाले की विशेष क्वालिफिकेशन्स कौन-सी होगी जिससे बुद्धि रूपी काँटा एकाग्र हो ? लव और लॉ का बैलेन्स हो उसके लिये मुख्य विशेष धारणा क्या होगी ? (सभी ने बताया) बातें तो बहुत अच्छी-अच्छी सुनाई । इन सभी का सार हुआ कि स्वयं जो इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में स्थित होगा वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है ।

अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते । इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज तब रह सकती है जब स्वयं युक्ति-युक्त सम्पन्न, नॉलेजफुल और सदा सक्सेसफुल अर्थात् सफलता-मूर्त होंगे ! जो स्वयं सफलता-मूर्त नहीं होगा तो वह अनेक आत्माओं में संकल्प को भी सफल नहीं कर सकता । इसलिये जो सम्पन्न नहीं तो उसकी इच्छायें जरूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज आती है । तब कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रह जाती तो ऐसी स्टेज को ही कर्मातीत अथवा फरिश्तेपन की स्टेज कहा जाता है । ऐसी स्थिति वाला ही हर

आत्मा को यथार्थ परख सकता है और दूसरों को प्राप्ति करा सकता है । तो ऐसी स्टेज अपने समीप अनुभव करते हो या अभी तक यह स्टेज़ बहुत दूर है ? सामने है या समीप है ? इतने समीप है कि अभी-अभी चाहो तो वहाँ पहुँच जाओ अथवा उसको भी अभी समीप ला रहे हो ? विनाश की ताली व सीटी बजे और आप अपनी स्टेज़ पर स्थित हो जाओ जैसे कि सिंहासन पर समीप आ गये और सिर्फ चढ़कर बैठना ही बाकी रह जाये अर्थात् सीटी बजे और सीट पर बैठ जाओ ।

जैसे चेयर्स का खेल होता है ना ? दौड़ते रहते हैं, सीटी बजी और कुर्सी पर बैठ गये । जिसने कुर्सी ली वह विजयी, नहीं तो हार । यह भी कुर्सी का खेल चल रहा है । तो इसमें आप क्या समझते हो ? अभी तीन तालियाँ बजेंगी और तीसरी पर चेयर पर बैठ जाओ क्या इतनी तैयारी है ? लेकिन ये तीन तालियाँ जल्दी-जल्दी बजती हैं उनके बीच में ज्यादा टाईम नहीं होता है । तो क्या इतनी तैयारी है कि जो तीसरी पर झट चेयर पर बैठ जाओ, ऐसी गॉरन्टी है ना ? 'कोशिश' शब्द कहना तो मानो कि शक है कोई । कल्प पहले सीट पर नहीं बैठे थे क्या ? कोई-न-कोई कुर्सी लेना — वह कोई बड़ी बात नहीं है । कोई-न-कोई कुर्सी तो प्रजा को भी मिलेगी । जब सोलह हज़ार को सीट मिलेगी तो 9 लाख वालों को भी सीट मिलेगी । लेकिन फर्स्ट सीट के लिये सदा अपने को एवर-रेडी बनाना पड़े । अगर निमित्त बनने वाले ही सेकण्ड स्टेज तक पहुँचे तो जिनके आप निमित्त बनेंगे वह कहाँ तक पहुँचेंगे ? इसलिये जो अपने को विश्व-कल्याणकारी समझ कर चल रहे हैं, उनको तो सदैव ताली अथवा सीटी का इन्तज़ार करना चाहिए । इन्तज़ार वह करेगा जिसका पहले से ही अपना इन्तज़ाम हुआ पड़ा होगा । अगर इन्तज़ाम नहीं है तो इन्तज़ार नहीं कर सकता । तो पहले से ही इन्तज़ाम करना—यह है महारथियों की व महावीरों की निशानी । तो अभी एवर-रेडी बनने के लिये अभी से ही अपनी चैकिंग करो ।

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो, वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरुषार्थ का चार्ट भी शुरु से निश्चय करके देखो । [illegible] सब्जेक्ट्स हैं । चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में कितने प्रतिशत में पास हो उसको देखो । [illegible] चार सबजेक्ट हैं — ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा—वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं । तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं — सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरु परन्तु चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का । यह भी एक विशेष सम्बन्ध है—आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई । यह सम्बन्ध भी पुरुषार्थ को सहज कर देता है । जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वैसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं । एक तो बाप के सम्बन्ध में फरमानबरदार, शिक्षक के सम्बन्ध में ईमानदार और गुरु के सम्बन्ध में आज्ञाकारी और साजन के सम्बन्ध में वफ़ादार । जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज़ करके देखो ।

इसके साथ-साथ चार सलोगन्स भी स्मृति में रखो — वह कौन-से ? बाबा के सम्बन्ध में सलोगन है — सन शोज फादर अर्थात् सपूत बन सबूत देना है । शिक्षक के रूप में सलोगन है — जब तक जीना है तब तक पढ़ना है अर्थात् लास्ट घड़ी तक पढ़ना है । यह लक्ष्य अगर मजबूत है तो फिर सर्व प्राप्तियाँ स्वतः ही होती हैं । और गुरु के रूप में सलोगन है — जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये, जो सुनाये, जैसे सुनावें, जैसे चलावें और जैसे [illegible] अर्थात् जैसे कि कोई हुक्मी हुक्म चला रहा है — यह है सद्गुरु का

सलोगन। अभी साजन के रूप में क्या सलोगन है — तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊं और तुम्हीं से स्वासों-श्वास साथ रहूँ। यह है साजन के रूप का सलोगन। यह सभी बातें अपने सामने लाकर अपने पुरुषार्थ को चेक करो। इन सभी को रिवाइज़ करना है।

यह भी चेक करना है कि बहुत समय से और एक-रस अर्थात् लगातार क्या चारों ही सम्बन्ध निभाते रहे हैं या बीच-बीच में कट हुआ है? अगर बीच में कुछ मार्जिन रह गयी है तो बार-बार कटी हुई चीज़ कमजोर होती है। इसलिये अपने जीवन को इन चारों ही बातों के आधार पर रिवाइज़ कर के देखो। इस चेकिंग को करके अपने-आप को परख सकेंगे कि मेरी प्राप्ति व प्रारब्ध क्या है? सूर्यवंशी है या चन्द्रवंशी है? सूर्यवंशी में राजाई फैमिली में हैं या स्वयं महाराजा-महारानी बनने वाले हैं? अभी जबकि समय नज़दीक है फाइनल पेपर का तो जैसे लौकिक पढ़ाई में भी सभी सब्जेक्ट्स को रिवाइज किया जाता है और एक-एक सबजेक्ट्स को रिवाइज कर अपनी कमी को सम्पन्न करते हैं, इसी प्रकार सभी को अपने पुरुषार्थ को इसी रीति रिवाइज करना है। कैसे स्वयं का जस्टिस बनो — अभी वह तरीका सुना रहे हैं। जब स्वयं को जज करना आ जायेगा तो फिर दूसरों को भी सहज ही परख सकेंगे। जब स्वयं प्राप्ति-सम्पन्न होंगे तो दूसरों को भी प्राप्ति करा सकेंगे। यह चेक करना तो सहज है ना? एक सब्जेक्ट अथवा एक सम्बन्ध व एक धारणा व एक सलोगन में भी कमी नहीं होनी चाहिए।

जबकि अभी रिजल्ट आउट होने का समय आ रहा है, तो रिजल्ट आउट होने से पहले कम्पलेन्ट्स को कम्पलीट करो। अपनी कम्पलेन्ट भी आप स्वयं ही करते हो। अमृतवेले से अपनी कम्पलेन्ट करते हो। जब तक अपनी कम्पलेन्ट्स हैं तब तक कम्पलीट नहीं हो सकेंगे। इसलिये स्वयं ही मास्टर सर्वशक्तिमान बन अपनी कम्पलेन्ट को कम्पलीट करो। अभी फिर भी लास्ट चान्स का समय है। फिर नहीं तो टू लेट का बोर्ड लग जायेगा। अभी प्राप्ति का समय भी — 'बहुत गई, थोड़ी रही है' नहीं तो पश्चाताप् का समय आ जायेगा फिर पश्चाताप् के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे। इसलिये अभी जो थोड़ी रही हुई है, यह चान्स भी चाहे किसी और के निमित्त आप लोगों को भी यह चान्स मिला है। फिर भी किसी प्रकार का चान्स तो है ना? तो चान्स को गँवाना व लेना, अपने प्रयत्न से आप जो चाहो वह कर सकते हो। इसलिये अभी से रिवाइज़ करो। यह तो सुना दिया कि जब रिवाइज़ करो व जज करो तो किस रूप में करना है। विधि तो सुना ही दी है। क्योंकि विधि-पूर्वक करने से सिद्धि की प्राप्ति तो हो ही जायेगी।

जो सम्पूर्ण स्टेज के अति नज़दीक होंगे उनके संकल्प में, बोल में और कर्म में एक नशा रहेगा। वह कौन-सा? ईश्वरीय नशा तो सब को है ही। ईश्वरीय नशे का वरसा तो ईश्वरीय गोद ली और प्राप्त हुआ। वह तो है ही। लेकिन वह विशेष क्या नशा रहेगा? उनके संकल्प में, बोल में नशे की कौन-सी बात होगी? नशा यह होगा कि जो भी कुछ कर रहा हूँ उसमें सम्पूर्ण सफलता हुई ही पड़ी है। होनी है व होगी — ऐसा नहीं, परन्तु हुई ही पड़ी है। संकल्प में भी यह नशा होगा कि मेरे हर संकल्प की सिद्धि हुई ही पड़ी है। कर्म में भी यह नशा होगा कि मेरे हर कर्म के पीछे सफलता मेरी परछाई की तरह है। मेरे बोल की सिद्धि हुई ही पड़ी है। सफलता मेरे पीछे-पीछे आने वाली है। सफलता मुझसे अलग हो ही नहीं सकती। ऐसा नशा हर संकल्प में, हर बोल और हर कर्म में जब होता है, तब समझो अति समीप

हैं। होना तो चाहिए, लॉ तो ऐसे कहता है व कर्म की फिलॉसफी व ज्ञान तो यह कहता है — यह है समीप। अभी इससे जज करो तो अति समीप हैं या समीप हैं या सामने हैं। ये तीन स्टेजिस हो गई न ? अच्छा।

सभी के अन्दर एक संकल्प की हलचल है — बह कौन-सी ? तो न मालूम यह मिलन भी कब तक ? इस हलचल का रेसपॉन्स कौन-सा है ? देखो पहले भी सुनाया कि प्राप्ति का समय अभी बहुत गया, थोड़ा रहा, थोड़े का भी थोड़ा है। जबकि प्राप्ति का समय थोड़ा है और कई आत्मायें आने वाली हैं जिनके निमित्त आप लोगों को भी चान्स है। ऐसी आत्माओं के प्रति अभी बाप भी बन्धन में बँधे हुए हैं। इसलिये जब [illegible] आ रहे हैं अपना कल्प पहले का हक नम्बरवार ले रहे हैं तो बाप-दादा को भी हक देने आना ही पड़े ना ? तो ऐसी हलचल नहीं मचाओ कि न मालूम क्या होना है ? लेकिन अव्यक्त मिलन का अव्यक्त रूप से अनुभव कराने के लिये बीच-बीच में मार्जिन दी जाती है व समय दिया जाता है कि जिससे कभी अचानक व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन का पार्ट समाप्त हो तो अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सको। जब तक बाप की सम्पूर्ण प्रत्यक्षता नहीं हो जाती तब तक बच्चों और बाप का मिलन तो होना ही है। लेकिन चाहे व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन और चाहे अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन, लेकिन मिलन तो अन्त तक है ना ? इसलिये ऐसा समय आने वाला है कि जिसमें यदि अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन का अनुभव नहीं होगा तो बाप के मिलन का, प्राप्ति का और सर्वशक्तियों के वरदान का जो सुन्दर मिलन का अनुभव है, उससे वंचित रह जायेंगे। इसलिये यह दोनों मिलन अभी तक तो साथ-साथ चल रहे हैं लेकिन लास्ट स्टेज क्या है ? लास्ट स्टेज की तैयारी कराने के लिये बाप को ही समय देना पड़ता है और सिखलाना पड़ता है। अभी समझा क्या होने वाला है। अभी इतनी हलचल में नहीं आओ। जब होने वाला होगा तो अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने वालों को स्वयं ही आवाज़ आयेगा, टचिंग होगी, सूक्ष्म संकल्प होगा, तार पहुँचेगी या ट्रंक-काल [illegible] पकड़ सकेंगे। जब अव्यक्त मिलन का अनुभव होगा तब तो पहचानेंगे व पहुँचेंगे। इसके बीच-बीच में यह चान्स दे अभ्यास कराते हैं। बाकी घबराने की कोई बात नहीं। समझा। अच्छा ! ऐसे सदा सफलता-मूर्त, ज्ञान स्वरूप, शक्ति-सम्पन्न, दिव्य धारणा सम्पन्न, योग-युक्त, युक्ति-युक्त संकल्प और कर्म करने वाले, परखने की शक्ति को हर आत्मा के प्रति कर्म में लाने वाले, रुहानी जस्टिस श्रेष्ठ आत्माओं को सदा वरदानी मूर्त आत्माओं को और बाप-दादा के नूरे रत्नों को याद-प्यार और नमस्ते।

वरदान:- महात्यागी निःस्वार्थी स्वरूप द्वारा महादानी, वरदानी भव

महादानी अर्थात् मिले हुए खजाने बिना स्वार्थ के सर्व आत्माओं प्रति देने वाले-निःस्वार्थी। वरदानी अर्थात सदा स्वयं में गुणों, शक्तियों और ज्ञान के खजाने से सम्पन्न, सदा सर्व आत्माओं प्रति श्रेष्ठ और शुभ भावना तथा सर्व का कल्याण हो ऐसी श्रेष्ठ कामना रखने वाली सदा रूहानी रहमदिल, फ्राखदिल आत्मा। लेकिन इसके लिए महात्यागी अर्थात् निःस्वार्थी और नष्टोमोहा स्थिति चाहिए। न किसी से घृणा हो और न किसी में लगाव वा झुकाव हो।

स्लोगन:- व्यर्थ की [illegible] है।

2-10-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप की याद के साथ-साथ ज्ञान धन से सम्पन्न बनो, बुद्धि में सारा ज्ञान घूमता रहे तब अपार खुशी रहेगी, सृष्टि चक्र के ज्ञान से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे" (a)

प्रश्न:- किन बच्चों (मनुष्यों) की प्रीत बाप से नहीं हो सकती है?

उत्तर:- जो रौरव नर्क में रहने वाले विकारों से प्रीत करते हैं, ऐसे मनुष्यों की प्रीत बाप से नहीं हो सकती। तुम बच्चों ने बाप को पहचाना है इसलिए तुम्हारी बाप से प्रीत है।

प्रश्न:- किसे सतयुग में आने का हुक्म ही नहीं है?

उत्तर:- बाप को भी सतयुग में आना नहीं है तो वहाँ काल भी नहीं आ सकता है। जैसे रावण को सतयुग में आने का हुक्म नहीं, ऐसे बाबा कहते बच्चे मुझे भी सतयुग में आने का हुक्म नहीं। बाबा तो तुम्हें सुखधाम का लायक बनाकर घर चले जाते हैं, उन्हें भी लिमिट मिली हुई है।

ओम् शान्ति। (रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बच्चे याद की यात्रा में बैठे हुए हो?) अन्दर में यह ज्ञान है ना कि हम आत्मायें याद की यात्रा पर हैं। यात्रा अक्षर तो जरूर दिल में आना चाहिए। जैसे वह यात्रा करते हैं हरिद्वार, अमरनाथ जाने की। यात्रा पूरी की फिर लौट आते हैं। यहाँ फिर तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम जाते हैं शान्तिधाम। बाप ने आकर हाथ पकड़ा है। हाथ पकड़कर पार ले जाना होता है ना। कहते भी हैं हाथ पकड़ लो क्योंकि विषय सागर में पड़े हैं। (अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो। अन्दर में यह आना चाहिए कि हम जा रहे हैं। इसमें मुख से कुछ बोलना भी नहीं है। अन्दर में सिर्फ याद रहे–बाबा आया हुआ है लेने लिए। याद की यात्रा पर जरूर रहना है) इस याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कटने हैं, तब ही फिर उस मंजिल पर पहुँचेंगे। कितना क्लीयर बाप समझाते हैं। जैसे छोटे बच्चों को पढ़ाया जाता है ना। (सदैव बुद्धि में हो कि हम बाबा को याद करते जा रहे हैं। बाप का काम ही है पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाना। बच्चों को ले जाते हैं। आत्मा को ही यात्रा करनी है। हम आत्माओं को बाप को याद कर घर जाना है। घर पहुँचेंगे फिर बाप का काम पूरा हुआ। बाप आते ही हैं पतित से पावन बनाकर घर ले जाने। पढ़ाई तो यहाँ ही पढ़ते हैं। भल घूमो फिरो, कोई भी काम-काज करो, बुद्धि में यह याद रहे। योग अक्षर में यात्रा सिद्ध नहीं होती है। योग सन्यासियों का है। वह तो सब है मनुष्यों की मत। आधाकल्प तुम मनुष्य मत पर चले हो। आधाकल्प दैवी मत पर चले थे। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत।)

(योग अक्षर नहीं कहो, याद की यात्रा कहो। आत्मा को यह यात्रा करनी है। वह होती है जिस्मानी यात्रा, शरीर के साथ जाते हैं। इसमें तो शरीर का काम ही नहीं। आत्मा जानती है, हम आत्माओं का वह स्वीट घर है। बाप हमको शिक्षा दे रहे हैं जिससे हम पावन बनेंगे। याद करते-करते तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है यात्रा।) हम बाप की याद में बैठते हैं क्योंकि बाबा के पास ही घर जाना है। बाप आते ही हैं पावन बनाने। सो तो पावन दुनिया में जाना ही है। बाप पावन बनाते हैं फिर नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तुम पावन दुनिया में जायेंगे। यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। हम याद की यात्रा पर हैं। हमको इस मृत्युलोक में लौटकर नहीं आना है। बाबा का काम है हमको घर तक पहुँचाना। बाबा रास्ता बता देते हैं अभी तुम तो मृत्युलोक में हो फिर अमरलोक नई दुनिया में होंगे। बाप लायक बनाकर ही छोड़ते हैं। सुखधाम में बाप नहीं ले जायेंगे। इनकी लिमिट

हो जाती है घर तक पहुँचाना। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। सिर्फ बाप को याद नहीं करना चाहिए, साथ में ज्ञान भी चाहिए। ज्ञान से तुम धन कमाते हो ना। इस सृष्टि चक्र की नॉलेज से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है, इसमें चक्र लगाया है। फिर हम घर जायेंगे फिर नयेसिर चक्र शुरू होगा। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहे तब खुशी का पारा चढ़े। बाप को भी याद करना है, शान्तिधाम, सुखधाम को भी याद करना है। 84 का चक्र अगर याद नहीं करेंगे तो चक्रवर्ती राजा कैसे बनेंगे। सिर्फ एक को याद करना तो सन्यासियों का काम है क्योंकि वह इनको जानते नहीं हैं। ब्रह्म को ही याद करते हैं। बाप तो अच्छी रीति बच्चों को समझाते हैं। याद करते-करते ही तुम्हारे पाप कट जाते हैं। पहले तो घर जाना है, यह है रूहानी यात्रा। गायन भी है चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे अर्थात् बाप से दूर रहे। जिस बाप से बेहद का वर्सा मिलना है उनको तो जानते ही नहीं। कितने चक्र लगाये हैं। हर वर्ष भी कई यात्रा करते हैं। पैसे बहुत होते हैं तो यात्रा का शौक रहता है। यह तो तुम्हारी है रूहानी यात्रा। तुम्हारे लिए नई दुनिया बन जायेगी फिर तो नई दुनिया में ही आने वाले हो। जिसको अमरलोक कहा जाता है। वहाँ काल होता नहीं जो किसको ले जाये। काल को हुक्म ही नहीं है नई दुनिया में आने का। रावण की तो यह पुरानी दुनिया है ना। तुम बुलाते भी यहाँ हो। बाप कहते हैं मैं पुरानी दुनिया में पुराने शरीर में आता हूँ। मुझे भी नई दुनिया में आने का हुक्म नहीं। मैं तो पतितों को ही पावन बनाने आता हूँ। तुम पावन बन फिर औरों को भी पावन बनाते हो। सन्यासी तो भाग जाते हैं। एकदम गुम हो जाते हैं। पता ही नहीं पड़ता है कहां चला गया क्योंकि वह डेस ही बदल लेते हैं। जैसे एक्टर्स रूप बदलते हैं। कभी मेल से फीमेल बन जाते हैं, कभी फीमेल से मेल बन जाते हैं। यह भी रूप बदलते हैं। सतयुग में थोड़ेही ऐसी बातें होंगी।

बाप कहते हैं हम आते हैं नई दुनिया बनाने। आधाकल्प तुम बच्चे राज्य करते हो फिर ड्रामा प्लैन अनुसार द्वापर शुरू होता है, देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं, उन्हों के बहुत गन्दे चित्र भी जगन्नाथपुरी में हैं। जगन्नाथ का मन्दिर है। यूँ तो उनकी राजधानी थी जो खुद विश्व के मालिक थे। वह फिर मन्दिर में जाकर बन्द हुआ, उनको काला दिखाते हैं। इस जगत नाथ के मन्दिर पर तुम बहुत समझा सकते हो। और कोई इनका अर्थ समझा नहीं सकते। देवता ही पूज्य से पुजारी बनते हैं। वह लोग तो हर बात में भगवान के लिए कह देते आपेही पूज्य, आपेही पुजारी। आप ही सुख देते हो, आप ही दु:ख देते हो। बाप कहते हैं मैं तो किसको दु:ख देता ही नहीं हूँ। यह तो समझ की बात है। बच्चा जन्मा तो खुशी होगी, बच्चा मरा तो रोने लग पड़ेंगे। कहेंगे भगवान ने दु:ख दिया। अरे, यह अल्पकाल का सुख-दु:ख तुमको रावण राज्य में ही मिलता है। मेरे राज्य में दु:ख की बात नहीं होती। सतयुग को कहा जाता है अमरलोक। इनका नाम ही है मृत्युलोक। अकाले मर पड़ते हैं। वहाँ तो बहुत खुशियाँ मनाते हैं, आयु भी बड़ी रहती है। बड़ी में बड़ी आयु 150 वर्ष की होती है। यहाँ भी कभी-कभी ऐसे कोई की होती है परन्तु यहाँ तो स्वर्ग नहीं है ना। कोई शरीर को बहुत सम्भाल से रखते हैं तो आयु बड़ी भी हो जाती है फिर बच्चे भी कितने हो जाते हैं। परिवार बढ़ता जाता है, वृद्धि जल्दी होती है। जैसे झाड़ से टाल-टालियां निकलती हैं—50 टालियां और उनसे और 50 निकलेंगी, कितना वृद्धि को पाते हैं। यहाँ भी ऐसे है। इसलिए इनका मिसाल बड़ के झाड़ से देते हैं। सारा झाड़ खड़ा है, फाउण्डेशन है नहीं। यहाँ भी आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। कोई को पता ही नहीं देवतायें कब थे, वह तो लाखों

वर्ष कह देते हैं। आगे तुम कभी ख्याल भी नहीं करते थे। बाप ही आकर यह बातें समझाते हैं। तुम अभी बाप को भी जान गये हो और सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, ड्युरेशन आदि सबको जान गये हो। नई दुनिया से पुरानी, पुरानी से नई कैसे बनती है, यह कोई नहीं जानते। अभी तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठते हो। यह यात्रा तो तुम्हारी नित्य चलनी है। घूमो फिरो परन्तु इस याद की यात्रा में रहो। यह है रूहानी यात्रा। तुम जानते हो भक्ति मार्ग में हम भी उन यात्राओं पर जाते थे। बहुत बार यात्रा की होगी जो पक्के भक्त होंगे। बाबा ने समझाया है एक शिव की भक्ति करना, वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर देवताओं की होती है, फिर 5 तत्वों की भक्ति करते हैं। देवताओं की भक्ति फिर भी अच्छी है क्योंकि उन्हों का शरीर फिर भी सतोप्रधान है, मनुष्यों का शरीर तो पतित है ना। वह तो पावन हैं फिर द्वापर से लेकर सब पतित बन पड़े हैं। नीचे गिरते आते हैं। सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का। जिन्न की भी कहानी बताते हैं ना। यह सब दृष्टान्त आदि इस समय के ही हैं। सब तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है जो कीड़ों को आपसमान ब्राह्मण बनाते हो। यहां के ही सब दृष्टान्त हैं।

तुम बच्चे पहले जिस्मानी यात्रा करते थे। अभी फिर बाप द्वारा रूहानी यात्रा सीखते हो। यह तो पढ़ाई है ना। भक्ति से देखो क्या-क्या हो गया है। दिमाग ही नहीं रहा है, जिसके आगे जाते हैं माथा टेकते ही रहते हैं। एक के भी आक्यूपेशन को नहीं जानते। हिसाब किया जाता है ना। सबसे जास्ती जन्म कौन लेते हैं फिर कम होते जाते हैं। यह ज्ञान भी अभी तुमको मिलता है। तुम समझते हो बरोबर स्वर्ग था। भारतवासी तो इतने पत्थर बुद्धि बने हैं, उनसे पूछो स्वर्ग कब था तो लाखों वर्ष कह देंगे। अभी तुम बच्चे जानते हो हम विश्व के मालिक थे, कितने सुखी थे अब फिर हमको बेगर टू प्रिन्स बनना है। दुनिया नई से पुरानी होती है ना। तो बाप कहते हैं - मेहनत करो। यह भी जानते हैं माया घड़ी-घड़ी भुला देती है।

बाप समझाते हैं बुद्धि में सदैव यह याद रखो हम जा रहे हैं, हमारा इस पुरानी दुनिया से लंगर उठा हुआ है। नईया उस पार जानी है। गाते हैं ना नईया हमारी पार ले जाओ। कब पार जानी है, वह जानते नहीं हैं। तो मुख्य है याद की यात्रा। बाप के साथ वर्सा भी याद आना चाहिए। बच्चे बालिग होते हैं तो बाप का वर्सा ही बुद्धि में रहता है। तुम तो बड़े हो ही। आत्मा झट जान लेती है, यह बात तो बरोबर है। बेहद के बाप का वर्सा है ही स्वर्ग। बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। बाप कहते हैं पवित्र जरूर बनना है। पवित्रता के कारण ही झगड़े होते हैं। वह तो बिल्कुल ही जैसे रौरव नर्क में पड़े हैं। और ही जास्ती विकारों में गिरने लग पड़ते हैं। इसलिए बाप से प्रीत रख नहीं सकते हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि हैं ना। बाप आते ही हैं प्रीत बुद्धि बनाने। बहुत हैं जिनकी रिंचक भी प्रीत बुद्धि नहीं है। कभी बाप को याद भी नहीं करते हैं। शिवबाबा को जानते ही नहीं हैं, मानते ही नहीं हैं। माया का पूरा ग्रहण लगा हुआ है। याद की यात्रा बिल्कुल ही नहीं। बाप मेहनत तो कराते हैं, यह भी जानते हो सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी यहाँ स्थापन हो रही है। सतयुग-त्रेता में कोई भी धर्म स्थापन होते नहीं। राम कोई धर्म स्थापन नहीं करते। यह तो स्थापना करने वाले बाप द्वारा यह बनते हैं। और धर्म स्थापक और बाप के धर्म स्थापना में रात-दिन का फर्क है। बाप आते ही हैं संगम पर जबकि दुनिया को बदलना है। बाप कहते हैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ, उन्होंने फिर युगे-युगे अक्षर रांग लिख

दिया है। आधाकल्प भक्तिमार्ग भी चलना ही है। तो बाप कहते हैं बच्चे इन बातों को भूलो मत। यह कहते हैं बाबा हम आपको भूल जाते हैं। अरे, बाप को तो जानवर भी नहीं भूलते हैं। तुम क्यों भूलते हो? अपने को आत्मा नहीं समझते हो। देह-अभिमानी बनने से ही तुम बाप को भूलते हो। अब जैसे बाप समझाते है, वैसे तुम बच्चों को भी टेव (आदत) रखनी चाहिए। भभके से बात करनी चाहिए। ऐसे नहीं, बड़े आदमी के आगे तुम फंक हो जाओ। तुम कुमारियाँ ही बड़े-बड़े विद्वान, पण्डितों के आगे जाती हो तो तुम्हें निडर हो समझाना है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बुद्धि में सदैव याद रहे कि हम जा रहे हैं, हमारी नईया का लंगर इस पुरानी दुनिया से उठ चुका है। हम हैं रूहानी यात्रा पर। यही यात्रा करनी और करानी है।

२. किसी भी बड़े आदमी के सामने निर्भयता (भभके) से बात करनी है, फंक नहीं होना है। देही-अभिमानी बनकर समझाने की आदत डालनी है।

वरदान:- विश्व में ईश्वरीय परिवार के स्नेह का बीज बोने वाले विश्व सेवाधारी भव

आप विश्व सेवाधारी बच्चे विश्व में ईश्वरीय परिवार के स्नेह का बीज बो रहे हो। चाहे कोई नास्तिक हो या आस्तिक....सबको अलौकिक वा ईश्वरीय स्नेह की, निःस्वार्थ स्नेह की अनुभूति कराना ही बीज बोना है। यह बीज सहयोगी बनने का वृक्ष स्वत: ही पैदा करता है और समय पर सहजयोगी बनने का फल दिखाई देता है। सिर्फ कोई फल जल्दी निकलता है और कोई फल समय पर निकलता है।

स्लोगन:-

भाग्यविधाता बाप को जानना, पहचानना और उनके डायरेक्ट बच्चे बन जाना यह सबसे बड़ा भाग्य है।

सूचना - 1

निम्नलिखित सेवा केन्द्रों पर नये फोन लगे हैं या परिवर्तन हुए हैं सो इस प्रकार हैं।

1. अमराईवाड़ी, अहमदाबाद (Amraiwadi, A'bad), गुजरात का परि॰फोन नम्बर --2772659.
2. सेक्टर-७, भिलाई (Sector-7, Bhilai), मध्य प्रदेश के परि॰फोन नम्बर - 223553, 899268.
3. सरजापुरा, बैंगलोर (Sarjapura, B'lore), कर्नाटक का नया फोन नम्बर - 080-5536865.
4. ब्रोड-वे,चेन्नई (Broadway, Chennai), तमिलनाडु का परिवर्तित फोन नम्बर - 5362636.
5. बांगुर-एवेन्यू ,कलकता (Bangur Avenue, Calcutta), पश्चिम बंगाल के परिवर्तित फोन व फेक्स नम्बर -----------------Ph.-- 5747863 2. **Fax No**.-- 5740955.
6. तिलक पथ, इन्दौर (TilakPath, Indore), मध्य प्रदेश के वर्तमान फोन, फेक्स नम्बर व ई-मेल पता -- Ph. - 433999, **Fax** - 430410, **E-mail** - *indoryog@bom4.vsnl.net.in*
7. महकल (Mehkal), महाराष्ट्र का नया फोन नम्बर - 07268-24880.
8. नीसिंग (Nissing), हरियाणा का नया फोन नम्बर - 01745-71231.
9. पुरी (Puri), उड़ीसा का दूसरा फोन नम्बर -- 28456.
10. सतारा (Satara), महाराष्ट्र का दूसरा फोन नम्बर - 84301.
11. सिंगरौली (Singrauli), मध्य प्रदेश के वर्तमान फोन नम्बर - 33339, 33631.

27-1-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - सदा याद रखो कि हम ब्राह्मण चोटी है, पुरूषोत्तम बन रहे हैं तो हर्षित रहेंगे, अपने आप से बातें करना सीखो तो अपार खुशी रहेगी।"

प्रश्न:- बाप की शरण में कौन आ सकते हैं? बाप शरण किसको देते हैं?

उत्तर:- बाप की शरण में वही आ सकते हैं जो पूरा-पूरा नष्टोमोहा हो। जिनका बुद्धियोग सब तरफ़ से टूटा हुआ हो। मित्र सम्बन्धियों आदि में बुद्धि की लागत न हो। पक्की सगाई एक बाप के साथ हो। बुद्धि में रहे मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। ऐसे बच्चे ही सर्विस कर सकते हैं। बाप भी ऐसे बच्चों को ही शरण देते हैं।

ओम् शान्ति। यह है रूहानी बाप, टीचर, गुरू। यह तो बच्चे अच्छी रीति समझ गये हैं दुनिया इन बातों को नहीं जानती। भल सन्यासी कहते हैं शिवोहम्। तो भी ऐसे नहीं कहेंगे कि हम बाप टीचर गुरू हैं। वह सिर्फ कहते हैं शिवोहम् तत् त्वम्। परमात्मा सर्वव्यापी है तो हरेक बाप टीचर गुरू हो जाये। ऐसे तो कोई समझते भी नहीं। मनुष्य अपने को भगवान, परमात्मा कहलायें यह तो बिल्कुल ही रांग है। बच्चों को जो बाप समझाते हैं वह तो बुद्धि में धारण होता है ना। उस पढ़ाई में कितनी सब्जेक्ट होती हैं, ऐसे नहीं सब सब्जेक्ट स्टूडेन्ट की बुद्धि में रहती हैं। यहाँ जो बाप पढ़ाते हैं वह एक सेकण्ड में बच्चों की बुद्धि में आ जाता है। तुम रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाते हो। तुम ही त्रिकालदर्शी वा स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। उस जिस्मानी पढ़ाई में सब्जेक्ट बिल्कुल अलग हैं। तुम सिद्ध कर समझाते हो, सर्व का सद्गति दाता वह एक ही बाप है। सभी आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं। कहती हैं ओ गॉड फादर। तो ज़रूर बाप से वर्सा मिलता होगा। वह वर्सा खोने से दु:ख में आ जाते हैं। यह सुख दु:ख का खेल है। इस समय सभी पतित दु:खी हैं। पवित्र बनने से सुख ज़रूर मिलता है। सुख की दुनिया बाप स्थापन करते हैं। बच्चों को बुद्धि में यह रखना है कि हमको बाप समझाते हैं, नॉलेजफुल एक बाप ही है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान बाप ही देते हैं। और सभी धर्म जो स्थापन हुए हैं वह अपने समय पर आयेंगे। यह बातें और कोई की बुद्धि में नहीं हैं। तुम बच्चों के लिए बाप ने यह पढ़ाई बिल्कुल सहज रखी है। सिर्फ थोड़ा विस्तार से समझाते हैं। मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। योग की महिमा बहुत है। प्राचीन योग भारत का गाया हुआ है। परन्तु योग से फायदा क्या हुआ था, यह किसको पता नहीं है। यह है गीता का वही योग जो निराकार भगवान सिखलाते हैं। बाकी जो भी सिखलाते हैं वह मनुष्य हैं, देवताओं के पास तो योग की बात ही नहीं। यह हठयोग आदि सब मनुष्य सिखलाते हैं। देवतायें न सीखते हैं, न सिखलाते हैं। दैवी दुनिया में योग की बात नहीं। योग से सब पावन बन जाते हैं। वह ज़रूर यहाँ बनेंगे। बाप आते ही हैं संगम पर नई दुनिया बनाने। अभी तुम पुरानी दुनिया से नई दुनिया में बदली हो रहे हो। यह किसको समझाना भी वन्डर है। हम ब्राह्मण चोटी हैं, सतयुग और कलियुग के बीच

में हैं ब्राह्मण चोटी। इसको ही संगमयुग कहा जाता है, जिसमें तुम पुरूषोत्तम बन रहे हो। यह बच्चों की बुद्धि में रहे कि हम पुरूषोत्तम बनते हैं तो सदैव हर्षित रहेंगे। जितना सर्विस करेंगे उतना हर्षित रहेंगे। कमाई करनी और करानी है। जितना प्रदर्शनी में सर्विस करेंगे तो सुनने वालों को भी सुख मिलेगा। अपना और दूसरों का कल्याण होगा। छोटे सेन्टर पर भी मुख्य 5-6 चित्र ज़रूर चाहिए। उन पर समझाना सहज है। सारा दिन सर्विस ही सर्विस। मित्र सम्बन्धियों तरफ़ कोई भी लागत नहीं होनी चाहिए। जो इन आँखों से देख रहे हो उन सबका विनाश होना है। बाकी जो दिव्य दृष्टि से देखते हो उनकी स्थापना हो रही है। ऐसे अपने से बातें करो तो तुम पक्के हो जायेंगे। बेहद के बाप से मिलने की खुशी होनी चाहिए। कोई राजा के पास जन्म लेता है तो कितना फखुर में रहता है। तुम बच्चे स्वर्ग के मालिक बन रहे हो। हर एक अपने लिए मेहनत कर रहे हैं। बाप सिर्फ कहते हैं काम चिता पर बैठ तुम काले हो गये हो। अब ज्ञान चिता पर बैठो तो गोरे बन जायेंगे। बुद्धि में यही चिन्तन चलता रहे, भल ऑफिस में काम करते रहो, याद करते रहो। ऐसे नहीं फुर्सत नहीं है। जितनी फुर्सत मिले रूहानी कमाई करो। कितनी बड़ी कमाई है। हेल्थ वेल्थ दोनों एक साथ मिलती हैं। एक कहानी है अर्जुन और भील की। ऐसे गृहस्थ व्यवहार में रहकर ज्ञान-योग में अन्दर वालों से भी तीखे जा सकते हैं। सारा मदार याद पर है। यहाँ सब बैठ जायेंगे तो सर्विस कैसे करेंगे। रिफ्रेश होकर सर्विस में लग जाना है। सर्विस का ख्याल रखना चाहिए। बाबा तो प्रदर्शनी में जा न सके क्योंकि बापदादा दोनों इकट्ठे हैं। बाबा की आत्मा और इनकी आत्मा इकट्ठी है। यह वन्डरफुल युगल है। इस युगल को तुम बच्चों के सिवाए कोई जान न सके। अपने को युगल भी समझते हैं फिर भी कहते हैं मैं एक ही बाबा का सिकीलधा बच्चा हूँ। इस लक्ष्मी-नारायण के चित्र को देखकर बहुत खुशी होती है। हमारा दूसरा जन्म यह है, हम गद्दी पर जरूर बैठेंगे। तुम भी राजयोग सीख रहे हो, एम आब्जेक्ट सामने खड़ी है। इन्हें तो खुशी है कि मैं बाबा का सिकीलधा बच्चा हूँ। फिर भी सदैव याद ठहरती नहीं। और-और तरफ़ ख्यालात चले जाते हैं। ड्रामा का लॉ नहीं जो एकदम याद ठहर जाए और कोई ख्याल न आये। माया के तूफान याद नहीं करने देते। जानता हूँ हमारे लिए बहुत सहज है, क्योंकि बाबा की प्रवेशता है। बाबा का नम्बरवन सिकीलधा बच्चा हूँ। पहले नम्बर में राजकुमार बनूँगा फिर भी याद भूल जाती है। अनेक प्रकार के ख्यालात आ जाते हैं। यह है माया। जब इस बाबा का अनुभव हो तब तो तुम बच्चों को समझा सकें। यह ख्यालात बन्द तब होंगे जब कर्मातीत अवस्था होगी। आत्मा सम्पूर्ण बन जाए फिर तो यह शरीर रह न सके। शिवबाबा तो सदैव प्योर ही प्योर है। पतित दुनिया और पतित शरीर में आकर पावन बनाने का पार्ट भी इनका ही है। ड्रामा में बंधायमान हैं। तुम पावन बन गये तो फिर नया शरीर चाहिए। शिवबाबा को अपना शरीर तो है नहीं। इस तन में इस आत्मा का महत्व है। उनका रखा क्या है! वह तो मुरली चलाकर चले जाते हैं। वह फ्री हैं। कभी कहाँ, कभी कहाँ चले जायेंगे। बच्चों को भी फील होता है कि यह शिवबाबा मुरली चला रहे हैं। तुम बच्चे समझते हो हम बाप को मदद

करने के लिए इस गॉडली सर्विस पर खड़े हैं। बाप कहते हैं हम भी अपना स्वीट होम छोड़कर आये हैं। परमधाम अर्थात् परे ते परे धाम है मूलवतन। बाकी खेल सारा सृष्टि पर चलता है। तुम जानते हो यह वन्डरफुल खेल है। बाकी दुनिया एक है।

वो लोग मून में जाने की कोशिश करते हैं, यह तो साइन्स का बल है। साइलेन्स के बल से हम जब साइन्स पर जीत पाते हैं तब साइन्स भी सुखदाई बन जाती है। यहाँ साइन्स सुख भी देती है तो दु:ख भी देती है। वहाँ तो सुख ही सुख है। दु:ख का नाम नहीं। ऐसी बातें सारा दिन बुद्धि में रहनी चाहिए। बाबा को कितने ख्यालात रहते हैं। बाँधेलियाँ विष पर कितनी मारें खाती हैं। कोई तो मोह वश फिर फँस पड़ते हैं। निश्चयबुद्धि वाले झट कहेंगे हमको अमृत पीना है, इसमें नष्टोमोहा चाहिए। पुरानी दुनिया से दिल उठ जानी चाहिए। ऐसे ही सर्विसएबुल दिल पर चढ़ सकते हैं। उनको शरणागति दे सकते हैं। कन्या पति की शरण में जाती है, विष बिगर नहीं रखते। फिर बाप को शरण लेना पड़ता है। परन्तु एकदम नष्टोमोहा चाहिए। पतियों का पति मिला अब उनसे हम बुद्धि योग की सगाई करते हैं। बस मेरा तो एक दूसरा न कोई। जैसे कन्या की पति से प्रीत जुट जाती है, यह है आत्मा की प्रीत परमात्मा से। उनसे दु:ख मिलता है, इनसे सुख मिलता है। यह है संगम, इसको कोई जानता नहीं। तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। हमको खिवैया अथवा बागवान मिला है, जो हमको फूलों के बगीचे में ले जाते हैं। इस समय सभी मनुष्य काँटे मिसल बन पड़े हैं। सबसे बड़ा काँटा है काम का। पहले तुम निर्विकारी फूल थे, धीरे-धीरे कला कम हो गई अब तो बड़े काँटे हो गये हो। बाबा को बबुलनाथ भी कहते हैं। तुम जानते हो असली नाम शिव है। बबुलनाथ नाम रखते हैं क्योंकि काँटों को फूल बनाते हैं। भक्ति मार्ग में बहुत नाम रखते हैं। वास्तव में नाम एक ही शिव है। रूद्र ज्ञान यज्ञ वा शिव ज्ञान यज्ञ बात एक ही है। रूद्र यज्ञ से विनाश ज्वाला निकली और श्रीकृष्णपुरी अथवा आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हुई। तुम इस यज्ञ द्वारा मनुष्य से देवता बनते हो। चित्र भी वन्डरफुल बनाते हैं। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। यह सब बातें तुम जानते हो कि ब्रह्मा सरस्वती ही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह निश्चय है। लक्ष्मी-नारायण ही 84 जन्मों के बाद ब्रह्मा सरस्वती बनते हैं। मनुष्य तो ऐसी बातें सुनकर चक्रित होते होंगे। खुशी में भी आते होंगे। परन्तु माया कम नहीं है। काम महाशत्रु है। माया नाम रूप में फँसाए गिरा देती है। बाप को याद करने नहीं देती। फिर वह खुशी कम हो जाती है। इसमें खुश नहीं होना चाहिए कि हम बहुतों को समझाते हैं, पहले देखना है बाबा को कितना याद करता हूँ। रात को बाबा को याद करके सोता हूँ या भूल जाता हूँ। कोई बच्चे तो पक्के नेमी भी हैं।

तुम बच्चे बहुत लक्की हो। बाप के ऊपर तो बहुत बोझ हैं। परन्तु फिर भी रथ को रियायत मिल जाती है। ज्ञान और योग भी है, इसके बिगर लक्ष्मी-नारायण पद कैसे पायेंगे। खुशी तो रहती है, हम अकेला बाप का बच्चा हूँ और फिर मेरे ढेर बच्चे हैं, यह नशा भी रहता है तो माया विघ्न भी डालती है। बच्चों को भी माया के विघ्न आते होंगे।

कर्मातीत अवस्था आगे चलकर आनी है। यह बापदादा दोनों इकट्ठे हैं। कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे.. बाप तो प्यार का सागर है। इनकी आत्मा इकट्ठी है। यह भी प्यार करते हैं। समझते हैं जैसा कर्म मैं करूँगा मुझे देख और भी करेंगे। बहुत मीठा रहना है। बच्चे बड़े सयाने चाहिए। इन लक्ष्मी-नारायण में देखो कितनी सयानप है। सयानप से विश्व का राज्य लिया है। प्रदर्शनी द्वारा प्रजा तो बहुत बनती है। भारत बहुत बड़ा है, इतनी सर्विस करनी है। दूसरा याद में रहकर विकर्म भी विनाश करने हैं। यह है कड़ा फुरना (फिकर)। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें? इसमें मेहनत है। सर्विस के चांस बहुत हैं। ट्रेन में बैज पर सर्विस कर सकते हो। यह बाबा यह वर्सा। बरोबर 5 हज़ार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। फिर ज़रूर इनका राज्य आना चाहिए। हम बाबा की याद से पावन दुनिया का मालिक बन रहे हैं। ट्रेन में बहुत सर्विस हो सकती है। एक डिब्बे में सर्विस कर फिर दूसरे में जाना चाहिए। ऐसी सर्विस करने वाला ही दिल पर चढ़ेगा। बोलो हम आपको खुशखबरी सुनाते हैं। तुम पूज्य देवता थे फिर 84 जन्म ले पुजारी बने। अब फिर पूज्य बनो। सीढ़ी अच्छी है, इनसे ही सतो रजो तमो स्टेज सिद्ध करनी है। स्कूल में पिछाड़ी में गैलप करने का शौक होता है। अब यहाँ भी समझाया जाता है जिन्हों ने टाइम वेस्ट किया है, उन्हों को गैलप कर सर्विस में लग जाना चाहिए। सर्विस की मार्जिन बहुत है। सर्विसएबुल बच्चियाँ बहुत निकलनी चाहिए, जिनको बाबा कहाँ भी भेज दे। मन्दिरों में सर्विस अच्छी होगी। देवता धर्म वाले झट समझेंगे। गंगा स्नान पर भी तुम समझा सकते हो। तो दिल पर लगेगा ज़रूर। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सदा हर्षित रहने के लिए रूहानी सर्विस करनी है, सच्ची कमाई करनी और करानी है। अपना और दूसरों का कल्याण करना है। ट्रेन में भी बैज पर सर्विस करनी है।

२- पुरानी दुनिया से दिल हटा लेनी है। नष्टोमोहा बनना है, एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है।

वरदान:- हजूर को सदा साथ रख कम्बाइन्ड स्वरूप का अनुभव करने वाले विशेष पार्टधारी भव

बच्चे जब दिल से कहते हैं बाबा तो दिलाराम हाज़िर हो जाता है। इसीलिए कहते हैं हजूर हाज़िर है। और विशेष आत्मायें तो हैं ही कम्बाइन्ड। लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और बच्चे कहते हैं हम जो भी करते हैं, जहाँ भी जाते हैं बाप साथ ही है। कहा जाता है करनकरावनहार, तो करनहार और करावनहार कम्बाइन्ड हो गया। इस स्मृति में रहकर पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी बन जाते हैं।

स्लोगन:-

सर्वशक्तिमान बाप को अपना साथी बना लो तो कोई भी विघ्न आपको रोक नहीं सकता।

(1) ब्रह्मा को याद नहीं करना है।
2) राधे कृष्ण स्वयंवर के बाद बनना ... अलग 2 महाराजाओं के बच्चे हैं।

21-8-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – याद की यात्रा से ही तुम्हारी कमाई जमा होती है, तुम घाटे से फायदे में आते हो, विश्व के मालिक बनते हो"

प्रश्न:- सत का संग तारे कुसंग बोरे – इसका अर्थ क्या है?

उत्तर:- जब तुम बच्चों को सत का संग अर्थात् बाप का संग मिलता है तब तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। रावण का संग कुसंग है, उसके संग से तुम नीचे गिरते हो अर्थात् रावण तुम्हें डुबोता है, बाप पार ले जाता है। बाप की भी कमाल है जो सेकण्ड में ऐसा संग देते जिससे तुम्हारी गति सद्गति हो जाती है, इसलिए उसे जादूगर भी कहा जाता है।

ओम् शान्ति। बच्चे याद में बैठे थे इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ। बाप को याद करो, वह है आत्माओं का बाप, परमपिता, पतित-पावन। उस पतित-पावन को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं ना आप मुये मर गई दुनिया...... देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध आदि देखने में आते हैं, उनको याद नहीं करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे। तुम जन्म-जन्मान्तर की पाप आत्मायें हो ना। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्य आत्माओं की दुनिया। अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो? बाप की याद से ही जमा होंगे। आत्मा में मन-बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो भी मित्र-सम्बन्धी हैं, उन सबको भूलो। वह सब एक-दो को दुःख देते हैं। एक पाप करते हैं जो काम कटारी चलाते हैं, दूसरा पाप फिर क्या करते हैं? जो बाप सर्व का सद्गति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात् स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उसे सर्वव्यापी कह देते हैं। यह पाठशाला है, तुम आये हो यह पढ़ने। यह लक्ष्मी-नारायण है तुम्हारी एम-ऑब्जेक्ट। और कोई ऐसे कह न सके। तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम ही विश्व के मालिक थे। पूरे 5 हज़ार वर्ष हुए। देवी-देवता विश्व के मालिक हैं ना। कितना ऊंच पद है। जरूर यह बाप ही बनायेंगे। बाप को ही परमात्मा कहते हैं, उनका असुल नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं। जैसे बाम्बे में बबुलनाथ का मन्दिर है अर्थात् कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला है। नहीं तो उनका असली नाम एक ही शिव है। इनमें प्रवेश करते हैं तो भी नाम शिव ही है। तुमको इन ब्रह्मा को याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा पतित बनी है, उनको पावन बनाना है। कहते भी हैं महान् आत्मा, पाप आत्मा। महान् परमात्मा नहीं कहते हैं। अपने को परमात्मा वा ईश्वर भी कोई कह न सकें। कहते भी हैं महात्मा, पवित्र आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं, इसलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है वह भी सभी पुनर्जन्म लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना पड़ता है। विकार से जन्म ले फिर जब बड़े बालिग बन जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं। देवतायें तो ऐसे नहीं करते। वह तो एवर पवित्र हैं। बाप अभी तुमको आसुरी से दैवी बनाते हैं, दैवीगुण धारण करने से दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। दैवी सम्प्रदाय रहते हैं सतयुग में, आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं कलियुग में। अभी

है संगमयुग। अब तुमको बाप मिला है, कहते हैं अब तुमको फिर दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहां आये ही हो दैवी सम्प्रदाय बनने। दैवी सम्प्रदाय वालों को अथाह सुख है। इस दुनिया को कहा जाता है हिंसक, देवतायें हैं अहिंसक।

बाप कहते हैं – मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, बाप को याद करो। तुम्हारे जो गुरु लोग हैं, वह भी सब देहधारी हैं। अभी तुम आत्माओं को परमात्मा बाप को याद करना है। सुख तब मिलेगा जब तुम पुण्य आत्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पाप आत्मा बन जाते हो। अभी तुम पुण्य जमा करते हो। योगबल से पापों को खत्म करते हो। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम विश्व के मालिक थे तो सही ना। वह फिर कहाँ गये, यह भी बाप ही बताते हैं। तुमने 84 जन्म लिए, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनें। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता है। वह है ही निराकार शिव। उनकी शिवरात्रि मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते मैं तुम्हारे सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ, मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका नाम होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है। इसने सन्यास किया तब नाम ब्रह्मा रखा है। तुम हो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से आया। ब्रह्मा है शिव का बेटा। शिवबाबा अपने बच्चे ब्रह्मा में प्रवेश कर तुमको ज्ञान देते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी इनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सब बच्चे निराकार हैं। आत्मायें यहाँ आकर शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ पतितों का पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूँ। शिव भगवानुवाच है ना। कृष्ण को तो भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। पहला नम्बर देवता हैं राधे-कृष्ण, जो स्वयंवर के बाद फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। परन्तु यह कोई जानते नहीं। राधे-कृष्ण का किसको भी पता नहीं है। वह फिर कहाँ चले जाते हैं? राधे-कृष्ण ही स्वयंवर के बाद फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। दोनों अलग-अलग महाराजाओं के बच्चे हैं। वहाँ अपवित्रता का नाम नहीं है क्योंकि 5 विकार रूपी रावण ही नहीं है। है ही राम राज्य। अब बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। तुम सतोप्रधान थे, अब तमोप्रधान बने हो, घाटा पड़ा है फिर जमा करना है। भगवान् को व्यापारी भी कहा जाता है। कोई विरला उनसे व्यापार करे। जादूगर भी उनको कहते हैं, कमाल करते हैं, जो सारी दुनिया की सद्गति करते हैं। सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य, मनुष्य को दे नहीं सकते। तुम 63 जन्म भक्ति करते आये हो, इस भक्ति से कोई ने सद्गति को पाया है? कोई है जो सद्गति दे? हो नहीं सकता। एक भी वापिस जा नहीं सकता। बेहद का बाप ही आकर सबको वापिस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक राजायें हैं। वहाँ तुम थोड़े राज्य करते हो। बाकी सब आत्मायें मुक्ति में चली जाती हैं। तुम जाते हो जीवनमुक्ति में वाया मुक्तिधाम। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ है इस सृष्टि चक्र का, रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का। तुम ही इस ज्ञान से नर से नारायण बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहेगी। भक्तों को भगवान ने फल दिया आधाकल्प सुख का, फिर रावण राज्य में दु:ख शुरू होता है। आहिस्ते-आहिस्ते सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो

तो भी एक दिन जो बीता, सीढ़ी उतरनी होती है। तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो, फिर सीढ़ी उतरते ही रहते हो। सेकण्ड बाई सेकण्ड टिक-टिक होती है। उतरते ही जाते हैं। बीतते-बीतते इस जगह आकर पहुँचे हो। वहाँ भी तो ऐसे ही घड़ियाँ बीतती जायेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं एकदम फट से। फिर सीढ़ी उतरनी है जूँ मिसल।

बाप कहते हैं मैं सर्व का सद्गति करने वाला हूँ। मनुष्य, मनुष्य की सद्गति कर न सकें क्योंकि वह विकार से पैदा होते हैं, पतित हैं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कह सकते हैं। यह महात्मा लोग तो फिर भी विकार से जन्म ले फिर सन्यास करते हैं। वह तो है देवता। देवतायें तो सदैव पवित्र है। उनमें कोई विकार होता नहीं। उनको कहा ही जाता है निर्विकारी दुनिया। इनको कहा जाता है विकारी दुनिया। नो प्योरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं की चलन तो बड़ी अच्छी होती है। सब उनको नमस्ते करते हैं। कैरेक्टर्स उन्हों के अच्छे हैं तब तो अपवित्र मनुष्य उन पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। अभी तो लड़ना-झगड़ना क्या-क्या लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो रहने की भी जगह नहीं। चाहते हैं मनुष्य कम हों। परन्तु यह तो बाप का ही काम है। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। इतने सब शरीरों की होलिका हो जाती है, बाकी सब आत्मायें चली जाती हैं अपने स्वीट होम। सजायें तो नम्बरवार भोगते हैं जरूर। जो पूरा पुरूषार्थ कर विजय माला का दाना बनते हैं, वह सजाओं से छूट जाते हैं। माला एक की तो नहीं होती। जिसने उन्हों को ऐसा बनाया, वह है फूल। फिर है मेरू, प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ी की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं। वह हैं निवृति मार्ग वाले। वह प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सकें। पवित्र बनने के लिए उनका है हद का सन्यास, वह हैं हठयोगी। यह है राजयोग, राजाई प्राप्त करने के लिए बाप तुमको यह राजयोग सिखलाते हैं। बाप हर 5 हजार वर्ष बाद आते हैं। आधाकल्प तुम राजाई करते हो सुख में, फिर रावण राज्य में आहिस्ते-आहिस्ते तुम दुःखी हो जाते हो। इसको कहा जाता है सुख-दुःख का खेल। तुम पाण्डवों को जीत पहनाते हैं। अब तुम हो पण्डे। घर जाने की यात्रा कराते हो। वह यात्रायें तो मनुष्य जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं। अब तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में बाकी सब मुक्ति में चले जायेंगे। हाहाकार के बाद फिर जय-जय कार हो जाती है। अभी है कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत आने की हैं, फिर उस समय तुम याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे क्योंकि हंगामा बहुत हो जायेगा। इसलिए बाप कहते हैं अब याद की यात्रा को बढ़ाते जाओ तो पाप भस्म हो जायें और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरूषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। यह तो बहुत छोटा सा ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल होता है, इस छोटे से युग में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे भी हो तो स्टूडेन्ट भी हो, फालोअर्स भी हो। एक के ही हैं। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो, शिक्षा देने वाला टीचर भी हो, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता हो, फिर साथ में भी ले जाये। ऐसा कोई मनुष्य हो न सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले-पहले बहुत छोटा झाड़ होता है,

बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। बाप को कहा जाता है सर्व का सद्गति दाता। बाप को बुलाते हैं—हे पतित-पावन बाबा आओ। दूसरे तरफ फिर कहते हैं परमात्मा कुत्ते-बिल्ली, पत्थर-ठिक्कर सबमें है। बेहद के बाप का अपकार करते हैं। बाप जो विश्व का मालिक बनाते, उनको डिफेम करते हैं। इसे ही कहा जाता है रावण का संगदोष। सत का संग तारे, कुसंग डुबोये। रावण राज्य शुरू होता है तो तुम गिरने लग पड़ते हो। बाप आकरके तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आकर मनुष्य को देवता बनाते हैं तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सब यहाँ हैं, बाकी जो भी रहे हुए हैं, वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जायेंगी तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पास होते जायेंगे। इनको कहा जाता है रूहानी कॉलेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाने आते हैं, रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ अपवित्र राजा बनें और पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चे सोने में खाद पड़ती है तो खाद का जेवर हो जाता है। अब आत्मा से खाद निकले कैसे? योग अग्नि चाहिए, उनसे तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। आत्मा में चाँदी, तांबा, लोहा पड़ गया है। यह है खाद। आत्मा सच्चा सोना है। अब झूठी बन गई है। वह खाद निकले कैसे? यह है योग अग्नि, ज्ञान चिता पर बैठे हो। आगे थे काम चिता पर। बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। सिवाए ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञान चिता पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति मार्ग में कितनी पूजा करते रहते हैं लेकिन किसको जानते नहीं। अभी तुम सबको जान गये हो। तुम सब देवता बनते हो तो फिर पूजा की बात ही खत्म हो जाती है। जब रावण राज्य शुरू होता है तब भक्ति शुरू होती है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सजाओं से मुक्त होने के लिए विजय माला का दाना बनने का पुरूषार्थ करना है, रूहानी पण्डा बन सबको शान्तिधाम घर की यात्रा करानी है।

२. याद की यात्रा को बढ़ाते-बढ़ाते सब पापों से मुक्त हो जाना है। योग अग्नि से आत्मा को सच्चा सोना बनाना है, सतोप्रधान बनना है।

वरदान:- स्व के राज्य द्वारा अपने साथियों को स्नेही सहयोगी बनाने वाले मास्टर दाता भव

राजा अर्थात् दाता। दाता को कहना वा मांगना नहीं पड़ता। स्वयं हर एक राजाओं को अपने स्नेह की सौगात आफर करते हैं। आप भी स्व पर राज्य करने वाले राजा बनो तो हर एक आपके आगे सहयोग की सौगात आफर करेंगे। जिसका स्व पर राज्य है उसके आगे लौकिक अलौकिक साथी जी हाजिर, जी हजूर, हाँ जी कहते हुए स्नेही-सहयोगी बनते हैं। परिवार में कभी आर्डर नहीं चलाना, अपनी कर्मेन्द्रियों को आर्डर में रखना तो आपके सर्व साथी आपके स्नेही, सहयोगी बन जायेंगे।

स्लोगन:-

सर्व प्राप्ति के साधन होते भी वृत्ति उपराम रहे तब कहेंगे वैराग्य वृत्ति।

"मीठे बच्चे -- तुम्हें साहेबजादे सो शहजादे बनना है, इसलिए याद की यात्रा से अपने विकर्मों को भस्म करो"

प्रश्न:- किस एक विधि से तुम्हारे सब दुःख दूर हो जाते हैं?

उत्तर:- जब तुम अपनी नज़र बाप की नज़र से मिलाते हो तो नज़र मिलने से तुम्हारे सब दुःख दूर हो जाते हैं क्योंकि अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करने से सब पाप कट जाते हैं। यही है तुम्हारी याद की यात्रा। तुम देह के सब धर्म छोड़ बाप को याद करते हो, जिससे आत्मा सतोप्रधान बन जाती है, तुम सुखधाम के मालिक बन जाते हो।

ओम् शान्ति। शिव भगवानुवाच, अपने को आत्मा समझकर बैठो। बाप फ़रमाते हैं शिव भगवानुवाच माना ही शिवबाबा समझाते हैं बच्चे अपने को आत्मा समझकर बैठो क्योंकि तुम सब ब्रदर्स हो। एक ही बाप के बच्चे हो। एक ही बाप से वर्सा लेना है, हूबहू जैसे 5 हज़ार वर्ष पहले बाप से वर्सा लिया था। आदि सनातन देवी-देवताओं की राजधानी में थे। बाप बैठ समझाते हैं तुम सूर्यवंशी अर्थात् विश्व के मालिक कैसे बन सकते हो! मुझ अपने बाप को याद करो। तुम सब आत्मायें भाई-भाई हो। ऊंच ते ऊंच भगवान् एक ही है। उस सच्चे साहेब के बच्चे साहेबजादे हैं। वह बाप बैठ समझाते हैं। उनकी श्रीमत पर बुद्धि का योग लगायेंगे तो तुम्हारे पाप सब कट जायेंगे। सब दुःख [illegible] हो जायेंगे। बाप से जब तुम्हारी [illegible] मिलती है तो सब दुःख दूर हो जाते हैं। आंखें मिलाने का भी अर्थ समझाते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, यह है याद की यात्रा। इसको योग अग्नि भी कहा जाता है। इस योग [illegible] से तुम्हारे जो जन्म-जन्मान्तर के पाप हैं वह भस्म हो जायेंगे। यह है ही दुःख का [illegible] है। तुमने बहुत पाप किये हैं, इसको कहा जाता है रावण राज्य। सतयुग को कहा जाता है रामराज्य। तुम ऐसे समझा सकते हो। भल कितनी भी बड़ी सभा बैठी हो, भाषण करने में [illegible] है। तुम तो भगवानुवाच कहते रहते हो। शिव भगवानुवाच—हम सब आत्मायें उनकी सन्तान हैं, ब्रदर्स हैं। बाकी श्रीकृष्ण की कोई सन्तान थे, ऐसे नहीं कहेंगे। न इतनी रानियां ही थीं। कृष्ण का तो जब स्वयंवर होता है, नाम ही बदल जाता है। हाँ, ऐसे कहेंगे लक्ष्मी-नारायण के बच्चे थे। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। तब एक बच्चा होता है। फिर उनकी डिनायस्टी चलती है। तुम बच्चों को अब मामेकम् याद करना है। देह के सब धर्म छोड़ो, बाप को याद करो तो तुम्हारे सब पाप कट जायेंगे। सतोप्रधान बन स्वर्ग में जायेंगे। स्वर्ग में कोई दुःख होता नहीं। नर्क में अथाह दुःख है। सुख का नाम-निशान नहीं। ऐसे युक्ति से बतलाना चाहिए। शिव भगवानुवाच—हे बच्चों, इस समय तुम आत्मायें पतित हो, अब पावन कैसे बनो? मुझे बुलाया ही है—हे पतित-पावन आओ। पावन होते ही हैं सतयुग में, पतित होते हैं कलियुग में। कलियुग के बाद फिर सतयुग ज़रूर बनना है। नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश होता है। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। हम ब्रह्माकुमार-कुमारियां एडाप्टेड चिल्ड्रेन हैं। हम हैं ब्राह्मण चोटी। चित्र रूप भी है ना। पहले ब्राह्मण ज़रूर बनना पड़े। ब्रह्मा भी ब्राह्मण है। देवतायें हैं ही सतयुग में। सतयुग में सदा सुख है। दुःख का

5-2-97 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

''मीठे बच्चे - माया की बीमारी से छूटने के लिए ज्ञान और योग का एपिल (सेब) रोज़ खाते रहो।''

प्रश्न:- कर्मातीत अवस्था में जाने का पुरूषार्थ क्या है?
उत्तर:- ऐसा अभ्यास करो जो बुद्धि में सिवाए बाप के और कोई की याद न रहे। अन्त मती सो गति... जब ऐसी अवस्था हो जो बुद्धि में कोई भी याद न रहे तब सदा हर्षित भी रहेंगे और कर्मातीत अवस्था को भी पा लेंगे। तुम्हारा पुरूषार्थ ही है आत्म-अभिमानी बनने का। आत्मा, आत्मा को देखे, आत्मा से बात करे तो खुशी होती रहेगी। स्थिति अचल हो जायेगी।

गीत:- तुम्ही हो माता...ओम् शान्ति।

(a) (गायन तो यर्थाथ है क्योंकि सारी सृष्टि का रचयिता और फिर जिन द्वारा रचना करते हैं उसको ही कहा जाता है मात-पिता। रचता कोई भी साकार व आकार को नहीं कहा जाता। रचता एक निराकार को ही कहा जाता है। अभी यह समझ तुम बच्चों को आई है वह तो सिर्फ गाते हैं। भक्तों की बुद्धि में सिर्फ यही रहता कि बस भक्ति करनी है, परन्तु किसकी भक्ति करनी है, कुछ भी पता नहीं। भक्ति करनी चाहिए एक भगवान की, जिसे मात-पिता कहते हैं, न कि सैकड़ों की।) कहते हैं भगवान आकर भक्तों को भक्ति का फल देंगे। फल अथवा वर्सा एक ही बात है। बच्चा पैदा होता है तो मात-पिता के वर्से का फल मिलता है। बाकी यह गायन तो है भक्ति मार्ग का। याद करते हैं कि आकरके हमको भक्ति का फल दो। ज्ञान और भक्ति भी कहते हैं। भक्ति का फल है ज्ञान। बरोबर तुम अब जानते हो भक्ति कब से शुरू हुई है। यह कोई को पता नहीं, ज्ञान का समय है दिन। भक्ति का समय है रात। दिन और रात सो तो जरूर आधा-आधा होगा, शास्त्रों में कल्प की आयु लम्बी लिख दी है। ज्ञान को बहुत समय दे दिया है और भक्ति को थोड़ा समय दिया है। द्वापर कलियुग की आयु कम दिखाई है। यह रात और दिन का पूरा हिसाब तो ठहरा नहीं। कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष भी कहते हैं। शास्त्रों में यह अक्षर हैं। कहते हैं तुम लोग शास्त्रों को नहीं मानते हो फिर शास्त्रों के अक्षर क्यों लेते हो। तो तुमको समझाना है – शास्त्रों का सार तो बाबा ही बताते है। फलाने शास्त्र में यह राइट नहीं है, यह राइट है। रिफरेन्स तो जरूर देना पड़े। जैसे अब प्रदर्शनी में चित्र दिखाते हैं हनूमान, गणेश, वामन अवतार आदि आदि... समझाने लिए दिखाना तो पड़े ना। जो बातें रांग हैं वह वर्णन कर फिर राइट क्या है, वह समझाते हैं।

अब बाबा की महिमा गाते हैं शिवाए नम: फिर लिखा है त्वमेव माताश्च पिता..नाम तो देना पड़े ना। मनुष्यों को यह पता नहीं कि हमारा बाप कौन है। कहते भी हैं ओ गॉड फादर। बुद्धि उधर जाती है। मनुष्य प्रार्थना आदि करते हैं तो जानते हैं परमपिता परमात्मा परलोक में निवास करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को याद करेंगे तो बुद्धि सूक्ष्मवतन

में जायेगी। फर्स्ट, सेकेण्ड फिर थर्ड फ्लोर है। अब मुख्य बात है बाप को भूले हैं। बाप आकर उल्हना देते हैं। तुमने हमारी कितनी ग्लानी की है। बाप जो सर्व को सद्गति देने वाला है, उनकी फिर सर्व ने बैठ ग्लानी की है। भगवानुवाच है ना यदा यदाहि...भारतवासी अपने धर्म की ग्लानी करते हैं। कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। क्या सबमें ईश्वर है? तो कह देते है कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, वाराह अवतार... बाप तो भारतवासी बच्चों को ही कहते हैं क्योंकि बच्चे ही ग्लानी करते हैं। यह मुरब्बी बच्चा (ब्रह्मा) भी ग्लानी करता था। यह ग्लानी भी ड्रामा में नूंधी हुई थी। तब तो पाप आत्मा बनते हैं। बाप ने तो सबको पावन बनाया था क्योंकि पतित-पावन है। पावन बनाकर विश्व का मालिक बनाते हैं। बनाने वाले बाप को कितनी गाली देते हैं। जब समझाते हैं तो उस समय मान लेते हैं, समाचार भी आता है, इतनों ने सही की कि बरोबर आपकी बात राइट है। अब कहते हैं श्रीमत भगवत गीता, तो भगवान की है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत,... ऊंचे ते ऊंचे की मत भी ऊंची होगी ना। वह आकर पतित भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। तो पहले-पहले एक का परिचय देना पड़ता है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार तो हैं ही। बहुत बच्चे लिखते हैं बाबा क्या करें, माया का तूफान हमको ठहरने नहीं देता है। हमको यह-यह विकार तंग करते हैं। बाप कहते हैं तुमको इन पर विजय पानी है। नहीं तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। शिक्षक ही अगर ऐसा कुछ काम करेंगे तो जरूर औरों को संशय पड़ेगा कि खुद की चलन तो ऐसी है, और दूसरों को ऐसे समझाते हैं। विकार भी कोई सेमी होता है, सतो रजो तमो हर बात में होता है। सतयुग को सतो ऊंच कहा जाता है, कलियुग को तमो नीच कहा जाता है। दुनिया भ्रष्टाचारी कहते हैं। परन्तु अपने को कोई भ्रष्टाचारी समझते नहीं हैं। बाप समझाते हैं इस रावण राज्य में एक भी श्रेष्ठाचारी नहीं है। समझो कोई से पूछा जाता है ऊंचे ते ऊंचा कौन? तो कहेंगे भगवान है। उनका आक्यूपेशन जानते हो? नहीं। या तो कहेंगे सन्यासी ही ऊंच हैं क्योंकि पवित्र रहते हैं। खुद भी सन्यासियों को फालो करते हैं। नमस्ते करते हैं तो उन्हों से पूछना चाहिए, सन्यासियों से भी जरूर कोई ऊंचा होगा! सन्यासी भी भगवान की साधना करते हैं। आजकल तो चित्र भी बहुत बनाये हैं। सबसे ऊंचा परमात्मा को ही रखते हैं। अब राम वा कृष्ण के आगे शिवलिंग रखना यह भी बड़ाई है। नहीं तो वह कोई शिव की पूजा थोड़ेही करते हैं। वह तो खुद ही राज्य करते हैं। जब वह पतित बनते हैं तब पूजने लगते हैं। ऊंचे ते ऊंच निराकार परमात्मा को ही कहा जाता है — पतित-पावन सर्व का सद्गति दाता, सबका लिबरेटर। अपने साथ सबको ले जायेंगे। तुम जानते हो वह हमारा बाप है। हम सब इस समय बीमार हैं, जिससे एवरहेल्दी और एवरवेल्दी बन जाते हैं। कहते भी हैं रोज़ एपिल खाओ तो एवरहेल्दी बन जायेंगे। यह तो तुम प्रैक्टिकल देख रहे हो। माया ने सबको बीमार बना दिया है। अब सबको हेल्दी, वेल्दी बनाने वाला एक बाप ही है। सूक्ष्मवतन में भी आत्मायें हेल्दी हैं। यहाँ अनहेल्दी आत्मायें हैं फिर मूलवतन से पहले जब आत्मायें आयेंगी तो सुख ही देखेंगी। तो बाप ब्रह्मा द्वारा हमको बहुत सुख देते हैं। अब विनाश तो होना

ही है। इस यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है। वो लोग राय कर रहे हैं शान्ति कैसे हो, परन्तु यह भी गाया जाता है नर चाहत कुछ और... शान्ति भी तब होगी जब विनाश होगा। फिर सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जायेंगी। विनाश होने का और कोई उपाय तो हो ही नहीं सकता। यह भी उन्हों को बतावे कौन। इन भीष्म-पितामह आदि को तो पिछाड़ी में ज्ञान मिलना है।

मनुष्य शान्ति के लिए उपाय ढूंढते हैं कि आपस में मिलकर एक हो जाएं। परन्तु ऐसा तो होना ही नहीं है। आगे भी विनाश हुआ था। यादव और कौरव भी थे। गीता का भगवान भी आया था। अब पतित दुनिया है, इसमें श्रेष्ठाचारी कोई हो न सके। सबसे श्रेष्ठ हैं लक्ष्मी-नारायण, यही सतयुग में राज्य करते थे। अब तो भ्रष्टाचार की वृद्धि होती गई है, तो जरूर विनाश होना ही है। विनाश के बाद ही सब सुख शान्ति को पा सकेंगे। सबको समझाना है कि हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं। पहले वही धर्म था, अब नहीं है। फिर से उसकी स्थापना हो रही है। इस समय हम ब्राह्मण हैं न कि देवता। जब कोई भाषण करने के लिए स्टेज पर आते हैं तो कुछ न कुछ ख्याल करके, विचार करके आते हैं, तो यह-यह बोलेंगे। हमारे बच्चे तो समझते हैं क्या बोलना है। शान्ति स्थापन करने वाला तो एक ही सर्व का सद्‌गति दाता बाप है, वही लिबरेटर है। यह समय ही है - सबको वापिस ले जाने का।

बाबा बच्चों से पूछते हो बच्चे तुम अपने को सतयुग में चलने के लायक समझते हो? रावण पर विजय पाई है? कहते हैं बाबा विजय पाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। हाथ तो सब उठाते हैं क्योंकि लज्जा आती है। बाबा कहते हैं अपनी शक्ल तो देखो कितना समय बाप को याद करते हो? अन्त मती सो गति चाहिए तब ही कर्मातीत अवस्था में जा सकेंगे। ऐसी अवस्था हो जो अन्त में कोई भी याद न आये। सदा हर्षित भी तब रह सकेंगे जब दूसरों की सेवा करेंगे। तुम रूहानी सोशल वर्कर हो। तुम्हारे बिगर रूह को इन्जेक्शन कोई भी लगा न सके। गाया भी जाता है ज्ञान अंजन सतगुरू दिया... आत्मा को अब मालूम पड़ा है कि मुझे सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान मिल गया है। यह आत्मा ने कहा शरीर द्वारा -- ज्ञान सागर को। अब हमको वापस जाना है - यह बहुत खुशी की बात है। पुराना चोला छोड़कर नया चोला लेना है। इस कारण नाम ही है श्याम सुन्दर।

तुम जानते हो हम सुन्दर थे, अब श्याम बने हैं फिर सुन्दर बनेंगे। बाबा सुन्दर बनाते हैं, माया रावण श्याम बनाता है। काम चिता पर बैठने से श्याम बन जाते हैं। यह बड़ी समझने की सहज बातें हैं। नॉलेज तो स्टूडेन्ट की बुद्धि में नम्बरवार ही धारण होती है। कोई तो बहुत डलहेड हैं। टीचर कहते हैं पढ़ने वाले बहुत डल हैं। देह-अभिमान बहुत है। आत्म-अभिमानी रहें तो सदा हर्षित रहें। आत्मा, आत्मा को देखे अर्थात् अपने भाई को देखकर खुश होती रहे। बाबा बच्चों को देख खुश होते हैं।

बाबा कहते हैं बच्चे मैं आया हूँ तुमको माया से लिबरेट कर वापिस साथ ले जाने।

नंदीगण था, उनमें भी जरूर अपनी आत्मा होगी। शिवबाबा की प्रवेशता होती है; वह भी जरूर भ्रकुटी के बीच में ही आयेगा। ऐसे थोड़ेही ऊपर से गंगा बहेगी। शिव की सवारी बैल पर दिखाते हैं। बैल की भ्रकुटी में शिव का चित्र दिखाया है। आत्मा तो जरूर भ्रकुटी में ही रहेगी। जो आत्मा का स्थान है जरूर वहाँ ही बैठेगी। गुरू लोग अपने चेले को बाजू में बिठाते हैं। तो वह सतगुरू भी आकर बाजू में बैठते हैं। गुरू ब्रह्मा कहते हैं, विष्णु को वा शंकर को गुरू नहीं कहेंगे। वही ब्रह्मा फिर विष्णु के दो रूप बनते हैं। गुरू तो शिव को कह सकते हैं क्योंकि सबकी सद्गति करते हैं। ऊंचे ते ऊंच फिर भी भगवान है। कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सदा हर्षित रहने के लिए आत्म-अभिमानी बनना है। हम आत्मा भाई-भाई हैं, यह दृष्टि पक्की करनी है।

२- रूहानी सोशल वर्कर बन आत्मा को ज्ञान का इन्जेक्शन लगाना है। सबकी रूहानी सेवा करनी है।

वरदान: मन-बुद्धि से किसी भी बुराई को टच न करने वाले सम्पूर्ण वैष्णव व सफल तपस्वी भव

पवित्रता की पर्सनैलिटी व रायल्टी वाले मन-बुद्धि से किसी भी बुराई को टच नहीं कर सकते। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता है, ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग अपवित्रता है। तो किसी भी बुराई को संकल्प में भी टच न करना – यही सम्पूर्ण वैष्णव व सफल तपस्वी की निशानी है।

स्लोगन:-

मन की उलझनों को समाप्त कर वर्तमान और भविष्य को उज्जवल बनाओ।

16-4-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – यह पुरूषोत्तम युग ही गीता एपीसोड है, इसमें ही तुम्हें पुरूषार्थ कर उत्तम पुरूष अर्थात् देवता बनना है"

प्रश्न:- किस एक बात का सदा ध्यान रहे तो बेड़ा पार हो जायेगा?

उत्तर:- सदा ध्यान रहे कि हमें ईश्वरीय संग में रहना है तो भी बेड़ा पार हो जायेगा। अगर संगदोष में आये, संशय आया तो बेड़ा विषय सागर में डूब जायेगा। बाप जो समझाते हैं उसमें बच्चों को जरा भी संशय नहीं आना चाहिए। बाप तुम बच्चों को आप समान पवित्र और नॉलेजफुल बनाने आये हैं। बाप के संग में ही रहना है।

ओम शान्ति। भगवानुवाच–बच्चे जानते हैं कि बाप वही राजयोग सिखला रहे हैं जो 5 हज़ार वर्ष पहले समझाया था। बच्चों को मालूम है, दुनिया को तो मालूम नहीं है तो फिर पूछना चाहिए गीता का भगवान् कब आया? भगवान् जो कहते हैं मैं राजयोग सिखलाकर तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। वह गीता एपीसोड कब हुआ था? पूछना चाहिए। यह बात कोई भी नहीं जानते हैं। तुम अब प्रैक्टिकल सुन रहे हो। गीता का एपीसोड होना भी चाहिए कलियुग अन्त और सतयुग आदि के बीच में। आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं तो जरूर संगम पर ही आयेंगे। पुरूषोत्तम संगमयुग है जरूर। भल पुरूषोत्तम वर्ष गाते हैं परन्तु बिचारों को पता नहीं है। तुम मीठे-मीठे बच्चों को मालूम है, उत्तम पुरूष बनने के लिए अर्थात् मनुष्य को उत्तम देवता बनाने के लिए बाप आकर पढ़ाते हैं। मनुष्यों में उत्तम पुरूष ये देवतायें (लक्ष्मी-नारायण) हैं। मनुष्यों को देवता बनाया इस संगमयुग पर। देवतायें जरूर सतयुग में ही होते हैं। बाकी सब हैं कलियुग में। तुम बच्चे जानते हो हम हैं संगमयुगी ब्राह्मण। यह पक्का-पक्का याद करना है। नहीं तो अपना कुल कभी किसको भूलता नहीं है। परन्तु यहाँ माया भुला देती है। हम ब्राह्मण कुल के हैं फिर देवता कुल के बनते हैं। अगर यह याद रहे तो बहुत खुशी रहे। तुम पढ़ते हो राजयोग। समझाते हो अब फिर भगवान् गीता का ज्ञान, जिसको भारत का प्रचीन योग कहा जाता है, वह सुना रहे हैं। हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। बाप ने कहा है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनते हो। पवित्रता की बात पर कितनी आरग्यु करते हैं। मनुष्यों के लिए विकार तो जैसे एक खज़ाना है। लौकिक बाप से यह वर्सा मिला हुआ है। बालक बनते हैं तो पहले-पहले बाप का यह वर्सा मिलता है। शादी बरबादी कराते हैं। और बेहद का बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, तो जरूर काम को जीतने से ही जगत जीत बनेंगे। बाप जरूर संगम पर ही आये होंगे। महाभारी महाभारत लड़ाई भी है। हम भी यहाँ जरूर हैं। ऐसे भी नहीं, सब फट से काम पर जीत पाते हैं। हर बात में टाइम लगता है। मुख्य बात बच्चे यही लिखते हैं कि बाबा हम विषय वैतरणी नदी में गिर गये। तो जरूर कोई ऑर्डीनेन्स है। बाप का फ़रमान है–काम को जीतने से तुम जगतजीत बनेंगे। ऐसे नहीं, जगत जीत बन कर फिर विकार में जाते होंगे। जगतजीत

यह लक्ष्मी-नारायण हैं। इनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। देवताओं को सब निर्विकारी कहते हैं, जिसको तुम राम राज्य कहते हो। वह है वाइसलेस वर्ल्ड। यह है विशश वर्ल्ड, अपवित्र गृहस्थ आश्रम। बाबा ने समझाया है तुम पवित्र गृहस्थ आश्रम के थे। अब 84 जन्म लेते-लेते अपवित्र बने हो। 84 जन्मों की ही कहानी है। नई दुनिया जरूर ऐसी वाइसलेस होनी चाहिए। भगवान्, जो पवित्रता का सागर है, वही स्थापना करते हैं फिर रावण राज्य भी जरूर आना होता है। नाम ही है राम राज्य और रावण राज्य। रावण राज्य माना ही आसुरी राज्य। अभी तुम आसुरी राज्य में बैठे हो। यह लक्ष्मी-नारायण हैं दैवी राज्य की निशानी।

तुम बच्चे प्रभात फेरी आदि निकालते हो। प्रभात सवेरे को कहा जाता है, उस समय मनुष्य सोये रहते हैं इसलिए देरी से निकलते हैं। प्रदर्शनी भी अच्छी तब हो जब सेन्टर भी हो। जहाँ आकर समझें कि काम महाशत्रु है। उन पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। लक्ष्मी-नारायण का चित्र साथ में जरूर होना चाहिए—ट्रासलाइट का। इनको कभी भूलना नहीं चाहिए। एक यह चित्र और सीढ़ी। ट्रक में जैसे देवियों को निकालते हैं ऐसे तुम यह दो-तीन ट्रक सजाकर उसमें मुख्य चित्र निकालते हो तो अच्छा लगता है। दिन-प्रतिदिन चित्रों की वृद्धि भी होती जाती है। तुम्हारा ज्ञान वृद्धि को पाता रहता है। बच्चों की भी वृद्धि होती जाती है। उसमें गरीब साहूकार सब आ जाते हैं। शिवबाबा का भण्डारा भरता जाता है। जो भण्डारा भरते हैं, उनको वहाँ रिटर्न में कई गुणा मिल जाता है। तब बाप कहते हैं—मीठे-मीठे बच्चों, तुम हो पद्मापद्म पति बनने वाले सो भी 21 जन्मों के लिए। बाबा खुद कहते हैं तुम जगत का मालिक बन जायेंगे 21 पीढ़ी। मैं खुद डायरेक्ट आया हूँ। तुम्हारे लिए हथेली पर बहिश्त लाया हूँ। जैसे जब बच्चा पैदा होता है तो बाप का वर्सा उनकी हथेली पर ही है। बाप कहेंगे यह घर-बार आदि सब कुछ तुम्हारा है। बेहद का बाप भी कहते हैं तुम जो मेरे बनते हो तो स्वर्ग की बादशाही तुम्हारे लिए है—21 पीढ़ी क्योंकि तुम काल पर जीत पा लेते हो। इसलिए बाप को महाकाल कहते हैं। महाकाल कोई मारने वाला नहीं है। उनकी तो महिमा की जाती है, समझते हैं भगवान् ने यमदूत भेज मंगा लिया। ऐसी कोई बात है नहीं। यह सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। बाप कहते हैं मैं कालों का काल हूँ। पहाड़ी लोग महाकाल को भी बहुत मानते हैं। महाकाल के मन्दिर भी हैं। ऐसे झण्डियां लगा देते हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यह भी समझते हो कि राइट बात है। बाप को याद करने से ही जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भस्म होते हैं। तो उसका प्रचार करना चाहिए। कुम्भ के मेले आदि बहुत लगते हैं। स्नान करने का भी बहुत महत्व बताया है। अब तुम बच्चों को यह ज्ञान अमृत 5 हज़ार वर्ष के बाद मिलता है। वास्तव में इसका अमृत नाम है नहीं। यह तो पढ़ाई है। यह सब हैं भक्ति मार्ग के नाम। अमृत नाम सुनकर चित्रों में पानी दिखाया है। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। पढ़ाई से ही ऊंच पद मिलता है। सो भी मैं पढ़ाता हूँ। भगवान् का कोई ऐसा सजा हुआ रूप तो है नहीं। यह तो बाप इसमें आकर पढ़ाते हैं। पढ़ाकर आत्माओं

को आप समान बनाते हैं। खुद लक्ष्मी-नारायण थोड़ेही हैं जो आप समान बनायेंगे। आत्मा पढ़ती है, उनको आप समान नॉलेजफुल बनाते हैं। ऐसे नहीं, भगवान् भगवती बनाते हैं। उन्हों ने कृष्ण को दिखाया है। वह कैसे पढ़ायेंगे? सतयुग में पतित थोड़ेही होते हैं। कृष्ण तो होता ही है सतयुग में। फिर कभी भी कृष्ण को तुम नहीं देखेंगे। ड्रामा में हर एक के पुनर्जन्म का चित्र बिल्कुल न्यारा होता है। कुदरत का ड्रामा है। बनी बनाई.... बाप भी कहते हैं तुम हूबहू इस फीचर से इसी कपड़े में कल्प-कल्प तुम ही पढ़ते आयेंगे। हूबहू रिपीट होता है ना। आत्मा एक शरीर छोड़ फिर दूसरा वही लेती है, जो कल्प पहले लिया था। ड्रामा में कुछ फ़र्क नहीं पड़ सकता है। वह होती हैं हद की बातें, यह हैं बेहद की बातें। जो बेहद के बाप सिवाए कोई समझा नहीं सकते हैं। इसमें कोई संशय नहीं हो सकता है। निश्चयबुद्धि हो फिर कोई न कोई संशय में आ जाते हैं। संग लग जाता है। ईश्वरीय संग चलता चले तो पार हो जायें। संग छोड़ा तो विषय सागर में डूब पड़ेंगे। एक तरफ है क्षीरसागर, दूसरे तरफ है विषय सागर। ज्ञान अमृत भी कहते हैं। बाप है ज्ञान सागर, उनकी महिमा भी है। जो उनकी महिमा है वह लक्ष्मी-नारायण को नहीं दे सकते हैं। कृष्ण कोई ज्ञान का सागर नहीं है। बाप है पवित्रता का सागर। भल वह देवतायें सतयुग-त्रेता में पवित्र हैं परन्तु सदैव के लिए तो नहीं रहते हैं। फिर भी आधाकल्प के बाद गिरते हैं। बाप कहते हैं मैं आकर सबकी सद्गति करता हूँ। सद्गति दाता मैं एक हूँ। तुम सद्गति में जाते हो फिर यह बातें ही नहीं होती। अब तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। तुम भी शिवबाबा से पढ़कर टीचर बने हो। मुख्य प्रिंसीपल वह है। तुम आते भी उनके पास हो। कहते हैं हम शिवबाबा के पास आये हैं। अरे, वह तो निराकार है। हाँ, वह आते हैं, इनके तन में। इसलिए कहते हैं बापदादा के पास जाते हैं। यह बाबा है उनका रथ,जिस पर उनकी सवारी है। उनको रथ, घोड़ा, अश्व भी कहते हैं। इस पर भी एक कथा है—दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। कहानी लिख दी है। परन्तु ऐसे तो है नहीं।

शिवभगवानुवाच—मैं तब आता हूँ जब भारत पर अति धर्म ग्लानि होती है। गीतावादी भल कहते हैं—यदा यदाहि.... परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। तुम्हारा बहुत छोटा झाड़ है। उनको तूफ़ान भी लगते हैं। नया झाड़ है ना। फाउन्डेशन तो है यह। इतने अनेक धर्मों के बीच में एक सनातन धर्म का सैपलिंग लगाते हैं। कितनी मेहनत है। औरों को मेहनत नहीं लगती है। वह ऊपर से आते रहते हैं। यहां तो जो सतयुग-त्रेता में आने वाले हैं, उन्हों की आत्मायें बैठ पढ़ती है। जो पतित हैं, उनको पावन देवता बनाने लिए बाप बैठ पढ़ाते हैं। गीता तो यह भी बहुत पढ़ते थे। जैसे अब आत्माओं को याद कर दृष्टि दी जाती है तो पाप कट जायें। भक्ति मार्ग में फिर गीता के आगे जल रखकर बैठ पढ़ते हैं। समझते हैं पित्रों का उद्धार होगा। इसलिए पित्रों को याद करते हैं। भक्ति में गीता का बहुत मान रखते थे। अरे, बाबा कोई कम भक्त था क्या! रामायण आदि सब पढ़ते थे। बहुत खुशी होती थी। वह सब पास्ट हो गया।

अब बाप कहते हैं बीती को चितवो नहीं। बुद्धि से सब निकाल दो। बाबा ने स्थापना,

विनाश और राजधानी का साक्षात्कार कराया तो वह पक्का हो गया। यह सब ख़लास होना है—यह पता नहीं था। बाबा ने समझा—यह सब होगा। देरी थोड़ेही है। हम जाकर फलाना राजा बनूँगा। पता नहीं, बाबा क्या-क्या समझते रहते थे। तुम बच्चे जानते हो बाबा की प्रवेशता कैसे हुई। यह बातें मनुष्य नहीं जानते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का नाम तो लेते हैं परन्तु इन तीनों में से भगवान किसमें प्रवेश करते हैं, अर्थ नहीं जानते। वो लोग विष्णु का नाम लेते हैं। अब वह तो हैं देवता। वह कैसे पढ़ायेंगे। बाबा खुद बतलाते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। इसलिए दिखाया है - ब्रह्मा द्वारा स्थापना। वह पालना और वह विनाश। यह बड़ी समझने की बातें हैं। भगवानुवाच—मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। वह भगवान कब आया जो राजयोग सिखलाया और राजाई पद दिलाया। यह अभी तुम समझते हो। 84 जन्मों का राज़ भी समझाया है। पूज्य-पुजारी का भी समझाया है। विश्व में शान्ति का राज्य इन लक्ष्मी-नारायण का था ना, जो सारी दुनिया चाहती है। जब लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो उस समय सब शान्तिधाम में थे। अब हम श्रीमत पर यह कार्य कर रहे हैं। अनेक बार किया है और करते रहेंगे। यह तो आप जानते हैं, कोटों में कोई निकलेगा। देवी-देवता धर्म वालों को ही टच होगा। भारत की ही बात है। जो इस कुल के होंगे वह निकल रहे हैं और निकलते रहेंगे। जैसे तुम निकले हो, वैसे और प्रजा भी बनती रहेगी। जो अच्छा पढ़ते वह अच्छा पद पाते हैं। मुख्य है ज्ञान-योग। योग बिगर ज्ञान कैसे मिलेगा? पावर हाउस के साथ योग भी चाहिए। योग से विकर्म विनाश होंगे और हेल्दी-वेल्दी बनेंगे। पास विद् ऑनर भी होंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. जो बात बीत गई, उसका चिंतन नहीं करना है। अब तक जो कुछ पढ़ा उसे भूलना है, एक बाप से सुनना है और अपने ब्राह्मण कुल को सदा याद रखना है।

२. पूरा निश्चयबुद्धि होकर रहना है। किसी भी बात में संशय नहीं उठाना है। ईश्वरीय संग और पढ़ाई कभी भी नहीं छोड़ना है।

वरदान:- अकाल तख्त और दिलतख्त पर बैठ सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाले कर्मयोगी भव

इस समय आप सभी बच्चों को दो तख्त मिलते हैं - एक अकाल तख्त, दूसरा दिल तख्त। लेकिन तख्त पर वही बैठता है जिसका राज्य होता है। जब अकाल तख्तनशीन हैं तो स्वराज्य अधिकारी हैं और बाप के दिल तख्तनशीन हैं तो बाप के वर्से के अधिकारी हैं, जिसमें राज्य भाग्य सब आ जाता है। कर्मयोगी अर्थात् दोनों तख्तनशीन। ऐसी तख्त-नशीन आत्मा का हर कर्म श्रेष्ठ होता है क्योंकि सब कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती हैं।

स्लोगन:-

विशेष आत्मा वह है जो अपनी चलन द्वारा रूहानी रायल्टी की झलक और फलक का अनुभव कराये।

9-6-97 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज- 24-5-77 मधुबन

बाप के डायरेक्ट बच्चे ही डबल पूजा के अधिकारी बनते हैं

बापदादा हरेक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। सारे विश्व के अन्दर कोटों में कोई गाई हुई आत्माएं कितनी थोड़ी सी हैं, जिन्होंने बाप को पाया है। न सिर्फ जाना, लेकिन जानने के साथ-साथ, जिसको पाना था, वो पा लिया। ऐसे बाप के अति स्नेही, सहयोगी बच्चों के भाग्य को देख रहे थे। वैसे सर्व आत्माएं बच्चे हैं, लेकिन आप आत्माएं डायरेक्ट बच्चे हो। शिव वंशी ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हो। सारे विश्व में जो भी अन्य आत्माएं धर्म के क्षेत्र में वा राज्य के क्षेत्र में महान वा नामी-ग्रामी बने हैं, धर्म-पिताएं बने हैं, जगत गुरू कहलाने वाले बने हैं; लेकिन मात-पिता के सम्बन्ध से, अलौकिक जन्म और पालना किसी को भी प्राप्त नहीं होती है। अलौकिक मात-पिता का अनुभव स्वप्न में भी नहीं करते। और आप श्रेष्ठ आत्माएं वा पद्मापद्मपति आत्माएं हर रोज मात-पिता की वा सर्व सम्बन्धों की याद प्यार लेने के पात्र हो। हर रोज यादप्यार मिलती है ना। न सिर्फ यादप्यार, लेकिन स्वयं सर्वशक्तिमान् बाप, आप बच्चों का सेवक बन हर कदम में साथ निभाता है। अति स्नेह से सिर का ताज बनाकर नयनों का सितारा बनाकर, साथ ले जाते हैं। ऐसा भाग्य जगत गुरू वा धर्म पिता का नहीं है, क्योंकि आप श्रेष्ठ आत्माएं सम्मुख बाप की श्रीमत लेने वाली हो। प्रेरणा द्वारा व टचिंग द्वारा नहीं, मुख वंशावली हो। डायरेक्ट मुख द्वारा सुनते हो। ऐसा भाग्य किन आत्माओं का है? मैजारिटी भारतवासी गरीब, भोली सी आत्माओं का है। जो ना उम्मींदवार थे कि हमें कब बाप मिल सकता है! इतना श्रेष्ठ भाग्य, फिर ऐसे नाउम्मींदवार को ही मिला है। जब कोई नाउम्मीदवार से उम्मीदवार बनता है वा असम्भव से सम्भव बात होती है, तो कितना नशा और खुशी होती है! ऐसा भाग्य अपना सदैव स्मृति में रहता है?

सारे ड्रामा के अन्दर धर्म की आत्माओं को देखो और अपने को देखो तो महान अन्तर है। पहली बात सुनाई कि डायरेक्ट बच्चे हो। मात-पिता वा सर्व सम्बन्धों का सुख का अनुभव करने वाले, डायरेक्ट बच्चे होने के कारण, **विश्व के राज्य का वर्सा सहज प्राप्त हो जाता है।** सृष्टि के आदिकाल सतयुग अर्थात् स्वर्ग की सतो प्रधान, सम्पूर्ण प्राप्ति आप आत्माओं को ही प्राप्त होती है। और सर्व आत्माएं आती ही मध्यकाल में हैं। आप श्रेष्ठ आत्माओं का भोगा हुआ सुख वा राज्य रजोप्रधान रूप में प्राप्त करते हैं। जैसे आप **आत्माओं को धर्म और राज्य दोनों प्राप्ति हैं,** लेकिन अन्य आत्माओं को धर्म है तो राज्य नहीं, राज्य है तो धर्म नहीं। क्योंकि द्वापर युग से धर्म और राज्य का दोनों पुर अलग-अलग हो जाते हैं, जिसकी निशानी सारे ड्रामा के अन्दर डबल ताजधारी सिर्फ आप हो। और कोई देखा है? और भी विशेषताएं हैं। सम्पूर्ण प्राप्ति अर्थात् तन, मन, धन, सम्बन्ध और प्रकृति के सर्व सुख, जिसमें अप्राप्त कोई वस्तु नहीं, दु:ख का नाम-निशान नहीं — ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ति अन्य कोई आत्मा को प्राप्त नहीं होती है। डायरेक्ट बच्चे होने के कारण, ऊंच ते ऊंच बाप की सन्तान होने के कारण, परम पूज्य पिता की सन्तान होने कारण आप

आत्माएं भी डबल रूप में पूजी जाती हो। एक सालिग्राम के रूप में, दूसरा देवी वा देवता के रूप में। ऐसे विधि पूर्वक पूज्य, धर्मपिता वा कोई भी नामी-ग्रामी आत्मा नहीं बनती। कारण? क्योंकि तुम डायरेक्ट वंशावली हो। समझा कितने भाग्यशाली हो, जो स्वयं भगवान आपका भाग्य बाला करते हैं! तो सदा अपने ऐसे भाग्य को स्मृति में रखो। कमज़ोरी के गीत नहीं गाओ। भक्त कमज़ोरी के गीत गाते हैं और बच्चे भाग्य के गीत गाते हैं। तो अपने आप से पूछो कि भक्त हूँ वा बच्चा हूँ? समझा अपने श्रेष्ठ भाग्य को। अच्छा।

ऐसे पद्मापद्म भाग्यशाली, डायरेक्ट बाप की पहली रचना, सर्व सम्बन्धों के सुख के अधिकारी, सर्व प्राप्ति के अधिकारी, राज्यभाग्य के अधिकारी, डबल पूजा के अधिकारी, बाप के भी सिर के ताजधारी, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद, प्यार और नमस्ते।

दिल्ली पार्टी से:-

दिल्ली को दरबार बनाया है? दिल्ली दरबार कहते हैं तो दिल्ली को अपनी दरबार बनाई है? राजाई तैयार हो गई है? दरबार में कौन बैठेंगे? दरबार में पहले तो महाराजा, महारानियां चाहिए। कितने महाराजा, महारानियां तैयार हुई हैं? दिल्ली वालों को राज्य का फाउन्डेशन लगाना है। राज्य का फाउन्डेशन कैसे लगेगा, उसका आधार क्या? राज्य अर्थात् अधिकार प्राप्त कर लेना। पहले स्वयं का राज्य, फिर विश्व का राज्य। तो दिल्ली निवासी स्वयं पर अधिकारी बने हैं? विदेश से तो नाम निकलेगा, लेकिन नाम पहुँचेगा कहाँ? (दिल्ली में) तो दिल्ली वालों को नवीनता करनी चाहिए क्योंकि सेवा का आदि स्थान है। सेवा की बीज स्वरूप दिल्ली है। तो जैसे दिल्ली आदि स्थान है, सेवा के हिसाब से और राज्य का स्थान, राज्य स्थान भी है, तो दोनों ही हिसाब से दिल्ली वालों को विशेषता करनी चाहिए तो क्या करेंगे? मेला करेंगे? कान्फ्रेंस करेंगे? यह तो पुरानी बातें हो गयी। लेकिन नवीनता क्या करेंगे? पहली बात तो दिल्ली वालों का एक दृढ़ संकल्प संगठित रूप से होना चाहिए कि हम सब दिल्ली का किला मजबूत करेंगे, सफलता तो होनी ही है, इस संकल्प का व्रत एक हो। जैसे कोई भी कार्य में सफलता के लिए व्रत रखते हैं ना। वह तो स्थूल व्रत रखते हैं, लेकिन यह मन्सा का व्रत है जिस व्रत से निमित्त कोई भी कार्य करेंगे।

भल कार्य साधारण भी हो, रिजल्ट नवीनता की हो। मानो कानफ्रेंस करते, बाहर का रूप साधारण का होता लेकिन सफलता नवीनता की हो। जब एक ही समय और सर्व का एक ही संकल्प दृढ़ होगा कि होना ही है, तो देखो दिल्ली क्या कमाल करती है! कमज़ोरी के संकल्प नहीं हो। होना तो है ... नहीं, होना ही है। होगा, नहीं होगा, अभी तक तो हुआ नहीं ...... यह कमज़ोरी के संकल्प हैं। एक दृढ़ संकल्प की भट्ठी हो फिर सब दिल्ली को कापी करेंगे। अभी ऐसी कोई नवीनता दिखाओ। भाषण किया, जनता आई, सुना और गए। भाषण करने वालों ने भाषण किया और चले – यह तो होता रहता है। अब डबल स्टेज स्वयं की और दूसरी स्थान की तैयार करो। जब डबल स्टेज हो तब सफलता हो। स्थूल स्टेज पर झंडा लगाना, स्लोगन लगाना, चित्र लगाना बहुत सहज है, लेकिन हर एक

चैतन्य चित्र हो। हरेक की बुद्धि में विजय का झण्डा लगा हो। स्लोगन सबका एक हो -- सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। फिर देखो दिल्ली वाले कमाल करेंगे। दिल्ली वालों को विशेष एक लिफ्ट की गिफ्ट भी है, वह कौन सी है? दिल्ली वालों का, उसमें भी विशेष शक्ति सेना का विशेष गुण कौनसा है? यज्ञ की स्थापना के कार्य में दिल्ली की शक्ति सेना का सुदामा मिसल जो चावल चपटी काम में आई है, वह बहुत महत्व के समय काम में आई है। तो महत्व के समय पर अगर कार्य में चावल चपटी भी लगाते तो वह बहुत वृद्धि हो जाती है। वैसे इतना फलीभूत नहीं होता, समय पर सहयोग देने से दिल्ली वालों को विशेष गिफ्ट की लिफ्ट मिली है। बाप की ओर से ड्रामा प्रमाण दिल्ली वालों को सदा सम्पन्न रहने का वरदान प्राप्त है। दिल्ली की धरनी का फाउन्डेशन अच्छा है। एक्जाम्पुल बनने वालों को विशेष सहयोग मिलता है। दिल्ली की सेवा अन्य सेवा स्थानों के निमित्त एक्जाम्पुल बने। जैसे आदि में विशेषता दिखाई, वैसे अभी दिखाओ। तो उसका सहयोग मिल जायेगा। दिल्ली वाले फारेन वालों से भी अच्छे प्लैन बना सकते हैं; क्योंकि यहाँ बहुत सेवा के साधन हैं। यहाँ मेहनत की जरूरत नहीं सिर्फ किला मजबूत की बात है। अच्छा। जब सबके संकल्प की अंगुली इकट्ठी होगी तो हर कार्य सफल होगा। सबकी नज़र दिल्ली पर है। जब एक दो के समीप हो हाथ में हाथ मिलायेंगे तब घेराव डाल सकेंगे। हाथ में हाथ मिलाना अर्थात् संकल्प मिलाना। सबमें एक जैसा उमंग-उत्साह हो, दिलाना ना पड़े। अच्छा।

पुरूषार्थ की गुह्य गति क्या है? अथवा श्रेष्ठ पुरूषार्थ कौन सा है? हर संकल्प, श्वांस में स्वत: बाप की याद हो। इसको कहा जाता है स्मृति स्वरूप। जैसे भक्ति में भी कहते हैं -- अनहद शब्द सुनाई दे, अजपाजाप चलता रहे, ऐसा पुरूषार्थ निरन्तर हो -- इसको कहा जाता है श्रेष्ठ पुरूषार्थ। याद करना नहीं पड़े, याद आता ही रहे। महारथियों का पुरूषार्थ यह है। महारथी अर्थात् स्वत: याद। महारथी का हर संकल्प महान होगा। जितना-ज़ितना आगे बढ़ते जायेंगे, साधारणता खत्म होती जायेगी, महानता आती जायेगी। यह है बेढ़ने की निंशानी।

वरदान:- निश्चिंत स्थिति द्वारा यथार्थ जजमेंट देने वाले निश्चयबुद्धि विजयी-रत्न भव

सदा विजयी बनने का सहज साधन है—एक बल, एक भरोसा। एक में भरोसा है तो बल मिलता है। निश्चय सदा निश्चिंत बनाता है और जिसकी स्थिति निश्चिंत हैं, वह हर कार्य में सफल होता है क्योंकि निश्चिंत रहने से बुद्धि जजमेंट यथार्थ करती है। तो यथार्थ निर्णय का आधार है—निश्चयबुद्धि, निश्चिंत। सोचने की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि फालो फादर करना है, कदम पर कदम रखना है, जो श्रीमत मिलती है उसी प्रमाण चलना है। सिर्फ श्रीमत के कदम पर कदम रखते चलो तो विजयी रत्न बन जायेंगे।

स्लोगन:-

मन में सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखना ही विश्व कल्याणकारी बनना है।

है बहुत सहज।समझाना है भारत जो हीरे जैसा था,लक्ष्मी नारायण का राज्य था।अभी इतना गिरा क्यों है।हम आपको बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी बतावें।फिर स्वर्ग कैसे होगा। मनुष्यों के तो ख्याल में भी नहीं है।यह किसको पता नहीं कि लक्ष्मी ना0जो पूज्य थे वही पुजारी बने हैं।आपेही पूज्य..यह परमात्मा के लिए नहीं हैं।यह किसको पता नहीं कि जो पूज्य थे वही पुजारी तमोप्रधान बने हैं।पूज्य थे,जरूर पुनर्जन्म लिया होगा।सतोप्रधान पूज्य थे अब तमोप्रधान पुजारी बने हैं।बाप बैठ समझाते हैं सतयुग में जो आते हैं उनको पुनर्जन्म लेना है। हम सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी बनें अब ब्राह्मण वंशी बनते हैं।फिर देवता वंशी बनेंगे।जैसे प्रजापिता ब्रह्मा को बाप ने एडाप्ट किया।ब्रह्मा बनाया है।कोई पूछे तुम कैसे बने?बोलो ब्रह्मा के मुख से परमपिता परमात्मा ने हमको अपना बनाया है।बाप ही पतितों को पावन बनाते हैं।अभी हम प्रतिज्ञा करते हैं पवित्रता की।बाप को याद करने से ही हम पावन बनते हैं।बाप कृपा करेंगे?कृपा तो की है ना।परमधाम से पतित दुनिया में,पतित शरीर में आये हैं।बाप कहते हैं अब मैं आया हूँ जो सिखलाता हूँ वह सीखो,मुझे याद करो तो तुम्हें ताकत मिलेगी।विकर्म विनाश होंगे।इसमें आशीर्वाद की तो बात ही नहीं।टीचर को कहेंगे कि आप कृपा करो तो हम 100 मार्क्स से पास हो जायें।यह भी बेहद का टीचर है- पढ़ाते हैं।कोई को नालेज धारण नहीं होती है तो क्या करेंगे। टीचर सब पर कृपा करे तो सब पास हो जाएं।फिर तो राजधानी कैसे बनेंगी।तुम बच्चों को तो पुरूषार्थ करना है।फालो करो मॉ बाप को।बाप को याद करो और कोई उपाय है नहीं।नहीं तो बाप को पुकारते क्यों हो।साधू सन्त आदि सब कहते हैं हमको दुखों से आकर छुड़ाओ।भारी संकट आने हैं।जब विनाश शुरू हो जायेगा फिर समझेंगे जरूर कहीं भगवान गुप्त वेश में है।कृष्ण अगर होता तो सारी दुनिया में ढिंढोरा पिट जाता।कृष्ण तो आ न सके।यह तो बाप को आना पड़ता है। अन्त तक बाप को ज्ञान सुनाना है।आते ही गुप्त रूप में हैं।कृष्ण तो हो न सके।निराकार बाप सभी का एक है।वह आये हैं पतितों को पावन बनाने का वर्सा देने।तुम्हारा भी फर्ज है- सबको बतलाना।पूछना है परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या संबंध है।बाप को कितने ढेर बच्चे हैं।तुम समझते हो परमपिता परमात्मा का डायरेक्शन है कि एक तो मुझे याद करो- और अच्छी रीति पढ़ो। बाबा को अच्छी रीति याद कर ऊँच वर्सा पाना है।बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी तुमको समझाते रहते हैं। चित्रों पर भी तुम समझा सकते हो।भारत सतयुग में सिरताज था।सूर्यवंशी देवी देवतायें राज्य करते थे फिर चन्द्रवंशी राज्य हुआ,कला गिरती गई। यह भी तो देखना पड़े ना। पढ़ेंगे अच्छी रीति तो सीखेंगे भी।पढ़ेंगे नहीं तो नापास हो जायेंगे: सावधानी कौन दे। आजकल माया असावधान करने वाली बहुत है।यहाँ झूठ छिप नहीं सकता।कोई विकर्म करेंगे तो वह जमा होता जायेगा।पाप अथवा पुण्य जमा तो जरूर होता है।उस अनुसार ही दूसरा जन्म मिलता है। कोई भी पाप करेंगे तो जन्म भी ऐसे ही मिलेगा। इसलिए बाप कहते हैं कोई पाप करते हो तो झट बतलाओ।ऐसे नहीं कि ईश्वर तो सब जानते हैं।बाप को बतलाना पड़े। इस जन्म में जो पाप कर्म किये हैं वह आत्मा जानती है।सब कुछ याद रहता है कि हमने क्या2काम किये हैं।बापदादा को बतलाओ कि हमने क्या2किया।मुख्य बात है विकार की। चोरी करना,ठगी करना वह तो छोटी2बातें हैं।मुख्य है विकार की बात।काम महाशत्रु है।विकार में जाने वाले को ही पतित कहा जाता है।इन विकारों पर पहले जीत पानी है।तुम्हारा दुश्मन ही रावण है जो पतित बनाते हैं।अब पावन बनने के लिए बाप को याद करो।बाप का बनकर और फिर विकार में गिरे तो चोट बहुत लगेगी।पहले तो देह अभिमान छोड़ना है फिर काम महाशत्रु है।सारी युद्ध है इस पर।तो यह सब बातें समझकर फिर औरों को समझानी है।बाबा पूछेंगे तुम कितने को सच्ची गीता वा सत्य नारायण की कथा,अमरकथा सुनाई।पाप आत्मायें तो ढेर की ढेर हैं।तो यह भी पोतामेल बताओ। तब समझेंगे तुम ब्राह्मण बने हो। कितने को आपसमान बनाया है। यह है सहज राजयोग की बातें।बाप का परिचय देना है।दुनिया में यह तो कोई जानते नहीं हैं।बाप के पास बहुतों के सर्टीफिकेट भी आते हैं।लिखते हैं फलाने ने ऐसा समझाया-वही गुरू निमित्त बना स्वर्ग का मालिक बनाने।बी0के0सबूत देते हैं।परन्तु जो बनते हैं,वह किसको समझाते हैं?किसको ले आते हैं? ले तो आना है ना।जिनको निश्चय होगा फट से कहेंगे।पहले बाप की गोद तो ले लेवें।

(29•5•83) प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद

"मीठे बच्चे- बाप की मदद या पूरा वर्सा लेने के लिए सगे बच्चे बनो। सगे अर्थात् पूरा सन्यास कर पवित्रता की प्रतिज्ञा करने वाले" २७

प्रश्न:- बाप फुल रहमदिल है-कैसे?कौन सा रहम बच्चों पर सदा ही करते है?उत्तर:-कोई बच्चा कितना भी विघ्न डालता, माया के वश हो उल्टा कर्म कर लेता लेकिन फिर भी अगर कोई भूल महसूस करता तो बाप उसे शरण ले कहते हैं अच्छा फिर से ट्रायल करो। सतगुणी बनो गुणवान बनो। बाप फुल रहमदिल है, क्योंकि जानते हैं बच्चे और कहाँ जायेंगे। सदा सुखी रहे, यही बाप की आश रहती है।

गीत:-तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है••ओमशान्ति। मीठे2बच्चे जिनको ही गोप गोपियाँ भी कहा जाता है। सतयुग में गोप गोपियाँ नहीं होते हैं। वहाँ तो राजधानी चलती है। गोप गोपियाँ संगमयुग पर हैं जबकि गोपी वल्लभ भी आते हैं। वल्लभ बाप को कहा जाता है। वो याद करते हैं कि बाबा फिर से आओ। सभी सेन्टर्स के बच्चे होंगे। सबको पता है कि बाबा ... मुरली बजाता होगा। वह मुरली टेप में भरती होगी। लिखते होंगे। लिखी होगी फिर हमारे पास आयेगी। हम धारणा करेंगे फिर हम धारणा करायेंगे। यह सब समझते होंगे कि मधुबन में तो गोप गोपियाँ, गोपी वल्लभ से सम्मुख सुनते होंगे। वो ही मुरली फिर हम 4-5 दिन के बाद सुनेंगे। ऐसे ख्यालात चलते होंगे ना। कहते हैं बाबा आप आओ तो हम सदैव मुस्कराने लग जायें। जैसे देवतायें सदैव हर्षित रहते हैं। वहाँ यथा राजा रानी तथा प्रजा भी हर्षित रहते हैं। दुःख का नाम निशान नहीं रहता। यहाँ तो है ही प्रजा का राज्य। तो बच्चे जानते हैं बाबा आकर हमको पढ़ाते हैं। यहाँ गरीब ही अच्छी रीति पढ़ते हैं। जैसे वे गरीब भी कोई एम०एल०ए०कोई एम०पी०बन जाते हैं ना। यहाँ गरीब ही पढ़ सकते हैं। वारिस भी गरीब ही बनते हैं। साहूकारों को लफड़ा बहुत रहता है। एक तो धन का नशा, दूसरा फिर फुर्सत नहीं मिलती। बलि भी नहीं चढ़ सकते। यहाँ बलि चढ़ना पड़ता है। तन-मन-धन सहित। साहूकारों का हृदय विदीर्ण होता है। फुरना बहुत रहता है। इसलिए गरीब चढ़ बलि ... है। उसमें भी पहले नम्बर में कन्यायें जाती हैं। मम्मा भी कन्या है ना। बाप की बनी और कहेंगे कि मेरा तो शिवबाबा दूसरा न कोई। इसको बलि चढ़ना कहा जाता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए जैसे कि वहाँ नहीं है। बुद्धि में शान्तिधाम सुखधाम ही बसता है। अब जाते हैं स्वीट होम फिर स्वीट राजाई में। गृहस्थ व्यवहार में रहते रचना की भी पालना करनी है। परन्तु श्रीमत से। श्रीमत तब मिले जब बलि चढ़े। सर्वशक्तिवान के साथ योग लगाने से ही शक्ति मिलती है। बाप का नहीं बनते हैं तो शक्ति नहीं मिलेगी। सगे और लगे होते हैं ना। उन सन्यासियों में भी सगे और लगे होते हैं। कोई तो घरबार छोड़ जाए गेरू कफनी पहनते हैं। वह ठहरे सगे। कोई फिर फॉलोअर्स होते हैं, वह रहते हैं गृहस्थ में। उनको कहते हैं लगे। सगे नहीं कहेंगे। वह है सिर्फ कफनी वाले। वर्सा मिल न सके। क्योंकि अपवित्र रहते हैं। यहाँ भी कोई तो सगे रहते हैं। जो पवित्रता की राखी बांधते हैं। बाकी जो पवित्र नहीं रहते हैं उनको सगे कह न सकें। यह है राजयोग से सन्यास। वह है हठयोग से सन्यास। बाबा समझाया है जैसे अपने को सन्यासियों के फॉलोअर्स कहलाते हैं। परन्तु रहते हैं घर गृहस्थ में। उनको वास्तव में फॉलोअर्स वा सन्यासी कह न सकें। सन्यास करने का पुरुषार्थ करने चाहते परन्तु बन्धन है। जिन्होंने कल्प पहले सन्यास किया है वही छोड़ते हैं। वह हो जाते हैं सगे। वह लगे। यहाँ जो भी बाप के बनते हैं वही सगे ठहरे। मदद और वर्सा भी सगे को ही मिलता। लगे को मदद मिल न सके। बाबा ने समझाया है यह है ज्ञान इन्द्र सभा। यहाँ सब ज्ञान परियाँ, नौ रत्नों की भी बहुत महिमा है। नौ रत्न की अंगूठी भी पहनते हैं। ब्राह्मण समझते हैं यह पहनने से तुम्हारी दशा बदलेगी। पत्थरों की भी महिमा कर दी है। वे ही रत्न बच्चे हो। जितने जो सर्विसएबुल बनते हैं वे विजय माला में आते हैं। ऊपर ते जय... बनाने वाला बाबा। उनको बीच में रखते हैं। मनुष्य तो इन बातों को जानते नहीं। रत्न कौन थे? पत्थर से भेंट क्यों करते हो? जैसे नदियों से भी भेंट करते हैं, हम हो ज्ञान ...

...जरूर है पानी की। तो कहते है बाबा आओ तो हम सदैव हर्षित रहेंगे। आपकी मुरली ... कर औरों को सुनायेंगे। फिर वहाँ प्रिन्स प्रिन्सेज बन रत्न जड़ित मुरली भी बजाते हैं। ... बजाने का शौक रहता है। कृष्ण को भी मुरली थी जरूर। जबकि वह प्रिन्स था। ... करता था। बाकी ज्ञान मुरली सुनाना या बजाना तो ज्ञान सागर का ही काम है। वह ... मुरली बाप आकर चलाते है। ज्ञान की बात यहाँ ही है। वहाँ ज्ञान की बात नहीं होती ... मुरली बजाने वाली तुम बच्चियाँ हो। सतयुग में त्रिकालदर्शी पने का ज्ञान नहीं होता। ... नालेज प्राय: लोप हो जाती ... परमपरा नहीं चल सकती। पीछे तो होती है प्रालब्ध। ... ही बार मिलता है। अभी तुम 21 जन्मों के लिए प्रालब्ध पा रहे हो। प्रालब्ध ... फिर तो बाबा भी परमधाम में जाकर बैठ जाते हैं। तुमको ज्ञान योगबल से विश्व ... बनाए हम वाणी से परे हो बैठ जाते हैं। फिर वहाँ मेरे को कोई नहीं जानते। ... और मेरी रचना को कोई जान नहीं सकते। न बाप को जानते, न सृष्टि के ... मध्य अन्त को जानते हैं। वहाँ यह ज्ञान ... नहीं रहता है। राधे कृष्ण को यहाँ यह ... कि फिर 14 कला बनना है तो राज, ताज की खुशी गुम हो जाए। यह ज्ञान वहाँ ... ही नहीं। बाप हर बात क्लीयर समझाते है। तुम भी सन्यासी हो, वे भी सन्यासी है। ... हठयोग का सन्यास। सन्यासी हद का घर बार छोड़ जाते हैं। वह है शंकराचार्य ... शिवाचार्य। शिवबाबा ज्ञान सागर है ना। उनको आचार्य कहा जाता है। कृष्ण आचार्य ... भगवान शिवाचार्य बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं, राजयोग सिखलाते हैं। वह हठयोग है ... योग सिखला न सकें। यह बेहद का बाप ही सतयुग का राज्य प्राप्त कराने राजयोग ... समझाते है। तुम अब बाप के पास आये हो। वे जन्म बाई जन्म सन्यास लेते हैं। तुम 21 जन्म ... सन्यास नहीं लेते हो। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया है। हम इसको ठोकर मारते हैं। ... बाप ने दो प्रकार की यात्रा समझाई है। एक रूहानी यात्रा दूसरी जिस्मानी। सुप्रीम ... कहते हैं मैं तुमको यात्रा पर ले जाता हूँ। फिर तुम मृत्युलोक में नहीं आयेंगे। बाप है ... पण्डा। उनके बच्चे भी पण्डे ठहरे। तुम हो रूहानी पण्डे रूहानी यात्रा कराने वाले। ... धारणा करने की बातें हैं। बच्चे अच्छी रीति धारणा कर समझाते हैं। कोई फिर ऐसे भी हैं ... योग पूरा नहीं रहता है। भल ज्ञान की धारणा अच्छी रहती है, योग नहीं ठहरता है। ... माया इन्टरफेयर नहीं करती है। योग में माया इन्टरफेयर करती है। जैसे रेडियो में ... करते हैं तो लड़ाई जब लगती है तो एक दो का आवाज़ सुनने नहीं देते हैं। खिट2 ... योग में भी माया इन्टरफेयर करती है। भारत में योग का नाम मशहूर है। ... योग किसने सिखाया? उन्हों ने कृष्ण भगवानुवाच कह दिया है। कृष्ण तो है सतयुग में। ... नाम रूप देश काल बदलते2 यह है अब अन्तिम जन्म। फिर इसमें बाप प्रवेश कर उनको ... बना रहे हैं। तुम जानते हो ब्राह्मण सो देवता बने फिर क्षत्रिय सो वैश्य सो शूद्र बने। ... समझाते हैं मैं जो भी तुमको नालेज देता हूँ वह प्राय: लोप हो जाती है। इस ... बुलाता हूँ तो पहला नम्बर नदी भी ब्रह्मा। मेला लगता है ना। ब्रह्मपुत्रा और सागर ... पुत्रा है बड़ी नदी। जो धारणा कर कराते हैं। बरोबर भगवान रूप बदलकर ... जो निराकार रूप है वह बदलकर साकार में आते हैं। ब्राह्मणों का सबसे ऊँच कुल है। ... मुख कंवल द्वारा ब्राह्मणों को ज्ञान दे देवी धर्म और क्षत्रिय धर्म की स्थापना ... सतयुग त्रेता में और कोई धर्म होता नहीं। अब स्थापना हो रही है। रामचन्द्र को ... की निशानी दे दी है। बरोबर युद्ध के मैदान में था। परन्तु पूरी जीत न पाने कारण ... इस कारण सूर्यवंशी नहीं बन सका। प्रश्न उठता है राम सीता सतयुग में आते हैं? ... है। परन्तु ना पास होते हैं, इसलिए जो पास हुए उनके आगे भरी ढोते हैं। राधे कृष्ण ... जानते हैं। जिन्होंने भी पढ़ाई पढ़ी वह सतयुग में तो जरूर आते हैं। ... ज्ञान का विनाश नहीं होता है। प्रजा तो बहुत बनती है ना। कोई ... है फिर चक्र लगाकर आ जाते हैं। जायेंगे कहाँ शमा एक ही है। परवाने अनेक है। तो ... आते रहेंगे। भागन्ती हो जाने वाले भी आयेंगे। सतगुरू की निंदा कराई है फिर भी

17-8-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम पवित्र बनने के बिगर वापिस जा नहीं सकते इसलिए बाप की याद से आत्मा की बैटरी को चार्ज करो और नैचुरल पवित्र बनो।"

प्रश्न:- बाबा तुम बच्चों को घर चलने के पहले कौन-सी बात सिखलाते हैं?

उत्तर:- बच्चे, घर चलने के पहले जीते जी मरना है, इसलिए बाबा तुम्हें पहले से ही देह के भान से परे ले जाने का अभ्यास कराते हैं अर्थात् मरना सिखलाते हैं। ऊपर जाना माना मरना। जाने और आने का ज्ञान अभी तुम्हें मिला है। तुम जानते हो हम आत्मा ऊपर से आई हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते हैं। हम असुल वहाँ के रहने वाले हैं, अभी वहाँ ही वापिस जाना है।

ओम् शान्ति। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में कोई तकलीफ नहीं है, बुटका नहीं खाना है। इसको कहा जाता है सहज याद। पहले-पहले अपने को आत्मा ही समझना है। आत्मा ही शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। संस्कार भी सब आत्मा में ही रहते हैं। आत्मा तो इन्डिपेन्डेन्ट है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। यह नॉलेज अभी ही तुमको मिलती है, फिर नहीं मिलेगी। तुम्हारा यह शान्त में बैठना दुनिया नहीं जानती। इसको कहा जाता है नैचुरल शान्त। हम आत्मा ऊपर से आई हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते रहते हैं। हम आत्मा असुल वहाँ के रहने वाले हैं। यह बुद्धि में ज्ञान है। बाकी इसमें हठयोग की कोई बात नहीं। बिल्कुल सहज है। अभी हम आत्माओं को घर जाना है। परन्तु पवित्र बनने बिगर जा नहीं सकते। पवित्र होने के लिए परमात्मा बाप को याद करना है। याद करते-करते पाप मिट जायेंगे। तकलीफ की तो कोई बात ही नहीं। तुम पैदल करने जाते हो तो बाप की याद में रहो। अभी ही याद से पवित्र बन सकते हो। वहाँ वह तो है पवित्र दुनिया। वहाँ उस पावन दुनिया में इस ज्ञान की कोई दरकार नहीं रहती क्योंकि वहाँ कोई विकर्म होता नहीं। यहाँ याद से विकर्म विनाश करने हैं। वहाँतो तुम नैचुरल चलते हो, जैसे यहाँ चलते हो। फिर थोड़ा-थोड़ा नीचे उतरते हो। ऐसे नहीं कि वहाँ भी तुमको यह प्रैक्टिस करना है। प्रैक्टिस अभी ही करना है। बैटरी अब चार्ज करना है फिर आहिस्ते-आहिस्ते बैटरी डिस-चार्ज होना ही है। बैटरी चार्ज होने का ज्ञान अभी एक ही बार तुमको मिलता है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने में तुमको कितना समय लग जाता है! शुरू से लेकर कुछ न कुछ बैटरी कम होती जाती है। मूलवतन में तो हैं ही आत्मायें। शरीर तो है नहीं। तो नैचुरल उतरने अर्थात् बैटरी कम होने की बात ही नहीं। मोटर जब चलेगी तब तो बैटरी कम होती जायेगी। मोटर खड़ी होगी तो बैटरी थोड़ेही चालू होगी। मोटर जब चले तब बैटरी चालू होगी। भल मोटर में बैटरी चार्ज़ होती रहती है लेकिन तुम्हारी बैटरी एक ही बार इस समय चार्ज़ होती है। तुम फिर जब यहाँ शरीर से कर्म करते हो फिर थोड़ी बैटरी कम होती जाती है। पहले तो समझाना है कि वह है सुप्रीम फादर, जिसको सब आत्मायें याद करती हैं। हे भगवान कहते हैं, वह बाप है, हम बच्चे हैं। यहाँ तुम बच्चों को समझाया जाता है, बैटरी कैसे चार्ज करनी है। भल घूमो फिरो, बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कोई भी बात न समझो तो पूछ सकते हो। है बिल्कुल सहज। 5 हजार वर्ष बाद हमारी बैटरी डिस्चार्ज़ हो जाती है। बाप आकर सबकी बैटरी चार्ज़ कर देते हैं। विनाश के समय सब ईश्वर को याद करते हैं। समझो

बाढ़ हुई तो भी जो भक्त होंगे वह भगवान को ही याद करेंगे परन्तु उस समय भगवान की याद आ नहीं सकती। मित्र-सम्बन्धी, धन-दौलत ही याद आ जाता है। भल 'हे भगवान' कहते हैं परन्तु वह भी कहने मात्र। भगवान बाप है, हम उनके बच्चे हैं। यह तो जानते ही नहीं। उनको सर्वव्यापी का उल्टा ज्ञान मिलता है। बाप आकर सुल्टा ज्ञान देते हैं। भक्ति की डिपार्टमेंट ही अलग है। भक्ति में ठोकरें खानी होती हैं। ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात है। ब्रह्मा का दिन सो ब्राह्मणों का दिन है। ऐसा तो नहीं कहेंगे शूद्रों का दिन, शूद्रों की रात। यह राज़ बाप बैठ समझाते हैं। यह है बेहद की रात वा दिन। अभी तुम दिन में जाते हो, रात पूरी होती है। यह अक्षर शास्त्रों में हैं। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात कहते हैं परन्तु जानते नहीं हैं। तुम्हारी बुद्धि अब बेहद में चली गई है। यूं तो देवताओं को भी कह सकते हैं—विष्णु का दिन, विष्णु की रात क्योंकि विष्णु और ब्रह्मा का सम्बन्ध भी समझाया जाता है। त्रिमूर्ति का आक्यूपेशन क्या है—और तो कोई समझ न सके। वह तो भगवान को ही कच्छ-मच्छ में वा जन्म-मरण के चक्र में ले आते हैं। राधे-कृष्ण आदि भी मनुष्य हैं, परन्तु दैवी गुणों वाले। अभी तुमको ऐसा बनना है। दूसरे जन्म में देवता बन जायेंगे। 84 जन्मों का जो हिसाब-किताब था वह अब पूरा हुआ, फिर रिपीट होगा। अब तुमको यह शिक्षा मिल रही है।

बाप कहते हैं — मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा निश्चय करो। कहते भी हैं हम पार्टधारी हैं। परन्तु हम आत्मायें ऊपर से आती हैं—यह नहीं समझते हैं। अपने को देहधारी ही समझ लेते हैं। हम आत्मा ऊपर से आती हैं फिर कब जायेंगी? ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहते हैं? यहाँ तो बाप ने कहा है—तुम इस शरीर को भूलते जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखालाते हैं, जो और कोई सिखला न सके। तुम आये ही हो अपने घर जाने के लिए। घर कैसे जाना है—यह ज्ञान अभी ही मिलता है। तुम्हारा इस मृत्युलोक का यह अन्तिम जन्म है। अमरलोक सतयुग को कहा जाता है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है—हम जल्दी-जल्दी जावें। पहले-पहले तो घर मुक्तिधाम में जाना पड़ेगा। यह शरीर रूपी कपड़ा यहाँ ही छोड़ना है फिर आत्मा चली जायेगी घर। जैसे हद के नाटक के एक्टर्स होते हैं, नाटक पूरा हुआ तो कपड़े वहाँ ही छोड़कर घर के कपड़े पहन घर में जाते हैं। तुम्हें भी अब यह चोला छोड़ जाना है। सतयुग में तो थोड़े देवतायें होते हैं। यहाँ तो कितने मनुष्य हैं अनगिनत। वहाँ तो होगा ही एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म। अभी तो अपने को हिन्दू कह देते हैं। अपने श्रेष्ठ धर्म-कर्म को भूल गये हैं तब तो दु:खी हुए हैं। सतयुग में तुम्हारा श्रेष्ठ कर्म, धर्म था। अभी कलियुग में धर्म भ्रष्ट हैं। बुद्धि में आता है कि हम कैसे गिरे हैं? तमोप्रधान बुद्धि होने कारण 84 जन्मों के बदले 84 लाख कह देते हैं। ठिक्कर-भित्तर में परमात्मा को कह देते हैं, कि तुम कितने ठिक्कर बुद्धि बन गये हो। स्कूल में कोई ठीक रीति नहीं पढ़ते हैं तो कहते हैं तुम कितने ठिक्कर बुद्धि बन गये हो। यह फिर बेहद के बाप का परिचय देते हो। बेहद का बाप ही आकर नई दुनिया स्वर्ग रचते हैं। कहते हैं मनमनाभव। यह गीता के ही अक्षर हैं। सहज राजयोग के ज्ञान का नाम रख दिया जाता है गीता। यह तुम्हारी पाठशाला है। बच्चे आकर पढ़ते हैं तो कहेंगे हमारे बाबा की पाठशाला है। जैसे कोई बच्चे का बाप प्रिन्सीपल होगा तो कहेंगे हम अपने बाबा के कॉलेज में पढ़ते हैं। उनकी माँ भी प्रिन्सीपल है तो कहेंगे हमारे माँ-बाप दोनों प्रिन्सीपल हैं। दोनों पढ़ाते हैं। हमारे मम्मा-बाबा का

कॉलेज है। तुम कहेंगे हमारे मम्मा-बाबा की पाठशाला है। दोनों ही पढ़ाते हैं। दोनों ने यह रूहानी कॉलेज वा युनिवर्सिटी खोली है। दोनों इकट्ठे पढ़ाते हैं। ब्रह्मा ने एडाप्ट किया है ना। (९) यह बहुत गुह्य ज्ञान की बातें हैं। बाप कोई नई बात नहीं समझाते हैं। यह तो कल्प पहले भी समझानी दी है। हाँ, इतनी नॉलेज है जो दिन-प्रतिदिन गुह्य होती जाती है। आत्मा की समझानी देखो अभी तुमको कैसे मिलती है। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। वह कभी विनाश नहीं होता। आत्मा अविनाशी तो उनमें पार्ट भी अविनाशी है। आत्मा ने कानों द्वारा सुना। शरीर है तो पार्ट है। शरीर से आत्मा अलग हो जाती है तो जवाब नहीं मिलता। अभी बाप कहते हैं--बच्चे, तुमको वापिस घर चलना है। यह पुरूषोत्तम युग जब आता है तब ही वापिस जाना होता है, इसमें पवित्रता ही मुख्य चाहिए। शान्तिधाम में तो पवित्र आत्मायें ही रहती हैं। शान्तिधाम और सुखधाम दोनों ही पवित्र धाम हैं। वहाँ शरीर है नहीं। आत्मा पवित्र है, वहाँ बैटरी डिस्चार्ज नहीं होती। यहाँ शरीर धारण करने से मोटर चलती है। मोटर खड़ी होगी तो पेट्रोल कम थोड़ेही होगा। अभी तुम्हारी आत्मा की ज्योत बहुत कम हो गई है। एकदम बुझ नहीं जाती है। जब कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं। फिर उसकी बहुत सम्भाल रखते हैं कि बुझ न जाए। आत्मा की ज्योत कभी बुझती नहीं है, वह तो अविनाशी है। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। बाबा जानते हैं कि यह बहुत स्वीट चिल्ड्रेन हैं, यह सब काम चिता पर बैठ जलकर भस्म हो गये हैं। फिर इन्हों को जगाता हूँ। बिल्कुल ही तमोप्रधान मुर्दे बन पड़े हैं। बाप को जानते ही नहीं। मनुष्य कोई काम के नहीं रहे हैं। मनुष्य की मिट्टी कोई काम की नहीं रहती है। ऐसे नहीं कि बड़े आदमी की मिट्टी कोई काम की है, गरीबों की नहीं। मिट्टी तो मिट्टी में मिल जाती है फिर भल कोई भी हो। कोई जलाते हैं, कोई कब्र में बंद कर देते हैं। पारसी लोग कुएं पर रख देते हैं। फिर पंछी मास खा लेते हैं। फिर हड्डियाँ जाकर नीचे पड़ती हैं। वह फिर भी काम आती है। दुनिया में तो ढेर मनुष्य मरते हैं। अभी तुमको तो आपेही शरीर छोड़ना है। (तुम यहाँ आये ही हो शरीर छोड़कर वापिस घर जाने अर्थात् मरने।। तुम खुशी से जाते हो कि हम जीवनमुक्ति में जायेंगे। जिन्होंने जो पार्ट बजाया है, अन्त तक वही बजायेंगे। बाप पुरूषार्थ कराते रहेंगे, साक्षी हो देखते रहेंगे। यह तो समझ की बात है, इसमें डरने की कोई बात नहीं है। हम स्वर्ग में जाने के लिए खुद ही पुरूषार्थ कर शरीर छोड़ देते हैं। बाप को ही याद करते रहना है तो अन्त मती सो गति हो जाए, इसमें मेहनत है। हर एक पढ़ाई में मेहनत है। भगवान को आकर पढ़ाना पड़ता है। जरूर पढ़ाई बड़ी होगी। इसमें दैवीगुण भी चाहिए। यह लक्ष्मी-नारायण बनना है ना। यह सतयुग में थे। अब फिर तुम सतयुगी देवता बनने आये हो। एम ऑबजेक्ट कितनी सहज है। त्रिमूर्ति में क्लीयर है। यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि के चित्र न हों तो हम समझा कैसे सकते। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मा की 8 भुजा, 100 भुजा दिखाते हैं क्योंकि ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे होते हैं। तो उन्होंने फिर वह चित्र बना दिया है। बाकी मनुष्य कोई इतनी भुजाओं वाला होता थोड़ेही है। रावण 10 शीश का भी अर्थ है, ऐसा मनुष्य होता नहीं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं, मनुष्य तो कुछ भी जानते नहीं। यह भी खेल है, यह कोई को पता नहीं है कि यह कब से शुरू हुआ है। परम्परा कह देते हैं। अरे, वह भी कब से? तो मीठे-मीठे बच्चों को बाप पढ़ाते हैं, वह टीचर भी है तो गुरू भी है। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी

चाहिए।

(यह म्युज़ियम आदि किसके डायरेक्शन से खोलते हैं? यहाँ हैं ही माँ, बाप और बच्चे। ढेर बच्चे हैं। डायरेक्शन पर खोलते रहते हैं। लोग कहते हैं तुम कहते हो भगवानुवाच तो रथ द्वारा हमको भगवान का साक्षात्कार कराओ। अरे, तुमने आत्मा का साक्षात्कार किया है? इतनी छोटी-सी बिन्दु का साक्षात्कार तुम क्या कर सकेंगे! जरूरत ही नहीं है। यह तो आत्मा को जानना होता है।) आत्मा भृकुटी के बीच रहती है, जिसके आधार पर ही इतना बड़ा शरीर चलता है। अभी तुम्हारे पास न लाइट का, न रत्न जड़ित ताज है। दोनों ताज लेने लिए फिर से तुम पुरूषार्थ कर रहे हो। कल्प-कल्प तुम बाप से वर्सा लेते हो। बाबा पूछते हैं आगे कभी मिले हो? तो कहते हैं — हाँ बाबा, कल्प-कल्प मिलते आये हैं क्यों? यह लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए। यह सभी एक ही बात बोलेंगे। बाप कहते हैं—अच्छा, शुभ बोलते हो, अब पुरूषार्थ करो। सब तो नर से नारायण नहीं बनेंगे, प्रजा भी तो चाहिए। कथा भी होती है सत्य नारायण की। वो लोग कथा सुनाते हैं, परन्तु बुद्धि में कुछ भी नहीं आता। तुम बच्चे समझते हो वह है शान्तिधाम, निराकारी दुनिया। फिर वहाँ से जायेंगे सुखधाम। सुखधाम में ले जाने वाला एक ही बाप है। तुम कोई को समझाओ, बोलो अभी वापिस घर जायेंगे। (आत्मा को अपने घर तो अशरीरी बाप ही ले जायेंगे। अभी बाप आये हैं, उनको जानते नहीं। बाप कहते हैं मैं जिस तन में आया हूँ, उनको भी नहीं जानते। रथ भी तो है ना। हर एक रथ में आत्मा प्रवेश करती है। सबकी आत्मा भृकुटी के बीच रहती है। बाप आकर भृकुटी के बीच में बैठेगा। समझाते तो बहुत सहज हैं। पतित-पावन तो एक ही बाप है, बाप के सब बच्चे एक समान हैं। उनमें हर एक का अपना-अपना पार्ट है। इसमें कोई इन्टरफियर नहीं कर सकता। अच्छा!)

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. इस शरीर रूपी कपड़े से ममत्व निकाल जीते जी मरना है अर्थात् अपने सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तू करने हैं।

२. डबल ताजधारी बनने के लिए पढ़ाई की मेहनत करनी है। दैवी गुण धारण करने हैं। जैसा लक्ष्य है, शुभ बोल है, ऐसा पुरूषार्थ करना है।

वरदान:- मधुरता द्वारा बाप की समीपता का साक्षात्कार कराने वाले महान आत्मा भव

जिन बच्चों के संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता और कर्म में भी मधुरता है वही बाप के समीप हैं। इसलिए बाप भी उन्हें रोज़ कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे और बच्चे भी रेसपान्ड देते हैं - मीठे-मीठे बाबा। तो यह रोज़ का मधुर बोल मधुरता सम्पन्न बना देता है। ऐसे मधुरता को प्रत्यक्ष करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें ही महान हैं। मधुरता ही महानता है। मधुरता नहीं तो महानता का अनुभव नहीं होता।

स्लोगन:-

कोई भी कार्य डबल लाइट बनकर करो तो मनोरंजन का अनुभव करेंगे।

होकर बैठ जाएं परन्तु कब तक? कर्म तो करना है ना। वह समझते हैं गृहस्थ धर्म में रहना, यह कर्म नहीं करना है। इन हठयोग सन्यासियों का भी पार्ट है। उनका भी एक यह निवृत्ति मार्ग वालों का धर्म है। और कोई धर्म में घर घाट छोड़ जंगल में नहीं जाते। अगर कोई ने छोड़ा भी है तो भी सन्यासियों को देखकर। बाबा कोई घर से वैराग नहीं दिलाते। बाप कहते हैं (a) भल घर में रहो परन्तु पवित्र बनो। पुरानी दुनिया को भूलते जाओ। तुम्हारे लिए नई दुनिया (a) बना रहा हूँ। शंकराचार्य सन्यासियों को ऐसे नहीं कहते कि तुम्हारे लिए नई दुनिया बनाता हूँ उनका है हद का सन्यास, जिससे अल्पकाल का सुख मिलता है। अपवित्र लोग जाकर माथा टेकते हैं। पवित्रता का देखो कितना मान है। अभी तो देखो कितने बड़े2 फ्लैट आदि बनाते हैं। मनुष्य दान करते हैं अब इसमें पुण्य तो कुछ हुआ नहीं। पुण्य कहते हैं हम जो सब कुछ ईश्वर अर्थ करते हैं। बाप कहते हैं मेरे अर्थ तुम किस किस कार्य में लगाते रहो। दान उनको देना चाहिए- जो पाप न करें। अगर पाप किया तो तुम्हारे ऊपर उनका असर पड़ जायेगा। क्योंकि तुमने पैसे दिये। पतितों को देते2 तुम कंगाल हो गये हो। पैसे ही सब बरबाद हो गये हैं। करके अल्पकाल का सुख मिल जाता है। यह भी ड्रामा का खेल बना हुआ है। अभी तुम पावन बन रहे हो- पैसे भी तुम्हारे पास वहाँ ढेर होंगे। वहाँ कोई पतित होते नहीं हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। तुम हो ईश्वरीय औलाद। तुम्हारे में बड़ी रॉयल्टी होनी चाहिए। राजे लोग बड़े रॉयल होते हैं। बहुत कम बोलते हैं। तुम ईश्वरीय औलाद की चलन बड़ी रॉयल होनी चाहिए। कहते हैं गुरू के निंदक ठौर न पायें। उन्हों में बाप टीचर गुरू अलग है। यहाँ तो बाप टीचर सतगुरू एक ही है। अगर तुम कोई उल्टी चलन चले तो तीनों के निंदक बन पड़ेंगे। सत बाप, सत टीचर सतगुरू की मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बन जाते हो। शरीर तो छोड़ना ही है तो क्यों न बाप से वर्सा ले लेवें। बाप कहते हैं इस ईश्वरीय अलौकिक सेवा में लगाओ। मैं क्या करूँगा। मैं तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूँ। वहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता। यहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता हूँ। गाते हैं बम बम महादेव.. भर दे मेरी झोली। परन्तु वह कब और कैसे (b) झोली भरते यह कोई भी नहीं जानते हैं। झोली भरी थी तो जरूर चैतन्य में थे 2। जन्म के (b) लिए तुम बड़े सखी साहूकार बन जाते हो। ऐसे बाप की मत पर कदम2 चलना चाहिए। बड़ी मंजिल है। अगर कोई कहे मैं नहीं चल सकता। बाबा कहेंगे - तुम फिर बाबा क्यों कहते हो। श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो बहुत डन्डे खायेंगे। पद भी भ्रष्ट होगा। गीत में भी सुना - कहते हैं मुझे ऐसी दुनिया में ले चलो जहाँ सुख और शान्ति हो। सो तो बाप ही दे सकता है। बाप की मत पर नहीं चलेंगे तो अपने को ही घाटा डालेंगे। यहाँ कोई खर्चे आदि की बात नहीं है। ऐसे थोड़ेही कहते गुरू के आगे नारियल बताशे ले आओ। वा स्कूल में फी भरो। कुछ भी नहीं। पैसे भल अपने पास रखो। तुम सिर्फ नालेज पढ़ो। भविष्य सुधार करने में कोई नुकसान तो नहीं है। यहाँ कोई माथा भी नहीं टेकना सिखाया जाता। आधाकल्प तो तुम पैसा रखते, माथा झुकाते2 कंगाल बन पड़े हो। अब बाप फिर तुमको ले जाते हैं शान्तिधाम। वहाँ से सुखधाम में भेज देंगे। अब नवयुग, नई दुनिया आने वाली है। नवयुग सतयुग को कहेंगे फिर कलायें कमती होती जाती हैं। अभी बाप तुमको लायक बना रहे हैं। नारद का मिसाल। अगर कोई भी भूत होगा तो तुम लक्ष्मी को वर नहीं सकेंगे। यहाँ तो बच्चे तुम्हें अपना घरबार भी सम्भालना है और सर्विस भी करनी है। पहले यह भागे इसीलिए - क्योंकि इन्हों पर बहुत मार पड़ी। बहुत अत्याचार हुए। मार की भी इन्हों को परवाह नहीं थी। भट्ठी में कोई पक्के, कोई कच्चे निकल गये। बहुत टूट भी गये। ड्रामा की भावी ऐसी थी। जो हुआ सो हुआ फिर भी होगा। गालियां भी देंगे। सबसे बड़े ते बड़ी गाली खाते हैं परमपिता परमात्मा शिव। यह देते हैं परमात्मा सर्वव्यापी हैं, कुत्ते बिल्ली कच्छ मच्छ सबमें हैं। बाप कहते हैं मैं तो पर-उपकारी हूँ। तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। श्रीकृष्ण स्वर्ग का प्रिन्स हैं ना। उनके लिए फिर कहते हैं सर्प ने डसा। काला हो गया। अब वहाँ सर्प कैसे डसेगा। कृष्णपुरी में भला कंस कहाँ से आया? यह सब हैं दन्त कथायें। भक्ति मार्ग की यह सामग्री है। जिससे तुम नीचे उतरते आये हो। बाबा तो तुमको गुल2 फूल बनाते हैं। कोई2 तो बहुत बड़े कांटे हैं। ओ गॉड फादर कहते हैं, परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। फादर तो है परन्तु फादर से क्या वर्सा मिलेगा।

अहा भी है नहीं।तुम यह नालेज ही भूल गये हो।फिर गीता आदि शास्त्र कहाँ से आया। गीता सुनकर जिन्होंने यह पद पाया वही जानते नहीं तो फिर और कैसे जान सकते। देवतायें भी नहीं जान सकते।हम मनुष्य से देवता कैसे बने।यह पुरुषार्थ का पार्ट ही बन्द हो गया। तुम्हारी प्रालब्ध शुरू हो गई।तो वहाँ यह नालेज हो कैसे सकती।मनुष्य समझते हैं भक्तिमार्ग में ऋषि,मुनि आदि त्रिकालदर्शी थे परन्तु नहीं।बाप ही आकर यह नालेज देते हैं।अपना परिचय देते हैं।ऋषि मुनि आदि तो सब नेती2करते आये।बाप समझाते हैं यह नालेज तुमको फिर मिल रही है।कल्प पहले मिला।तुमको राजयोग सिखलाकर प्रालब्ध दी जाती है।फिर वहाँ दुर्गति है नहीं।तो ज्ञान की बात भी उठ नहीं सकती।ज्ञान है ही सदगति पाने लिए।वह देने वाला एक बाप है।सदगति और दुर्गति का अक्षर यहाँ ही निकलता है।सदगति को भारतवासी ही पाते हैं।समझते हैं हैविनली गाडफादर ने हैविन रचा था।कब रचा?कुछ पता नहीं।शास्त्रों में तो लाखों वर्ष लिख दिये हैं।बाप कहते हैं बच्चों तुमको फिरसे नालेज देता हूँ।फिर यह नालेज प्रायः लोप हो जाती है ।तो भक्ति शुरू होती है।आधाकल्प है ज्ञान आधाकल्प है भक्ति । ज्ञान कितना समय भक्ति कितना समय चलती है।यह भी कोई नहीं जानते हैं।सतयुग की आयु ही लाखों वर्ष दे दी है।तो मालूम कैसे पड़े।बाप ही कहते है तुम अपनेजन्मों को भूल गये हो। मैं बतलाता हूँ कहाँ भी है 84 का चक्र,84लाख हो कैसे सकते।कुछ भी नहीं समझते।बाप कितना सहज समझाते हैं।कल्प की आयु ही 5हजार वर्ष है।युग ही 4है।ब्राह्मणों का यह मिडगेट युग है।बहुत छोटा है।धारणा तुमको करनी है।मेहनत तुमको करनी है।तो बाप भिन्न2रीति नई2 प्वाइन्टस सहज रीति बच्चों को समझाते रहते हैं।ड्रामा अनुसार तुमको जो समझाया जाता है वह पार्ट चला आता है।जो बताने का था वही आज बता रहा हूँ। इमर्ज होता रहता है। तुम सुनते जाते हो।तुमको ही धारणकर और कराना है।मुझे तो धारण नहीं करना है।तुमको सुनाता हूँ।धारण कराता हूँ।हमारी आत्मा में पार्ट है पतितों को पावन बनाने का। जो कल्प पहले समझाया था वही निकलता रहता है। मैं पहले जानता नहीं था कि क्या सुनाऊंगा। यह बाबा भी विचार सागर मंथन करती है वह भी सुनाती है मैं भी सुनाता जाता हूँ। तुमको पता नहीं पड़ता है कि कौन सुनाता है।यह विचार सागर मंथन कर सुनाते हैं या बाबा सुनाते हैं। यह बड़ी गुह्य बातें हैं इनमें ब्रेन बड़ी अच्छी चाहिए।जो सर्विस में तत्पर होंगे। उनका ही विचार सागर मंथन चलता होगा।वास्तव में कन्यायें बन्धनमुक्त होती हैं। वह सब छोड़ इस रूहानी पढ़ाई में लग जाए,बन्धन तो कोई है नहीं।कुमारियाँ अच्छा उठा सकती हैं।उनको है ही पढ़ना और पढ़ाना।उनको कमाई करने की दरकार नहीं।कुमारी अगर अच्छी रीति समझ जाए,यह नालेज तो सबसे अच्छी है।सेन्सीबुल होगी तो इस कमाई में लग जायेंगी।तुम यह पढ़कर और सर्विस में लग जाओ।वह पढ़ाई तो कोई काम की नहीं है। पढ़कर चले जाते हैं गृहस्थ व्यवहार में।गृहस्थी मार्ईयाँ बन जाती हैं।कन्याओं को तो इस नालेज में लग जाना है।कदम2श्रीमत पर चल धारणा में लग जाना है।मम्मा भी शुरू में आई और इसी पढ़ाई में लग गई।कुमारियों को अच्छा चान्स है।श्रीमत पर चले तो बहुत फर्स्टक्लास हो जाए।यह श्रीमत है वा ब्रह्मा मत है।इसमें ही कई मूँझ पड़ते हैं।फिर भी बाबा का रथ है ना।इनसे कुछ भी भूल हो जाए।तुम श्रीमत पर चलते रहेंगे तो वह आपेही ठीक कर देंगे।श्रीमत मिलेगी भी इन द्वारा।सदैव समझना चाहिए श्रीमत मिलती है। फिर कुछ भी हो।रेसपान्सिबुल गुरू है।इनसे कुछ भी हो जाता है बाबा कहते हैं मैं रेसपान्सिबुल हूँ।ड्रामा में यह राज गूँथा हुआ है।उनको भी सुधार सकते हैं।फिर भी बाप है ना। बापदादा दोनों इकट्ठे हैं।तो मूँझ पड़ते हैं पता नहीं शिवबाबा कहते हैं या ब्रह्मा कहते हैं अगर दोनों शिवबाबा ही मत देते हैं तो कब भी फिकर नहीं।शिवबाबा जो समझाते हैं सो राइट ही है।तुम कहते हो बाबा आप ही हमारे बाप टीचर गुरू हो।तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना।जो कहे इस पर चलो।हमेशा समझो शिवबाबा कहते हैं।वह है ही कल्याणकारी।इनकी रेसपान्सिबिल्टी भी उन पर है। तुम क्यों समझते नहीं हो शिवबाबा ही समझाते हैं।श्रीमत जो कहे सो करते जाओ।दूसरे की मत पर तुम आते ही क्यों हो।श्रीमत पर चलने में कब खटका न आये। परन्तु चल नहीं सकते। बाबा कहते हैं तुम श्रीमत पर निश्चय रखो तो फिर मैं रेसपान्सिबुल हूँ। तुम निश्चय ही

क्रिश्चियन लोग सब यहाँ से ही साहूकार हुए हैं। सोमनाथ के मन्दिर में कितना माल ले गये, ऊँट भरकर। यह तो एक मन्दिर की बात है। भारत में बहुत मन्दिर थे। महाराजाओं के पास। बाप सारे झाड़ का राज समझाते हैं। मैं बीज ऊपर में हूँ। यह उल्टा झाड़ है। नालेजफुल मैं हूँ। तुम मुझे पुकारते ही हो हे पतित पावन आओ। फिर भी कह देते नाम रूप से न्यारा है। क्या सर्वव्यापी है। नाम रूप से न्यारी तो कोई वस्तु होती ही नहीं। नाम रूप से न्यारा भगवान को फिर ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। बाप कहते हैं रावण ने तुम्हारी कैसी दुर्गति कर दी है। एकदम बेसमझ बना दिया है। अब तुमको स्मृति आई है हमारा बाबा कौन है, यह चक्र कैसे फिरता है। सबकी समझ तो एक जैसी नहीं होती है। एक की समझ न मिले दूसरे से। एक के फीचर्स न मिलें दूसरे से। तो अब बच्चों को बाप का बनना चाहिए ना। वह बाप भी है टीचर भी है। तुम जानते हो यह फी कुछ नहीं लेते हैं। बिगर कौड़ी खर्चा तुमको 21 जन्म के लिए राजाई मिल जाती है। तुम भक्तिमार्ग में ईश्वर अर्थ कुछ देते थे, तो दूसरे जन्म में तुमको मिलता था। अभी तो मैं डायरेक्ट आकर भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। इसमें जो कुछ खर्चा लगता है वह बच्चों का ही लगता है। परमधाम से तो पैसा नहीं ले आऊँगा। बच्चों को ही कहेंगे खर्चा करना है। इन एक (ब्रह्मा) को अच्छी तरह पकड़ा खर्चा के लिए, इनमें प्रवेश कर इनसे सब कुछ कराया। यह तो झट स्वाहा हो गया। सब कुछ जो इनके पास था सब दे दिया। बाबा बोला, बेगर बन जाओ, तो फिर ऐसा प्रिन्स बनाऊँगा। सा॰ करा दिया। ख्याल आया अब यह क्या करेंगे। विनाश होना ही है। बाबा ने कहा बन्दर माफिक मुट्ठी बन्द न करो। खोल दो। झट खोल दी। नहीं तो इतने बच्चों का खर्चा कैसे चलता। बच्चा बादशाह पीरू वजीर हो गया। एक को ही पैसा के लिए पकड़ दिया। तुम बच्चों की भट्ठी बननी थी, स्कूल भी बनना था। अभी तुम भी होशियार हो फिर औरों को भी पढ़ाते हो। तुम कितनों का कल्याण करते हो। बाप है ही कल्याणकारी। सबको नर्क से निकाल स्वर्ग में ले जाते हैं। अब जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। प्रजा के लिए यह प्रदर्शनी आदि की युक्तियाँ और भी निकलती रहेंगी। ढेर प्रजा बनती जायेगी। राजा रानी तो थोड़े होते हैं, प्रजा तो करोड़ों की अन्दाज में होती है ना। किंग क्वीन तो एक है। वहाँ लड़ाई झगड़ा आदि होता नहीं। बच्चे जानते हैं अब तो मौत सामने खड़ा है। जितना योग में रहेंगे, उतना पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनेंगे। और कोई उपाय है ही नहीं। वो सब है भक्तिमार्ग। सपूत बच्चे माँ बाप को फालो करते हैं। बाप पावन बने, बच्चे न बनें तो वो कपूत बच्चा ठहरा। इसमें तो नष्टोमोहा बनना होता है। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। वर्सा भी उनसे मिलेगा। अब बाप से वर्सा पाना है नई दुनिया का। तो पतित मत बनो। पावन बनने बिगर नई दुनिया में जा नहीं सकेंगे। जन्म जन्मान्तर के पाप किये हुए हैं। उनकी सजा भोगनी पड़ती है। जैसे कि 63 जन्मों के पापों की सजा मिलती है। गर्भजेल में भी सजा। सतयुग में कोई जेल आदि होती नहीं है। है ही स्वर्ग। अब बाप साधारण तन में आये हैं इसलिए बाप को पहचानते ही नहीं हैं। बाप के साथ योग लगाने से ही आत्मा पावन बनेगी। बाप कहते हैं मैं पतित दुनिया, पतित शरीर में आता हूँ फिर इनको नम्बरवन पावन बनाता हूँ। तत्त्वम्। तुम भी पावन बनते हो। तुम बाप के बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के भी हो। इसलिए बापदादा कहा जाता है। बाप समझाते हैं अब टाइम बहुत थोड़ा है। शरीर पर भरोसा नहीं है। बाप को याद करते रहो। स्वदर्शन चक्रधारी बनो। सारा दिन यही बातें ख्याल में रहें। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।____

धारणा के लिए मुख्य सार:- 1- बेहद का बाप इतनी दूर से हमको पढ़ाने आया है ... पढ़ाई बहुत लगन से पढ़नी है।
- मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई, हमको पूरा नष्टोमोहा बनना है।

[illegible]। [illegible] है याद [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] की मदद दे रहे हैं। अर्थात इस शरीर को भुला रहे हैं। बाप की यह मदद मिलती है कि शरीर भूल [illegible] जाने [illegible] देते हैं आत्माओं को क्योंकि बाप देखते ही आत्माओं के तरफ हैं। तो हरेक की बुद्धि बाप की तरफ जाती है। बाप की बुद्धि या दृष्टि फिर बच्चों तरफ जाती है। (फर्क है ना। (डेड सायलेन्स) यह अभ्यास करते हो डेड सायलेन्स का। शरीर को छोड़ अलग होने चाहते हो। आत्मा समझते हैं कि जितना याद करते रहेंगे उतना ही इस शरीर से निकल जावेंगे। जैसे सर्प का मिसाल देते हैं। मिसाल जो देते हैं उसमें जरूर कुछ [illegible] होगी। तुम जानते हो हम शरीर छोड़ कर वापस चले जावेंगे। और फिर आवेंगे। यह बातें और [illegible] नहीं जानते। इस ड्रामा को कोई भी नहीं जानते हैं। कोई भी ऐसी गेरन्टी नहीं देते कि इस याद से तुम्हारे [illegible] [illegible] होंगे। ऐसी बातें कोई भी नहीं सुनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको अभी वापस जाना है। [illegible] अभी [illegible] जर्नी है। आत्मा का बुद्धि योग उस तरफ है। अभी नाटक पूरा हुआ। अभी घर जाना है। [illegible] की ही याद करना है। वही पतित-पावन है। गंगा के पानी को तो लिबरेटर गाईड नहीं कहेंगे। एक [illegible] ही लिबरेटर और गाईड हो सकता है। यह भी बड़ी समझने और समझाने की बातें हैं। वह तो है ही [illegible]। [illegible] कोई कल्याण नहीं हो सकता। बच्चे जानते हैं। पानी तो स्नान के लिये है। पानी कब पावन नहीं बना सकेगा। ऐसे भी नहीं भावना का भाड़ा मिल सकता है। भक्ति मार्ग में उनका महत्व रख दिया है। इन सभी बातों को कहा जाता है अन्धश्रद्धा। ऐसे2 श्रद्धा रखते2 मनुष्यों को टाईटल मिल जाते हैं अंधे के औलाद। भगवानुवाच है ना। [illegible] और [illegible] यह भी तुम जानते हो। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को बाप जानते हैं। तुम बाप को भी जान गये हो और सृष्टि के आदि मध्य अन्त को भी जान गये हो सृष्टि के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गये हो। एक-एक बात पर विचारसागर मंथन कर अपना आपे ही [illegible] [illegible] [illegible] है भक्ति और ज्ञान का [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], यह (देवताएं) सम्पूर्ण निर्विकारी थे। रचयिता बाप ही [illegible] [illegible] है। वह है परमात्मा। परम आत्मा को ही परमात्मा कहते हैं। अंग्रेजी में सुप्रीम [illegible] कहा जाता है। [illegible] अर्थात आत्मा। बाप भी आत्मा [illegible] [illegible] है। (बाप की आत्मा भी ऐसी ही है जैसे तुम्हारी है। ऐसे नहीं छोटे बड़े कहा है। नहीं। यह [illegible] नालेजफुल बाप बहुत प्यार से बच्चों को समझाते रहते हैं। पार्ट बजाने वाली आत्मा है) इस शरीर द्वारा वह पार्ट बजायेगी। आत्मा के रहने का स्थान शान्तिधाम है। बच्चे जानते हैं हम आत्माएं [illegible] [illegible] ब्रह्माण्ड में रहने वाली हैं। जैसे हिन्दुस्तान के रहने वाले अपने को हिन्दू कह देते हैं। वैसे ही ब्रह्माण्ड में रहने वाले भी फिर [illegible] को ईश्वर [illegible] देते हैं। ड्रामा में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुआ है। जानते ही नहीं तो वापस जा नहीं सकते। भल कोई कितनी भी मेहनत करे जब पूरा होना है तो सभी [illegible] आकर इकट्ठे होते हैं। फिर [illegible] मु डायरेक्टर [illegible] [illegible] सभी को आते हैं। बच्चे जानते हैं अभी यह नाटक पूरा होता है। यह बातें कोई भी साधु सन्त आदि जान नहीं सकते। आत्मा की भी नालेज कोई को है नहीं। परमात्मा बाप यहाँ एक ही बार आते हैं। और [illegible] यहाँ पार्ट बजाना ही है। शंकराचार्य को देखो वृद्धि होती ही रहती है ना। आत्माएं सभी कहाँ से आ[illegible] कोई वापस जाता हो तो वह खाली पड़ जाये। एक आदि दूसरा जाते फिर उनको पुनर्जन्म नहीं कहा[illegible] पुनर्जन्म तो [illegible] ही बनना है। पहले नम्बर में यह लक्ष्मी [illegible]। बाप ने समझाया है पुनर्जन्म लेते2 [illegible] [illegible] आते हैं तो फिर पहले नम्बर में जाना पड़ता है। इसमें संशय की तो कोई बात ही नहीं। [illegible] [illegible] बाप खुद आकर समझाते हैं। क्या समझाते हैं। अपना परिचय भी देते हैं। आगे पता था क्या पर[illegible] क्या चीज है। सिर्फ शिव के मंदिर में जाते थे। यहाँ तो ढेर के ढेर मंदिर हैं। सतयुग में मंदिर पूजा [illegible]

पेज नं० 3 लास्ट
फर्रूखाबाद

आत्माओं में पुरुषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं है ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तियों द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ती कराओ। इसलिए ज्ञान मूर्त से ज्यादा अभी वरदानी मूर्त का पार्ट चाहिए। सुनने की शक्ति भी नहीं है। चलने की हिम्मत नहीं है सिर्फ एक प्यास है कि कुछ मिल जाए- ऐसी अनेक आत्मायें भिन्न में भटक रही है- चलने के पाँव अर्थात् हिम्मत भी आपको देनी पड़ेगी। तो हिम्मत का स्टाक जमा है। अमृत कलश सम्पन्न है। अखुट है। अखण्ड है। क्यू लगावें? स्वयं की क्यू समाप्त की है- अगर स्वयं की क्यू में बिजी होंगे तो अन्य आत्माओं को सम्पन्न कैसे बनायेंगे। इसलिए इस वर्ष में अपनी क्यू को समाप्त करो। क्यों, क्या की भाषा चेन्ज करो। एक ही भाषा हो- सर्व प्रति संकल्प से, वाणी से वरदानी भाषा हो- वरदानी मूर्त हो- वरदानों की वर्षा के भाषण हों। जो भी सुनें वह अनुभव करें कि भाषण नहीं लेकिन वरदानों के पुष्पों की वर्षा हो रही है- तब उद्घाटन करेंगे। नये वर्ष की यही नवीनता करना। अच्छा-

ऐसे सदा अमृत कलशधारी, हर संकल्प से वरदानी अनेक आत्माओं की हिम्मत बढ़ाने वाले, हिम्मते बच्चे मददे बाप, ऐसे एवररेडी ब्रह्मा बाप के साथ2 सदा साथ का पार्ट बजाने वाले ऐसे विजयी रतनों को, सम्पन्न आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(दीदी जी से) ब्रह्मा को यह संकल्प क्यों उठा- इसका रहस्य समझते हो। ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ? यह भी गुह्य रहस्य है- जब ब्रह्मा ही निमित्त है तो शंकर कौन? इस पर भी रूह-रूहाण करना। अब तो वरदानी मूर्त ग्रुप, जिन्हों के इन स्थूल हाथों में नहीं लेकिन सदा स्मृति में, समर्थ स्वरूप में विजय का झण्डा हो- ऐसे विजय का झण्डा लहराने वाला ग्रुप हो। जिसको कहा जाता है रूहानी सोशल वर्कर ग्रुप- ऐसा ग्रुप अब स्टेज पर चाहिए। स्टेज पर आने वाले के ऊपर सभी की नजर आटोमेटिकली जाती है- अभी पर्दे के अन्दर है, स्वयं के पुरुषार्थ का पर्दा है- अभी इसी पर्दे से निकल सेवा की स्टेज पर आओ तो विश्व की आत्मायें ऐसे हीरो पार्टधारियों को श्रेष्ठ नजर से निहाल हो जावेंगे। ऐसे प्लैन बनाओ ऐसे ग्रुप के मुख से सत्यता की अथार्टी स्वतः ही बाप की प्रत्यक्षता करेगी- अभी तो वेवी बाम्ब फैंक रहे हैं- अभी परमात्म बाम्ब द्वारा धरनी को परिवर्तन करो। इसका सहज साधन है सदा मुख पर वा संकल्प में बापदादा- बापदादा की निरन्तर माला के समान स्मृति हो। सबकी एक ही धुन हो बापदादा। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखण्ड धुन हो- जैसे वह अखण्ड धुनी जगाते हैं वैसे यह अखण्ड धुन हो। यही अजपाजाप हो- जब यह अजपाजाप हो जावेगा तो और सब बातें स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी। क्योंकि इसमें ही बिजी रहेंगे। फुर्सत ही नहीं होगी तो व्यर्थ स्वतः ही समाप्त हो जावेगा। (तो अब सुना कि इस वर्ष में क्या करना है- आज के संकल्प से समय को जानना- सुई तो ब्रह्मा ही है ना। तो सुई कहाँ तक पहुँची है। सूक्ष्मवतन से आगे भी बढ़ेगी ना। अच्छा-)

विदेशी भाई बहनों से:- डबल विदेशी बच्चों के तीव्र पुरुषार्थ की रफ्तार को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। विदेशी बच्चों ने अपने असली बाप को, अपने असली देश को, असली धर्म को बहुत अच्छी तरह पहचान लिया है। जैसे कल्प पहले की बनी हुई कहानियों में सिर्फ बाप के परिचय का बीज पड़ने से बाप प्रत्यक्ष हो गये। बापदादा जानते हैं कि इस ग्रुप में कई ऐसे रतन हैं जो बापदादा के गले के मणके हैं। ऐसे मणकों को बाप भी सदा विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने के वा विश्व के आगे चमकाने के बाप प्रत्यक्ष होने के कई दृश्य देख भी रहे हैं- अभी प्रत्यक्ष हो रहे हैं, और आगे चलके भी होंगे। आप

जैसा जैसा जिसने कल्प पहले अटेन्शन दिया है, ऐसा देते रहेंगे। मालूम पड़ता रहता है। बाप सर्विस का समाचार सुनकर खुश भी होते हैं। बाप को कब चिट्ठी ही नहीं लिखते हैं, तो समझते हैं इनका बुद्धियोग कहाँ ठिक्कर भित्तर तरफ लग गया है। देह अभिमान आया हुआ है। बाप को भूल गये हैं। नहीं तो विचार करो लव मैरेज होती है तो उनका कितना आपस में प्यार रहता है। हाँ कोई2के ख्याल बदल जाते हैं तो फिर स्त्री को भी मार डालते हैं। यह तुम्हारी है उनके साथ लव मैरेज। बाप आकर तुमको अपना परिचय देते हैं। तुम आपेही परिचय नहीं पाते हो। बाप को आना पड़ता है। बाप आयेगा तब जबकि दुनिया पुरानी होगी। पुरानी को नई बनाने जरूर संगम पर ही आयेंगे। बाप की ड्युटी है नई दुनिया स्थापन करने की। तुमको स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। तो ऐसे बाप साथ कितना लव होना चाहिए। फिर क्यों कहते हैं कि बाबा हम भूल जाते हैं। कितना ऊँच ते ऊँच बाप है। इनसे ऊँचा कोई होता ही नहीं। मनुष्य मुक्ति के लिए कितना धक्का मारते, उपाय करते हैं। कितनी झूठ ठगी चल रही है। महर्षि आदि का कितना नाम है। गवर्मेन्ट 10-20एकड़ जमीन दे देती है। ऐसे नहीं कि गवर्मेन्ट कोई इरिलीजस है। कोई मिनिस्टर रिलीजस है कोई इरिलीजस है। कोई धर्म को मानते ही नहीं। कहा जाता है रिलीजन इज माइट। क्रिश्चियन में माइट थी ना। सारे भारत को हप करके गये। अभी भारत में कोई माइट नहीं है। कितना झगड़ा मारामारी लगी पड़ी है। वो ही भारत क्या था। बाप कैसे कहाँ आते हैं, किसको कुछ भी पता नहीं। तुम जानते हो मगध देश में आते हैं जहाँ मगरमच्छ होते हैं। मनुष्य ऐसे हैं जो सब कुछ खा जावें। सबसे जास्ती वैष्णव भारत में थे। यह वैष्णव राज्य है। कहाँ यह महान पवित्र देवतायें कहाँ आजकल देखो क्या2 हप करते जाते हैं। आदमखोर भी बन जाते हैं। भारत की क्या हालत हो गई है। अभी तुमको सारा राज़ समझा रहे हैं। ऊपर से लेकर नीचे तक पूरा ज्ञान देते हैं। पहले2तुम ही इस पृथ्वी पर होते हो। फिर मनुष्य वृद्धि को पाते हैं। अभी एक दो वर्ष के अन्दर हाहाकार हो जायेगा। हाय2करते रहेंगे। स्वर्ग में देखो कितना सुख है। यह एम आबजेक्ट की निशानी देखो। यह सब तुम बच्चों को धारण भी करनी है। कितनी बड़ी पढ़ाई है। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। माला का राज़ भी समझाया है, ऊपर में फूल है शिवबाबा फिर है मेरू। प्रवृत्ति मार्ग है ना। निवृत्ति मार्ग वालों को तो माला फेरने का भी हुक्म नहीं। यह है ही देवताओं की माला। इन्होंने कैसे राज्य लिया है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई2हैं जो बेधड़क हो किसको भी समझाते हैं। आओ तो हम आपको ऐसी बात बतायें जो और कोई बता ही नहीं सकते। सिवाए शिवबाबा के और कोई जानते नहीं। इन्हों को यह राजयोग किसने सिखाया। बहुत रसीला बैठ समझाना चाहिए। यह 84जन्म कैसे लेते। देवता क्षत्रिय, वैश्य..बाप कितनी सहज नालेज बताते हैं और पवित्र भी बनना है। तब ही ऊँच पद पायेंगे। सारे विश्व पर शान्ति स्थापन करने वाले तुम हो। बाप तुमको राज्य भाग्य देते हैं, दाता है ना। वह कुछ लेता है नहीं। तुम्हारी पढ़ाई की यह है प्राइज। ऐसी प्राइज तो और कोई दे न सके। तो ऐसे बाप को प्यार से क्यों नहीं याद करते हो। लौकिक बाप को तो सारा जन्म याद करते हो। पारलौकिक को क्यों नहीं याद करते हो। बाप ने बताया है युद्ध का मैदान है, टाइम लगता है पावन बनने में। इतना ही समय लगता है जब तक लड़ाई पूरी हो। ऐसे नहीं जो शुरू से आये हैं वह पूरे पावन होंगे। बाबा कहते माया की लड़ाई बड़ी जोर से चलती है। अच्छे2को भी माया जीत लेती है। इतने तो बलवान हैं जो गिरते हैं फिर मुरली भी कहाँ से सुने। सेन्टर में तो आते ही नहीं। तो उनको कैसे पता पड़े। माया एकदम वर्थ नाट ए पेनी बना देगी। मुरली जब पढ़े तब सुजाग हो। गन्दे काम में लग जाते हैं। कोई सेन्सीबुल बच्चा हो जो उनको समझावें। तुमने माया से कैसे हार खाई। बाबा तुमको क्या बनाते थे। तुम फिर कहाँ जा रहे हो। देखते हैं इनको माया खा रही है तो बचा लेने की कोशिश करनी चाहिए। कहाँ माया सारा हप न कर लेवे। फिर से सुजाग हो जाए। ऊँच पद नहीं पायेंगे। सतगुरु की निंदा कराते हैं। अच्छा- मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

[illegible] बाबा टीचर के रूप में तुमको सोने का बर्तन बनाते हैं। बाप तुम्हारी पूरी सर्विस कर बना के क्या बना देते हैं। बाप की भी सर्विस का पार्ट बजाते तो टीचर का भी पार्ट बजाते तो सतगुरु का भी पार्ट बजाते हैं। उनका कोई बाप टीचर गुरु नहीं है। तुम्हारे लौकिक बाप का तो बाप टीचर, गुरु जरूर होगा। शिवबाबा कहते हैं मेरा कोई नहीं है। परन्तु उनका कोई आक्यूपेशन नहीं जानते हैं जब तक किसको स्वर्ग का मालूम न पड़े तब तक कोई यह जान नहीं सकते कि हम नर्क में हैं। ग्रंथ में पढ़ते हैं मुत पलीती कपड़ धोए... परन्तु अपने को कोई भी पतित/पापित नहीं समझते हैं। जब कुमार कुमारी हैं तो उनको रावण, रावणी नहीं कहेंगे। जब काला मुँह करते हैं तो एक दो का रावण बन जाते हैं। बाबा आया है- ज्ञान का इन्जेक्शन कराके काले को गोरा बनाने लिए। इस समय तुम ज्ञान सूर्य ज्ञान चन्द्रमा बन रहे हो। सन्यासी पवित्र प्रवृत्ति मार्ग नहीं बना सकते हैं। वह यह नहीं कह सकते कि हम तुमको राजाओं का राजा बनाते हैं। वह निवृत्ति मार्ग के हैं। घरबार छोड़कर चले जाते हैं। यहाँ कोई डर नहीं है। बाप के पास बच्चे आये हैं, कहते हैं बाबा हमारे में ताकत है। इकट्ठे रहकर पवित्र रह सकते हैं। अगर कोई कन्या पर मार पड़ती है तो कन्या को बन्धन से छुड़ाने के लिए हम गन्धर्वी विवाह कर सकते हैं। हम जल नहीं मरेंगे। ज्ञान तलवार बीच में रखेंगे। दोनों ब्राह्मण ब्राह्मणी भाई बहन पवित्र कैसे रह सकते हैं। शास्त्रों में भी गन्धर्वी विवाह के लिए लिखा हुआ है। परन्तु उनका अर्थ नहीं समझते हैं। सन्यासी तो कह देते हैं नारी नर्क का द्वार है, उन्हों के पास ज्ञान तलवार तो है नहीं। जो इकट्ठे रहकर पवित्र रह सकें। तुम उनसे बहादुर हो। काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठते हो। तो काले से गोरे बन जाते हो।

सन्यासी तो आजकल शादी भी कराते हैं। चर्च में भी शादियां होती हैं। नहीं तो क्राइस्ट को क्यों क्रास पर चढ़ाया? इसी पवित्रता के कारण, कहा यह कौन है जो कहते हैं पवित्र बनो। आफतें तो आती हैं। यहाँ भी शिवबाबा पर नहीं आती है, परन्तु जिसमें प्रवेश किया है, लांग बूट में, उस पर आती हैं। बाट वेन्दे... पुरानी जुत्ती हैं ना। यह थोड़ेही कहते कि मैं श्रीकृष्ण हूँ। हाँ कहते राजयोग सीखूँगा तो नर से नारायण बनूँगा। परन्तु अभी नहीं हूँ। वैसे बच्चों को भी निश्चय है कि हम नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनेंगे। फेल नहीं होंगे जो क्षत्रिय बनें। राम फेल हुआ तो 33 से कम मार्क्स मिली। तो चन्द्रवंशी में चले गये। ऐसे जो सूर्यवंशी भी चन्द्रवंशी घराने में आते हैं। उस समय सतयुग के अन्त में लक्ष्मी नारायण सीता राम को राज्य देते हैं। लक्ष्मी नारायण भी त्रेता में आते हैं। रजवाड़े कुल में जन्म लेते रहते हैं। फिर सीता राम का नाम चला आता है, लक्ष्मी नारायण का नाम खलास हो जाता है। अब प्रश्न पूछता हूँ- स्वदर्शन चक्र कौन सा है? ... एक दो से पूछा।

हाँ यह है चक्र- कैसे देवता से क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अब ब्राह्मण वर्ण में आते हैं। यह चक्र जितना फिरायेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। इससे रावण का गला कटता है। यह भी बेहद का बाप है जो। जिसके लिए कविताएं गाती हैं कि चिकुड़ना सहन नहीं कर सकते। ऐसी बच्चियां भी हैं जो बन्धन में हैं। तड़पती हैं क्योंकि यह है मात पिता। एक तो माता जगत अम्बा है, उनको सब याद करते हैं। परन्तु जगत अम्बा का पिता कौन है, जो किसको पता नहीं है कि [illegible], सरस्वती का नाम है। हैं तब एक ही के नाम। परन्तु पुजारी थोड़ेही जानते हैं कि [illegible] जन्म लेती है। फिर उस जन्म से फिर यही सरस्वती बनती है। यह ज्ञान बाप के [illegible] थोड़ेही था। उसमें ज्ञान होता तो जरूर किसी गुरु से मिला हुआ होता। फिर उस गुरु [illegible] कर सकते। फिर उस गुरु के और भी शिष्य होते, वह भी बताते। परन्तु बाबा का [illegible] गुरु नहीं है। बाप कहते हैं मैं [illegible] हूँ मैं [illegible] [illegible] मात पिता कहते हैं [illegible] सरस्वती को [illegible] कह सकते। ब्रह्मा थोड़ेही [illegible] है आर यह [illegible] ब्रह्मा है। [illegible] पहले उनको [illegible] परन्तु सरस्वती की महिमा बढ़ाने के लिए उनको आगे रखा है। सरस्वती का क्यों गाडेज आफ नालेज नाम मशहूर है। विद्युत मण्डली वाले भी सरस्वती का [illegible] ज्ञान नालेज देते हैं। अच्छा- बाबा कहते हैं कितना [illegible] [illegible], सिर्फ मुझे याद करो और मेरे घर को याद करो तो [illegible]

मुरली नं. - ३०

11.11.98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

मीठे बच्चे – तुम्हें बाप समान मुरलीधर जरूर बनना है, मुरलीधर बच्चे ही बाप के मददगार हैं, बाप उन पर ही राज़ी होता है

प्रश्न:- किन बच्चों की बुद्धि बहुत-बहुत निर्माण हो जाती है?

उत्तर:- जो अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान कर सच्चे फ्लैन्थ्रोफिस्ट बनते हैं, होशियार सेल्समैन बन जाते हैं उनकी बुद्धि बहुत-बहुत निर्माण हो जाती है। सर्विस करते-करते बुद्धि रिफाइन हो जाती है। दान करने में कभी भी अभिमान नहीं आना चाहिए। हमेशा बुद्धि में रहे कि शिवबाबा का दिया हुआ दे रहे हैं। शिवबाबा की याद रहने से कल्याण हो जायेगा।

गीत:- तुम्हीं हो माता........

ओम् शान्ति। सिर्फ मात-पिता वाला गीत सुनाने से नाम सिद्ध नहीं होता है। पहले शिवाए नमः का गीत सुनकर फिर मात-पिता वाला सुनाने से नॉलेज का पता पड़ता है। मनुष्य तो मन्दिरों में जाते हैं, लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जायेंगे, कृष्ण के मन्दिर में जायेंगे, सबके आगे तुम मात-पिता........ कह देते हैं, बिगर अर्थ। पहले शिवाए नमः वाला गीत सुनाए फिर मात-पिता वाला सुनाने से महिमा का पता पड़ता है। नया कोई भी आये तो यह गीत अच्छे हैं। समझाने में सहज होता है। बाप का नाम ही है शिव, ऐसे तो नहीं कहेंगे शिव सर्वव्यापी है। फिर तो सबकी महिमा एक हो जाए। उनका नाम ही है शिव। दूसरा कोई अपने पर शिवाए नमः नाम रखा न सके। उनकी मत और गत सब मनुष्य मात्र से न्यारी है। देवताओं से भी न्यारी है। यह नॉलेज सिखलाने वाला मात-पिता ही है। सन्यासियों में तो माता है नहीं इसलिए वह राजयोग सिखला न सकें। शिवाए नमः तो कोई भी कहला न सकें। सब शिवाए नमः थोड़ेही होंगे। यह समझाने का है। परन्तु तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं। कहाँ अच्छे-अच्छे बच्चे भी प्वाइन्ट्स मिस कर देते हैं। मियां मिट्ठू तो अपने को बहुत समझते हैं। इसमें दिल की सफाई चाहिए। हर बात में सच बोलना, सच होकर रहना है – टाइम लगता है। देह-अभिमान में आने से फिर फैमिलियरटी आदि सब बातें आ जाती हैं। अभी ऐसे कोई कह नहीं सकता कि हम देही-अभिमानी हैं। फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाए। नम्बरवार हैं। कोई तो बहुत कपूत बच्चे हैं। मालूम पड जाता है, कौन बाबा की सर्विस करते हैं। जब शिवबाबा की दिल पर चढ़ें तब रुद्र माला के नजदीक हों और तख्त के लायक बनें। लौकिक बाप की दिल पर भी सपूत बच्चे ही चढ़ते हैं, जो बाप के साथ मददगार बन जाते हैं। यह भी बेहद के बाप का अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा है। तो धन्धे में मदद देने वाले पर बाप भी राज़ी रहेगा। अविनाशी ज्ञान रत्न धारण कर और धारण कराने हैं। कोई समझते हैं हमने इन्श्योर किया है। उसका तो तुमको मिल जायेगा। यहाँ तो बहुतों को दान करना है, बाप मुआफ़िक अविनाशी ज्ञान रत्नों का फ्लैन्थ्रोफिस्ट बनना है। बाप आते ही हैं ज्ञान रत्नों

से झोली भरने, धन की बात नहीं। बाप को सपूत बच्चे ही पसन्द होते हैं। व्यापार करना नहीं जानते तो वह मुरलीधर, सौदागर का बच्चा कहला कैसे सकते? लज्जा आनी चाहिए। मैं धन्धा तो करता नहीं हूँ। सेल्समैन जब होशियार देखा जाता है तो फिर उनको भागीदार बनाया जाता है। ऐसे ही थोड़ेही भागीदारी मिल जाती है। इस धन्धे में लग जाने से फिर बहुत निर्माण बुद्धि हो जाती है। सर्विस करते-करते बुद्धि रिफाइन होती है। बाबा-मम्मा अपना अनुभव सुनाते हैं। बाबा है सिखलाने वाला, यह तो जानते हो यह बाबा अच्छी धारणा कर अच्छी मुरली सुनाते हैं। अच्छा, समझो इसमें शिवबाबा है, वह तो है ही मुरलीधर परन्तु यह बाबा भी तो जानता है ना। नहीं तो इतना पद कैसे पाते? बाबा ने समझाया है कि हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं। शिवबाबा की याद रहने से तुम्हारा भी कल्याण हो जायेगा। इनमें तो शिवबाबा आते हैं। वह मम्मा अलग बोलती है, मम्मा की हैंसियत में। उनका नाम बाला करना है क्योंकि फीमेल को लिफ्ट दी जाती है। कहते हैं ना जैसी है, वैसी है, मेरी है, सम्भालना ही है। पुरुष लोग ही ऐसे कहते हैं। स्त्री ऐसे नहीं कहती, जैसे हैं, वैसे हैं........। बाप भी कहते बच्चे जैसे हो, वैसे हो, सम्भालना ही है। नाम भी बाला बाप का ही होता है। यहाँ बाप का नाम तो बाला है ही। फिर शक्तियों का नाम बाला होता है। उन्हों को सर्विस का अच्छा चांस मिलता है। दिन-प्रतिदिन सर्विस बहुत सहज हो जानी है। ज्ञान और भक्ति, दिन और रात, सतयुग-त्रेता दिन, वहां है सुख, द्वापर-कलियुग है रात, दु:ख। सतयुग में भक्ति होती नहीं। कितना सहज है। परन्तु तकदीर में नहीं है तो धारणा नहीं कर सकते। प्वाइन्ट्स तो बहुत सहज मिलती हैं। मित्र-सम्बन्धियों के पास जाकरके समझाओ, अपने घर को उठाओ। तुम तो गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले हो, तो बहुत सहज रीति से कोई को भी समझा सकते हो। सद्‌गति दाता तो एक ही पारलौकिक बाप है। वही शिक्षक भी है, सद्‌गुरु भी है। बाकी सब बरोबर दुर्गति करते आये हैं, द्वापर से लेकर। भ्रष्टाचारी, पाप आत्मायें कलियुग में हैं। सतयुग में पाप आत्मा का नाम नहीं, यहाँ ही अजामिल, गणिकायें, अहिल्यायें, पाप आत्मायें हैं। आधाकल्प स्वर्ग कहा जाता है। फिर भक्ति शुरु होती है तो गिरना शुरु हो जाता है। गिरना भी है जरूर। सूर्यवंशी गिरकर चन्द्रवंशी बनते हैं। फिर गिरते ही आयेंगे। द्वापर से सब गिराने वाले ही मिलते आये हैं। यह भी तुम अभी जानते हो। दिन-प्रतिदिन तुम्हारे में ताकत आती जायेगी। साधुओं आदि को समझाने के लिए भी युक्तियाँ निकालते रहते हैं। आखरीन समझेंगे जरूर कि बरोबर परमपिता परमात्मा सर्वव्यापी कैसे हो सकता है? समझाने लिए प्वाइन्ट्स बहुत हैं। भक्ति पहले अव्यभिचारी फिर व्यभिचारी बनती है। कलायें कम होती हैं। अभी कोई कला नहीं रही है। झाड़ व गोले में भी दिखाया है कि कलायें कैसे कम होती हैं? मोस्ट इज़ी है समझाना, परन्तु तकदीर में नहीं है तो समझा नहीं सकते। देही-अभिमानी बनते नहीं हैं। पुरानी देह में अटके रहते हैं। बाप कहते हैं — इस पुरानी देह से ममत्व तोड़ अपने का आत्मा समझो। देही-अभिमानी नहीं बनेंगे तो पद भी ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। स्टूडेन्ट ऐसे थोड़ेही चाहेंगे कि लास्ट

में बैठे रहें। मित्र-सम्बन्धी, टीचर, स्टूडेन्ट आदि सब समझ जायेंगे, इनका पढ़ाई में ध्यान नहीं है। यहाँ भी समझते हैं श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो फिर यही हाल होगा। कौन प्रजा बनेंगे, कौन दास दासी, सब समझ जाते हैं। बाप समझाते हैं अपने मित्र-सम्बन्धियों का कल्याण करो। यह कायदा होता है। घर में बड़ा भाई होता है तो छोटे भाई को मदद देना उनका फ़र्ज है - इसको कहा जाता है चैरिटी बिगन्स एट होम। बाप कहते हैं धन दिये धन ना खुटे........ धन देंगे नहीं तो मिलेगा भी नहीं, पद पा नहीं सकेंगे। चांस बहुत अच्छा मिलता है। रहमदिल बनना है। तुम सन्यासियों, साधुओं पर भी रहमदिल बनते हो। कहते हो आकर समझो। तुम अपने पारलौकिक बाप को नहीं जानते हो, जो बाप भारत को हर कल्प सदा सुख का वर्सा देते हैं। कोई भी जानते नहीं। कहते हैं ऑफीसर्स भी भ्रष्टाचारी हैं, तो फिर श्रेष्ठाचारी कौन बनायेंगे?

आजकल तो साधू समाज का बड़ा मान है। तुम लिखते हो – बाप इन सब पर भी रहम करते हैं, तो वह वन्डर खायेंगे। आगे चल तुम्हारा नाम बाला होगा। तुम्हारे पास बहुत आते रहेंगे। प्रदर्शनी भी होती रहेगी। आखरीन कोई जागेंगे जरूर। सन्यासी लोग भी जागेंगे। जायेंगे कहाँ, एक ही हट्टी है। बड़ी इम्प्रूवमेंट होती रहेगी। अच्छे-अच्छे चित्र निकलेंगे समझाने के लिए। जो कोई भी आकर पढ़े। जब भंभोर को आग लगेगी तब मनुष्य जागेंगे, परन्तु टू लेट। बच्चों के लिए भी ऐसा है। पिछाड़ी में कितना दौड़ सकेंगे। रेस में भी कोई पहले आहिस्ते-आहिस्ते दौड़ते हैं। विन की प्राइज थोड़ों को ही मिलती है। यह तुम्हारी भी घुड़दौड़ है। रुहानी यात्रा की दौड़ी पहनाने के लिए भी ज्ञानी तू आत्मा चाहिए। बाप को याद करो, यह भी ज्ञान है ना। यह ज्ञान और किसको नहीं है। ज्ञान से मनुष्य हीरे जैसे बनते हैं। अज्ञान से कौड़ी जैसे बनते हैं। बाप आकर सतोप्रधान प्रालब्ध बनाते हैं। फिर वह थोड़ी-थोड़ी होकर कमती होती जाती है। यह सब प्वाइन्ट्स धारण कर एक्ट में आना है। तुम बच्चों को महादानी बनना है। भारत को महादानी कहते हैं क्योंकि यहाँ ही तुम बाप के आगे तन-मन-धन सब अर्पण करते हो। तो बाप भी फिर सब कुछ अर्पण कर देते हैं। भारत में बहुत ही महादानी हैं। बाकी मनुष्य सब अन्धश्रधा में फँसे हुए रहते हैं। यहाँ तो तुम ईश्वर की शरणागति में आये हो। रावण से दु:खी हो आकर राम की एशलम ली है। तुम सब शोक वाटिका में थे। अब फिर अशोक वाटिका में अर्थात् स्वर्ग में चलना है। स्वर्ग स्थापन करने वाले बाप की शरणागति ली है। कोई तो छोटेपन में ही जबरदस्ती आ गये हैं। तो उन्हों को यहाँ शरणागति में सुख नहीं आता। तकदीर में नहीं है, उन्हों को माया रावण की शरण चाहिए। ईश्वर की शरणागति से निकल कर माया की शरण में जाना चाहते हैं। आश्चर्य की बात है ना।

यह शिवाए नम: वाला गीत अच्छा है। तुम बजा सकते हो। मनुष्य तो इसका अर्थ समझ न सकें। तुम कहेंगे हम श्रीमत पर यथार्थ अर्थ समझा सकते हैं। वह तो गुड़ियों का खेल करते हैं। ड्रामा अनुसार इन गीतों की भी मदद मिलती है। बाप का बनकर और सर्विसएबुल न बना तो दिल पर कैसे चढ़ सकते हैं। कई बच्चे कपूत बन पड़ते

हैं तो कितना न दु:ख देते हैं। यहाँ तो अम्मा मरे तो हलुआ खाओ, बीबी मरे तो भी हलुआ खाओ, रोयेंगे पीटेंगे नहीं। ड्रामा पर मजबूत रहना चाहिए। मम्मा-बाबा भी जायेंगे, अनन्य बच्चे भी एडवान्स में जायेंगे। पार्ट तो बजाना ही है। इसमें फिक्र की क्या बात है? साक्षी होकर हम खेल देखते हैं। अवस्था सदैव हर्षित रहनी चाहिए। बाबा को भी ख्यालात आते हैं, लॉ कहता है आयेंगे जरूर। ऐसे नहीं कि मम्मा-बाबा कोई परिपूर्ण हो गये हैं। परिपूर्ण अवस्था अन्त में होगी। इस समय कोई भी अपने को परिपूर्ण कह न सके। यह नुकसान हुआ, कोई खिटपिट हुई, अखबार में बी.के. के लिए हाहाकार हुआ, यह सब भी कल्प पहले हुआ था। फिक्र की क्या बात, 100 परसेन्ट अवस्था अन्त में होनी है। बाप की दिल पर तब चढ़ेंगे जब रहमदिल बनेंगे, आपसमान बनायेंगे। इन्श्योर किया वह बात अलग है। वह तो अपने लिए ही करते हैं। यह तो ज्ञान रत्नों का दान औरों को देना है। बाप को पूरा याद नहीं करेंगे तो विकर्मों का बोझा जो सिर पर है, वह खुल पड़ेगा। प्रदर्शनी में भी समझाने वाले लायक चाहिए। होशियार बनना चाहिए। मजा आता है रात को याद करने में। इस रुहानी साजन को फिर प्रभात में याद करना है। बाबा आप कितने मीठे हो, क्या से क्या बना रहे हो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- दिल से सदा सच्चा रहना है। सच बोलना है, सच होकर चलना है। देह-अभिमान के वश स्वयं को मियां मिट्ठू नहीं समझना है। अहंकार में नहीं आना है।

२- साक्षी होकर खेल देखना है। ड्रामा पर मजबूत रहना है। किसी भी बात का फिक्र नहीं करना है। अवस्था सदा हर्षित रखनी है।

वरदान:- हदों से पार रह सबको अपने-पन की महूसता कराने वाले अनुभवी मूर्त भव

जैसे हर एक के मन से निकलता है मेरा बाबा। ऐसे सभी के मन से निकले कि यह मेरा है, बेहद का भाई है या बहन है, दीदी है, दादी है। कहाँ भी रहते हो लेकिन बेहद सेवा के निमित्त हो। हदों से पार रहकर बेहद की भावना, बेहद की श्रेष्ठ कामना रखना - यही है फालो फादर करना। अभी इसका प्रैक्टिकल अनुभव करो और कराओ। वैसे भी अनुभवी बुजुर्ग को पिता जी, काका जी कहते हैं, ऐसे बेहद के अनुभवी अर्थात् सबको अपनापन महसूस हो।

स्लोगन:-

उपराम स्थिति द्वारा उड़ती कला में उड़ते रहो तो कर्म रूपी डाली के बंधन में फँसेगे नहीं।

4·3·88 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे लाड़ले बच्चे-तुम्हारी है रुहानी याद की यात्रा, तुम्हें शरीर को कोई तकलीफ नहीं देनी है, चलते फिरते उठते बैठते बुद्धि से बाप को याद करना है"

प्रश्न:- सदा खुशी किन बच्चों को रहती है, स्थाई खुशी न रहने का कारण क्या है?

उत्तर:- जो पुरानी दुनिया, पुराने शरीर से ममत्व तोड़ बाप और वर्से को याद करते हैं उन्हें स्थाई खुशी रहती है। जिनकी यात्रा में, याद में माया के तूफान आते, अवस्था ठण्डी हो जाती, उनकी खुशी स्थाई नहीं रहती। 2- जब तक भविष्य राजाई इन आंखों से नहीं देखते हैं, तब तक खुशी कायम नहीं रह सकती।

गीत:- हमें उन राहों पर चलना है... ओमशान्ति। यह बाप कहते हैं बच्चों प्रति, यह भी समझने की बात है। इतने बच्चे सिवाए प्रजापिता ब्रह्मा के और किसके होते नहीं। कृष्ण को कभी प्रजापिता नहीं कहा जाता। नाम गाया हुआ है ना। प्रजापिता ब्रह्मा, जो होकर गये हैं। वह इस समय प्रेजेन्ट है। तो प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ब्रह्माकुमार कुमारियां ढेर हैं। यह हैं प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद। तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा का भी कोई बाप होगा ना। बच्चे जानते हैं हमारा दादा परमपिता परमात्मा शिव है। वह अब नई दुनिया रच रहे हैं। अर्थात् पुरानी दुनिया को नई बना रहे हैं। इस पुरानी दुनिया में यह तन भी पुराने। नई दुनिया में सतोप्रधान नये तन होते हैं। वह कैसे होते हैं देखो इन लक्ष्मी-नारायण को। यह हैं नई दुनिया के नये तन। इन्हों की महिमा भारतवासी जानते हैं। यह स्वर्ग नई दुनिया, नये विश्व के मालिक हैं। नई दुनिया जो थी, वह अब पुरानी है, 84 जन्म लेने पड़ते हैं ना। इनका भी पूरा हिसाब है। कौन पूरे 84 जन्म लेते हैं। सब तो नहीं लेते, 84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है। जो पहले इस सृष्टि पर थे। हरेक बात लाड़ले बच्चों को धारण करनी है। यहां कोई मनुष्य, मनुष्य को नहीं समझाते, यह तो निराकार परमपिता परमात्मा मनुष्य तन में आकर समझाते हैं। बलिहारी उनकी है। वह नहीं समझाते तो हम कुछ भी नहीं जानते। हम तो बिल्कुल तुच्छ बुद्धि थे। अभी रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। एक्टर्स हू... इस बेहद ड्रामा में मुख्य पार्टधारी कौन हैं। यह है अविनाशी बना बनाया ड्रामा। गाते भी हैं बनी बनाई बन रही... गायन भक्ति मार्ग में [illegible] है। परन्तु यह अभी समझाया जाता है कि यह ड्रामा का खेल कैसे बना हुआ है। बाप बैठ समझाते हैं लाड़ले बच्चे, यह तो तुम जान गये हो कि तुमको यात्रा पर चलना है। मनुष्य यात्रा पर बहुत कष्ट सहन करके जाते हैं। अभी तो एरोप्लेन ट्रेन आदि बहुत सहज निकली हैं। आगे तो मनुष्य पैदल या पर जाते थे। चलते 2 तूफान लगते थे। बहुत बेहाल हो जाते थे। फिर कोई वापिस लौट आते थे। तो आधाकल्प चलती है जिस्मानी यात्रा, द्वापर से लेकर तो भक्तिमार्ग की यात्रा आधाकल्प चलती है। मनुष्य यात्रा पर क्यों जाते हैं। भगवान को ढूंढने। भगवान कहीं बैठा तो नहीं है। भगवान के जड़ चित्र पूजे जाते हैं। जो होकर जाते हैं उनके जड़ चित्र बनाते हैं। चैतन्य में तो भगवान मिल न सकें। शिव लिंग आदि यह सब जड़ चित्र हैं। जड़ चित्रों को देखने के लिए यात्रा करते हैं। यह एक भक्तिमार्ग की रसम है। जानते हैं परन्तु कोई की भी बायोग्राफी को नहीं जानते कि यह कौन हैं, कब आये थे। शिवजयन्ती मनाई जाती है। परन्तु उनको भी जानते नहीं। आजकल तो इसी उत्साह को भी उड़ा दिया है। क्योंकि इनका नाम रूप आदि प्राय:लोप होना ही है। अभी तुम जानते हो अब वो ही बाप ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। उनसे अभी हमको ज्ञान मिल रहा है। वही बेहद का बाप अभी प्रेक्टिकल में है। अमरनाथ भी शिवबाबा है ना। दिखाते हैं बर्फ का लिंग बन जाता है। मनुष्यों को ठगने लिए गपोड़े तो बहुत लगाये हैं। तो उन जिस्मानी यात्रा पर तकलीफ बहुत होती है। यह है रुहानी यात्रा, इसमें शरीर को कोई तकलीफ नहीं है। तुम बच्चे समझते हो हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। भक्ति मार्ग में जन्म-जन्मान्तर याद करते आये हैं। अब स्मृति आई है। बाप कहते हैं तुम 84 जन्म ढूंढ उतरते आये। वेद शास्त्र भक्तिमार्ग के पढ़ते गिरते आये हो। पहले एकदम कड़ी नौधा भक्ति करते हैं। फिर भी दुनिया को तमोप्रधान तो होना ही जरूर। बाप वृद्धि को पाना है जरूर। एक भी मनुष्य वापिस मेरे पास आ नहीं सकते। नाटक में सबको अपना पार्ट बजाना है। सतो, रजो, तमो में आना है।

तुम ईश्वर की शरणागति आये हो। रावण से दुःखी हो आकर राम की एशलम ली है। तुम सब शोक वाटिका में थे। अब फिर अशोक वाटिका में अर्थात् स्वर्ग में चलना है। स्वर्ग स्थापन करने वाले बाप की शरणागति ली है। कोई तो छोटेपन में ही जबरदस्ती आ गये हैं। तो उन्हों को यहाँ शरणागति में सुख नहीं आता। तकदीर में नहीं है, उन्हों को माया रावण की शरण चाहिए। ईश्वर की शरणागति से निकल कर माया रावण की शरण में जाना चाहते हैं। आश्चर्य की बात है ना। यह शिवाय नमः वाला गीत अच्छा है। तुम बजा सकते हो। मनुष्य तो इसका अर्थ समझ न सकें। तुम कहेंगे हम श्रीमत पर यथार्थ अर्थ समझा सकते हैं। वह तो गुड़ियों का खेल करते रहते हैं। ड्रामा अनुसार इन गीतों की भी मदद मिलती है। बाप का बनकर और सर्विसएबुल न बना तो दिल पर कैसे चढ़ सकते हैं। कई बच्चे कपूत बन पड़ते हैं। तो कितना न दुःख देते हैं। यहाँ तो अम्मा मरे तो भी हलुआ खाओ, बीबी मरे तो भी हलुआ खाओ... रोयेंगे पीटेंगे नहीं। ड्रामा पर मजबूत रहना चाहिए। मम्मा बाबा भी जायेंगे, अनन्य बच्चे भी एडवान्स में जायेंगे। पार्ट तो बजाना ही है। इसमें फिकर की क्या बात है। साक्षी होकर हम खेल देखते हैं। अवस्था सदैव हर्षित रहनी चाहिए। बाबा को भी ख्यालात आते हैं, लॉ कहता है आयेंगे जरूर। ऐसे नहीं कि मम्मा बाबा कोई परिपूर्ण हो गये हैं। परिपूर्ण अवस्था अन्त में होनी है। इस समय कोई भी अपने को परिपूर्ण कह न सके। यह नुकसान हुआ, कोई डिफीट हुई, अखबार में बाम्बे के लिए हाहाकार हुआ... यह सब भी कल्प पहले हुआ था। फिकर की क्या बात। 100% अवस्था अन्त में होनी है। बाप की दिल पर तब चढ़ेंगे - जब रहमदिल बनेंगे। आपसमान बनायेंगे। इनश्योर किया वह बात अलग है। वह तो अपने लिए जो करते हैं। यह तो ज्ञान रत्नों का दान औरों को देना है। बाप को पूरा याद नहीं करेंगे तो विकर्मों का बोझा जो सिर पर है वह खुल पड़ेगा। रोग निकल पड़ेगा। प्रदर्शनी में भी समझाने वाले लायक चाहिए। होशियार बनना चाहिए। मजा आता है रात को याद करने में। आशिक जो माशूक को याद करते हैं। सबको छुट्टी है कहाँ रात हो तो याद करो। यह रूहानी माशूक को फिर प्रभात में याद करना है। बाबा आप कितने मीठे हो। क्या से क्या बना रहे हो। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए मुख्य संकल्प :- 1) दिल से सदा सच्चा रहना है। सच बोलना है, सच होकर चलना है। देह अभिमान के वश स्वयं को मियाँ मिट्ठू नहीं समझना है। अहंकार में नहीं आना है।
2-साक्षी होकर खेल देखना है। ड्रामा पर मजबूत रहना है। किसी भी बात का फिकर नहीं करना है। अवस्था सदा हर्षित रखनी है।

"अव्यक्त" 77) अमृतवेले रोज़ की दिनचर्या सेट करो। जैसे तन की दिनचर्या बनाते हो कि सारे दिन में यह2 कर्म करना है, ऐसे अपने स्थूल कार्य के हिसाब से मन की स्थिति को सेट करो। अमृतवेले का जैसा श्रेष्ठ समय है वैसी श्रेष्ठ स्थिति हो। साधारण स्थिति में तो कर्म करते भी रह सकते हो लेकिन यह विशेष समय है इसलिए उस समय पावरफुल स्थिति की सेटिंग करो।

78) जैसे साकार में बापदादा सवेरे2 उठकर बच्चों को याद सर्चलाइट देते थे- ऐसे अब आप बच्चों को भी फालो करना है। स्नेह का सबूत देना है। सवेरे2 याद में बैठकर सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को सर्चलाइट दो।

[illegible] बच्ची हो तो मैं उनके मित्र सम्बन्धियों को भी दे सकता हूँ। जिससे उनका भी शरीर निर्वाह चलता रहे। परन्तु बच्चे अच्छे हों, सर्विसएबुल हों, अन्दर बाहर साफ हों, गोली के [illegible] मीठे हों। वास्तव में कुमारी की कमाई भी बाप खा नहीं सकते। बाबा का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में ध्यान बहुत देना- यह तो डिसरिगार्ड हो गया। बाप कहते हैं मनुष्य मात्र को हेविन का मालिक बनाओ। बच्चा फिर जिस्मानी सर्विस में माथा मारे। स्कूल खोलना तो गवर्मेन्ट का काम है अब बच्चियों को बुद्धि से काम लेना है। कौन सी सर्विस करें? ईश्वरीय गवर्मेन्ट की या उस गवर्मेन्ट की। जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे फिर बड़े बाबा ने कहा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा करना है। इससे तुम [illegible] बनेंगे। चतुर्भुज का भी साक्षात्कार करा दिया। अब वह विश्व की बादशाही लेवें या यह करें। सबसे अच्छा धन्धा यह है। भल कमाई अच्छी थी परन्तु बाबा ने इसमें प्रवेश होकर मत दी [illegible] अल्फ और बे को याद करो। कितना सहज है। छोटे बच्चे भी पढ़ सकते हैं। शिवबाबा तो हर एक बच्चे को समझ सकते हैं। यह भी सीख सकते हैं। यह है बाहरयामी, शिवबाबा है अन्तर्यामी। यह बाबा भी हर एक की शक्ल से, बोल से, एक्ट से सब कुछ समझ सकते हैं। बच्चियों को यह रूहानी सर्विस का चांस एक ही बार मिलता है। अब दिल में आना चाहिए हम मनुष्य को देवता बनायें या कांटों को कांटा बनायें? सोचो क्या करना चाहिए? निराकार भगवानुवाच- देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। ब्रह्मा के तन से बाबा ब्राह्मणों से ही बात करते हैं। वह ब्राह्मण लोग भी कहते हैं- ब्राह्मण देवी देवताए नमः किसको नमः कहते। वह कुख वंशावली, तुम हो मुख वंशावली। बाबा को जरूर ब्रह्मा बच्चा चाहिए? कमाल करते बताओ बाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते 550 करोड़, कोई कहते एक ब्रह्मा.. भल तुम त्रिमूर्ति कहते हो परन्तु आक्यूपेशन तो अलग2 है ना। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। ब्रह्मा की नाभी से विष्णु, तो एक हो गये। विष्णु 84 जन्म लेते हैं या ब्रह्मा - बात तो एक ही है। बाकी रहा शंकर। ऐसे तो नहीं शंकर [illegible] नहीं, त्रिमूर्ति कहलाया जाता है। परन्तु राइटियस बच्चे तो तुम। यह सब ज्ञान की बातें हैं। ब्रह्मा और शंकर।

तो बच्चियों के लिए यह सर्विस करना अच्छा हैं ना। या मैट्रिक आदि पढ़ना अच्छा है। वहाँ तो अल्पकाल का सुख मिलेगा। थोड़ी तनखवाह मिलेगी। यहाँ तो तुम भविष्य 21 जन्मों के लिए मालामाल हो सकते हो। तो क्या करना चाहिए? कन्या तो निरबन्धन हैं। अधर कन्या से कुवांरी कन्या तीखी जा सकती हैं। क्योंकि पवित्र हैं। मम्मा भी कुमारी थी ना। पैसे की तो बात ही नहीं। कितनी तीखी गई तो फालो करना चाहिए खास कन्याओं को। कांटों को फूल बनायें। ईश्वरीय पढ़ाई का एडवान्स लें या उस पढ़ाई का। कन्याओं का सेमीनार करना चाहिए। माताओं को तो पति आदि याद पड़ता है। सन्यासियों को भी याद बहुत पड़ता रहता है। कन्याओं को तो शादी करनी नहीं चाहिए। संग बहुत लग जाता है। कोई बड़े आदमी का बच्चा देखा दिल लग गई शादी हो गई। खेल खलास। माया एकदम गिरा देती है। अब बच्चे यहाँ सम्मुख आते हैं। सुनते हैं तो नशा चढ़ जाता है। सेन्टर से [illegible] बाहर जाते हैं तो वह खत्म हो जाता है। यह है मधुबन। ऐसे भी बहुत आते हैं कहते हैं हम जाकर सेन्टर खोलेंगे। फिर [illegible] ही गुम। यहाँ ज्ञान का गर्भ धारण करते, बाहर जाने से नशा गुम हो जाता है। माया [illegible] कर देती है। आपोजीशन बहुत करती है। माया भी कहती है बाबा। [illegible] बाबा को भी पहचाना है फिर भी बाप को याद नहीं करते तो हम भी तुमको [illegible]। ऐसे नहीं कहो कि बाबा आप माया को कहो हमको तूफान न मारे। युद्ध का मैदान है ना। एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादुर बन राम की तरफ [illegible] चाहिए। आसुरी सम्प्रदाय को ही दैवी सम्प्रदाय बनाने का धन्धा करना है। जिस्मानी [illegible] पढ़ायेंगे, जब तक वह पढ़कर बड़े हो तब तक विनाश भी सामने आ जायेगा। आसार भी तुम देख रहे हो। बाबा ने समझाया है दोनों क्रिश्चियन भाई2 आपस में मिल जाएं तो लड़ाई हो न सके। परन्तु भावी ऐसी नहीं है। उन्हों को समझ ही नहीं आता है। अब तुम बच्चे योगबल से राजधानी स्थापन कर रहे हो। यह है शिव शक्ति सेना। जो शिवबाबा से

फिर देवता बन जायेंगे। सब बी०के० पावन देवता बन जायेंगे। पावन बनने बिगर वर्सा मिल नहीं सकता। भगवान ऊँच ते ऊँच निराकार शिवबाबा है। उनको देने के लिए जरूर ब्रह्मा तन में आयेगा। यह प्रजापिता ब्रह्मा है, सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। यहाँ पोइन्टों पूजा रखेंगे। हम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ साकार में हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा भी साकार में है। यह राज आकर समझा। हम इस दादा को भगवान नहीं कहते। यह प्रजापिता है इनके तन में शिवबाबा आते हैं। पावन बनाने। यहाँ कोई पावन है नहीं। त्रिमूर्ति शिव के बदले त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह दिया है। परन्तु त्रिमूर्ति ब्रह्मा का कोई अर्थ नहीं है। ब्रह्मा को मनुष्यों का रचयिता भी कहते हैं इसलिए प्रजापिता कहा जाता है। इसमें वह निराकार प्रवेश कर वर्सा देते हैं। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा पावन है। यह पतित से पावन बनते हैं। तुम ब्राह्मण भी पतित से पावन देवता बनते हैं। शिव परमात्माए नमः कहा जाता है। ब्रह्मा विष्णु शंकर को देवता कहा जाता है। भगवान ही भक्तों का रक्षक है। वही सबको सद्गति देंगे। पतित पावन है तो जरूर आकर पतितों को पावन बनायेंगे। पहले2 पावन हैं लक्ष्मी नारायण वो जरूर पुनर्जन्म लेते होंगे। 84 जन्म पूरे होने से फिर साधारण मनुष्य बन जाते हैं। इनमें फिर बाप प्रवेश करते हैं। तो यह व्यक्त ब्रह्मा वह अव्यक्त ब्रह्मा। सूक्ष्मवतन में सृष्टि नहीं रची जाती है। "अक्सर करके लोग इस बात पर मूंझते हैं। तो उनको समझाना है। बाप कहते हैं मैं बहुत जन्मों अर्थात् 84 जन्मों के अन्त के जन्म में प्रवेश करता हूँ। भारत में पहले देवी देवता थे वह फिर पिछाड़ी में शूद्र बने। फिर पहले वही आकर देवी देवता बनेंगे। विराट रूप का चित्र भी जरूर होना चाहिए। बच्चों ने अर्थ सहित बनाया है। ब्राह्मण चोटी, देवता सिर, क्षत्रिय भुजायें, वैश्य-पेट, शूद्र-पैर। शूद्र के बाद फिर ब्राह्मण वर्णों का भी चक्र हुआ ना। यह भी समझना और समझाना है। बाबा ने बहुत बार समझाया है कि अखबार में पड़ता है फलाना स्वर्गवासी हुआ तो उनको चिट्ठी लिखनी चाहिए कि स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्क में था। और अब है ही नर्क तो जरूर पुनर्जन्म भी नर्क में लेंगे। अगर स्वर्ग में गये फिर तुम उनको बुलाकर नर्क का भोजन क्यों खिलाते हो। तुम रोते क्यों हो? परन्तु इतनी बुद्धि नहीं है जो समझें कि स्वर्ग की स्थापना तो बाप ही [illegible] कर सकते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। तुम ब्राह्मण संगम पर बाप से वर्सा ले रहे हो बाकी सब कलियुग में। संगम पर आत्मा परमात्मा मिल रहे हैं। इनको कुम्भ का मेला कहा जाता है। तुम ज्ञान गंगायें ज्ञान सागर से निकली हो। भक्ति में समझते हैं गंगा में स्नान करने से पावन बन जायेंगे। पावन बनाना तो तुम्हारी मिशन का कर्तव्य है। यह है ईश्वरीय मिशन। तुम ही पतित मनुष्य को पावन देवता बनाते हो श्रीमत पर। श्रीकृष्ण पतित पावन नहीं है। वह पूरे 84 जन्म लेते हैं। पहले हैं लक्ष्मी नारायण फिर अन्त में ब्रह्मा सरस्वती। आदि देव आदि देवी कहते हैं। अभी यह बातें कितने समझायें। शिव परमात्मा को भी मानते भी हैं। हे परमपिता परमात्मा आपकी गत मत सबसे न्यारी है। वह श्रीमत देते हैं गति के लिए। गति और सद्गति। दुर्गति वालों की सद्गति करने वाला। उनकी श्रीमत सब मनुष्यों से न्यारी है। आधी भक्ति मार्ग है घोर रात्रि। आधाकल्प है ज्ञान दिन। शिवबाबा कहते हैं मैं अन्धियारी रात को आता हूँ। रात को दिन बनाने। यह ज्ञान एक ही ज्ञान सागर शिवबाबा के पास है। ऋषि मुनि आदि सब कहते आये हैं कि परमात्मा बेअन्त है। बाप को नहीं जानते तो गोया नास्तिक ठहरे। आधाकल्प हैं नास्तिक, आधाकल्प हैं आस्तिक। तुम अब बाप को बाप की रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हो और कोई नहीं जानते। इसलिए कहा जाता है निधनके। अनेक धर्म अनेक मतें हो गई हैं। अब बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया का सन्यास करना है। याद करना है शान्तिधाम और सुखधाम को। जितना याद करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। गृहस्थ व्यवहार में भल रहो। सिर्फ पवित्र बनो। धन्धे बिगर गृहस्थ कैसे चलेगा। सिर्फ पवित्र बनना है और बाप को याद करना है। बाप कहते हैं मैं सोनार भी हूँ। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। इसलिए तुम्हारी आत्मा जब पावन बनें तब फिर शरीर भी पावन मिले। सच्चे सोने का जेवर भी ऐसा बनेगा ना। अब तो आत्मा और शरीर दोनों ही आइरन एजड हैं। फिर पावन बनाने की युक्ति बताते हैं। इसलिए कहते हैं तुम्हारी गत मत। श्रीमत सबसे न्यारी है। अभी तुम जानते हो यह सद्गति का रास्ता कोई

कलिंग मुरली

31

21-5-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

''मीठे बच्चे - बाप आये हैं - तुम्हें श्रेष्ठ मत देकर सदा के लिए सुखी, शान्त बनाने, उनकी मत पर चलो, रुहानी पढ़ाई पढ़ो और पढ़ाओ तो एवरहेल्दी वेल्दी बन जायेंगे''

प्रश्न:- कौन सा चांस सारे कल्प में इस समय ही मिलता है, जो मिस नहीं करना है?

उत्तर:- रूहानी सेवा करने का चांस, मनुष्य को देवता बनाने का चांस अभी ही मिलता है। यह चांस मिस नहीं करना है। रूहानी सर्विस में लग जाना है। सर्विसएबुल बनना है। खास कुमारियों को ईश्वरीय गवर्मेन्ट की सेवा करनी है। मम्मा को पूरा-पूरा फालो करना है। अगर कुमारियां बाप का बनकर जिस्मानी सर्विस ही करती रहें, कांटों को फूल बनाने की सर्विस नहीं करें तो यह भी जैसे बाप का डिसरिगार्ड है।

गीत:- जाग सजनियां जाग....

ओम् शान्ति। सजनियों को किसने समझाया? कहते हैं साजन आया सजनियों के लिए। कितनी सजनियां हैं? एक साजन को इतनी सजनियां.. वन्डर है ना! मनुष्य तो कहते कृष्ण को 16108 सजनियां थीं, परन्तु नहीं। शिवबाबा कहते हैं मुझे तो करोड़ों सजनियां हैं। सब सजनियों को मैं अपने साथ स्वीट होम में ले जाऊंगा। सजनियां भी समझती हैं हमको फिर से बाबा ले जाने आये हैं। जीव आत्मा सजनी ठहरी। दिल में है साजन आया है हमको श्रीमत दे श्रृंगार कराने के लिए। मत तो हर एक को देते हैं। पुरुष स्त्री को, बाप बच्चे को, साधू अपने शिष्य को, परन्तु इनकी मत तो सबसे न्यारी है, इसलिए इनको श्रीमत कहा जाता है, और सब हैं मनुष्य मत। वह सब मत देते हैं अपने शरीर निर्वाह के लिए। साधू सन्त आदि सबको तात लगी हुई है शरीर निर्वाह की। सभी एक दो को धनवान बनने की मत देते रहते हैं। सबसे अच्छी मत साधुओं, गुरुओं की मानी जाती है। परन्तु वह भी अपने पेट के लिए कितना धन इक्ट्ठा करते हैं। मुझे तो अपना शरीर नहीं है। मैं अपने पेट के लिए कुछ नहीं करता हूँ। तुमको भी अपने पेट का ही काम है कि हम महाराजा महारानी बनें। सबको तात है पेट की। फिर कोई ज्वार की रोटी खाते तो कोई अशोका होटल में खाते। साधू लोग धन इक्ट्ठा कर बड़े मन्दिर आदि बनाते हैं। शिवबाबा शरीर निर्वाह अर्थ तो कुछ करते नहीं हैं। तुमको सब कुछ देते हैं—सदा सुखी बनाने के लिए। तुम एवरहेल्दी, वेल्दी बनेंगे। मैं तो एवरहेल्दी बनने का पुरुषार्थ नहीं करता हूँ। मैं हूँ ही अशरीरी। मैं आता ही हूँ तुम बच्चों को सदा सुखी बनाने के लिए। शिवबाबा तो है निराकार। बाकी सबको पेट की लगी रहती है। द्वापर में बड़े-बड़े सन्यासी, तत्व ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी थे। याद में रहते थे तो घर बैठे उनको सब कुछ मिल जाता था। पेट तो

सबको है, सबको भोजन चाहिए। परन्तु योग में रहते हैं इसलिए उनको धक्का नहीं खाने पड़ते हैं। अब बाप तुम बच्चों को युक्ति बतलाते हैं कि तुम सदा सुखी कैसे रह सकते हो। बाबा अपनी मत देकर विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम चिरंजीवी रहो, अमर रहो। सबसे अच्छी मत उनकी है। मनुष्य तो बहुत मत देते हैं। कोई इम्तहान पास कर बैरिस्टर बन जाते परन्तु वह सब हैं अल्पकाल के लिए। पुरूषार्थ करते हैं अपने और बाल बच्चों के पेट के लिए।

अब बाबा तुमको श्रीमत देते हैं हे बच्चे श्रीमत पर चल यह रूहानी पढ़ाई पढ़ो जो मनुष्य विश्व का मालिक बन जावें। सबको बाप का परिचय दो तो बाप की याद में रहने से एवरहेल्दी, वेल्दी बन जायेंगे। वह है अविनाशी सर्जन। तुम बाप के बच्चे भी रूहानी सर्जन हो, इसमें कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ मुख से आत्माओं को श्रीमत दी जाती है। सर्वोत्तम सेवा तुम बच्चों को करनी है। ऐसी मत तुमको कोई दे न सके। अब हम बाप के बच्चे बने हैं तो बाप का धन्धा करें या जिस्मानी धन्धा करें। बाबा से हम अविनाशी ज्ञान रत्नों की झोली भरते हैं। शिव के आगे कहते हैं भर दे झोली। वह समझते हैं – 10-20 हजार मिल जायेंगे। अगर मिल गये तो बस उन पर बलिहार जायेंगे, बहुत खातिरी करेंगे। वह सब है भक्ति मार्ग। अब सबको बाप का परिचय दो और बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाओ। बहुत इज़ी है। हद की हिस्ट्री-जॉग्राफी में तो बहुत बातें हैं। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी है कि बेहद का बाप कहाँ रहते हैं, कैसे आते हैं! हम आत्माओं में कैसे 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। बस जास्ती कुछ नहीं समझाओ सिर्फ अल्फ और बे। अहम् आत्मा बाप को याद करके विश्व का मालिक बन जायेंगी। अभी पढ़ना और पढ़ाना है। अल्फ माना अल्लाह, बे माना बादशाही। अब सोचो यह धन्धा करें या जिस्मानी धन्धा कर 2-4 सौ कमायें!

बाबा कहते हैं अगर कोई होशियार बच्ची हो तो मैं उनके मित्र सम्बन्धियों को भी दे सकता हूँ, जिससे उनका भी शरीर निर्वाह चलता रहे। परन्तु बच्ची अच्छी हो, सर्विसएबुल हो, अन्दर बाहर साफ हो, बोली की बड़ी मीठी हो। वास्तव में कुमारी की कमाई माँ बाप खा नहीं सकते। बाबा का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में ध्यान बहुत देना - यह तो डिसरिगार्ड हो गया। बाप कहते हैं मनुष्य मात्र को हेविन का मालिक बनाओ। बच्चे फिर जिस्मानी सर्विस में माथा मारें! स्कूल खोलना तो गवर्मेन्ट का काम है। अब बच्चियों को बुद्धि से काम लेना है। कौन सी सर्विस करें – ईश्वरीय गवर्मेन्ट की या उस गवर्मेन्ट की? जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे फिर बड़े बाबा ने कहा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा करना है, इससे तुम यह बनेंगे। चतुर्भुज का भी साक्षात्कार करा दिया। अब वह विश्व की बादशाही लेवें या यह करें। सबसे अच्छा धन्धा यह है। भल कमाई अच्छी थी परन्तु बाबा ने इसमें प्रवेश होकर

कट

← १. ५. ९२ पृ-२ मुरली से कटिंग किया है।

३१

मत दी कि अल्फ और बे को याद करो। कितना सहज है! छोटे बच्चे भी पढ़ सकते हैं। शिवबाबा तो हर एक बच्चे को समझ सकते हैं। यह भी सीख सकते हैं। यह है बाहरयामी, शिवबाबा है अन्तर्यामी। यह बाबा भी हर एक की शक्ल से, बोल से, एक्ट से सब कुछ समझ सकते हैं। बच्चियों को रूहानी सर्विस का चांस एक ही बार मिलता है। अब दिल में आना चाहिए हम मनुष्य को देवता बनायें या कांटो को कांटा बनायें? सोचो क्या करना चाहिए? निराकार भगवानुवाच - देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। ब्रह्मा के तन से बाप ब्राह्मणों से ही बात करते हैं। वह ब्राह्मण लोग भी कहते हैं - ब्राह्मण देवी देवताए नमः, वह कुख वंशावली, तुम हो मुख वंशावली। बाबा को जरूर ब्रह्मा बच्चा चाहिए। कुमारका बताओ बाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते 600 करोड़, कोई कहते एक ब्रह्मा .. भले तुम त्रिमूर्ति कहते हो परन्तु आक्यूपेशन तो अलग-अलग है ना। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। ब्रह्मा की नाभी से विष्णु, तो एक हो गये। विष्णु 84 जन्म लेते हैं वा ब्रह्मा - बात तो एक ही है। बाकी रहा शंकर। ऐसे तो नहीं शंकर सो शिव होता है। नहीं, त्रिमूर्ति कहलाया जाता है। परन्तु राइटियस बच्चे दो हुए। यह सब ज्ञान की बातें हैं। → X कट

तो बच्चियों के लिए यह सर्विस करना अच्छा है या मैट्रिक आदि पढ़ना अच्छा है? वहाँ तो अल्पकाल का सुख मिलेगा। थोड़ी तनख्वाह मिलेगी। यहाँ तो तुम भविष्य 21 जन्मों के लिए मालामाल हो सकते हो। तो क्या करना चाहिए? कन्या तो निर्बन्धन है। अधर कन्या से कुवांरी कन्या तीखी जा सकती है क्योंकि पवित्र है। मम्मा भी कुमारी थी ना। पैसे की तो बात ही नहीं। कितनी तीखी गई तो फालो करना चाहिए खास कन्याओं को। कांटो को फूल बनायें। ईश्वरीय पढ़ाई का चांस लें या उस पढ़ाई का? कन्याओं का सेमीनार करना चाहिए। माताओं को तो पति आदि याद पड़ता है। सन्यासियों को भी याद बहुत पड़ता रहता है। कन्याओं को तो सीढ़ी चढ़नी नहीं चाहिए। संग का रंग बहुत लग जाता है। कोई बड़े आदमी का बच्चा देखा दिल लग गई, शादी हो गई। खेल खत्म। सेन्टर से सुनकर बाहर जाते हैं तो खेल खत्म हो जाता है। यह है मधुबन। यहाँ ऐसे भी बहुत आते हैं, कहते हैं हम जाकर सेन्टर खोलेंगे। बाहर जाकर गुम हो जाते हैं। यहाँ ज्ञान का गर्भ धारण करते, बाहर जाने से नशा गुम हो जाता है। माया आपोजीशन बहुत करती है। माया भी कहती है वाह! इसने बाबा को भी पहचाना है फिर भी बाबा को याद नहीं करते तो हम भी घूंसा मारेंगी। ऐसे नहीं कहो कि बाबा आप माया से कहो हमको घूंसा न मारे। युद्ध का मैदान है ना। एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादुर बन राम की तरफ जाना चाहिए। * आसुरी सम्प्रदाय को ही दैवी सम्प्रदाय बनाने का धन्धा करना है। जिस्मानी विद्या तुम

जिनको पढ़ायेंगे, जब तक वह पढ़कर बड़े हो तब तक विनाश भी सामने आ जायेगा। आसार भी तुम देख रहे हो। बाबा ने समझाया है दोनों क्रिश्चियन भाई-भाई आपस में मिल जाएं तो लड़ाई हो न सके। परन्तु भावी ऐसी नहीं है। उन्हों को समझ में ही नहीं आता है। अब तुम बच्चे योगबल से राजधानी स्थापन कर रहे हो। यह है शिव शक्ति सेना। जो शिवबाबा से भारत का प्राचीन ज्ञान और योग सीख कर भारत को हीरे जैसा बनाते हो। बाप कल्प के बाद ही आकर पतितों को पावन बनाते हैं। तुम सब रावण की जेल में हो। शोक वाटिका में हो, सब दु:खी हो। फिर राम आकर सबको छुड़ाए अशोक वाटिका स्वर्ग में ले जाते हैं। श्रीमत कहती है - कांटों को फूल, मनुष्य को देवता बनाओ। तुम मास्टर दु:ख हर्ता सुख कर्ता हो। यही धन्धा करना चाहिए। श्रीमत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बनेंगे, बाप तो राय देते हैं। अब बाप कहते हैं अर्जी हमारी मर्जी आपकी। अच्छा -

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सर्विसएबुल बनने के लिए अन्दर बाहर साफ बनना है। मुख से बहुत मीठे बोल बोलने हैं। देह सहित देह के सब सम्बन्धों से बुद्धियोग हटाना है। संग से अपनी सम्भाल करनी है।

२- बाप समान मास्टर दु:ख हर्ता सुख कर्ता बनना है। रूहानी सेवा कर सच्ची कमाई करनी है। रूहानी बाप की मत पर रूहानी सोशल वर्कर बनना है।

वरदान: मन-बुद्धि से किसी भी बुराई को टच न करने वाले सम्पूर्ण वैष्णव व सफल तपस्वी भव

पवित्रता की पर्सनैलिटी व रायॅल्टी वाले मन-बुद्धि से किसी भी बुराई को टच नहीं कर सकते। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता है, ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग अपवित्रता है। तो किसी भी बुराई को संकल्प में भी टच न करना — यही सम्पूर्ण वैष्णव व सफल तपस्वी की निशानी है।

स्लोगन:-

मन की उलझनों को समाप्त कर वर्तमान और भविष्य को उज्जवल बनाओ।

6.10.88 •• प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-देह के सम्बन्धों में बंधन है, इसलिए दुख है, देही के सम्बन्ध में रहो तो अपार सुख मिल जायेगा, एक मात पिता की याद रहेगी"

(३२)

प्रश्न:-किस नशे में रहो तो माया पर जीत पाने की हिम्मत आ जायेगी?

उत्तर:-नशा रहे कि कल्प2 हम बाप की याद से माया दुश्मन पर विजयी बन हीरे जैसा बने हैं। खुद खुदा हमारा मात पिता है, इसी स्मृति से वा नशे से हिम्मत आ जायेगी। हिम्मत रखने वाले बच्चे विजयी अवश्य बनते हैं और सदा गाडली सर्विस पर ही तत्पर रहते हैं।

गीत:-तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है...ओमशान्ति। (देवी देवताओं के पुजारी पारलौकिक मात पिता को याद तो करते ही आते हैं और भक्त भी जानते हैं हमको भक्ति का फल देने मात पिता को आना है जरूर। अब वह मात पिता कौन है।यह तो बिचारे जानते ही नहीं। पुकारते हैं इससे सिद्ध होता है, उनका संबंध जरूर है।एक होता है लौकिक सम्बन्ध दूसरा होता है पारलौकिक सम्बन्ध। लौकिक सम्बन्ध तो अनेक प्रकार का है।) काका चाचा मामा आदि2 वह है लौकिक बंधन। इसलिए परमपिता परमात्मा को बुलाते हैं। यह तो बच्चों को मालूम है-सतयुग में कोई बंधन नहीं। बाप को बुलाते हैं कि हम अभी बन्धन में हैं, आपके संबंध में आना चाहते हैं।भक्तों को याद है हम अनेक प्रकार के बन्धनों में हैं। देह का सिमरण होने कारण बन्धन बहुत है। देही के सम्बन्ध से एक ही मात पिता याद रहता है। लौकिक और पारलौकिक को याद करने में रात दिन का फर्क है।यह है जिस्मानी बंधन। और वह है रूहानी संबंध। उनको बंधन कहेंगे। जिस्मानी संबंध में सतयुग में रहते हैं क्योंकि वहाँ सुख का संबंध कहेंगे। यहाँ फिर दुख का बंधन कहेंगे। उनको संबंध नहीं कहेंगे। इन बातों का आगे पता नहीं था। अब समझ गये हो, पुकारते जरूर थे हे मात-पिता-आओ।बाप तो जरूर सबको सुख ही देंगे। परन्तु बाप क्या सुख देते हैं। यह किसको पता नहीं है। अभी बाप से संबंध है, उनसे सदा सुख मिलेगा। सुख को संबंध दुख को बंधन कहेंगे। (तो बच्चे मात-पिता को बुलाते हैं कि आकरके ऐसे2 मीठी2 बातें सुनाओ वा इनडायरेक्ट बुलाते हैं। तुम डायरेक्ट बुलाते हो। वह भी याद करते हैं हे परमपिता परमात्मा। पिता है तो जरूर माता भी होनी चाहिए।नहीं तो बाप क्रियेट कैसे करे। शिवबाबा को बच्चे चिट्ठी कैसे लिखेंगे।ऐसे तो वह पढ़ न सके। शिवबाबा तो यहाँ बैठा है। इसलिए लिखते हैं शिवबाबा C/O ब्रह्मा। शिवबाबा जरूर कोई तो शरीर धारण करते हैं। गाते भी हैं आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल..सतगुरू उसको कहा जाता है। वह है सर्व का सद्गति दाता। वह आकर इस शरीर में प्रवेश करते हैं। फिर उनको 84जन्म बैठ बतलाते हैं।ब्रह्मा की रात ब्रह्मा का दिन गाया हुआ है। पहले है परमपिता परमात्मा रचता। ब्रह्मा विष्णु शंकर को रचते हैं। फिर सबको वापिस जाना है तो जरूर पहले 2 ब्रह्मा विष्णु शंकर जायेंगे। उन्हों के तो दिन और रात हो न सके। ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की रात गाया हुआ है।) बरोबर परमपिता ब्रह्मा की रात को फिर ब्रह्मा का दिन बनाने आते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा का दिन तो प्रजापिता ब्र०कु० कुमारियों का भी दिन हो पड़ता। दिन कहा जाता है सतयुग त्रेता को। रात द्वापर कलियुग को। अभी तुम बच्चे आये हो बाप से स्वर्ग का वर्सा लेने।उनको ही गाते हैं त्वमेव माताश्च पिता तथा रूप में लिखते हैं, हल्के रूप में आकर बहलते हैं। मुख्य हैं तीन संबंध- बाप टीचर सतगुरू। इनसे ही फायदा है।बाकी काका चाचा मामा आदि संबंधों की कोई बात नहीं। तो सम्पूर्ण बाप जो है वह आकर बच्चों को सम्पूर्ण बनाते हैं। 16कला सम्पूर्ण तुम बन रहे हो। तुम अनुभवी हो। दूसरा कोई कैसे जाने। जब तक तुम बच्चों के संग में न आये, तब तक वह कैसे समझ सके। अब तुम जानते हो भक्ति मार्ग में भी बंधन है। (याद तब करते हैं जबकि रावण रूपी 5विकारों के बन्धन में हैं। बाप का नाम ही है लिब्रेटर। अंग्रेजी अक्षर बहुत अच्छा है। लिब्रेट करते हैं-मनुष्यों को लिब्रेट किया जाता है। दुख से माया के बंधन से लिब्रेट करने आते हैं।फिर गाइड भी है। गीता में भी है मच्छरों सदृश्य सबको वापिस ले जाते हैं तो जरूर विनाश भी होगा। यह तो गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। फिर जो स्थापना करते हैं उन द्वारा ही पालना भी होती है।अभी तुम तैयार हो रहे हो।नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। देह के बन्धन को बुद्धि से तोड़ना है।सन्यासी लोग तो घरबार छोड़ भाग जाते हैं। तुम गृहस्थ

व्यवहार में रहते राजयोग सीखते हो। जनक का भी मिसाल है। वह फिर जाकर अनु जनक बना। बहुत बच्चे कहते हैं जनक मिसल हम अपनी राजधानी में रहते ज्ञान उठावें। अपने घर का तो हरेक राजा हैं ना। मालिक को राजा कहा जाता है। बाप है, उनकी स्त्री बच्चे आदि हैं। वह हो गई हद की रचना। क्रियेट भी करते हैं। पालना भी करते हैं। बाकी संघार नहीं कर सकते। क्योंकि सृष्टि को तो वृद्धि को पाना ही है। सब पैदा ही करते रहते हैं। सिर्फ बेहद का बाप ही आते हैं जो नई रचना रचते हैं और पुरानी का विनाश कराते हैं। नई सृष्टि की स्थापना और पुरानी का विनाश सो तो ब्र0वि0शं0 का रचयिता परमपिता परमात्मा ही करेंगे। इन बातों को तुम बच्चे अच्छी रीति समझते हो। बातें तो बड़ी सहज है। नाम ही रखा हुआ है सहज योग वा याद। भारत का ज्ञान वा योग नामीग्रामी है। और है भी गीता। परन्तु उसमें कृष्ण का नाम डालने से किसका भी भाव नहीं बैठता। कृष्ण को हिन्दू पूजते हैं। आर्य समाजी आदि देवताओं के चित्रों को नहीं मानते। समझते हैं कि यह कल्पना है। हर एक की अपनी2 मत है। एक न मिले दूसरे से। 550करोड़ मनुष्यों की अपनी2 मत हैं। 5विकार सभी में हैं तो सबकी मत भी आसुरी हो गई है। बाप फिर दैवी मत देते हैं जिससे तुम सदैव हर्षित रहेंगे। मात पिता से ही नई सृष्टि की रचना होती है। यह तो सब जानते हैं हमको खुदा ने पैदा किया। अभी तुम समझते हो खुदा कैसे आकर नई सृष्टि रचते हैं। नई सृष्टि एडाप्ट करते हैं। मात पिता तो जरूर है। बाप तो है फिर खुद ही मात पिता बनते हैं। ऐसे नहीं कि खुद ही पूज्य पुजारी बनते हैं। बाप तो खुद है फिर इन द्वारा एडाप्ट करते हैं तो यह बड़ी माता हो गई। फिर पहले नम्बर में सरस्वती को एडाप्ट किया है। बाप ने इनमें प्रवेश किया है ना। यह मम्मा तो एडाप्टेड है। तुम्हारे लिए तो मात पिता है। हमारे लिए पति भी हुआ तो पिता भी हुआ। परवरिश कर अपनी पत्नी भी मुझे बनाया है। और बच्चा भी बनाया है। यह तो बड़ी रमणीक बातें हैं। जो सम्मुख सुनने की हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते हैं। अगर सभी समझते हो तो फिर समझावें। समझा नहीं सकते हैं तो गोया कुछ नहीं समझा। जड़ बीज से झाड कैसे पैदा होता है यह तो कोई भी झट बतला सकता है। इस बेहद के झाड का जब तक बाप न आकर समझाये तब तक कोई समझ नहीं सकते। तुम जानते हो हम बाप से राजयोग सीख और बाप से वर्सा ले रहे हैं। यह बुद्धि में होना चाहिए। यह डबल सम्बन्ध है। वहाँ तो सिंगल संबंध रहता है। पारलौकिक बाप को याद नहीं करते। यहाँ यह सब है बन्धन। तुम जानते हो हम इस समय उस बन्धन में भी हैं। पिता के संबंध में अब आये हैं। उस बन्धन से छूटने के लिए। आजकल तो कितनी मतें हो गई हैं। आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं। पानी के लिए, धरनी के लिए भी लड़ते रहते हैं। यह हमारी हद में है। यह तुम्हारी हद में नहीं है। बिल्कुल ही हद में आ गये हैं। यह भूल गये हैं कि भारतवासी सतयुग में बेहद के मालिक थे। जो मालिक थे वही फिर भूल जाते हैं। भूलना भी जरूर है तब ही फिर बाप आकर समझाते हैं। इन बातों को अभी तुम जानते हो। वहाँ है बंधन। यहाँ मात पिता से संबंध है। जानते हो हम श्रीमत पर चल अथाह सुख का वर्सा पा रहे हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको सुख का वर्सा देता हूँ। फिर श्राप कौन देते? माया रावण। श्राप में है दुख। वर्से में तो सुख होता है। मनुष्य यह नहीं जानते कि मनुष्य को दुख का वर्सा कौन देते हैं। बाप सतयुग स्थापन करते हैं तो जरूर सुख का ही वर्सा देंगे। दुख का वर्सा देने वाला बाप को थोड़ेही कहेंगे। दुख तो दुश्मन देते हैं। परन्तु यह बातें कोई समझते नहीं। कहाँ की बात कहाँ ले गये हैं। कहते हैं लंका लूटी जाती है। सोना ले आते हैं। अब सोना कोई सीलोन में नहीं रखा है। सोना तो मिलता है खानियों से। कहाँ2 नदियों से भी मिलता है। बच्चे जान गये हैं यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। तुम बच्चों की बुद्धि में नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार बैठा है। जो नहीं समझते हैं न समझा सकते तो वह क्या पद पायेंगे। पढ़े हुए के आगे भरी ढोयेंगे। राजा रानी प्रजा में फर्क तो है ना। जैसे यह मम्मा बाबा जाकर ऊँच पद पाते हैं। तुम भी पुरूषार्थ कर इतना पढ़ो। जो मम्मा बाबा के तख्त पर बैठो। विजय माला का दाना बनो। टैम्पटेशन बहुत दी जाती है। राजयोग है ना। तुम राजयोग से राजाई तो प्राप्त कर लो। कम से कम पुरूषार्थ अनुसार प्रजा तो बनेंगे ही। इनको कहा जाता है फालो फादर। तुम बच्चे हो ना। यह फादर फिर मदर फादर। यहाँ फिर मदर भी है। वह भी नम्बरवन फालो कर रही है। तुम हो

[illegible] पर कितनी मेहनत कर जाते हैं। वहाँ है कुछ भी नहीं। सब ठगी है, दिखाते हैं शंकर ने पार्वती को कथा सुनाई। अब क्या पार्वती की दुर्गति हुई, जो उनको कथा बैठ सुनाई।

[illegible] मन्दिर आदि बनाने में कितना खर्चा करते हैं। बाप कहते हैं खर्चा करते2 तुमने सब पैसे [illegible] दिये हैं। तुम कितने सालवेन्ट थे, अब इनसालवेन्ट बन गये हो फिर मैं आकर सालवेन्ट बनाता हूँ। तुम जानते हो - बाप से हम वर्सा लेने आये हैं। तुम बच्चों को दे रहे हैं। भारत है [illegible] परमात्मा का बर्थ प्लेस। तो सबसे बड़ा तीर्थ हुआ ना, फिर सर्व पतितों को [illegible] भी बाप ही बनाते हैं। गीता में अगर बाप का नाम होता तो सभी यहाँ आकर फूल चढ़ाते। बाप के सिवाए सभी को सद्गति दे कौन सकता। बड़े से बड़ा तीर्थ है। परन्तु कोई को मालूम नहीं है। नहीं तो जैसे बाप की महिमा अपरमअपार है वैसे भारत की भी महिमा है। हेल और हेविन भारत बनता है। अपरमअपार महिमा है ही हेविन की। अपरमअपार निंदा फिर हेल की करेंगे। आसुरी सम्प्रदाय है ना। गीता में बाप के बदले बच्चे का नाम डालने से खण्डन कर दिया है। सतयुग में झूठ नहीं कहेंगे। तुम सचखण्ड के मालिक बनते हो। यहाँ आये हो बाबा से बेहद का वर्सा लेने। बाप कहते हैं मनमनाभव और सबसे बुद्धियोग हटाए मामेकम् याद करो। याद से ही पवित्र बनेंगे। नालेज से वर्सा लेना है, जीवनमुक्ति का वर्सा तो सबको मिलता है परन्तु स्वर्ग का वर्सा राजयोग सीखने वाले ही पाते हैं। सद्गति तो सबकी होनी है ना, सबको वापस ले जायेंगे। बाप कहते हैं मैं कालों का काल हूँ। महाकाल का भी मन्दिर है। बाप ने समझाया है अन्त में प्रत्यक्षता होगी तब समझेंगे कि बरोबर [illegible] को बतलाने वाला बेहद का बाप ही है। कथा सुनाने वाले अगर अब कहें गीता का भगवान कृष्ण नहीं, शिव है तो सब कहेंगे इनको भी बी०के० का भूत लगा है। इसलिए इन्हों का अभी टाइम नहीं है। पिछाड़ी को मानेंगे। अभी मान लेवे तो सारी ग्राहकी चली जाए। अच्छा- मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

पिताश्री

धारणा के लिए मुख्य सार:- 1) और सब संग तोड़ मात पिता को पूरा2 फालो करना है। इस पुरानी दुनिया का बुद्धि से वैराग करना है।
2) यह अन्त का समय है, सब खत्म होने के पहले अपने पास जो कुछ है, उसे इनश्योर कर भविष्य फल बादशाही का अधिकार लेना है।

सूचना:- दिल्ली, खानपुर, नीमच पुस्तक बाजार, प्रोडातूर एवं वास्को-डे-गामा सेवा केन्द्रों का एड्रेस लिख रहे हैं।

(1) BRAHMA KUMARIS RAJ YOGA CENTER
R.P.S.134, KHANPUR
NEW DELHI- 110 062

(2) BRAHMA KUMARIS,
21, AHINSA PATH
PUSTAK BAZAR -
NEEMUCH - 458 441 (M.P.)
PHONE NO. 676

(3) BRAHMA KUMARIS
31/295, MOKSHAGUNDAM STREET
PRODDATUR -516 360
DIST. CUDDAPAH (AP)

(4) BRAHMA KUMARIS
2, MONICA MARTIN'S BUILDING
OPP. HOLY CROSS CHURCH
NEW VADEM
VASCO-DA-GAMA-403 802 (GOA)

[illegible]:-126-5-92। आप सब जानते हैं कि हम सबका अति स्नेही यज्ञ का पुराना भाई [illegible] बाबू जी, जो कि यज्ञ में कनस्ट्रक्शन डिपार्टमेंट की अनेक सेवाओं पर तत्पर रहे, उनकी [illegible] नानावटी हॉस्पिटल में हार्ट की बाईपास सर्जरी हुई है। 22ता० शुक्रवार को आपरेशन के [illegible] दादी जी वहाँ ही उपस्थित थीं। आप सभी के सूक्ष्म योग के सहयोग से उनकी तबियत ठीक होती जा रही है। अभी तक हॉस्पिटल में ही हैं।

"मीठे बच्चे तुम जगतअम्बा कामधेनु के बच्चे और बच्चियां हो, तुम्हें सबकी मनोकामनाएं पूरी करनी है, अपने बहन-भाइयों को सच्चा रास्ता बताना है"

प्रश्नः-तुम बच्चों को बाप द्वारा कौन सी रेसपान्सिबिलिटी मिली हुई है?

उत्तरः-बच्चे, बेहद का बाप बेहद का सुख देने आया है, तो तुम्हारा फर्ज है घर2 में यह पैगाम दो। बाप का मददगार बन घर2 को स्वर्ग बनाओ। कांटों को फूल बनाने की सेवा करो। बाप समान निरअहंकारी निराकारी बन सबकी खिदमत करो। सारी दुनिया को रावण दुश्मन के चम्बे से छुड़ाना - यह सबसे बड़ी रेसपान्सिबिलिटी तुम बच्चों की है।

गीतः-माता ओ माता.. ओमशान्ति। यह माता की महिमा भारत में ही गाई जाती है। जगत अम्बा बरोबर भाग्य विधाता है। इनका नाम ही रखा हुआ है कामधेनु। अर्थात् सब कामनायें पूरी करने वाली। यह वर्सा उनको कहाँ से मिलता है? शिवबाबा द्वारा जगत अम्बा और जगत पिता को वर्सा मिलता है। बच्चों को यह निश्चय हुआ है कि हम आत्मायें हैं। आत्मा को देख नहीं सकते हैं, जान सकते हैं। जीव और आत्मा है। आत्मा अविनाशी है, शरीर तो विनाशी है जो इन आंखों से देखा जाता है। आत्मा का सा० होता है। शास्त्रों में भी है- विवेकानंद को आत्मा का साक्षात्कार हुआ परन्तु समझ न सका। बच्चे समझते हैं हम अपनी आत्मा का साक्षात्कार करेंगे तो जैसे बाप का भी करेंगे। जैसे आत्मा है वैसे ही आत्माओं का बाप है। कोई फर्क नहीं है। बुद्धि से जाना जाता है, यह बाप है, यह बच्चा है। सभी आत्मायें उस बाप को याद करती हैं। इन आंखों से तो न अपनी आत्मा को, न बाप की आत्मा को देख सकते हैं। वह है परम आत्मा परमधाम में रहने वाला सुप्रीम परमात्मा। भक्ति मार्ग में भी सा० करते हैं। समझो कोई को श्रीकृष्ण का सा० होता है। श्रीकृष्ण तो पुनर्जन्म में आते हैं। अभी कोई जन्म में होगा। नौधा भक्ति करते हैं तो उनको सा० होता है। ऐसे नहीं कि उनकी आत्मा इस शरीर में इस समय है। नहीं। उनकी आत्मा तो पुनर्जन्म में चली गई। भक्ति मार्ग में जो2 जिस2 भावना से जिसको पूजते हैं उनका सा० होता है। ढेर चित्र बैठ बनाये हैं। जिसको गुड़ियों की पूजा कहा जाता है। गणेश में भावना रखते हैं, अब ऐसा मनुष्य तो कोई होता नहीं। मनुष्य बिल्कुल बेसमझ हैं। समझते हैं कच्छ मच्छ हनूमान आदि यह सब मनुष्य होते हैं। यह सब है भक्ति मार्ग के। भावना रखने से अल्पकाल सुख का भाड़ा थोड़ा मिल जाता है। तुम्हारी बेहद सुख की तो बात ही निराली है। तुम जानते हो हम स्वर्ग की बादशाही लेते हैं। भक्ति से कोई स्वर्ग में नहीं जाते। जब भक्ति मार्ग पूरा होता है अर्थात् दुनिया पुरानी होती है तब ही फिर कलियुग के बाद सतयुग नई दुनिया आयेगी। कोई की बुद्धि में नहीं बैठता। सन्यासी भी कहते फलाना ज्योति ज्योत समाया, परन्तु ऐसे हैं नहीं। अब तुमको ईश्वरीय बुद्धि मिली है। जिसको श्रीमत कहते हैं। अक्षर कितने अच्छे हैं। श्री श्रीः भगवानुवाच। वही स्वर्ग का मालिक अर्थात् नर से नारायण बनाते हैं। श्रीमत से विश्व का राज्य पाते हो। श्री श्री 108 की माला की बहुत महिमा है। 8 रत्नों की माला होती है। सन्यासी लोग भी जपते हैं। एक कपड़ा बनाते हैं उसको गऊमुख कहते हैं। अन्दर हाथ डाल माला फेरते हैं। बाबा कहते हैं निरन्तर याद करो तो उन्होंने फिर माला फेरने का अर्थ उठा लिया है। अब यह भक्ति मार्ग की सब बातें भूल जानी हैं। बच्चे जानते हैं अब पारलौकिक बाप ने आकर हमको अपना बनाया है ब्रह्मा द्वारा। प्रजापिता ब्रह्मा है तो प्रजा माता भी है। जगत अम्बा को जगत की माता और लक्ष्मी को विश्व की महारानी कहा जाता है। विश्व अम्बा कहो या जगत अम्बा कहो बात एक ही है। तुम बच्चे हो। तो यह कुटुम्ब हो गया। तुम बच्चे भी सबकी मनोकामनायें पूरी करने वाले हो। जगत अम्बा के तुम हो बच्चे और बच्चियां। बुद्धि में यह नशा रहता है, हम अपने बहन भाइयों को रास्ता बतावें। बहुत सहज है। भक्ति मार्ग में तो तकलीफ बहुत है। कितने हठयोग प्राणायाम आदि करते हैं। नदी में जाकर स्नान करते हैं। बहुत तकलीफ लेते हैं। अभी

1-1-79 ओमशान्ति 'अव्यक्त बापदादा' मधुबन

आज सर्व बच्चों को बापदादा नई उमंगो नये शुद्ध संकल्पों-नई दुनिया को समीप लाने के [illegible] [illegible] की सुनते हुए अति हर्षित हो रहे थे। हरेक बच्चे के अन्दर विशेष उमंग है स्वयं को सम्पन्न बनाकर [illegible] करना का। आज अपने अन्दर रही हुई कमजोरियों को सदाकाल के लिए विदाई देने के [illegible] पर, बापदादा भी बधाई देते हैं। इसी विदाई की बधाई को हर रोज अमृतवेले स्मृति के [illegible] बनाते रहना। इस वर्ष स्वयं के समर्थ स्वरूप के साथ2 सेवा में भी समर्थ स्वरूप लाना है- [illegible] विनाशकारी ग्रुप बहुत तीव्रगति से अपने कार्य को आगे बढ़ाते जा रहे हैं-[illegible] सेकेण्ड में [illegible] बन्धन से मुक्त होने अर्थात् शारीरिक दुख से सहज मुक्त होने, अनेक आत्माओं को बचाने के [illegible] बना रहे हैं। किस आधार से? साइन्स की अथार्टी से। ऐसे स्थापना के कार्य में निमित्त बने [illegible] आलमाइटी अथार्टी ग्रुप-आत्माओं को जन्म जन्मान्तर के लिए माया के बन्धन से, माया द्वारा [illegible] अनेक प्रकार के दुखों से, एक सेकेण्ड में मुक्त करने का सदाकाल के लिए सुख-शान्ति का वरदान [illegible], [illegible] को ठिकाने लगाने लिए तैयार हो। विनाशकारी ग्रुप अब भी एवररेडी है। सिर्फ आर्डर [illegible] ऐसे स्थापना निमित्त बने हुए ग्रुप एवररेडी हो? क्योंकि स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् [illegible] को आर्डर मिलना है। जैसे समय समीप अर्थात् पूरा होने पर सुई आती है और [illegible] स्वतः [illegible] ऐसे बेहद की घड़ी में स्थापना की सम्पन्नता अर्थात् समय पर सुई (कांटा) का आना और [illegible] बजना। तो बताओ सम्पन्नता में एवररेडी हो?

आज बच्चों के अमृतवेले से नये वर्ष के नये उमंग सुनते बापदादा की भी एक नई टॉपिक पर - [illegible] हुई।

ब्रह्मा बोले - मुक्ति का गेट कब खोलना है। जब तक मुक्ति का गेट ब्रह्मा नहीं खोलते तब तक [illegible] आत्मायें भी मुक्ति में जा नहीं सकती। ब्रह्मा बोले अब चाबी लगावें?

बाप बोले- उद्घाटन अकेला करना है या बच्चों के साथ। ब्रह्मा बोले- सौतेले और मातेले बच्चों के दुख के आलाप, तड़पने के आलाप सुनते2 अब रहम आता है। बाप बोले- बच्चों में से सर्व श्रेष्ठ विजयी रत्न जो साथ अभिन्न2 सम्बन्ध और स्वरूप से ब्रह्मा की आत्मा के साथी बनने वाले हैं ऐसे साथी विजयी रत्नों की माला तैयार है। जिन्हों का आदि से यही संकल्प है कि साथ जियेंगे, साथ मरेंगे- किसी भी भिन्न रूप या सम्बन्ध में साथ रहेंगे- उन्हों से किये हुए वायदे के प्रमाण साथियों के बिना चाबी कैसे लगायेंगे।

तो नये वर्ष का नया संकल्प ब्रह्मा का सुना। बाप के इस संकल्प को प्रैक्टिकल में लाने वाले [illegible] ग्रुप अब क्या करेंगे। श्रेष्ठ विजयी रत्न ही बाप के इस संकल्प को पूरा करने वाले हैं- इसलिए [illegible] से मास्टर आलमाइटी अथार्टी के स्वरूप से सेकेण्ड में मुक्त करने की मशीनरी तीव्र [illegible] आत्मायें प्रकृति के अल्पकाल के साधनों से, वा आत्मिक शान्ति प्राप्त करने के [illegible] [illegible] है अर्थात् परमात्म मिलन मनाने के ठेकेदारों से अब थक गये हैं, निराश हो गये हैं- [illegible] और हैं- सत्यता की मंजिल की खोज में हैं- प्राप्ती के प्यासे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं का [illegible], परमात्म परिचय की यथार्थ बूंद भी तृप्त आत्मा बना देगी- इसलिए ज्ञान कलश धारण कर प्यासी [illegible] कलश सदा साथ रहे। चलते फिरते सदा अमृत द्वारा अमर बनाते चलो। तब ही [illegible] बाप के साथ2 मुक्ति के गेट का उद्घाटन कर सकेंगे। अभी तो भवनों का उद्घाटन कर रहे हो- [illegible] गेट का उद्घाटन करना है। उसके लिए सदा अमर बनो और अमर बनाओ- अमर भव के [illegible] [illegible] आत्माओं को [illegible] कमजोर आत्मायें हैं, ऐसा [illegible]

का मालिक है। सो तो हम भी मालिक हैं। ब्रह्म तत्व बाप का घर सो हम बच्चों का घर है। ब्रह्माण्ड है बाप का घर। जहाँ आत्मायें अण्डे मिसल दिखाते हैं। ऐसे कोई है नहीं। हम आत्मायें ज्योतिर्बिन्दु वहाँ निवास करती हैं। ब्रह्माण्ड से हम नीचे उतरते हैं पार्ट बजाने के लिए। एक दो के पिछाड़ी आते रहते हैं। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। बाबा है बीजरूप। फाउन्डेशन देवी देवताओं का कहें या ब्राह्मणों का कहें। ब्राह्मण बीज डालते हैं। ब्राह्मण ही फिर देवता बन राज्य करते हैं। अब हमारे दादा शिवबाबा फाउन्डेशन लगा रहे हैं। डिटीज्म अर्थात स्वर्ग का फाउन्डेशन लग रहा है। जितना जो मददगार बनेंगे उतना वह अपना हिस्सा लेंगे। नहीं तो सूर्यवंशी कैसे बनें। अभी तुम वह ऊँच प्रालब्ध बना रहे हो। हर एक मनुष्य पुरूषार्थ से प्रालब्ध बनाते रहते हैं। प्रालब्ध बनाने लिए अच्छा काम किया जाता है। दान पुण्य करना, धर्मशाला आदि बनाना। अब ईश्वर अर्थ ही करते हैं। क्योंकि उनका फल देने वाला वह है। तुम अब श्रीमत पर पुरूषार्थ कर रहे हो। बाकी सारी दुनिया मनुष्य मत पर पुरूषार्थ कर रही है। सो भी आसुरी मत है। ईश्वरीय मत के बाद है दैवी मत। फिर हो जाती है आसुरी मत। अब तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिलती है। बाबा मम्मा भी उनकी मत से श्रेष्ठ बनते हैं। कोई मनुष्य देवताओं जैसे श्रेष्ठ हो ही नहीं सकता। देवताओं को भी श्रेष्ठ बनाने वाला कौन? यहाँ तो कोई श्रेष्ठ है नहीं। श्री श्री जगतपिता, जगत शिक्षक, जगत गुरू उस एक को ही कहा जाता है। श्री श्री सिर्फ एक को कहेंगे। वही सबसे ऊँच ते ऊँच है ना। वही फिर श्री लक्ष्मी नारायण बनाते हैं। भल राम को भी कहते हैं श्री सीता श्री राम परन्तु उनके पिछाड़ी एड हो जाता है क्षत्रिय चन्द्रवंशी। वह लक्ष्मी नारायण 16 कला सम्पूर्ण सूर्यवंशी वह है दैवी कुल। राम सीता 14 कला चन्द्रवंशी। दो कला कम हुई ना। सो तो होना ही है जरूर। मनुष्य यह नहीं जानते कि सृष्टि की गिरती कला होती है। 16 कला से 14 कला हुई तो डिग्रेड हुई ना। इस समय तो बिल्कुल डिग्रेट है। यह है रावण सम्प्रदाय। रावण राज्य है ना। रावण मत को कहा जाता है आसुरी मत। सब पतित हैं। पावन कोई इस पतित दुनिया में हो नहीं सकता। भारतवासी जो पावन थे वही फिर पतित बने हैं फिर उन्हों को ही मैं आकर पावन बनाता हूँ। पतित पावन कृष्ण नहीं गाया जाता। न चरित्र की बात है। पतित पावन एक परमात्मा को ही कहेंगे। पिछाड़ी में सब कहेंगे अहो प्रभू आपकी गत मत न्यारी। आपकी रचना को कोई नहीं जानते। सो तो अब तुम जान गये हो। यह ज्ञान है बिल्कुल नया। नई चीज़ जब निकलती है तो पहले थोड़ी होती है फिर बढ़ती जाती है। तुम भी पहले एक कोने में पड़े थे। अब देश देशान्तर वृद्धि को पाते रहेंगे। राजधानी स्थापन जरूर होनी है। मुख्य बात तो यह सिद्ध करनी है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है। वर्सा बाप देंगे। कृष्ण नहीं। लक्ष्मी नारायण भी अपने बच्चों को वर्सा देंगे। वह भी यहाँ के पुरूषार्थ की प्रालब्ध मिलती है। भारत में सतयुग त्रेता में बेहद का वर्सा है। गोल्डन सिल्वर जुबली मनाते हैं। यहाँ तो एक टिन मनाते हैं। हम तो 1250 वर्ष गोल्डन जुबली मनाते हैं। खुशियां मनाते हैं ना। मालामाल बन जाते हैं। तो यह अन्दर में बड़ी खुशी रहती है। ऐसे नहीं कि सिर्फ बाहर से बत्तियां आदि जलाते हैं। स्वर्ग में हम बिल्कुल सम्पत्तिवान, बहुतसुखी हो जाते हैं। देवता धर्म जैसा सुखी और कोई होता नहीं। फिर सिल्वर जुबली आदि को भी पूरा समझते नहीं हैं। अभी तुम आधा कल्प की जुबली मनाने लिए बाप से वर्सा पा रहे हो। तो मुख्य बात यह समझने की है कि गीता का भगवान शिव है। उसने ही राजयोग सिखलाया था। सो फिर से अब सिखला रहे हैं। सिखलाते भी तब हैं जब राजाई है नहीं। प्रजा का प्रजा पर राज्य था। एक दो की टोपी उतारने में देरी नहीं करते हैं। तुम बच्चे उनकी मत पर चलने से सुखधाम के मालिक बनेंगे। ऐसे बहुत हैं जो ज्ञान को पूरा धारण नहीं करते। परन्तु सेन्टर पर आते रहते हैं। अन्दर दिल बिल्ल2करती कि एक बच्चा पैदा कर दें। तो माया की टैम्पटेशन होती है कि शादी कर एक बच्चे का सुख ले लेवें। अरे गैरन्टी थोड़ेही है कि बच्चा सुख ही देगा। 2-4 वर्ष में बच्चा मर जाये तो और ही दुखी हो पड़ेगा। आज शादमाना करते हैं कल चिता पर चढ़ते तो रोना पीटना पड़ता है। यह है ही दुखधाम। देखो खाना भी कैसे खाते हैं। राक्षसों जैसा भोजन खाते हैं तो असुर ठहरे ना। तो बाप समझाते हैं कि बच्चे- ऐसी आशायें नहीं रखो। माया बड़ा तूफान में ले आयेगी। झट विकार में गिरा देगी। फिर आने में भी लज्जा आयेगी। सब कहेंगे कुल को कलंकित किया है तो वर्सा क्या लेंगे।

28-6-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप स्वर्ग का फाउन्डेशन लगा रहे हैं, तुम बच्चे मददगार बन अपना हिस्सा जमा कर लो, ईश्वरीय मत पर चल श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाओ"

प्रश्न:- बापदादा को किन बच्चों की सदा तलाश रहती है?

उत्तर:- जो बहुत-बहुत मीठे शीतल स्वभाव वाले सर्विसएबुल बच्चे हैं। ऐसे बच्चों की बाप को तलाश रहती है। सर्विसएबुल बच्चे ही बाप का नाम बाला करेंगे। जितना बाप का मददगार बनते हैं, आज्ञाकारी, वफादार हैं, उतना वह वर्से के हकदार बनते हैं।

गीत:- ओम् नमो शिवाए...

ओम् शान्ति। ओम् का अर्थ किसने बताया? बाप ने। जब बाबा कहा जाता है तो उसका नाम जरूर चाहिए। साकार हो वा निराकार हो, नाम जरूर चाहिए। और जो आत्मायें हैं उन पर कभी नाम नहीं पड़ता। आत्मा जब जीव आत्मा बनती है तब शरीर पर नाम पड़ता है। ब्रह्मा देवताए नम: कहते, विष्णु को भी देवता कहते क्योंकि आकारी हैं तो आकारी शरीर का नाम पड़ा। नाम हमेशा शरीर पर पड़ता है। सिर्फ एक निराकार परमपिता परमात्मा है, जिसका नाम शिव है। एक ही इस आत्मा का नाम है, बाकी सबका देह पर नाम पड़ता है। शरीर छोड़ा तो फिर नाम बदल जायेगा। परमात्मा का एक ही नाम चलता है, कभी बदलता नहीं। इससे सिद्ध होता है कि वह कभी जन्म-मरण में नहीं आता है। अगर खुद जन्म-मरण में आवे तो औरों को जन्म-मरण से छुड़ा न सके। अमरलोक में कभी जन्म-मरण नहीं कहा जाता। वहाँ तो बड़ी सहज रीति से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। मरना यहाँ है। सतयुग में ऐसे नहीं कहते कि फलाना मर गया। मरना शब्द दु:ख का है। वहाँ तो पुराना शरीर छोड़ दूसरा किशोर अवस्था का शरीर ले लेते हैं। खुशी मनाते हैं। पुरानी दुनिया में कितने मनुष्य हैं, यह सब खत्म होने वाले हैं। दिखाते हैं यादव और कौरव थे, लड़ाई में वह खत्म हो गये तो क्या पाण्डवों को रंज हुआ होगा? नहीं। पाण्डवों का तो राज्य स्थापन हुआ। इस समय तुम हो ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण, ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। ब्रह्मा को इतने बच्चे हैं तो जरूर प्रजापिता ठहरा। ब्रह्मा विष्णु शंकर का बाप है शिव। उनको ही भगवान कहा जाता है। इस समय तुम जानते हो कि हम ईश्वरीय कुल के हैं। हम बाबा के साथ, बाबा के घर निर्वाणधाम में जाने वाले हैं। बाबा आया हुआ है, उनको साजन भी कहा जाता है। परन्तु एक्यूरेट सम्बन्ध में वह बाप है क्योंकि वर्सा सजनियों को नहीं मिलता है। वर्सा बच्चे लेते हैं तो बाप कहना राइट है। बाप को भूल जाने से ही मनुष्य नास्तिक बने हैं। कृष्ण के चरित्र गाये जाते हैं। परन्तु कृष्ण का चरित्र तो कोई है नहीं। भागवत में कृष्ण के चरित्र हैं लेकिन चरित्र होना चाहिए – शिवबाबा का। वह भी बाप, टीचर, सतगुरू है, इसमें चरित्र की क्या बात है। कृष्ण के भी चरित्र नहीं हैं। वह भी बच्चा है। जैसे छोटे बच्चे होते हैं। बच्चे हमेशा चंचल होते हैं, तो

* । 14.6.92 (पु-1) से कटिंग किया है → (32)

सभी को प्यारे लगते हैं। कृष्ण के लिए जो दिखाते हैं कि मटकी फोड़ी, ऐसा तो कुछ भी है नहीं। शिवबाबा का क्या चरित्र है? वह तो तुम देखते हो कि पढ़ाकर पतित से पावन बनाते हैं। कहते हैं भक्ति मार्ग में मैं तुम्हारी भावना पूरी करता हूँ। बाकी यहाँ तो मैं पढ़ाता हूँ। इस समय जो मेरे बच्चे हैं, वही मुझे याद करते हैं। और सबकी याद को भूल एक बाप की याद में रहने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूँ। मुझे जो याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ। सो भी याद तो बच्चों को ही करेंगे। मुख्य बात तो एक है। बहादुर तो किसी को तब कहेंगे जब कोई बड़े आदमी को समझाकर दिखाओ। सारा मदार है गीता पर। गीता निराकार परमपिता परमात्मा की गाई हुई है, न कि मनुष्यों की। भगवान को रूद्र भी कहा जाता है। कृष्ण को रूद्र नहीं कहेंगे। रूद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है।

कट कई लोग परमात्मा को मालिक कहकर याद करते हैं। कहते हैं उस मालिक का नाम नहीं है। अच्छा भला वह मालिक कहाँ है? क्या वह विश्व का, सारी सृष्टि का मालिक है? परमपिता परमात्मा तो सृष्टि का मालिक नहीं बनता है, सृष्टि का मालिक तो देवी-देवता बनते हैं। परमपिता परमात्मा तो ब्रह्माण्ड का मालिक है। ब्रह्म तत्व बाप का घर तो हम बच्चों का भी घर है। ब्रह्माण्ड है बाप का घर, जहाँ आत्मायें अण्डे मिसल दिखाते हैं। ऐसे कोई हैं नहीं। हम आत्मायें ज्योतिर्बिन्दु वहाँ निवास करती हैं। ब्रह्माण्ड से हम नीचे उतरते हैं पार्ट बजाने के लिए, हम एक-दो के पिछाड़ी आते रहते हैं। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। बाबा है बीजरूप, फाउन्डेशन देवी-देवताओं का कहें वा ब्राह्मणों का कहें। ब्राह्मण बीज डालते हैं। ब्राह्मण ही फिर देवता बन राज्य करते हैं। अब हमारे द्वारा शिवबाबा फाउन्डेशन लगा रहे हैं। डिटीज्म अर्थात् स्वर्ग का फाउन्डेशन लग रहा है। जितना जो मददगार बनेंगे उतना वह अपना हिस्सा लेंगे। नहीं तो सूर्यवंशी कैसे बनें! अभी तुम वह ऊंच प्रालब्ध बना रहे हो। हर एक मनुष्य पुरुषार्थ से प्रालब्ध बनाते रहते हैं। प्रालब्ध बनाने लिए अच्छा काम किया जाता है। दान-पुण्य करना, धर्मशाला आदि बनाना। सब ईश्वर अर्थ ही करते हैं क्योंकि उनका फल देने वाला वह है। तुम अब श्रीमत पर पुरुषार्थ कर रहे हो। बाकी सारी दुनिया मनुष्य मत पर पुरुषार्थ कर रही है। सो भी आसुरी मत है। ईश्वरीय मत के बाद है दैवी मत, फिर हो जाती है आसुरी मत। अब तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिलती है। बाबा मम्मा भी उनकी मत से श्रेष्ठ बनते हैं। कोई मनुष्य देवताओं जैसे श्रेष्ठ हो ही नहीं सकते। देवताओं को श्रेष्ठ बनाने वाला कौन? यहाँ तो कोई श्रेष्ठ है नहीं। श्री श्री है ही एक वही सबसे ऊंच ते ऊंच बाप, टीचर, सतगुरू है। वही फिर श्री लक्ष्मी-नारायण बनाते हैं। भल राम को भी कहते हैं श्री सीता, श्री राम। परन्तु उनके पिछाड़ी एड हो जाता है क्षत्रिय, चन्द्रवंशी। वह लक्ष्मी-नारायण तो 16 कला सम्पूर्ण सूर्यवंशी देवता कुल हुआ और राम-सीता 14 कला चन्द्रवंशी। दो कला कम हुई है ना। सो तो होना ही है जरूर। मनुष्य यह नहीं जानते हैं कि सृष्टि की गिरती कला होती है। 16 कला से

कल्हेगा

ओरिजिनल मुरली

19-6-92 प्रात:क्लास ओम्शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-बाप स्वर्ग का फाउन्डेशन लगा रहे हैं, तुम बच्चे मददगार बन अपना हिस्सा जमा कर लो, ईश्वरीय मत पर चल श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाओ"

प्रश्न:-बापदादा को किन बच्चों की सदा तलाश रहती है? उत्तर:-जो बहुत2 मीठे शीतल स्वभाव वाले सर्विसएबुल बच्चे हैं। ऐसे बच्चों की बाप को तलाश रहती। सर्विसएबुल बच्चे ही बाप का नाम बाला करेंगे। जितना बाप का मददगार बनते हैं। आज्ञाकारी वफादार हैं, उतना वह वर्से के हकदार बनते हैं।

प्रश्न:-बाप के चरित्र क्या हैं? उत्तर:-पतितों को पावन, नर्क को स्वर्ग बनाना, यही बाप का चरित्र है। बाप देवता बनने की श्रेष्ठ मत देते हैं।

गीत:-ओम् नमो शिवाए...ओम्शान्ति। ओम का अर्थ किसने बताया? बाप ने। जब बाबा कहा जाता है तो उसका नाम जरूर चाहिए। साकार हो या निराकार हो नाम जरूर चाहिए और ... आत्मायें हैं उन पर कब नाम नहीं पड़ता। आत्मा जब जीव आत्मा बनती है तब शरीर पर नाम पड़ता है। ब्रह्मा देवताए नम: कहते, विष्णु को भी देवता कहते क्योंकि आकारी हैं। तो आकारी शरीर पर नाम पड़ा। नाम हमेशा शरीर पर पड़ता है। सिर्फ एक निराकार परमपिता परमात्मा है। जिसका नाम शिव है। बस एक ही इस आत्मा का नाम है। बाकी सबका देह पर नाम पड़ता है। शरीर छोड़ा तो फिर नाम बदल जायेगा। परमात्मा का एक ही नाम चलता है। वह बदलता नहीं। इससे सिद्ध होता है कि वह कब जन्म मरण में नहीं आता है। अगर खुद जन्म मरण में आवे तो औरों को जन्म मरण से छुड़ा न सके। अमरलोक में कब जन्म मरण नहीं कहा जाता। वहाँ तो बड़ी सहज रीति से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। मरना नाम वहाँ है। सतयुग में नहीं कहते कि फलाना मर गया। मरना शब्द दुख का नाम है। वहाँ तो पुराना शरीर छोड़ दूसरा किशोर अवस्था का शरीर ले लेते हैं। खुशी मनाते हैं। पुरानी दुनिया में कितने ... हैं। यह सब खत्म होने वाले हैं। यादव और कौरव थे। लड़ाई में वह खत्म हो गये तो क्या पाण्डवों को राज्य हुआ होगा? नहीं। पाण्डवों का तो राज्य स्थापन हुआ। इस समय तुम हो ... ब्राह्मण। ब्रह्माकुमार कुमारियां। ब्रह्मा को इतने बच्चे हैं तो जरूर प्रजापिता ठहरा। ... विष्णु शंकर का बाप है शिव। उनको ही रचता भगवान कहा जाता है। इस समय तुम ... कि हम ईश्वरीय कुल के हैं। हम बाबा के साथ, बाबा के घर निर्वाणधाम में जायेंगे। शिवबाबा आया हुआ है। उनको साजन भी कहा जाता है। परन्तु एक्यूरेट सम्बंध में वह ... है। क्योंकि वर्सा सजनियों को नहीं मिलता है। वर्सा बच्चे लेते हैं तो बाप कहना राइट ... बाप को भूल जाने से ही मनुष्य नास्तिक बने हैं। कृष्ण चरित्र गाये जाते हैं। परन्तु कृष्ण का चरित्र तो कोई है नहीं। भागवत में कृष्ण के चरित्र हैं लेकिन चरित्र होना चाहिए-शिवबाबा का। वह भी बाप टीचर सतगुरू है। इसमें चरित्र की क्या बात है। कृष्ण के भी चरित्र नहीं हैं। ... भी बच्चा है। जैसे छोटे बच्चे होते हैं। बच्चे हमेशा चंचल होते हैं। तो सभी को प्यारे लगते ... के लिए जो दिखाते हैं कि मटकी फोड़ी तो कुछ भी है नहीं। शिवबाबा का क्या ... है। यह तो तुम देखते हो कि पढ़ाकर पतित से पावन बनाते हैं। कहते हैं भक्ति मार्ग में मैं ... भावना पूरी करता हूँ। बाकी यहाँ तो मैं पढ़ाता हूँ। इस समय जो मेरे बच्चे हैं-वही ... करते हैं और सबकी याद को भूल एक बाप की याद में रहने का प्रयत्न करते हैं। नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूँ। मुझे जो याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ। तो भी ... बच्चों को ही करेंगे। ... तो एक है। बहादुर तो तब किसको कहेंगे जब ... आदमी को तीर मार कर दिखाओ। सारा मदार है गीता पर। गीता निराकार ... परमात्मा की गाई हुई है न कि मनुष्यों की। भगवान को रूद्र भी कहा जाता है। ... नहीं कहेंगे। रूद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है। पाइंट्स पकड़नी है समझाने के लिए। उनको अनेक नाम से बुलाते हैं। फरूखाबाद में एक पंथ है-जो एक मालिक ... कहते हैं-उस मालिक का नाम नहीं है। अच्छा भला वह मालिक कहां का है? क्या ... का मालिक है? हम कहते कि परमपिता परमात्मा सृष्टि का मालिक नहीं ... का मालिक तो दैवी देवतायें बनते हैं। परमपिता परमात्मा तो ब्रह्माण्ड का

मना कर देते थे किसको सुनायेंगे तो गला घुट जायेगा। है यह ज्ञान की बात। अगर फारकती दे जाकर निंदा करते हैं तो गला घुट जाता है कहते हैं ना सतगुरु का निंदक ठौर न पाये। बाप कहते हैं सृष्टि जब पुरानी पतित हो जाते हैं तब मैं आता हूँ। मनुष्यों को तमोप्रधान बनना ही है जो कर्तव्य करेंगे सो उल्टा ही करेंगे। क्योंकि उल्टी मत मिल रही है। श्रीमत है नहीं, उल्टी मत से पतित भ्रष्टाचारी बन जाते हैं। आगे भ्रष्टाचारी अक्षर नहीं था। (साधु लोग भी गाते हैं पतित पावन सीताराम। वह यह नहीं समझते कि हम भी अपने को पतित कहते हैं। उनको भी समझाना है। देखो तुम गंगा पर जाते हो, वह गंगा तो चलती ही आई है। सतयुग त्रेता में भी थी। गंगा ओमनी प्रेजन्ट होते भी सब पतित क्यों। यह गंगा सतयुग में भी थी वहाँ सब पावन थे। अब पतित क्यों? नदियाँ तो जहाँ तहाँ बहुत हैं तो क्या सब नदियाँ पतित पावनी हैं? यह कैसे हो सकता? संन्यासी विकारों का सन्यास करते हैं पावन बनने के लिए। बाप समझाते हैं बच्चे तुम मेरी बहुत ग्लानी करते हो, देवताओं की भी ग्लानी करते हो। पहली2 बात यह समझानी है कि परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है) अब भगवान का पार्ट करते हैं भगवान कहते हैं मुझे सब भक्त प्रिय हैं क्योंकि उन सबको मुझे ही गति सद्गति देनी है। वह समझते हैं भगवान आकर भक्तों को भक्ति का फल देते हैं। इसलिए भक्त भगवान को प्रिय हैं। बाबा समझाते हैं तुमने दुर्गति को पाया है। भक्ति के बाद भगवान को आना है जरूर। हैं सब मेरे बच्चे परन्तु अभी भक्ति मार्ग का पार्ट बजा रहे हैं। शुरू से भक्ति करने वाले हो तुम तो जरूर मुझे तुमको ही पहले भक्ति का फल देना पड़ता है। और तो शुरू से लेकर मेरे भक्त नहीं हैं। वह तो अनेकों की भक्ति करते हैं। तुम मेरे प्यारे बच्चे हो। तुम मालिक थे फिर माया रावण ने तुम पर जीत पा ली। और फिर भक्ति शुरू हो गई। यह भी ड्रामा है। मैं तो सबकी सद्गति करता हूँ। अब तुम मेरी मत पर चलते हो ना। मत देने लिए जरूर मुझे आना पड़ता है। नहीं तो कैसे सद्गति का रास्ता बताऊँ। मैं इस पहले नम्बर के भक्त के तन में आता हूँ। यह है नंदीगण। शिव के मन्दिर में सामने नंदीगण रखते हैं। अब विचार करो परमपिता परमात्मा बैल के तन में तो नहीं आयेगा। राजयोग बैल द्वारा कैसे सिखायेगा। ज्ञान सागर बैल में प्रवेश करेंगे क्या? अभी तुम ज्ञानवान बनते हो। (हम शिवबाबा की मत पर हम चलकर लक्ष्मी नारायण सूर्यवंशी राजा रानी बन रहे हैं। उस राजधानी को कोई हमसे छीन न सके। न कोई तूफान लग सकता। हम अमरपुरी के मालिक बनते हैं। यह अमरलोक है। अमरनाथ बाबा ही काल पर जीत पहनाने वाला है। उनका पार्ट अलग, शंकर को विनाश के निमित्त दिखाया है। तुम सब पार्वतियाँ हो। मैं अमरनाथ हूँ। हम कब जन्म मरण में नहीं आते। अमरपुरी स्वर्ग का मालिक तुमको बनाता हूँ) भारतवासियों को वैकुण्ठ बहुत प्यारा लगता है। कहते हैं फलाना वैकुण्ठवासी हुआ। बहुत मुख मीठा कर दिया। अब वैकुण्ठ सचमुच तो सतयुग में होगा। जब सतयुग है तो पुनर्जन्म भी सतयुग में लेते हैं। फिर त्रेता में आते हैं तो पुनर्जन्म भी त्रेता में लेते हैं। फिर द्वापर में आते हैं तो पुनर्जन्म भी द्वापर में लेते हैं। परन्तु ऐसे थोड़ेही हो सकता है जो कलियुग में मरेंगे वह पुनर्जन्म सतयुग में लेंगे। स्वर्ग में जन्म लेने का मदार है पढ़ाई पर। अनेक बार इस सृष्टि चक्र में हमने पार्ट बजाया है। (फर्रुखाबाद में बच्चियाँ तो हैं- वहाँ जो मालिक को मानने वाले हैं उनको समझाना है। तुम कहते हो वह मालिक है, बाप कहते बच्चे तुम मालिक हो) मैं तुमको सृष्टि का भी मालिक बनाता हूँ। मैं तो निष्कामी हूँ। हम विश्व का मालिक नहीं बनते। तुम स्वर्ग में जाते हो तो मैं निर्वाणी हो जाता हूँ।) मैं जन्म मरण के चक्कर में नहीं आता हूँ। इस ईश्वरीय जन्म के बाद तुम दैवी गोद में जन्म लेंगे। अब तुम जन्म जन्मान्तर आसुरी गोद में जन्म लेते हो। भ्रष्टाचारी बन पड़े हो। सतयुग में सब श्रेष्ठाचारी होते हैं। अब तुम श्रीमत से श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। वहाँ विष होता नहीं। यहाँ भल सन्यासी हैं परन्तु जन्म तो विकार से ही लेते हैं। सतयुग में विकार से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को सम्पूर्ण निर्विकारी कह नहीं सकते। वहाँ माया होती नहीं। परन्तु यह बातें भी जब फिर बुद्धि में बैठे। अब बाबा कहते हैं बच्चो तुमको आगे जाना है। फिर स्वर्ग में आकर राज्य करना। आत्मायें परमधाम से आती हैं पार्ट बजाने। फिर जब तक पतित पावन आकर लिबरेट करे, तब तक एक भी जा नहीं सकते। गपोड़ा मारते फलाना पार निर्वाण गया, बाप आकर

...बनाते है। रावण आदि यह सब नाम तो है ना। दशहरा मनाते है तो किती ...को बुलाते है। परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। देवताओं की कितनी निंदा करते है। ऐसा ...जो बिल्कुल है नहीं। जैसे कहते है ईश्वर नाम रूप से न्यारा है। अर्थात् नहीं है। वैसे यह जो कुछ ...आदि बनाते है वह कुछ भी है नहीं। यह सब है मनुष्यों की बुद्धि। मनुष्य मत को आसुरी मत कहा जाता है। यथा राजा रानी तथा प्रजा सब ऐसे बन जाते है। उनको कहा ही जाता है डेविल वर्ल्ड। सब एक दो को गाली देते रहते है। तो बाप समझाते है-बच्चे जब बैठते हो तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अज्ञान में थे तो परमात्मा को ऊपर में समझते थे। अभी तो जानते हो बाप यहाँ आया हुआ है तो तुम ऊपर में नहीं समझते हो। तुमने बाप को यहाँ बुलाया है, इस तन में। तुम जब अपने2सेन्टर्स पर बैठते हो तो समझेंगे शिवबाबा मधुबन में इनके तन में है। भक्तिमार्ग में तो परमात्मा को ऊपर मानते थे। हे भगवान अभी तुम बाप को कहाँ याद करते हो? क्या बैठकर करते हो? तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो जरूर यहाँ याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहाँ आया हुआ है। पुरूषोत्तम संगमयुग पर। बाप कहते है-तुमको इतना ऊँच बनाने मैं यहाँ आया हूँ। तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे। भक्त लोग ऊपर में याद करेंगे। तुम भल विलायत में होंगे तो भी कहेंगे ब्रह्मा के तन में शिवबाबा है। तन तो जरूर चाहिए ना। कहाँ भी तुम बैठे होंगे तो जरूर यहाँ याद करेंगे। ब्रह्मा के तन में ही याद करना पड़े। कई बुद्धिहीन ब्रह्मा को मानते ही नहीं है। बाबा ऐसे नहीं कहते ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा। बाप कहते है-मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो। इसलिए तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है, इनकी अपनी आत्मा है। वह अपनेसिर है। उनको तो अपना शरीर नहीं है। बाप ने कहा है मैं इस प्रकृति का आधार लेता हूँ। बाप बैठ सारे ब्रह्माण्ड और सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज समझाते है। और कोई ब्रह्माण्ड को जानते ही नहीं। ब्रह्म, जिसमें हम और तुम रहते है। सुप्रीम बाप, ...सुप्रीम आत्मायें रहने वाली उस ब्रह्मलोक शान्ति धाम को है। शान्तिधाम बहुत मीठा नाम है। यह सब बाते तुम्हारी बुद्धि में है। हम अशुम के रहवासी ब्रह्म महतत्व के है। जिसको निर्वाणधाम वानप्रस्थ कहा जाता है। यह बाते अभी तुम्हारी बुद्धि में है। जब भक्ति है तो ज्ञान का अक्षर नहीं। उनको कहा जाता है पुरूषोत्तम संगमयुग। जबकि चेन्ज होती है। पुरानी दुनिया में असुर रहते है। नई दुनिया में देवतायें रहते है। उनको चेन्ज करने के लिए बाप को आना पड़ता है। सतयुग में तुमको कुछ भी पता नहीं रहेगा। अभी तुम कलियुग में हो तो भी कुछ पता नहीं है। जब नई दुनिया में होंगे तो भी इस पुरानी दुनिया का कुछ पता नहीं होगा। अभी पुरानी दुनिया में हो तो नई का मालूम नहीं है। नई दुनिया के थे। पता नहीं वह तो लाखों वर्ष दे देते है। तुम बच्चे जानते हो बाप इस संगमयुग पर ही कल्प2आते है। आकर इस वैराइटी झाड का राज समझाते है। और यह चक्र कैसे फिरता है वह भी तुम बच्चों को समझाते है। तुम्हारा धन्धा ही है यह समझाने का। सब एक2को समझाने से तो बहुत टाइम लग जाए। इसलिए अभी तुम बहुतों को समझाते हो बहुत समझते है यह मीठी2बाते है फिर बहुतों को समझानी है। तुम प्रदर्शनी आदि में भी समझाते हो ना। अब शिव जयन्ती पर और भी अच्छी रीति बहुतों को बुलाकर समझाना है। ...की ड्युरेशन कितनी है। तुम तो एक्युरेट बतायेंगे। यह टापिक्स हुई। हम यह यह समझायेंगे। तुमको बाप समझाते है ना। जिससे तुम देवता बन जाते हो। जैसे तुम समझकर देवता बनते हो। वैसे औरों को भी बनाते है। बाप ने हमको यह समझाया है। हम किसकी ग्लानी आदि नहीं ...है। हम बतलाते है भक्ति को दुर्गति मार्ग, ज्ञान को सद्गति मार्ग कहा जाता है। ... ...है पार करने वाला। ऐसी2मुख्य पाइंटस निकालकर समझाओ। यह सारा ज्ञान बाप के सिवाए कोई दे नहीं सकता। अच्छा- मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

शिवबाबा कहते हैं मैं सूक्ष्मवतनवासी सम्पूर्ण ब्रह्मा तन में नहीं आता हूँ

(३३)

3.11.87 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

मीठे बच्चे- तुम्हें मनुष्य से देवता बनना है इसलिए दैवी फज़ीलत। दैवी-मैनर्स। धारण करो, आसुरी अवगुणों को छोड़ते जाओ, पावन बनो।

प्रश्न:- दैवी गुण धारण करने वालों की परख किस एक बात से हो सकती है?

उत्तर:- सर्विस से। कहाँ तक पतित से पावन बने हैं और कितनों को पावन बनाने की सेवा करते हैं। अच्छे पुरुषार्थी हैं या अभी तक आसुरी अवगुण है- यह सब सर्विस से पता चलता है। तुम्हारा यह ईश्वरीय मिशन है ही दैवी फज़ीलत सिखलाने का। तुम श्रीमत पर पतित मनुष्य को पावन बनाने की सेवा करते हो।

गीत:- आज अंधेरे में है इन्सान... ओमशान्ति। भक्तिमार्ग में महिमा करते हैं शिवाए नमः। ऊँच ते ऊँच है शिव। उनको ही शिव परमात्माए नमः कहा जाता है। ब्रह्मा देवताए नमः, विष्णु देवताए नमः कहा जाता है और शिव परमात्माए नमः फर्क हुआ ना। परमात्मा एक है। ऊँच ते ऊँच है। उनकी महिमा भी ऊँच है। इस समय ऊँच ते ऊँच कर्तव्य करते हैं। उनका धाम भी ऊँचे ते ऊँचा है। नाम भी ऊँचा है और किसको परमात्मा नहीं कहते। परमात्मा के लिए ही गायन है हे पतित पावन आओ। आते भी हैं पतित दुनिया और पतित शरीर में। पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले साधारण मनुष्य में प्रवेश करता हूँ। सूक्ष्मवतन वासी सम्पूर्ण ब्रह्मा में नहीं आते हैं। खुद कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ। बहुत जन्म लेते ही हैं राधे कृष्ण उनके बहुत जन्मों के अन्त का जन्म साधारण पतित है। ऐसे तो कहते नहीं हैं कि मैं पावन शरीर में प्रवेश करता हूँ। भगवानुवाच मैं साधारण तन में आता हूँ। अब भगवान अक्षर आत्मा ही है जो आत्माओं को इस साधारण तन द्वारा बैठ समझाते हैं कि मैं परमपिता परमात्मा हूँ। मैं कृष्ण की आत्मा नहीं हूँ, न ब्र0वि0शं0 की आत्मा हूँ। मैं परमपिता परमात्मा हूँ जिसको शिव परमात्माए नमः कहा जाता है। मैं इसमें आया हूँ। मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा द्वारा प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहाँ पतितों को पावन बनाना है। मेरे द्वारा ही यह सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा पावन बना है इसलिए इनको सूक्ष्म में दिखाया है। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। परन्तु मनुष्य सुनी अनसुनी, उल्टी बातों पर चलते रहते हैं। यह सब है आसुरी बुद्धि। सुनते भी आसुरी बुद्धि से हैं। ईश्वर बुद्धि से सुनें तो संशय सब मिट जाए। त्रिमूर्ति चित्र दिखाने बिगर समझाना मुश्किल है। उन्हों ने त्रिमूर्ति ब्रह्मा नाम रख दिया है क्योंकि शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की रचना रचते हैं। तुम बच्चे अभी सन्मुख बैठे हो। सब पतित से पावन बन रहे हैं। जितना जो बनेगा वह सर्विस से दिखाई पड़ेगा। यह अच्छा पुरुषार्थी है, इनमें अजुन आसुरी अवगुण हैं। देवताओं में दैवी थे। हरेक अपने दैवी गुण और उन्हों के दैवीगुण वर्णन करते हैं। अभी आसुरी अवगुणों को छोड़ना है। नहीं तो ऊँच पद नहीं पा सकेंगे। बाप समझाते रहते हैं बच्चे दैवीगुण धारण करो। खान-पान, चलन में फज़ीलत चाहिए। पतित मनुष्यों को बदफज़ीलत कहेंगे। देवतायें फज़ीलत वाले हैं तब तो उन्हों का गायन है। हर एक को पुरुषार्थ करना है, जो करेगा सो पायेगा। अब भगवान तुमको सहज राजयोग और ज्ञान सिखला रहे हैं। बाकी इन शास्त्रों आदि से कोई सद्गति को पाते नहीं। जब सबकी दुर्गति होती है तब बाप आकर सद्गति में ले जाते हैं। तुम कितना समझाते हो कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है परन्तु समझते नहीं हैं। परमपिता परमात्मा भक्तों का रक्षक है। भक्ति करते करते कोई भी नहीं निकलता है। कहते हैं व्यास की गीता में लिखा हुआ है- बाप कहते हैं इन्होंने जो कुछ लिखा है वह है भक्ति मार्ग के लिए। भक्ति के बाद भगवान को आना है। अब भक्ति नहीं बंद करनी है। वेद शास्त्र आदि कब रचे जाते हैं। व्यास कब आया, कब लिखा किसको पता नहीं है। समझते हैं यह सब परम्परा से चले आये हैं। व्यास को वाचक कहा जाता है जो मुरली चलाते हैं। ज्ञान सागर एक बाप है। सुखदेव भी बाप है तो यहाँ की यह बातें ध्यान में हैं। जो ब्राह्मण बनने वाले होंगे उन्हों की बुद्धि में ही यह ज्ञान बैठेगा। बहुत कहते मुझे यह बताओ कि ब्रह्मा क्यों बनाया है? बोलो इन बातों को बैठकर समझो। हम तुमको सब अव्यक्त की कहानी सुनायें। यह साकार में जो है वह है पतित। ज्ञान से यह पवित्र बन

19-2-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप जो है, जैसा है, उसे यथार्थ रीति जानकर याद करना, यही मुख्य बात है, मनुष्यों को यह बात बहुत युक्ति से समझानी है"

प्रश्न:- सारे युनिवर्स के लिए कौन-सी पढ़ाई है जो यहाँ ही तुम पढ़ते हो?

उत्तर:- सारे युनिवर्स के लिए यही पढ़ाई है कि तुम सब आत्मा हो। आत्मा समझकर बाप को याद करो तो पावन बन जायेंगे। सारे युनिवर्स का जो बाप है वह एक ही बार आते हैं सबको पावन बनाने। वही रचता और रचना की नॉलेज देते हैं इसलिए वास्तव में यह एक ही युनिवर्सिटी है, यह बात बच्चों को स्पष्ट कर समझानी है।

ओम् शान्ति। भगवानुवाच – अब यह तो रूहानी बच्चे समझते हैं कि भगवान् कौन है। भारत में कोई भी यथार्थ रीति जानते नहीं। कहते भी हैं–मैं जो हूँ, जैसा हूँ मुझे यथार्थ रीति कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हैं। भल यहाँ रहते हैं परन्तु यथार्थ रीति से नहीं जानते। यथार्थ रीति जानकर और बाप को याद करना, यह बड़ी मुश्किलात है। भल बच्चे कहते हैं कि बहुत सहज है परन्तु मैं जो हूँ, मुझे निरन्तर बाप को याद करना है, बुद्धि में यह युक्ति रहती है। मैं आत्मा बहुत छोटा हूँ। हमारा बाबा भी बिन्दी छोटा है। आधाकल्प तो भगवान का कोई नाम भी नहीं लेते हैं। दु:ख में ही याद करते हैं–हे भगवान। अब भगवान कौन है, यह तो कोई मनुष्य समझते नहीं। अब मनुष्यों को कैसे समझायें–इस पर विचार सागर मंथन चलना चाहिए। नाम भी लिखा हुआ है–प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। इससे भी समझते नहीं हैं कि यह रूहानी बेहद के बाप का ईश्वरीय विश्व विद्यालय है। अब क्या नाम रखें जो मनुष्य झट समझ जाएं? कैसे मनुष्यों को समझायें कि यह युनिवर्सिटी है? युनिवर्स से युनिवर्सिटी अक्षर निकला है। युनिवर्स अर्थात् सारा वर्ल्ड, उसका नाम रखा है–युनिवर्सिटी, जिसमें सब मनुष्य पढ़ सकते हैं। युनिवर्स के पढ़ने लिए युनिवर्सिटी है। अब वास्तव में युनिवर्स के लिए तो एक ही बाप आते हैं, उनकी यह एक ही युनिवर्सिटी है। एम ऑब्जेक्ट भी एक है। बाप ही आकर सारे युनिवर्स को पावन बनाते हैं, योग सिखाते हैं। यह तो सब धर्म वालों के लिए है। कहते हैं अपने को आत्मा समझो, सारे युनिवर्स का बाप है–इनकारपोरियल गॉड फादर, तो क्यों न इसका नाम स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी ऑफ स्प्रीचुअल इनकारोपरियल गॉड फादर रखें। ख्याल किया जाता है ना। मनुष्य ऐसे हैं जो सारे वर्ल्ड में बाप को एक भी नहीं जानते हैं। रचता को जानें तो रचना को भी जानें। रचता द्वारा ही रचना को जाना जा सकता है। बाप बच्चों को सब कुछ समझा देंगे। और कोई भी जानते नहीं। ऋषि-मुनि भी नेती-नेती करते गये। तो बाप कहते हैं तुमको पहले यह रचता और रचना की नॉलेज नहीं थी। अभी रचता ने समझाया है। बाप कहते हैं मुझे सब पुकारते भी हैं कि आकर हमको सुख-शान्ति दो क्योंकि अभी दु:ख-अशान्ति है। उनका नाम ही है दु:ख हर्ता सुख कर्ता। कौन है? भगवान्। वह कैसे दु:ख हर कर सुख देते हैं, यह कोई नहीं जानते हैं। तो ऐसा क्लीयर कर लिखें जो मनुष्य समझें निराकार गॉड फादर ही यह नॉलेज देते हैं। ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करना चाहिए। बाप समझाते हैं मनुष्य सभी हैं पत्थरबुद्धि। अभी तुमको पारसबुद्धि बना रहे हैं। वास्तव में पारसबुद्धि उन्हें कहेंगे जो कम से कम 50 से

अधिक मार्क्स लें। फेल होने वाले पारसबुद्धि नहीं। राम ने भी कम मार्क्स लिए तब तो क्षत्रिय दिखाया है। यह भी कोई समझते नहीं हैं कि राम को बाण क्यों दिखाये हैं? श्रीकृष्ण को स्वदर्शन चक्र दिखाया है कि उसने सबको मारा और राम को बाण दिखाये हैं। एक खास मैगजीन निकलती है, जिसमें दिखाया है—कृष्ण कैसे स्वदर्शन चक्र से अकासुर-बकासुर आदि को मारते हैं। दोनों को हिंसक बना दिया है और फिर डबल हिंसक बना दिया है। कहते हैं उन्हों को भी बच्चे पैदा हुए ना। अरे, वह हैं ही निर्विकारी देवी-देवता। वहाँ रावण राज्य है ही नहीं। इस समय रावण सम्प्रदाय कहा जाता है।

अभी तुम समझाते हो हम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हैं तो क्या योगबल से बच्चे नहीं हो सकते। वह है ही निर्विकारी दुनिया। अभी तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो। ऐसा अच्छी रीति समझाना है जो मनुष्य समझें इनके पास पूरा ज्ञान है। थोड़ा भी इस बात को समझेंगे तो समझा जायेगा यह ब्राह्मण कुल का है। कोई के लिए तो झट समझ जायेंगे -(यह ब्राह्मण कुल का है नहीं। आते तो अनेक प्रकार के हैं ना। तो तुम स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी ऑफ स्प्रीचुअल इनकारपोरियल गॉड फादर लिखकर देखो, क्या होता है? विचार सागर मंथन कर अक्षर मिलाने होते हैं, इसमें (c) बड़ी युक्ति चाहिए लिखने की।) जो मनुष्य समझें यहाँ यह नालेज गॉड फादर समझाते हैं अथवा राजयोग सिखलाते हैं। यह अक्षर भी कॉमन है। जीवनमुक्ति डीटी सावरन्टी इन सेकण्ड। ऐसे-ऐसे अक्षर हों जो मनुष्यों की बुद्धि में बैठें। ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना होती है। मन्मनाभव का अर्थ है—बाप और वर्से को याद करो। तुम हो ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी। अब वह तो स्वदर्शन चक्र विष्णु को दिखाते हैं। कृष्ण को भी 4 भुजायें दिखाते हैं। अब उनको 4 भुजायें हो कैसे सकती? बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चों को बड़ा विशाल बुद्धि, पारसबुद्धि बनना है। सतयुग में यथा राजा-रानी तथा प्रजा पारसबुद्धि कहेंगे ना। वह है पारस दुनिया, यह है पत्थरों की दुनिया। तुमको यह नॉलेज मिलती है—मनुष्य से देवता बनने की। तुम अपना राज्य श्रीमत पर फिर से स्थापन कर रहे हो। बाबा हमको युक्ति बतलाते हैं कि राजा-महाराजा कैसे बन सकते हो? तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान भर जाता है औरों को समझाने के लिए। गोले पर समझाना भी बड़ा सहज है। इस समय जनसंख्या देखो कितनी है! सतयुग में कितने थोड़े होते हैं। संगम तो है ना। ब्राह्मण तो थोड़े होंगे ना। ब्राह्मणों का युग ही छोटा है। ब्राह्मणों के बाद हैं देवतायें, फिर वृद्धि को पाते हैं। बाजोली होती है ना। तो सीढ़ी के चित्र के साथ विराट रूप भी होगा। तो समझाने में क्लीयर होगा। जो तुम्हारे कुल के होंगे उनकी बुद्धि में रचता और (c) रचना की नॉलेज सहज ही बैठ जायेगी। उनकी शक्ल से भी मालूम पड़ जाता है कि यह हमारे कुल का है या नहीं? अगर नहीं होगा तो तवाई की तरह सुनेगा। जो समझू होगा वह ध्यान से सुनेगा। एक बार किसको पूरा तीर लगा तो फिर आते रहेंगे। कोई प्रश्न पूछेंगे और कोई अच्छा फूल होगा तो रोज़ आपेही आकर पूरा समझकर चला जायेगा। चित्रों से तो कोई भी समझ सकते हैं। यह तो बरोबर देवी-देवता धर्म की स्थापना बाप कर रहे हैं। कोई न पूछते भी आपेही समझते रहेंगे। कोई तो बहुत पूछते रहेंगे, समझेंगे कुछ भी नहीं। फिर समझाना होता है, हंगामा तो करना नहीं है। फिर कहेंगे ईश्वर तुम्हारी रक्षा भी नहीं करते हैं! अब वह रक्षा क्या करते हैं सो तो तुम जानते हो। कर्मों का हिसाब-किताब तो हर एक को अपना चुक्तू करना है। ऐसे बहुत हैं, तन्दुरूस्ती (d) खराब होती है तो कहते हैं रक्षा करो। (बाप कहते हैं हम तो आते हैं पतितों को पावन बनाने। वह

धन्धा तुम भी सीखो। बाप 5 विकारों पर जीत पहनाते हैं) तो और ही जोर से वह सामना करेंगे। विकार का तूफान बहुत जोर से आता है। बाप तो कहते हैं बाप का बनने से यह सब बीमारियाँ उथल खायेंगी, तूफान जोर से आयेंगे। पूरी बॉक्सिंग है। अच्छे-अच्छे पहलवानों को भी हरा लेते हैं। कहते हैं - न चाहते भी कुदृष्टि हो जाती है, रजिस्टर खराब हो जायेगा। कुदृष्टि वाले से बात नहीं करनी चाहिए। बाबा सभी सेन्टर्स के बच्चों को समझा रहे हैं कि कुदृष्टि वाले बहुत ढेर हैं, नाम लेने से और ही ट्रेटर बन जायेंगे। अपनी सत्यानाश करने वाले उल्टे काम करने लग पड़ते हैं। काम विकार नाक से पकड़ लेता है। माया छोड़ती नहीं है, कुकर्म, कुदृष्टि, कुवचन निकल पड़ते हैं, कुचलन हो पड़ती है। इसलिए बहुत-बहुत सावधान रहना है।

तुम बच्चे जब प्रदर्शनी आदि करते हो तो ऐसी युक्ति रचो जो कोई भी सहज समझ सके। यह गीता ज्ञान स्वयं बाप पढ़ा रहे हैं। इसमें कोई शास्त्र आदि की बात नहीं है। यह तो पढ़ाई है। किताब गीता तो यहाँ है नहीं। बाप पढ़ाते हैं। किताब थोड़ेही हाथ में उठाते हैं। फिर यह गीता नाम कहाँ से आया? यह सब धर्मशास्त्र बनते ही बाद में हैं। कितने अनेक मठ-पंथ हैं। सबके अपने-अपने शास्त्र हैं। टाल-डाल जो भी हैं, छोटे-छोटे मठ-पंथ, उनके भी शास्त्र आदि अपने-अपने हैं। तो वह हो गये सब बाल-बच्चे। उनसे तो मुक्ति मिल न सके। सर्वशास्त्र मई शिरोमणी गीता गाई हुई है। गीता का भी ज्ञान सुनाने वाले होंगे ना। तो यह नॉलेज बाप ही आकर देते हैं। कोई भी शास्त्र आदि हाथ में थोड़ेही हैं। मैं भी शास्त्र नहीं पढ़ा हूँ, तुमको भी नहीं पढ़ाते हैं। वह सीखते हैं, सिखलाते हैं। यहाँ शास्त्रों की बात नहीं। बाप है ही नॉलेजफुल। हम तुमको सभी वेदों-शास्त्रों का सार बतलाते हैं। मुख्य हैं ही 4 धर्मों के 4 धर्मशास्त्र। ब्राह्मण धर्म का कोई किताब है क्या?) (ए) कितनी समझने की बातें हैं। यह सब बाप बैठ डिटेल में समझाते हैं। मनुष्य सब पत्थरबुद्धि हैं तब तो इतने कंगाल बने हैं। देवतायें थे गोल्डन एज में, वहाँ सोने के महल बनते थे, सोने की खानियां थी। अभी तो सच्चा सोना है नहीं। सारी कहानी भारत पर ही है। तुम देवी-देवता पारसबुद्धि थे, विश्व पर राज्य करते थे। अभी स्मृति आई है, हम स्वर्ग के मालिक थे फिर नर्क के मालिक बने हैं। अब फिर पारसबुद्धि बनते हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में है जो फिर औरों को समझाना है। ड्रामा अनुसार पार्ट चलता रहता है, जो टाइम पास होता है सो एक्यूरेट फिर भी पुरूषार्थ तो करायेंगे ना। जिन बच्चों को नशा है कि स्वयं भगवान हमको हेविन का मालिक बनाने के लिए पुरूषार्थ कराते हैं उनकी शक्ल बड़ी फर्स्टक्लास खुशनुम: रहती है। बाप आते भी हैं बच्चों को पुरूषार्थ कराने, प्रालब्ध के लिए। यह भी तुम जानते हो, दुनिया में थोड़ेही कोई जानते हैं। हेविन का मालिक बनाने भगवान पुरूषार्थ कराते हैं तो खुशी होनी चाहिए। शक्ल बड़ी फर्स्टक्लास खुशनुम: होनी चाहिए। (बाप की याद से तुम सदैव हर्षित रहेंगे। बाप को भूलने से ही मुरझाइस आती है। बाप और वर्से को याद करने से खुशनुम: हो जाते हैं। हर एक की सर्विस से समझा जाता है। बाप को बच्चों की खुशबू तो आती है ना। सपूत बच्चों से खुशबू आती है, कपूत से बदबू आती है। बगीचे में खुशबूदार फूल को ही उठाने के लिए दिल होगी। अक को कौन उठायेंगे! बाप को यथार्थ रीति याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। अच्छा!) (ब)

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

(१५२)

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. माया की बॉक्सिंग में हारना नहीं है। ध्यान रहे कभी मुख से कुवचन न निकले, कुदृष्टि, कुचलन, कुकर्म न हो जाए।

२. फर्स्टक्लास खुशबूदार फूल बनना है। नशा रहे कि स्वयं भगवान हमको पढ़ाते हैं। बाप की याद में रह सदैव हर्षित रहना है, कभी मुरझाना नहीं हैं।

वरदान:- हर शक्ति को कार्य में लगाकर वृद्धि करने वाले श्रेष्ठ धनवान वा समझदार भव

समझदार बच्चे हर शक्ति को कार्य में लगाने की विधि जानते हैं, जो जितना शक्तियों को कार्य में लगाते हैं उतना उनकी वह शक्तियां वृद्धि को प्राप्त होती हैं। इसके लिए पहले ईश्वरीय बजेट बनाकर सर्व शक्तियों को जमा करो और जमा हुई शक्ति द्वारा सर्व आत्माओं को भिखारीपन से, दु:ख अशान्ति से मुक्त करो। ऐसी सेवा करो जो विश्व की हर आत्मा आप द्वारा कुछ न कुछ प्राप्ति करके आपके गुणगान करे।

स्लोगन:-

त्रिकालदर्शी की स्टेज पर बैठ नथिंगन्यु की नालेज से बेफिकर बादशाह बनो।

-:सूचना:-

मीठे बाबा ने हम बच्चों को सदा एवररेडी रहने का पाठ पढ़ाया है और यही कहते बच्चे अपने योगबल से पुराने कर्म-बन्धनों को काट कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करना है। अब वापस घर चलना है। बाबा के अनन्य बच्चे सदा यही पाठ पढ़ते अपनी उपराम अवस्था बनाते रहते हैं। आप सबको मालूम हो कि जैसे यह पुराना वर्ष विदाई ले रहा है, ऐसे पिछले दो सप्ताह से लगातार यही समाचार मिलते रहते हैं कि कई बाबा के पुराने-पुराने बच्चे अपना पुराना शरीर छोड़ बाबा की नई दुनिया की स्थापना में एडवांस सेवा निमित्त जाते रहते हैं। वैसे सभी के नाम तो आप सब नहीं जानते होंगे लेकिन फिर भी जो सेवाकेन्द्र पर समर्पित रूप में रहने वाली बहिनों ने शरीर छोड़े हैं - उनके नाम लिख रहे हैं। बाबा के बहुत-बहुत स्नेही सेवाओं में समर्पित बाबा के लवली बच्चे गये हैं जिनका विशेष सतगुरूवार को मधुबन में भोग भी लगाया गया। इन बहिनों की तबियत भी काफी समय से खराब रहती थी, तो बाबा की याद से कर्मभोग को योग में परिवर्तन कर यह आत्मायें मुक्त हुई।

1- मुरादाबाद की गंगा बहन
2- रोपड़ की राजकुमारी बहन
3- चांदनी चौक की सुशीला बहन
4- जोधपुर की मोहिनी माता
5- देहली की अरूणा बहन जो अभी केशवपुरम् सेवाकेन्द्र पर थी।

ऐसे और भी बहुत ही बाबा के बच्चे बाबा की गोद में गये हैं। तो आप सब भी जरूर ऐसी स्नेही आत्माओं को अपने सूक्ष्म साइलेन्स के वायब्रेशन देते योग दान देंगे।

अच्छा - सभी को याद... ओम् शान्ति। (१५३)

21-1-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – पुण्य आत्मा बनना है तो अपना पोतामेल देखो कि कोई पाप तो नहीं होता है, सच का खाता जमा है?"

प्रश्न:- सबसे बड़ा पाप कौन-सा है?

उत्तर:- किसी पर भी बुरी दृष्टि रखना–यह सबसे बड़ा पाप है। तुम पुण्य आत्मा बनने वाले बच्चे किसी पर भी बुरी दृष्टि (विकारी दृष्टि) नहीं रख सकते। जाँच करनी है हम कहाँ तक योग में रहते हैं? कोई पाप तो नहीं करते हैं? ऊंच पद पाना है तो खबरदारी रखो कि ज़रा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहो।

गीत:- मुखड़ा देख ले प्राणी...................

ओम् शान्ति। बेहद का बाप अपने बच्चों को कहते हैं बच्चे, अपने भीतर ज़रा जाँच करो। यह तो मनुष्यों को मालूम रहता है कि हमने सारे जीवन में कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं? रोज़ाना अपना पोतामेल देखो–कितने पाप और कितने पुण्य किये हैं? किसको रंज (नाराज़) तो नहीं किया? हर एक मनुष्य समझ सकते हैं–हमने लाइफ में क्या-क्या किया है? कितना पाप किया है, कितना दान-पुण्य आदि किया है? मनुष्य यात्रा पर जाते हैं तो दान-पुण्य करते हैं। कोशिश करके पाप नहीं करते हैं। तो बाप बच्चों से ही पूछते हैं–कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं? अभी तुम बच्चों को पुण्य आत्मा बनना है। कोई भी पाप नहीं करना है। पाप भी अनेक प्रकार के होते हैं। कोई पर बुरी दृष्टि जाती है तो यह भी पाप है। बुरी दृष्टि होती ही है विकार की। वह है सबसे खराब। कभी भी विकार की दृष्टि नहीं जानी चाहिए। अक्सर करके स्त्री-पुरूष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। अब बाप कहते हैं यह विकार की दृष्टि नहीं होनी चाहिए। नहीं तो तुमको बन्दर कहना पड़े। नारद का मिसाल है ना। बोला हम लक्ष्मी को वर सकते हैं। तुम भी कहते हो ना हम तो लक्ष्मी को वरेंगे। नारी से लक्ष्मी, नर से नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं अपने दिल से पूछो–कितने तक हम पुण्य आत्मा बने हैं? कोई पाप तो नहीं करते हैं? कहाँ तक योग में रहते हैं?

तुम बच्चे तो बाप को पहचानते हो तब तो यहाँ बैठे हो ना। दुनिया के मनुष्य थोड़ेही बाबा को पहचानेंगे कि यह बापदादा है। तुम ब्राह्मण बच्चे तो जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा में प्रवेश होकर हमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना देते हैं। मनुष्यों के पास होता है विनाशी धन। वही दान करते हैं, वह तो हैं पत्थर। यह हैं ज्ञान के रत्न। ज्ञान सागर बाप के पास ही रत्न हैं। यह एक-एक रत्न लाखों रूपयों का है। रत्नागर बाप से ज्ञान रत्न धारण कर और फिर इन रत्नों का दान करना है। जितना जो लेवे और देवे, उतना ऊंच पद पाये। तो बाप समझाते हैं अपने अन्दर देखो कितने हमने पाप किये हैं? अभी कोई पाप तो नहीं होता है? ज़रा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहें यह खबरदारी चाहिए। माया के तूफान तो भल आयें परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है।

कुदृष्टि जाये तो उसके आगे खड़ा भी नहीं होना चाहिए। एकदम चला जाना चाहिए। मालूम पड़ जाता है—इनकी कुदृष्टि है। अगर ऊंच पद पाना है तो बहुत खबरदार रहना है। कुदृष्टि होगी तो फिर लूले-लंगड़े बन पड़ेंगे। बाप जो श्रीमत देते हैं, उस पर चलना है। बाप को बच्चे ही पहचान सकते हैं। समझो बाबा कहाँ जाता है, बच्चे ही समझेंगे कि बापदादा आया है। और मनुष्य देखते तो बहुत हैं परन्तु उनको थोड़ेही पता है। कोई पूछे भी यह कौन है? बोलो बापदादा हैं। बैज तो सबके पास होने ही चाहिए। बोलो शिवबाबा हमको इस दादा द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। स्प्रीचुअल फादर सभी रूहों का बाप बैठ यह नॉलेज देते हैं। शिव भगवानुवाच, गीता में कृष्ण भगवानुवाच रांग है। ज्ञान सागर पतित-पावन शिव को ही कहा जाता है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। सद्गति दाता एक ही बाप है। यह सब अक्षर पूरी रीति याद रखने चाहिए। अभी बच्चे समझते हैं कि हम बाप को जानते हैं और बाप भी समझते हैं कि हम बच्चों को जानते हैं। बाप तो कहेगा ना—यह सब हमारे बच्चे हैं, परन्तु जान नहीं सकते हैं। तकदीर में होगा तो आगे चलकर जानेंगे। समझो यह बाबा कहाँ जाता है, कोई पूछते हैं कि यह कौन है? जरूर शुद्ध भाव से ही पूछेंगे। अक्षर ही यह बोलो कि बापदादा हैं। बेहद का बाप है निराकार। वह जब तक साकार में न आये तब तक बाप से वर्सा कैसे मिले? तो शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट कर वर्सा देते हैं। यह प्रजापिता ब्रह्मा और यह बी.के. हैं। पढ़ाने वाला ज्ञान का सागर है। उनसे ही वर्सा मिलता है। यह ब्रह्मा भी पढ़ता है। यह ब्राह्मण से फिर देवता बनने वाला है। कितना सहज है समझाना। कोई को भी बैज पर समझाना अच्छा है। बोलो बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। पावन बन और पावन दुनिया में चले जायेंगे। यह पतित-पावन बाप है ना। हम पुरूषार्थ कर रहे हैं पावन बनने का। जब विनाश का समय होगा तो फिर हमारी पढ़ाई पूरी हो जायेगी। कितना सहज है समझाना। कोई भी कहाँ आते-जाते हैं तो भी बैज साथ में होना चाहिए। इस बैज के साथ फिर एक छोटा पर्चा भी होना चाहिए। उसमें लिखा हो कि भारत में बाप आकरके फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं। और सभी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई द्वारा कल्प पहले मिसल ड्रामा प्लैन अनुसार खलास हो जायेंगे। ऐसे पर्चे 2-4 लाख छपे हों, जो कोई को भी पर्चा दे सकते हैं। ऊपर में त्रिमूर्ति हो, दूसरे तरफ सेन्टर्स की एड्रेस हो। बच्चों को सारा दिन सर्विस का ख्याल चलना चाहिए।

बच्चों ने गीत सुना — रोज़ अपना पोतामेल बैठ निकालना चाहिए कि आज सारे दिन में हमारी अवस्था कैसी रही? बाबा ने ऐसे बहुत मनुष्य देखे हैं जो रोज़ रात को सारे दिन का पोतामेल बैठ लिखते हैं। जाँच करते हैं—कोई खराब काम तो नहीं किया? सारा लिखते हैं। समझते हैं अच्छी जीवन कहानी लिखी हुई होगी तो पिछाड़ी वाले भी पढ़कर ऐसे सीखेंगे। ऐसा लिखने वाले अच्छे आदमी ही होते हैं। विकारी तो सब होते ही हैं। यहाँ तो वह बात नहीं है। तुम अपना पोतामेल रोज़ देखो। फिर बाबा के पास भेज देना चाहिए तो उन्नति अच्छी होगी और डर भी रहेगा। सब क्लीयर लिखना चाहिए—आज हमारी बुरी दृष्टि गई, यह

दुःख......। जो एक-दो को दु:ख देते हैं बाबा उन्हें गाज़ी कहते हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। अभी तुमको याद के बल से पापों का बोझ उतारना है। इसलिए रोज़ देखना चाहिए हम सारे दिन में कितना गाजी बने हैं? किसको दु:ख देना गोया गाज़ी बनना है। पाप बन जाता है। बाप कहते हैं गाज़ी बन किसको दु:ख मत दो। अपनी पूरी जाँच करो—हमने कितना पाप, कितना पुण्य किया है? जो भी मिले सबको यह रास्ता बताना ही है। सबको बहुत प्यार से बोलो बाप को याद करना है और पवित्र बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। भल तुम संगम पर हो परन्तु यह तो रावण राज्य है ना। इस मायावी विषय वैतरणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कमल फूल बहुत बाल बच्चों वाला होता है। फिर भी पानी से ऊपर रहता है। गृहस्थी है, बहुत चीजें पैदा करता है। यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए भी है विकारों से न्यारा होकर रहो। यह एक जन्म पवित्र रहो तो फिर यह अविनाशी हो जायेगा। तुमको बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। बाकी तो सब हैं पत्थर। वो लोग तो भक्ति की ही बातें सुनाते हैं। ज्ञान सागर पतित-पावन तो एक ही है तो ऐसे बाप से बच्चों का कितना लव रहना चाहिए। बाप का बच्चों से, बच्चों का बाप से लव रहता है। बाकी और कोई से कनेक्शन नहीं। सौतेले वह हैं जो बाप की मत पर पूरा नहीं चलते हैं। रावण की मत पर चलते हैं तो राम की मत थोडेही ठहरी। आधाकल्प है रावण सम्प्रदाय इसलिए इनको भ्रष्टाचारी दुनिया कहा जाता है। अब तुम्हें और सबको छोड़ एक बाप की मत पर चलना है। बी.के. की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है? तुम बच्चों को राइट और रांग समझ भी अभी मिली है। जब राइटियस आये तब ही राइट और रांग बताये। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प यह भक्ति मार्ग के शास्त्र सुने हैं, अब मैं तुमको जो सुनाता हूँ—यह राइट है या वह राइट है? वह कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है, मैं कहता हूँ मैं तो तुम्हारा बाप हूँ। अब जज करो कौन राइट है? यह भी बच्चों को ही समझाया जाता है ना, जब ब्राह्मण बनें तब समझें। रावण सम्प्रदाय तो बहुत हैं, तुम तो बहुत थोड़े हो। उनमें भी नम्बरवार हैं। अगर कोई कुदृष्टि है, तो भी उनको रावण सम्प्रदाय कहा जायेगा। राम सम्प्रदाय का तब समझा जाए जब सारी दृष्टि बदल कर दैवी बन जाए। अपनी अवस्था से हर एक समझ तो सकते हैं ना। पहले तो ज्ञान था नहीं, अभी बाप ने रास्ता बताया है। तो देखना है हम अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करता रहता हूँ? भक्त लोग दान करते हैं विनाशी धन का। अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बन जाते हो। अभी तुम अपना धन दान करते हो तो इसका एवजा फिर 21 जन्मों के लिए नई दुनिया में मिलता है। यह सब बातें समझने की हैं। बाबा सर्विस की युक्तियाँ भी बतलाते रहते हैं। सब पर रहम करो। गाया हुआ भी है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझते। परमात्मा को ही सर्वव्यापी कह दिया है। तो बच्चों को सर्विस का शौक बहुत अच्छा रखना है। औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा। दिन-प्रतिदिन बाबा बहुत सहज करते जाते हैं। यह त्रिमूर्ति का चित्र तो बहुत अच्छी चीज़ है। इसमें

शिवबाबा भी है, फिर प्रजापिता ब्रह्मा भी है। प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा फिर से भारत में 100 परसेन्ट पवित्रता-सुख-शान्ति का दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। बाकी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई से कल्प पहले मुआफ़िक विनाश हो जायेंगे। ऐसे-ऐसे पर्चे छपवाकर बांटने चाहिए। बाबा कितना सहज रास्ता बताते हैं। प्रदर्शनी में भी पर्चे दो। पर्चे द्वारा समझाना सहज है। पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। बाकी यह सब विनाश हो जायेंगे कल्प पहले मुआफ़िक। कहाँ भी जाओ, पॉकेट में भी पर्चे और बैजेस सदैव पड़े रहें। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गाई हुई है। बोलो, यह है बाप, यह दादा। उस बाप को याद करने से यह सतयुगी देवता पद पायेंगे। पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना, विष्णुपुरी नई दुनिया में फिर इन्हों का राज्य होगा। कितना सहज है। तीर्थों आदि पर मनुष्य जाते हैं, कितने धक्के खाते हैं। आर्य समाजी आदि भी ट्रेन भरकर धक्के खाने जाते हैं। इसको कहा जाता है धर्म के धक्के। वास्तव में हैं अधर्म के धक्के। धर्म में तो धक्के खाने की दरकार नहीं है। तुम तो पढ़ाई पढ़ रहे हो। भक्ति मार्ग में मनुष्य क्या-क्या करते रहते हैं!

बच्चों ने गीत में भी सुना कि मुखड़ा देख.... . यह मुखड़ा तुम्हारे सिवाए तो कोई देख नहीं सकते हैं। भगवान को भी तुम दिखला सकते हो। यह हैं ज्ञान की बातें। तुम मनुष्य से देवता, पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनते हो। दुनिया इन बातों को बिल्कुल नहीं जानती। यह लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक कैसे बनें—यह किसी को पता नहीं है। तुम बच्चे तो सब जानते हो। किसको बुद्धि में तीर लग जाए तो बेड़ा पार हो जाए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अगर विनाशी धन है तो उसको सफल करने के लिए अलौकिक सेवा में लगाना है। अविनाशी धन का दान भी जरूर करना है।

२. अपने पोतामेल में देखना है कि हमारी अवस्था कैसी है? सारे दिन में कोई खराब काम तो नहीं होते हैं? एक-दो को दुःख तो नहीं देते हैं? किसी पर कुदृष्टि तो नहीं जाती है?

वरदान:- शक्तिशाली सेवा द्वारा निर्बल में बल भरने वाले सच्चे सेवाधारी भव

सच्चे सेवाधारी की वास्तविक विशेषता है—निर्बल में बल भरने के निमित्त बनना। सेवा तो सभी करते हैं लेकिन सफलता में जो अन्तर दिखाई देता है उसका कारण है सेवा के साधनों में शक्ति की कमी। जैसे तलवार में अगर जौहर नहीं तो वह तलवार का काम नहीं करती, ऐसे सेवा के साधनों में यदि याद की शक्ति का जौहर नहीं तो सफलता नहीं। इसलिए शक्तिशाली सेवाधारी बनो, निर्बल में बल भरकर क्वालिटी वाली आत्मायें निकालो तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

स्लोगन:-

भाव और भावना की पवित्रता ही सेवा का फाउण्डेशन है।

29-3-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

''मीठे बच्चे - तुम ब्राह्मण हो यज्ञ रक्षक, यह यज्ञ ही तुम्हें मन-इच्छित फल देने वाला है''

प्रश्नः- किन दो बातों के आधार से 21 जन्मों के लिए सब दु:खों से छूट सकते हो?

उत्तरः- प्यार से यज्ञ की सेवा करो और बाप को याद करो तो 21 जन्म कभी दु:खी नहीं होंगे। दु:ख के आंसू नहीं बहायेंगे। तुम बच्चों को बाप की श्रीमत है - बच्चे बाप के सिवाए कोई भी मित्र सम्बन्धी, दोस्त आदि को याद न करो। बन्धनमुक्त बन प्यार से यज्ञ की सम्भाल करो तो मन-इच्छित फल मिलेगा।

गीतः- बचपन के दिन भुला न देना...

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना और इसका अर्थ भी समझा कि यह हमारा ईश्वरीय जन्म है, इस जन्म में हम जिसे मम्मा बाबा कहते हैं उनकी मत पर चलने से ही हम विश्व के मालिक बनेंगे क्योंकि वह है नये विश्व का रचयिता। इस निश्चय से ही तुम यहाँ बैठे हो और विश्व के मालिकपने का वर्सा ले रहे हो। यह जो पुरानी विश्व है वह तो विनाश होने वाली है, इनमें कोई सुख नहीं। सब विषय सागर में गोते खा रहे हैं। रावण की जंजीरों में दु:खी होकर सबको मरना है। अब बाप बच्चों को वर्सा देने आये हैं। बच्चे जानते हैं हम जिनके बने हैं उससे वर्सा पाना है। वह हमको राजयोग सिखलाते हैं। जैसे बैरिस्टर कहेंगे हम बैरिस्टर बनायेंगे। बाप कहते हैं तुमको स्वर्ग का डबल सिरताज बनाऊंगा। श्री लक्ष्मी-नारायण अथवा उसकी डिनायस्टी का वर्सा देने आया हूँ। उसके लिए तुम राजयोग सीख रहे हो। यह बातें भूलो मत। माया भुलायेगी, परमपिता परमात्मा से बेमुख करेगी। उनका धन्धा ही यह है। जब से उसका राज्य हुआ है, तुम बेमुख बनते आये हो। अब कोई काम के नहीं रहे। शक्ल भल मनुष्य की है परन्तु सीरत बिल्कुल बन्दर की है। अब तुम्हारी सूरत मनुष्य की, सीरत देवताओं की बना रहे हैं। इसलिए बाबा कहते हैं बचपन भूल न जाओ। इसमें तकलीफ कोई भी नहीं है। जो निर्बन्धन हैं उनके तो अहो भाग्य कहेंगे। वह लौकिक मात-पिता तो हैं विकारों में डालने वाले और यह मात-पिता है स्वर्ग में ले जाने वाले। ज्ञान स्नान करा रहे हैं। आराम से बैठे हैं। हाँ, शरीर से काम भी लेना है। बेहद के बाप से वर्सा मिल रहा है और कोई की याद नहीं सताती। अगर कोई बन्धन है तो फिर याद सताती है। कोई सम्बन्धी याद आया, मित्र-दोस्त याद आया, बाइसकोप याद आया.. तुमको तो बाप कहते हैं और कोई को याद नहीं करो। यज्ञ की सेवा करो और बाप को याद करो तो 21 जन्म तुम कभी दु:ख नहीं पायेंगे। दु:ख के आंसू नहीं बहेंगे। ऐसे बेहद के माँ बाप को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। यज्ञ की सेवा करनी चाहिए। तुम हो यज्ञ के रक्षक। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा करनी

है। यह यज्ञ मन-इच्छित फल देता है अर्थात् जीवनमुक्ति, स्वर्ग की राजाई देता है। तो ऐसे यज्ञ की कितनी सम्भाल करनी चाहिए। कितनी शान्ति रहनी चाहिए। जो कोई भी आवे तो समझे यहाँ तो सुख-शान्ति लगी हुई है। यहाँ कुछ भी आवाज करना बिल्कुल पसन्द नहीं आता। रावण के राज्य से छूटकर आये हैं। अभी हम रामराज्य में जाते हैं। जो बन्धनमुक्त हैं उनके लिए तो अहो सौभाग्य। लखपति, करोड़पति से भी वह महान सौभाग्यशाली हैं जो बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं, जिसका बंधन टूट गया उनका भी कहेंगे अहो सौभाग्य। जो बन्धनमुक्त बन बाबा से वर्सा लेते हैं, उनकी कितनी तकदीर खुल जाती है। बाहर तो रौरव नर्क है, जिसमें दुःख के बिगर कोई सुख नहीं है। अब बाप कहते हैं और सब चिंताओं को छोड़, यज्ञ की सर्विस प्यार से करो। धारणा करो। पहले-पहले अपना जीवन हीरे जैसा बनाना है। वह बनेगा श्रीमत पर। यहाँ तो सब बच्चे बन्धन से छूटे हुए हैं। अपना स्वभाव भी बहुत अच्छा रखना है, सतोप्रधान बनना है। नहीं तो सतोप्रधान राज्य में ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। यज्ञ से जो कुछ मिले वह स्वीकार करना है। बाबा अनुभवी है। भल कितना भी बड़ा जौहरी था, कहाँ आश्रम में जायेंगे तो आश्रम के नियमों पर पूरा चलेंगे। वहाँ ऐसे नहीं मांगा जाता कि हमको फलानी चीज़ दो। बड़ा रॉयल्टी से जो भोजन सबको मिलता है वही खाया जाता है। इस ईश्वरीय आश्रम में बड़ी शान्ति चाहिए।

जो पिया के साथ है.... सो भी दोनों बापदादा बैठे हैं। सम्मुख बैठ सुनते हैं। अगर अभी सर्विस लायक न बने तो फिर कल्प-कल्पान्तर पद भ्रष्ट हो जायेंगे। अन्धों की लाठी बन, यह महामन्त्र सबको देना है। यही संजीवनी बूटी है। कोई-कोई को माया बिल्कुल ही बेहोश कर देती है। इस युद्ध के मैदान में तो कहा जाता है बाप और वर्से को याद करो। यह है संजीवनी बूटी। हनूमान तो तुम ही हो, नम्बरवार महावीर बनते हो। बहुत हैं जो बेहोश हो पड़े हैं। उनको होश में लाना है तो कुछ जीवन बना लें। देह में भी मोह नहीं रखना है। मोह रखना चाहिए बाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों में। जितनी धारणा होगी उतना औरों को भी करायेंगे। बाप कहते हैं हमको ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगते हैं। प्रदर्शनी की सर्विस के लिए बाबा ज्ञानी बच्चों को ही ढूँढते हैं। समझाना बड़ा सहज है। बड़े बड़े आदमी सुनकर खुश होते हैं। समझते हैं जीवन इस संस्था द्वारा बनती है। परन्तु यह भी कोटों में कोई समझते हैं। यह है बेहद का सन्यास। जो कुछ इस पुरानी दुनिया में देखते हैं, यह सब खत्म हो जायेगा। अभी तो बाप से वर्सा लेना हैं, वापिस जाना है। फिर से हम सूर्यवंशी कुल में आकर राज्य करेंगे। राज्य किया था फिर माया ने छीन लिया। कितनी सहज बात है। मीठे-मीठे बाप को याद करना है। दिल बाप के पास लगी हुई हो। बाकी कर्मेन्द्रियों से कर्म तो करना है। श्रीमत पर चलना है। लाडले मीठे-मीठे बच्चे बाप कहते हैं मुख से सदैव ज्ञान रत्न निकालो, पत्थर नहीं निकालो। कोई भी संसार समाचार की बातें नहीं निकालो। नहीं तो मुख कडुवा हो जायेगा। एक दो को रत्न देते रहो। तुम्हारे पास रत्नों की झोली

है, विनाशी धन दान करते हैं। भारत को महादानी कहा जाता है। इस समय बाप बच्चों को दान करते हैं। बच्चे बाप को दान करते हैं। बाबा शरीर सहित यह सब कुछ आपका है। बाप फिर कहते हैं यह विश्व की बादशाही तुम्हारी है। इस पुरानी दुनिया का सब कुछ खत्म होना है, क्यों न हम बाबा से सौदा कर लें। बाबा यह सब कुछ आपका है, भविष्य में हमको राजाई देना। हम यही चाहते हैं कोई और चीज़ की हमको दरकार नहीं। ऐसे कोई न समझे कि हम तन-मन-धन देते हैं तो हम कोई भूख मरेंगे। नहीं, यह शिवबाबा का भण्डारा है, जिससे सबका शरीर निर्वाह होता रहता है और होता रहेगा। द्रोपदी का मिसाल। अब प्रैक्टिकल में पार्ट चल रहा है। शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। यह भी एक परीक्षा थी, जिनको डर लगा वह सब चले गये। बाकी साथ देने वाले चले आये। भूख मरने की बात नहीं। अब तो बच्चों के लिए महल बन रहे हैं। अच्छा रहना है तो मेहनत कर अपना ऊंच पद बनाना है। यह कल्प-कल्प की बाजी है। इस बारी इम्तहान में फेल हुए तो कल्प-कल्पान्तर होते रहेंगे। पास भी ऐसा होना है जो मम्मा बाबा के तख्त पर बैठें। 21 जन्म तख्त पिछाड़ी तख्त पर बैठेंगे।

एक बाप के सिवाए कोई को भी याद नहीं करना है। मुरली लिखना बहुत अच्छी सर्विस है, सभी खुश होंगे, आशीर्वाद करेंगे। बाबा अक्षर बहुत अच्छे हैं। नहीं तो लिखते हैं अक्षर अच्छे नहीं। बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा हम अधिकारी हैं - जो आपके मुख से रत्न निकलते हैं वह सब हमारे पास आने चाहिए। यह कहेंगे भी वही जो अनन्य होंगे। मुरली की सेवा बहुत अच्छी रीति करनी चाहिए। सभी भाषायें सीखनी चाहिए। मराठी, गुजराती आदि.. जैसे बाबा रहमदिल है बच्चों को भी रहमदिल बनना है। पुरुषार्थ कर जीवन बनाने के लिए मददगार बनना है। बाकी उस दुनिया का जीवन तो बिल्कुल ही फीका है। एक दो को काटते रहते हैं। कितने पतित हैं। अब क्यों न हम बाबा की श्रीमत पर चलें। बाबा मैं आपका हूँ, आप जिस सर्विस में चाहें लगा दें। फिर रेसपान्सिबुल बाबा होगा। एशलम में आने वाले को बाबा सब बन्धनों से मुक्त कर देगा। बाकी इस दुनिया में तो गन्द लगा पड़ा है। ईश्वर सर्वव्यापी कह बेमुख कर देते हैं। अगर सर्वव्यापी है, नजदीक बैठे हैं फिर हे प्रभू कह पुकारने की क्या दरकार है। समझाओ तो गुर्र गुर्र करते हैं। अरे भगवान खुद कहते हैं मैंने तो कभी ऐसे कहा नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूँ। यह तो भक्ति मार्ग वालों ने लिख दिया है। हम भी खुद पढ़ते थे। परन्तु उस समय ऐसे नहीं समझते थे कि यह कोई ग्लानी है। भक्तों को कुछ भी मालूम नहीं पड़ता है, जो कुछ कहो वह सत्य मान लेते हैं। बाबा कितना अच्छी रीति समझाते हैं फिर बाहर जाकर हंगामा करते हैं। तो फिर वहाँ चलकर दास दासियां नौकर चाकर बनेंगे। बाबा ने कह दिया है पिछाडी का जब समय होगा उस समय तुमको पूरा पता पड़ेगा। साक्षात्कार करते रहेंगे और बताते रहेंगे कि फलाने-फलाने यह बनेंगे। फिर उस समय

सिर नीचे करना पड़ेगा, फिर वह खुशी नहीं रहेगी, जो राज़ाई वालों को रहेगी। दिल अन्दर जैसे कांटा लगता रहेगा यह क्या हुआ! परन्तु टू लेट, बहुत पछतायेंगे। होगा तो कुछ भी नहीं। बाप कहेंगे - तुमको इतना समझाते थे फिर भी तुम यह करते थे, अब अपना हाल देखो। कल्प-कल्पान्तर पछतायेंगे। सजनियों को नम्बरवार ले जायेंगे ना। नम्बरवन से लास्ट तक समझेंगे। पढ़ाई अच्छी नहीं पढ़ी है तो लास्ट में बैठे हैं। इम्तहान के दिनों में मालूम पड़ जाता है कि हम कितनी मार्क्स से पास होंगे। तुम समझेंगे कि हम क्या पद पायेंगे। सर्विस नहीं करेंगे तो धूल मिलेगा। पढ़ाई और सर्विस पर ध्यान देना है। मीठे ते मीठे बाबा के बच्चे हो तो बहुत मीठा बनना है। शिवबाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है। हमको फिर से ऐसा बनाते हैं। कितनी बड़ी युनिवर्सिटी है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- देह सहित सबसे मोह निकाल, बाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों से मोह रखना है। ज्ञान रत्न दान करते रहना हैं।

२- पढ़ाई और सर्विस पर पूरा ध्यान देना है, बाप समान मीठा बनना है। संसार समाचार न सुनना है, न दूसरों को सुनाकर मुख कडुवा करना है।

वरदान:- अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाने वाले क्यूं, क्या की हलचल से मुक्त अचल-अडोल भव

बापदादा सदा कहते हैं कि रोज़ अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है नथिंगन्यु, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रहना। फिर सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे। क्यूं, क्या की हलचल समाप्त हो जायेगी। जिस समय कोई बात होती है उसी समय फुलस्टॉप लगाओ। नथिंगन्यु, होना था, हो रहा है... साक्षी बन देखो और आगे बढ़ते चलो।

स्लोगन:-

परिवर्तन शक्ति द्वारा व्यर्थ संकल्पों के बहाव का फोर्स समाप्त कर दो तो समर्थ बन जायेंगे।

13-5-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप समान रहमदिल बनो, रहमदिल बच्चे सबको दु:खों से छुड़ाकर पतित से पावन बनाने की सेवा करेंगे"

प्रश्न:- सारी दुनिया की मांग क्या है? जो बाप के सिवाए कोई पूरी नहीं कर सकता?
उत्तर:- सारी दुनिया की मांग है शान्ति और सुख मिले। सभी बच्चों की पुकार सुनकर बाप आते हैं। बाबा बेहद का है इसलिए उसे बहुत फुरना है कि मेरे बच्चे कैसे दु:खों से सुखी बनें। बाबा कहते–बच्चे, पुरानी दुनिया भी मेरी है, मेरे ही सब बच्चे हैं, मैं आया हूँ सबको दु:खों से छुड़ाने। मैं सारी दुनिया का मालिक हूँ, इसे मुझे ही पतित से पावन बनाना है।

ओम् शान्ति। बाप पावन बना रहे हैं बच्चों को। तो जरूर बाप से प्यार चाहिए। भल भाइयों-भाइयों का आपस में प्यार तो ठीक है। एक बाप के सब बच्चे आपस में भाई-भाई हैं। परन्तु पावन बनाने वाला एक बाप ही है। इसलिए सब बच्चों का लॅव एक बाप में ही चला जाता है। बाप कहते हैं–बच्चों, मामेकम् याद करो। यह तो ठीक है तुम भाई-भाई हो तो जरूर क्षीरखण्ड ही होंगे। एक बाप के बच्चे हो। आत्मा में ही इतना प्यार है। जबकि देवताई पद प्राप्त करते हो तो आपस में बहुत ही प्यार होना चाहिए। हम भाई-भाई बनते हैं। बाप से वर्सा लेते हैं। बाप आकर सिखलाते हैं। जो समझने वाले होते हैं वह समझते हैं यह स्कूल वा बड़ी युनिवर्सिटी है। बाप सबको दृष्टि देते हैं वा याद करते हैं। बेहद के बाप को सारी दुनिया के मनुष्य मात्र सभी आत्मायें याद करती हैं। बाप की ही सारी दुनिया है – नई वा पुरानी। नई दुनिया बाप की है तो पुरानी नहीं है क्या? बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनिया भी मेरी है। सारी दुनिया का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनिया में राज्य नहीं करता हूँ परन्तु है तो मेरी ना। मेरे बच्चे मेरे इस बड़े घर में भी बहुत सुखी रहते हैं और फिर दु:ख भी पाते हैं। यह खेल है। यह सारी बेहद की दुनिया हमारा घर है। यह बड़ा माण्डवा है ना। बाप जानते हैं सारे घर में हमारे बच्चे हैं। सारी दुनिया को देखते हैं। सब चैतन्य हैं। सभी बच्चे इस समय दु:खी हैं इसलिए पुकारते हैं बाबा हमको छी छी, दु:खी दुनिया से शान्ति की दुनिया में ले चलो, शान्ति देवा। बाप को ही पुकारते हैं। देवताओं को तो कुछ न सकें। सबका वह एक बाप है। उनको सारे सृष्टि का फुरना रहता है। बेहद का घर है। बाप जानते हैं इस बेहद घर में इस समय सब दु:खी हैं इसलिए कहते हैं शान्ति देवा, सुख देवा। दो चीजें मांगते हैं ना। अभी तो जानते हो हम बेहद के बाप से सुख का वर्सा ले रहे हैं। बाप आकर हमको सुख भी देते हैं, शान्ति भी देते हैं। और कोई सुख-शान्ति तो देने वाला है नहीं। बाप को ही तरस पड़ेगा। वह है बेहद का बाप। तुम समझते हो हम बाबा के बच्चे बहुत सुखी थे जबकि पवित्र थे। अब अपवित्र बनने से दु:खी हो जाते हैं। काम चिता पर बैठ काले पतित बन जाते हैं। मूल बात

है कि बाप को भूल जाते हैं। जिस बाप ने इतना ऊंच पद दिया। गाते भी हैं ना तुम मात पिता.... सुख घनेरे थे। सो फिर तुम अभी ले रहे हो क्योंकि अब दु:ख घनेरे हैं। यह है तमोप्रधान दुनिया। विषय सागर में गोते खाते रहते हैं। समझते कुछ नहीं है। तुमको अब समझ आई है। तुम समझते हो कि यह रौरव नर्क है।

बाप बच्चों से पूछते हैं — अभी तुम नर्कवासी हो या स्वर्गवासी हो? जब कोई मरता है तो झट कह देते हैं स्वर्गवासी हुआ अर्थात् सब दु:खों से दूर हुआ। फिर नर्क की चीजें उनको क्यों खिलाते हो? यह भी समझते नहीं। बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तुम बच्चों को राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चे, मैं तुमको यह नॉलेज सुनाता हूँ। मेरे में ही यह नॉलेज है। ज्ञान सागर मैं हूँ। कहते हैं यह शास्त्रों की अथॉरिटी है। लेकिन वह भी आत्मायें हैं ना, यह भी समझते नहीं। बाप का ही पता नहीं है। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनके लिए कहते हैं ठिक्कर भित्तर सबमें है। व्यास भगवान् ने क्या-क्या बातें लिख दी हैं। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। बिल्कुल आरफ़न बन आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। बाप रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई नहीं जानते हैं। बाप अपना और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। और तो कोई बता न सके। तुम कोई से भी पूछो—जिसको ईश्वर, भगवान्, रचता कहते हो उनको तुम जानते हो? क्या ठिक्कर-भित्तर में ईश्वर कहना ही जानना है? पहले अपने को तो समझो। मनुष्य तमोप्रधान हैं तो जानवर आदि सब तमोप्रधान हैं। मनुष्य सतोप्रधान हैं तो सब सुखी बन जाते हैं। जैसा मनुष्य, वैसा उनका फर्नीचर भी होता है। साहूकार लोगों का फर्नीचर भी अच्छा होता है। तुम तो बिल्कुल सुखी विश्व के मालिक बनते हो तो तुम्हारे पास हर चीज सुखदाई है। वहाँ दु:खदाई कोई चीज होती नहीं। यह नर्क है ही गन्दी दुनिया।

बाप आकर समझाते हैं भगवान् तो एक ही है, वही पतित-पावन है। स्वर्ग की स्थापना करते हैं। देवताओं की महिमा भी गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न.....। मन्दिरों में जाकर देवताओं की उपमा, अपनी निंदा करते हैं क्योंकि सभी भ्रष्टाचारी हैं। श्रेष्ठाचारी, स्वर्गवासी तो यह लक्ष्मी-नारायण हैं, जिनकी सब पूजा करते हैं। सन्यासी भी करते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं होता। तुम्हारा सन्यास है बेहद का। बेहद का बाप आकर बेहद का सन्यास कराते हैं। वह है हठयोग, हद का सन्यास। वह धर्म ही दूसरा है। बाप कहते हैं तुम अपने धर्म को भूल कितने धर्मों में घुस पड़े हो। अपने भारत का नाम ही हिन्दुस्तान रख दिया है और फिर हिन्दू धर्म कह दिया है। वास्तव में हिन्दू धर्म तो कोई ने स्थापन ही नहीं किया है। मुख्य धर्म हैं ही चार—देवी-देवता, इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन। तुम जानते हो यह सारी दुनिया आईलैण्ड है, इसमें रावण का राज्य है। रावण देखा है? जिनको घड़ी-घड़ी जलाते हैं। यह सबसे पुराना दुश्मन है। यह भी समझते नहीं कि हम क्यों जलाते हैं? समझ चाहिए ना - यह कौन है? कब से जलाते आये हैं? समझते हैं परम्परा से। अरे, उनका भी कोई हिसाब तो चाहिए ना। तुमको कोई जानते ही नहीं। तुम हो

ब्रह्मा के बच्चे। तुमसे कोई पूछे तुम किसके बच्चे हो? अरे, हम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हैं तो उनके बच्चे ठहरे ना। ब्रह्मा किसका बच्चा? शिवबाबा का। हम उनके पौत्रे ठहरे। सभी आत्मायें उनके बच्चे हैं। फिर शरीर में पहले ब्राह्मण बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा है ना। इतनी प्रजा कैसे रचते हैं, यह तुम जानते हो। यह एडाप्शन है। शिवबाबा एडाप्ट करते हैं ब्रह्मा द्वारा। मेला भी लगता है। वास्तव में मेला वहाँ लगना चाहिए जहाँ ब्रह्मपुत्रा बड़ी नदी सागर में जाकर मिलती है। उस संगम पर मेला लगना चाहिए। यह मेला यहाँ है। ब्रह्मा बैठा है, तुम जानते हो बाप भी है और बड़ी मम्मा भी तो यह है। परन्तु मेल है इसलिए मम्मा को मुकरर किया जाता है कि तुम इन माताओं को सम्भालो। बाप कहते हैं मैं तुमको सद्गति देता हूँ। तुम जानते हो यह देवतायें हैं डबल अहिंसक क्योंकि वहाँ रावण होता ही नहीं। भक्ति से होती है रात, ज्ञान से दिन। ज्ञान सागर एक बाप ही है, उनके लिए फिर कह देते हैं सर्वव्यापी। बाप ही आकर यह समझाते हैं और बच्चों को ही समझाते हैं। शिव भगवानुवाच है ना। शिव जयन्ती मनाते हैं तो जरूर कोई में आते हैं। कहते हैं मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। मैं कोई छोटे बच्चे का आधार नहीं लेता हूँ। कृष्ण तो बच्चा है ना। मैं तो उनके बहुत जन्मों के अन्त में सो भी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। वानप्रस्थ अवस्था के बाद ही मनुष्य भगवान् को सिमरण करते हैं। परन्तु भगवान् को यथार्थ कोई भी जानते नहीं। तब बाप कहते हैं यदा यदाहि..... मैं भारत में ही आता हूँ। भारत की महिमा अपरम्पार है।

मनुष्यों को देह का अहंकार देखो कितना है—मैं फलाना हूँ, यह हूँ! अब बाप आकर तुमको देही-अभिमानी बनाते हैं। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ ज्ञान के सब राज़ बताते हैं। यह है पुरानी दुनिया। सतयुग है नई दुनिया। सतयुग में आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही था। 5 हज़ार वर्ष की बात है। शास्त्रों में फिर व्यास ने लिख दिया है कल्प की आयु लाखों हज़ार वर्ष है। वास्तव में है 5 हज़ार वर्ष का कल्प। मनुष्य बिल्कुल अज्ञान की कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं। अभी तुम्हारी यह बातें कोई नया सुनेगा तो समझ नहीं सकेगा। इसलिए बाप कहते हैं मैं अपने बच्चों से ही बात करता हूँ। भक्ति भी तुम ही शुरू करते हो। अपने को ही चमाट मारी है। बाप ने तुमको पूज्य बनाया, तुम फिर पुजारी बन जाते हो। यह भी खेल है। कोई-कोई मनुष्य नर्म दिल होते हैं तो खेल देखकर भी रो पड़ते हैं। बाप तो कहते हैं जिन रोया तिन खोया। सतयुग में रोने की बात नहीं। यहाँ भी बाप कहते हैं रोना नहीं है। रोते हैं द्वापर-कलियुग में। सतयुगी कब रोते नहीं हैं। पिछाड़ी में तो किसको रोने की फुर्सत ही नहीं रहेगी। अचानक मरते रहेंगे। हाय राम भी नहीं कह सकेंगे। विनाश ऐसा होगा जो जरा भी दुःख नहीं होगा क्योंकि हॉस्पिटल आदि तो रहेंगी नहीं। इसलिए चीजें ही ऐसी बनाते हैं। तो बाप समझाते हैं तुम बन्दरों की मैं सेना लेता हूँ, रावण पर जीत पाने के लिए। अब बाप तुमको युक्ति बताते हैं—रावण पर जीत कैसे पानी है? सब सीताओं को रावण की जंजीरों से छुड़ाना है। यह सब समझने की बातें हैं। भगवानुवाच, बच्चों को ही बाप

कहते हैं हियर नो ईविल.... जिन बातों से तुम्हें कोई फायदा नहीं, उनसे तुम अपने कान बन्द कर लो। अब तुमको श्रीमत मिलती है। तुम ही श्रेष्ठ बनेंगे। यहाँ तो श्री श्री का टाइटिल सबको दे दिया है। अच्छा, फिर भी बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। कितना वन्डरफुल हार-जीत का यह बेहद का खेल है जो बाप ही समझाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप समान रहमदिल बनना है। सबको दुःखों से छुड़ा कर पतित से पावन बनाने की सेवा करनी है। पावन बनने के लिए एक बाप से बहुत-बहुत लॅव रखना है।

२. बाप कहते हैं जिन रोया तिन खोया। इसलिए कैसी भी परिस्थिति हो तुम्हें रोना नहीं है।

वरदान:- साइलेन्स की शक्ति द्वारा आत्म शक्ति के उड़ान की तीव्रगति करने वाले विश्व परिवर्तक भव

साइंस के साधनों की रफ्तार को साइंस द्वारा कट भी कर सकते हैं, पकड़ भी सकते हैं लेकिन आत्मा की गति को अभी तक न कोई पकड़ सका है, न पकड़ सकता है, इसमें साइंस अपने को फेल समझती है। जहाँ साइंस फेल है वहाँ साइलेन्स की शक्ति से जो चाहो वो कर सकते हो। तो आत्म शक्ति की उड़ान तीव्रगति से करो, इस शक्ति से स्व परिवर्तन, चाहे किसी की वृत्ति का परिवर्तन, वायुमण्डल का परिवर्तन कर विश्व परिवर्तक बन सकते हो। तीव्रता की निशानी है सोचा और हुआ।

स्लोगन:-

सदा निश्चय हो कि जो हो रहा है वो भी अच्छा और जो होने वाला है वो और भी अच्छा तो अचल-अडोल रहेंगे।

बाप तो बिलकुल साधारण है ड्रेस आदि सब वही कुछ भी फर्क नहीं

24-3-99 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हारी अब वानप्रस्थ अवस्था है क्योंकि तुम्हें वाणी से परे घर जाना हैं इसलिए याद में रहकर पावन बनो"

३७

प्रश्नः- ऊंची मंज़िल पर पहुँचने के लिए किस बात की सम्भाल जरूर रखनी है?

उत्तरः- आंखों की सम्भाल करो। यही बहुत धोखेबाज हैं। क्रिमिनल आंखें बहुत नुकसान करती हैं इसलिए जितना हो सके अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। भाई-भाई की दृष्टि का अभ्यास करो। सवेरे-सवेरे उठ एकान्त में बैठ अपने आपसे बातें करो। भगवान् का हुक्म है–मीठे बच्चे, काम महाशत्रु से खबरदार रहो।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं क्योंकि यहाँ समझने वाले ही आ सकते हैं। यहाँ कोई मनुष्य नहीं पढाते हैं। यह तो भगवान् पढाते हैं। भगवान की भी पहचान चाहिए। नाम कितना बड़ा है भगवान् और फिर कहते हैं नाम रूप से न्यारा। अब है भी जैसे प्रैक्टिकल में न्यारा। इतनी छोटी बिन्दी है, कहते भी हैं आत्मा स्टार है। जैसे वह सितारे छोटे तो नहीं हैं। यह आत्मा स्टार तो सच-सच छोटी है। बाप भी बिन्दी है। बाप तो सदा पवित्र है। उनकी महिमा भी है ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर.....। इसमें मूँझने की कोई बात नहीं। मुख्य बात है पावन बनने की। विकार पर ही झगड़ा होता है। पावन बनने लिए पतित-पावन को बुलाते हैं। तो जरूर पावन बनना पड़े ना, इसमें मूँझना नहीं है। जो कुछ पास्ट हुआ, विघ्न आदि पड़े, नई बात नहीं है। अबलाओं पर अत्याचार होने हैं। और सतसंगों में यह बातें नहीं होती हैं। कहाँ भी हंगामा नहीं होता। यहाँ हंगामा खास इस बात पर ही होता है। बाप पावन बनाने आते हैं तो कितना हंगामा होता है। बाप बैठ पढाते हैं। बाप कहते हैं मैं आता भी वानप्रस्थ अवस्था में हूँ। वानप्रस्थ अवस्था का कायदा भी यहाँ से ही शुरू होता है। तो वानप्रस्थ अवस्था वाले जरूर वानप्रस्थ में ही रहेंगे। वाणी से परे जाने के लिए बाप को पूरा याद कर पवित्र बनना है। पवित्र बनने का तरीका तो एक ही है। वापिस जाना है तो पवित्र जरूर बनना है। जाना तो सबको है। दो-चार को तो नहीं जाना है। सारी पतित दुनिया को बदली होना है। इस ड्रामा का किसको भी पता नहीं है। सतयुग से कलियुग तक यह ड्रामा का चक्र है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है और पावन भी जरूर बनना है। तब ही तुम शान्तिधाम और सुखधाम में जा सकेंगे। गायन भी है गति-सद्‌गति दाता एक ही है। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं और पवित्र होते हैं। कलियुग में हैं अनेक धर्म और अपवित्र हो पड़ते हैं। यह तो सहज बात है और बाप पहले से ही बता देते हैं। बाप तो जानते हैं कि हंगामा होगा जरूर। न जाने तो युक्तियां क्या रच कि चिट्ठी ले आओ कि हमको ज्ञान अमृत पीने जाना है। जानते हैं यह झगडा होने की भी ड्रामा में नूँध है। आश्चर्यवत् अच्छी तरह पहचान कर ज्ञान लेते, औरों को भी ज्ञान देते फिर भी अहो माया, उन्हों को तुम अपनी तरफ खींच लेती हो। यह सब ड्रामा में नूँध है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता है। मनुष्य सिर्फ अक्षर कह देते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। बच्चे, यह बहुत ऊंची पढ़ाई है। आंखें बहुत धोखेबाज है, बात मत पूछो। तमोप्रधान दुनिया है, कॉलेजों में भी

बहुत खराब हो पड़ते है। विलायत की तो बात नहीं पूछो। सतयुग में ऐसी बातें नहीं होती। वो लोग कह देते सतयुग को लाखों वर्ष हो गये हैं। बाप कहते हैं कल तुमको राज्य भाग्य देकर गये थे, सब कुछ गँवा दिया है। लौकिक में भी बाप कहते हैं इतनी तुमको मिलकियत दी, सब गँवा दी। ऐसे भी बच्चे निकल पड़ते हैं तो धक से मिलकियत को उड़ा देते हैं। बेहद का बाप भी कहते हैं मैं तुमको कितना धन देकर गया, कितना तुमको लायक विश्व का मालिक बनाया, अब ड्रामा अनुसार तुम्हारा क्या हाल हो गया है! तुम वही मेरे बच्चे हो ना। कितने तुम धनवान थे। यह है बेहद की बात जो तुम समझाते हो। एक कहानी है रोज कहता था शेर आया शेर आया। परन्तु शेर आता नहीं था। एक दिन सच-सच शेर आ गया। तुम भी कहते हो मौत आया कि आया तो कहते हैं यह रोज़ कहते हैं विनाश तो होता नहीं है। अब तुम जानते हो एक दिन विनाश होना जरूर है। उनकी फिर कहानी बना दी है। बेहद का बाप कहते हैं उन्हों का दोष नहीं है। कल्प पहले भी हुआ था। 5 हजार वर्ष की बात है। बाबा ने तो बहुत बार बोला है—यह भी तुम लिखते रहो कि 5 हज़ार वर्ष पहले भी हूबहू ऐसा म्युजियम खोला था, भारत में देवी-देवता धर्म की स्थापना करने। एकदम क्लयीर लिखो तो आकर समझें। बाबा आया हुआ है। बाप का दर्सा है ही स्वर्ग की बादशाही। भारत स्वर्ग था। पहले-पहले नई दुनिया में नया भारत हेविन था। हेविन सो हेल। यह बहुत बड़ा बेहद का ड्रामा है। इसमें सब पार्टधारी हैं। 84 जन्मों का पार्ट बजाए अब फिर हम वापिस जाते हैं। पहले हम मालिक थे फिर कंगाल बने। अब फिर बाबा की मत पर चलकर मालिक बनते हैं। तुम जानते हो हम श्रीमत पर कल्प-कल्प भारत को स्वर्ग बनाते हैं। पावन भी जरूर बनना है। पावन बनने कारण अत्याचार होते हैं। बाबा बच्चों को समझाते तो बहुत हैं फिर बाहर जाने से बेसमझ बन पड़ते हैं। आश्चर्यवत् सुनन्ती, कथन्ती, ज्ञान देवन्ती, अहो मम माया, वैसे का वैसा बन जाते हैं। और हो बदतर। काम विकार में फँसे और गिरे।

शिवबाबा इस भारत को शिवालय बनाते हैं, तो बच्चों को भी पुरूषार्थ करना चाहिए। इस विकार की बात पर कितना हंगामा हुआ, बहुत डर गये। समझा कोई काल है। कोई जादूगर है। यह बेहद का बाबा बहुत मीठा बाबा है। अगर सबको पता पड़ जाए तो ढेर की ढेर आ जाएं। पढ़ाई चल न सके। पढ़ाई में तो एकान्त चाहिए। सुबह को कितनी शान्ति रहती है। हम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं। याद के सिवाए विकर्म विनाश कैसे होंगे? यही फुरना लगा हुआ है। अब पतित कंगाल बन पड़े हैं फिर पावन सिरताज कैसे बनें। बाप तो बिल्कुल सहज बात समझाते हैं। हंगामा तो होगा।' डरने की कोई बात नहीं। बाप तो बिल्कुल साधारण है। ड्रेस आदि सब वही है। कुछ भी फ़र्क नहीं। सन्यासी तो फिर भी घरबार छोड़ गेरु कफनी पहन लेते हैं, इनकी तो वही पहरवाइस है। सिर्फ बाप ने प्रवेश किया और कोई फर्क नहीं। जैसे बाप बच्चों को प्यार से सम्भालते, पालन-पोषण करते है। वैसे यह भी करते हैं। कोई अहंकार की बात नहीं है। बिल्कुल साधारण चलते है। बाकी रहने के लिए मकान तो बनाना पड़े। वह भी साधारण। तुम्हें तो बेहद का बाप पढ़ाते है। बाप तो चुम्बक है। कम है क्या! बच्चियां पावन बनती है तो बहुत सुख मिलता है, वह तो कह देते कोई शक्ति है परन्तु शक्ति किसको कहा जाता है, वह भी समझते नहीं हैं। सर्वशक्तिमान् बाप है, वह

सबको ऐसा बनाते हैं। परन्तु सब एक जैसे तो बन न सकें। फिर तो फीचर्स भी एक जैसे हो जाएं। पद भी एक हो जाए। यह तो ड्रामा बना हुआ है। 84 जन्मों में तुमको वही 84 फीचर्स मिलते हैं जो कल्प पहले मिले थे। वही फीचर्स मिलते रहेंगे। इसमें फ़र्क नहीं हो सकता। कितनी समझने और धारण करने की बातें हैं। विनाश तो जरूर होना है। विश्व में शान्ति अभी तो हो नहीं सकती। आपस में लड़ते रहते हैं। मौत तो सिर पर खड़ा है। ड्रामा अनुसार एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना, बाकी धर्मों का विनाश होना है। एटॉमिक बाम्ब्स भी बनाते रहते हैं। नेचुरल कैलेमिटीज भी होगी। बड़े-बड़े पत्थर गिरेंगे जो सब मकान आदि टूट पड़ेंगे। कितना भी मजबूत मकान बनावें, फाउन्डेशन पक्का बनावें परन्तु रहना तो कुछ भी नहीं है। वह समझते हैं अर्थ क्वेक में भी गिर न सकें। परन्तु कहते हैं कितना भी करो, 100 मंज़िल बनाओ परन्तु विनाश होना है जरूर। यह कुछ भी रहेंगे नहीं।

तुम बच्चे यहाँ आये हो स्वर्ग का वर्सा पाने। विलायत में देखो क्या लगा पड़ा है। इसको रावण का पॉम्प कहा जाता है। माया कहती है—हम भी कम नहीं। वहाँ तो तुम्हारे हीरे-जवाहरों के महल होते हैं। सोने की सब चीज़ें होंगी। वहाँ तो दूसरा-तीसरा माड़ा (मंजिल) बनाने की जरूरत नहीं है। जमीन पर भी खर्चा नहीं लगता। सब कुछ मौजूद रहता है। तो बच्चों को बहुत पुरूषार्थ करना चाहिए। सबको पैगाम देना है। अच्छे-अच्छे पण्डे बन बच्चे आते हैं रिफ्रेश होने के लिए। यह भी ड्रामा में नूँध है। फिर भी आयेंगे। इतने सब आये हैं, पता नहीं इन सबको फिर देखूँगा वा नहीं? यह सब ठहर सकेंगे वा नहीं? आये तो ढेर के ढेर, फिर आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये। लिखते हैं बाबा हम गिर गये। अरे, की कमाई चट कर दी! फिर इतना ऊंच चढ़ नहीं सकते। यह है बड़े ते बड़ी अवज्ञा। वो लोग आर्डीनेन्स निकालते हैं—फलाने टाइम पर कोई भी बाहर न निकले, नहीं तो शूट कर देंगे। बाप भी कहते हैं विकार में जायेंगे तो शूट हो जायेंगे। भगवान् का हुक्म है ना - खबरदार रहना। आजकल गैस आदि की ऐसी चीजें निकाली हैं जो मनुष्य बैठे-बैठे फट से खलास हो जायें। यह सब ड्रामा में नूँध है क्योंकि पिछाडी में हॉस्पिटल आदि रहेंगे नहीं। झट आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। दुःख-क्लेष आदि सब छूट ज़ाता है। वहाँ क्लेष आदि होता ही नहीं। आत्मा स्वतन्त्र है। जिस समय पर आयु पूरी होती है तो शरीर छोड़ देती है। वहाँ काल होता नहीं। रावण ही नहीं तो काल फिर कहाँ से आयेगा। यह रावण के दूत हैं, भगवान् के नहीं। भगवान् के बच्चे तो बहुत प्यारे हैं। बाप कभी बच्चों का दुःख सहन कर न सके। ड्रामा अनुसार कल्प का 3 हिस्सा तुम सुख पाते हो। बाप जो इतना सुख देते हैं तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए। यह अन्तिम जन्म है, बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रह अन्तिम जन्म में पवित्र बनना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। बाप है सर्वशक्तिमान् अथॉरिटी। जो भी शास्त्र आदि पढ़ते हैं, उनको अथॉरिटी कहते हैं। अब बाप कहते हैं सबकी अथॉरिटी मैं हूँ। मैं इन ब्रह्मा द्वारा सब शास्त्रों का सार आकर सुनाता हूँ। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो पाप विनाश होंगे। बाकी पानी में स्नान करने से पावन कैसे होंगे! कहाँ चुल्लू पानी (थोड़ा-सा पानी) होगा तो उनको भी तीर्थ समझ झट स्नान करेंगे। इसको कहा जाता है तमोप्रधान निश्चय। यह तुम्हारा है सतोप्रधान

निश्चय। बाप समझाते हैं इसमें डरने की बात ही नहीं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात:-

सदा अपने को बाप के साथ रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? सदा साथ रहने वाले वा कभी-कभी साथ रहने वाले? क्या समझते हो? जब बाप का साथ छूटता है तो और कोई साथी बनते हैं? माया तो साथी बनती है ना! कितने जन्म माया के साथी रहे? बहुत रहे ना। और बाप का साथ प्रैक्टिकल में कितने समय का है? संगमयुग है ना और संगमयुग है भी सबसे छोटा युग। तो क्या करना चाहिये? सदा होना चाहिये क्योंकि सारे कल्प में कितना भी पुरुषार्थ करो तो भी साथ का अनुभव नहीं कर सकेंगे। तो इसका स्लोगन क्या है? (अभी नहीं तो कभी नहीं) यह याद रहता है? समय का भी महत्व याद रहे और स्वयं का भी महत्व याद रहे। दोनों महत्व वाले हैं ना! इस संगमयुग के समय को जीवन को—दोनों को हीरे तुल्य कहा जाता है। हीरे का मूल्य कितना होता है! तो इतना महत्व जानते हुए एक सेकण्ड भी संगमयुग के साथ को छोड़ना नहीं है। सेकण्ड गया, तो सेकण्ड नहीं लेकिन बहुत कुछ गया। ऐसी स्मृति रहती है? सारे कल्प की प्रालब्ध जमा करने का समय अब है। अगर सीज़न पर सीज़न को महत्व नहीं देते तो सदा के लिये वंचित रह जाते हैं। तो इस समय का महत्व है, ज़मा करने का समय है। अगर राज्य अधिकारी भी बनते हो तो भी अभी के जमा के हिसाब से और पूज्य भी बनते हो तो इस समय के जमा के हिसाब से। एक छोटे से जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध जमा करना है। ये याद रहता है? अच्छा।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. भगवान् ने जो पवित्र बनने का हुक्म दिया है, उसकी कभी भी अवज्ञा नहीं करनी है। बहुत-बहुत खबरदार रहना है। बापदादा दोनों की पालना का रिटर्न पवित्र बनकर दिखाना है।

२. ड्रामा की भावी अटल बनी हुई है, उसे जानकर सदा निश्चिंत रहना है। विनाश के पहले सबको बाप का पैगाम पहुँचाना है।

वरदान:- सन्तुष्टता के तीन सर्टीफिकेट ले अपने योगी जीवन का प्रभाव डालने वाले सहजयोगी भव

सन्तुष्टता योगी जीवन का विशेष लक्ष्य है, जो सदा सन्तुष्ट रहते और सर्व को सन्तुष्ट करते हैं उनके योगी जीवन का प्रभाव दूसरों पर स्वत: पड़ता है। जैसे साइन्स के साधनों का वायुमण्डल पर प्रभाव पड़ता है, ऐसे सहजयोगी जीवन का भी प्रभाव होता है। योगी जीवन के तीन सर्टीफिकेट हैं एक - स्व से सन्तुष्ट, दूसरा - बाप सन्तुष्ट और तीसरा - लौकिक अलौकिक परिवार सन्तुष्ट।

स्लोगन:-

जहान के नूर वह है जो बापदादा को अपने नयनों में समाने वाले हैं।

..तिरस्कार। पार्टी का कार्य साकार. शरीर द्वारा चलेगा

३८

बिन्दु (ज्ञान-सिन्धु परमात्मा) का बिन्दु (आत्मा) से मिलन

आज बाप-दादा मिलने के लिए आये हैं। मुरली तो बहुत सुनी है। सर्व मुरलियों का सार एक ही शब्द है – ''बिन्दु''। जिसमें सारा विस्तार समया हुआ है। बिन्दु तो बन गये हो ना? बिन्दु बनना, बिन्दु को याद करना और जो कुछ बीता उसको बिन्दु लगाना। यह सहज अनुभव होता है ना। यह अति सूक्ष्म और अति शक्तिशाली है। जिससे आप सब भी सूक्ष्म फरिश्ता बन, मास्टर सर्व शक्तिवान बन पार्ट बजाते हो। (सार तो सहज है ना या मुश्किल है? डबल फॉरेनर्स क्या समझते हैं? सहज है या डबल फॉरेनर्स को डबल इज़ी है? अब तो बाप-दादा सार स्वरूप देखना चाहते हैं।)

हरेक बच्चा ऐसा दिव्य दर्पण हो जिस दर्पण द्वारा हर मनुष्य आत्मा को अपने तीनों काल दिखाई दें। ऐसे त्रिकाल-दर्शन कराने वाले दर्पण हो? जिस दर्पण से, 'क्या था' और 'अभी क्या हूँ' और 'भविष्य में क्या मिलना है' – यह तीनों काल स्पष्ट दिखाई देने से सहज ही बाप से वर्सा लेने के लिए आकर्षित होते हुए आयेंगे। जब साक्षात्कार करेंगे अर्थात् जानेंगे और ऐसे जानेंगे जैसे स्पष्ट देखने का अनुभव हो। तो जब जानेंगे अर्थात् अनुभव करेंगे व देखेंगे कि अनेक जन्मों की प्यास व अनेक जन्मों की आशायें – मुक्ति में जाने की व स्वर्ग में जाने की, अभी पूर्ण होने वाली हैं तो सहज ही आकर्षित होते आयेंगे। (दो प्रकार की आत्मायें हैं। भक्त आत्मायें प्रेम में लीन होना चाहती हैं और कोई आत्मायें ज्योति में लीन होना चाहती हैं। दोनों ही लीन होना चाहती हैं। ऐसी आत्माओं को सेकेण्ड में बाप का परिचय, बाप की महिमा और प्राप्ति सुनाए सम्बन्ध की लवलीन अवस्था का अनुभव कराओ। लवलीन होंगे तो सहज ही लीन होने के राज़ को भी समझ जायेंगे। तो वर्तमान समय लवलीन का अनुभव कराओ।) भविष्य लीन का रास्ता बताओ। तो सहज ही प्रजा बनाने का कार्य हो जायेगा। ऐसे त्रिकालदर्शी बनाने का दिव्य दर्पण बने हो? ऐसे दिव्य दर्पण में अपने पुरूषार्थ के हर समय की रिज़ल्ट का चित्र खींचो कि समर्थ रहे या व्यर्थ में गये? व्यर्थ का पोज़ और समर्थ का पोज दोनों ही दिखाई देंगे। समर्थ का पोज़ क्या होगा? मास्टर सर्व शक्तिवान व दिलतख्तनशीन। व्यर्थ का पोज़ क्या होगा? सदा युद्ध के रूप में योद्धे का पोज़ होगा। तख्तनशीन नहीं लेकिन युद्ध स्थल पर खड़े हैं। तख्तनशीन सफलता मूर्त और युद्ध स्थल में खड़े हुए मेहनत की मूर्त होंगे। छोटी-सी बात में भी मेहनत ही करते रहेंगे। वह याद स्वरूप होंगे, वह फरियाद स्वरूप। ऐसे अपना भी स्वरूप देखते रहेंगे और दूसरे को भी तीनों काल का दर्शन करायेंगे। ऐसे दिव्य दर्पण बनो। समझा।

(आज तो डबल फॉरेनर्स और गुजरात से मिलना है। दोनों की डॉन्स करने में राशि एक ही है। वह भी नाचते हैं और यह भी खूब नाचते हैं। गुजरात वाले भी प्रेम स्वरूप हैं और डबल फॉरेनर्स भी प्यार के अनुभव के आधर पर भागते हैं। ज्ञान के साथ-साथ प्यार मिला है। उस रूहानी प्यार ने ही इन्हें प्रभु का बनाया है। डबल प्यार मिलता है।

एक बाप दूसरा परिवार का। तो प्यार के अनुभव ने परवाना बनाया है। प्यार विदेशियों के लिए चुम्बक का काम करता है। फिर सुनने व मरने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। यह मरना तो पसन्द है ना। ये मरना अर्थात् स्वर्ग में जाना। इसलिए मरने वाले के लिए कहते हैं स्वर्ग गया। वह मरने वाले नहीं जाते हैं, लेकिन संगम पर जो मरा, वह स्वर्ग गया। इसकी कॉपी करके जो देह से मरते हैं उसके लिए अखबार में डालते हैं कि फलाना स्वर्ग गया। तो मरना पसन्द है ना। अपनी मर्जी से मरे हो ना, मजबूरी से तो नहीं। यह सारी सभा मरजीवा बनने वालों की है। कहाँ साँस रूका हुआ तो नहीं है ना पुरानी दुनिया में। यही वन्डर है जो मरे हुए भी हँसते हैं। (फॉरेनर्स बाबा की बातों से हँस रहे थे)

आप लोगों की क्रिश्चियन फिलॉसाफी में भी है कि मुर्दो में आकर जान डालते हैं। पहले मुर्दे बने फिर जान पड़ गई। नया जन्म हो गया। इस मरने में मज़ा है, डर नहीं है।

दादियों से — वर्तमान समय महावीरों की वतन में विशेष महफिल लगती है। क्यों लगती है, वह जानती हो? आजकल बाप-दादा ने जैसे स्थापना में ब्रह्मा के सम्पूर्ण स्वरूप द्वारा साक्षात्कार कराने की सेवा की, ऐसे आजकल अष्ट रत्न सो इष्ट रत्न उनको भी शक्ति के रूप में साथ-साथ साक्षात्कार कराने की सेवा कराते हैं। स्थूल शरीर द्वारा साकारी ईश्वरीय सेवा में बिज़ी रहते हो लेकिन आजकल अनन्य श्रेष्ठ आत्माओं की डबल सेवा चल रही है। जैसे ब्रह्मा द्वारा स्थापना की वृद्धि हुई वैसे अभी शिव शक्ति के कम्बाइन्ड साक्षात्कार द्वारा साक्षात्कार और सन्देश मिलने का कार्य आपके सूक्ष्म शरीरों द्वारा भी हो रहा है। तो बाप-दादा अनन्य बच्चों को इस सेवा में भी सहयोगी बनाते हैं। इसलिए सूक्ष्म सेवा के प्रैक्टिकल प्लैन के कारण वहाँ महफिल लगती है। इसलिए महावीर बच्चों को कर्म करते भी किसी भी कर्मबन्धन से मुक्त सदा डबल लाईट रूप में रहना है। बाप ने सूक्ष्म वतन में इमर्ज किया, सेवा कराई — उसकी अनुभूति आगे चलकर बहुत करेंगे। डबल सेवा का पार्ट चल रहा है। बाप-दादा अनन्य बच्चों के संगठन द्वारा भक्तों को और वैज्ञानिकों को, दोनों को टचिंग कराने की सेवा कराते रहते हैं। उनमें अनन्य भक्ति के संस्कार भर रहे हैं जो आधाकल्प भक्ति मार्ग को चलाते रहेंगे। और वैज्ञानिकों को परिवर्तन करने और रिफाइन साधन बनाने में। जो साधन जैसे ही सम्पन्न होंगे तो उसका सुख सम्पूर्ण आत्मायें लेंगी। ये (वैज्ञानिक) नहीं ले सकेंगे। तो दोनों ही कार्य सूक्ष्म सेवा द्वारा हो रहे हैं। समझा।

सारे दिन में सूक्ष्म वतन वासी कितना समय होकर रहती हो? कि स्थूल सेवा ज्यादा है। आप लोग कितना भी बिज़ी रहो, बाप तो अपना कार्य करा ही लेते हैं। अपने सम्पूर्ण आकार का अनुभव किया है? जैसे साकार आकार हो गये, आप सबका भी सम्पूर्ण आकारी स्वरूप है। जो नम्बरवार हरेक साकार आकार बन जायेंगे। आकार बन करके सेवा करना अच्छा है या साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा करना अच्छा। एडवान्स पार्टी तो साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा कर रही है। लेकिन कोई कोई का पार्ट अन्त तक साकारी और आकारी रूप द्वारा भी चलता है। आपका क्या पार्ट है? किसका एडवान्स पार्टी का

पार्ट है, किसका अन्त: वाहक शरीर द्वारा सेवा का पार्ट है। दोनों पार्ट का अपना-अपना महत्व है। फर्स्ट सेकेण्ड की बात नहीं। वैराइटी पार्ट का महत्व है। एडवान्स पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह ज़ोर-शोर से अपने प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामीग्रामी हैं।

पार्टियों से – सभी सदा मणी के समान चमकते हो? मणी सदा चमकती है ना। एक-एक मणी की कितनी वैल्यु होती है। वो अमूल्य रत्न हैं जिसकी कीमत आज के मानव कुछ कर नहीं सकते क्योंकि बाप के बन गये ना, जो बाप के बने वह अमूल्य रत्न हो गये। सारे विश्व के अन्दर सर्वश्रेष्ठ आत्मा हो गये। इतनी खुशी रहती है? जैसे शरीर का आक्यूपेशन सदा याद रहता है, वैसे आत्मा का आक्यूपेशन भी कभी भूलना नहीं चाहिए। संगमयुग का श्रेष्ठ भाग्य ही है – बाप के अमूल्य रत्न बनना। इस भाग्य को भूल कैसे सकते हैं। सभी सेवा में सहयोग देते हैं। ऑलराउण्ड सेवाधारी। सेवा का चान्स मिलना, यह भी ड्रामा में एक लिफट है। जितनी यज्ञ सेवा करते हैं उतना प्राप्तियों का प्रसाद स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। निर्विघ्न रहते हैं। एक बारी सेवा की और हज़ार बारी सेवा का फल प्राप्त हो गया। सदा स्थूल सूक्ष्म लंगर लगा रहे। किसी को सन्तुष्ट करना यह सबसे बड़ी सेवा है। मेहमान निवाज़ी करना, यह सबसे बड़ा भाग्य है, कहते भी हैं मेहमान भाग्यशाली के घर में आते हैं।

2. सभी माया को जानते हुए माया से अनजान रहते हो? जैसे देवतायें 'माया' के वार से अनजान हैं। माया को ऐसे समाप्त कर दो जो नामोनिशान ही खत्म हो जाए। माया कभी मेहमान तो नहीं बनती है ना। दरवाज़ा बन्द है? अगर किला मज़बूत होता है तो दुश्मन नहीं आता है। ऊंच स्टेज पर रहना अर्थात् ऊंची दीवार। कभी भी नीचे की स्टेज में नहीं आना। जब बाप के बन गये तो बाप का बनना अर्थात् मेरा पन समाप्त होना। मोह की उत्पत्ति का आधार है – मेरा। जब मेरा ही नहीं तो मोह कहाँ से आया। जब अपने को हद का रचयिता समझते हो तो विकारों की उत्पत्ति होती है। सदा भाई-भाई की स्मृति में रहो तो कोई भी विकार उत्पन्न नहीं हो सकते।

वरदान:- पुरुषार्थ और योग के प्रयोग द्वारा सबकी वृत्तियों को चेंज करने वाले सफलतामूर्त भव

पुरुषार्थ करना ड्रामा में नूंध है और सफलता प्राप्त होना भी निश्चित है। लेकिन जब पुरुषार्थ में ज्यादा लग जाते हो, योग का प्रयोग कम करते हो तो सफलता थोड़ा दूर हो जाती है। पुरुषार्थ और योग के प्रयोग से सबकी वृत्तियों को परिवर्तन करना - यह साथ-साथ हो तो सफलतामूर्त बन जायेंगे। एक दृढ़ निश्चय और दूसरा योग के प्रयोग से किसी की भी बुद्धि को परिवर्तन कर सकते हो।

स्लोगन:-

सबसे श्रेष्ठ भाग्य उनका है जिन्हें डायरेक्ट भगवान द्वारा पालना, पढाई और श्रेष्ठ जीवन की श्रीमत मिलती है।

ओम् शान्ति 19.3.99 मधुबन

प्यारे-प्यारे वरदाता बाप के सर्व वरदानी-मूर्त, सदा स्नेही सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनें,

मधुर स्नेह भरी याद स्वीकार हो।

बाद समाचार - प्यारे अव्यक्त बापदादा की मुरली से आप सबने सुन लिया होगा कि दादी का छोटा सा आपरेशन होना है, बाबा ने यह समाचार सुनकर कहा कि बच्ची यह तो कुछ भी नहीं है। और जब ग्लोबल हास्पिटल में जाने के लिए बुद्धवार 17 तारीख को प्यारे बापदादा के कमरे में छुट्टी लेने गई तो बाबा मुस्कराते हुए बोले बच्ची यह भी छू मंत्र की तरह हिसाब चुक्तू हो जायेगा, आप तो हो ही सदा बापदादा के नयनों में समाई हुई, बापदादा की छत्रछाया के नीचे। फिर सतगुरूवार 18 तारीख ग्लोबल हास्पिटल के आपरेशन थियेटर में जब जाना हुआ तो बाबा ने बहुत मीठे शब्दों में सन्देश दिया कि बच्ची आपरेशन थियेटर में नहीं, आलमाइटी थियेटर में जा रही हो। और थियेटर में जो सामने बड़ी लाइट होती, वह जैसे बाबा की सर्चलाइट बच्ची पर पड़ रही है। बाबा की करेन्ट, बाबा की सकाश तो बच्ची को सदा मिलती ही रहती है। साथ-साथ बेहद परिवार के दुआओं की भी छत्रछाया है। तो बच्ची सिर्फ निमित्त मात्र थियेटर में जाकर वापस आ जायेगी। यह तो कुछ भी नहीं है।

ऐसे बाबा का मधुर सन्देश सुनते सर्व से नयन मुलाकात करते थियेटर में जाना हुआ, थोड़े समय में ही डाक्टर्स ने अपना कार्य पूरा किया। सच तो यह भी एक खेल जैसा हुआ। अभी कोई तकलीफ नहीं है। आप सब बाबा के बच्चों की शुभ भावनाओं का योगदान शुभ दुआयें तो सदा मिलती ही रहती हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद...

बी.के.प्रकाशमणि

दादी जी के प्रति बापदादा का सन्देश (गुल्जार दादी) 20-3-99

दादी आपको बाबा ने सोने-चांदी की थालियां भर-भरकर यादप्यार दिया है। बाबा ने एक दृश्य दिखाया जिसमें एक बहुत सुन्दर लाइट का सफेद चबूतरा था, उस पर दादी जी बैठी हैं। और ऊपर बादलों में बहुत सारे ब्राह्मण थे, सभी के हाथों से अलग-अलग तरह की लाइट निकल रही थी, जिससे दादी जी के ऊपर एक सुन्दर छतरी जैसी बन गई थी। जिसमें किसी के हाथ से सोने की, किसी के हाथ से मोतियों की, किसी के हाथ से फूलों की लड़ियों जैसी लाइट निकल रही थी। बाबा ने कहा - यह सभी ब्राह्मण आत्माओं की दुआयें दादी को मिल रही हैं।

उसके बाद बाबा ने एक दृश्य दिखाया - जिसमें ब्रह्मा बाबा का हाथ था जिससे सफेद पर्दे पर बाबा लिख रहा था - ''समीप और समान भव''।

मुरली नं० – (३९)

4-5-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अभी ड्रामा का चक्र पूरा होता है, तुम्हें क्षीरखण्ड बनकर नई दुनिया में जाना है, वहाँ सब क्षीरखण्ड हैं, यहाँ लूनपानी हैं"

प्रश्न:- तुम त्रिनेत्री बच्चे किस नॉलेज को जान कर त्रिकालदर्शी बन गये हो?
उत्तर:- तुम्हें अभी सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी की नॉलेज मिली है, सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक की हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम जानते हो। तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला कि आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। संस्कार आत्मा में हैं। अब बाप कहते हैं–बच्चे, नाम-रूप से न्यारा बनो। अपने को आत्मा अशरीरी समझो।

गीत:- धीरज धर मनुवा ....

ओम् शान्ति। कल्प-कल्प बच्चों को कहा जाता है और बच्चे जानते हैं, दिल होती है कि जल्दी सतयुग हो जाए तो इस दु:ख से छूट जायें। परन्तु ड्रामा बहुत धीरे-धीरे चलने वाला है। बाप धीरज देते हैं बाकी थोड़े रोज़ हैं। बड़ो-बड़ों द्वारा भी आवाज़ सुनते रहेंगे। दुनिया बदलनी है। जो भी बड़े-बड़े हैं पोप जैसे वह भी कहते हैं दुनिया बदलने वाली है। अच्छा फिर पास कैसे होगी? इस समय सब लूनपानी हैं। अभी हम क्षीरखण्ड हो रहे हैं। उस तरफ दिन-प्रतिदिन लूनपानी होते जाते हैं। आपस में लड़ झगड़ कर खत्म होने वाले हैं, तैयारियाँ हो रही हैं। यह ड्रामा का चक्र अब पूरा होता है। पुरानी दुनिया पूरी होती है। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। नई दुनिया सो पुरानी, पुरानी सो नई दुनिया फिर बनेगी। इसको दुनिया का चक्र कहा जाता है जो फिरता रहता है। ऐसे नहीं, लाखों वर्ष बाद पुरानी दुनिया नई होगी। नहीं। तुम बच्चे अच्छी रीति जान चुके हो, भक्ति बिल्कुल ही अलग है। भक्ति का कनेक्शन रावण के साथ है। ज्ञान का कनेक्शन राम के साथ है। यह तुम अभी समझ रहे हो। अभी बाप को बुलाते भी हैं–हे पतित-पावन आओ, आकर नई दुनिया स्थापन करो। नई दुनिया में जरूर सुख होता है। अब बच्चे छोटे अथवा बड़े सब जान गये हैं कि अभी घर चलना है। यह नाटक पूरा होता है। हम फिर से सतयुग में जायेंगे फिर 84 जन्मों का चक्र लगाना है। स्व आत्मा को दर्शन होता है–सृष्टि चक्र का अर्थात् आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, उसको कहा जाता है त्रिनेत्री। अभी तुम त्रिनेत्री हो और सभी मनुष्यों को यह स्थूल नेत्र हैं। ज्ञान का नेत्र कोई को नहीं है। त्रिनेत्री बनें तब त्रिकालदर्शी बनें क्योंकि आत्मा को ज्ञान मिलता है ना। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। संस्कार आत्मा में रहते हैं। आत्मा अविनाशी है। अब बाप कहते हैं नाम-रूप से न्यारा बनो। अपने को अशरीरी समझो। देह नहीं समझो। यह भी जानते हो हम आधाकल्प से परमात्मा को याद करते आये हैं। इसमें जब जास्ती दु:ख होता है तब जास्ती याद करते हैं, अभी कितना दु:ख है। आगे इतना दु:ख नहीं था। जबसे बाहर वाले आये हैं तब से यह राजायें लोग भी आपस में लड़े हैं। जुदा-जुदा हुए हैं। सतयुग में तो एक ही राज्य था।

अभी हम सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक हिस्ट्री-जॉग्राफी समझ रहे हैं। सतयुग-त्रेता में एक ही राज्य था। ऐसे एक ही डिनायस्टी कोई की होती नहीं। क्रिश्चियन में भी देखो फूट

है, वहाँ तो सारा विश्व एक के हाथ में रहता है। वह सिर्फ सतयुग-त्रेता में ही होता है। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी अभी तुम्हारी बुद्धि में है। और कोई सतसंग में हिस्ट्री-जॉग्राफी अक्षर नहीं ... ही सुनते हैं। यहाँ वह बातें हैं नहीं। यहाँ है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। तुम्हारी बुद्धि में है ऊंच ते ऊंच हमारा बाप है। बाप का शुक्रिया है जिसने सारा ज्ञान सुनाया है। एक आत्माओं का झाड़ है, दूसरा है मनुष्यों का झाड़। मनुष्यों के झाड़ में ऊपर में कौन है? ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा को ही कहेंगे। यह जानते हैं ब्रह्मा मुख्य है परन्तु ब्रह्मा के पीछे क्या हिस्ट्री-जॉग्राफी है, यह कोई नहीं जानते। अभी तुम्हारी बुद्धि में है – ऊंच ते ऊंच बाप रहते भी हैं परमधाम में। फिर सूक्ष्मवतन का भी तुमको मालूम है। मनुष्य ही फरिश्ता बनते हैं, इसलिए सूक्ष्मवतन दिखाया है। तुम आत्मायें जाती हो, शरीर तो सूक्ष्मवतन में नहीं जायेगा। जाते कैसे हैं, उनको कहा जाता है तीसरा नेत्र। दिव्य-दृष्टि अथवा ध्यान भी कहते हैं। तुम ध्यान में ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को देखते हो। लोग दिखलाते हैं – शंकर के आंख खोलने से विनाश हो जाता है। अब इनसे तो कोई समझ न सके। अभी तुम जानते हो विनाश तो ड्रामा अनुसार होना ही है। आपस में लड़कर विनाश हो जायेंगे। बाकी शंकर क्या करते हैं! यह ड्रामा अनुसार नाम रख दिया है। तो समझाना पड़ता है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर तीन हैं। स्थापना के लिए ब्रह्मा को रखा है। पालना के लिए विष्णु को, विनाश के लिए शंकर को रख दिया है। वास्तव में यह बना बनाया ड्रामा है। शंकर का पार्ट कुछ भी है नहीं। ब्रह्मा और विष्णु का पार्ट तो सारे कल्प में है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मा के भी 84 जन्म पूरे हुए तो विष्णु के भी पूरे हुए। शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है। इसलिए शिव और शंकर को फिर मिला दिया है। वास्तव में शिव का तो बहुत पार्ट है, पढ़ाते हैं।

भगवान को कहा जाता है नॉलेजफुल। अगर वह प्रेरणा से कार्य करता तो सृष्टि चक्र का ज्ञान कैसे देता! इसलिए बाप समझाते हैं–बच्चे, प्रेरणा की तो कोई बात ही नहीं। बाप को तो आना पड़ता है। बाप कहते–बच्चे, मेरे में सृष्टि चक्र का ज्ञान है। ... मिला हुआ है। इसलिए मुझे ही ज्ञान सागर नॉलेजफुल कहते हैं। नॉलेज किसको कहा जाता है, वह तो जब मिले तब पता पड़े। मिला ही नहीं है तो अर्थ का कैसे मालूम पड़े। आगे तुम भी कहते थे ईश्वर प्रेरणा करते हैं। वह सब कुछ जानते हैं। हम जो पाप करते हैं, ईश्वर देखते हैं। बाबा कहते हैं यह धन्धा मैं नहीं करता हूँ। यह तो जैसा कर्म करते हैं उसकी खुद ही सज़ा भोगते हैं, मैं किसको नहीं देता हूँ। न कोई प्रेरणा से सजा दूँगा। मैं प्रेरणा से करूँ तो जैसे मैंने सज़ा दी। कोई को कहना कि इनको मारो, यह भी दोष है। कहने वाला भी फँस पड़े। शंकर प्रेरणा दे तो वह भी फँस जाए। बाप कहते हैं मैं तो तुम बच्चों को सुख देने वाला हूँ। तुम मेरी महिमा करते हो - बाबा आकर दुःख हरो। मैं थोड़ेही दुःख देता हूँ।

अब तुम बच्चे बाप के सम्मुख बैठे हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। यहाँ डायरेक्ट भासना आती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं। इनको मेला कहा जाता है। सेन्टर्स पर तुम जाते हो वहाँ कोई आत्माओं, परमात्मा का मेला नहीं कहेंगे। आत्माओं परमात्मा का मेला यहाँ लगता है। यह भी तुम जानते हो मेला लगा हुआ है। बाप बच्चों के बीच में आये हैं। आत्मायें सब यहाँ हैं। आत्मा ही याद करती है कि बाप आये। यह सबसे अच्छा मेला है। बाप आकर सब

आत्माओं को रावण राज्य से छुड़ा देते हैं। ये मेला अच्छा हुआ ना, जिससे मनुष्य पारसबुद्धि बनते हैं। उन मेलों पर तो मनुष्य मैले हो जाते हैं। पैसे बरबाद करते रहते हैं, मिलता कुछ भी नहीं। उनको पाप्यानी आसुरी मेला कहा जायेगा। यह है ईश्वरीय मेला। रात-दिन का फर्क है। तुम भी आसुरी मेले में थे। अभी हो ईश्वरीय मेले में। तुम ही जानते हो। बाप आया हुआ सब जान जाएं तो पता नहीं कितनी भीड़ हो जाए। इतने मकान आदि रहने के लिए कहाँ से लायेंगे! पिछाड़ी में गाते हैं ना – अहो प्रभु तेरी लीला। कौन-सी लीला? सृष्टि के बदलने की लीला। यह है सबसे बड़ी लीला। पुरानी दुनिया खत्म होने से पहले नई दुनिया की स्थापना होती है। इसलिए हमेशा किसको भी समझाओ तो पहले स्थापना, विनाश फिर पालना कहना है। जब स्थापना पूरी होती है तब फिर विनाश शुरू होता है, फिर पालना होगी। तो तुम बच्चों को यह खुशी रहती है – हम स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण हैं। फिर हम चक्रवर्ती राजा बनते हैं। यह कोई को पता नहीं, इन देवताओं का राज्य कहाँ गया। नाम-निशान गुम हो गया है। देवता के बदले अपने को हिन्दू कह देते हैं। हिन्दुस्तान में रहने वाले हिन्दू हैं। लक्ष्मी-नारायण को तो ऐसे कभी नहीं कहेंगे। उन्हों को तो देवता कहा जाता है। तो अब इस मेले में ड्रामा अनुसार तुम आये हो। यह ड्रामा में नूँध है। धीरे-धीरे वृद्धि होती रहेगी। तुम्हारा जो कुछ पार्ट चल रहा है फिर कल्प बाद चलेगा। यह चक्र फिरता रहता है। फिर रावण राज्य में आसुरी पालना होगी। तुम अभी ईश्वरीय बच्चे हो फिर दैवी बच्चे फिर क्षत्रिय बनेंगे। तुम जो अपवित्र प्रवृत्ति वाले बन गये थे सो फिर पवित्र प्रवृत्ति वाले बनते हो। हैं तो यह भी दैवी गुण वाले मनुष्य ना। बाकी इतनी भुजायें आदि दे दी हैं, विष्णु कौन है, यह कोई बता न सके। महालक्ष्मी की भी पूजा करते हैं। जगत अम्बा से कभी धन नहीं मांगते हैं। धन जास्ती मिल गया तो कहेंगे लक्ष्मी की पूजा की इसलिए उसने भण्डारा भर दिया। यहाँ तो तुम जगत अम्बा से पा रहे हो परमपिता परमात्मा शिव द्वारा, देने वाला वह है। तुम बच्चे बापदादा से भी लक्की हो। देखो, जगदम्बा का कितना मेला लगता है, ब्रह्मा का इतना नहीं। ब्रह्मा को तो एक ही जगह बिठा दिया है, अजमेर में बड़ा मन्दिर है। देवियों के मन्दिर बहुत हैं क्योंकि इस समय तुम्हारी बहुत महिमा है। तुम भारत की सेवा करते हो। पूजा भी तुम्हारी जास्ती होती है। तुम लकी हो। जगत अम्बा के लिए ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि वह सर्वव्यापी है। तुम्हारी महिमा होती रहती है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी सर्वव्यापी नहीं कहते, मुझे कह देते कण-कण में है, कितनी ग्लानि करते हैं।

तुम्हारी मैं कितनी महिमा बढ़ाता हूँ। भारत माता की जय कहते हैं ना। भारत माता तो तुम हो ना। धरनी नहीं। धरनी आदि जो अब तमोप्रधान है, सतयुग में सतोप्रधान हो जाती है इसलिए कहते हैं देवताओं के पैर पतित दुनिया में नहीं आते। जब सतोप्रधान धरनी होती है तब आते हैं। अभी तुमको सतोप्रधान बनना है। श्रीमत पर चलते बाप को याद करते रहेंगे तो अन्त मते सो गते पायेंगे। यह ख्याल रखना है। याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत मिलती रहती है। सतयुग में तो तुम्हारी आत्मा पवित्र कंचन हो जाती है तो शरीर भी कंचन मिलता है। सोने में खाद पड़ती है तो फिर जेवर भी ऐसा बनता है। आत्मा झूठी तो शरीर भी झूठा। खाद पड़ने से सोने का मूल्य भी कम हो जाता है। तुम्हारा मूल्य अब कुछ भी नहीं है। पहले तुम विश्व

के मालिक 24 कैरेट थे। अभी 9 कैरेट कहेंगे। यह बाप बच्चों से रूहरिहान करते हैं! बच्चों को बैठ बहलाते हैं। जो तुम सुनते-सुनते चेंज हो जाते हो। मनुष्य से देवता बन जाते हो। वहाँ हीरे-जवाहरातों के महल होंगे, स्वर्ग तो फिर क्या! वहाँ के शूबीरस आदि भी तुम पी कर आते हो। यहाँ के ... होते हैं। यहाँ के ... कुछ है नहीं। अभी तुम प्रैक्टिकल में जाते हो। यह है आत्मा और परमात्मा का मेला, इनसे तुम उज्जवल बनते हो।

तुम बच्चे जब यहाँ आते हो तो फ्री हो, घर-बार धन्धे आदि का कोई फुरना नहीं है। तो यहाँ तुमको याद की यात्रा में रहने का चांस अच्छा है। वहाँ तो घर-घाट आदि याद आता रहेगा। यहाँ तो कुछ है नहीं। रात को दो बजे उठकर यहाँ बैठ जाओ। सेन्टर्स पर तो रात को तुम जा नहीं सकते। यहाँ तो सहज है। शिवबाबा की याद में आकर बैठो, और कोई याद न आये। यहाँ तुमको मदद भी मिलेगी। सवेरे सो जाओ फिर सवेरे उठो। 3 से 5 बजे तक आकर बैठो। बाबा भी आ जायेंगे, बच्चे खुश होंगे। बाबा है योग सिखलाने वाला। यह भी सीखने वाला है तो दोनों बाप और दादा आ जायेंगे फिर यहाँ और वहाँ योग में बैठने के फर्क का भी पता पड़ेगा। यहाँ कुछ भी याद नहीं पड़ेगा, इसमें फायदा बहुत है। बाबा राय देते हैं — यह बहुत अच्छा हो सकता है। अब देखें बच्चे उठ सकते हैं? कइयों को सवेरे उठने का अभ्यास है। तुम्हारा सन्यास है 5 विकारों का और वैराग्य है सारी पुरानी दुनिया से। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अभी सृष्टि बदलने की लीला चल रही है इसलिए स्वयं को बदलना है। क्षीरखण्ड होकर रहना है।

२. सवेरे उठकर एक बाप की याद में बैठना है, उस समय और कोई भी याद न आये। 5 विकारों तथा पुरानी दुनिया से बेहद का वैरागी बनना है।

वरदान:- रहमदिल बन बीती हुई बातों को स्वयं में समाने वाले शुभ चिंतक भव

यदि किसी की बीती हुई कमजोरी की बातें कोई सुनाये तो शुभ भावना से किनारा कर लो। व्यर्थ चिंतन या कमजोरी की बातें आपस में नहीं चलनी चाहिए। बीती हुई बातों को रहमदिल बनकर समा लो। समाकर शुभ भावना से उस आत्मा के प्रति मन्सा सेवा करते रहो। भले संस्कारों के वश कोई उल्टा कहता, करता या सुनता है तो भी उसे परिवर्तन करो। एक से दो तक, दो से तीन तक ऐसे व्यर्थ बातों की माला न हो जाए। ऐसा अटेन्शन रखना अर्थात् शुभ चिंतक बनना।

स्लोगन:-

कर्म करते करन-करावनहार बाप की स्मृति रहे तो स्व-पुरुषार्थ और योग का बैलेन्स ठीक रहेगा।

40 1) पुरानी दुनिया को भूलना - यह शरीर छोड़ नई दुनिया में जायेंगे।
2) अनन्य बच्चे भी पूरा समझते नहीं। बाप जो है जैसा है उनको जानने में बड़ी बुद्धि चाहिए।
3) कृष्ण है नम्बरवन - उनको भी भगवान नहीं कह सकते।

1-12-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति बापदादा मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप जो है, जैसा है, उसे यथार्थ पहचान कर याद करो, इसके लिए अपनी बुद्धि को विशाल बनाओ" (a) ४०

प्रश्न:- बाप को गरीब-निवाज़ क्यों कहा गया है?

उत्तर:- क्योंकि इस समय जब सारी दुनिया गरीब अर्थात् दु:खी बन गई है तब बाप आये हैं सबको दु:ख से छुड़ाने। बाकी किस पर तरस खाकर कपड़े दे देना, पैसा दे देना वह कोई कमाल की बात नहीं। इससे वह कोई साहूकार नहीं बन जाते। ऐसे नहीं मैं कोई इन भीलों को पैसा देकर गरीब-निवाज़ कहलाऊंगा। मैं तो गरीब अर्थात् पतितों को, जिनमें ज्ञान नहीं है, उन्हें ज्ञान देकर पावन बनाता हूँ।

गीत:- यही बहार है दुनिया को भूल जाने की.......

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना। बच्चे जानते हैं गीत तो दुनियावी मनुष्यों ने गाया है। अक्षर बड़े अच्छे हैं, इस पुरानी दुनिया को भुलाना है। आगे ऐसे नहीं समझते थे। कलियुगी मनुष्यों को भी समझ में नहीं आता है कि नई दुनिया में जाना होगा तो जरुर पुरानी दुनिया को भूलना होगा। भल इतना समझते हैं पुरानी दुनिया को छोड़ना है परन्तु वह समझते हैं अजुन बहुत समय पड़ा है। नई सो पुरानी होगी, यह तो समझते हैं परन्तु लम्बा टाइम डालने से भूल गये हैं। तुमको अब स्मृति दिलाई जाती है, अभी नई दुनिया स्थापन होती है इसलिए पुरानी दुनिया को भूलना है। भूल जाने से क्या होगा? हम यह शरीर छोड़ नई दुनिया में जायेंगे। परन्तु अज्ञान काल में ऐसी-ऐसी बातों के अर्थ पर किसका ध्यान नहीं जाता। जिस प्रकार बाप समझाते हैं, ऐसे कोई भी समझाने वाला नहीं है। तुम इनके अर्थ को समझ सकते हो। यह भी बच्चे जानते हैं – बाप है बहुत साधारण। अनन्य, अच्छे-अच्छे बच्चे भी पूरा समझते नहीं हैं। भूल जाते हैं कि इनमें शिवबाबा आते हैं। कोई भी डायरेक्शन देते हैं तो समझते नहीं कि यह शिवबाबा का डायरेक्शन है। शिवबाबा को सारा दिन जैसे भूले हुए हैं। पूरा न समझने कारण वह काम नहीं करते। माया याद करने नहीं देती। स्थाई वह याद ठहरती नहीं। मेहनत करते-करते पिछाड़ी में आखिर वह अवस्था होनी जरुर है। ऐसा कोई भी नहीं जो इस समय कर्मातीत अवस्था को पा ले। बाप जो है, जैसा है उनको जानने में बडी बुद्धि चाहिए। (a)

(a) तुमसे पूछेंगे बापदादा गर्म कपड़े पहनते हैं? कहेंगे दोनों को पड़े हुए हैं। शिवबाबा कहेंगे मैं थोड़ेही गर्म कपड़े पहनूँगा। मुझे ठण्डी नहीं लगती। हाँ, जिसमें प्रवेश किया है उनको ठण्डी लगेगी। मुझे तो न भूख, न प्यास कुछ नहीं लगता। मैं तो निर्लेप हूँ। सर्विस करते हुए भी इन सब बातों से न्यारा हूँ। मैं खाता, पीता नहीं हूँ। जैसे एक साधू भी कहता था ना, मैं न खाता हूँ, न पीता हूँ.... उन्होंने फिर आर्टीफीशियल वेश धारण कर लिया है। देवताओं के नाम भी तो बहुतों ने रखे हैं। और कोई धर्म में देवी-देवता बनते नहीं हैं। यहाँ कितने मन्दिर हैं। बाहर में तो एक शिवबाबा को ही मानते हैं। दुनिया भी कहती है फादर तो एक होता है। फादर से ही वर्सा मिलता है। तुम बच्चों की बुद्धि में है - कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाबा से वर्सा मिलता है। जब हम सुखधाम में जाते हैं तो बाकी सब शान्तिधाम में रहते हैं। तुम्हारे

में भी यह समझ नम्बरवार है। अगर ज्ञान के विचारों में रहते हैं तो उन्हों के बोल ही वह निकलेंगे। तुम रुप-बसन्त बन रहे हो – बाबा द्वारा। तुम रुप भी हो और वसन्त भी हो। दुनिया में और कोई कह न सके कि हम रुप-बसन्त हैं। तुम अभी पढ़ रहे हो, पिछाड़ी तक नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पढ लेंगे। शिवबाबा हम आत्माओं का बाप है ना। यह भी दिल से लगता तो है ना। भक्ति मार्ग में थोडेही दिल से लगता है। यहाँ तुम सम्मुख बैठे हो। समझते हो बाप फिर इस समय ही आयेंगे फिर कोई और समय बाप को आने की दरकार ही नहीं। सतयुग से त्रेता तक आना नहीं है। द्वापर से कलियुग तक भी आने का नहीं है। वह आते ही हैं कल्प के संगमयुग पर। बाप है भी गरीब निवाज़ अर्थात् सारी दुनिया जो दुःखी गरीब हो जाती है उनका बाप है। इनकी दिल में क्या होगा? हम गरीब निवाज़ हैं। सबका दुःख अथवा गरीबी मिट जाए। वो तो सिवाए ज्ञान से कम हो न सके। बाकी कपड़ा आदि देने से कोई साहूकार तो नहीं बन जायेंगे ना। करके गरीब को देखने से दिल होगी उनको कपडा दे दें क्योंकि याद पडता है ना – मैं गरीब निवाज हूँ। साथ-साथ यह भी समझता हूँ – मैं गरीब निवाज कोई इन भीलों के लिए ही नहीं हूँ। मैं गरीब निवाज़ हूँ जो बिल्कुल ही पतित हैं उन्हों को पावन बनाता हूँ। मैं हूँ ही पतित-पावन। वह तो अपने को गरीब समझते हैं। विचार चलता है, गरीब निवाज हूँ परन्तु पैसे आदि कैसे दूँ। पैसे आदि देने वाले तो दुनिया में बहुत हैं। बहुत फन्ड्स निकालते हैं। जो फिर अनाथ आश्रम में भेज देते हैं। जानते हैं अनाथ रहते हैं अर्थात् जिनका नाथ नहीं। अनाथ माना गरीब। तुम्हारा भी नाथ नहीं था अर्थात् बाप नहीं था। तुम गरीब थे, ज्ञान नहीं था। जो रुप-वसन्त नहीं, वह गरीब अनाथ हैं। जो रुप बसन्त हैं उनको सनाथ कहा जाता है। सनाथ साहूकार को, अनाथ गरीब को कहा जाता है। तुम्हारी बुद्धि में है सब गरीब हैं, कुछ उन्हों को दे देवें। बाप गरीब-निवाज़ है तो कहेंगे ऐसी चीज़ें देवें जिससे सदा के लिए साहूकार बन जायें। बाकी यह कपडा आदि देना तो कॉमन बात है। उनमें हम क्यों पड़ें। हम तो उनको अनाथ से सनाथ बना देवें। भल कितना भी कोई पद्मपति है, परन्तु वह भी सब अल्पकाल के लिए हैं। यह है ही अनाथों की दुनिया। भल पैसे वाले हैं, वह भी अल्पकाल के लिए। वहाँ हैं सदैव सनाथ। वहाँ ऐसे कर्म नहीं कूटते। यहाँ कितने गरीब हैं। जिनको धन है, उन्हों को तो अपना नशा चढ़ा रहता है – हम स्वर्ग में हैं। परन्तु हैं नहीं, यह तुम जानते हो। इस समय कोई भी मनुष्य सनाथ नहीं है, सब अनाथ हैं। यह पैसे आदि तो सब मिट्टी में मिल जाने वाले हैं। मनुष्य समझते हैं हमारे पास इतना धन है जो पुत्र-पोत्रे खाते रहेंगे। परम्परा चलता रहेगा। परन्तु ऐसे चलना नहीं है। यह तो सब विनाश हो जायेगा। इसलिए तुमको इस सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य है।

तुम जानते हो नई दुनिया को स्वर्ग, पुरानी दुनिया को नर्क कहा जाता है। हमको बाबा नई दुनिया के लिए साहूकार बना रहे हैं। यह पुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी है। बाप कितना साहूकार बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण साहूकार कैसे बनें? क्या कोई साहूकार से वर्सा मिला वा लड़ाई की? जैसे दूसरे राजगद्दी पाते हैं, क्या ऐसे राजगद्दी पाई? वा कर्मों अनुसार यह धन मिला? बाप का कर्म सिखलाना तो बिल्कुल ही न्यारा है। कर्म-अकर्म-विकर्म अक्षर भी क्लीयर है ना। शास्त्रों में कुछ अक्षर हैं, आटे में नमक जितने रह जाते हैं। कहाँ इतने करोड

मनुष्य, बाकी 9 लाख रहते हैं। क्वार्टर परसेन्ट भी नहीं हुआ। तो इसको कहा जाता है आटे में नमक। दुनिया सारी विनाश हो जाती है। बहुत थोड़े संगमयुग में रहते हैं। कोई पहले से शरीर छोड़ जाते हैं। वह फिर रिसीव करेंगे। जैसे मुगली बच्ची थी, अच्छी थी तो जन्म बिल्कुल अच्छे घर में लिया होगा। नम्बरवार सुख में ही जन्म लेने हैं। सुख तो उनको देखना है, थोड़ा दुःख भी देखना है। कर्मातीत अवस्था तो किसकी हुई नहीं है। जन्म बड़े सुखी घर में जाकर लेंगे। ऐसे मत समझो यहाँ कोई सुखी घर हैं नहीं। बहुत परिवार ऐसे अच्छे होते हैं, बात मत पूछो। बाबा का देखा हुआ है। बहुएं एक ही घर में ऐसे शान्त मिलाप में रहती हैं जो बस, सभी साथ में भक्ति करती हैं, गीता पढ़ती हैं....। बाबा ने पूछा इतनी सब इकट्ठी रहती हैं, झगड़ा आदि नहीं होता! बोला हमारे पास तो स्वर्ग है, हम सभी इकट्ठे रहते हैं। कभी लड़ते-झगड़ते नहीं हैं, शान्ति में रहते हैं। कहते हैं यहाँ तो जैसे स्वर्ग है तो जरुर स्वर्ग पास्ट हो गया है तब कहने में आता है ना कि यहाँ तो जैसे स्वर्ग लगा पड़ा है। परन्तु यहाँ तो बहुतों का स्वर्गवासी बनने का स्वभाव होता नहीं। दास-दासियां भी तो बनने हैं ना। यह राजधानी स्थापन होती है। बाकी जो ब्राह्मण नहीं बनते वह खत्म हो जायेंगे। जो ब्राह्मण बनते हैं वह दैवी घराने में आने वाले हैं। परन्तु नम्बरवार हैं। कोई तो बहुत मीठे होते हैं, सबको प्यार करते रहेंगे। कभी किसको गुस्सा नहीं करेंगे। गुस्सा करने से दुःख होता है। जो मन्सा-वाचा-कर्मणा किसको दुःख ही देते रहते हैं – उनको कहा जाता है दुःखी आत्मा। जैसे पुण्य आत्मा, पाप आत्मा कहते हैं ना। शरीर का नाम लेते हैं क्या? वास्तव में आत्मा ही बनती है, सब पाप आत्मायें भी एक जैसी नहीं होती हैं। पुण्य आत्मा भी सब एक जैसी नहीं होती। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होते हैं। स्टूडेण्ट खुद समझते होंगे ना। हमारे कैरेक्टर्स, अवस्था कैसी है? हम कैसे चलते हैं? सबको मीठा बोलते हैं? कोई कुछ कहे हम उल्टा सुल्टा जवाब तो नहीं देते हैं? बाबा को कई बच्चे कहते हैं–बच्चों पर गुस्सा आ जाता है। बाबा कहते हैं जितना हो सके प्यार से काम लो। छोटे बच्चे को सुधारने के लिए कान से पकड़ते हैं। कृष्ण के लिए दिखलाते हैं ना उनको ओखली से बांधा। यह भी यहाँ की बात है। छोटा बच्चा चंचल है तो खटिया से वा झाड़ से बांध लो। थप्पड़ नहीं लगाओ। नहीं तो वह भी ऐसे सीख जायेंगे। बांधना ठीक है। ऐसे तो नहीं बच्चा बड़ा होकर माँ-बाप को बांधेगा? नहीं। यह है ही बच्चों के लिए शिक्षा। बिल्कुल तंग करे तो कान से पकड़ सकते हो। कोई बच्चे एकदम नाक में दम कर देते हैं। निर्मोही भी बनना चाहिए। यह तो तुम बच्चे समझते हो - हमको यह लक्ष्मी-नारायण बनना है। एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। कितनी ऊंच एम ऑब्जेक्ट है। पढ़ाने वाला भी हाइएस्ट है ना। श्रीकृष्ण की महिमा कितनी गाते हैं – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न..... गाते हैं ना। अब तुम बच्चे जानते हो हम वह बन रहे हैं। तुम यहाँ आये ही हो यह बनने के लिए (तुम्हारी सत्य नारायण की कथा है – नर से नारायण बनने की। अमरकथा है अमरपुरी जाने की। कोई सन्यासी आदि इन बातों को नहीं जानते। कोई भी मनुष्य मात्र को ज्ञान का सागर वा पतित पावन नहीं कहेंगे। जबकि सारी सृष्टि ही पतित है तो हम पतित-पावन किसको कहें? यहाँ कोई पुण्य आत्मा हो न सके। बाप समझाते हैं – यह दुनिया पतित है। श्रीकृष्ण है अव्वल नम्बर। उनको भी भगवान नहीं कह सकते। जन्म मरण रहित एक ही निराकार बाप है। गाया जाता है शिव परमात्माए नमः, ब्रह्मा-

विष्णु-शंकर को देवता कह फिर शिव को परमात्मा कहते हैं। तो शिव सबसे ऊपर हुआ ना। वह है सबका बाप। वर्सा भी बाप से मिलना है, सर्वव्यापी कहने से वर्सा नहीं मिलता है। बाप स्वर्ग की स्थापना करने वाला है तो जरुर स्वर्ग का ही वर्सा देंगे। यह लक्ष्मी-नारायण हैं नम्बरवन। पढ़ाई से यह पद पाया। भारत का प्राचीन योग क्यों नहीं मशहूर होगा। जिससे मनुष्य विश्व का मालिक बनते हैं उसको कहते हैं सहज योग, सहज ज्ञान। है भी बहुत सहज, एक ही जन्म के पुरुषार्थ से कितनी प्राप्ति हो जाती है। भक्ति मार्ग में तो जन्म बाई जन्म ठोकरें खाते आये मिलता तो कुछ भी नहीं। यह तो एक ही जन्म में मिलता है इसलिए सहज कहा जाता है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है। आजकल तो देखो कैसे-कैसे इन्वेन्शन निकालते रहते हैं। साइंस का भी वण्डर है। साइलेन्स का भी वन्डर देखो कैसा है? वह सब कितना देखने में आता है। यहाँ कुछ नहीं है। तुम शान्ति में बैठे हो, नौकरी आदि भी करते हो, कर्म कार डे...और आत्मा की दिल यार तरफ, आशिक माशूक भी गाये हुए हैं ना। वह एक दो की शक्ल पर आशिक होते हैं, विकार की बात नहीं रहती। कहाँ भी बैठे याद आ जायेंगे। रोटी खाते रहेंगे बस सामने उनको देखते रहेंगे। अन्त में तुम्हारी यह अवस्था हो जायेगी। बस बाप को ही याद करते रहेंगे। अच्छा।

(८) मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते। (८)

धारणा के लिए मुख्य सार:

१- रुप-बसन्त बन मुख से सदा सुखदाई बोल बोलने हैं, दुःखदाई नहीं बनना है। ज्ञान के विचारों में रहना है, मुख से ज्ञान रत्न ही निकालने हैं।

२- निर्मोही बनना है, हर एक से प्यार से काम लेना है, गुस्सा नहीं करना है। अनाथ को सनाथ बनाने की सेवा करनी है।

वरदान:- **ईश्वरीय मर्यादाओं के आधार पर विश्व के आगे एग्जाम्पल बनने वाले सहजयोगी भव**

विश्व के आगे एग्जाम्पल बनने के लिए अमृतवेले से रात तक जो ईश्वरीय मर्यादायें हैं उसी प्रमाण चलते रहो। विशेष अमृतवेले के महत्व को जानकर उस समय पावरफुल स्टेज बनाओ तो सारे दिन की जीवन महान बन जायेगी। जब अमृतवेले विशेष बाप से शक्ति भर लेंगे तो शक्ति स्वरूप हो चलने से किसी भी कार्य में मुश्किल का अनुभव नहीं होगा और मर्यादापूर्वक जीवन बिताने से सहजयोगी की स्टेज भी स्वत: बन जायेगी फिर विश्व आपके जीवन को देखकर अपनी जीवन बनायेगी।

स्लोगन:-

भगवान हमारा रक्षक है इस निश्चय से सदा समर्थ आत्मा बनो।

8-6-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अब इस छी-छी गंदी दुनिया को आग लगनी है इसलिए शरीर सहित जिसे तुम मेरा-मेरा कहते हो–इसे भूल जाना है, इससे दिल नहीं लगानी है"

प्रश्न:- बाप तुम्हें इस दु:खधाम से नफ़रत क्यों दिलाते हैं?

उत्तर:- क्योंकि तुम्हें शान्तिधाम-सुखधाम जाना है। इस गंदी दुनिया में अब रहना ही नहीं है। तुम जानते हो आत्मा शरीर से अलग होकर घर जायेगी, इसलिए इस शरीर को क्या देखना। किसी के नाम-रूप तरफ भी बुद्धि न जाये। गन्दे ख्यालात भी आते हैं तो पद भ्रष्ट हो जायेगा।

ओम् शान्ति। शिवबाबा अपने बच्चों, आत्माओं से बात करते हैं। आत्मा ही सुनती है। अपने को आत्मा निश्चय करना है। निश्चय करके फिर यह समझाना है कि बेहद का बाप आया हुआ है, सबको ले जाने लिए। दु:ख के बन्धन से छुड़ाए सुख के सम्बन्ध में ले जाते हैं। सम्बन्ध सुख को, बंधन दु:ख को कहा जाता है। अब यहाँ के कोई भी नाम-रूप आदि में दिल नहीं लगाओ। अपने घर जाने लिए तैयारी करनी है। बेहद का बाबा आया हुआ है, सभी आत्माओं को ले जाने। इसलिए यहाँ कोई से दिल नहीं लगानी है। यह सब यहाँ के छी-छी बंधन हैं। तुम समझते हो हम अब पवित्र बने हैं तो हमारे शरीर को कोई भी हाथ न लगाये, छी-छी ख्यालात से। वह ख्यालात ही निकल जाते हैं। पवित्र बनने सिवाए वापिस घर तो जा न सकें। फिर सजायें खानी पड़ेगी, अगर न सुधरे तो। इस समय सभी आत्मायें अनसुधरेली हैं। शरीर के साथ छी-छी काम करती हैं। छी-छी देहधारियों से दिल लगी हुई है। बाप आकर कहते हैं–यह सब गन्दे ख्याल छोड़ो। आत्मा को शरीर से अलग होकर घर जाना है। यह तो बहुत छी-छी गन्दी दुनिया है, इसमें तो अब हमको रहना नहीं है। कोई को देखने की भी दिल नहीं होती। अभी तो बाप आये हैं स्वर्ग में ले जाने। बाप कहते हैं–बच्चे, अपने को आत्मा समझो। पवित्र बनने लिए बाप को याद करो। कोई भी देहधारी से दिल नहीं लगाओ। बिल्कुल ममत्व मिट जाना चाहिए। स्त्री-पुरूष का बहुत प्यार होता है। एक-दो से अलग हो नहीं सकते। अब तो अपने को आत्मा भाई-भाई समझना है। गन्दे ख्याल नहीं रहने चाहिए। बाप समझाते हैं–अभी यह वेश्यालय है। विकारों के कारण ही तुमने आदि, मध्य, अन्त दु:ख को पाया है। बाप बहुत ही नफ़रत दिलाते हैं। अभी तुम स्टीमर पर बैठे हो जाने के लिए। आत्मा समझती है अभी हम जा रहे हैं बाप के पास। इस सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य है। इस छी-छी दुनिया, नर्क वेश्यालय में हमको रहना नहीं है। तो फिर विष के लिए गन्दे ख्यालात आना बहुत खराब है। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। बाप कहते हैं मैं तुमको गुल-गुल दुनिया में, सुखधाम में ले जाने आया हूँ। मैं तुमको इस वेश्यालय से निकाल शिवालय में ले जाऊंगा तो अब बुद्धि का योग रहना चाहिए नई दुनिया में। कितनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाबा हमको पढ़ाते हैं, यह बेहद सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, वह तो बुद्धि में है। सृष्टि चक्र को जानने से अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी होने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। अगर देहधारी से बुद्धियोग लगाया तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। कोई भी देह के सम्बन्ध याद न आयें। यह तो दु:ख की दुनिया है, इसमें सब दु:ख ही देने वाले हैं।

बाप डर्टी दुनिया से सबको ले जाते हैं, इसलिए अब बुद्धियोग अपने घर से लगाना है। मनुष्य भक्ति करते हैं—मुक्ति में जाने लिए। तुम भी कहते हो—हम आत्माओं को यहाँ रहना नहीं है। हम यह छी-छी शरीर छोड़कर अपने घर जायेंगे , यह तो पुरानी जुत्ती है। बाप को याद करते-करते फिर यह शरीर छूट जायेगा। अन्तकाल बाप के सिवाए और कोई दूसरी चीज़ याद न रहे। यह शरीर भी यहाँ ही छोड़ना है। शरीर गया तो सब कुछ गया। देह सहित जो कुछ भी है, तुम जो मेरा-मेरा कहते हो यह सब भूल जाना है। इस छी-छी दुनिया को आग लगनी है, इसलिए इनसे अब दिल नहीं लगानी है। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग की स्थापना कर रहा हूँ। वहाँ तुम ही जाकर रहेंगे। अभी तुम्हारा मुंह उस तरफ है। बाप को, घर को, स्वर्ग को याद करना है। दु:खधाम से नफ़रत आती है। इन शरीरों से नफ़रत आती है। शादी करने की भी क्या दरकार है। शादी करने से फिर दिल लग जाती है शरीर से। बाप कहते हैं इस पुरानी जुत्तियों से कुछ भी स्नेह नहीं रखो। यह है ही वेश्यालय। सब पतित हैं, पतित हैं। रावण राज्य है। यहाँ कोई से भी दिल नहीं लगानी है, सिवाए बाप के। बाप को याद नहीं करेंगे तो जन्म-जन्मान्तर के पाप कटेंगे नहीं। फिर सजायें भी बहुत कड़ी हैं। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। तो क्यों न इस कलियुगी बन्धन को छोड़ दें। बाबा सबके लिए यह बेहद की बात समझाते हैं। ज़ब रजोप्रधान सन्यासी थे तो दुनिया गंदी नहीं थी। जंगल में रहते थे। सबको आकर्षण होती थी। मनुष्य वहाँ जाकर उन्हों को खाना पहुँचा आते थे। निडर हो रहते थे। तुमको भी निडर बनना है, इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। बाप के पास आते हैं, तो बच्चों को खुशी रहती है। हम बेहद बाप से सुखधाम का वर्सा लेते हैं। यहाँ तो कितना दु:ख है। कई गन्दी-गन्दी बीमारियां आदि होती हैं। बाप तो गैरन्टी करते हैं—तुमको वहाँ ले जाते हैं, जहाँ दु:ख, बीमारी आदि का नाम नहीं। आधाकल्प के लिए तुमको हेल्दी बनाते हैं। यहाँ कोई से भी दिल लगाई तो बहुत सजायें खानी पड़ेगी।

तुम समझा सकते हो, वो लोग कहते हैं 3 मिनट साइलेन्स। बोलो, सिर्फ साइलेन्स से क्या होगा। यह तो बाप को याद करना है, जिससे विकर्म विनाश हों। साइलेन्स का वर देने वाला बाप है। उनको याद करने बिगर शान्ति मिलेगी कैसे? उनको याद करेंगे तब ही वर्सा मिलेगा। टीचर्स को भी बहुत शब्क (पाठ) पढ़ाना है। खड़ा हो जाना चाहिए, कोई कुछ भी कहेगा नहीं। बाप के बने हो तो पेट के लिए तो मिलेगा ही, शरीर निर्वाह के लिए बहुत मिलेगा। (जैसे वेदान्ती बच्ची है, उसने इम्तहान दिया, उसमें एक प्वाइंट थी—गीता का भगवान् कौन? उसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया तो उनको नापास कर दिया। और
(२) जिन्होंने कृष्ण का नाम लिखा था, उनको पास कर दिया। बच्ची ने सच बताया तो उसको न (६)
ज़ानने कारण नापास कर दिया। फिर लड़ना पड़े मैंने तो यह सच-सच लिखा। गीता का भगवान् है ही निराकार परमपिता परमात्मा। कृष्ण देहधारी तो हो न सके। परन्तु बच्ची की दिल थी इस रूहानी सर्विस करने की तो छोड़ दिया।)

तुम जानते हो अब बाप को याद करते-करते अपने इस शरीर को भी छोड़ साइलेन्स दुनिया में जाना है। याद करने से हेल्थ-वेल्थ दोनों ही मिलती हैं। भारत में पीस प्रासपर्टी थी ना। ऐसी-ऐसी बातें तुम कुमारियां बैठ समझाओ तो तुम्हारा कोई भी नाम नहीं लेंगे। अगर

कोई सामना करे तो तुम कायदेसिर लड़ो, बड़े-बड़े ऑफीसर्स के पास जाओ। क्या करेंगे? ऐसे नहीं कि तुम भूख मरेंगी। केले से, दही से भी रोटी खा सकते हो। मनुष्य पेट के लिए कितने पाप करते हैं। बाप आकर सबको पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनाते हैं। इसमें पाप करने, झूठ बोलने की कोई दरकार नहीं है। तुमको तो 3/4 सुख मिलता है, बाकी 1/4 दु:ख भोगते हो। अब बाप कहते हैं—मीठे बच्चों, मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे। और कोई उपाय नहीं। भक्ति मार्ग में तो बहुत धक्के खाते हो। शिव की पूजा तो घर में भी कर सकते हैं परन्तु फिर भी बाहर मन्दिर में जरूर जाते हैं। यहाँ तो तुमको बाप मिला है। तुमको चित्र रखने की दरकार नहीं है। बाप को तुम जानते हो। वह हमारा बेहद का बाप है, बच्चों को स्वर्ग की बादशाही का वर्सा दे रहे हैं। तुम आते हो बाप से वर्सा लेने। यहाँ कोई शास्त्र आदि पढ़ने की बात नहीं। सिर्फ बाप को याद करना है। बाबा बस हम आये कि आये। तुमको घर छोड़े कितना समय हुआ है? सुखधाम को छोड़े 63 जन्म हुए हैं। अब बाप कहते हैं शान्तिधाम, सुखधाम में चलो। इस दु:खधाम को भूल जाओ! शान्तिधाम, सुखधाम को याद करो और कोई डिफीकल्ट बात नहीं है। शिवबाबा को कोई शास्त्र आदि पढ़ने की दरकार नहीं है। यह ब्रह्मा पढ़ा हुआ है। तुमको तो अभी शिवबाबा पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी पढ़ा सकते हैं। परन्तु तुम सदैव समझो शिवबाबा के लिए। उनको याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बीच में यह भी है।

अब बाप कहते हैं टाइम थोड़ा है, जास्ती नहीं है। ऐसा ख्याल मत करो कि जो नसीब में होगा, वह मिलेगा। स्कूल में पढ़ाई का पुरूषार्थ करते हैं ना। ऐसे थोड़ेही कहेंगे जो नसीब में होगा...... यहाँ नहीं पढ़ते हैं तो वहाँ जन्म-जन्मान्तर नौकरी चाकरी करते रहेंगे। राजाई मिल न सके। करके पिछाड़ी में ताज रख देंगे, वह भी त्रेता में। मूल बात है—पवित्र बन औरों को बनाना। सत्य नारायण की सच्ची कथा सुनाना है। बहुत सहज, दो बाप हैं। हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है, बेहद के बाप से बेहद का। बेहद बाप को याद करो तो यह देवता बनेंगे। परन्तु फिर उसमें भी ऊंच पद पाना है। पद पाने के लिए ही कितना मारामारी करते हैं। पिछाड़ी में बॉम्बस की भी एक-दो को मदद देंगे। यह इतने सब धर्म थे थोड़ेही। फिर नहीं रहेंगे। तुम राज्य करने वाले हो तो अपने ऊपर रहम करो ना—कम से कम ऊंच पद तो पायें। बच्चियां 8 आना भी देती हैं—हमारी एक ईट लगा देना। सुदामा का मिसाल सुना है ना। चावल मुट्ठी बदले महल मिल गया। गरीब के पास हैं ही 8 आने तो वही देंगे ना। कहते हैं बाबा हम गरीब है। अभी तुम बच्चे सच्ची कमाई करते हो। यहाँ सबकी है झूठी कमाई। दान-पुण्य आदि जो करते हैं, वह पाप आत्माओं को ही करते हैं। तो पुण्य के बदले पाप हो जाता है। पैसा देने वाले पर ही पाप हो जाता है। ऐसे-ऐसे करते सब पाप आत्मा बन जाते हैं। पुण्य आत्मा होते ही हैं सतयुग में। वह है पुण्य आत्माओं की दुनिया। वह तो बाप ही बनायेंगे। पाप आत्मा रावण बनाते, गन्दे बन पड़ते हैं। अब बाप कहते हैं गन्द कर्म नहीं करो। नई दुनिया में गंद होता नहीं। नाम ही है स्वर्ग तो फिर क्या, स्वर्ग कहने से ही मुख में पानी आ जाता है। देवता होकर गये हैं तब तो यादगार हैं। आत्मा अविनाशी है। कितने ढेर एक्टर्स हैं। कहाँ तो बैठे होंगे, जहाँ से पार्ट बजाने आते हैं। अभी कलियुग में कितने ढेर मनुष्य हैं। देवी-देवताओं

का राज्य है नहीं। कोई को समझाना तो बहुत सहज है। एक धर्म की अभी फिर स्थापना हो रही है, बाकी सब खत्म हो जायेंगे। तुम जब स्वर्ग में थे तो और कोई धर्म नहीं था। चित्र में राम को बाण दे दिया है। वहाँ बाण आदि की तो बात नहीं। यह भी समझते हैं। जिसने जो सर्विस की है कल्प पहले, वही अभी करते हैं। जो बहुत सर्विस करते हैं, बाप को भी बहुत प्यारे लगते हैं। लौकिक बाप के बच्चे भी जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, उन पर बाप का प्यार जास्ती रहता है। जो लड़ते खाते रहेंगे तो उनको थोड़ेही प्यार करेंगे, सर्विस करने वाले बहुत प्यारे लगते हैं।

एक कहानी है -- दो बिल्ले लड़े, माखन कृष्ण खा गया। सारे विश्व की बादशाही रूपी माखन तुमको मिलता है। तो अब गफ़लत नहीं करनी है। छी-छी नहीं बनना है। इसके पीछे राजाई मत गंवाओ। बाप के डायरेक्शन मिलते हैं, याद नहीं करेंगे तो पाप का बोझ चढ़ता जायेगा। फिर बहुत सजायें खानी पड़ेंगी। ज़ार-ज़ार रोयेंगे। 21 जन्म की बादशाही मिलती है। इसमें फेल हुए तो बहुत रोयेंगे। बाप कहते हैं न पियरघर, न ससुरघर को याद करना है। भविष्य नये घर को ही याद करना है।

बाप समझाते हैं कोई को देख लट्टू नहीं बन जाना है। फूल बनना है। देवतायें फूल थे। कलियुग में कांटे थे। अभी तुम संगम पर फूल बन रहे हो। किसको दुःख नहीं देना है। यहाँ ऐसे बनेंगे तब सतयुग में जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अन्तकाल में एक बाप के सिवाए दूसरा कोई याद न आये उसके लिए इस दुनिया में किसी से भी दिल नहीं लगानी है। छी-छी शरीरों से प्यार नहीं करना है। कलियुगी बन्धन तोड़ देने हैं।

२. विशाल बुद्धि बन निडर बनना है। पुण्य आत्मा बनने के लिए कोई भी पाप अब नहीं करना है। पेट के लिए झूठ नहीं बोलना है। चावल मुट्ठी सफल कर सच्ची-सच्ची कमाई जमा करनी है, अपने ऊपर रहम करना है।

वरदान:- बाप की आज्ञा समझ मोहब्बत से हर बात को सहन करने वाले सहनशील भव

कई बच्चे कहते हैं कि हम राइट हैं फिर भी हमें ही सहन करना पड़ता है, मरना पड़ता है लेकिन यह सहन करना वा मरना ही धारणा की सबजेक्ट में नम्बर लेना है, इसलिए सहन करने में घबराओ नहीं। कई बच्चे सहन करते हैं लेकिन मजबूरी से सहन करना और मोहब्बत में सहन करना - इसमें अन्तर है। बातों के कारण सहन नहीं करते हो लेकिन बाप की आज्ञा है सहनशील बनो। तो आज्ञा समझ मोहब्बत में सहन करना अर्थात् स्वयं को परिवर्तन कर लेना इसकी ही मार्क्स हैं।

स्लोगन:-

खुशी के खजाने से सम्पन्न और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त बनो।

27.6.93 प्रात:क्लास ओम् शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे–प्रतिज्ञा करो हम पास विद ऑनर बनकर दिखायेंगे, कभी भी माँ-बाप में संशयबुद्धि नहीं बनेंगे, सदा सपूत बन श्रीमत पर चलेंगे"

प्रश्न:- माया की बॉक्सिग में तुम बच्चों को किस बात की बहुत सम्भाल करनी है?

उत्तर:- बॉक्सिग करते कभी भी मात-पिता में संशय न आ जाये, इसकी बहुत सम्भाल करना। अशुद्ध अहंकार वा अशुद्ध लोभ व मोह आया तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। तुम्हें बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा लेने का शुद्ध लोभ और एक बाप में ही पूरा मोह रखना है। जीते जी मरना है। बस, हम एक बाप के हैं, बाप से ही वर्सा लेंगे, कुछ भी हो जाये–अपने आपसे प्रतिज्ञा करो। पातेले बनो तो बेहद की प्राप्ति होगी। संशय आया तो पद गँवा देंगे।

गीत :- तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है... ओम् शान्ति। ओम् का अर्थ तो बिल्कुल ही सहज है–आई एम आत्मा, आई एम साइलेन्स। जरूर आत्मा तो इमार्टल है। यह कौन समझाते हैं? बेहद का बाप। बच्चे तो बहुत हैं। उनमें से भी कोटों में कोई, कोई में भी कोई समझते हैं। बच्चे जानते हैं कि बेहद का बाप, बेहद सुख का वर्सा देने हमको लायक बना रहे हैं। हम सो पूज्य देवी-देवता, लायक विश्व के मालिक थे। भारत सोने की चिड़िया था। उस समय का भारत राइटियस, लॉ-फुल 100% सालवेन्ट था–यह बाप समझाते हैं। बरोबर हम कितने लायक थे। विश्व के मालिक थे। अब फिर बाप सारे विश्व पर राज्य करने का अधिकारी बनाते हैं। माया ने इतना तो कंगाल बना दिया है जो कौड़ी की भी कीमत नहीं रही है, अनराइटियस काम ही करते हैं। राइटियस सिखलाने वाला एक बाप है, जिसको ट्रुथ भी कहते हैं। जिसके लिए तुम गाते थे–तुम मात पिता... उनके सम्मुख तुम बैठे हो और बेहद का वर्सा पाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम जानते हो हम उनके बने हैं। बाप भी कहते हैं–तुम हमारे बने हो। इस समय कोई भी मुझ बाप को नहीं जानते। कभी तो कहते हैं नाम-रूप से न्यारा है। कभी फिर सभी नाम रूपों में ले आते कि पत्थर-भित्तर सबमें परमात्मा है। अनेक धर्म, अनेक मतें हो गई हैं। इसलिए बाबा कहते हैं–इन सब देह के धर्मों को छोड़ो। आत्मा कहती है–मैं क्रिश्चियन हूँ, मुसलमान हूँ, इन देह के धर्मों को भूल जाना है। अब बाप कहते हैं–लाडले बच्चे। जब मम्मा-बाबा कहा जाता है तो मम्मा-बाबा को कभी कोई भूल नहीं सकते। यहाँ यह वन्डर है जो बच्चे ऐसे माँ-बाप, जिससे 21 जन्म का वर्सा मिलता है, उनको भूल जाते हैं। लौकिक माँ-बाप को तो जन्म बाई जन्म याद किया। अभी यह है तुम्हारा अन्तिम जन्म। तुम निश्चय करते हो–बरोबर वही बाप कल्प-कल्प आकर हमको देवता बनाते हैं। फिर भी ऐसे बाप को भूल क्यों जाते हो? बच्चे कहते हैं ड्रामा अनुसार कल्प पहले भी भूले थे। बाप के बन फिर छोड़ देते हैं। आश्चर्यवत् ईश्वर का बनन्ती, ज्ञान सुनन्ती, सुनावन्ती... फिर भी अहो मम् माया भागन्ती हो जाते हैं। लौकिक बाप से माया नहीं छुड़ाती है। हाँ, कोई-कोई बच्चे होते हैं जो बाप को फारकती दे देते हैं। पारलौकिक बाप तो तुम्हें स्वर्ग के लिए लायक बनाकर कितना भारी वर्सा देते हैं। वह हैं हद के मात-पिता, यह है बेहद का मात-पिता, जो तुमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। निश्चय होते हुए भी ऐसे बाप को फारकती क्यों देते हो? अच्छे-अच्छे बच्चे 5-10 वर्ष रहकर अच्छे-अच्छे पार्ट

बजाते हैं, फिर हार खा लेते हैं । यह है युद्ध स्थल । बाप की याद तो कभी भी नहीं छोड़नी चाहिए । याद कम होने से बड़ा भारी नुकसान हो जाता है । बहुत बच्चों को माया ने जीत लिया । एकदम कच्चा खा गई । बड़े-बड़े अजगर जैसे को हप कर लिया । तुम महारथी बनते हो फिर माया गिराकर एकदम हप कर लेती है । अच्छे-अच्छे फर्स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरेक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं । क्या हुआ ? कोई बात में संशय आ गया ।

बाबा समझाते हैं निश्चयबुद्धि विजयन्ती, संशय बुद्धि विनशयन्ति । ऐसे फिर कितनी अधम-गति को पायेंगे । तुम यहाँ आते हो बाप से पूरा-पूरा वर्सा प्रिन्स-प्रिन्सेज का लेने । अगर आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये तो फिर क्या पद रहेगा । प्रजा में भी जाकर कम पद पायेंगे । सजायें भी बहुत खानी होंगी । जैसे उस गवर्मेन्ट में भी चीफ जज आदि होते है ना । यहाँ तो सब एक ही हैं । बाप कहते हैं हम आते हैं तुमको पतित से पावन बनाने । अगर पूरा न बनें तो फिर पतित से भी पतित बन पड़ेंगे । सर्वशक्तिवान बाप का डिसरिगॉर्ड किया तो धर्मराज की फिर बहुत कड़ी सजा हो जायेगी । यह समझने की बातें है ना । तुम मात-पिता__ कह फिर उनकी मत पर चलना है । श्री श्री की मत पर चलते योग में पूरा रहना है । तुम श्रेष्ठ थे । श्रेष्ठ सूर्यवंशी चन्द्रवंशी 21 जन्मों लिए महाराजा-महारानी बन जायेंगे । श्रेष्ठ बनने लिए श्री श्री की मत चाहिए । श्री श्री एक को ही कहा जाता है । देवताओं को भी सिर्फ श्री कहते हैं । इस समय तो आसुरी सम्प्रदाय हैं अर्थात् असुर 5 विकारों की मत पर चलने वाले । अब तुम बच्चों को मिलती है श्री श्री की मत । जिससे तुम श्री लक्ष्मी, श्री नारायण बनते हो । यह टाइटिल मिलते हैं । तुमको राज्य-भाग्य मिलता है ना । सतयुग-त्रेता में पवित्रता का ताज और रत्न जड़ित ताज रहता है । सूर्यवंशी चन्द्रवंशी को भी ताज दिखाते हैं । महाराजा-महारानी को ही ताज दिखाते हैं । प्रजा को तो नहीं दिखायेंगे । फिर द्वापर में जब पतित बनते हैं तो लाइट का ताज नहीं दिखायेंगे । पतित राजा-रानी पावन रानी-राजा की पूजा करते हैं । अभी तो दोनों ताज नहीं रहे हैं । ताज-लेस बन गये हैं । यह है प्रजा का प्रजा पर राज्य, जिसको पंचायती राज्य कहा जाता है । तुम पाण्डव हो, तुम्हें भी कोई ताज नहीं है । तुम कितना बुद्धिवान बन गये हो । मूल वतन, सूक्ष्म वतन, स्थूल वतन तथा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को तुम जान गये हो । तुम जानते हो हम फिर से डबल सिरताज बन रहे हैं । हेल्थ-वेल्थ—दोनों मिल जाती हैं । बेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं तो तुम हो गये पाण्डव गवर्मेन्ट के स्टूडेन्ट । भगवानुवाच—मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ । गीता में सिर्फ नाम बदल लिया है । संगम होने कारण यह भूल कर दी है ।

अभी तुमको बेहद के बाप से वर्सा मिलता है । सतयुग-त्रेता में तुम सुख पाते हो फिर तुम्हारे यादगार द्वापर से लेकर बनने शुरु होते हैं । यहाँ जो मरते हैं तो उनका यहाँ मृत्युलोक में ही यादगार बनाते हैं । जैसे नेहरु गया तो उनका यहाँ ही यादगार बनाते हैं । तुम्हारा यादगार अमरलोक में नहीं रहेगा । तुम्हारा यादगार पीछे द्वापर में चाहिए । तो द्वापर से यह सब बनने शुरु होते हैं जो तुम देखते हो । जगत अम्बा आदि देवी कौन है—कोई भी नहीं जानते । मालूम तो होना चाहिए ना । ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का मनुष्यों को पता होना चाहिए ना । लक्ष्मी-नारायण को भी पता नहीं रहता । बाप है नॉलेजफुल, हम उनके बच्चे मास्टर नॉलेजफुल बने हैं । नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार । बाप पवित्रता का सागर है, हम भी बनते

है। आत्मा जो अपवित्र बन पड़ी है, सो पवित्र बनती हैं। बाकी गंगा स्नान से कोई पवित्र नहीं बन सकते। पतित-पावन एक ही बाप को कहा जाता है। तुम उनके सम्मुख बैठे हो। एक बार निश्चय हुआ सो हुआ। बाप को बच्चे थोड़ेही भूलते हैं। मर जाते हैं तो भी उनकी आत्मा को बुलाते हैं। फिर वह आकर बोलती है। यह ड्रामा अनुसार पार्ट होता है। तो वह आकर बातचीत भी करती है। ड्रामा में जो पास्ट हुआ वह नूँध है। ड्रामा को राइट-वे में जानना चाहिए। ऐसे नहीं, तकदीर में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे। हम बैठे हैं तो पानी आपे-ही मुख में आकर पड़ेगा नहीं। हर एक बात में पुरुषार्थ फर्स्ट है। ऐसे ही तो कोई बैठ न सके। चुप हो बैठ जाए तो मर जाए। सन्यासियों का कर्म सन्यास है परन्तु जब तक कर्मेन्द्रियां हैं तब तक कर्म का सन्यास नहीं कर सकते। उठेंगे-बैठेंगे कैसे? आत्मा शरीर को चलाने वाली है। आत्मा में संस्कार रहते हैं। रात को अशरीरी बन जाती है। आत्मा कहती है मैं कर्म करते-करते थक जाती हूँ। इसलिए रात को रेस्ट लेते अशरीरी बन जाती हूँ। आत्मा ही खाती-पीती है। आत्मा इन आरगन्स से कहती है मैं—बैरिस्टर हूँ, फलाना हूँ। आत्मा बाप को बुलाती है। याद करती है—ओ गॉड फादर रहम करो। वह नॉलेजफुल, ब्लिसफुल है। उनके पास फुल नॉलेज है। यहाँ तो तुमको अधूरी नॉलेज है। ब्रह्माण्ड, सूक्ष्मवतन क्या है, ड्रामा कैसे रिपीट होता है, कहाँ जाते हैं, कैसे पुनर्जन्म लेते हैं, कितने जन्म लेते हैं—यह कोई नहीं जानते। तुम बच्चे पुरुषार्थ अनुसार जानते जाते हो। औरों को भी इस ज्ञान चिता पर बिठाकर वैकुण्ठ का रास्ता बताना है। और तो कोई जानते नहीं हैं। बाप समझाते हैं—बच्चे, बाप का हाथ नहीं छोड़ना। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। बाप को बच्चों को याद नहीं करना है। वह तो जानते हैं सब मेरे बच्चे हैं। सब मुझे याद करते हैं। निर्वाणधाम में मेरे साथ रहने वाले हैं। इसलिए भूले चूके भी बाप को भूलना नहीं है। कोई संशय नहीं लाना चाहिए।

अब तो बाप फरमान करते हैं—मामेकम् याद करो और वर्से को याद करो। कोई भी खिटपिट हो तो भी बाप को नहीं भूलना है। बाप को भूले तो बेड़ा गर्क हो जायेगा। दुश्मन भी तुम्हारे बहुत हैं। क्योंकि तुम खुद कहते हो कि इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है। तुम तो साफ समझाते हो इस लड़ाई के बाद ही मुक्ति-जीवनमुक्ति के गेट्स खुले थे। बहुत आत्मायें मुक्तिधाम में जाती हैं फिर आती हैं जीवन्मुक्ति में। पहले-पहले देवी-देवता धर्म वाले आते हैं और सभी अपना-अपना एक धर्म स्थापन करते हैं। बाप कहते हैं मैं पहले छोटा ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ। फिर साथ-साथ ब्राह्मणों को देवी-देवता बनाता हूँ। शूद्र जब तक ब्राह्मण न बनें तो दादे से वर्सा कैसे ले सकते। वर्णों में आना जरूर है। समझा जायेगा यह देवी-देवता कुल का दिखाई पड़ता है। जो इस कुल के हैं उनसे ही सैपलिंग लग रही है। तो बाप समझाते हैं—ऐसे मीठे बापदादा को कभी भूलना नहीं, जिसके लिए कहते हो तुम मात-पिता... तुम्हारी शिक्षा से हम बेहद 21 जन्म का सुख लेंगे। पुरुषार्थ कर ऊंच ते ऊंच पद पाना है। सपूत बच्चे प्रतिज्ञा करते हैं। बाबा हम पास विद आनर होकर दिखायेंगे। हम सूर्यवंशी राज्य-भाग्य जरूर लेंगे। बाप कहते हैं—अच्छी रीति सम्भालना। माया भी कम नहीं है। हर एक इतना पुरुषार्थ करो, जो स्वर्ग में सूर्यवंशी पद पाओ। अब पुरुषार्थ करेंगे तो कल्प-कल्प तुम्हारा ऐसा पुरुषार्थ चलेगा। तो बाबा कहते हैं—मीठे-मीठे बच्चे, अब सम्भाल करो। संशय-बुद्धि कभी नहीं होना। लौकिक संबंध में

भी बच्चा कभी माँ-बाप में संशय ला नहीं सकता। इम्पासिबुल है। यहाँ भी बाबा बुद्धि में याद रहना चाहिए। यह है बेहद का सुख देने वाला बाबा। फिर भी माया तुम बच्चों को बॉक्सिंग में हरा देती है। बाप कहते हैं कभी अशुद्ध अहंकार में वा अशुद्ध लोभ में नहीं आना है। वास्तव में तुम बहुत लोभी हो। परन्तु शुद्ध लोभ है कि बेहद के बाप से हम स्वर्ग का वर्सा लेंगे। मोह भी शुद्ध है। एक बाप में पूरा मोह रखो। जीते जी मरना है। बस, हम तो एक बाप के हैं, बाप से ही वर्सा लेंगे, कुछ भी हो जाये—अपने से प्रतिज्ञा की जाती है। बेहद की प्राप्ति है। और जगह तो कुछ भी प्राप्ति होती नहीं। तो इसमें संशय नहीं आना चाहिए और बातों में संशय भले पड़ जाये परन्तु बाप के तो हो ना। बाप में संशय नहीं आना चाहिए। मातेला उसे कहा जाता है जो पूरा पवित्र है। पतित को सौतेला कहेंगे। (आगे चलकर तुम समझते जायेंगे—यह अगर इस समय शरीर छोड़े तो क्या पद पायेंगे। अच्छा!)

मात-पिता बापदादा का मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति याद, प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1- *ड्रामा को अच्छी रीति समझकर चलना है। पुरुषार्थ करके प्रालब्ध बनानी है। ड्रामा कहकर बैठ नहीं जाना है।*

2- *कभी भी बाप का डिसरिगॉर्ड नहीं करना है। कदम-कदम उनकी श्रीमत पर चलना है। बाप में कभी संशय नहीं लाना है।*

विशेषता :- विश्व सेवाधारी-परोपकारी

ब्राह्मण जीवन में एक पवित्रता का और दूसरा विश्व सेवाधारी बनने का ताज धारण करने से ही विश्व महाराजन का ताज प्राप्त होता है। विश्व सेवाधारी आत्मायें तन-मन-धन-जन से सदा सेवा पर तत्पर रहने के उत्साह और उमंग में रहती हैं। अभी का उत्साह ही भविष्य का उत्सव बन जाता है। तो चेक करो—आदि से अब तक वा अब से अन्त तक अपने तन को कितना समय सेवा में समर्पण किया? मन को कितना समय याद और मन्सा सेवा में लगाया? धन को सर्व प्रति सेवा में निःस्वार्थ भाव से लगाते हैं या स्वार्थ से लगाते हैं? जो हद के बजाए सदा बेहद में लगाते हैं वही विश्व सेवाधारी सो राज्य अधिकारी बनते हैं।

अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए हर दृश्य साक्षी होकर देखो और हर्षित रहो

[illegible] ऐसी बातें, उसमें समय क्यों दिया? और बातें, यहाँ तो पेपर है। जितनी बड़ी पढ़ाई उतने पेपर [illegible] यह बाबुलनाथ बनना यह सबके लिए पेपर भी है कि प्लान या पदर्शन या परिवर्तन में कहाँ तक [illegible] है। एक है जिम्मेवारी [illegible] और [illegible]। जिम्मेवारी [illegible] है, ये ठीक है। लेकिन अपनी अवस्था को [illegible] जिम्मेवारी है तो जिम्मेवारी वाली आत्मा को सुनना भी पड़ता है, [illegible] लेकिन अगर [illegible] अपने को समझते हो तो जिम्मेवारी के पहले अपनी ब्रेक को पॉवरफुल बनाओ। जैसे पहाड़ी पर [illegible] तो पहले से ही सूचना देते हैं कि अपने ब्रेक को ठीक चेक करो। तो जिम्मेवारी भी एक ऊँची स्थिति [illegible] जिम्मेवारी भले उठाओ लेकिन पहले यह चेक करो कि सेकण्ड में ब्रेक लगती है? कि लगाते हो ब्रेक और [illegible] है? [illegible] तो [illegible] वेस्ट समय जायेगा। वेस्ट इनर्जी जायेगी। पहले अपना ब्रेक पॉवरफुल [illegible] — देखा, सुना, कल्याण किया, जहाँ तक हो सका, किया और फुलस्टॉप। अगर ऐसी स्थिति है तो [illegible] लो, नहीं तो देखते नहीं देखो, सुनते नहीं सुनो, स्वपरिवर्तन में रहो। फायदा इसमें है। तो आज का पाठ [illegible]? ये तीन बातें — [illegible], परिवर्तन और परदर्शन मुक्त बनो। और क्या बनाओ? इन बातों से मुक्त [illegible] और एक बात [illegible], वो एक बात है पर-उपकारी बनो। [illegible] और एक [illegible] — पर-उपकारी, [illegible] बनना आयेगा? टीचर्स आगे बैठी हैं ना, तो फिर बातों से मुक्त बनेंगे? बोलो। [illegible] क्या करेंगी? बच्चों की उपकारी या पर-उपकारी? सर्व उपकारी। सहज है या कठिन है? जो नये-नये आये-[illegible] वो समझते हैं यह सहज है कि मुश्किल है? है सहज? बोलो। टीचर्स बोलो—सहज है? नहीं, बापदादा समझते [illegible] मुश्किल [illegible] लगती है, बड़ा मुश्किल है! सहज है या मुश्किल है? मुश्किल तो है! अभी यहाँ बैठे [illegible] ना तो सहज-सहज कह रहे हो। फिर जब [illegible] से उतरेंगे और कोई छोटी-मोटी बात हुई तो कहेंगे मुश्किल है। और घर गये, सेन्टर पर गये तो कोई न कोई बात पेपर लेने आयेगी जरूर। सहज है?

(बापदादा ने किसी से पर्सनल बात की - लड़ाई तो कर चुके और कितना टाइम चाहिए? अगर हिम्मत है [illegible]) लड़ाई क्या है? लड़ाई भी एक मनोरंजन हो जाता है। लड़ाई लड़ाई नहीं लगती। जैसे देखो कुश्ती लड़ते [illegible] कुश्ती देखी है, है तो लड़ाई ना, कितने लड़ते हैं आपस में लेकिन उन्हों के लिए खेल है और जो लड़ाई [illegible] हैं वो मनोरंजन [illegible] आते हैं ना। अच्छा! डबल विदेशी ठीक बैठे हैं? सामने बैठते हैं ना! अच्छा, इन्हों को मुश्किल लगता है या सहज। अगर सहज लगता है तो हाथ उठाओ। सहज या मुश्किल लगता [illegible] सहज लगता है।

(टीचर्स तो नम्बरवन लेंगी ना? उस समय नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, हमको यह ज्ञान ही नहीं था। इसीलिए बापदादा पहले से ही सुना रहे हैं — किसमें मार्क्स जमा होती है और किसमें मार्क्स कट होती हैं। अगर नम्बर लेना है तो चेकप करो। अभी कोई भी कर सकते हैं। सीट फिक्स कोई नहीं हुई है। सिवाए ब्रह्मा [illegible] और जगदम्बा को और सब सीट खाली है। कोई भी ले सकता है। एक साल वाला भी ले सकता है। लेना है? [illegible] सुना, सदा क्या याद रखेंगे? अपने विशेषताओं को याद रखो। विशेष समझेंगे ना तो यह खेल की बातें [illegible] नहीं। तो विशेष हैं और सदा सारे कल्प में विशेष होंगे। और किसी भी धर्म नेता या महात्माओं की ऐसे [illegible] पूजा नहीं होती। जैसे देवताओं की पूजा होती है, वैसे किसी की भी नहीं होती। नेताओं को तो विचारे [illegible] में लटका [illegible] हैं। अच्छा!

अभी भिन्न-भिन्न ज़ोन से आये हैं वो हाथ उठाओ। (सभी ज़ोन से बापदादा ने हाथ उठवाये)

[illegible] है, सभी को [illegible] मिल जाता है। अभी ज्ञान सरोवर में अच्छे रहे पड़े हो। ज्ञान सरोवर में अच्छे हैं [illegible] यहाँ आना पसंद है? [illegible] है ना? पंजाब को पसन्द है? भोपाल भी बड़ी है। भोपाल को अच्छा लगा? [illegible]) अच्छा, तो इन्हों को हमेशा [illegible] अच्छा प्रबन्ध मिलना, संगम पर सतयुग के

करते थे, अभी तो डायरेक्ट हैं । नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं । सर्चलाइट दे रहे हैं । बच्चे समझते हैं मधुबन में बाबा के पास जरूर आना चाहिए । वहाँ हमारी बैटरी अच्छी चार्ज होती है । घर में तो गोरखधन्धे आदि में अशान्ति ही अशान्ति लगी हुई है । इस समय सारे विश्व में अशान्ति है । तुम जानते हो अभी हम शान्ति स्थापन कर रहे हैं योगबल से । बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से । कल्प पहले भी तुमने यह सुना था, अब भी सुनते हो । जो कुछ एक्ट होती है फिर भी होगी । बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये । मुझ माशूक को इतना याद करते थे । अब मैं आया हूँ तो फिर छोड़कर चले जाते हैं । माया कैसा थप्पड़ लगा देती है । जो मम्मा-बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे, डायरेक्शन देते थे — ऐसे-ऐसे करो । टीचर हो बैठते थे । हम समझते थे यह तो माला में बहुत-बहुत अच्छे नम्बर में आयेंगे, वह भी गुम हो गये । तो यह भी समझाना पड़े ना । हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है । कृष्ण के चरित्र क्या होंगे । जन्म लिया और नर्स ले जाती है । यहाँ माफिक थोड़ेही किचड़ा आदि होता है । बाबा अनुभवी तो है ना । बाबा को अपनी सारी हिस्ट्री याद है । सिर पर टोपी, नंगे पांव दौड़ता था- मुसलमान लोग भी बहुत प्यार करते थे । बहुत खातिरी करते थे । मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरु का बच्चा आया । बाजरी का ढोढा खिलाते थे । यहाँ भी बाबा ने 15 दिन प्रोग्राम दिया था ढोढा और छांछ खाने का । और कुछ भी नहीं बनता था । बीमार आदि सबके लिए यही बनता था । किसको कुछ भी हुआ नहीं । और ही बीमार बच्चे भी तन्दुरूस्त हो गये । देखते थे आसक्ति टूटी हुई है ! यह नहीं होना चाहिए या यह चाहिए । चाहना को चुहरा (जमादार) कहा जाता है । यहाँ तो बाप कहते हैं मांगने से मरना भला । बाप ही जानते हैं — बच्चों को क्या देना है । जो कुछ देना होगा वह खुद ही देंगे । यह सब ड्रामा बना हुआ है । बाबा ने तो पूछा था ना बाप को जो बाप भी समझते हैं और बच्चा भी समझते हैं, वह हाथ उठायें । तो सबने हाथ उठाया । हाथ तो झट उठा देते हैं । जैसे बाबा पूछते हैं लक्ष्मी नारायण कौन बनेंगे ? तो झट हाथ उठायेंगे । यह पारलौकिक बच्चा भी जरूर एड करते हैं, यह तो माँ-बाप की बहुत सेवा करते हैं । 21 जन्म का वर्सा देते हैं । बाप जब वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर बच्चों का फर्ज है बाप की सम्भाल करना । वह जैसे सन्यासी बन जाते हैं । जैसे इनका लौकिक बाप था, वानप्रस्थ अवस्था हुई तो बोला हम जाकर बनारस में सतसंग करेंगे, हमको वहाँ ले चलो । (हिस्ट्री सुनाना) तुम हो ब्राह्मण प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियां । प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर । सबसे पहला पत्ता है मनुष्य सृष्टि का । इनको ज्ञान सागर नहीं कहा जाता । न ब्रह्मा-विष्णु-शंकर ही ज्ञान के सागर हैं । शिव बाबा वह है बेहद का बाप, तो उनसे वर्सा मिलना चाहिए ना । वह निराकार परमपिता परमात्मा कब, कैसे आया, उनकी जयन्ती मनाते हैं । यह कोई को पता नहीं । यह तो गर्भ में नहीं आते हैं । समझाते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, बहुत जन्मों के अन्त में वानप्रस्थ अवस्था में । मनुष्य जब सन्यास करते हैं तो उनकी वानप्रस्थ अवस्था कही जाती है । तो अब बाप तुमको कहते हैं — बच्चे, तुमने पूरे 84 जन्म लिए, यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म । हिसाब तो जानते हो ना । तो मैं इनमें प्रवेश करता हूँ । कहाँ आकर बैठता हूँ । इनकी आत्मा जहाँ बैठी है, उनके बाजू में आकर बैठता हूँ । जैसे गुरू लोग अपने शिष्य को बाजू में गद्दी पर बिठाते

सेवा सेंटर

43

४३

2-4-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज - 1-11-81 मधुबन

सेवा के सफलता की कुन्जी

आज बापदादा सर्व बच्चों को किस रूप में देख रहे हैं? आज विश्व सेवाधारी बाप अपने सेवाधारी बच्चों को देख रहे हैं अर्थात् अपने खुदाई खिदमतगार बच्चों को देख रहे हैं। जो हैं ही खुदाई खिदमतगार उन्हों को सदा स्वतः ही खुदा और खिदमत अर्थात् बाप और सेवा दोनों साथ-साथ याद रहती ही है। वैसे भी आजकल की दुनिया में कोई किसका कार्य नहीं करता वा सहयोगी नहीं बनता तो एक दो को कहते हैं भगवान के नाम से यह काम करो वा खुदा के नाम से यह काम करो क्योंकि समझते हैं, भगवान के नाम से सहयोग मिल जायेगा और सफलता भी मिल जायेगी। कोई असम्भव कार्य वा होपलेस बात होती है तो भी यही कहते हैं "भगवान का नाम लो तो काम हो जायेगा।" इससे क्या सिद्ध होता है? असम्भव से असम्भव, नाउम्मीद से उम्मीदवार कार्य बाप ने आकर किये हैं तब तो अब तक भी यह कहावत चलती आती है। परन्तु आप सब तो हैं ही खुदाई खिदमतगार। सिर्फ भगवान का नाम लेने वाले नहीं लेकिन भगवान के साथी बन श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं। तो खुदाई खिदमतगार बच्चों के हर कार्य सफल हुए ही पड़े हैं। खुदाई खिदमतगार के कार्य में कोई असम्भव बात नहीं। सब सम्भव और सहज है। खुदाई खिदमतगार बच्चों को विश्व परिवर्तन का कार्य क्या मुश्किल लगता है? हुआ ही पड़ा है। ऐसे अनुभव होता है ना? सदा यही अनुभव करते हो कि यह तो अनेक बार किया हुआ है। कोई नई बात ही नहीं लगती। होगा, नहीं होगा, कैसे होगा, यह क्वेश्चन ही नहीं उठता क्योंकि बाप के साथी हो। जबकि अब तक सिर्फ भगवान के नाम से ही काम हो जाते तो साथ में कार्य करने वाले बच्चों का हर कार्य तो सफल हुआ ही पड़ा है। इसलिए बापदादा बच्चों को सदा सफलतामूर्त कहते हैं। सफलता के सितारे अपने सफलता द्वारा विश्व को रोशन करने वाले। तो सदा अपने को ऐसे सफलतामूर्त अनुभव करते हो? अगर चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण सिर्फ खिदमतगार बन जाते हो। खुदाई खिदमतगार नहीं होते। खुदा को खिदमत से जुदा कर देते हो इसलिए अकेले होने के कारण सहज मुश्किल हो जाता है और सफलता की मंजिल दूर दिखाई देती है। लेकिन नाम ही है खुदाई खिदमतगार। तो कम्बाइन्ड को अलग नहीं करो। लेकिन अलग कर देते हो ना! सदा यह नाम याद रहे तो सेवा में स्वतः ही खुदाई जादू भरा हुआ होगा। सेवा के क्षेत्र में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्व प्रति वा सेवा प्रति विघ्न आते हैं, उसका भी कारण सिर्फ यही होता, जो स्वयं को सिर्फ सेवाधारी समझते हो। लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी, सिर्फ सर्विस नहीं लेकिन गाडली सर्विस - इसी स्मृति से याद और सेवा स्वतः ही कम्बाइन्ड हो जाती है। याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहता है। जहाँ बैलेन्स है वहाँ स्वयं सदा ब्लिसफुल अर्थात् आनन्द स्वरूप और अन्य के प्रति सदा ब्लैसिंग अर्थात् कृपा दृष्टि सहज ही रहती है। इसके ऊपर कृपा करूं, यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं। हो ही कृपालु। सदा का काम ही कृपा करना है। ऐसे अनादि संस्कार स्वरूप हुए हैं? जो विशेष संस्कार होता है वह स्वतः ही कार्य करते रहते हैं। सोच के नहीं करते लेकिन हो ही जाता है। बार-बार यही कहते हो - मेरे संस्कार ऐसे हैं, इसलिए हो ही गया। मेरा भाव नहीं, मेरा लक्ष्य नहीं था लेकिन हो गया। क्यों? संस्कार हैं। कहते हो ना - ऐसे? कई कहते हैं हमने क्रोध नहीं किया लेकिन मेरे बोलने के संस्कार ही ऐसे हैं। इससे क्या

सिद्ध हुआ? अल्पकाल के संस्कार भी स्वत: ही बोल और कर्म कराते रहते हैं। तो सोचो - अनादि, ओरीजनल संस्कार आप श्रेष्ठ आत्माओं के कौन से हैं? सदा सम्पन्न और सफलतामूर्त। सदा वरदानी और महादानी - तो यह संस्कार स्मृति में रहने से स्वत: ही सर्व प्रति कृपा-दृष्टि रहती ही है।

अल्पकाल के संस्कारों को अनादि संस्कारों से परिवर्तन करो। तो भिन्न भिन्न प्रकार के विघ्न अनादि संस्कार इमर्ज होने से सहज समाप्त हो जायेंगे। बापदादा को अब तक भी बच्चों की स्व परिवर्तन वा विश्व परिवर्तन की सेवा में मेहनत देख सहन नहीं होता। खुदाई खिदमतगार और मेहनत! जब नाम से काम निकाल रहे हैं, तो आप तो अधिकारी हो। आप लोगों को मेहनत कैसे हो सकती है? फिर छोटी सी गलती करते हो - कौन सी? गलती करते हो, जानते हो? जानते भी अच्छी तरह से हो फिर क्यों करते हो? मजबूर बन जाते हो। सिर्फ छोटी सी गलती "मेरा संस्कार, मेरा स्वभाव"। अनादि काल के बजाए मध्यकाल के समझ लेते हो। मध्यकाल के संस्कार, स्वभाव को मेरा संस्कार, मेरा स्वभाव समझना यही गलती है। यह रावण का स्वभाव है, आपका नहीं है। पराई चीज़ को अपना मानना - यही गलती करते हो। मेरा कहने और समझने से मेरे में स्वत: ही झुकाव हो जाता है। इसलिए छोड़ने चाहते भी छोड़ नहीं सकते । समझा - गलती क्या है?

तो सदा याद रखो - खुदाई खिदमतगार है। "मैंने किया" नहीं, खुदा ने मेरे से कराया। इस एक स्मृति से सहज ही सर्व विघ्नों के बीज को सदा के लिए समाप्त कर दो। सर्व प्रकार के विघ्नों का बीज दो शब्दों में है। वह कौन से दो शब्द हैं, जिन शब्दों से ही विघ्न का रूप आता है? विघ्न आने के दरवाज़े को जानते हो? तो वह नामीग्रामी दो शब्द कौन-से हैं? विस्तार तो बहुत है लेकिन दो शब्दों में सार आ जाता है। 1. अभिमान और 2. अपमान। सेवा के क्षेत्र में विशेष विघ्न इन दो रास्तों से आता है। या तो "मैंने किया", यह अभिमान वा तो मेरे को क्यों नहीं आगे रखा गया, मेरे को यह क्यों कहा गया, यह मेरा अपमान किया गया। यही अभिमान और अपमान को भासना भिन्न भिन्न विघ्नों के रूप में आ जाती है। जब है ही खुदाई खिदमतगार, करन-करावनहार बाप है तो अभिमान कहाँ से आया? और अपमान कहाँ से हुआ? तो छोटी-सी गलती है ना! इसलिए कहा जाता कि खुदा को जुदा नहीं करो। सेवा में भी कम्बाइन्ड रूप याद रखो। खुदा और खिदमत। तो यह करना नहीं आता? बहुत सहज है। मेहनत से छूट जायेंगे। समझा क्या करना है? अच्छा!

ऐसे सदा अनादि संस्कार स्मृति स्वरूप, सदा स्वयं को निमित्त मात्र और बाप को करन-करावनहार अनुभव करने वाले, सदा स्वयं अनादि स्वरूप अर्थात् निरसंकल्प, किसी भी प्रकार के विघ्नों के बीज को समाप्त करने में समर्थ आत्मायें, ऐसे सदा बाप के साथी, ईश्वरीय सेवाधारियों को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।

अधर कुमारों से:- सभी अपने को बाप के स्नेही और सहयोगी श्रेष्ठ आत्मायें समझते हो ना? सदा यह नशा रहता है कि हम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्मायें हैं क्योंकि बाप के साथ पार्ट बजाने वाली हैं। सारे चक्र के अन्दर इस समय बाप के साथ पार्ट बजाने के निमित्त बने हो। ऊंच ते ऊंच पार्ट बजाने के निमित्त बने हो। ऊंचे-ते-ऊंचे भगवान के साथ पार्ट बजाने वाले कितनी ऊंची आत्मायें हो गई। लौकिक में भी कोई श्रेष्ठ पद वाले के साथ काम करते है, उनको भी कितना नशा नशा रहता है! प्राइम-मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी को भी कितना नशा रहता। तो आप किसके साथ

हो! ऊंचे-ते-ऊंचे बाप के साथ और फिर उसमें भी विशेषता यह है कि एक कल्प के लिए नहीं, अनेक कल्प यह पार्ट बजाया है और सदा बजाते ही रहेंगे। बदली नहीं हो सकता। ऐसे नशे में रहो तो सदा निर्विघ्न रहेंगे। कोई विघ्न तो नहीं आता है ना? वायुमण्डल का, वायब्रेशन का, संग का कोई विघ्न तो नहीं है? कमलपुष्प के समान हो? कमलपुष्प समान न्यारे और प्यारे। बाप का कितना प्यारा बना हूँ, उसका हिसाब न्यारेपन से लगा सकते हो। अगर थोड़ा-सा न्यारे हैं, बाकी फंसे जाते हैं तो प्यारे भी इतने होंगे। जो सदा बाप के प्यारे हैं उनकी निशानी है - स्वतः याद। प्यारी चीज़ स्वतः सदा याद आती है ना। तो यह कल्प-कल्प की प्रिय चीज़ है। एक बार बाप के नहीं बने हो, कल्प-कल्प बने हो। तो ऐसी प्रिय वस्तु को कैसे भूल सकते। भूलते तब हो जब बाप से भी अधिक कोई व्यक्ति या वस्तु को प्रिय समझने लगते हो। अगर सदा बाप को प्रिय समझते तो भूल नहीं सकते। यह नहीं सोचना पड़ेगा कि याद कैसे करे, लेकिन भूलें कैसे - यह आश्चर्य लगेगा। तो नाम अधर कुमार है लेकिन हो तो ब्रह्माकुमार। ब्रह्माकुमार विजयी हो ना? अधरकुमार तो अनुभवी कुमार हैं। सब अनुभव कर चुके। अनुभवी कभी भी धोखा नहीं खाते। पास्ट के भी अनुभवी और वर्तमान के भी अनुभवी। एक-एक अधरकुमार अपने अनुभवों द्वारा अनेकों का कल्याण कर सकते हैं। यह है विश्व कल्याणकारी ग्रुप। अच्छा।

माताओं को:- प्रवृत्ति में रहते एक बाप दूसरा न कोई - इसी स्मृति में रहती हो, यह चेकिंग करती हो? क्योंकि प्रवृत्ति के वायुमण्डल में रहते, उस वायुमण्डल का असर न हो, सदा बाप के प्यारे रहें, इसके लिए इसी बात की चेकिंग चाहिए। निमित्त मात्र प्रवृत्ति है लेकिन है तो बाप की याद में रहना। परिवार की सेवा का कितना भी पार्ट बजाना पड़े लेकिन ट्रस्टी होकर बजाना है। ट्रस्टी होंगे तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। गृहस्थीपन होगा तो मोह आ जायेगा। बाप याद नहीं आता माना मोह है। बाप की याद से हर प्रवृत्ति का कार्य भी सहज हो जायेगा क्योंकि याद से शक्ति मिलती है। तो बाप के याद की छत्रछाया के नीचे रहती हो ना? छत्रछाया के नीचे रहने वाले हर विघ्न से न्यारे होंगे। मातायें तो बापदादा को अति प्रिय हैं क्योंकि माताओं ने बहुत सहन किया है। तो बाप ऐसे बच्चों को सहन करने का फल सहयोग और स्नेह दे रहे हैं। सदा सुहागवती भव। इस जीवन में कितना श्रेष्ठ सुहाग मिल गया है। जहाँ सुहाग है वहाँ भाग्य तो है ही, इसलिए सदा सुहागवती भव!

यू.पी. और गुजरात ज़ोन बापदादा के सामने बैठा है, बापदादा उनकी विशेषता सुना रहे हैं:-

सर्व स्थानों की अपनी-अपनी विशेषता है। यू.पी. भी कम नहीं तो गुजरात भी कम नहीं। दिल्ली के बाद यू.पी. निकला। जो आदि में स्थापना के निमित्त बने हैं उन्हों का भी ड्रामा में विशेष पार्ट है। फिर भी आदि वालों ने डबल लाटरी तो ली है ना। साकार और निराकार - डबल लाटरी मिली है। यह भी कोई कम पार्ट है क्या! कल्प-कल्प के चरित्र में सदा साथ रहने का भी यादगार है। यह भी विशेष भाग्य है।

अभी भी बापदादा अव्यक्त रूप में सब पार्ट बजाते हैं लेकिन साकार तो साकार है। साकार वालों की अपनी विशेषता इन्हों की फिर अपनी विशेषता है। यह अव्यक्त से साकार का स्नेह खींचने वाले हैं। कई हैं जो साकार के साथ रहने वालों से भी अधिक अनुभव अभी करते हैं। तो सब एक-दो से आगे हैं। अच्छा!

आज यू.पी. वालों का चांस है। नदियों के किनारे पर यू.पी. ज्यादा है। जमुना नदी के किनारे

पर राजधानी और रास दिखाते हैं लेकिन यू.पी. की पतित-पावनी मशहूर है, यानी यू.पी. को सेवा का स्थान दिखाया है। तो ऐसा कोई यू.पी. से निकलेगां जरुर जो अनेकों की सेवा के निमित्त बने। ऐसा कोई तैयार हो जायेगा। जैसे अमेरिका से एक से अनेकों की सेवा हो रही है, ऐसे यू.पी. से भी कोई निकल आयेगा जो एक से अनेकों की सेवा हो जायेगी। आवाज तो फैलेगा ना। जब विदेश से आवाज आयेगा तब सब जाग जायेंगे। अभी एकदम बड़ा वी.आई.पी. नहीं निकला है। अभी तक जो वी.आई.पी. निकले हैं उनसे ज्यादा नामीग्रामी तो नहीं विदेश का कहेंगे ना! जो प्रैक्टिकल अनेकों को सन्देश दिलाने के निमित्त बन रहे है। भारत भी आगे जा सकता है, लेकिन अभी की बात है। आखिर जय-जयकार तो भारत में ही होनी है ना। विदेश से भी जय-जयकार के नारे लगाते-लगाते पहुंचेंगे तो भारत में ही ना। उन्हों के मुख से भी यही निकलेगा - हमारा भारत। भारत में बाप आये हैं, ऐसे नहीं कहेंगे यू.एन. में बाप आये हैं। विदेश इस समय रेस में आगे जा रहा है। अभी की बात है, कल दूसरा भी बदल सकता है। एक-दो को देख करके और ही आगे बढ़ो। अभी यू.पी. का कोई वी.आई.पी. लाओ। पतित-पावनी कोई को पावन करके छू मंत्र करो।

गुजरात वृद्धि में नम्बरवन हो गया है। वी.आई.पीज भी स्टेज पर आ जायेंगे। ऐसे वी.आई. पीज़ हो जो बेहद की सेवा करें। गुजरात का गुजरात में किया, वह तो छोटा माइक हो गया। चारों ओर करें उसको कहेंगे बड़ा माइक। अच्छा!

प्रश्न:- जो संगम पर मास्टर नालेजफुल बन जाते हैं, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- मा. नालेजफुल सदा मायाजीत होंगे क्योंकि वह जानते हैं कि माया किस रुप से और क्यों आती है। माया के आने का मुख्य कारण अपनी कमज़ोरी है। कमज़ोरी ही माया को जन्म देती है। संकल्प या संस्कार में जब कमज़ोरी होती है तो माया को जन्म मिल जाता है। इसलिए नॉलेजफुल बच्चे कारण को जानकर पहले ही सदाकाल का निवारण कर देते हैं। संगम पर हर बात के नॉलेज़फुल बनना है, तन के भी नॉलेजफुल, मन के भी नॉलेजफुल और धन के भी नॉलेजफुल। ऐसे नॉलेजफुल ही पावरफुल बन मायाजीत, जगतजीत बन जाते हैं। अच्छा!

वरदान:- विशाल बुद्धि द्वारा संगठन की शक्ति को बढ़ाने वाले सफलता स्वरूप भव

संगठन की शक्ति को बढ़ाना — यह ब्राह्मण जीवन का पहला श्रेष्ठ कार्य है। इसके लिए जब कोई भी बात मैजॉरटी वेरीफाय करते हैं, तो जहाँ मैजारटी वहाँ मैं—यही है संगठन की शक्ति को बढ़ाना। आपका विचार भले कितना भी अच्छा हो लेकिन जहाँ संगठन टूटता है तो वह अच्छा भी साधारण माना जाता है। उस समय अपने विचार त्यागने भी पड़े तो त्याग में ही भाग्य है। इससे ही सफलता स्वरूप बन समीप संबंध में आयेंगे।

स्लोगन:-

फरिश्ता रूप में रहने के अभ्यासी बनो तो कोई भी विघ्न अपना प्रभाव डाल नहीं सकता।

ज्ञान के आधार से चलना है!

12-5-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – स्वयं की सम्भाल करने के लिए रोज़ दो बार ज्ञान स्नान करो। माया तुमसे भूलें कराती, बाप तुमको अभुल बनाते"

प्रश्नः- किस निश्चय वा पुरुषार्थ के आधार पर बाप की पूरी मदद मिलती है?
उत्तरः- पहले पक्का निश्चय हो कि मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। साथ-साथ पूरी बलि चढ़े अर्थात् ट्रस्टी बन प्यार से सेवा करे। तो ऐसे बच्चे को बाप की पूरी पूरी मदद मिलती है।

गीतः- हमें उन राहों पर चलना है... ओम् शान्ति।

गीत में यह कौन कहते हैं? परमपिता परमात्मा, ज्ञान का सागर कहते हैं – बच्चे, हम तुम्हें अभी जिस राह पर चला रहे हैं वा माया पर जीत पाने की जो मत अथवा राय दे रहे हैं, उसमें यह तो होगा ही – कोई गिरेंगे तो कोई उठते वा सम्भलते रहेंगे। सुरजीत और मूर्छित होते रहेंगे। सुरजीत होने लिए यह संजीवनी बूटी है। परमपिता परमात्मा की है ज्ञान बूटी। रामायण में भी कहानी है ना कि राम और रावण की युद्ध हुई, लक्ष्मण मूर्छित हो गया, हनूमान संजीवनी बूटी ले आया। अब वास्तव में रामायण तो पीछे बैठ बनाया है। ऐसी कोई बातें हैं नहीं, न कोई मनुष्यों की बनाई हुई गीता भगवान ने बैठ गाई है। बाप तो ज्ञान का सागर है। किसका ज्ञान? सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं। जिसका ही मनुष्यों ने गीता शास्त्र बनाया है, उस पर नाम रख दिया है श्रीकृष्ण का। जैसे बाप की जीवन कहानी में अगर कोई बच्चे का नाम लिख दे तो क्या होगा! वैसे ही शिवबाबा ने जन्म दिया गीता को, उस गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है इसलिए अनर्थ हो गया है। गीता खण्डन होने से सभी मनुष्य आत्माओं का बुद्धियोग परमात्मा से टूट गया है। तो मनुष्य पवित्र कैसे बनें! इस योग अग्नि से ही हम पवित्र बनते हैं, न कि गंगाजल से। बाबा है ज्ञान का सागर। ज्ञान अमृत से मनुष्य को देवता बनाते हैं। बाकी अमृत पानी को नहीं कहा जाता है। यह है पढ़ाई। पढ़ाई माना नॉलेज। यह शास्त्र तो भारतवासियों ने द्वापर से बनाये है। मनुष्य कहते हैं शास्त्र अनादि हैं। हम कहते हैं ड्रामा ही अनादि है। परन्तु ऐसे नहीं कि यह कोई शास्त्र सतयुग से शुरु हुए हैं। यह सब अनादि है माना ड्रामा में नूँध हैं। द्वापर से लेकर मनुष्य लिखते ही आये हैं। अब देहद के बाप ने अपनी सारी जीवन कहानी बताई है। कहते हैं सतयुग त्रेता में मेरा पार्ट नहीं है। सृष्टि ड्रामा अनुसार चलती रहती है। मेरा भी ड्रामा के अन्दर पार्ट नूँधा हुआ है। मैं ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। सतयुग-त्रेता में मेरा पार्ट नहीं है। जैसे क्राइस्ट, बुद्ध आदि का सतयुग-त्रेता में पार्ट नहीं है। सब आत्मायें मुक्तिधाम में रहती हैं। ऐसे नहीं, देवी-देवताओं की भी सब आत्मायें उस समय आ जाती हैं। नहीं, वे भी धीरे-धीरे नम्बरवार आती हैं। फिर सतोप्रधान से बदल सतो, रजो, तमो स्टेजेस में आती है। फिर सूर्यवंशी ही चन्द्रवंशी बनते हैं फिर वृद्धि होती जाती है। यह पूरा राज़ समझना है।

तुम जानते हो जो अधूरा पवित्र बनेंगे उन्हें राज्य भी अधूरा मिलेगा। जो ज्ञान-योग में तीखे जायेंगे वे ही पहले राजे बनेंगे। यह राजधानी बन रही है। पूरा पुरुषार्थ करना है। शिवबाबा समझाते है – तुमको हीरे समान बनना है। मैं ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर हूँ। तुमको फिर मास्टर ज्ञान सागर बनना पड़े। शान्ति का अर्थ एक दो से लड़ना नहीं है। सन्यासी समझते हैं प्राणायाम चढ़ा दें, यहाँ ऐसे नहीं है। बाबा रस्सी खींच लेते है। छोटी बच्चियों की भी बाबा रस्सी खींच लेते हैं तो ध्यान में चली जाती हैं। इसको कहा जाता है ईश्वरीय वरदान। भक्ति में भी साक्षात्कार होता है। यह दिव्य दृष्टि देना बाप के सिवाए और किसकी ताकत नहीं है। अब तो बाप सम्मुख है कहते हैं भक्तों के पास भगवान को आना पड़ता है - माया की जंजीरों से लिबरेट करने। बाबा कहते हैं – मैं जानता हूँ, यह माया की युद्ध है, कभी चढ़ेंगे, कभी गिरेंगे। योग टूटता है तो मन्सा, वाचा, कर्मणा न भी भूलें होती हैं। परीक्षा सब पर आती है। कुछ भी माया का वार न हो, फिर तो शरीर ही छूट जाए। सम्पूर्ण कोई बना नहीं है। यह घुड़दौड़ है। राजस्व अश्वमेध यज्ञ कहते हैं। राजाई के लिए अश्व यानी रथ को शिवबाबा पर बलि चढ़ाना है अर्थात् बच्चा बन पूरी सेवा करनी है। ट्रस्टी बन फिर पुरुषार्थ करना है तो मदद भी मिलेगी। पक्का निश्चय चाहिए – मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। मरना तो सबको है।

परमपिता परमात्मा जो कि बाप-टीचर-सतगुरु है, उनसे अपना वर्सा लेने का हक हर एक का है। सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। सबको इकट्ठा मरना है। जब आफ्तें आती हैं तो सब इकट्ठे मरते हैं ना। थोड़े बहुत गोले गिरेंगे तो मकान टूट पड़ेंगे। तो अभी सबका मौत है, इसलिए बच्चों को भी कमाई कराओ। यह है सच्ची कमाई। जो करेगा सो पायेगा। ऐसे नहीं, बाप कमाई करेगा तो बच्चों को मिल जायेगी। नहीं। बच्चों को भी यह सच्ची कमाई करनी है। यह हैं समझने की बातें। इसमें परहेज बहुत चाहिए। हम देवता बन रहे हैं तो कोई अशुद्ध वस्तु खा नहीं सकते हैं। कोई समझते हैं मछली खाने में पाप नहीं है, ब्राह्मणों को भी खिलाते हैं। सब रस्म-रिवाज ही उल्टा हो गया है। बाप कहते हैं बिल्कुल पवित्र बनना है। पहले ज्ञान चिता पर बैठना है। मन्सा में विकल्प कितने भी आयें परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना। जब तुम बाबा के बनते हो तो माया की युद्ध शुरु हो जाती है। प्रजा बनने वालों से माया इतना टक्कर नहीं खाती है। माया-जीत जगत-जीत बनना है। प्रजा जगत-जीत नहीं बनती है। जगत-जीत माना सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनना। मेहनत कर 3-4 वर्ष पवित्र रह फिर थप्पड़ खा लेते हैं। फिर चिट्ठी लिखते हैं – बाबा माफ़ करना। यहाँ कायदे भी हैं। बच्चा बना तो सारे जीवन के पाप भी लिखने पड़े – धर्मराज शिवबाबा, इस जन्म में मैंने यह-यह पाप किये हैं तो आधा माफ हो जाता है। यह भी लॉ है। आगे जज के आगे सच बोलते थे तो सजा कम हो जाती थी। भूल करके लिखे नहीं तो 100 गुणा दण्ड हो जाता। बच्चों के लिए बहुत परहेज है। बाहर वालों के लिए इतनी नहीं है। इसलिए डरते हैं। बेहद का बाप अथवा साजन जो सौभाग्यशाली बनाते हैं उनके बनते नहीं। भूलें तो होती हैं परन्तु आखरीन अभुल जरूर

...ना है। यहाँ बहुत परहेज रखनी है। समर्थ का हाथ पकड़ा है तो बाप सम्भाल भी करेंगे। ...तेले बच्चों की थोड़े-ही करेंगे। सगे बहुत थोड़े हैं तो भी कितने बच्चे हैं जो बाबा को चिट्ठी लिखते हैं। कितनी पोस्ट रोज़ आती है। बाप का तो एक हाथ है, हरेक लिखे मुझे अलग पत्र लिखो... अभी तो वहुत वृद्धि होगी। इतनी बैग पोस्ट की और कोई की नहीं निकलती होगी। यह है ही गुप्त गवर्मेन्ट। अन्डरग्राउण्ड है। रिलीजोपोलिटीकल है। कोई हथियार आदि नहीं है। मंजिल ऊंची है। चढ़े तो चाखे... गिरे तो राजाई गँवाए प्रजा बन जाते हैं। समझा।

तुम बच्चे जानते हो भारत जो हीरे मिसल था वह कौड़ी मिसल बन गया है। अभी तो तुम कहेंगे हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बनने का पुरुषार्थ करते हैं। हम सदा सौभाग्यशाली बनने आये हैं। बाबा पतित से पावन बना रहे हैं, फिर यह रावण राज्य नीचे चला जायेगा। यह चक्र फिरता है ना। रावण राज्य नीचे तो राम राज्य ऊपर आ जायेगा। अपने को बहुत सम्भालना भी है। सम्भाल वही सकेंगे जो रोज़ ज्ञान-स्नान करेंगे। रॉयल मनुष्य दिन में दो वारी स्नान करते हैं। यह भी अमृतवेले और नुमाशाम दो वारी ज्ञान-स्नान जरूर करना चाहिए। एक वारी एक घण्टा पढ़कर फिर दूसरा वारी मुरली को रिवाइज जरूर करना है। धारणा करनी और करानी है। बच्चों को, स्त्री को भी सच्ची कमाई करानी है। 21 जन्मों का राज्य-भाग्य लेना कोई मासी का घर नहीं है। समझा जाता है कौन-कौन तीखा पुरुषार्थ करते हैं। बीमार हो तो डोली में बिठाकर ले आना चाहिए। ज्ञान-अमृत मुख में हो तब प्राण तन से निकलें। अन्धा-वहेरा कोई भी कमाई कर सकता है। ज्ञान तो बड़ा सहज है। बाप से वर्सा लेना है। एक ही वार बाप सम्मुख आकर बादशाही देते हैं। बच्चे सुखी हुए तो बाप वानप्रस्थ में चले जाते हैं। बेहद का बाप सबको सुखी कर खुद परमधाम में जाए बैठ जाते हैं। फिर आत्मायें नम्बरवार वहाँ से आती रहती हैं। कोई को भेजते नहीं है। यह कहने में आता है लेकिन यह आटोमेटिकली ड्रामा चलता रहता है। अपने टाइम पर धर्म स्थापन करने आना ही है। तुम जानते हो हम ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण हैं। शिव वंशी तो सारी दुनिया है। फिर जिस्मानी बाप हो गया ब्रह्मा। ब्रह्मा के बच्चे हम भाई-वहन ठहरे। अभी हम हैं ईश्वरीय धर्म के। सतयुग में होंगे देवी-देवता धर्म के। अब ईश्वर के पास जन्म लिया है। अभी हम उनके बन गये हैं। मनुष्य रचता को न जानने कारण, रचना के आदि-मध्य-अन्त को भी नहीं जानते हैं। उनको कहा जाता है नास्तिक, कौड़ी तुल्य। बरोबर अभी हम आस्तिक बने हैं तो हम हीरे तुल्य बन जाते हैं। रचता और रचना को जानने से हमको राजाई मिलती है। बाबा हमको वर्थ पाउण्ड बनाते हैं तो बनना चाहिए ना। सचखण्ड का बादशाह, सचखण्ड का मालिक बना रहा है। चमड़ापोश कहा जाता है। एक खुदा दोस्त की कहानी भी है। तो अब वह खुदा हमारा दोस्त है। खुदा दोस्त, अल्लाह अवलदीन और हातमताई का खेल सारा अभी का है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सच्ची कमाई करनी और सबको करानी है। परीक्षायें वा तूफान आते भी कर्मेन्द्रियों से कोई भूल नहीं करनी है। माया-जीत जगत-जीत बनना है।

२- देवता बनने के लिए खान-पान की पूरी परहेज रखनी है। कोई भी अशुद्ध वस्तु नहीं खानी है। दो बारी ज्ञान स्नान जरूर करना है।

अव्यक्त मुरली से प्रश्न-उत्तर

प्रश्न: -किस एक शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित होने से ही सर्व कमजोरियां समाप्त हो जायेंगी?

उत्तर:- सिर्फ पुरुषार्थी शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। पुरुष अर्थात् इस रथ का रथी, प्रकृति का मालिक। इसी एक शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित होने से सर्व कमजोरियां समाप्त हो जायेंगी। पुरुष प्रकृति के अधिकारी है, न कि अधीन। रथी रथ को चलाने वाला है, न कि रथ के अधीन होने वाला।

प्रश्न:- आदिकाल के राज्य अधिकारी बनने के लिए कौन-से संस्कार अभी से धारण करो?

उत्तर:- अपने आदि अविनाशी संस्कार अभी से धारण करो। अगर बहुतकाल योद्धेपन के संस्कार रहे अर्थात् युद्ध करते-करते समय बिताया, आज जीत, कल हार, अभी-अभी जीत, अभी-अभी हार, सदा के विजयीपन के संस्कार नहीं बनें तो क्षत्रिय कहा जायेगा, न कि ब्राह्मण। ब्राह्मण सो देवता बनते हैं, क्षत्रिय, क्षत्रिय घराने में चले जाते हैं।

प्रश्न:- विश्व-परिवर्तक बनने के पहले कौन-सा परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए?

उत्तर:- विश्व परिवर्तक बनने के पहले अपने संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए। दृष्टि और वृत्ति का परिवर्तन चाहिए। आप दृष्टा इस दृष्टि द्वारा देखन वाले हो। दिव्य नेत्र से देखो, न कि चमड़ी के नेत्रों से। दिव्य नेत्र से देखेंगे तो स्वत: दिव्य रूप ही दिखाई देगा। चमड़े की आंखे चमड़े को देखती, चमड़ी के लिए सोचती — यह काम फरिश्तों वा ब्राह्मणों का नहीं।

वरदान:- कोई भी ड्युटी बजाते हुए स्वयं को सेवाधारी समझ सेवा करने वाले डबल फल के अधिकारी भव

कोई भी कार्य करते, दफ्तर में जाते या बिजनेस करते - सदा स्मृति रहे कि सेवा के लिए यह ड्युटी बजा रहे हैं। सेवा के निमित्त यह कर रहा हूँ - तो सेवा आपके पास स्वत: आयेगी और जितनी सेवा करेंगे उतनी खुशी बढ़ती जायेगी। भविष्य तो जमा होगा ही लेकिन प्रत्यक्षफल खुशी मिलेगी। तो डबल फल के अधिकारी बन जायेंगे। याद और सेवा में बुद्धि बिजी होगी तो सदा ही फल खाते रहेंगे।

स्लोगन:-

जो सदा खुशहाल रहते हैं वह स्वंय को और सर्व को प्रिय लगते हैं।

"मीठे बच्चे – बाप से करेन्ट लेनी है तो सर्विस में लगे रहो, जो बच्चे सब कुछ त्याग बाप की सर्विस में रहते हैं वही प्यारे लगते हैं, दिल पर चढ़ते हैं"

प्रश्नः- बच्चों को स्थाई खुशी क्यों नहीं रहती, मुख्य कारण क्या है?

उत्तरः- याद के समय बुद्धि भटकती है, स्थिर बुद्धि न होने कारण खुशी नहीं रह सकती। माया के तूफ़ान दीपकों को हैरान कर देते हैं। जब तक कर्म, अकर्म नहीं बनते हैं तब तक खुशी स्थाई नहीं रह सकती है। इसलिए बच्चों को यही मेहनत करनी है।

ओम् शान्ति। जब ओम् शान्ति कहते हैं तो बड़े हुल्लास से कहते हैं हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं। अर्थ कितना सहज है। बाप भी कहेंगे ओम् शान्ति। दादा भी कहेंगे ओम् शान्ति। वह कहते हैं मैं परमात्मा हूँ, यह कहते मैं आत्मा हूँ। तुम सब सितारे हो। सब सितारों का बाप भी चाहिए ना। गाया जाता है सूर्य, चांद और लकी सितारे। तुम बच्चे हो मोस्ट लकी सितारे। उनमें भी नम्बरवार हैं। जैसे रात को चन्द्रमा निकलता है फिर सितारों में कोई डिम होते हैं, कोई बड़े तीखे होते हैं। कोई चन्द्रमा के आगे होते हैं। सितारे हैं ना। तुम भी ज्ञान सितारे हो। चमकता है भ्रकुटी के बीच में वन्डरफुल सितारा। बाप कहते हैं यह सितारे (आत्मायें) बड़े वन्डरफुल हैं। एक तो इतनी छोटी बिन्दी है। जिसका कोई को पता नहीं है। आत्मा ही शरीर से पार्ट बजाती है। यह बड़ा वन्डर है। तो तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं। कोई कैसे, कोई कैसे। बाप उनको बैठ याद करते हैं जो सितारे अच्छे चमकते हैं, जो बहुत सर्विस करते हैं, उनको करेन्ट मिलती जाती है। तुम्हारी बैटरी भरती जाती है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए सर्च लाइट मिलती है नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ सब कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं, वह बहुत प्यारे लगते हैं। दिल पर भी चढ़ते हैं। बाप दिल लेने वाला है ना। दिलवाला मन्दिर भी है ना। अब दिलवाला या दिल लेने वाला मन्दिर। किसकी दिल लेने वाला? तुमने देखा है ना। प्रजापिता ब्रह्मा बैठा है ना। जरूर उनमें शिवबाबा की प्रवेशता है और फिर तुम देखते भी हो—ऊपर में स्वर्ग की स्थापना भी है, नीचे बच्चे तपस्या में बैठे हैं। यह तो छोटा मॉडल रूप में बनाया हुआ है। तो जो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं, बहुत मददगार हैं। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे हैं ना। यह मन्दिर यादगार बहुत अच्छा एक्यूरेट बना हुआ है। तुम कहेंगे यह हमारा ही यादगार है। अभी तुमको रोशनी मिली है और कोई को भी ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। भक्ति मार्ग में तो जो मनुष्यों को सुनाते हैं, सत सत करते जाते हैं। वास्तव में है झूठ, उसको सत समझते हैं। अब बाप जो ट्रुथ है, वह बैठकर तुमको ट्रुथ सुनाते हैं, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो। बाप तो कुछ भी मेहनत नहीं कराते हैं। सारे झाड़ का राज़ तुम्हारी बुद्धि में बैठ गया है। तुमको समझाते तो बहुत सहज हैं। परन्तु टाइम क्यों लगता है? नॉलेज वा वर्सा लेने में टाइम नहीं लगता। टाइम लगता है पवित्र बनने में। मुख्य है याद की यात्रा। यहाँ तुम आते हो तो यहा अटेन्शन जास्ती होता है याद की यात्रा में। घर में जाने से इतना नहीं रहता। यहाँ सब नम्बरवार हैं। कोई तो यहाँ बैठे होंगे, बुद्धि में

यही नशा होगा–हम बच्चे, वह बाप है। बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है। दिव्य दृष्टि दे रहे हैं। सर्विस कर रहे हैं। तो उस एक को ही याद करना चाहिए। और कोई तरफ बुद्धि जानी नहीं चाहिए। सन्देशी पूरी रिपोर्ट दे सकती है–किसकी बुद्धि बाहर भटकती है, कौन क्या करते हैं, किसको झुटका आता है, सब बता सकती है।

जो सितारे अच्छे सर्विसएबुल हैं, उन्हों को ही देखता रहता हूँ। बाप का लव है ना। स्थापना में मदद करते हैं। हूबहू कल्प पहले मिसल यह राजधानी स्थापन हो रही है, अनेक बार हुई है। यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है। इसमें फ़िक्र की भी कोई बात नहीं रहती। बाबा के साथ हैं ना। तो संग का रंग लगता है। फ़िक्र कम होती जाती है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। बाप बच्चों के लिए स्वर्ग की राजधानी ले आये हैं। सिर्फ कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, पतित से पावन बनने के लिए बाप को याद करो। अब जाना है स्वीट होम। जिसके लिए ही तुम भक्ति मार्ग में माथा मारते हो। परन्तु एक भी जा नहीं सकते। अब बाप को याद करते रहो और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। अल्फ और बे। बाप को याद करो और 84 का चक्र फिराओ। आत्मा को 84 के चक्र का ज्ञान हुआ है। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो सो भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सुबह को उठकर तुम बुद्धि में यही रखो–अब हमने 84 का चक्र पूरा किया है, अब वापिस जाना है। इसलिए अब बाप को याद करना है तो तुम चक्रवर्ती बनेंगे। यह तो सहज है ना। परन्तु माया तुमको भुला देती है। माया के तूफ़ान हैं ना, वह दीपकों को हैरान कर देते हैं। माया बड़ी दुस्तर है। इतनी शक्ति है जो बच्चों को भुला देती है। वह खुशी स्थाई नहीं रहती है। तुम बाप को याद करने बैठते हो, बैठे-बैठे बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह सब हैं गुप्त बातें। कितनी भी कोशिश करेंगे परन्तु याद कर नहीं सकेंगे। फिर कोई की बुद्धि भटक-भटक कर स्थिर हो जाती है, कोई फट से स्थिर हो जाते हैं, कोई से तो कितना भी माथा मारो तो भी बुद्धि में ठहरता नहीं। इसको माया की युद्ध कहा जाता है। कर्म, अकर्म बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। वहाँ तो रावण राज्य ही नहीं तो कर्म-विकर्म भी नहीं होते। माया होती ही नहीं जो उल्टा कर्म कराये। रावण और राम का खेल है। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। दिन और रात। संगमयुग पर सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं। अब तुम ब्राह्मण समझते हो रात पूरी हो दिन शुरू होना है। वह शूद्र वर्ण वाले थोडेही समझते हैं।

मनुष्य तो बहुत आवाज़ से भक्ति आदि के गीत गाते हैं। तुमको तो जाना है आवाज़ से परे। तुम तो अपने बाप की ही याद में मस्त रहते हो। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा समझती है अब बाप को याद करना है। भक्ति मार्ग में शिवबाबा-शिवबाबा तो करते आये हैं। शिव के मन्दिर में शिव को बाबा जरूर कहते हैं। ज्ञान कुछ भी नहीं। अब तुमको ज्ञान मिला है। वह शिवबाबा है, उनका यह चित्र है, वह तो लिंग ही समझते हैं। अब तुमको तो ज्ञान मिला है। वह लिंग के ऊपर जाकर लोटी चढाते हैं। अब बाप तो है निराकार। निराकार के ऊपर लोटी चढ़ायेंगे, वह क्या करेंगे! साकार हो तो स्वीकार भी करे। निराकार

पर दूध आदि चढ़ायेंगे, वह क्या करेंगे! बाप कहते हैं दूध आदि जो चढ़ते हो वह तुम ही पीते हो. भोग आदि भी तुम ही खाते हो। यहाँ तो मैं सम्मुख हूँ ना। आगे इनडायरेक्ट करते थे, अभी तो डायरेक्ट हैं। नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं। सर्चलाइट दे रहे हैं। बच्चे समझते हैं मधुबन में बाबा के पास जरूर आना चाहिए। वहाँ हमारी बैटरी अच्छी चार्ज होती है। घर में तो गोरखधन्धे आदि में अशान्ति ही अशान्ति लगी हुई है। इस समय सारे विश्व में अशान्ति है। तुम जानते हो अभी हम शान्ति स्थापन कर रहे हैं योगबल से। बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से। कल्प पहले भी तुमने यह सुना था, अब भी सुनते हो। जो कुछ एक्ट होती है फिर भी होगी। बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये। मुझ माशूक को इतना याद करते थे। अब मैं आया हूँ तो फिर छोड़कर चले जाते हैं। माया कैसा थप्पड़ लगा देती है। बाबा अनुभवी तो है ना! बाबा को अपनी सारी हिस्ट्री याद है। सिर पर टोपी, नंगे पांव दौड़ता था... मुसलमान लोग भी बहुत प्यार करते थे। बहुत ख़ातिरी करते थे। मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरु का बच्चा आया। बाजरी का ढोढा खिलाते थे। यहाँ भी बाबा ने 15 दिन प्रोग्राम दिया था ढोढा और छांछ खाने का। और कुछ भी नहीं बनता था। बीमार आदि सबके लिए यही बनता था। किसको कुछ भी हुआ नहीं। और ही बीमार बच्चे भी तन्दुरूस्त हो गये। देखते थे आसक्ति टूटी हुई है! यह नहीं होना चाहिए या यह चाहिए। चाहना को चुहरा (जमादार) कहा जाता है। यहाँ तो बाप कहते हैं मांगने से मरना भला। बाप ही जानते हैं—बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा वह खुद ही देंगे। यह सब ड्रामा बना हुआ है।

बाबा ने तो पूछा था ना बाप को जो बाप भी समझते हैं और बच्चा भी समझते हैं, वह हाथ उठायें। तो सबने हाथ उठाया। हाथ तो झट उठा देते हैं। जैसे बाबा पूछते हैं लक्ष्मी-नारायण कौन बनेंगे? तो झट हाथ उठायेंगे। यह पारलौकिक बच्चा भी जरूर एड करते हैं, यह तो माँ-बाप की बहुत सेवा करते हैं। 21 जन्म का वर्सा देते हैं। बाप जब वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर बच्चों का फ़र्ज है बाप की सम्भाल करना। वह जैसे सन्यासी बन जाते हैं। जैसे इनका लौकिक बाप था, वानप्रस्थ अवस्था हुई तो बोला हम जाकर बनारस में सतसंग करेंगे, हमको वहाँ ले चलो। (हिस्ट्री सुनाना) तुम हो ब्राह्मण प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियां। प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर। सबसे पहला पत्ता है मनुष्य सृष्टि का। इनको ज्ञान सागर नहीं कहा जाता। न ब्रह्मा-विष्णु-शंकर ही ज्ञान के सागर हैं। शिवबाबा वह है बेहद का बाप, तो उनसे वर्सा मिलना चाहिए ना। वह निराकार परमपिता परमात्मा कब, कैसे आया, उनकी जयन्ती मनाते हैं। यह कोई को पता नहीं। यह तो गर्भ में नहीं आते हैं। समझाते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, बहुत जन्मों के अन्त में वानप्रस्थ अवस्था में। मनुष्य जब सन्यास करते हैं तो उनकी वानप्रस्थ अवस्था कही जाती है। तो अब बाप तुमको कहते हैं—बच्चे, तुमने पूरे 84 जन्म लिए, यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। हिसाब तो जानते हो ना। तो मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। कहाँ आकर बैठता हूँ। इनकी आत्मा जहाँ बैठी है, उनके बाजू में आकर बैठता हूँ। जैसे गुरू लोग अपने शिष्य को बाजू में गद्दी पर बिठाते हैं। इनका भी स्थान यहाँ है, मेरा भी यहाँ है। कहता हूँ हे आत्माओं, मामेकम् याद करो तो पाप विनाश हो जायेंगे। मनुष्य से देवता

बनना है ना। यह है राजयोग। नई दुनिया के लिए जरूर राजयोग चाहिए। बाप कहते हैं मैं आया हूँ आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन लगाने। गुरू लोग अनेक हैं, सतगुरु एक है। वही सत्य है। बाकी तो सब झूठ हैं।

तुम जानते हो एक है रूद्र माला, दूसरी है वैजयन्ती माला विष्णु की। उसके लिए तुम पुरूषार्थ करते हो। बाप को याद करो तो माला का दाना बनेंगे। जिस माला का तुम भक्ति मार्ग में सिमरण करते हो परन्तु जानते नहीं हो कि यह माला किसकी है, ऊपर में फूल कौन है, फिर मेरू क्या है, दाने कौन हैं? जिसकी माला फेरते हैं, समझते कुछ नहीं। ऐसे ही राम-राम कहते माला फेरते रहते हैं। राम-राम कहने से समझते हैं सब राम ही राम हैं। सर्वव्यापी की बात का अन्धियारा इससे निकला है। माला का अर्थ ही नहीं जानते। कोई कहते 100 माला फेरो.. इतनी माला फेरो। बाप तो अनुभवी है ना। 12 गुरू किये, 12 का अनुभव लिया। ऐसे भी बहुत होते हैं, अपना गुरू होते भी फिर औरों के पास जाते हैं कि कुछ अनुभव मिल जाए। माला आदि फेरते हैं। है बिल्कुल अन्धश्रद्धा। माला पूरी कर फूल को नमस्कार करते हैं। शिवबाबा फूल है ना। माला के दाने तुम अनन्य बच्चे बनते हो। तुम्हारा फिर सिमरण चलता है। उनको कुछ भी पता नहीं। वह तो कोई राम कहते, कोई कृष्ण को याद करते, अर्थ कुछ भी नहीं। श्रीकृष्ण शरणम् कह देते। अब वह तो सतयुग का प्रिन्स था। उनकी शरण कैसे लेंगे। शरण तो बाप की ली जाती है। तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो। 84 जन्म ले पतित बने हो तो शिवबाबा को कहते हैं हे फूल, हमको भी आपसमान बनाओ। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. चाहना चुहरी है, इसलिए किसी भी प्रकार की चाहना नहीं रखनी है। आसक्ति ख़त्म कर देनी है। बाबा जो खिलाये... तुम्हें डायरेक्शन है, मांगने से मरना भला।

२. बाप की सर्चलाइट लेने के लिए एक बाप से सच्चा लव रखना है। बुद्धि में नशा रहे कि हम बच्चे हैं, वह बाप है। उनकी सर्चलाइट से हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है।

वरदान:- दाता की देन को स्मृति में रख सर्व लगावों से मुक्त रहने वाले, आकर्षणमुक्त भव

कई बच्चे कहते हैं कि इनसे मेरा कोई लगाव नहीं है, परन्तु इनका यह गुण बहुत अच्छा है या इनमें सेवा की विशेषता बहुत है। लेकिन किसी व्यक्ति या वैभव के तरफ बार-बार संकल्प जाना भी आकर्षण है। किसी की भी विशेषता को देखते, गुणों को वा सेवा को देखते दाता को नहीं भूलो। यह दाता की देन है – यह स्मृति लगावों से मुक्त, आकर्षणमुक्त बना देगी। किसी पर भी प्रभावित नहीं होंगे।

स्लोगन:-

उदासी को अपनी दासी बना दो, उसे चेहरे पर आने न दो।

सम्पूर्णता की समीपता द्वारा प्रत्यक्षता के श्रेष्ठ समय को समीप लाओ

आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट, लकीएस्ट, स्वीटेस्ट बच्चों को देख रहे हैं। सारी विश्व में समय प्रति समय होलीएस्ट आत्मायें आती रही हैं। आप भी होलीएस्ट हो लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें प्रकृतिजीत बन, प्रकृति को भी सतोप्रधान बना देती हो। आपके पवित्रता की पावर प्रकृति को भी सतोप्रधान पवित्र बना देती है। इसलिए आप सभी आत्मायें प्रकृति का यह शरीर भी पवित्र प्राप्त करती हो। आपके पवित्रता की शक्ति विश्व के जड़, चैतन्य सर्व को पवित्र बना देती है इसलिए आपको शरीर भी पवित्र प्राप्त होता है। आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र और प्रकृति के साधन भी सतोप्रधान पावन होते हैं। इसलिए विश्व में होलीएस्ट आत्मायें हो। होलीएस्ट हो? अपने को समझते हो कि हम विश्व की होलीएस्ट आत्मायें हैं? हाइएस्ट भी हो, क्यों हाइएस्ट हो? क्योंकि ऊंचे ते ऊंचे भगवन को पहचान लिया। ऊंचे ते ऊंचे बाप द्वारा ऊंचे ते ऊंची आत्मायें बन गये। साधारण स्मृति, वृत्ति, दृष्टि, कृत्ति सब बदलकर श्रेष्ठ स्मृति स्वरूप, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ दृष्टि बन गई। किसी को भी मिलते हो तो किस वृत्ति से मिलते हो? ब्रदरहुड वृत्ति से, आत्मिक दृष्टि से, कल्याण की भावना से, प्रभू परिवार के भाव से। तो हाइएस्ट हो गये ना? बदल गये ना! और लकीएस्ट कितने हो? कोई ज्योतिषि ने आपके भाग्य की लकीर नहीं खींची है, स्वयं भाग्य विधाता ने आपके भाग्य की लकीर खींची। और गैरन्टी कितनी बड़ी दी है? 21 जन्मों के तकदीर की लकीर की अविनाशी गैरन्टी ली है। एक जन्म की नहीं, 21 जन्म कभी दु:ख और अशान्ति की अनुभूति नहीं होगी। सदा सुखी। तीन बातें जीवन में चाहिए - हेल्थ, वेल्थ और हैपी। यह तीनों ही आप सबको बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हो गया। गैरन्टी है ना 21 जन्मों की? सभी ने गैरन्टी ली है? पीछे वालों को गैरन्टी मिली है? सभी हाथ उठा रहे हैं, बहुत अच्छा। बच्चा बनना अर्थात् बाप द्वारा वर्सा मिलना। बच्चा बन नहीं रहे हो, बन रहे हो क्या? बच्चे बन रहे हो या बन गये हो? बच्चा बनना नहीं होता। पैदा हुआ और बना। पैदा होते ही बाप के वर्से के अधिकारी बन गये। तो ऐसा श्रेष्ठ भाग्य बाप द्वारा अभी प्राप्त कर लिया। और फिर रिचेस्ट भी हो। ब्राह्मण आत्मा, क्षत्रिय नहीं ब्राह्मण। ब्राह्मण आत्मा निश्चय से अनुभव करती है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा, मैं फलाना नहीं, आत्मा रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हैं। ब्राह्मण है तो रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड है क्योंकि ब्राह्मण आत्मा के लिए परमात्म याद से हर कदम में पदम हैं। तो सारे दिन में कितने कदम उठाते होंगे? सोचो। तो हर कदम में पदम, तो सारे दिन में कितने पदम हो गये? ऐसी आत्मायें बाप द्वारा बन गये। मैं ब्राह्मण आत्मा क्या हूँ, यह याद रहना ही भाग्य है।

तो आज बापदादा हर एक के मस्तक पर भाग्य का चमकता हुआ सितारा देख रहे हैं। आप भी अपने भाग्य का सितारा देख रहे हो?

बापदादा बच्चों को देख खुश होते हैं या बच्चे बाप को देख खुश होते हैं? कौन खुश होता है? बाप या बच्चे? कौन? (बच्चे) बाप खुश नहीं होता? बाप बच्चों को देख खुश होते और बच्चे बाप को देख खुश होते हैं। दोनों खुश होते हैं क्योंकि बच्चे जानते हैं कि यह प्रभु मिलन, यह परमात्म प्यार, यह परमात्म वर्सा, यह परमात्म प्राप्तियां अभी ही प्राप्त होती है। "अब नहीं तो कब नहीं।" ऐसे है?

बापदादा अभी सिर्फ एक बात बच्चों को रिवाइज करा रहे हैं - **कौन सी बात होगी? समझ तो गये हो। यही बापदादा रिवाइज करा रहे हैं कि अब श्रेष्ठ समय को समीप लाओ। यह विश्व की आत्माओं का आवाज है। लाने वाले कौन? विश्व का आवाज है लेकिन लाने वाले कौन?** आप हो या और कोई है? आप सभी हो? सुहावने श्रेष्ठ समय को समीप लाने वाले आप सभी हो? अगर हो तो हाथ उठाओ। अच्छा फिर दूसरी बात भी है, वह भी समझ गये हो तब हँस रह हो? अच्छा उसकी तारीख कौन सी है? डेट तो फिक्स करो ना। अभी डेट फिक्स की ना फारेनर्स का टर्न होना है, डेट फिक्स की। यह डेट तो फिक्स कर ली। तो ओ समय को समीप लाने वाली आत्मायें! बोलो इसकी डेट कौन सी है? वह नजर आती है? पहले आपकी नज़रों में आये तब विश्व पर आवे। बापदादा जब अमृतवेले चक्र लगाते हैं विश्व में तो देख-देख, सुन-सुन रहम आता है। मौज में भी हैं लेकिन मौज के साथ मूंझे हुए भी हैं। तो बापदादा पूछते हैं कि हे दाता के बच्चे मास्टर दाता कब अपने मास्टर दातापन का पार्ट तीव्रगति से विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेंगे? या अभी पर्दे के अन्दर तैयार हो रहे हो? तैयारी कर रहे हो? विश्व परिवर्तन के निमित्त आत्मायें अब विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम करो। होना तो है ही, यह तो निश्चित है और होना भी आप निमित्त आत्माओं द्वारा ही है। सिर्फ देरी किस बात की है? बापदादा यह एक सेरीमनी देखने चाहते हैं, कि **हर एक ब्राह्मण बच्चे के दिल में सम्पन्न और सम्पूर्णता का झण्डा लहराया हुआ दिखाई दे।** जब हर ब्राह्मण के अन्दर सम्पूर्णता का झण्डा लहरायेगा तब ही विश्व में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा। तो यह फ्लैग सेरेमनी बापदादा देखने चाहते हैं। जैसे शिवरात्रि पर शिव अवतरण का झण्डा लहराते हो ऐसे अभी शिव शक्ति पाण्डव अवतरण का नारा लगे। गीत बजाते हो ना एक - शिव शक्तियां आ गई। बजाते हो ना! अभी विश्व यह गीत गाये कि शिव के साथ शक्तियां, पाण्डव प्रत्यक्ष हो गये। पर्दे में कहाँ तक रहेंगे! पर्दे में रहना अच्छा लगता है? थोड़ा-थोड़ा अच्छा लगता है! पीछे वालों को पर्दा अच्छा लगता है? नहीं अच्छा लगता। तो हटाने वाला कौन? बाबा हटायेगा? कौन हटायेगा? हटाने वाले भी आप हो या ड्रामा हटायेगा? ड्रामा हटायेगा या आप हटायेंगे? जब आप हटायेंगे तो देरी क्यों? तो ऐसे समझें ना कि पर्दे में रहना अच्छा लगता है? बस बापदादा की अभी सिर्फ एक ही यह श्रेष्ठ आशा है, सब गीत गायें वाह! आ गये, आ गये, आ गये। हो सकता है? देखो दादियाँ, सभी कहते हैं हो सकता है फिर क्यों नहीं होता? कारण क्या? जब सभी ऐसे ऐसे कर रहे हैं, फिर कारण क्या है? (सभी सम्पन्न नहीं बने है) क्यों नहीं बने हैं? डेट बताओ ना! (डेट तो बाबा आप बतायेंगे) बापदादा का महामन्त्र याद है? बापदादा क्या कहते हैं? कब नहीं अब। (दादी जी कह रही हैं बाबा फाइनल डेट आप ही बताओ) बापदादा जो डेट बतायेगा उसमें अपने को मोल्ड करके निभायेंगे? निभायेंगे? पाण्डव निभायेंगे? पक्का। अगर नीचे ऊपर किया तो क्या करना पड़ेगा? (आप डेट देंगे तो कोई नीचे ऊपर नहीं करेगा) मुबारक हो। अच्छा। अभी बताते हैं डेट देखना। देखो, बापदादा फिर भी रहमदिल है, तो बापदादा डेट बताते हैं। अटेन्शन से सुनना। बापदादा सब बच्चों से यह श्रेष्ठ भावना रखते हैं, आशा रखते हैं - कम से कम 6 मास में, 6 मास कब तक पूरा होगा? (मई में) मई में मैं, मैं खत्म। कम से कम बापदादा फिर भी मार्जिन देते हैं कि इन 6 मास में जो बापदादा ने पहले भी सुनाया है और अगले सीजन में काम दिया था, वह तो भूल गये होंगे! कम से कम 6 मास में अपने को जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में लाओ। सतयुग के सृष्टि की जीवनमुक्ति नहीं, संगमयुग की जीवनमुक्त

स्टेज। कोई भी विघ्न, परिस्थितियाँ, साधन वा मैं और मेरापन, मैं बॉडीकान्सेस का, मेरा बॉडीकान्सेस के सेवा का भी, इन सबके प्रभाव से मुक्त रहना। आयेंगे लेकिन आप उनके प्रभाव से मुक्त रहो। ऐसे नहीं कहना मैं तो मुक्त रहना चाहता था लेकिन यह विघ्न आ गया ना, यह बात ही बहुत बड़ी हो गई ना। छोटी बात तो चल जाती है यह बहुत बड़ी बात थी, यह बहुत बड़ा पेपर था, बड़ा विघ्न था, बड़ी परिस्थिति थी। कितनी भी बड़े ते बड़ी परिस्थिति, विघ्न, साधनों की आकर्षण सामना करे, सामना करेंगी यह पहले ही बता देते हैं लेकिन कम से कम 6 मास में 75 परसेन्ट मुक्त हो सकते हो। बापदादा 100 परसेन्ट नहीं कह रहे हैं, 75 परसेन्ट, पौने तक तो आयेंगे तब पूरे पर पहुंचेंगे ना, तो 6 मास में, एक मास भी नहीं 6 मास दे रहे हैं, वर्ष का आधा। तो क्या यह डेट फिक्स कर सकते हो? देखो दादियों ने कहा है फिक्स करो, दादियों का हुक्म तो मानना है ना! रिजल्ट देखकर तो बापदादा स्वतः ही आकर्षण में आयेंगे, कहने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। तो 6 मास और 75 परसेंट, 100 नहीं कह रहे हैं। उसके लिए फिर आगे टाइम देंगे। तो इसमें एवररेडी हो। एवररेडी नहीं 6 मास रेडी। पसन्द है? कि थोड़ी हिम्मत कम है पता नहीं क्या होगा? शेर भी आयेगा, बिल्ली भी आयेगी, सब आयेंगे। विघ्न भी आयेंगे, परिस्थितियां भी आयेंगी, साधन भी बढ़ेंगे लेकिन साधन के प्रभाव से मुक्त रहना। पसन्द है तो हाथ उठाओ। टी.वी. घुमाओ। अच्छी तरह से हाथ उठाओ, नीचे नहीं करना। अच्छी सीन लग रही है। अच्छा - इनएडवांस मुबारक हो।

यह नहीं कहना हमको तो बहुत मरना पड़ेगा, मरो या जीओ लेकिन बनना है। यह मरना मीठा मरना है, इस मरने में दुःख नहीं होता है। यह मरना अनेकों के कल्याण के लिए मरना है। इसीलिए इस मरने में मजा है। दुःख नहीं है, सुख है। कोई बहाना नहीं करना, यह हो गया ना। इसीलिए हो गया। बहाने बाजी नहीं चलेगी। बहाने बाजी करेंगे क्या? नहीं करेंगे ना! उड़ती कला की बाजी करना और कोई बाजी नहीं। गिरती कला की बाजी, बहाने बाजी, कमजोरी की बाजी यह सब समाप्त। उड़ती कला की बाजी। ठीक है ना! सबके चेहरे तो खिल गये हैं। जब 6 मास के बाद मिलने आयेंगे तो कैसे चेहरे होंगे। तब भी फोटो निकालेंगे।

डबल फारेनर्स आये हैं ना तो डबल प्रतिज्ञा करने का दिन आ गया। दूसरे किसको नहीं देखना, सी फादर, सी ब्रह्मा मदर। दूसरा करे न करे, करेंगे तो सभी फिर भी उनके प्रति भी रहम भाव रखना। कमजोर को शुभ भावना का बल देना। कमजोरी नहीं देखना। ऐसा आत्माओं को अपने हिम्मत के हाथ से उठाना, ऊंचा करना। हिम्मत का हाथ सदा स्वयं प्रति और सर्व के प्रति बढ़ाते रहना। हिम्मत का हाथ बहुत शक्तिशाली है। और बापदादा का वरदान है - हिम्मत का एक कदम बच्चों का, हजार कदम बाप की मदद का। निःस्वार्थ पुरुषार्थ में पहले मैं। निःस्वार्थ पुरुषार्थ, स्वार्थ का पुरुषार्थ नहीं। निःस्वार्थ पुरुषार्थ इसमें जो ओटे वह ब्रह्मा बाप समान।

ब्रह्मा बाप से तो प्यार है ना! तब तो ब्रह्माकुमारी वा ब्रह्माकुमार कहलाते हो ना! जब चैलेन्ज करते हो कि सेकण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा ले लो तो अभी सेकण्ड में अपने को मुक्त करने का अटेन्शन। अभी समय को समीप लाओ। आपके सम्पूर्णता की समीपता, श्रेष्ठ समय को समीप लायेगी। मालिक हो ना, राजा हो ना! स्वराज्य अधिकारी हो? तो ऑर्डर करो। राजा तो ऑर्डर करता है ना! ना हाँ, यह नहीं करना है, यह करना है। बस ऑर्डर करो। अभी-अभी देखो मन को, क्योंकि मन है मुख्य मन्त्री। तो हे राजा अपने मन मन्त्री को सेकण्ड में ऑर्डर कर अशरीरी, विदेही स्थिति में स्थित कर सकते हो? करो ऑर्डर एक सेकण्ड में। अच्छा

सदा लवलीन और लक्की आत्माओं को बापदादा द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों के अनुभवी आत्माओं को, स्वराज्य अधिकारी बन अधिकार द्वारा स्वराज्य करने वाली शक्तिशाली आत्माओं को, सदा जीवनमुक्त स्थिति के अनुभवी हाइएस्ट आत्माओं को, भाग्य विधाता द्वारा श्रेष्ठ भाग्य की लकीर द्वारा लकीएस्ट आत्माओं को, सदा पवित्रता की दृष्टि, वृत्ति द्वारा स्व परिवर्तन विश्व परिवर्तन करने वाली होलीएस्ट आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

डबल विदेशी मेहमानों से (काल आफ टाइम के प्रोग्राम में आये हुए मेहमानों से):-

सभी अपने स्वीट होम में, स्वीट परिवार में पहुंच गये हैं ना! यह छोटा सा स्वीट परिवार प्यारा लगता है ना! और आप भी कितने प्यारे हो गये हो! सबसे पहले परमात्म प्यारे बन गये। बने हैं ना! बन गये? बन गये या बनेंगे? देखो आप सबको देखकर सब कितने खुश हो रहे हैं। क्यों खुश हो रहे हैं? सभी के चेहरे देखो बहुत खुश हो रहे हैं। क्यों खुश हो रहे हैं क्योंकि जानते हैं कि यह सब गॉडली मैसेन्जर बन आत्माओं को मैसेज देने के निमित्त आत्मायें हैं। निमित्त हैं ना? (पांचों खण्डों के हैं) तो 5 खण्डों में मैसेज पहुंच जायेगा, सहज है ना। बापदादा को इस बच्चे का प्लैन अच्छा लगा। प्लैन बहुत अच्छा बनाया है। इसमें परमात्म पावर भरके और परिवार का सहयोग लेके आगे बढ़ते रहना। प्लैन अच्छा है। सभी के संकल्प बापदादा के पास पहुंच रहे हैं। बहुत अच्छे-अच्छे संकल्प चल रहे हैं ना! प्लैन बन रहे हैं। तो प्लैन को प्रैक्टिकल लाने में हिम्मत आपकी और मदद बाप की और ब्राह्मण परिवार की। सिर्फ निमित्त बनना है बस और मेहनत नहीं करनी है। मैं परमात्म कार्य के निमित्त हूँ। कोई भी कार्य में आओ तो बाबा मैं इन्स्ट्रुमेंट सेवा के अर्थ तैयार हूँ, मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ, चलाने वाला आपेही चलायेगा। यह निमित्त भाव आपके चेहरों पर निर्माण और निर्मान भाव प्रत्यक्ष करेगा। करावनहार निमित्त बनाए कार्य करायेगा। माइक आप और माइट बाप की। तो सहज है ना! तो निमित्त बनके याद में हाजिर हो जाओ, बस। तो आपकी सूरत, आपके फीचर्स स्वतः ही सेवा के निमित्त बन जायेंगे। सिर्फ बोल द्वारा सेवा नहीं करेंगे लेकिन फीचर्स द्वारा भी आपकी आन्तरिक खुशी चेहरे से दिखाई देगी। इसको ही कहा जाता है अलौकिकता। अभी अलौकिक हो गये ना। लौकिकपन तो खत्म हुआ ना। मैं आत्मा हूँ, यह अलौकिक। मैं फलाना हूँ यह लौकिक। तो कौन हो? अलौकिक या लौकिक? अलौकिक हो ना! अच्छा है। बापदादा वा परिवार के सामने पहुंच गये, यह बहुत अच्छी हिम्मत रखी। देखो आप भी कोटों में कोई निकले ना! कितना ग्रुप था, उसमें से कितने आये हो, तो कोटों में कोई निकले ना। अच्छा है - बापदादा को ग्रुप पसन्द है। और यह देखो कितने खुश हो रहे हैं। आप से ज्यादा यह खुश हो रहे हैं क्योंकि सेवा का रिटर्न सामने देख खुश हो रहे हैं। खुश हो रहे हैं ना - मेहनत का फल मिल गया। अच्छा। अभी तो बालक सो मालिक हो। मालिक हो ना! मालिक हो? बालक हो! बालक मास्टर है। बच्चे को सदा कहा जाता है मास्टर। अच्छा है।

प्रजापिता ब्रह्मा आत्मा-कल्याण है

1-11-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम अभी गॉडली सर्विस पर हो, तुम्हें सबको सुख का रास्ता बताना है, स्कालरशिप लेने का पुरूषार्थ करना है"

प्रश्न:- तुम बच्चों की बुद्धि में जब ज्ञान की अच्छी धारणा हो जाती है तो कौन-सा डर निकल जाता है?

उत्तर:- भक्ति में जो डर रहता कि गुरू हमें श्राप न दे देवे, यह डर ज्ञान में आने से, ज्ञान की धारणा करने से निकल जाता है क्योंकि ज्ञान मार्ग में श्राप कोई दे न सके। रावण श्राप देता है, बाप वर्सा देते हैं। रिद्धि-सिद्धि सीखने वाले ऐसा तंग करने का, दु:ख देने का काम करते हैं, ज्ञान में तो तुम बच्चे सबको सुख पहुँचाते हो।

(a) ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। तुम सब पहले आत्मा हो। यह पक्का निश्चय रखना है। बच्चे जानते हैं हम आत्मायें परमधाम से आती हैं, यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाने। आत्मा ही पार्ट बजाती है। मनुष्य फिर समझते शरीर ही पार्ट बजाते हैं। यह है बड़े ते बड़ी भूल। जिस कारण आत्मा को कोई जानते नहीं। इस आवागमन में हम आत्मायें आती-जाती हैं – इस बात को भूल जाते हैं। इसलिए बाप को ही आकर आत्म-अभिमानी बनाना पड़ता है। यह बात भी कोई नहीं जानते। बाप ही समझाते हैं, आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। मनुष्य के मैक्सीमम 84 जन्मों से लेकर मिनीमम है एक-दो जन्म। आत्मा को पुनर्जन्म तो लेते रहना है। इससे सिद्ध होता है, बहुत जन्म लेने वाला बहुत पुनर्जन्म लेते हैं। थोड़े जन्म लेने वाला कम पुनर्जन्म लेते हैं। जैसे नाटक में कोई का शुरू से पिछाड़ी तक पार्ट होता है, कोई का थोड़ा पार्ट होता है। यह कोई मनुष्य नहीं जानते। आत्मा अपने को ही नहीं जानती तो अपने बाप को कैसे जाने। आत्मा की बात है ना। बाप है आत्माओं का। कृष्ण तो आत्माओं का बाप है नहीं। कृष्ण को निराकार तो नहीं कहेंगे। साकार में ही उनको पहचाना जाता है। आत्मा तो सबकी है। हर एक आत्मा में पार्ट तो नूँधा हुआ है। यह बातें तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार हैं जो समझा सकते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं ने 84 जन्म कैसे लिए हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा सो परमात्मा। नहीं, बाप ने समझाया है – हम आत्मा पहले सो देवता बनते हैं। अभी पतित तमोप्रधान हैं फिर सतोप्रधान पावन बनना है। बाप आते ही तब हैं जब सृष्टि पुरानी हो जाती है। बाप आकर पुरानी को नया बनाते हैं। नई सृष्टि-स्थापन करते हैं। नई दुनिया में है ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म। उन्हों के लिए ही कहेंगे पहले कलियुगी शूद्र धर्म वाले थे। अब प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली बन ब्राह्मण बने हो। ब्राह्मण कुल में आते हो। ब्राह्मण कुल की डिनायस्टी नहीं होती। ब्राह्मण कुल कोई राजाई नहीं करते हैं। इस समय भारत में न ब्राह्मण कुल राजाई करते हैं, न शूद्र कुल राजाई करते हैं। दोनों को राजाई नहीं है। फिर भी उनका प्रजा पर प्रजा का राज्य तो चलता है। तुम ब्राह्मणों का कोई राज्य नहीं है। तुम स्टूडेण्ट पढ़ते हो। बाप तुमको ही समझाते हैं। यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। सतयुग, त्रेता..... फिर होता है संगमयुग। इस संगमयुग जैसी महिमा और कोई युग की है नहीं।

यह है पुरूषोत्तम संगमयुग। सतयुग से त्रेता में आते हैं, दो कला कम होती हैं तो उनकी महिमा क्या करेंगे! गिरने की महिमा थोड़ेही होती है। कलियुग को कहा जाता है पुरानी दुनिया। अब नई दुनिया स्थापन होनी है। जहाँ देवी-देवताओं का राज्य होता है। वह पुरूषोत्तम थे। फिर कला कम होते-होते कनिष्ट, शूद्र बुद्धि बन जाते हैं। उनको पत्थरबुद्धि भी कहा जाता है। ऐसे पत्थरबुद्धि बन जाते हैं जो जिनकी पूजा करते हैं, उनकी जीवन कहानी को भी नहीं जानते। बच्चे बाप का जीवन न जानें तो वर्सा कैसे मिले। अभी तुम बच्चे बाप के जीवन को जानते हो। उनसे तुमको वर्सा मिल रहा है। बेहद के बाप को याद करते हो। तुम मात-पिता..... कहते हो तो जरूर बाप आया होगा तब तो सुख घनेरे दिये होंगे ना। बाप कहते हैं – मैं आया हूँ, अथाह सुख तुम बच्चों को देता हूँ। बच्चों की बुद्धि में यह नॉलेज अच्छी रीति रहनी चाहिए, इसलिए तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। तुमको अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम जानते हो हम सो देवता बनते हैं। अब शूद्र से ब्राह्मण बने हैं। कलियुगी ब्राह्मण भी हैं तो सही ना। वो ब्राह्मण लोग जानते नहीं कि हमारा धर्म अथवा कुल कब स्थापन हुआ क्योंकि वह हैं ही कलियुगी। तुम अभी डायरेक्ट प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान बने हो और सबसे ऊंच कोटि के हो। बाप बैठ तुम्हारी पढ़ाई की सर्विस, सम्भालने की सर्विस और श्रृंगारने की सर्विस करते हैं। तुम भी हो ऑन गॉडली सर्विस ओनली। गॉड फादर भी कहते हैं – हम आये हैं सब बच्चों की सर्विस में। बच्चों को सुख का रास्ता बताना है। बाप कहते हैं अब घर चलो। मुनष्य भक्ति भी करते हैं मुक्ति के लिए। जरूर जीवन में बन्धन है। बाप आकर इन दुःखों से छुड़ाते हैं। तुम बच्चे जानते हो त्राहि-त्राहि करेंगे। हाहाकार के बाद जयजयकार होनी है। अब तुम्हारी बुद्धि में है – कितनी हाय-हाय करेंगे। जब नैचुरल कैलेमिटीज आदि होंगी। यूरोपवासी यादव भी हैं, बाप ने समझाया है – यूरोपवासियों को यादव कहा जाता है। दिखाते हैं पेट से मूसल निकले फिर श्राप दिया। अब श्राप आदि की तो बात ही नहीं। यह तो ड्रामा है। बाप वर्सा देते हैं, रावण श्राप देते हैं। यह एक खेल बना है, बाकी श्राप देने वाले तो दूसरे मनुष्य होते हैं। उस श्राप को उतारने वाले भी होते हैं। गुरू गोसाई आदि से भी मनुष्य लोग डरते हैं कि कोई श्राप न देवे। वास्तव में ज्ञान मार्ग में श्राप कोई दे न सके। ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग में श्राप की कोई बात नहीं। जो रिद्धि-सिद्धि आदि सीखते हैं, वो श्राप देते हैं, लोगों को बहुत दुःखी कर देते हैं, पैसे भी बहुत कमाते हैं। भक्त लोग यह काम नहीं करते।

बाबा ने यह भी समझाया है – संगम के साथ पुरूषोत्तम अक्षर जरूर लिखो। त्रिमूर्ति अक्षर भी जरूर लिखना है और प्रजापिता अक्षर भी जरूरी है क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के हैं। प्रजापिता अक्षर लिखेंगे तो समझेंगे साकार में प्रजापिता ठहरा। सिर्फ ब्रह्मा लिखने से सूक्ष्मवतन वाला समझ लेते हैं। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भगवान कह देते हैं। प्रजापिता कहेंगे तो समझा सकते हो – प्रजापिता तो यहाँ है। सूक्ष्मवतन में कैसे हो सकता। विष्णु को तो दिखाते हैं ब्रह्मा की नाभी से निकला। तुम बच्चों को भी ज्ञान मिला है। नाभी आदि की कोई बात ही नहीं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा कैसे बनते हैं। सारे चक्र का ज्ञान तुम इन चित्रों से समझा सकते हो। बिगर चित्र समझाने में मेहनत लगती है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा बनते हैं। लक्ष्मी-नारायण ८४ का चक्र लगाकर फिर

ब्रह्मा-सरस्वती बनते हैं। बाबा ने पहले से नाम दे दिये हैं, जब भट्ठी बनी तो नाम दिये। फि कितने चले गये। इसलिए समझाया है ब्राह्मणों की माला होती नहीं क्योंकि ब्राह्मण हैं पुरूषार्थी। कभी नीचे, कभी ऊपर होते रहते हैं। ग्रहचारी बैठती है। बाबा तो जवाहरी था। मोतियों आदि की माला कैसे बनती है, अनुभवी है। ब्राह्मणों की माला पिछाड़ी में बनती है। हम सो ब्राह्मण दैवी गुण धारण कर देवता बनते हैं। फिर सीढ़ी उतरनी है। नहीं तो 84 जन्म कैसे लेंगे। ८४ जन्मों के हिसाब से यह निकल सकते हैं। तुम्हारा आधा समय पूरा होता है तब दूसरे धर्म वाले एड होते हैं। माला बनाने में बड़ी मेहनत लगती है। बड़ी सम्भाल से मोतियों को टेबुल पर रखा जाता है कि कहाँ हिले नहीं। फिर सुई से डाला जाता है। कहाँ ठीक न बनें तो फिर माला तोड़नी पड़े। यह तो बहुत बड़ी माला है। तुम बच्चे जानते हो – हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिए। बाबा ने समझाया है कि स्लोगन बनाओ – हम शूद्र सो ब्राह्मण, ब्राह्मण सो देवता कैसे बनते हैं, आकर समझो। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। स्वर्ग का मालिक बन जायेंगे। ऐसे स्लोगन बनाकर बच्चों को सिखलाना चाहिए। बाबा युक्तियां तो बहुत बतलाते हैं। वास्तव में वैल्यु तुम्हारी है। तुमको हीरो-हीरोइन का पार्ट मिलता है। हीरे जैसा तुम बनते हो फिर 84 का चक्र लगाए कौड़ी मिसल बनते हो। अब जबकि हीरे जैसा जन्म मिलता है तो कौड़ियों पिछाड़ी क्यों पड़ते हो। (ऐसे भी नहीं, कोई घरबार छोड़ना है। बाबा तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो और सृष्टि चक्र की नॉलेज को जानकर दैवीगुण भी धारण करो तो तुम हीरे जैसा बन जायेंगे। बरोबर भारत 5 हजार वर्ष पहले हीरे जैसा था। यह है – एम ऑब्जेक्ट। इस चित्र को (लक्ष्मी-नारायण के) बहुत महत्व देना है। तुम बच्चों को बहुत सर्विस करनी है प्रदर्शनी म्युज़ियम में। विहंग मार्ग की सर्विस बिगर तुम प्रजा कैसे बनायेंगे? भल इस ज्ञान को सुनते भी हैं परन्तु ऊंच पद कोई बिरले पाते हैं। उनके लिए ही कहा जाता है कोटों में कोई। स्कॉलरशिप भी कोई लेते हैं ना। 40-50 बच्चे स्कूल में होते हैं, उनसे कोई एक स्कॉलरशिप लेता है, कोई थोड़ा प्लस में आ जाता है तो उनको भी देते हैं। यह भी ऐसे है। प्लस में बहुत हैं। 8 दाने हैं सो भी नम्बरवार हैं ना। वह पहले-पहले राज गद्दी पर बैठेंगे। फिर कला कम होती जायेगी, लक्ष्मी नारायण का चित्र है नम्बरवन। उनकी भी डिनायस्टी चलती है, परन्तु चित्र लक्ष्मी-नारायण का ही दिया हुआ है। यहाँ तुम जानते हो चित्र तो बदलते जाते हैं। चित्र देने से क्या फायदा। नाम, रूप, देश, काल सब बदल जाता है।)

(मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। कल्प पहले भी बाप ने समझाया था। ऐसे नहीं, कृष्ण ने गोप-गोपियों को सुनाया। कृष्ण के गोप-गोपियाँ होते नहीं। न उनको ज्ञान सिखाया जाता है। वह तो है सतयुग का प्रिन्स। वहाँ कैसे राजयोग सिखायेंगे वा पतित को पावन बनायेंगे। अब तुम अपने बाप को याद करो। बाप फिर टीचर भी है। टीचर को स्टूडेन्ट कभी भूल न सकें। बाप को बच्चे भूल न सकें, गुरू को भी भूल न सकें। बाप तो जन्म से ही होता है। टीचर 5 वर्ष बाद मिलता है। फिर गुरू वानप्रस्थ में मिलता है। जन्म से ही गुरू करने का तो कोई फायदा नहीं है। गुरू की गोद लेकर भी दूसरे दिन मर जाते हैं। फिर गुरू क्या करते हैं? गाते भी हैं सतगुरू बिगर गति नहीं। सतगुरू को छोड़ वह फिर गुरू कह देते। गुरू तो ढेर हैं। बाबा कहते हैं – बच्चे,

तुम्हें कोई देहधारी गुरू आदि करने की दरकार नहीं है, तुम्हें किसी से भी कुछ मांगना नहीं है। कहा भी जाता है – मांगने से मरना भला। सबको चिंता रहती है हम कैसे अपने पैसे ट्रांसफर करें। दूसरे जन्म के लिए वह ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं तो उसका रिटर्न इस ही पुरानी सृष्टि में अल्पकाल के लिए मिलता है। यहाँ तुम्हारा ट्रांसफर होता है नई दुनिया में और 21 जन्मों के लिए। तन-मन-धन प्रभु के आगे अर्पण करना है। सो तो जब आये तब अर्पण करेंगे ना। प्रभू को कोई जानते ही नहीं तो गुरू को पकड़ लेते हैं। धन आदि गुरू के आगे अर्पण कर देते हैं। वारिस नहीं होता है तो सब गुरू को देते हैं। आजकल कायदे अनुसार ईश्वर अर्थ भी कोई देते नहीं हैं। बाप समझाते हैं – मैं गरीब निवाज़ हूँ इसलिए मैं आता भी भारत में हूँ। तुमको आकर विश्व का मालिक बनाता हूँ। डायरेक्ट और इनडायरेक्ट में कितना फर्क है। वह जानते कुछ भी नहीं। सिर्फ कह देते हैं हम ईश्वर अर्पण करते हैं। है सब बेसमझी। तुम बच्चों को अब समझ मिलती है तो तुम बेसमझ से समझदार बने हो। बुद्धि में ज्ञान है – बाप तो कमाल करते हैं। जरूर बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ही मिलना चाहिए। बाप से तुम वर्सा लेते हो सिर्फ दादा द्वारा। दादा भी उनसे वर्सा ले रहे हैं। वर्सा देने वाला एक ही है। उनको ही याद करना है। बाप कहते हैं – बच्चे, मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ, इनमें प्रवेश कर इनको भी पावन बनाता हूँ। जो फिर यह फरिश्ता बन जाते हैं। बैज पर तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। तुम्हारा यह सब है अर्थ सहित बैजेस। यह तो जीयदान देने वाला चित्र है। इनकी वैल्यु का किसको भी पता नहीं है और बाबा को हमेशा बड़ी चीज़ पसन्द आती है, जो कोई भी दूर से पढ़ सके। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप से बेहद का वर्सा लेने के लिए डायरेक्ट अपना तन-मन-धन ईश्वर के आगे अर्पण करने में समझदार बनना है। अपना सब कुछ 21 जन्मों के लिए ट्रांसफर कर लेना है।

२. जैसे बाप पढ़ाने की, सम्भालने की और श्रृंगारने की सर्विस करते हैं, ऐसे बाप समान सर्विस करनी है। जीवन बन्ध से निकाल सबको जीवन मुक्ति में ले जाना है।

वरदान:- श्रेष्ठता के आधार पर समीपता द्वारा कल्प की श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने वाले विशेष पार्टधारी भव -

इस मरजीवा जीवन में श्रेष्ठता का आधार दो बातें हैं: 1-सदा परोपकारी रहना। 2-बाल ब्रह्मचारी रहना। जो बच्चे इन दोनों बातों में आदि से अन्त तक अखण्ड रहे हैं, किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता बार-बार खण्डित नहीं हुई है तथा विश्व के प्रति और ब्राह्मण परिवार के प्रति जो सदा उपकारी हैं ऐसे विशेष पार्टधारी बापदादा के सदा समीप रहते हैं और उनकी प्रालब्ध सारे कल्प के लिए श्रेष्ठ बन जाती है।

स्लोगन:-

व्यर्थ सम्बन्ध-सम्पर्क भी एकाउन्ट को खाली कर देता है इसलिए व्यर्थ को समाप्त करो।

40

ओमशान्ति। मीठे2 बच्चों को बाप ने अभी घर याद दिलाया है। भल भक्ति मार्ग में भी घर की याद करते हैं परन्तु वहां कब जाना है, कैसे जाना है वह कुछ भी नहीं जानते। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देने से कल्प घर भी भूल गया है। समझते हैं लाखों वर्ष यहां ही पार्ट बजाते हैं। तो घर भूल जाते हैं। अभी बाप याद दिलाते हैं बच्चे घर तो बहुत नजदीक है। अभी चलेंगे अपने घर? हम तुम बच्चों के बुलाने पर आया हूं। चलेंगे? कितनी सहज बात है। भक्ति मार्ग में तो पता भी नहीं पड़ता कि कब मुक्तिधाम जावेंगे। मुक्ति को ही घर कहा जाता है। लाखों वर्ष कह देने कारण सभी भूल जाते हैं। बाप को भी तो घर को भी भूल जाते हैं। लाखों वर्ष डालने से बहुत फर्क पड़ जाता है। अन्धे बन अज्ञान नींद में जैसे सो जाते हैं। किसको भी समझ में नहीं आता। भक्ति मार्ग में घर कितना दूर बताते हैं। बाप कहते हैं वाह! मुक्तिधाम तो अभी जाना है। ऐसे थोड़ेही है तुम कोई लाखों वर्ष भक्ति करते हो। तुमको भी पता नहीं है भक्ति कब से शुरू होती है। लाखों वर्ष का हिसाब करने की तो दरकार ही नहीं। बाप को और घर को भूल जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। परन्तु नाहक इतना दूर कर देते हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे घर तो बिल्कुल नजदीक है। अभी मैं आया हूं तुमको ले चलने। घर चलना है परन्तु पवित्र भी जरूर बनना है। गंगा स्नान तो तुम करते आये हो परन्तु पवित्र बनx बनxxx तो नहीं बने हो ना। अगर पवित्र बनते तो घर चले जाते। परन्तु तुमको घर का भी पता नहीं है। तो पवित्रता का भी पता नहीं है। आधा कल्प से भक्ति की है तो भक्ति को छोड़ते ही नहीं। अब बाप कहते हैं भक्ति पूरी होती है। भक्ति में तो अपरम अपार दुःख रहता है। ऐसे नहीं कि तुम बच्चों ने लाखों वर्ष दुःख देखा है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। बच्चे2 दुःख तो तुम ने 2500 वर्ष भोगा है। जब कि ज विकारों में गंदे बने हो। पहले जब रजो में थे कुछ सुख थी। मास में भी एक बार मुश्किल जाते होंगे। और फिर जास्ती टाईम लगता होगा। अभी तो बहुत जास्ती हो गया है। तो बाप बच्चों को कहते हैं सुखधाम चलना है। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। अभी मुझे याद करो तो पाप कट जायें। याद से ही बड़ी खुशी रहेगी। ज बाप तुमको आधा कल्प सुखधाम ले जाते हैं उनको भी याद करना है। बाप कहते हैं तुमको ऐसा बनना है। तो एक तो पवित्र बनो और चरित्र सुधारो। विकारों को कहा जाता है भूत। लोभ का, मोह का भी भूत होता है। यह भूत बहुत अशुध है। मनुष्यों को एकदम गंदा बना देते हैं। लोभ भी बहुत पाप कराते हैं। यह 5 विकार बहुत कड़े भूत हैं। इन सभी को छोड़ना भी बड़ा मुश्किल हो जाता है।xx लोभ को छोड़ना भी ऐसा मुश्किल जितना काम को छोड़ना मुश्किल होती है। छोड़ते ही नहीं। सारी आयु बाप समझाते हैं तो भी मोह की रग टूटती ही नहीं। क्रोध भी मुश्किल छूटता है। कहते हैं बच्चों पर क्रोध आया। नाम तो क्रोध का लेते हैं ना। कोई भी भूत न आये। अभी उन पर विजय पानी है। बाप कहते हैं जब तक मैं हूं पुरुषार्थ करते रहो। बाप कितना वर्ष रहेंगे। जब कि गाया हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा भी 100 वर्ष बाद चले जाते हैं। बाप आते हैं 60 वर्ष के बाद। ब्रह्मा चला जावेगा तो बाप भी चला जावेगा। तो 40 वर्ष बैठ समझाते हैं। अ तो टाईम देते हैं। 40 वर्ष कोई कम नहीं है। सृष्टि चक्र को जानना तो बहुत ही सहज है। सात दिन में ज्ञान बुद्धि में आ जाता है बाकी जन्म-जन्मान्तर के पाप कटने में देरी लगती है। यह ही मुं मुश्किल है। इसके लिये बाबा टाईम देते हैं। माया का आपोजीशन बहुत होता है। एकदम भूला देती है। यहां बैठते तो भी सारा समय याद में थोड़ेही बैठते हैं। बहुत तरफ बुद्धि चली जाती है। इसलिये ही 40 वर्ष का टाईम देते हैं। मेहनत कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। पढ़ाई तो सहज है। सेन्सीबुल बच्चा हो तो 7 दिन में नालेज समझ सकते हैं। यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। बाकी पवित्र बनने में है मेहनत। इस पर ही झंझट होते हैं। स... बात तो राईट है। पहले हम ग्लानी करते थे कि यह ब्रह्माकुमारियां-बहन भा

(242)

रह सकेंगे। क्रिमनल आई सिवील आई कैसे बन सकतो। यह युक्ति बड़ी अच्छी है। हम ब्रह्माकुमारकुमारियाँ बन भाई हो गये ना। इसमें बड़ी मदद मिलती है। सिवील आई बनाने हैं। ब्रह्मा का कर्त्तव्य भी है : ब्रह्मा द्वारा देवी देवता धर्म की स्थापना अथवा मनुष्य को देवता बनाना। बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगम युग पर। तो समझाने की कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप का परिचय देने लिये ही सेन्टरस खोले जाते हैं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा लेना है। भगवान तो निराकार है। कृष्ण तो देहधारी है। भगवान कह नहीं सकते। कहते भी हैं भगवान आकर भक्ति का फल देंगे। परन्तु भगवान का परिचय है है। भगवान के बदली पूरे 84 जन्म वाले का नाम ठोक दिया है। कितना तुम समझाते हो फिर भी समझते नहीं हैं। समझाया जाता है देहधारी तो पुनर्जन्म में जरूर आते हैं। उन से तो वरसा मिल न सके। वो एक ही परम पिता परमात्मा से वरसा मिलता है। मनुष्य मनुष्य को मुक्ति-जीवनमुक्ति दे न सके। यह पाने लिये तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो। इस बाप को पाने लिये तुम कितना भटकते थे। पहले तो शिव की पूजा करते थे, और कोई तरफ जाते नहीं थे। वह थी अव्यभिचारी भक्ति। औरों के मंदिर आदि इतने थे ही नहीं। अभी तो देखो देवताओं के चित्र कितने जगह रख दिये हैं। ढेर के ढेर चित्र, मंदिर आदि बनाते हैं। भक्ति मार्ग में तुमको कितना मेहनत करनी पड़ती है। मनुष्यों की बुधि में भक्ति मार्ग के शास्त्रों की वा भर गई है। शास्त्र ही बैठ पढ़कर सुनाते हैं। शास्त्र ऐसे कहते हैं। ढेर शास्त्र हैं। वास्तव में भारत के इतने शास्त्र होने न चाहिए। हरेक धर्म का एक शास्त्र होना चाहिए। एक धर्म का एक स्थापना करने वाला उनका शास्त्र। क्रिश्चन का एक शास्त्र। बौधियों का एक शास्त्र है ना। धर्म शास्त्र अर्थात धर्म स्थापन करने का एक शास्त्र। उनमें कोई रास्ता नहीं। गति सद्गति का रास्ता तो एक बाप ही बताते हैं। शास्त्रों में है नहीं। वहाँ तो है भक्ति। कितने ढेर शास्त्र, मंदिर आदि बनाते हैं। वास्तव में मंदिर सिर्फ होते हैं देवी देवताओं के जो थे रहते हैं। और कोई मनुष्य का मंदिर बनता ही नहीं। क्योंकि मनुष्य तो हैं ही पतित। वह है पावन देवता, उनको तुम मनुष्य नहीं कहेंगे। पतित मनुष्य पावन देवताओं की पूजा करते हैं। भल हैं वह सभी मनुष्य परन्तु उन में दैवीगुण है। जिनमें दैवीगुण न है वह उनकी पूजा करते हैं। तुम खुद ही पूज्य थे। फिर पुजारी बने हैं। आपेही पूज्य ... पहले थी अव्यवभिचारी भक्ति फिर व्यभिचारी भक्ति हो गई। मनुष्य की भक्ति करना गोया तो 5 तत्व की भक्ति करना है। शरीर 5 तत्वों का बना हुआ है ना। (अभी बच्चों को अपने मुक्तिधाम चलना है। जिसके लिये इतनी भक्ति की है। अभी तुमको अपने साथ ले चलता हूं। तुम सतयुग में चले जावेंगे। बाप आते ही हैं पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाने। पावन दुनिया है ही दो। मुक्ति और जीवनमुक्ति। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों मैं कल्प2 संगम युग आता हूं।) तुम भक्ति मार्ग में कितने दुःख उठाते आये हो। पहले जब शिव की भक्ति करते थे तो इतना धक्के खाने नहीं थे जितना अभी धक्का खाते हो। गीत भी है ना चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे --- किससे? बाप से। बाप को ढूंढने लिये जन्म जन्मफेरी की परन्तु फिर भी बाप से दूर रहे। इसलिये बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ आकर पावन बनाओ। बाप के सिवाय तो ऐसा कोई बना न सके। तो यह खेल ही 5000 वर्ष का है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं।

यह भी जानते हैं ड्रामा अनुसार सभी पुरुषार्थ करते ही रहते हैं। जिस प्रकार कल्प पहले किया है उसी अनुसार ही राजधानी स्थापन हो रही है। सभी एक जैसा तो नहीं पढ़ेंगे। यह पाठशाला है ना। राजयोग की पढ़ाई है। जो देवी देवता धर्म के होंगे वह निकल आवेंगे। मूल वतन में भी जो संख्या है वह भी एक्यूरेट होगी ना। कम जास्ती नहीं हो सकती। परन्तु गिनती हो नहीं सकती। नाटक में एक्टर्स का अन्दाज किया पूरा है परन्तु समझ नहीं सकते हैं। जितने भी हैं उतने एक्यूरेट हैं। फिर भी वही आकर पार्ट बजावेंगे। फिर

(२१३) मूलवतन में भी अपने2 सेक्शन में चले जावेंगे। ...

[illegible] ओमशान्ति। गीत तो सुना हुआ है। जो अच्छे2 साज़ है वो सब सेन्टर्स में होने चाहिए। यह [illegible] ने बनवाये हैं ना। तुम्हारी बुद्धि में और कोई शास्त्र आदि नही है। तुम सब कुछ पढ़े हुए हो। जानते हो परन्तु अभी वो कुछ भी बुद्धि में न है। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ सब भूलो। भक्ति मार्ग के जो भी शास्त्र आदि पढ़े हैं वो भूल जाते है। आप मुये मर गई दुनिया। समझना है हम आत्मा है। अभी हम जाते हैं अपने घर। फिर इन शास्त्रों की पढ़ाई आदि को क्या करेंगे। यह वेद शास्त्र तो साथ नही चलते हैं हाँ यह साथ चलते है अज्ञान काल में। यह [illegible], कर्मकान्ड के, मृत्युलोक के शास्त्र हैं। अमरलोक के लिए तो है अमरकथा। बाबा है अमरनाथ। तुम सब [illegible] हो। अमरकथा सुन रही हो। शिवबाबा द्वारा। वो है ऊँच ते ऊँच। अमरनाथ है वो शिवबाबा। अमरनाथ पर [illegible] लिंग बनाते हैं। नीचे जो साधू सन्त आदि रहते हैं वहाँ फिर शिव की प्रतिमा होती है जिसकी पूजा आदि [illegible] लिंग तो बर्फ का बनाते हैं। निराकार की थोड़ेही पूजा हो सकेगी। ऐसे नही कि अपने आप [illegible] पड़ता है। [illegible] हैं। झूठे [illegible] तो बहुत सुनाते हैं। अमरनाथ अथवा शंकर पार्वती वहाँ कहाँ से आये। वो तो कोई [illegible] नही। [illegible] मानसरोवर यह (ब्रह्मा) है। निराकार शिवबाबा है ज्ञानसागर। वो जब तक इनमें न आवे तब [illegible] हो। आत्मा में ज्ञान है परन्तु सुनाये कैसे? जब तक मनुष्य तन न ले। [illegible] [illegible] नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई बड़ी नदी है कोई कैनाल है। कोई [illegible] है। यह [illegible] [illegible] जानती हैं हम हैं ब्रह्माकुमार कुमारियाँ। ब्रह्मा का बाप है शिव। यह तो बुद्धि में है ना। हम [illegible] पोत्रे पोत्रियाँ हैं। यूँ तो शिवबाबा के बच्चे हैं। लेकिन अभी शरीर में आये हैं। वो है निराकार इसलिए [illegible] हैं। तो हम भाई बहिन ठहरे। सभी को वर्सा मिलता है। [illegible] [illegible] कुमारियाँ हैं। शिवबाबा हमारा दादा है। ऐसे जो निश्चय करते हैं [illegible] [illegible] न मानने वाले हैं वो हैं आसुरी औलाद। हंस और बगुले हैं। एक [illegible] है शिवबाबा [illegible] बच्चा। दूसरा कहे मैं फलाने का बाप का बच्चा हूँ तो गोया हंस और बगुला हो गया। आपस [illegible] तुम [illegible] हो [illegible] ईश्वरीय कुल के [illegible] न हैं। हम ईश्वरीय कुल के हैं। ईश्वर [illegible] वर्सा, [illegible] बहिन होने कारण हम विकार में जा नही सकते। नही तो वो क्रिमिनल एसाल्ट हो जाए। उसको बहुत [illegible] जाता है। तो इसलिए बाबा कहते है खबरदार रहना। भाई बहिन कहला फिर अगर विकार में गये तो [illegible] सजा भोगनी पड़ेगी। सतगुरु बाप का निंदक ठौर न पाये। वो गुरु लोग तो बहुत हैं। यह तो एक ही [illegible] मिलते हैं। यह है [illegible] का बाप। सतयुग में फिर दैवी बाबायें मिलेंगे। इस समय हैं आसुरी बाबायें। [illegible] को ईश्वरीय बाबा बाबा। तुम जानते हो हम शिवबाबा के पोत्रे पोत्रियाँ ब्रह्मा के बच्चे बच्चियाँ हैं। शिवबाबा [illegible] द्वारा पढ़ा रहे हैं। ब्रह्मा भी पढ़ा रहे है। कहते हैं हमको गाड ने नालेज दी। ब्रह्मा है गाडेज आफ नालेज [illegible] भी कहेंगे हम हैं गाड गाडेज आफ नालेज। मात पिता नालेज दे रहे हैं। सृष्टि चक्र की। गाड ब्रह्मा [illegible] कहेंगे। गाड तो एक है। बाकी रहे उनके बच्चे। ब्रह्मा और ब्र0कु0। अब ब्रह्मा गाडेज तो गुप्त है और ब्रह्मा गाडेज [illegible] तो प्रत्यक्ष है। वास्तव में बच्चे तो तुम ब्रह्मा के ठहरे ना। उनको कहते हैं गाड आफ नालेज। उसको [illegible] शिव से। फिर भी ब्रह्मा को गाड नही कह सकते। गाड एक है। तुम जानते हो कल्प पहले भी जरूर [illegible] परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रची होगी। तो जरूर पहले2 ब्राह्मण होंगे। फिर ब्राह्मण ट्रान्सफर हो राजयोग [illegible] की शिक्षा से देवता बनेंगे। रुद्र ज्ञान यज्ञ है तो जरूर ब्राह्मण ही होंगे। दूसरे जो यज्ञ होते है उनमें कोई [illegible] होता है जो वर्षों तक यज्ञ चले। अक्सर करके 7 रोज ही यज्ञ चलता है। इस यज्ञ को कहा जाता है [illegible] यज्ञ। अर्थात बहुत समय चलने वाला ज्ञान यज्ञ। कितना समय चलने वाला। यह कोई नही जानते। अन्त तक [illegible] है। इसमें पुरानी दुनिया की सामग्री स्वाहा होने वाली है। और कोई ऐसे रुद्र ज्ञान यज्ञ रच नही सकते।

[illegible] मार्ग से फिर इस नाम पर छोटे2 यज्ञ रचते रहते हैं। रुद्र यज्ञ रचते हैं कोई रुद्र ज्ञान यज्ञ भी कहते हैं। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचेंगे तो वहाँ गीता सुनावेंगे। सिर्फ यज्ञ होगा तो वेद आदि सुनावेंगे। रुद्र ने तो गीता सुनाई है। [illegible] फिर भूल जाते हैं। कृष्ण का नाम कह देते। यह नहीं समझते रुद्र ज्ञान यज्ञ से सूर्यवंशी चन्द्रवंशी डिनायस्टी [illegible] हो। जरूर शिवबाबा ब्रह्माबाबा याद पड़ेगा। वो ब्राह्मण लोग तो सिर्फ कह देते हैं। ब्रह्मा [illegible] देवताओं की औलाद देवतायें होंगी। क्षत्रियों की औलाद क्षत्रिय होंगी। वर्ण तो है ना। [illegible] समझाओ तो पीछे तुम ब्र०कु० हो। प्रजापिता नाम तो है ना। वो पास्ट हुआ है [illegible] जरूर [illegible] हुआ है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा मुख कमल से ब्राह्मण और सूर्यवंशी [illegible] के [illegible] हैं। कहाँ तो पूछना चाहिए प्रजापिता ब्रह्मा के ब्राह्मण जो थे कहाँ गये। सृष्टि रची होगी तो पहले ब्राह्मण हैं। [illegible] ब्राह्मण [illegible] जानते हो कि ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं। ब्रह्मा बाबा कहते हैं पत्र लिखते हैं। [illegible] हुआ है। तुम समझा सकते हो यह शिवबाबा तुम्हारा क्या लगता है। सर्वव्यापी तो कह न सके। पिता [illegible] बोहुँगी कहेंगे। अच्छा ब्रह्मा तुम्हारा क्या लगता है। यह जरूर होकरके गये हैं तब तो यादगार बना [illegible] फिर स्थापना कर रहे हैं। वो हमारा बाप ब्रह्मा है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा मुख कमल द्वारा पढ़ा [illegible] हैं। हम उन द्वारा राजयोग सीखते हैं। तुम भी सीखो तो 21 जन्म लिए बाप से वर्सा पावेंगे। नहीं तो नहीं पावेंगे [illegible] में कोई ही आकर ज्ञान सुनेंगे। जो ब्रह्मा की औलाद 5000 वर्ष पहले बने होंगे। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी पद पाया [illegible] पावेंगे। अभी तो नहीं हैं ना। फिर से बनेंगे। बाप आये हैं पतित से पावन, मनुष्य से देवता बनाने। फिर भी ब्रह्मा का [illegible] ब्र०कु० कुमारियाँ अब ईश्वरीय औलाद हैं। यज्ञ रचा है तो ब्राह्मण जरूर पहले2 [illegible] ब्राह्मणों की चोटी है ना। परन्तु तुमने शायद सदा सुख का वर्सा नहीं लिया होगा तब मानते नहीं हो। इतनी सब ढेर ब्र०कु० कुमारियाँ हैं। वृद्धि होती ही रहेगी। अभी तुम बैठे हो जानते हो बापदादा की याद में बैठे हैं। परमपिता परमात्मा के सन्मुख बैठे हैं। उनको कहा जाता है ओमनीप्रेजन्ट। हाजिरनाजुर तो अभी है ना। क्या करते हैं। जरूर कर्म करते होंगे। कर्म अकर्म और विकर्म का राज समझा रहे हैं सन्मुख। परमात्मा ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। जिसको सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। वो नालेजफुल है। ऐसे नहीं कि मनुष्यों की बुद्धि में क्या है वो जानेंगे। नहीं। बाप तो कहते हैं मैं आकर तुम बच्चों को राजयोग और ज्ञान सिखलाता हूँ। जिस योग लगाने से तुम पावन बन जावेंगे। और इस सृष्टि चक्र को समझने से प्यूरिटी का ताज और रतन जड़ित ताज आ जावेगा। इसको अविनाशी ज्ञान रतन कहते हैं। योग से हेल्थ ज्ञान से वेल्थ। हेल्थ वेल्थ है तो हैपीनेस भी है। तुमको हेल्थ वेल्थ हैपी सब मिलती है। योग से विकर्म विनाश हो और लाइट का ताज आ जावेगा। देवतायें एवर हेल्दी वेल्दी रहते हैं। स्वदर्शनचक्रधारी बनने से। ज्ञान रतन धारण करने से तुम वेल्दी बन जावेंगे। इसको ही नेचरक्योर कहा जाता है। आत्मा प्योर हो गई तो फिर शरीर भी प्योर मिलेगा। उनको कहा जाता है देवता। प्यूरिटी थी है तो हेल्दी वेल्दी भी है। सतयुग में भारतवासियों की आयु 150 वर्ष थी। अभी तो विष पीते2 रोगी बन पड़े हैं तो अकाली मृत्यु हो जाता है। वो भी पवित्र दुनिया। यह है अपवित्र दुनिया। वो है श्रेष्टाचारी दुनिया। भ्रष्टाचार कोई हो न सके। व्यास भगवान ने तो वहाँ भी भ्रष्टाचार लिख दिया है। कृष्ण यह करता था। राम यह करता था। शिव यह करता था। सबकी ग्लानी लिख दी है शास्त्रों में। तो बाप कहते हैं जब ऐसी धर्म ग्लानी होती है तो मैं आता हूँ। अपने बड़ों को गालियाँ देना यह [illegible] में [illegible] होता है। यदा यदाहि ‥ यह यहाँ की बात है। बाप बैठ समझाते हैं माया ने बिल्कुल ही कपूत बना दिया है। कपूत भ्रष्टाचारी को कहा जाता है। फिर श्रेष्टाचारी कौन बनावेगा। नई दुनिया श्रेष्टाचारी है। नये से फिर [illegible] बनते हैं। पुराने जड़जड़ीभूत जरूर होते हैं। हर चीज ऐसी होती है। तो यह सब खत्म हो जाता है। [illegible] को भी [illegible] करनी है। और साथ2 यह पढ़ाई भी करनी है। ऐसे बहुत बच्चे हैं गृहस्थ व्यवहार में

[illegible] नौकरी आदि भी करते और ऊँच पद पाने लिए श्रीमत पर भी चलते है। बाबा को मालूम होगा तो राय [illegible] इस हालत में ऐसे करो। बतावेंगे। बाबा हमारे पास यह यह है। बाबा कहेंगे अच्छा भल मकान बनाओ। बच्चा और कुछ नही है तो फिर मकान किसके लिए? कहेंगे अच्छा सेन्टर खोल दो। बहुतों का कल्याण हो जावेगा। एक [illegible] दान के देने लिए रखो। प्रापर्टी तुम्हारी ही रहेगी। सिर्फ सर्विस अर्थ इन्हों को दे दो। भल किराया भी लो। [illegible] किराया देते है किरायेदार को कब धणी दस्तनदाजी नही करते। ऐसे2 सेन्टर खोलते जाओ। पहले तो सेन्टर की पूरी सम्भाल करो फिर कुछ बचत है। बाप को मदद देने चाहते हो तो भल दे सकते हो। सेन्टर पर मदद देने से भी तुम्हारा भविष्य बनता है। एकद्दा है तो उनको सफल करना है। नही तो वो खत्म हो जावेगा। मनुष्य दान करते है तो दूसरे जन्म में उसका फल मिलता है। यह भी करते है। ईश्वर अर्थ! तो इनका भविष्य 2। जन्म लिए मिलता है। कोई का भी कर्जा न रखना है। कर्ज को मर्ज कहा जाता है। कर्ज का बहुत फुनी रहता है। कर्जा न दे तो उसकी इज्जत चली जाए। कभी भी कब भी कर्जा न उठाना है। मनुष्य तो बहुत कर्ज उठाते है। [illegible] पर खर्च, तीर्थों पर खर्च बहुत करते है। नही तो पेट चाहता है दो रोटी। बाकी सारा ऊपर का खर्चा हो जाता है। फजूल खर्च बहुत करते है। शादी तो बरबादी हो जाती है। बाप की मत पर राय लेते चलो। [illegible] 10-15बारी चाय पिया, सिग्रेट आदि पिया, यह खराब आदतें सब छोड़ देनी है। तो मीठे2 बच्चों को [illegible] पर चलना है। मनुष्य पैसा इकट्ठा भी करते है। तुम्हारी यह बैंक है नम्बरवन। इससे चार आना डालो [illegible] भविष्य में हीरे बन जाते। पत्थर से सोना बन जाता। तुम्हारी हर चीज को पारस बना देते है। शिवबाबा

[illegible] तो दरिया भरपूर ही है। ढेर बच्चे बैठे है भण्डारा कैसे खुटेगा। इम्पासिबुल है। [illegible] तो कोई से [illegible] कौड़ी [illegible] है। बाबा है देने वाला। काम में आना होगा तो लेंगे नही तो क्या लेंगे। [illegible] सन्यासियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का ला नही। सब कुछ छोडा फिर इतने पैसे क्यों [illegible]!!

[illegible] बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की [illegible]।

[illegible] सर्व [illegible] कुल भूषणों को सूचित किया जाता है कि बापदादा के महावाक्यों प्रमाण अनेक [illegible] आगे चलते है जिसमें निश्चयबुद्धि रतन तो सदा विजयी है ही है। आजकल देहली में एक [illegible] जो पहले अहमदाबाद में था अब देहली में है वो आत्मा अपना-मनमत-का पार्ट बजा रही है- [illegible] से [illegible] की मुरली में जाने का रूप कहती, हरेक के घर जाकर कोई कहानी है, मुरली का आधार लेकर [illegible] पाइन्ट्स निकाल सुनाती लेकिन अर्थ अपनी मनमत का निकालती है। और यह भी कहती है कि [illegible] द्वारा बापदादा का पार्ट चलना है। एक मुरली मुवाफिक भी साइक्लोस्टाइल कर-कहाँ2 भेजी है। जिसके [illegible] शिव का डमरू बाजे अगम निगम के भेद खोले लिखा हुआ है, नीचे नाम-एड्रेस रमेश भी है। यह सब [illegible] की बातें है न कि श्रीमत। इसलिए आप सब अपने सेन्टर्स के भाई बहिनों को ध्यान देना कि कहीं [illegible] भोलियों [illegible] की माया वश न हो जाए। कहीं2 वो अपना नाम भी बदली कर सुनाता है। उनके साथ देहली [illegible] भाई बहिनें भी कहीं2 जाकर यही प्रोपोगण्डा करते है- इसलिए उन्हों से ध्यान रखना। [illegible]

[illegible] जाता है।

[illegible] एक सीरीज एक पुस्तक भी है जिसका चिनगारी नाम का पुस्तक था वो राजयोग गृहस्थ आश्रम [illegible] है वह पुस्तक [illegible]।

पास विद आनर होने लिए बापदादा द्वारा सुनाये हुए कुछ अनमोल महावाक्य तथा प्रश्नः- 1-आवाज से परे जाना और ले जाना आता है?जब चाहें आवाज में आवें जब चाहें आवाज से परे हो जावें-ऐसे सहज अभ्यासी बने हो?यह पाठ पक्का किया है? 2-विजयी रतन बने हो?किस पर विजयी बने हो? 3-सर्व के दिलों के ऊपर विजय प्राप्त कर सकते हो?जैसे बापदादा के इस कर्त्तव्य के गुण का यादगार यही है वैसे बाप के समान विजयी बने हो? 4-सर्व के ऊपर विजयी बने हो? 5-आपके ऊपर और कोई विजयी बन सकता है?भट्ठी से जाने के बाद प्रैक्टिकल पेपर होगा। 6-पास विद आनर अर्थात स्वप्न में भी फेल न हो ऐसे बने हो?कल समाचार सुना था, भी ही का नारा बहुत अच्छा लगाया।ऐसी प्रतिज्ञा करने वाले पास विद आनर होने चाहिए।माया की चैलेन्ज है कि प्रतिज्ञा करने वालों का खूब प्रैक्टिकल पेपर ले। 7-सामना करने की शक्ति सदैव अपने में कायम रखना है।जो अष्ट शक्ति सुनाई थी वो अपने में धारण की? 8-ज्ञानमूर्त-गुणमूर्त दोनो ही बने हो? 9-माया को अच्छी तरह से सदाकाल के लिए विदाई दे चले हो?अपनी स्थूल विदाई के पहले माया को विदाई देनी है।माया भी बड़ी चतुर है।जैसे कोई2जब शरीर छोड़ते हैं तो कब2 सांस छिप जाता है और समझते हैं कि फलाना मर गया लेकिन छिपा हुआ श्वास कब2फिर से चलने भी लगता है।वैसे माया अपना अति सूक्ष्म गुप्त रूप भी धारण करती है।इसलिए अच्छी रीति से जैसे डाक्टर लोग चेक करते हैं कि कहीं श्वांस छिपा हुआ तो नहीं है-ऐसे तीसरे नेत्र से अपनी चेकिंग करनी है।फिर कब ऐसे बोल न निकले कि इस बात का तो हमको आज ही मालूम पड़ा है।इसलिए बापदादा पहले से ही खबरदार होशियार बना रहे हैं।क्योंकि प्रतिज्ञा बहुत बड़ी की है। 10-क्या प्रतिज्ञा की है?किस शान पर की है?किसके आगे की है?यह सब बातें याद रखना है। 11-प्राप्ती तो की लेकिन प्राप्ती के साथ क्या करना होता है? प्राप्ती की लेकिन ऐसी प्राप्ती की जो सर्व तृप्त हो जाए?जितना तृप्त बनेंगे उतना इच्छा मात्रम् अविद्या बनेंगे। कामना के बजाए सामना करने की शक्ति आवेगी। 12-पुरानी वृतियों से निवृति हुई? यह सब पेपर के क्वेश्चन हैं।जो पेपर प्रैक्टिकल होना है। 13-अपने को पूर्ण रूप से क्लियर और केयरफुल किया? 14-माया के और अपने पुराने संस्कारों वा औरों के पुराने संस्कारों को डोन्टकेयर करने की शक्ति अपने में धारण की? 15-स्वयं और समय दोनो की पहिचान अच्छी तरह से स्पष्ट मालूम हुआ?यह सब कुछ किया वा कुछ रहा।

जो समझते हैं सब बातों की प्राप्ती कर तृप्त आत्मा बन पेपर हाल में जाने के लिए हिम्मतवान अधिकारी बना हूँ वो हाथ उठावें।सब बातों का पेपर देने और पास विद आनर होने के हिम्मतवान अधिकारी [illegible] वो हाथ उठावें।अच्छा अब प्रैक्टिकल पेपर की रिजल्ट देखेंगे। जो उदाहरण पास विद आनर की रिजल्ट दिखावेंगे उन्हों को बापदादा विशेष यादगार देंगे। लेकिन पास विद आनर।सिर्फ पास नहीं। अपनी2रिजल्ट लिख भेजना।फिर [illegible] बड़े ग्रुप से कितने पास विद आनर निकले।लेकिन यह भी देखना कि टीचर और जो आपके साथी हैं [illegible] सर्टीफिकेट लेंगे तब यादगार देंगे। सहज है ना। जब हो ही हिम्मतवान अधिकारी [illegible] अपनी [illegible] यह स्मृति रखना कि मैं विजय माला का विजयी रतन हूँ।इस स्मृति से [illegible] [illegible] कि समस्यायें भी पूर्ण रूप से बलि चढ़ ही जावेंगी। 16-जो सम्पूर्ण [illegible] [illegible] ओमशान्ति बाबा की कुछ [illegible] है?महाबली के आगे कोई माया का बल चल नहीं सकता।ऐसा [illegible] धारण कर न सके जो नाम रिजल्ट देखेंगे।फिर बापदादा ऐसे विजयी आत्माओं की एक अलौकिक माला बनावेंगे।

---------------ओमशान्ति---------------

[illegible] - आप सबको पहले भी कहा गया था कि कब भी कोई स्टूडेन्ट के साथ पैसा का लेन देन [illegible] नहीं करना है।आजकल सेन्टर्स पर कई ऐसे लोग भी आते हैं जो कोई कारोबार [illegible] [illegible] कुछ पार्ट बजाते, अपने वश कर लेते और पैसा लेकर गुम हो जाते, नाम अपना भिन्न2सुनाते, इसलिए ऐसे [illegible] से खबरदार रहना है।कभी भी पैसे की लेन-देन नहीं करनी है। अच्छा।

यह सुख लेने की भी तातलगी रहती है। काम कटारी चलावें, मूत पीवें वही चिन्तन चलता रहता है। ऐसे भी हैं। बच्चों को देखते हैं तो वह समझते हैं हम भी काम कटारी चलावें। हनीमून करते जाते हैं ना। काम कटारी चलाने जाते हैं। उनका नाम रखा है हनीमून। सुनते हैं तो दिल होती है हम भी काला मुंह करें। कृष्ण भी पुनर्जन्म लेते हनीमून करते काला बना है ना। इसलिए उनको श्याम-सुन्दर कहा जाता है। ज्ञान चिता पर बैठ सुन्दर बना। फिर काम चिता पर बैठ काला मुंह किया। (आजकल तो राम को भी काला कृष्ण को भी काला दिखाते हैं। पूछो यह काला क्यों हुये हैं। कहेंगे हम क्या जानें। और वह तो रामराज्य में गोरे थे। फिर रामराज्य रावण राज्य में आते बने हैं। बाप अर्थ कितना अच्छा समझाते हैं। काम कटारी चलाते2 काले बन गये हैं। कोई2 कुमारियां ऐसी हैं जो काला मुंह करने बिगर रह नहीं सकती हैं। बाबा दिप प्रति दिन बड़े ही कड़े अक्षर देते रहते हैं। लौकिक बाप भी समझाते हैं शादी न करो। काला मुंह हो जावेगा। बाप को भी जवाब दे देती हैं। काला मुंह कर बाप पर कलंक हो जावेगी। बाप ने आगे भी बहुत कड़ी वाणी चलाई थी। अभी भी समझाते रहते हैं। अभी तुम बच्चों को भी यही धंधा करना चाहिए। समझाना चाहिए। सभी आसुरी नींद में सोये पड़े हैं। उनको जगाना है। गोरा बन औरों को बनावे तो बाप का प्यार भी जाये। सर्विस ही नहीं करेंगे तो मिलेगा क्या। कोई बादशाह बनते हैं तो जरूर अच्छे कर्म किये हैं ना। यह तो कोई भी समझ सकेंगे। यह राजा रानी हैं। हम दासियां हैं जरूर आगे जन्म में ऐसे कर्म किये हैं। बुरा कर्म करने से बुरा जन्म मिलता है। कर्म की गति तो चलती ही रहती है। अभी बाप तुमको अच्छे कर्म करना सिखलाते हैं। वहां भी यह तो जरूर समझेंगे अगले जन्मों के कर्मों अनुसार ऐसे बने हैं। बाकी क्या कर्म किये हैं वह नहीं जानेंगे। कर्म गाये जाते हैं ना। जितना जो अच्छा कर्म करता है ऊंच पद पाता है। ऊंच कर्मों से ऊंच ही बनेंगे। अच्छे कर्म नहीं करते हैं तो फिर झाड़ू लगाते हैं। भाड़ियां देते हैं। कर्मों का फल तो मिलेगा ना। कर्मों की थ्योरी चलती है। श्रीमत से ~~अच्छे कर्म होते हैं। कहां बादशाह~~ कहां दास दासियां। बाप कहते हैं अभी पालो करो। मेरी श्रीमत पर चलो तो ऊंच पद पावेंगे। बाप सा० भी कराते हैं। रेह ममा, बाबा बच्चे इतना ऊंच बनते हैं, कर्म है ना। बहुत सोच्चियां कर्मों को समझती नहीं हैं। पिछाड़ी को सा० भी होगा। अच्छी रीत पढ़ेंगे लिखेंगे तो नवाब बनेंगे। खेलेंगे पिलेंगे तो होंगे खराब। यह तो इस पढ़ाई में भी होता है। इन में भी होता है। कोई तो कुछ भी समझते नहीं। दिल में होता है अभी शादी कर लेवें। काला मुंह करने बड़ी खुशी होती है।

तुम भाषण में भी ऐसे समझा सकते हो। इसमें बड़ी युक्ति चाहिए। बोलो यहां कितने कन्यायें होंगी जिनको दिल होती है, हम शादी कर काम चिता पर चढ़ें। भगवानुवाच काम चिता पर बैठने से काला मुंह करते हो। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। इस समय सारी दुनिया का काला मुंह है। काम चिता पर जल मरे हैं। कहते हैं स्त्री को, कुमारी को देखने से अवस्था गिरती है। यहां तो ऐसी अवस्था नहीं बिगड़ेगी। बाप कहते हैं नाम रूप देखो ही नहीं। तुम भाई3 को देखो। बड़ी मुश्किल है। विश्व का मालिक बनना कब किसकी बुद्धि में नहीं होगा (यह ल०ना० विश्व के मालिक थे कैसे बनें। बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूं।)

बाप का विचार सागर मंथन होता रहता था ऐसे2 समझावें। मिनिस्टर आदि को समझाओ। यह सर्व गुण सम्पन्न ... थे ना। आजकल जिनका तुम नया वल्ड समझते हो। यह क्या करते रहते हैं। क्या सृष्टि को चलाकर गये हैं। रामराज्य बनाने की यह युक्ति है। यह तो बाप का ही काम है) आसुर विकारी थोड़े ही रामराज्य स्थापन करते हैं। देवताएं तो एवर प्युर थे। 21 जन्म पावन फिर 63 जन्म पतित बन जाते हैं। समझाने में इतना मस्त बनना चाहिए। रीढ बकरियां क्या समझ सकती हैं। बाप कहते हैं सर्विस पर चढ़ो। जो आप हो ...

[illegible] है। [illegible] पाने हिफाज़त करो। मेरी दाढ़ी की लज्जा रख [illegible] जो दाढ़ी अक्षर फिर [illegible] मे [illegible] [illegible] [illegible] था है। तो आप कहते हैं माया पर जीत पहनो। परन्तु माया भी ऐसी है जो एकदम नाक से [illegible] मे मिला देती है। गटर मे गिर कर माथा न मुड़ावे लो। शुरु मे बाबा बहुत कड़ी वाणी चलाते थे। [illegible] [illegible] ऐसे2 अंदर करते थे। न खुद अमृत पीते थे, न औरों को पीने देते थे। बड़े आदमी आते थे। [illegible] ही [illegible] जोर से वाणी चलाती थी। दिल [illegible] मिलने से बड़ा [illegible] हंगामा कर दिया। कोर्ट मे बाबा को [illegible] उनको कहो तो दिखादेवे। और हम तो भगवान के महावाक्य सुनाते हैं काम महाशत्रु है। पावन बनना [illegible] तो गीता के वचन है। मैं क्या करूं। बोले नहीं तुम कहो। अच्छा कह देता हूं। [illegible] [illegible] भी [illegible] है। ऐसे थोड़े ही यह भी मान लेगो। राति करने का [illegible] रखनी पड़ी। कितना [illegible] हुआ। [illegible] [illegible] [illegible] किया यह आओ हम [illegible] अमृत पीने वाले [illegible] कितना हंगामा हो गया। अखबार मे पड़ गया [illegible] आत्मा ने [illegible] 16108 रानियां चाहिए। [illegible] अभी एक एक से पेट पैसे [illegible] भी। अखबार को [illegible] काम [illegible] आगे चल कर अखबारो मे भी आवेगा। तुम्हारी बहुत ही महिमा [illegible] निकलेगी। कहेंगे प्रजापिता [illegible] [illegible] मे कहा है काम महाशत्रु है। [illegible] विश्व मे शान्ति की स्थापना करना यह तो बाप [illegible] काम है। ऐसे2 हाल निकालो। एक बाप ही [illegible] प्लानिंग बनावेंगे। ब्रह्मा द्वारा [illegible] प्लानिंग की [illegible] [illegible] भी बचेंगे उनका शंकर द्वारा विनाश। फिर एक फेमिली की ही पालना होगी। वहां और कोई [illegible] भी नहीं। जैसे बाबा समझाते हैं ऐसे तुम भी समझाओ। [illegible] स्थूल बच्चे भी बहुत कम है। ऐसी [illegible] [illegible] जो [illegible] नहीं सकते। कान जैसे कि पत्थर की है। भल नोट्स भी लेते हैं परन्तु धारणा [illegible] नहीं। बाप भी प्यारे तो [illegible] स्थूल ही लगेंगे। बाबा जानते हैं कौन अच्छे [illegible] करने वाले हैं। कौन [illegible] करने वाले हैं। वाले हैं। अपने ही दिल से पूछना चाहिए हम बाप को याद मे भोजन बनाते [illegible] नहीं जाते हैं।

समझाने की बड़ी युक्तियां चाहिए। [illegible] आदि को बुलाते हो, भाषण आदि करते हो तो [illegible] [illegible] कोई [illegible] है जो विचार सागर मंथन कर ऐसे2 [illegible] मे मदद करे [illegible] [illegible] [illegible] मे हैं [illegible] प्रेरणा देते हैं। बाप कहते हैं कुछ भी नहीं। [illegible] तो कुछ है [illegible] हुआ है। प्रेरणा की बात ही नहीं। मै तो आत्मा ही हूं [illegible] पावन बनने का [illegible] [illegible] के ब्रह्मा द्वारा स्थापना [illegible] दुनिया की। बाकी [illegible] का विनाश [illegible] बड़ी [illegible] प्लानिंग है। विचार करो नई दुनिया मे कौन है। पुरानी दुनिया को बदलना [illegible] [illegible] ही काम है। या इन [illegible] आदि का काम है। ऐसे2 प्लाक से बोलना चाहिए। क्या तुम [illegible] [illegible] चला सकेंगे। नोट्स लेते हैं तो फिर भी विचार सागर मंथन कर वाणी चलाने लिए तैयार [illegible] सिर्फ नोट्स लेने से क्या फायदा। चार्ट लिखना और चलन उल्टी रखते हैं तो उन से क्या फायदा। [illegible] है यह [illegible] लगाते हैं। चलन मे फर्क कहां। बोल [illegible] कहां। कोई तो [illegible] भी बहुत है। [illegible] [illegible] और पेट मे [illegible] जावेगा। तो [illegible] बात [illegible] समझाते हैं [illegible] [illegible] बाप को याद करो तो याद [illegible] जावेगा। बड़ा ही [illegible] पद पावेंगे। [illegible] जो विश्व का [illegible] हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। भूल जाते हो। कोई कहते हैं [illegible] [illegible] [illegible] है इन मे कुछ भी [illegible] नहीं है। उनको पता भी नहीं है याद किसको कहा जाता है। [illegible] तो [illegible] ही [illegible] हो जाते हैं। बाबा समझते हैं माया की ग्रहचारी है। ध्यान मे भी जाते हैं [illegible] [illegible] आई बाबा आया, फिर कहेंगे विश्वकिशोर आया। कब कुत्ता बिल्ला भी आ जावेगा [illegible] [illegible] है या कुत्ता भी खाया गया। कहे2 कल की ब्याज ने [illegible] है। फिर भी यह [illegible] [illegible] जाने ने तो आकर नालेज दी है। बेहद [illegible] बाप हता कुडी मे [illegible] [illegible] [illegible] प्यार गुडमोर्निंग और नमस्ते।

रात्रिक्लास 4-9-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

(बच्चों को समाचार सुनाया। बच्चों को बहलाया? फिर तुमको कहेंगे भाईयों को वा बहनों को बहलाया। बच्चे जो आते हैं समझते हैं हम बाप के पास जाते हैं। बाप भी समझते हैं बच्चे आते हैं। यह हो गया परम लव। और कोई जगह ऐसा लव हो नहीं सकता। भगवानुवाच मनुष्यों ने सुना है। समझना चाहिए भगवान परमपिता है तो हम बालक ठहरे। शरीर का बाप तो होता ही है। बाकी आत्माएं पारलौकिक बाप को याद करती है। सभी आत्माओं का बाप एक है। वह हो गया बेहद का बाप जिससे बेहद का वरसा मिलता है। भगवान तो नई दुनिया स्वर्ग का रचयिता है। बाप जानते हैं यह आत्माएं मेरे बच्चे हैं। बच्चे कामचिता पर बैठ काले हो गये हैं। फिर ज्ञान चिता पर बैठाये गोरा बनाते हैं। यह बातें साधु सन्त कोई बता न सकें। और बच्चे भी कह न सकें। प्रजापिता कहना है एडाप्टेड बाप। लौकिक बाप को प्रजापिता नहीं कहेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा है। इतनी ढेर प्रजा तो जरूर एडाप्टेड होगी। बातें बड़ी सहज समझने की है) योग और ज्ञान भी सहज है। स्टुडन्ट अपने टीचर को जानते हैं टीचर पढ़ाते हैं। तुम जानते हो यह एक ही शरीर में वह बाप टीचर सद्गुरु है। ऐसा तो कोई होता नहीं जिसको (सुप्रीम फादर टीचर सद्गुरु कहा जावे। सुप्रीम कहो वा परमपिता कहो। बात एक ही है। यह तो जानते हैं ना कि दो बाप है। पारलौकिक बाप को सभी को वरसा देना पड़े। पारलौकिक बाप संगम युग पर ही आकर स्वर्ग का वरसा देते हैं। बाकी सभी आत्माएं शान्तिधाम में चली जाती है। मुक्ति और जीवनमुक्ति का वरसा मिल जाता है। सुखधाम में शान्ति है। दुःखधाम में अशान्ति है। यह किसको समझाना है बहुत सहज। जब कि आत्मा को पवित्र बनना है तो पतित पावन तो एक ही बाप है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे। बाप तो नई दुनिया स्थापन करते हैं। वही स्वर्ग का मालिक बना सकते हैं बच्चे यहाँ यह समझ करके आते हैं हम बेहद के बाप के पास जाते हैं। स्वर्ग का वरसा लेने। तो दैवीगुण भी धारण करनी है जब कि दैवी दुनिया में जाते हैं। तो अवगुण को छोड़ना पड़े। देवताएं तो सर्वगुण सम्पन्न हैं ना यह भी बताया है एक है मनुष्य मत, दूसरी है दैवी मत, एक है आसुरी है, दूसरी है ईश्वरीय मत। ईश्वरीय मत से तुम देवता बनते हो। मानव मत वाले यह ज्ञान दे न सकें। मानव मत है भक्ति की मत। उन में ज्ञान हो न सके। आत्माओं का बाप ही आकर ज्ञान देते हैं। परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है वह ज्ञान किसको देंगे। आत्माओं को देंगे। क्योंकि बेहद का बाप है। आत्माओं से ही बात करते हैं। बच्चों मुझ बाप को निरन्तर याद करो तो जन्म जन्मान्तर के पाप कट जावें। याद की यात्रा है वह तो अपना कल्याण करो। बाकी इस एक जन्म का जो होगा वह देखा जावेगा। जन्म जन्मान्तर के पाप का बोझा जो सिर पर है वह बोझा तो हल्का करो। बात बड़ी सहज है परन्तु माया याद की यात्रा भुला देती है। (तो टीचर को भी भूल जाते हैं। बाप कहते हैं रावण तुम्हारा पुराना दुश्मन है। इसलिए रावण को जलाते हैं परन्तु यह कौन है, क्यों जलाते हैं वह कुछ भी समझते नहीं हैं। भक्ति मार्ग के ढेर सामग्री है। वह कोई काम के नहीं। बाप समझाते हैं मीठे बच्चे याद करते रहो। माया विघ्न डालेगी पर डरना नहीं। और कोई विकर्म कर्मेन्द्रियों से न करना है। तुम पुराने राज्य में ही ना। यह है बेहद की बात। आधा कल्प से रावण राज्य चल रहा है। तो दुश्मन ठहरा ना। परन्तु समझते नहीं हैं। सतयुग में तो रावण राज्य होता ही नहीं) बहुत सहज बातें हैं जो तुम अभी समझ सकते हो। यह बातें और कोई समझा नहीं सकते। कहते हैं पवित्र बनो। सन्यासी भी पवित्र बनते हैं। परन्तु फायदा क्या। लीन तो होते नहीं। वापिस कोई जा नहीं सकते। सभी आत्माएं अविनाशी हैं। ड्रामा में पार्ट भी अविनाशी है। यह समझते नहीं आत्मा छोटी आत्मा कब मिटती नहीं। फिर एवर रिपीट करती रहती है। सो कोई नहीं जानते बाप को मिट्टी में मिलाने से सभी भारतवासी मिट्टी में मिल गये हैं। और मिल ही जावेंगे। मिट्टी में मिल जाएंगे। आत्मा वापिस कैसे जावेगी। यह शरीर मिट्टी में मिल जावेगा आत्मा वापिस अपने घर चली जावेगी।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

3

ऐसे सभी जगह होते हैं। एक राजाई से निकलकर दूसरे में जाकर शरण लेते हैं। फिर वह लोग भी देखते हैं यह हमारे काम का है तो शरण ले लेते हैं। ऐसे बहुत ट्रेटर बनते हैं। ऐरोपलेन में बैठ ऐरोपलेन सहित जाकर दूसरे हमारे राजाई में बैठते हैं फिर वह लोग ऐरोपलेन वापस कर लेते हैं। उनको शरण ले लेते हैं। ऐरोपलेन को थोड़ेई शरण लेते। वह तो उनकी प्राप्टी है। उनकी चीजें उनको वापस कर लेते हैं। बाकी मनुष्य मनुष्य को शरण देते हैं। अब तुम शरण पड़े हो बाप के पास। कहते हो हमारी लाज रखो। द्रोपदी ने भी पुकारा ना कि हमको यह नंगन करते हैं। नंगन होने, पतित होने से बचाओ। सतयुग में कब नंगन होते नहीं। उन्हों को तो कहते ही हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। छोटे बच्चे तो होते ही है निर्विकारी। यह गृहस्थ व्यवहार में रहते सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं। भल पुरुष बनते हैं तो भी निर्विकारी। इसलिए कहते हैं हम नर से ना० नारी से ल० बनें। वह है हो निर्विकारी दुनिया। क्योंकि वहां रावण राज्य ही नहीं। उसको कहा जाता है रामराज्य राम शिव बाबा को कहा जाता है। राम

(K) जपने का अर्थ ही है बाप को याद करना। राम2 जब कहते हैं तो बुधि में निराकार ही रखते हैं। राम2 कहते हैं सीता को छोड़ देते हैं। वैसे ही कृष्ण का नाम लेते हैं, राधे को छोड़ देते हैं। यहां तो बाप है ही एक। वह कहते हैं मामेकं याद करो। कृष्ण को पतित पावन नहीं कहेंगे। पुजारियों को तो कुछ भी पता नहीं। छोटेपन में तो राधे-कृष्ण भाई बहन भी नहीं थे। अलग2 राजाई के थे। बच्चे तो होते ही हैं शुध। बाबा भी कहते हैं बच्चे तो फूल है। इनमें विकार की दृष्टि नहीं होती। जब बड़े होते हैं तब दृष्टि जाती है। इसलिए बालक और महात्मा को समान कहते हैं। बल्कि बच्चा महात्मा से भी ऊंच है। महात्मा को तो फिर भी मालूम है भ्रष्टाचार से पैदा हुए है। छोटे बच्चे को यह मालूम नहीं रहता। यह सभी बातें बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप का बना और वर्सा तो है ही। बेहद के बाप का बेहद का वरसा। विश्व का मालिक बनना। तुम विश्व के राजधानी के मालिक बनते हो। कल की बात है। तुम विश्व के मालिक थे। अभी फिर बनते हो। इतनी प्राप्ती होती है तो स्त्रीपुरुष वह भाई हो पवित्र रहे तो क्या बड़ी बात है। कुछ तो मेहनत भी चाहिए ना। अभी तुम पुजारी से पूज्य बन 21 जन्म पूज्य। फिर तुम पुजारी बनते हो। दो युग पूज्य, दो युग पुजारी। सबसे जास्ती बिछुड़े हुये तुम ही हो। सतयुग में भी पहले2 तुम आते हो। वहां पूज्य देवी देवताएं। फिर रावण राज्य पतित पुजारी बन जाते हैं। यह तुम जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। वह बृहस्पत की दशा में जाते हैं। स्वर्ग में तो जाते हैं फिर है पढ़ाई पर। कोई ऊंच पद पाते हैं कोई मध्यम। कोई फूल बनते हैं कोई क्या। बगीचा है ना। फिर पद भी लेंगे। पुरुषार्थ खूब करना है ऐसे फूल बनने। इसलिए बाबा भी फूल ले आते हैं बच्चों को दिखाने। बगीचे में तो अनेक प्रकार के फूल होते हैं ना। सतयुग में है फूलों का बगीचा और है कांटों का जंगल। अभी तुम कांटे से फूल बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। एक दो को कांटा मारने से बचने का पुरुषार्थ करते हैं। फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे। मूल बात है काम की। काम पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। तुमको शिक्षा मिलती है पवित्र बनने की। बड़ा दुश्मन भी यह काम ही है। इस पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। यह तो बच्चों पर है ना। को बहुत मेहनत करना है। बूढ़ों को कम। वानप्रस्त अवस्थावालों को और कम। बच्चों को बहुत कम। तुम जानते हो हमको विश्व की बादशाही की प्राईज मिलती है। इसके लिए एक जन्म पवित्र रहे तो क्या हरजा। कहा जाता है बाल-ब्रह्मचारी। अन्त तक रहते हैं। जो पवित्र बने हैं उनको कोशिश होती है। बच्चों को छोटेपन से ही ज्ञान मिलता जाये तो बहुत बच सकते हैं। छोटे बच्चे अबोध होते हैं। फिर बाहर स्कूल आदि में संग का रंग लग जाता है। संग तारे कुसंग बोरे। बाप कहते हैं हम तुमको पार ले जाते हैं। मनुष्य तो वेश्यालय को भी नहीं समझते हैं। सतयुग है बिल्कुल नई दुनिया। बहुत ही थोड़े मनुष्य रहते हैं। फिर वृद्धि को पाते हैं। वहां बहुत थोड़े देवताएं रहते हैं। तो नई दुनिया में जाने का पुरुषार्थ करना है। अच्छा मीठे2 सीकीलधे बच्चों को

प्रात: क्लास 13-9-68 ओमशान्ति शिव बाबा और वर्सा याद है?

भारत का उत्थान और पतन। तुम बच्चे हो उत्थान तरफ।तुम्हारी बुधि में सिवाय विश्व की बादशाही और कुछ सुझता नहीं होगा।एमआब-जेक्ट ही है विश्व की बादशाही पाना।और सभी हैं पतन तरफ।तुम्हारी बुधि में नई दुनिया ही बसती है। बाप रोज लिखते हैं पदाम-पदमभाग्यशाली बच्चों।तुम हेविन के मालिक बने हो।आम पब्लिक का है उस दुनिया तरफ।तुम्हारा है नई दुनिया तरफ।तो बच्चों का पुरुषार्थ ही है नई विश्व का फिर से मालिक बनने लिये।जहां धन की कमी नहीं। पुरुषार्थ कर हम इनके विजय माला में पिरोवें। विश्व का तख्त नशीन बनें।कितना रात दिन का फर्क है।तुम दिन तरफ बाकी सारी दुनिया है रात तरफ। तुम जानते हो हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं।अभी पुराने छीछी राज्य में हैं।विषय सागर है ना दुनिया।तुम निकल पड़े हो।नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम बहुत दूर चले गये हो। बागवान खेवैया मिला है ना।उस पार ले जाने। वह है फूलों का बगीचा।वही तुमको याद है। अभी बाकी थोड़ा टाइम इस ही लाईफ में हमको मंजिल पर पहुंचना है।(21 जन्म सुखधाम की बादशाही। अभी स्वर्ग ही तुमको है।याद भी यही रखना है। भल शरीर निर्वाह लिये भी करना है। 8वर्ष कोई बड़ी बात थोड़ेही है।सारी खत्म हो जानी है।नई दुनिया के लिये हम पुरुषार्थ कर रहे हैं।यह सिवाय तुम ब्राहमण के और कोई की बुधि में नहीं होगा।ब्राहमणों की है चोटी फिर देवता बनते हो। फिर वैश्य शुद्र। अभी शुद्रों का अन्त तुम ब्राहमणों का शुरु है।नई दुनिया कहा जाये तो यह है चोटी ब्राहमणों की)पहले ब्राहमण फिर देवता बनते हैं। बाप ब्राहमण बनाकर फिर हमको देवता बनाते हैं। 84 का राज भी अच्छा समझाया है।यह चक्र है। तुम हो ब्राहमण बाबा ऊपर में है।तुमको ऐसे फिराते हैं। तुम जानते हो हम सो ब्राहमण हैं। फिर हम सो देवता फिर हम क्षत्री हम सो वैश्य फिर हम सो शुद्र बने।यहां तुम बैठे हो स्वदर्शनचक्रधारी तुम हो।यहज्ञान न शुद्रों को है न देवताओं को तो यह ज्ञान तुम ब्राहमणों को ही है। तो तुम ऊंच ठहरे ना।सिर्फ स्मृति चाहिए अभी ब्राहमण हैं फिर कल हम नई दुनिया के मालिक बनेंगे। 84 का चक्र पूरा हुआ हम जाते हैं घर। यह चोला है।तुम्हारी बुधि सारी दुनिया से निराली है।स्वदर्शनचक्रधारी कौन बनाते हैं।तुम्हारी कितनी ऊंच इतनी कमाई और कोई कर न सके। बाप ऊंच ते ऊंचभगवान पढ़ाते हैं। तो जरुर हम ऊंच ते ऊंच बनेंगे इसमें मुंझने की दरकार नहीं।सिर्फ स्मृति लाकर याद करना है।स्वदर्शनचक्र फिराना है।धंधा आदि भले सिर्फ ममत्व नहीं।लाखों को करोड़ बनाना है फालतू क्यों सभी खत्म हो जानी है।दुनिया ही पुरानी है। वस्तु बड़े ही शौक से रखते हैं।(तुम जानते हो सबसे पुराना शिव का लिंग है।उन से पुराना क्या होगा दुनिया में यह ल0ना0 थे।5000वर्ष हुये। इन से पुरानी चीज तो कोई हो न सके।ड्रामा को लाखों वर्ष देते। तो चीजे भी लाखों वर्ष की होनी चाहिए। फिर जो देखते हैं कह देते हैं लाखों वर्ष की पुरानी है। जानते हो 5000वर्ष से पुरानी चीज कोई है नहीं।पुराने ते पुराने सिक्के रामचन्द्र के मिलेंगे।ल0ना0 के राज्य का भी सिक्का मिल नहीं सकता। समझा जाता है सिक्कों आदि का क्या दाम होगा।पाई से भी कम दाम होगा फर्क देखो कितना है।मनुष्यों की बुधि में क्या रहता है)तुम्हारी बुधि में क्या रहता है।अभी टाईम है थोड़ा।उस में कर्मातीत अवस्था को पाना है। तो फिर सभी कर्म ईन्द्रियां वस हो जावेंगी।सतयुग में वे क्रिमनल आई नहीं होती।शैतानी की बात नहीं।रावण राज्य में क्रिमनल दृष्टि हो जाती है। वहां तो खराब हो ही नहीं सकता।सारी दुनिया से तुम्हारी पढ़ाई न्यारी है।भगवानुवाच: मैं राजयोग सिखाये राजाओं का राजा बनाता हूं।तुमको अविनाशी राजाई मिलती है जो चलती रहेगी। फिर दान-पुण्य अनुसार पाते रहेंगे। बच्चों को सारी हिस्ट्री का मालूम है। तुम्हारी बुधि में क्या है मनुष्यों की बुधि में देखो क्या

 जानते हो अभी चक्र फिरता है जरुर। कलियुग से फिर सतयुग होगा। अभी होती है लड़ाई।इनका नाम हुआ है पुरुषोत्तम संगम युग।जिसको नमस्ते करते थे। कल वह हमको बनाना है। अब हम इनको भी

गुढेंगे। अभी कोई गिनतीकरे तो कर सकते हैं। शायद बाबा बता भी दें कि कितने हैं। अभी तो बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत गुह्य2 पाइन्टस सुनाता हूँ। शुरू के और अभी की समझानी में कितना फर्क पड़ [redacted] में टाईम लगता है ना। फट से कोई आई0 सी0 एस0 नहीं बन जावेगा। नम्बरवार पढ़ाई होती है। [redacted] सहज कर समझाते हैं। तो मनुष्यों की बुधि में सहज रीति बैठ सके। पहले और अब की समझानी में कितना फर्क है। दिन प्रति दिन नये2 पायन्टस समझाते रहते हैं। अब बाप कहते हैं मुझ पतित पावन बाप को बुलाते हैं, मैं आया हूँ तो तुम पावन बनो ना। अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। तो तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। सतोप्रधान जरूर बनना है। फिर यहां आना पड़ेगा पार्ट बजाने। बाप कहते हैं आत्मा पतित बनी इसलिये पतित-पावन बाप को याद करती है पावन बनने लिये। कितना वन्डर है। इतनी छोटी सी आत्मा कितना पार्ट बजाती है। इसको कुदरत कहा जाता। उनको देखा नहीं जा सकता। कोई कहते हैं हम परमात्मा का सा0 करें। बाप कहते हैं इतनी छोटी बिन्दी का तुम सा0 क्या करेंगे। आत्मा को भी कोई आँखों से देख नहीं सकते हैं। बुधि से जानते हैं। मैं आत्मा इस शरीर में हूँ। मैं बिल्कुल छोटी बिन्दी हूँ। जानने लायक हूँ। बाकी देखना तो मुश्किल है। आत्मा को यह सभी कर्म-इन्द्रियां मिली हुई हैं पार्ट बजाने लिये। जितना पार्ट बजाते हैं यह वन्डर है ना। कब भी आत्मा घिसती नहीं। यह है अविनाशी। ड्रामा भी अविनाशी बना बना है। कब बना, यह पूछ नहीं सकते। इन्हों को अनादि कहा जाता है। मनुष्यों से पूछो रावण को कब से जलाते आये हो, शास्त्र कब से पढ़ते आये हो, तो कह देते अनादि। पता नहीं। मुंझे हुये हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप बैठ समझाते हैं ह् वह जैसे बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम जानते हो हम बिल्कुल ही बेसमझ थे। फिर बेहद की समझ आ गई है। वह होती है हद की पढ़ाई। यह है बेहद की। आधा कल्प है दिन आधा कल्प है रात। 21 जन्म तुम रिंचक भी दुःख नहीं पाते हो। कहते हैं ना तुम्हारा बाल भी बांका न हो। कोई दुःख दे न सके। नाम ही है सुखधाम। यहां तो सुख है नहीं। मूल बात है प्रेक्टीस की। कैरेक्टर्स अच्छी चाहिए।

बच्चों को हरेक बात क्लीयर कर समझाई जाती है। नुकसान और फायदा होता है ना। अभी तो बाप कहते हैं फायदे की बात ही छूटी। अभी तो नुकसान ही नुकसान होने का है। विनाश का समय आ जाता है, फिर देखो क्या होता है। बरसात नहीं पड़ती तो तो अनाज की कितनी महंगाई हो जाती है। भल कितना भी कहते हैं 3 वर्ष बाद बहुत अनाज होगा फिर भी अनाज बाहर से मंगाते रहते हैं। बटाक मारते रहते हैं। ऐसा समय आना है एक दाना भी न मिलेगा। इतनी आपदाएं आनी है। उनको ईश्वरीय आपदाएं कहते हैं। बरसात न पड़ती तो अकाल जरूर पड़ेगा। सभी तत्व आदि भी बिगरने वाले हैं। जगह2 तो बरसात नुकसान भी कर देती है। कुदरती आपदाएं भी कम नहीं हैं। तुम बच्चे समझते हो बाप आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। तुम्हारी एमआबजेक्ट है यह। फिर से तुमको नर से ना0 बनाते हैं। यह है बेहद का पाठ बेहद का बाप ही पढ़ाते हैं। जो जैसा पढ़ेगा वैसा पद पावेगा। बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं। पुरुषार्थ कम करेंगे तो पद भी कम पावेंगे। टीचर तो स्टुडन्ट को समझावेंगे ना। दूसरे को जब आप समान बनाते हैं तब मालूम पड़ता है यह अच्छी पढ़ते और फिर पढ़ाते हैं। मूल है ही याद की यात्रा। सिर पर पापों का बोझा बहुत है। मुझे याद करो तो पाप भस्म हो। यह है रूहानी यात्रा। छोटे बच्चों को भी यह सिखाओ कि शिव बाबा को याद करो। उनका भी हक है। यह नहीं समझेंगे कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। न शिव बाबा सिर्फ याद करेंगे। मेहनत करने से उन्हों का भी कल्याण हो सकता है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

हलो सर्वसेन्टर निवासी ब्राह्मण कुल भूषणों प्रति हम सभी मधुबन निवासियों का याद प्यार प्यारे बाप दादा सहित बहुत बहुत स्वीकार करना जी। अच्छा विदाई। (222)

-: शिव बाबा याद है :-

13.9.68   13.9.68   (४८)

2

देवता बनते हो हम यह बनने लिये पुरुषार्थ कर रहे हैं। ऐसे2 बातें सुमिरण करने से खुशी होगी। वहां तो कुबेर के खजाने ही रहते हो। तो अभी हीरे जैसा जीवन तुम बना रहे हो। और मनुष्य तो कौड़ियां भी नहीं कमाते उनका पैसा मिट्टी में मिल जावेगा। इसलिये कहा जाता है वथ नाट अपेनी। तुम वर्थ पाउन्ड बनते हो। भारत पाउन्ड था ना। अभी वथ अपेनी बना है। तुम कितने सालवेन्ट बनते हो। यह स्मृति में हो तो भी कितनी खुशी रहे। अति इन्द्रिय सुख में कई बिमारियां आदि भी छूटती जाती हैं। (समझते हैं पुराने रावण राज्य में कितने दुःखी हैं। फिर हम अपने राज्य में जावेंगे। बाप आये हैं हमको रामराज्य में ले जाने। तुम पूरे 84 जन्म लेते हो। यही सिमरण करो। अभी तुम पढ़ाई पढ़ रहे हो। भग भगवान पढ़ाते हैं। भगवानुवाच एक गीता में ही है। और कोई शास्त्रों में है नहीं। तुम सुनते आये हो झूठ 2 अभी बाप सच्च2 कहते हैं मैं तुमको पढ़ा रहा हूं। वह सभी शास्त्र जन्म-जन्मान्तर सुनते आये हो। वही गीता भगवान ने गाई थी। उनको लाखों वर्ष दे दिये। अभी तुम समझते हो भगवान तो हर 5000 बर्ष बाद हमको पढ़ाते हैं। वर्ल्ड आलमाईटी अथार्टी पढ़ाते हैं। तुम भी बनते हो। यह सारी दुनिया के मालिक थे। अभी तो देखो टूकड़े लिये, पानी लिये, अनाज लिये लड़ते रहते हैं। अलग2 टूकड़े हो जाने से दुश्मन भी बन गये हैं। लड़ाई लगनी भी है। खून का नदियां भी बहना है। पिछाड़ी में लड़ाई इन्हों की लगनी ही है। दोनो को हथियार मिलते रहते हैं। अवह तो अपना धंधा करते रहते हैं। इन से आखरीन में क्या होगा सो तुम जानते हो। कोई लड़ाई लगनी न है। भगवान पढ़ाते हैं तो पढ़ना चाहिए ना। शैतान से तो नहीं पढ़ना चाहिए। भगवान और शैतान के पढ़ाने में कितना फर्क है। अच्छा फिर भी बाप कहते हैं मनमनाभव। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।)

(रात्रि क्लास) 16-9-68 :- बाप आकर सभी को बहुत मीठा बनाते हैं क्योंकि बाप प्यार का सागर है तो मीठे2 प्यारे ते प्यारे बातें सुनाते हैं। जैसे कहा जाता है ना यथा राजा-रानी .... सतयुग में तो बहुत मीठे होते हैं। इतने मीठे हो गये हैं अभी तक उन्हों को प्यार से पूजते हैं। गोद में लेते हैं) राजकुमार सो फिर महाराजा बनते होंगे। वहां कब भी देहाभिमान आदि नहीं होता। कोई भी ध्यान में नहीं। मूल कारण है हो पवित्रता। वहां रावण ही नहीं तो देहाभिमान वहां होते ही नहीं। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा सतयुग त्रेता में रावण होता ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझदार बन रहे हो। पुरुषार्थ कर रहे हो। परिस्तान के लायक बनने। और कोई परियां हो नहीं सकती। हर प्रकार की खुशी धन-दौलत ब्युटी वहां होती है। और बहुत समय के लिये है। सन्यासी यहां के लिये कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। वहां की भेंट में यहां अल्प काल क्षणभंगूर सुख है। कोई मरता है तो कितने वर्षों तक तक उनकी याद में दुःखी होते हैं। वहां तो दुःख की बात ही नहीं। बच्चे समझते हैं इनका राज्य बाप ही स्थापन करते हैं। सो अब कर रहे हैं। बच्चे जानते हैं राज्य स्थापन हो रहा है। यह है आसुरी दुनिया। देवताएं कब लड़ते नहीं। अभी तुम ब्राह्मणों की है माया के साथ लड़ाई। वहां तो रोना आदि होता नहीं। जो रोयेंगे वह कम पद पावेंगे। जिन रोया तिन खोया खोया। मान उंच पद खोया। बेहद के बापसे इतना वरसा लेते हो। जब कि बेहद के बाप के बने हैं तो उनको मत पर अगर ठीक से चलेंगे तो उंच पद पावेंगे। अज्ञान काल में बहुत धन दान करते हैं तो राजा के घर जन्म लेते हैं। यह भी अल्पकाल का सुख होता है। इसलिये इस समय के लिये कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। बहुत दुःख है तो उनमें सुख थोड़ा है। काग विष्टा समान। इसलिये खबरदार रहना पड़ता है। हम से कोई उल्टा काम तो नहीं होता। बाप बच्चों को सुख का वरसा देते हैं तो बच्चों को भी कहेंगे तुम अपने भाई भाईयों को सुख का वरसा दो। सिर्फ कल्प की आयु लम्बी कर देने से मनुष्यों को मुंझ होता है। ... हाना ... है। ...

(४८)

13.9.68 3

हो। बाबा भी लिखते हैं सिर्फ यह समझाओ पवित्रता बिगर मनुष्य का कैरेक्टर्स सुधरता नहीं। अभी तुम पर जीत पहन रहे हो। वहां तो रावण-राज्य होता ही नहीं। जीत पाने से पद भी ऐसा मिलेगा। बच्चों को है पढ़ाई पर अटेन्शन देना। हम से कोई ऐसा अकर्त्तव्य कार्य न हो जो हमारे पद को धक्का लगे। जानते हो यहां पढ़करके फिर पढ़ाया जाता है। सभी को बेहद के बाप का परिचय देना है। बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। पावन दुनिया में सुख ही सुख है। रावण को जलाते भी हैं तो यह बुद्धि में नहीं है हम रावण राज्य के हैं। अभी तुम हो राम के सम्प्रदाय। सतयुग में रावण राम की बात होती ही नहीं। यहां दुःख में याद आता है रामराज्य भी बीत गया अभी रावणराज्य है। दिखाना चाहिए भगवान वाच तुम अभी इस रावण राज्य में आसुरी सम्प्रदाय हो। देवताएं रहते हैं स्वर्ग में, असुर रहते हैं नर्क में। को ही उठाना होता है। नालेज बहुत सहज है। इस समय तक बच्चे जो भी सर्विस कर रहे हैं कल्प2 यह होगा। ऐसे ही सर्विस होगी। देखने में आता है मजा समझाने में है। म्यूजियम में समझाना बहुत पड़ता है आगे चल ऐसी युक्ति रचेंगे जो बहुत छोकड़ें आदि न आवें। जास्ती हंगाम जहां-तहां स्टुडन्टस का ही होता है पत्थर मारने में देरी नहीं करते। और बहुत हानि होती है। तुम बच्चों को तो शान्ति स्थापन करनी है तुमको लिख देना चाहिए हम ब्रह्मा कुमार-कुमारियां जो गवर्मेन्ट वा सारी दुनिया विश्व में शान्ति चाहते हैं वह विश्व में शान्ति का राज्य हम स्थापन कर रहे हैं। तुम करते हो गुप्त। वह तो अभी तैयारी करते हैं। तुम सेना ही हो गुप्त। कोई को पता भी न पड़े कि यह कोई वारियर्स हैं। तुम्हारी लड़ाई का है। बाप कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो। बरा। बच्चे जानते हैं हम सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनने का है। बाप ने युक्ति बहुत अच्छी दी बाप को याद करने से शान्ति ही रहती है। मुख से कुछ भी बोलना नहीं होता। बाप है शान्ति का सागर, अशान्ति के सागर थे। फिर बाप अशान्ति के सागर से से इतने शान्त बनते हैं जो फिर 21 जन्म अशान्त अक्षर मुख से न निकलेगा। यह ड्रामा में पार्ट नूंधा हुआ है। शान्ति में बैठे2 क्लोरोफार्म चढ़कर शान्त हो है। जरा भी कोई प्रकार का दुःख नहीं होता। मनुष्य चाहे तो एक सेकण्ड में जा सकते हैं परन्तु शरीर होता है ना। किसको दुःख से छुड़ाना पुण्य का काम है ना। दुःखी है, बहुत रोगी है तो उनको ऐसे दुःख से छुड़ा देना चाहिए। आत्मा को बहुत तकलीफ है तो कुछ देकर मुक्त कर देना चाहिए तो जाकर दूसरा लेंगे। मनुष्य डूबते हैं या अपने को आग लगा देते हैं। बेहोश हो जाते हैं। अन्तकाल होने में फिर कुछ फील नहीं होता। वहां तो कोई भी दुःख होता नहीं। समय है थोड़ा। 6, 8 वर्ष। बिमार ही रहे इससे तो शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेवे ना। थोड़ा टाईम दुःखी ही रहे इससे क्या फायदा। बापरवाहीदिल है ना। जानते हैं अकाल पड़ेंगे। तो फिर दुःखी होंगे, झगड़ें आदि होंगे। पाकिस्तान में हर एक चीज बहुत सस्ती है। छोटा टूकड़ा है ना। अभी तो बच्चों को प्रैक्टीस करनी है जैसे कि हम इस दुनिया में हैं ही नहीं। आन्तिरीक खुशी रहनी चाहिए। बाबा तो समझाते हैं तुम्हारे लिये अभी स्वर्ग चलने का समय हो गया है। तो खुशी होगी। अच्छी रीति समझाना चाहिए। यह रावण राज्य है यह राम-राज्य। यहां तो अपरम्अपार दुःख है। वहां अपार सुख है। तुम पुरुषार्थ करते हो फिर भी समझते हो ड्रामा में जो नूंध है वही होता है। सतयुग से लेकर तुम पूरा पार्ट बजाते आये हो। फिर सतयुग में वही पार्ट शुरु होगा। वही मास, वही वर्ष, वही दिन सेकण्ड पास होते जाते हैं। आज कल करते यह समय आ गया है बाप के आने का। बाप ने ही आकर समझाया है। अभी मीठे2 बच्चों को इस पुरानी दुनिया से, रावण की दुनिया से छी छी दुनिया से वैराग्य आना चाहिए। भल समझते हो विलायत में जैसे नया स्वर्ग है परन्तु यह है पाम्प माया का। समझते हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। अचानक ही उन्हों का स्वर्ग आदि उड़ जायेगा। ...

(O) (O) (O) (C) विनाश की घोषणा

(२२४)

4-11-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप आया है तुम बच्चों को भक्ति तू आत्मा से ज्ञानी तू आत्मा बनाने, पतित से पावन बनाने"

प्रश्न:- ज्ञानवान बच्चे किस चिन्तन में सदा रहते हैं?

उत्तर:- मैं अविनाशी आत्मा हूँ, यह शरीर विनाशी है। मैंने 84 शरीर धारण किये हैं। अब यह अन्तिम जन्म है। आत्मा कभी छोटी-बड़ी नहीं होती है। शरीर ही छोटा बड़ा होता है। यह आंखें शरीर में हैं लेकिन इनसे देखने वाली मैं आत्मा हूँ। बाबा आत्माओं को ही ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। वह भी जब तक शरीर का आधार न लें तब तक पढ़ा नहीं सकते। ऐसा चिन्तन ज्ञानवान बच्चे सदा करते हैं।

ओम् शान्ति। यह किसने कहा? आत्मा ने। अविनाशी आत्मा ने कहा शरीर द्वारा। शरीर और आत्मा में कितना फर्क है। शरीर 5 तत्व का इतना बड़ा पुतला बन जाता है। भल छोटा भी है तो भी आत्मा से तो जरूर बड़ा है। पहले तो एकदम छोटा पिण्ड होता है, जब थोड़ा बड़ा होता है तब आत्मा प्रवेश करती है। बड़ा होते-होते फिर इतना बड़ा हो जाता है। आत्मा तो चैतन्य है ना। जब तक आत्मा प्रवेश न करे तब तक पुतला कोई काम का नहीं रहता है। कितना फर्क है। बोलने, चालने वाली भी आत्मा ही है। वह इतनी छोटी-सी बिन्दी ही है। वह कभी छोटी-बड़ी नहीं होती। विनाश को नहीं पाती। अब यह परम आत्मा बाप ने समझाया है कि मैं अविनाशी हूँ और यह शरीर विनाशी है। इनमें मैं प्रवेश कर पार्ट बजाता हूँ। यह बातें तुम अभी चिन्तन में लाते हो। आगे तो न आत्मा को जानते थे, न परमात्मा को जानते थे सिर्फ कहने मात्र कहते थे हे परमपिता परमात्मा। आत्मा भी समझते थे परन्तु फिर कोई ने कहा तुम परमात्मा हो। यह किसने बतलाया? इन भक्ति मार्ग के गुरुओं और शास्त्रों ने। सतयुग में तो कोई बतलायेंगे नहीं। अभी बाप ने समझाया है तुम मेरे बच्चे हो। आत्मा नेचुरल है शरीर अननैचुरल मिट्टी का बना हुआ है। जब आत्मा है तो बोलती चालती है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं को बाप आकर समझाते हैं। निराकार शिवबाबा इस संगमयुग पर ही इस शरीर द्वारा आकर सुनाते हैं। यह आंखे तो शरीर में रहती ही हैं। अभी बाप ज्ञान चक्षु देते हैं। आत्मा में ज्ञान नहीं है तो अज्ञान चक्षु है। बाप आते हैं तो आत्मा को ज्ञान चक्षु मिलते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है। आत्मा कर्म करती है शरीर द्वारा। अभी तुम समझते हो बाप ने यह शरीर धारण किया है। अपना भी राज़ बताते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बताते हैं। सारे नाटक का भी नॉलेज देते हैं। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। हाँ, नाटक जरूर है। सृष्टि का चक्र फिरता है। परन्तु कैसे फिरता है, यह कोई नहीं जानते हैं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान अभी तुमको मिलता है। बाकी तो सब है भक्ति। बाप ही आकर तुमको ज्ञानी तू आत्मा बनाते हैं। आगे तुम भक्ति तू आत्मा थे। तू आत्मा भक्ति करते थे। अभी तुम आत्मा ज्ञान सुनते हो। भक्ति को कहा जाता है अन्धियारा। ऐसे नहीं कहेंगे भक्ति से भगवान मिलता है। बाप ने समझाया है भक्ति का भी पार्ट है, ज्ञान का भी पार्ट है। तुम जानते हो हम भक्ति करते थे तो कोई सुख नहीं था। भक्ति करते धक्का खाते रहते थे। बाप को ढूँढते थे। अभी समझते हो यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि जो कुछ करते

थे, ढूँढ़ते-ढूँढ़ते धक्का खाते-खाते तंग हो जाते हैं। तमोप्रधान बन जाते हैं क्योंकि गिरना होता है ना। झूठे काम करना छी-छी होना होता है। पतित भी बन गये। ऐसे नहीं कि पावन होने के लिए भक्ति करते थे। भगवान से पावन बनने बिगर हम पावन दुनिया में जा नहीं सकेंगे। ऐसे नहीं कि पावन बनने बिगर भगवान से नहीं मिल सकते। भगवान को तो कहते हैं आकर पावन बनाओ। पतित ही भगवान से मिलते हैं पावन होने के लिए। पावन से तो भगवान मिलता नहीं। सतयुग में थोडेही इन लक्ष्मी-नारायण से भगवान मिलता है। भगवान आकरके तुम पतितों को पावन बनाते हैं और तुम यह शरीर छोड़ देते हो। पावन तो इस तमोप्रधान पतित सृष्टि में रह नहीं सकते। बाप तुमको पावन बनाकर गुम हो जाते हैं, उनका पार्ट ही ड्रामा में वन्डरफुल है। जैसे आत्मा देखने में आती नहीं है। भल साक्षात्कार होता है तो भी समझ न सकें। और तो सबको समझ सकते हैं यह फलाना है, यह फलाना है। याद करते हैं। चाहते हैं फलाने का चैतन्य में साक्षात्कार हो और तो कोई मतलब नहीं। अच्छा, चैतन्य में देखते हो फिर क्या? साक्षात्कार हुआ फिर तो गुम हो जायेगा। अल्पकाल क्षण भंगुर सुख की आश पूरी होगी। उसको कहा ज़ायेगा अल्पकाल क्षण भंगुर सुख। साक्षात्कार की चाहना थी वह मिला। बस यहाँ तो मूल बात है पतित से पावन बनने की। पावन बनेंगे तो देवता बन जायेंगे अर्थात् स्वर्ग में चले जायेंगे।

शास्त्रों में तो कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है। समझते हैं कलियुग में अजुन 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। बाबा तो समझाते हैं सारा कल्प ही 5 हज़ार वर्ष का है। तो मनुष्य अन्धियारे में हैं ना। उसको कहा जाता है घोर अन्धियारा। ज्ञान कोई में है नहीं। वह सब है भक्ति। रावण जब से आता है तो भक्ति भी उनके साथ है और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान है। बाप से एक ही बार ज्ञान का वर्सा मिलता है। घड़ी-घड़ी नहीं मिल सकता। वहाँ तो तुम कोई को ज्ञान देते नहीं। दरकार ही नहीं। ज्ञान उनको मिलता है जो अज्ञान में हैं। बाप को कोई भी जानते ही नहीं। बाप को गाली देने बिगर कोई बात ही नहीं करते। यह भी तुम बच्चे अभी समझते हो। तुम कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है, वह हम आत्माओं का बाप है और वह कहते कि नहीं परमात्मा ठिक्कर-भित्तर में है। तुम बच्चों ने अच्छी तरह समझा है - भक्ति बिल्कुल अलग चीज है, उनमें जरा भी ज्ञान नहीं होता। समय ही सारा बदल जाता है। भगवान का भी नाम बदल जाता है फिर मनुष्यों का भी नाम बदल जाता है। पहले कहा जाता है देवता फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। वह दैवी गुणों वाले मनुष्य हैं। और यह हैं आसुरी गुणों वाले मनुष्य। बिल्कुल छी-छी हैं। गुरु नानक ने भी कहा है अशंख चोर...... मनुष्य कोई ऐसा कहे तो उनको झट कहेंगे तुम यह क्या गाली देते हो। परन्तु बाप कहते हैं यह सब आसुरी सम्प्रदाय हैं। तुमको क्लीयर कर समझाते हैं। वह रावण सम्प्रदाय वह राम सम्प्रदाय। गांधी जी भी कहते थे हमको रामराज्य चाहिए। यह नहीं समझते थे हम पतित हैं, कुछ भी नहीं। अभी तुम देखते हो रावण राज्य में क्या-क्या है। रावण राज्य में हैं सब विकारी। रामराज्य में हैं निर्विकारी इनका नाम ही है वेश्यालय। रौरव नर्क है ना। इस समय के मनुष्य विषय वैतरणी नदी में पड़े हैं। मनुष्य जानवर आदि सब एक समान हैं। मनुष्य की कोई भी महिमा नहीं है। 5 विकारों पर तुम बच्चे जीत पहन मनुष्य से देवता पद पाते हो बाकी सब खत्म हो जाते हैं। देवतायें सतयुग में रहते थे। अभी इस कलियुग में असुर रहते हैं। असुरों की निशानी क्या है?

5 विकार। देवताओं को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी और असुरों को कहा जाता है सम्पूर्ण विकारी। वह हैं 16 कला सम्पूर्ण और यहाँ नो कला। सबकी कला क़ाया चट हो गई है। अब यह बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। बाप आते भी हैं पुरानी आसुरी दुनिया को चेन्ज करने। रावण राज्य वेश्यालय को शिवालय बनाते हैं। उन्हों ने तो यहाँ ही नाम रख दिये त्रिमूर्ति हाउस, त्रिमूर्ति रोड... आगे थोड़ेही यह नाम थे। अब होना क्या चाहिए? यह सारी दुनिया किसकी है? परमात्मा की है ना। परमात्मा की दुनिया है जो आधाक़ल्प पवित्र, आधाकल्प अपवित्र रहती है। क्रियेटर तो बाप को कहा जाता है ना। तो उनकी ही यह दुनिया हुई ना। बाप समझाते हैं मैं ही मालिक हूँ। मैं बीजरुप, चैतन्य, ज्ञान का सागर हूँ। मेरे में सारा ज्ञान है और कोई में नहीं। तुम समझ सकते हो इस सृष्टि चक्र के आदि, मध्य, अन्त की नॉलेज बाप में ही है। बाकी तो सब हैं गपोड़े। मुख्य गपोड़ा बहुत खराब है, जिसके लिए बाप उल्हना देते हैं। तुम मुझे ठिक्कर-भित्तर कुत्ते बिल्ली में समझ बैठे हो। तुम्हारी क्या दुर्दशा हो गई है।

नई दुनिया के मनुष्यों और पुरानी दुनिया के मनुष्यों में रात दिन का फर्क है। आधाकल्प से लेकर अपवित्र मनुष्य, पवित्र देवताओं को माथा टेकते हैं। यह भी बच्चों को समझाया है पहले-पहले पूजा होती हैं शिवबाबा की। जो शिवबाबा ही तुमको पुजारी से पूज्य बनाते हैं। रावण तुमको पूज्य से पुजारी बनाते हैं। फिर बाप ड्रामा प्लैन अनुसार तुमको पूज्य बनाते हैं। रावण आदि यह सब नाम तो हैं ना। रावण जब बनाते हैं तो कितने मनुष्यों को बाहर से बुलाते हैं। परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। देवताओं की कितनी निंदा करते हैं। ऐसी बातें तो बिल्कुल हैं नहीं। जैसे कहते हैं ईश्वर नाम-रुप से न्यारा है अर्थात् नहीं है। वैसे यह जो कुछ खेल आदि बनाते हैं वह कुछ भी है नहीं। यह सब हैं मनुष्यों की बुद्धि। मनुष्य मत को आसुरी मत कहा जाता है। यथा राजा-रानी तथा प्रजा। सब ऐसे बन जाते हैं। उनको कहा ही जाता है डेविल वर्ल्ड। सब एक-दो को गाली देते रहते हैं। तो बाप समझाते हैं—बच्चे, जब बैठते हो तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अज्ञान में थे तो परमात्मा को ऊपर में समझते थे। अभी तो जानते हो बाप यहाँ आया हुआ है तो तुम ऊपर में नहीं समझते हो। तुमने बाप को यहाँ बुलाया है, इस तन में। तुम जब अपने-अपने सेन्टर्स पर बैठते हो तो समझेंगे शिवबाबा मधुबन में इनके तन में हैं। भक्ति मार्ग में तो परमात्मा को ऊपर में मानते थे। हे भगवान..... अभी तुम बाप को कहाँ याद करते हो? क्या बैठकर करते हो? तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो जरुर यहाँ याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहाँ आया हुआ है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर। बाप कहते हैं तुमको इतना ऊंच बनाने में यहाँ आया हूँ। तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे। भक्त ऊपर में याद करेंगे। तुम भल विलायत में होंगे तो भी कहेंगे ब्रह्मा के तन में शिवबाबा है। तन तो जरुर चाहिए ना। कहाँ भी तुम बैठे होंगे तो जरुर यहाँ याद करेंगे। ब्रह्मा के तन में ही याद करना पड़े। कई बुद्धिहीन ब्रह्मा को नहीं मानते हैं। बाबा ऐसे नहीं कहते ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा। बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो इसलिए तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है, इनकी अपनी आत्मा है। शिवबाबा को तो अपना शरीर नहीं है। बाप ने कहा है मैं इस प्रकृति का आधार लेता हूँ। बाप बैठ सारे ब्रह्माण्ड और सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का राज़ समझाते हैं और कोई ब्रह्माण्ड को जानते ही नहीं। ब्रह्म जिसमें हम और तुम रहते हो,

सुप्रीम बाप, नानसुप्रीम आत्मायें रहने वाली उस ब्रह्म लोक शान्तिधाम की हैं। शान्तिधाम बहुत मीठा नाम है। यह सब बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। हम असुल के रहवासी ब्रह्म महतत्व के हैं। जिसको निर्वाणधाम, वानप्रस्थ कहा जाता है। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में है। जब भक्ति है तो ज्ञान का अक्षर नहीं। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग जबकि चेन्ज होती है। पुरानी दुनिया में असुर रहते हैं, नई दुनिया में देवतायें रहते हैं तो उनको चेन्ज करने लिए बाप को आना पड़ता है। सतयुग मे तुमको कुछ भी पता नहीं रहेगा। अभी तुम कलियुग में हो तो भी कुछ पता नहीं है। जब नई दुनिया में होंगे तो भी इस पुरानी दुनिया का कुछ पता नहीं होगा। अभी पुरानी दुनिया में हो तो नई का मालूम नहीं है। नई दुनिया कब थी, पता नहीं। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस संगमयुग पर ही कल्प-कल्प आते हैं, आकर इस वैराइटी झाड़ का राज़ समझाते हैं और यह चक्र कैसे फिरता है वह भी तुम बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारा धन्धा ही है यह समझाने का। अब एक-एक को समझाने से तो बहुत टाइम लग जाए। इसलिए अभी तुम बहुतों को समझाते हो। बहुत समझते हैं। यह मीठी-मीठी बातें फिर बहुतों को समझानी हैं। तुम प्रदर्शनी आदि में समझाते हो ना अब शिव जयन्ती पर और भी अच्छी रीति बहुतों को बुलाकर समझाना है। खेल की ड्युरेशन कितनी है। तुम तो एक्यूरेट बतायेंगे। यह टॉपिक्स हुई। हम भी यह समझायेंगे। तुमको बाप समझाते हैं ना--जिससे तुम देवता बन जाते हो। जैसे तुम समझकर देवता बनते हो वैसे औरों को भी बनाते हो। बाप ने हमको यह समझाया है। हम किसकी ग्लानि आदि नहीं करते हैं। हम बतलाते हैं ज्ञान को सद्गति मार्ग कहा जाता है, एक सतगुरु ही है पार करने वाला। ऐसी-ऐसी मुख्य प्वाइंट्स निकालकर समझाओ। यह सारा ज्ञान बाप के सिवाए कोई दे नहीं सकता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. पुजारी से पूज्य बनने के लिए सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। ज्ञानवान बन स्वयं को स्वयं ही चेंज करना है। अल्पकाल सुख के पीछे नहीं जाना है।

२. बाप और दादा दोनों को ही याद करना है। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा याद आ नहीं सकता। भक्ति में ऊपर याद किया, अभी ब्रह्मा तन में आया है तो दोनों ही याद आने चाहिए।

वरदान:- दीपमाला पर यथार्थ विधि से अपने दैवी पद का आह्वान करने वाले पूज्य आत्मा भव

दीपमाला पर पहले लोग विधिपूर्वक दीपक जगाते थे, दीपक बुझे नहीं यह ध्यान रखते थे, घृत डालते थे, विधिपूर्वक आह्वान के अभ्यास में रहते थे। अभी तो दीपक के बजाए बल्ब जगा देते हैं। दीपमाला नहीं मनाते अब तो मनोरंजन हो गया है। आह्वान की विधि अथवा साधना समाप्त हो गई है। स्नेह समाप्त हो सिर्फ स्वार्थ रह गया है इसलिए यथार्थ दाता रूपधारी लक्ष्मी किसी के पास आती नहीं। लेकिन आप सभी यथार्थ विधि से अपने दैवी पद का आह्वान करते हो इसलिए स्वयं पूज्य देवी-देवता बन जाते हो।

स्लोगन:-

सदा बेहद की वृत्ति, दृष्टि और स्थिति हो तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

16.10.84 प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे- तुम सबको आपस में एक मत है, तुम अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करते हो तो सब भूत भाग जाते है"

प्रश्नः- पदमापदम भाग्यशाली बनने का मुख्य आधार क्या है? उत्तरः- (जो बाबा सुनाते है, वह एक2बात को धारण करने वाले ही पदमापदम भाग्यशाली बनते हैं। जज करो बाबा क्या कहते है और रावण सम्प्रदाय वाले क्या कहते है। बाप जो नालेज देते है उसे बुद्धि में रखना, स्वदर्शन चक्रधारी बनना ही पदमापदम भाग्यशाली बनना है। इस नालेज से ही तुम गुणवान बन जाते हो।) (१)

ओमशान्ति। रूहानी भाषा, अंग्रेजी में कहा जाता है स्प्रीचुअल पाठशाला। सतयुग में जब तुम होंगे तो वहाँ इंगलिश आदि दूसरी कोई भाषा तो होगी नहीं। तुम जानते हो सतयुग में हमारा राज्य होता है। उसमें हमारी जो भाषा होगी वही चलेगी। फिर बाद में वह भाषा बदलती जाती है। अनेकानेक भाषायें है। जैसा2राजा वैसे2उनकी भाषा चलती है। अब यह तो सब बच्चे जानते है। हर सेन्टर पर भी जो बच्चे है, उनकी है एक मत। अपने को आत्मा समझना है और एक बाप को याद करना है। ताकि भूत सब भाग जायें। बाप है पतित पावन। 5भूतों की भी प्रवेशता है। आत्मा में ही भूतों की प्रवेशता होती है। फिर इन भूतों अथवा विकारों का नाम भी लगाया जाता है। देह अभिमान काम क्रोध आदि। ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी ईश्वर है। अब भी कोई कहे सर्वव्यापी ईश्वर है तो कहो सर्वव्यापी आत्मायें है और सब आत्माओं में 5विकार सर्वव्यापी है। बाकी ऐसे नहीं कि परमात्मा सर्व में विराजमान है। परमात्मा में फिर 5भूतों की प्रवेशता कैसे होगी। एक2बात को अच्छी रीति धारण करने से तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। दुनिया वाले रावण सम्प्रदाय क्या कहते है और आप क्या कहते है। अब जज करो हरेक के शरीर में आत्मा है। उस आत्मा में 5विकार प्रवेश है। शरीर में नहीं आत्मा में 5विकार अथवा भूत प्रवेश होते है। सतयुग में यह भूत होते नहीं। यह है ही भूतों की दुनिया। वह है देवी देवताओं की दुनिया। उनमें कोई भूत नहीं है। कहते भी है डीटी वर्ल्ड। यह है डेविल वर्ल्ड। डेविल कहा जाता है असुर को। कितना दिन और रात का फर्क है। अभी तुम चेन्ज होते हो। वहाँ तुम्हारे में कोई भी विकार, कोई अवगुण नहीं रहता। तुम्हारे में सम्पूर्ण गुण होते है। तुम 16कला सम्पूर्ण बनते हो। पहले थे फिर नीचे उतरते हो। इस चक्र का अभी मालूम पड़ा है। 84का चक्र कैसे फिरता है। हम आत्मा को स्वदर्शन हुआ है अर्थात इस चक्र का नालेज हुआ। उठते बैठते चलते तुमको यह नालेज बुद्धि में रखना है। बाप नालेज पढ़ाते है। यह रूहानी नालेज बाप भारत में ही आकर देते है। कहते है ना, हमारा भारत। वास्तव में हिन्दुस्तान कहना तो रांग है। तुम जानते हो भारत जब स्वर्ग था तो सिर्फ हमारा ही राज्य था। और कोई धर्म नहीं था। न्यु वर्ल्ड थी। न्यु देहली कहते है ना। देहली का नाम असुल देहली नहीं था। परिस्तान कहते थे। अभी तो नई देहली और पुरानी देहली कहते है फिर न पुरानी न नई देहली होगी। परिस्तान कहा जायेगा। देहली को कैपिटल कहते है। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा। और कुछ भी नहीं होगा। हमारा ही राज्य होगा। अभी तो राज्य नहीं है। इसलिए सिर्फ कहते हैं हमारा भारत। ...राजाये तो है नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान चक्र लगाता है। बरोबर इस दिल्ली में पहले2देवी देवताओं का राज्य था। और किसका राज्य नहीं था। जमुना का किनारा था। उनको परिस्तान कहा जाता था। देवताओं की कैपीटल देहली ही रही है। तो अभी ... होता है। सबसे बड़ा भी है। एकदम सेन्टर (बीच) है। तो मीठे2बच्चे जानते है आप तो कहाँ हैं ... पाप आत्मा बन गये है। सतयुग में होते है पुण्य आत्मायें। बाप ही आकर पावन बनाते है। जिसको तुम शिव जयन्ती भी मनाते हो। अब जयन्ती अक्षर तो सबसे लगता है। इनको फिर शिव रात्रि कहते है। रात्रि का अर्थ तो तुम्हारे सिवाए और कोई समझ न सके। बच्चे2विद्वान आदि कोई भी नहीं जानते कि शिवरात्रि क्या है। तो समझाते क्या। बाप ने समझाया है रात्रि का अर्थ क्या है। यह जो 5हजार वर्ष का चक्र है उसमें सुख और दुःख का खेल है। उसको कहा जाता है दिन। इनको कहा जाता है रात। तो [illegible] और रात के

बीच में आता है संगम। आधाकल्प है सोझरा। आधाकल्प है अन्धियारा। भक्ति में तो बहुत तीक2चलती है। यहाँ है सेकण्ड की बात। बिल्कुल इजी है सहज योग। तुमको पहले जाना है मुक्तिधाम। फिर तुम जीवनमुक्ति और जीवन बन्ध में कितना समय रहे हो। यह तो तुम बच्चों को याद है फिर भी घड़ी2भूल जाते हो। बाप समझाते हैं योग अक्षर है ठीक। परन्तु उन्हों का है जिस्मानी योग। यह है आत्माओं का। सन्यासी लोग अनेक प्रकार के हठयोग आदि सिखाते हैं। तो मनुष्य मूंझते हैं तुम बच्चों का बाप भी है तो टीचर भी है। तो उनसे योग लगाना पड़े ना। टीचर से पढ़ना होता है। बच्चा जन्म लेता है तो पहले बाप से योग होता है। फिर 5वर्ष के बाद टीचर से योग लगाना पड़ता है। फिर वानप्रस्थ अवस्था में गुरू

(b) से योग लगाना पड़ता है। तीन मुख्य याद रहते हैं। वह तो अलग2होते हैं यहाँ यह एक ही (b)

बा: बाप आकर बाप भी बनते हैं टीचर भी बनते हैं। वन्डरफुल है ना। ऐसे बाप को तो जरू याद करना चाहिए। जन्म जन्मान्तर तीन को अलग2याद करते आये हो। सतयुग में भी बा: से योग होता है फिर टीचर से होता है। पढ़ने तो जाते हैं ना। बाकी गुरू की दरकार नहीं रहती। क्योंकि सब सद्गति में है। यह सब बातें याद करने में क्या तकलीफ है? बिल्कुल सहज है। इनको कहा जाता है सहज योग। परन्तु यह है अनकामन। बाप कहते हैं मैं यह टैम्प्रेरी लोन लेता हूँ। सो भी कितना थोड़ा समय लेता हूँ। 60वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती (c)

(c) है। कहते हैं साठ लगी लाठ। इस समय सबको लाठी लगी हुई है। सब वानप्रस्थ निर्वाणधाम में जायेंगे। वह है स्वीट होम। स्वीटेस्ट होम। उनके लिए ही कितनी अथाह भक्ति की है। भी चक्र फिरकर आये हो। मनुष्य को यह कुछ भी पता नहीं। ऐसे ही गपोड़ा लगा दिया है कि लाखों वर्ष का चक्र है। लाखों वर्ष की तो बात हो तो फिर रेस्ट मिल न सके। रेस्ट मिलना ही मुश्किल हो जाए। तुमको रेस्ट मिलनी है। उसको कहा जाता है साइलेन्स इनकारपोरियल वर्ल्ड। यह है स्थूल स्वीट होम। वह है मूल स्वीट होम। आत्मा बिल्कुल छोटी राकेट है। इनसे तीखा भागने वाला कोई होता नहीं। यह तो सबसे तीखा है। एक सेकण्ड में शरीर छूटा और यह भागा। दूसरा शरीर तो तैयार रहता है। ड्रामा अनुसार पूरे टाइम पर उनको जाना ही है। ड्रामा कितना एक्यूरेट है। इनमें कोई इनएक्यूरेसी है नहीं। यह तुम (d)

(d) जानते हो। बाप भी ड्रामा अनुसार बिल्कुल एक्यूरेट टाइम पर आता है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है। जब नालेज देते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं। शिव रात्रि भी मनाते हैं ना। मैं शिव कब कैसे आता हूँ। वह तुमको तो पता नहीं है। शिव रात्रि, कृष्ण रात्रि मनाते हैं। राम की नहीं मनाते। क्योंकि फर्क पड़ गया ना। शिव रात्रि के साथ कृष्ण की भी रात्रि मना देते हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्रों ने कितना झूठा कर दिया है। माँ बाप गीता झूठी तो सब रचना झूठी। वहाँ है ही सच यहाँ है ही आसुरी रावण राज्य। तो यह समझने की बातें हैं। यह तो है बाबा। बूढ़े को बाबा कहेंगे। छोटे बच्चे को बाबा थोड़ेही कहेंगे। कोई2लव से भी बच्चे को बाबा कह देते हैं। तो उन्हों ने भी कृष्ण को लव से कह दिया है। बाबा तो तब कहा जाता है जब बड़े हो और फिर बच्चे पैदा करते हो। कृष्ण खुद ही प्रिन्स उनको बच्चे कहाँ से आये। बाप कहते ही हैं मैं

(e) बुजुर्ग के तन में आता हूँ। शास्त्रों में भी है। परन्तु शास्त्र कीसब बातें एक्यूरेट नहीं होती (e)

कोई2बात ठीक है। ब्रह्मा की आयु माना प्रजापिता ब्रह्मा की आयु कहेंगे। वह तो जरूर इस समय होगा। ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में खत्म होगी। यह कोई अमरलोक नहीं है। इनको कहा जाता है पुरूषोत्तम संगमयुग। यह सिवाए तुम बच्चों के और कोई की बुद्धि में नहीं हो सकता। बाप बैठ बताते हैं मीठे2बच्चों तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। हम बतलाते हैं। कि तुम 84जन्म लेते हो। कैसे सो भी तुमको पता पड़ गया है। हरेक युग की आयु 1250 वर्ष है। और इतने2जन्म लिए हैं। 84जन्मों का हिसाब है ना। 84लाख का तो हिसाब हो न सके इनको कहा जाता है 84 का चक्र। 84लाख की तो बात ही याद न आये। यहाँ कितने अपरमअपार दुख है। बिच्छू टिण्डन मिसल बच्चे पैदा होते रहते हैं। इसको कहा जाता है घोर नर्क। बिल्कुल छी2दुनिया है। तुम बच्चे जानते हो अभी हम नई दुनिया में जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं। पाप कट जाए तो हम पुण्य आत्मा बन जावें। अभी कोई पाप करना नहीं है। एक

१८-१२-८४ प्रातःक्लास ओमशान्ति। "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम अभी पढ़ाई पढ़ रहे हो, तुम्हारी पूजा इस समय नहीं हो सकती, तुम्हें तो पढ़ना और पढ़ाना है, यह पढ़ाई है पतित से पावन बनने की"

प्रश्न:-दुनिया में कौन सा ज्ञान होते हुए भी अज्ञान अन्धियारा है?

उत्तर:-माया का ज्ञान जिससे विनाश होता है, मून तक जाते हैं, यह ज्ञान बहुत है लेकिन नई दुनिया और पुरानी दुनिया का ज्ञान किसी के पास नहीं। इस ज्ञान से सब अज्ञान अन्धियारे में हैं। सब ज्ञान के तीसरे नेत्र से अन्धे हैं। तुम्हें अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। तुम मीठे-मीठे बच्चे जानते हो-उन्हों की ब्रेन में विनाश के ख्यालात हैं, तुम्हारी बुद्धि में स्थापना के ख्यालात हैं।

ओमशान्ति। बाप इस शरीर द्वारा समझाते हैं, इनको रथ कहा जाता है, इसमें आत्मा भी है और मैं भी इनमें आकर बैठता हूँ। तो पहले निश्चय होना चाहिए। इनको दादा कहा जाता है। यह निश्चय बच्चों को बहुत पक्का होना चाहिए। इस निश्चय में ही रमण करना है। ईश्वर आत्मा है जिसमें परमात्मा आते हैं। यह बाप खुद कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ। बच्चों को समझाया गया है यह है सर्वशास्त्र शिरोमणी गीता का ज्ञान। श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ मत। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत है एक भगवान की। जिसकी ही श्रेष्ठ मत से तुम देवता बनते हो। बाप भी खुद कहते हैं मैं आता ही हूँ तुमको भ्रष्टाचारी, विकारी से श्रेष्ठाचारी निर्विकारी बनाने। मनुष्य से देवता बनने का अर्थ भी समझना है। विकारी मनुष्य से निर्विकारी देवता बनाने बाप आते हैं। सतयुग में मनुष्य ही रहते हैं। परन्तु दैवी गुणों वाले। अभी कलियुग में हैं सभी आसुरी गुणों वाले। है सारी मनुष्य सृष्टि। परन्तु यह है ईश्वरीय बुद्धि, वह है आसुरी बुद्धि। यहाँ है ज्ञान, वहाँ है भक्ति। ज्ञान और भक्ति अलग-अलग है। भक्ति की पुस्तक कितने ढेर के ढेर हैं। ज्ञान का पुस्तक एक है। एक ज्ञान सागर की पुस्तक भी एक ही होनी चाहिए। जो भी धर्म स्थापन करते हैं उनका पुस्तक एक ही होता है। जिसको रिलीजस बुक कहा जाता है। पहला-पहला रिलीजस बुक है गीता। पहला-पहला आदि सनातन देवी देवता धर्म है न कि हिन्दू धर्म। मनुष्य समझते हैं गीता से हिन्दू धर्म स्थापन हुआ। गीता का ज्ञान कृष्ण ने दिया। कब दिया? परम्परा से। कोई शास्त्र में शिव भगवानुवाच है नहीं। तुम अभी समझते हो इस गीता ज्ञान द्वारा ही मनुष्य से देवता बने हैं। जो बाप अभी दे रहे हैं। इसको ही भारत का प्राचीन राजयोग कहा जाता है। गीता में ही काम महाशत्रु लिखा हुआ है। इस शत्रु से ही तुम्हें हार खिलाई है। बाप इस पर ही जीत प्राप्त कराते हैं जिससे तुम जगत जीत विश्व के मालिक बन जाते हो। बेहद का बाप बैठ इन द्वारा तुमको पढ़ाते हैं। वह है सभी आत्माओं का बाप। यह फिर है सभी मनुष्यात्माओं का बेहद का बाप। नाम ही है प्रजापिता ब्रह्मा। तुम किससे पूछ सकते हो कि ब्रह्मा के बाप का नाम क्या है? तो मूंझ पड़ेंगे। ब्र०वि०श० इन तीनों का तो बाप कोई होगा ना। ब्र०वि०श० को सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। इनके ऊपर है शिव। बच्चे जानते हैं शिवबाबा के जो बच्चे आत्मायें हैं उन्होंने शरीर धारण किया है। वह तो सदैव निराकार परमपिता परमात्मा है। आत्मा ही शरीर द्वारा कहती है परमपिता। कितनी सहज बात है। इसको कहा जाता है-ज्ञान और है भक्ति। कौन पढ़ाते हैं? गीता का ज्ञान किसने दिया। कृष्ण को तो [illegible] कहा जाता, वह तो देहधारी है, ताजधारी है। शिव तो है निराकार। उन पर [illegible] नहीं। वह ज्ञान का सागर है। बाप ही बीजरूप चैतन्य है। तुम [illegible] झाड़ के आदि मध्य अन्त को तुम जानते हो। भल तुम माली नहीं हो, परन्तु समझ सकते हो कि बीज कैसे डालते हैं। उनसे झाड़ निकलता। वह है जड़, यह है चैतन्य। आत्मा को चैतन्य कहा जाता है। तुम्हारी आत्मा में ही ज्ञान है। और किसी आत्मा में ज्ञान हो नहीं सकता। तो बाप चैतन्य मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। यह चैतन्य क्रियेशन है। बीज और क्रियेशन में फर्क तो होगा ना। आम्ब का बीज डालेंगे तो आम्ब ही निकलेगा। वैसे मनुष्य के बीज से मनुष्य। वह सभी हैं जड़ बीज। ऐसे नहीं कि जड़ बीज में कोई ज्ञान है। यह तो है चैतन्य बीजरूप। इनमें सारे सृष्टि की नालेज है। झाड़ की उत्पत्ति, पालना, विनाश का सारा ज्ञान उनमें है। फिर नया झाड़ कैसे खड़ा होता है वह है गुप्त।

भी अनुभव नहीं होगा। निश्चयबुद्धि विजयी होने के कारण सदा खुशी में नाचता रहेगा। [illegible] वा अल्पकाल का हद का वैराग, इसी लहर में भी नहीं आयेगे। कई बार जब [illegible] तेज वार होता है, अल्पकाल का वैराग भी आता है लेकिन वह हद का अल्पकाल [illegible] होता है। बेहद का सदा का नहीं होता। [illegible] से वैराग वृत्ति उत्पन्न होती है। [illegible] उस समय कह देते हैं कि इससे तो इसको छोड़ दें। मुझे वैराग आ गया है। सेवा भी [illegible] दें, यह भी छोड़ दें। वैराग आता है लेकिन वह बेहद का नहीं होता। विजयी रतन सदा, [illegible] में भी जीत, जीत में भी जीत अनुभव करेंगे। हद के वैराग जो कहते हैं किनारा करना। [illegible] वैराग कहते लेकिन होता किनारा है। तो विजयी रतन किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैराग वृत्ति में होंगे। जो सदाकाल का है। निश्चयबुद्धि विजयी कभी अपने विजय [illegible] करेंगे। दूसरे को उलझना नहीं देंगे। देखा में राष्ट [illegible] ना। यह उलझना देना या [illegible] यह खालीपन की निशानी है। खाली चीज ज्यादा उछलती है ना। जितना भरपूर होंगे उतना उछलेंगे नहीं। विजयी सदा दूसरे की भी हिम्मत बढ़ायेगा। नीचा दिखाने की [illegible] नहीं करेगा। क्यों? विजयी रतन बाप समान मास्टर सहारे दाता है। नीचे से ऊपर [illegible] है। निश्चयबुद्धि व्यर्थ से सदा दूर रहता है। चाहे व्यर्थ संकल्प हो, बोल हो, वा [illegible] व्यर्थ से किनारा अर्थात् विजयी है। व्यर्थ के कारण ही कभी हार कभी जीत होती [illegible] समाप्त तो हार समाप्त। व्यर्थ समाप्त होना यह विजय की निशानी है। अब यह [illegible] कि निश्चय [illegible] विजयी रतन की निशानियां अनुभव होती हैं सुनाया ना- [illegible] तो [illegible] बोलते हैं। लेकिन निश्चयबुद्धि एक है जानने तक, मानने तक और एक [illegible]। मानते तो सभी हो कि हम भगवान मिल गया। भगवान के बन गये। मानना [illegible] एक ही बात है। लेकिन चलने में नम्बरवार हो जाते। तो जानते भी हैं, मानते [illegible] ठीक है लेकिन तीसरी स्टेज है मान कर, जानकर चलना। हर कदम में निश्चय की [illegible] की प्रत्यक्ष निशानियां दिखाई दें। इसमें अन्तर है इसलिए नम्बरवार बन गये। [illegible] क्यों बने है।

इसीको ही कहा जाता है नष्टोमोहा। नष्टोमोहा की परिभाषा बड़ी गुह्य है। वह [illegible] सुनायेंगे। निश्चयबुद्धि नष्टोमोहा की सीढ़ी है। अच्छा-आज दूसरा ग्रुप आया है। [illegible] ही मालिक हैं तो घर के मालिक अपने घर में आये हैं ऐसे कहेंगे ना। घर में आये [illegible] घर से आये हो? अगर उसको घर समझेंगे तो ममत्व आयेगा। लेकिन वह [illegible] स्थान है। घर तो सभी का मधुबन है ना। आत्मा के नाते परमधाम है। ब्राह्मण के नाते मधुबन है। जब कहते हो कि हेड आफिस माउण्ट आबू है तो जहां रहते हो वह क्या हुई? [illegible] हुई ना। तब तो हेड आफिस कहते। तो घर से आये नहीं हो लेकिन घर में आये हो। [illegible] से कभी भी किसको चेन्ज करा सकते हैं। घर से निकाल नहीं सकते। आफिस तो [illegible] कर सकते। घर समझेंगे तो मेरापन रहेगा। सेन्टर को भी घर बना देते। तब मेरापन आता है। सेन्टर समझें तो मेरापन नहीं रहे। घर बन जाता, आराम का स्थान बन जाता [illegible] मेरापन रहता है। तो अपने घर में आये हो। यह जो कहावत है अपना घर दाता का [illegible]। यह कौन से स्थान के लिए है? वास्तविक दाता का दर अपना घर तो मधुबन है ना। [illegible] घर में अर्थात् दाता के घर में आये हो। घर अथवा दर कहो बात एक ही है। अपने घर में आने से आराम मिलता है ना। मन का आराम। तन का भी आराम, धन का भी आराम। [illegible] के लिए जाना थोड़े ही पड़ता। खाना बनाओ तब खाओ [illegible] भी आराम मिल जाता [illegible] में थाल बनाया भोजन मिलता है। यहां [illegible] ठाकुर बन जाते हो। जैसे ठाकुरों के मंदिर [illegible] बजाते हैं ना। ठाकुर को उठाना होगा, सुलाना होगा तो घण्टी बजाते। भोग [illegible] तो भी घण्टी बजायेंगे। आपको भी घण्टी बजती है ना। आजकल फैशनबल है तो [illegible] बजता है। रिकार्ड से सोते हो, फिर रिकार्ड से उठते हो तो ठाकुर हो गये ना। यहां [illegible] फिर भक्तिमार्ग में कापी करते हैं। यहां भी 3-4 बार भोग लगता है। चैतन्य [illegible] को 4 बजे से भोग लगना शुरू हो जाता है। अमृतवेले से भोग शुरू होता है। चैतन्य [illegible]

[illegible]

25-9-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम रुद्र ज्ञान यज्ञ में बैठे हो, रुद्र शिवबाबा तुम्हें जो सुनाते हैं वह सुनकर दूसरों को जरूर सुनाना है"

प्रश्न:- बाप ने भी यज्ञ रचा है और मनुष्य भी यज्ञ रचते हैं – दोनों में कौन सा मुख्य अन्तर है?

उत्तर:- मनुष्य रुद्र यज्ञ रचते हैं कि शान्ति हो अर्थात् विनाश न हो लेकिन बाप ने रुद्र यज्ञ रचा है कि इस यज्ञ से विनाश ज्वाला निकले और भारत स्वर्ग बनें। बाप के इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से तुम नर से नारायण अर्थात् मनुष्य से देवता बन जाते हो। उस यज्ञ से तो कोई भी प्राप्ति नहीं होती है।

गीत:- तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है......

ओम् शान्ति। यह कितना मीठा गीत है और कितना अर्थ सहित है, जो विशाल बुद्धि वाले होंगे वह अच्छी रीति समझ सकेंगे। बुद्धि भी नम्बरवार है ना। उत्तम-मध्यम-कनिष्ट होते हैं। उत्तम बुद्धि वाले इसका अर्थ अच्छी रीति समझ सकते हैं। तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है, यह कौन याद करते हैं? (बच्चे) कौन से बच्चे? बच्चे तो ढेर हैं। जो ब्राह्मण बने हैं, जो देवता थे, जिन्होंने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं उन्होंने ही जास्ती बुलाया है। वही शिव अथवा सोमनाथ के मन्दिर की स्थापना करते हैं। सिद्ध होता है हम जो पूज्य देवी-देवता थे, अभी पुजारी बने हैं। बरोबर हम पूज्य थे फिर पुजारी बने तो सोमनाथ शिव की पूजा करते हैं। रुद्र यज्ञ बहुत रचते हैं, रुद्र ज्ञान यज्ञ कभी नहीं रचते। रुद्र यज्ञ नाम रखते हैं। अभी भी रुद्र यज्ञ रच रहे हैं। तुम बहुत अच्छा समझा सकते हो – रुद्र कौन है? क्या रुद्र ने कभी यज्ञ रचा था? कैसे रचा फिर क्या उसकी सिद्धि हुई? यह तो कोई नहीं जानते। तुमको अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। परमपिता परमात्मा के सिवाए ज्ञान का तीसरा नेत्र कोई दे नहीं सकता। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा को ही गाया जाता है। मनुष्य को ज्ञान सागर नहीं कह सकते। अभी तुम जानते हो हमको दादे का वर्सा मिल रहा है जिसको ही याद करते हैं कि बाबा आकर अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करो। फिर हम भी दान लेकर औरों को करेंगे। बहुत सहज है। सिर्फ याद दिलायेंगे कि तुम्हारे दो बाप हैं। भक्ति मार्ग में दो बाप हो जाते हैं। सतयुग-त्रेता में लौकिक बाप ही होता है। वहाँ वर्सा भी तुम इस समय के पुरुषार्थ अनुसार पाते हो। तो तुम बच्चों का माथा फिरना चाहिए। ऐसी-ऐसी जगह जाकर पूछना चाहिए कि रुद्र यज्ञ किसने रचा था? क्या रुद्र ज्ञान यज्ञ है या रुद्र यज्ञ है? असुल नाम है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र तो है निराकार। वह कैसे यज्ञ रचेगा? जरूर शरीर धारण करना पड़े। दक्ष प्रजापति का यज्ञ भी मनाते आते हैं। दिखाते हैं दक्ष प्रजापति यज्ञ में अश्व को स्वाहा करते हैं। घोड़े को टुकड़े-टुकड़े कर जलाते हैं। उनको दक्ष प्रजापति यज्ञ कहते हैं। यह तुम अभी जानते हो तो वहाँ लिखना चाहिए यह कौन सा यज्ञ है? बड़ा भभके से यज्ञ करते हैं। बहुत पैसे इकट्ठे करते हैं। बड़े-बड़े आदमी दान करते हैं। कोई 100 निकालते, कोई 500 निकालते। इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में

तो तुम सारे स्वाहा होते हो। उसमें तो थोड़ा-थोड़ा पैसा निकाल इकट्ठा करते हैं फिर ब्राह्मण को दक्षिणा मिलती है। यहाँ तो तुमको स्वाहा होना पड़ता है। वहाँ स्वाहा होने की बात नहीं। यहाँ बच्चे कहते हैं बाबा तन-मन-धन सहित मैं आता हूँ, वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे। आहुति में कभी ऐसे नहीं डालेंगे। आरती आदि होगी, चंदा चीरा होगा। बड़ों-बड़ों से लेते हैं। तुम बच्चे जानते हो इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला प्रज्जवलित हुई है। वह यज्ञ रचते हैं शान्ति के लिए, विनाश के लिए नहीं। वहाँ शान्ति का बड़ा आवाज़ करते हैं। शान्ति तो सारी दुनिया में चाहिए ना। परमात्मा है शान्ति का सागर। तुम बच्चों को अर्थ समझाया जाता है। अख़बार पढ़ते हो तो ख्याल चलना चाहिए – कैसे हम सबको समझायें?

बाप जानते हैं कैसे बी.के. दुकान सम्भाल रहे हैं। सेठ का कौन सा दुकान अच्छा चलता है, कौन सा मैनेजर अच्छा है, वह तो गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। यह ब्रह्मा है गोथरी। यह बड़ी रमणीक बातें हैं। तो रुद्र ज्ञान यज्ञ के लिए तो लिखा हुआ है इससे विनाश ज्वाला निकली। वह यज्ञ करते हैं शान्ति के लिए। यह है सच्चा-सच्चा यज्ञ। उन ब्राह्मणों के तो अनेक सेठ होते हैं। यह तुम ब्राह्मणों का एक ही सेठ है। बाप है रुद्र। रुद्र बाप कहो, शिव कहो, सोमनाथ कहो, उसने ज्ञान यज्ञ रचा है, जिसमें तुम बैठे हो। वह यज्ञ तो दो-चार दिन चलेगा। तुम्हारा यह रुद्र ज्ञान यज्ञ तो बहुत बड़ा है। उसमें टाइम लगता है। यह है नर से नारायण अथवा मनुष्य से देवता बनने का यज्ञ। वह तो ऐसे नहीं कहेंगे। बाप बैठ समझाते हैं कैसे उन्हों को सावधान करो। बड़ों-बड़ों को बोलो – यह तुम जो यज्ञ रचते हो, उसमें भूल है। परमपिता परमात्मा कल्प-कल्प संगम पर आते हैं। शास्त्रों में युगे-युगे लिख दिया है। यह भूल कर दी है। वैसे ही रुद्र यज्ञ रचते हैं। वास्तव में रुद्र ज्ञान यज्ञ है। शिव का नाम है रुद्र, उसने ही ज्ञान यज्ञ रचा है। जैसे इब्राहम ने अपना इस्लाम धर्म स्थापन किया, बुद्ध ने बौद्धी धर्म स्थापन किया, वैसे रुद्र का है ज्ञान यज्ञ जिससे विनाश ज्वाला प्रज्जवलित होगी। तो गोया वो लोग शान्ति के लिए यज्ञ रचते हैं अर्थात् विनाश नहीं चाहते। स्वर्ग की स्थापना के लिए नर्क का विनाश हो, तो अच्छा ही है ना।

भारत है अविनाशी खण्ड। जरूर भारत के मनुष्य सम्प्रदाय बहुत ज्यादा होने चाहिए। आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। उनको सारा कल्प हुआ है। शास्त्रों में 33 करोड़ लिख दिया है। परन्तु यह तो समझाना चाहिए – जरूर और धर्म वालों से देवता धर्म की आदमशुमारी जास्ती होगी, लेकिन वह कनवर्ट हो गये हैं तो कैसे निकलें। बौद्धी, क्रिश्चियन, मुसलमान आदि जाकर ढेर बने हैं, इसलिए थोड़ी संख्या हो जाती है। यह भी ड्रामा। इसमें समझने की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। जब तक बुद्धि में ज्ञान नहीं बैठा है तो सिर्फ अर्पणमय होने से क्या फायदा? अर्पणमय तो ढेर बनते हैं परन्तु जो अच्छी रीति धारणा कर और कराते हैं, प्रजा बनाते हैं वही अच्छा पद पा सकते हैं।

तो यह गीत एक्यूरेट है – बुलाने को जी चाहता है....। सबसे पहले 84 जन्म किसने लिए होंगे? जो पहले-पहले थे, वह थे ही देवी-देवतायें। सो भी भारत में थे। अभी तो कोई कहाँ, कोई कहाँ कनवर्ट हो गये हैं। कई तो भारत से बाहर चले गये हैं। नहीं तो वास्तव में

भारत जैसा बड़े ते बड़ा तीर्थ और कोई है नहीं। और सभी धर्म स्थापक जो हैं उन्हों को भी पावन बनाने के लिए भगवान् को भारत में आना पडता है क्योंकि सब पतित हैं, सबको पावन बनाने वाला एक है। यह तुम जानते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार यथार्थ रीति जान सकते हैं। तुम कहेंगे हम रुद्र ज्ञान यज्ञ में बैठे हैं कब से? ६२ वर्ष हुए हैं। ऐसा कोई यज्ञ होता है क्या, जिसमें इतना समय बैठे हों? क्या बैठ करते हो? रुद्र जो ज्ञान सुनाते हैं वह सुनते ही रहते हो। जहाँ तक रुद्र बाबा इस शरीर में है, सुनाते ही रहेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो जरूर यहाँ होगा ना। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात गाई हुई है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा का थोड़ेही दिन और रात बनायेंगे। वह तो सूक्ष्मवतनवासी देवता है। दिन और रात का प्रश्न यहाँ का है। ब्रह्मा की रात माना पतित। फिर वही पावन बनते हैं तो दिन होता है। ब्रह्मा को भी पावन बनाने वाला वह एक सतगुरु है। सत बाबा, सत टीचर, सतगुरु तीनों इकट्ठे हैं। पहले जरूर बाप के बच्चे होंगे फिर पद टीचर से पायेंगे। नम्बरवार हैं ना। यह भी बुद्धि में रहे तो कितनी खुशी रहे। तुम पहले बेहद के बाप के थे ना। यहाँ आये हो पार्ट बजाने। भक्ति मार्ग में बेहद के बाप को याद करते आये हो क्योंकि वह है स्वर्ग का रचयिता। जरूर स्वर्ग की राजाई देने वाला होगा। यह समझाना तो बड़ा सहज है। सेन्सीबुल ही समझा सकेंगे। वास्तव में सेन्सीबुल तुम ब्राह्मण हो। तुम्हारे में जो अक्लमंद हैं, उनमें भी नम्बरवार हैं। दुनिया के अक्लमंद भी नम्बरवार हैं ना। यहाँ भी जो सेन्सीबुल बनते जायेंगे वह जरूर अच्छा नम्बर पायेंगे। हर एक अपनी दिल से पूछे हम कहाँ तक सेन्सीबुल बना हूँ? जैसे बाबा मुरली चलाते हैं वैसे वहाँ भी तुम्हारी मुरली चल सकती है। तुम उन्हें समझाओ कि रुद्र यज्ञ और रुद्र ज्ञान यज्ञ में रात-दिन का फ़र्क है। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा तो उससे विनाश ज्वाला निकली, भारत स्वर्ग बना और यह फिर यज्ञ रचते हैं विनाश न हो अर्थात् स्वर्ग स्थापन न हो। यह तो उल्टी बात हो गई। तब तो बाबा कहते हैं मैं इन सबका उद्धार करने आता हूँ। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचता हूँ। तो तुम प्रतिज्ञा करते हो – बाबा, हम आपसे सुनकर और सुनायेंगे। अच्छा, औरों को सुनाओ। पहले यहाँ तो रिपीट करो। घड़ी-घड़ी रिपीट करो जो फिर कहाँ समझा सको। फर्स्टक्लास प्वाइंट है। उस यज्ञ में तो जौ-तिल आदि डालते हैं, मेरे रुद्र ज्ञान यज्ञ में तो सारी पुरानी दुनिया की सामग्री स्वाहा हुई थी। परन्तु यह सब बातें कोई की बुद्धि में अच्छी रीति धारण नहीं होती। बाप को याद नहीं करते हैं तो बुद्धि का ताला नहीं खुलता। बाबा कहते हैं – हम भी क्या करें? इस समय सबकी बुद्धि पतित है, उनको पावन बनाता हूँ। जो मेरे को याद नहीं करते, उनमें धारणा नहीं हो सकती। बुद्धि का ताला कैसे खुले? याद से ही खुलेगा। मोस्ट बिलवेड बाप है, उनकी बड़ी महिमा करते हैं। शिवबाबा की कितनी महिमा है! शिव की पूजा भी होती है, तो जरूर आता होगा ना। बिगर आरगन्स क्या आकर करेंगे? तो अब ब्रह्मा में आया हुआ हूँ। तुम बच्चे बापदादा के सामने बैठे हुए हो परन्तु देह-अभिमान होने कारण इतना लॅव, बाप के लिए रिगार्ड नहीं रहता। डायरेक्शन पर मुश्किल चलते हैं। अहंकार में आ जाते हैं। बाप कहते हैं – मैं निरहंकारी हूँ, तुमको इतना अहंकार क्यों आता है? बस, समझते हैं मैं ही होशियार हूँ। इतना देह-अभिमान आ जाता है।

अब कोई का पति मर जाता है तो उसकी देह ख़त्म हो गई। बाकी आत्मा निकल गई फिर ब्राह्मण में आत्मा को बुलाते हैं। देह को तो नहीं बुलाते। भावना रखते हैं तो भावना का भाड़ा मिलता है। पति को याद करते रहे तो पति का साक्षात्कार कर लेंगे। बाबा साक्षात्कार तो कराते हैं ना। ऐसे बहुतों का प्यार होता है। आयेगी तो आत्मा ना। कोई का स्त्री में प्यार है तो भावना का भाड़ा मिल जाता है। स्त्री को देख लेते हैं। चीज़ ले आते हैं, खुद उनको पहनाते हैं। ऐसे बहुत कुछ होता आया है। आगे बहुत विधि से खिलाते थे। जैसे गणेश को अथवा नानक आदि को याद करते हैं तो साक्षात्कार हो जाता है ऐसे बहुतों को हो सकता है। परन्तु वह चाबी एक ही बाप के हाथ में है। बाप कहते हैं यह साक्षात्कार की बातें भी ड्रामा में नूंधी हुई हैं। साक्षात्कार कराया, ड्रामा चला, ठहरता नहीं है। ड्रामा को भी अच्छी रीति जानना होता है। अरे, बाबा का तो अच्छी रीति रिगार्ड रखो। बाप में इतना रिगार्ड प्यार रखना बड़ा मुश्किल समझते हैं, समझते हैं वह तो निराकार है। कहते हैं यह तो उनका रथ है, इनको हम क्या करेंगे? हम तो निराकार को ही याद करेंगे। अच्छा, निराकार की गोद में जाकर दिखाओ? निराकार साथ खाओ, पियो। तुम इनके पास क्यों आते हो? कहते हैं – नहीं बाबा, आप इसमें हो, आपको ही इसमें विराजमान समझ चलते हैं। यह बड़ा मुश्किल किसकी बुद्धि में रहता है। ऐसे बहुत हैं जो गपोड़े लगाते हैं – हमारा बाबा में बहुत प्यार है, हम इतने घण्टे बाबा को याद करते हैं। बाबा कहते हैं मैं भी पूरा याद नहीं करता हूँ। मैं तो एक ही सिकीलधा बच्चा हूँ फिर भी मैं पुरुषार्थ बहुत करता हूँ। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अर्पण होने के साथ-साथ अपनी बुद्धि को विशाल बनाना है। ऊंच पद के लिए अच्छी रीति धारणा करनी और करानी है।

२- बाप समान निरहंकारी बनना है। अहंकार छोड़ बाप से अति लॅव वा रिगार्ड रखना है। देह-अभिमान में नहीं आना है।

वरदान:-अपसेट होने के बजाए हिसाब-किताब को खुशी-खुशी से चुक्तू करने वाले निश्चिंत आत्मा भव

यदि कभी कोई बात कहता है तो उसमें फौरन अपसेट नहीं हो जाओ, पहले स्पष्ट करो या वेरीफाय कराओ कि किस भाव से कहा है, अगर आपकी गलती नहीं है तो निश्चिंत हो जाओ। यह बात स्मृति में रहे कि ब्राह्मण आत्माओं द्वारा यहाँ ही सब हिसाब-किताब चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। इसलिए घबराओ नहीं, निश्चिंत हो खुशी-खुशी से चुक्तू करो। इसमें तरक्की (उन्नति) ही होनी है।

स्लोगन:-

''बाप ही संसार है'' सदा इस स्मृति में रहना - यही सहजयोग है।

"देहअभिमान को छोड़ना है-मैं आत्मा हूँ यह निश्चय करना है, इससे ही बाप के साथ उड़ते जावेंगे।"

प्रश्न- कौन सी बात तुम बच्चों के ख्याल में भी न थी? उत्तर:- तुम्हारे ख्याल में भी न होगा कि हमें ईश्वरीय [illegible] मिलेगी। कमाल है बाबा की जिसने हम मूढ़ बुद्धि बच्चों को विश्व का मालिक बनाया।

प्रश्न- तुम बच्चे ही महान पुण्यआत्मा हो कैसे? उत्तर:- तुम सभी को 21 जन्मों के लिए जीयदान देते। तुम सबको सुख की दुनिया में ले जाते इसलिए तुम्हारे जैसा पुण्यआत्मा कोई भी नहीं।

ओम नमो शिवाय ... ओमशान्ति। बच्चे बैठे हो और जानते हो कि बाबा के सामने बैठे हैं। कोई सन्यासी उदासी मित्र सम्बन्धी आदि के सामने तो नहीं बैठे हैं। जानते हो कि हम बरोबर अति मीठे बाप जिसको हम जन्म-जन्मान्तर याद करते हैं उनके सन्मुख बैठे हैं। हम अभी उनके जीते जी बच्चे बने हैं। सन्यासियों के तो फालोअर्स बनते हैं। रहते तो अपने घर में हैं ना। यह फालोवर्स कहलाते हैं परन्तु फालो नहीं करते हैं। तुम बच्चों को फालो करना है। बुद्धि में यह याद रहे कि हम आत्मा हैं। जहाँ बाबा जावेंगे वहाँ हम जावेंगे। निराकार बाप परमधाम से यहाँ आये हैं। पतितों को पावन बनाने। आवेंगे तो पतित दुनिया पतित शरीर में। जो पहले नम्बर में पावन था जिसने 84 जन्म भोगे हैं उनमें ही बैठ कर यह बात समझाते हैं। बहुत बच्चे बैठे हैं। टीचर कोई [illegible] को पढ़ावेंगे क्या। भगवानुवाच सिर्फ अर्जुन प्रति यह तो हो न सके। बच्चे जानते हैं हम आत्माओं का बाप सामने बैठे हैं। और कोई भी सतसंग में ऐसा नहीं समझेंगे। तुमको समझाया जाता है कि तुम्हें अभी वापिस चलना है। शरीर को तो यहाँ ही छोड़ना है। इसलिए देह का अभिमान छोड़ते जाओ। मैं इतनी अच्छी हूँ। धनवान हूँ। यह सब छोड़ देना। मैं आत्मा हूँ यह ही निश्चय करना है। बाप को याद करते-करते बाप के साथ चल पड़ना है। शिवबाबा कहते मुझे तो देह का अभिमान हो न सके। क्योंकि मुझे अपनी देह तो है ही नहीं। तुमको भी यह देहअभिमान था थोड़ेही। जब तुम आत्मा मेरे पास थे फिर तुमने 84 जन्म पार्ट बजाया। तुम कहेंगे हमने ही राज्यभाग लिया फिर हराया। अब फिर तुमको मैं मुक्तिधाम वापिस ले चलने आया हूँ। शरीरों को तो नहीं ले जाऊंगा। यह पुराना शरीर है। इसका मान तो बुद्धि से तोड़ना है। रहना भी अपने गृहस्थ व्यवहार में है। यह कोई सन्यासी मठ नहीं है। अपने परिवार को भी सम्भालना है। वह तो छोड़कर जाते हैं। बाप इस प्रकार बच्चों आदि से छुड़ाते नहीं हैं। बाप कहते तुम तो अपने बच्चों को भी याद दिलाओ कि याद करो। शिवबाबा का चित्र आगे रख दो। समझाते रहो। तो उनका भी शिवबाबा है बोह (प्यार) हो। शिवबाबा कितना मीठा कितना प्यारा है। सबको यहाँ बिठा दें तो बच्चों को कौन सम्भालेगा। ऐसे यहाँ बहुत बच्चे हैं जो यहाँ से शरीर छोड़कर जाते हैं फिर आवेंगे। बाप से वर्सा लेंगे। मिलेंगे भी। यह निश्चय होना चाहिए कि हम आत्मा हैं यह शरीर छोड़कर वापिस जाना है। यहाँ हमारी दिल नहीं लगती। सन्यासी लोग कहते हम ब्रह्म में अथवा तत्व में लीन हो जावें। अनेक मत मतान्तर हैं। यहाँ तो एक ही बाप है। बाप आया है हम बच्चों को वापिस ले चलने। सतयुग में यह सभी धर्म थे नहीं। अभी सतयुग स्थापन हो रहा है। अभी बाबा [illegible] हुए हैं। तुम तो अभी रिज्यूवनेट हो रहे हो। रीइनकारनेशन (अवतार) तो एक के लिए कहेंगे। बच्चे लिखते भी हैं कि बाबा हमारे जीवन में अच्छा ही चेन्ज (परिवर्तन) आया है। कभी थोड़ा क्रोध आ जाता है। हाँ बच्चे, यह भी ऐसा [illegible] कोई कष्ट से थोड़ा छूट जाता है। सब गुण निकालते-निकालते निर्गुण बन गये हो। अभी सर्वगुणवान बनना है। तुमको [illegible] धन मिलता है। यहाँ लोगों के पास धन नहीं है। यहाँ लोग देख कितनी चोरियां आदि करते हैं। [illegible] के मकान से अनाज के गुदाम बरबाद हो जाते हैं फिर जला देते। यहाँ मनुष्य भूख मरते हैं। तुम समझते हो कि हमको निराकार पढ़ाते हैं। पहले भल तब किसी को निश्चय नहीं कि निराकार बाबा हमको पढ़ाते तो कोई [illegible] नहीं। बाबा ने समझाया कि हम तो आत्मा पतित बनी हैं। अब बाबा द्वारा पावन बन रही हैं। तो [illegible] आखिर। अपना मत नहीं चलाना है। मित्र सम्बन्धियों को श्रीमत पर चिट्ठी लिखनी है। [illegible] लिखेंगे तो उनका कल्याण ही करेंगे। बहुत हैं जो छिपाकर चिट्ठियाँ लिखते हैं। बाप विश्व बैठे हैं।

न सके। यह है पार्ट की बातें। तुम तो प्रैक्टिकल में पार्ट बजा रहे हो। तुम जानते हो हमारा बाप ही टीचर और सतगुरु है। लौकिक बाप को कब ऐसे नहीं कहेंगे। गुरु को भी सिर्फ गुरु ही कहेंगे। यहाँ तो बाप टीचर सतगुरु तीनों ही एक है। यह समझ की बात है ना। नालेजफुल गाडफादर को ही कहते हैं। उनमें नालेज है सारे झाड की। क्योंकि चैतन्य है। आकर सारी नालेज देते हैं। अभी हम जानते हैं इस देह को छोड़ बाबा के साथ चले जावेंगे। जबकि हम कर्मातीत बन जावेंगे। हमारे में कोई भूत न होगा। देह अभिमान का है पहला नम्बर भूत। इन सब भूतों का बड़ा है रावण। भारत में ही रावण को जलाते हैं। रावण क्या चीज है दुनिया में कोई नहीं जानते। यह दशहरा दीपमाला रक्षाबन्धन आदि कब से मनाते आये हैं, कुछ भी पता नहीं। आखरीन भी रावण मरना है या ऐसे ही चलता रहेगा, कुछ पता नहीं पड़ता। बाप बैठ समझाते हैं 5 विकार हैं। इनको ही रावण कहा जाता है। रावण को जलाते हैं फिर भी उठता है, क्योंकि उनका राज्य है। सतयुग में यह रावण होता नहीं। बच्चे योगबल से पैदा होते हैं। जबकि योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो तो बच्चे भी योगबल से पैदा होते हैं। यहाँ तो सब हैं भोगबल की पैदाइस। वहाँ रावण है नहीं तो भोग का नाम नहीं। इसलिए कृष्ण को भी योगेश्वर कहते हैं। सम्पूर्ण निर्विकारी है। योगी कब भोग नहीं करते। भोगी बने तो फिर योग सिद्ध हो न सके। अभी तुम योग सीखते हो। भोगी बनने से योग लगेगा नहीं। विकार में जाने वाले का योग लग न सके। तुम बच्चों को बाप टीचर सतगुरु तीनों से वर्सा मिलता है। सतगुरु सबको साथ ले जाते हैं। ले तो सबको जावेंगे परन्तु तुम गले के हार बनते हो। बाकी सब सजनियों को ले जावेंगे। पहले साजन फिर सूर्यवंशी चन्द्रवंशी फिर उनकी सारी जो संख्या है। इस्लामी की बरात, बौधियों की बरात, सभी आत्माओं को अपने 2 सेक्शन में जाकर बैठना है। आत्मा, परमात्मा की महिमा समझने की बातें हैं। तकदीर वाले ही धारण कर औरों को भी समझावेंगे। यह फिर महिमा भी करते हैं फलाने ने हमको समझाया तो हमारी कपाट ही खुल गई। उसने हमको जीयदान दे दिया। फिर उनसे प्रीत हो जाती है। फिर लिखते हैं बाबा उसने हमको जीयदान दिया है। उसको ही याद करते हैं। परन्तु उनसे छुड़ाया जाता है। दलाल को थोड़ेही याद करना है। दलाल ने तो दलाली की बलास। फिर साजन को सजनी याद करती है। ब्रह्मा हो गया दलाल। पूछ इसको नहीं करना है। शिवबाबा को याद करना है। यह दादा भी उस शिवबाबा को याद करते हैं। इनकी महिमा नहीं। यह तो पतित है। पहले इनमें प्रवेश कर इनको पावन बनाता है। एक पतित एक पावन। पावन की भी शकल दिखानी चाहिए। सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा है पावन। यहाँ यह पतित है। फिर आकर राजाई करेंगे। समझानी तो बार 2 दी जाती है। परन्तु जबकि आकर बाप का बने। बाबा हम आपके हो गये। बाबा आप हमारे सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरु हो। बाप कहेंगे मैं भी तुमको स्वीकार करता हूँ। परन्तु याद रखना। बाप की पत न गंवाना। मेरा बन, फिर विकार में न जाना। पतित न बनना। वास्तव में इस समय सब नर्कवासी हैं, याद करते हैं स्वर्ग (है फिर भी) कहते भी हैं फलाना स्वर्ग पधारा। अरे स्वर्ग है कहाँ, अच्छा अगर स्वर्ग गया तो फिर तुम नर्क में बुलाए यहाँ का किचड़ा क्यों खिलाते हो। पतित दुनिया में पतित ब्राह्मणों को क्यों खिलाते हो। ब्राह्मण पावन भी होते हैं परन्तु मनुष्य हैं बिल्कुल बन्दर बुद्धि, कुछ भी समझते नहीं। अच्छा। मीठे 2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओमशान्ति।

52. भारत ही रेसपान्सिबुल है! सबको (५२)

24-8-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपनी सतोप्रधान तकदीर बनाने के लिए याद में रहने का खूब पुरूषार्थ करो, सदा याद रहे मैं आत्मा हूँ, बाप से पूरा वर्सा लेना है"

प्रश्नः- बच्चों को याद का चार्ट रखना मुश्किल क्यों लगता है?

उत्तरः- क्योंकि कई बच्चे याद को यथार्थ समझते ही नहीं हैं। बैठते हैं याद में और बुद्धि बाहर भटकती है। शान्त नहीं होती। वह फिर वायुमण्डल को खराब करते हैं। याद करते ही नहीं तो चार्ट फिर कैसे लिखें। अगर कोई झूठ लिखते हैं तो बहुत दण्ड पड़ जाता है। सच्चे बाप को सच बताना पड़े।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ........

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों को फिर भी रूहानी बाप रोज़-रोज़ समझाते हैं कि जितना हो सके देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो क्योंकि तुम जानते हो हम उस बेहद के बाप से बेहद सुख की तकदीर बनाने आये हैं। तो जरूर बाप को याद करना पड़े। पवित्र सतोप्रधान बनने बिगर सतोप्रधान तकदीर बना नहीं सकते। यह तो अच्छी रीति याद करो। मूल बात है ही एक। यह तो अपने पास लिख दो। बांह पर नाम लिखते हैं ना। तुम भी लिख दो–हम आत्मा हैं, बेहद के बाप से हम वर्सा ले रहे हैं क्योंकि माया भुला देती है। इसलिए लिखा हुआ होगा तो घड़ी-घड़ी याद रहेगी। मनुष्य ओम् का वा कृष्ण आदि का चित्र भी लगाते हैं याद के लिए। यह तो है नये ते नई याद। यह सिर्फ बेहद का बाप ही समझाते हैं। इस समझने से तुम सौभाग्यशाली तो क्या पदम भाग्यशाली बनते हो। बाप को न जानने कारण, याद न करने कारण कंगाल बन गये हैं। एक ही बाप है जो सदैव के लिए जीवन को सुखी बनाने आये हैं। भल याद भी करते हैं परन्तु जानते बिल्कुल नहीं हैं। विलायत वाले भी सर्वव्यापी कहना भारतवासियों से सीखे हैं। भारत गिरा है, तो सब गिरे हैं। भारत ही रेसपान्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने। बाप कहते हैं मैं भी यहाँ ही आकर भारत को स्वर्ग सचखण्ड बनाता हूँ। ऐसा स्वर्ग बनाने वाले की कितनी ग्लानि कर दी है। भूल गये हैं इसलिए लिखा हुआ है यदा यदाहि..... इनका भी अर्थ बाप ही आकर समझाते हैं। बलिहारी एक बाप की है। अभी तुम जानते हो बाप आते हैं जरूर, शिव-जयन्ती मनाते हैं परन्तु शिव-जयन्ती का कदर बिल्कुल नहीं है। अभी तुम बच्चे समझते हो जरूर होकर गये हैं, जिसकी जयन्ती मनाते हैं। सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना वही करते हैं और सब जानते हैं कि हमारा धर्म फलाने ने फलाने समय स्थापन किया। उनके पहले है ही देवी-देवता धर्म। उनको बिल्कुल ही नहीं जानते कि यह धर्म कहाँ गुम हो गया। अभी बाप आकर समझाते हैं–बाप ही सबसे ऊंच है, और किसकी महिमा है नहीं। धर्म स्थापक की महिमा क्या होगी। बाप ही पावन दुनिया की स्थापना और पतित दुनिया का विनाश करते हैं और तुमको माया पर जीत पहनाते हैं। यह बेहद की बात है। रावण का राज्य भी बेहद की दुनिया पर है। हद के लंका आदि की बात नहीं। यह हार-जीत की कहानी

भी सारे भारत की ही है। बाकी तो बाईप्लाट हैं। भारत में ही डबल सिरताज और सिंगल ताज राजायें बनते हैं और जो भी बड़े-बड़े बादशाह होकर गये हैं, कोई पर भी लाइट का ताज नहीं होता है सिवाए देवी-देवताओं के। देवतायें तो फिर भी स्वर्ग के मालिक थे ना। अब शिवबाबा को कहा ही जाता है परमपिता, पतित-पावन। इनको लाइट कहाँ देंगे। लाइट तब दें जब बिगर लाइट वाला पतित भी हो। वह कभी बिगर लाइट वाला होता ही नहीं। बिन्दी पर लाइट दे कैसे सकेंगे। हो न सके। दिन-प्रतिदिन तुमको बहुत गुह्य-गुह्य बातें समझाते रहते हैं, जो जितना बुद्धि में बिठा सके। मुख्य है ही याद की यात्रा। इसमें माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं। भल कोई याद के चार्ट में 50-60 परसेन्ट भी लिखते हैं परन्तु समझते नहीं हैं कि याद की यात्रा किसको कहा जाता है। पूछते रहते हैं—इस बात को याद करें? बड़ा मुश्किल है। तुम यहाँ 10-15 मिनट बैठते हो, उनमें भी जांच करो—याद में अच्छी रीति रहते हैं? बहुत हैं जो याद में रह नहीं सकते फिर वह वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। बहुत हैं जो याद में न रहने से विघ्न डालते हैं। सारा दिन बुद्धि बाहर भटकती रहती है, सो यहाँ थोड़ेही शान्त होगी, इसलिए याद का चार्ट भी रखते नहीं। झूठा लिखने से तो और ही दण्ड पड़े। बहुत बच्चे भूलें करते हैं, छिपाते हैं। सच बताते नहीं। बाप कहे और सच न बताये तो कितना दोष हो जाता। कितना भी बड़ा गन्दा काम किया होगा तो भी सच बताने में लज्जा आयेगी। अक्सर करके सब झूठ बतायेंगे। झूठी माया, झूठी काया...... है ना। एकदम देह-अभिमान में आ जाते हैं। सच सुनाना तो अच्छा ही है और भी सीखेंगे। यहाँ सच बताना है। नॉलेज के साथ-साथ याद की यात्रा भी जरूरी है क्योंकि याद की यात्रा से ही अपना और विश्व का कल्याण होना है। नॉलेज समझाने के लिए बहुत सहज है। याद में ही मेहनत है। बाकी बीज से झाड़ कैसे निकलता है, वह तो सबको मालूम रहता है। बुद्धि में 84 का चक्र है, बीज और झाड की नॉलेज होगी ना। बाप तो सत्य है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। उनमें नॉलेज है समझाने के लिए। यह है बिल्कुल अनकॉमन बात। यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। यह भी कोई नहीं जानते। सब नेती-नेती करते गये। ड्युरेशन को ही नहीं जानते तो बाकी क्या जानेंगे। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो अच्छी रीति जानते हैं, इसलिए सेमीनार भी बुलाते हैं। अपनी-अपनी राय दो। राय तो कोई भी दे सकते हैं। ऐसे नहीं कि जिनके नाम है उनको ही देनी है। हमारा नाम नहीं है, हम कैसे देवें। नहीं, कोई को भी सर्विस अर्थ कोई राय हो, एडवाइज़ हो लिख सकते हो। बाप कहते हैं कोई भी राय आये तो लिखना चाहिए। बाबा इस युक्ति से सर्विस बहुत बढ़ सकती है। कोई भी राय दे सकते हैं। देखेंगे किस-किस प्रकार की राय दी है। बाबा तो कहते रहते हैं—किस युक्ति से हम भारत का कल्याण करें, सबको पैगाम देवें। आपस में विचार निकालो, लिखकर भेजो। माया ने सबको सुला दिया है। बाप आते ही हैं जब मौत सामने होता है। अब बाप कहते हैं सबकी वानप्रस्थ अवस्था है, पढ़ो न पढ़ो, मरना जरूर है। तैयारी करो न करो, नई दुनिया जरूर स्थापन होनी है। अच्छे-अच्छे बच्चे जो हैं वह अपनी तैयारी कर रहे हैं। सुदामा का भी मिसाल गाया हुआ है—चावल मुट्ठी ले आया। बाबा हमको भी महल मिलने चाहिए। है ही उनके

यार चावल मुट्ठी तो क्या करेंगे। बाबा ने मम्मा का मिसाल बताया है—चावल मुट्ठी भी नहीं ले आई। फिर कितना ऊंच पद पा लिया, इसमें पैसे की बात नहीं है। याद में रहना है और आप समान बनाना है। बाबा को तो कोई फी आदि नहीं। समझते हैं हमारे पास पैसे पड़े हैं तो क्यों न यज्ञ में स्वाहा कर दें। विनाश तो होना ही है। सब व्यर्थ हो जायेगा। इससे कुछ तो सफल करें। हर एक मनुष्य कुछ न कुछ दान-पुण्य आदि जरूर करते हैं। वह है पाप आत्माओं का पाप आत्माओं को दान-पुण्य। फिर भी उसका अल्पकाल के लिए फल मिल जाता है। समझो कोई युनिवर्सिटी, कॉलेज आदि बनाते हैं, पैसे जास्ती हैं, धर्मशाला आदि बना देते हैं तो उनको मकान आदि अच्छा मिल जायेगा। परन्तु फिर भी बीमारी आदि तो होगी ना। समझो किसने हॉस्पिटल आदि बनाई होगी तो करके तन्दुरूस्ती अच्छी रहेगी। परन्तु उनसे सब कामनायें तो सिद्ध नहीं होती हैं। यहाँ तो बेहद के बाप द्वारा तुम्हारी सब कामनायें पूरी हो जाती हैं।

तुम बनते हो पावन तो सब पैसे विश्व को पावन बनाने में लगाना अच्छा है ना। मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हो सो भी आधाकल्प के लिए। सब कहते हैं हमको शान्ति कैसे मिले। वह तो शान्तिधाम में मिलती है और सतयुग में एक धर्म होने कारण वहाँ अशान्ति होती नहीं। अशान्ति होती है रावण राज्य में। गायन भी है ना—राम राजा राम प्रजा...... वह है अमरलोक। वहाँ अमरलोक में मरने का अक्षर होता नहीं। यहाँ तो बैठे-बैठे अचानक मर जाते हैं, इसको मृत्युलोक उसका अमरलोक कहा जाता है। वहाँ मरना होता नहीं। पुराना एक शरीर छोड़ फिर बालक बन जाते हैं। रोग होता नहीं। कितना फायदा होता है। श्री श्री की मत पर तुम एवरहेल्दी बनते हो। तो ऐसे रूहानी सेन्टर्स कितने खुलने चाहिए। थोड़े भी आते हैं वह कम हैं क्या। इस समय कोई भी मनुष्य ड्रामा के ड्युरेशन को नहीं जानते हैं। पूछेंगे तुमको फिर यह किसने सिखलाया है। अरे, हमको बताने वाला बाप है। इतने ढेर बी.के. हैं तुम भी बी.के. हो। शिवबाबा के बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के भी बच्चे हो। यह है ह्युमैनिटी का ग्रेट-ग्रेट ग्रेन्ड फादर। इनसे हम बी.के. निकले हैं। बिरादरियाँ होती हैं ना। तुम्हारे देवी-देवताओं का कुल बहुत सुख देने वाला है। यहाँ तुम ऊंच बनते हो फिर वहाँ राज्य करते हो। यह किसको बुद्धि में रह न सके। यह भी बच्चों को समझाया है देवताओं के पैर इस तमोप्रधान दुनिया में पड़ न सके। जड़ चित्र का परछाया पड़ सकता है, चैतन्य का नहीं पड़ सकता। तो बाप समझाते हैं बच्चे, एक बाप की याद की यात्रा में रहो, कोई भी विकर्म न करो और सर्विस की युक्तियाँ निकालो। बच्चे कहते हैं — बाबा, हम तो लक्ष्मी-नारायण जैसा बनेंगे। बाबा कहते तुम्हारे मुख में गुलाब। लेकिन इसके लिए मेहनत भी करनी है। ऊंच पद पाना है तो आप समान बनाने की सेवा करो। तुम एक दिन देखेंगे - एक-एक पण्डा अपने साथ 100-200 यात्री भी ले आयेंगे। आगे चल देखते रहेंगे। पहले से थोड़ेही कुछ कह सकते हैं। जो होता रहेगा सो देखते रहेंगे। यह बेहद का ड्रामा है। तुम्हारा है सबसे मुख्य पार्ट बाप के साथ। जो तुम पुरानी दुनिया को नई बनाते हो। यह है पुरूषोत्तम संगमयुग। अब तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। वहाँ दु:ख का नाम-निशान नहीं होगा। बाप है ही दु:ख हर्ता, सुख कर्ता। दु:ख से आकर

लिबरेट करते हैं। भारतवासी फिर समझते हैं इतना धन है, बड़े-बड़े महल है, बिजलियाँ हैं, बस यही स्वर्ग है। यह सब है माया का पाम्प। सुख के लिए साधन बहुत करते हैं। बड़े-बड़े महल मकान बनाते हैं फिर मौत कैसे अचानक हो जाता है, वहाँ मरने का डर नहीं। यहाँ तो अचानक मर जाते हैं फिर कितना शोक करते हैं। फिर समाधि पर जाकर आंसू बहाते हैं। हर एक की अपनी-अपनी रसमरिवाज है। अनेक मत हैं। सतयुग में ऐसी बात होती नहीं। वहाँ तो एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। तो तुम कितना सुख में जाते हो। उसके लिए कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। कदम-कदम पर मत लेनी चाहिए। गुरु की वा पति की मत लेते हैं वा तो अपनी मत से चलना होता है। आसुरी मत क्या काम देंगी। आसुरी तरफ ही ढकेलेंगी। अब तुमको मिलती है ईश्वरीय मत, ऊंच ते ऊंच। इसलिए गाया हुआ भी है—श्रीमत भगवानुवाच। तुम बच्चे श्रीमत से सारे विश्व को हेविन बनाते हो। उस हेविन के तुम मालिक बनते हो। इसलिए तुम्हें हर कदम पर श्रीमत लेनी है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर मत पर चलते नहीं हैं। बाबा ने समझाया है किसको भी अपना कुछ अक्ल हो, राय हो तो बाबा को भेज देवें। बाबा जानते हैं कौन-कौन राय देने लायक हैं। नये-नये बच्चे निकलते रहते हैं। बाबा तो जानते हैं ना कौन से अच्छे-अच्छे बच्चे हैं। दुकानदारों को भी राय निकालनी चाहिए—ऐसे यत्न करें जो बाप का परिचय मिले। दुकान में भी सबको याद कराते रहें। भारत में जब सतयुग था तो एक धर्म था। इसमें नाराज़ होने की तो बात ही नहीं। सबका एक बाप है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाएं। स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. श्रीमत पर चलकर सारे विश्व को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, बहुतों को आप समान बनाना है। आसुरी मत से अपनी सम्भाल करनी है।

२. याद की मेहनत से आत्मा को सतोप्रधान बनाना है। सुदामा मिसल जो भी चावल मुट्ठी हैं वह सब सफल कर अपनी सर्व कामनायें सिद्ध करनी है।

वरदान:- सेवा करते उपराम स्थिति में रहने वाले योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी भव

जो योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी हैं वह सेवा करते भी सदा उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं सेवा ज्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। लेकिन याद रहे कि मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। ट्रस्टी हूँ, बंधनमुक्त हूँ - ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो। जैसे बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक को कन्ट्रोल करते हो ऐसे अति के समय अन्त की स्टेज का अनुभव करो तब अन्त के समय पास विद आनर बन सकेंगे।

स्लोगन:-

समय पर कोई भी साधन न हो तो भी साधना में विघ्न न पड़े।

"मीठे बच्चे - मतभेद में आकर आपस में रूठकर पढ़ाई मत छोड़ो, पढ़ाई छोड़ने से माया अजगर के पेट में चले जायेंगे"

प्रश्नः- यह कॉमन सतसंग न होने के कारण बाप को किन बातों में बच्चों को बार-बार सावधान करना पड़ता है?

उत्तरः यह दुनिया के सतसंगों की तरह सतसंग नहीं, यहाँ तो पावन बनने की शिक्षा मिलती है। पावन बनने में माया के विघ्न पड़ते हैं। इसलिए बाप को बार-बार सावधान करना पड़ता हैं। बच्चे कभी, कुछ भी हो -तुम सुख-दुःख, निंदा-स्तुति सुनते पढ़ाई को कभी नहीं छोड़ना। २- अपने को मिया मिट्ठू समझ किसी का ग्लानी मत करना। माया बड़ी चंचल है। अगर बाप से रूठकर पढ़ाई छोड़ी तो माया माथा मूढ़ लेगी। गृहचारी बैठ जायेगी, इसलिए श्रीमत लेते रहना। बापदादा की कभी टीका-टिप्पणी नहीं करना।

गीतः- मरना तेरी गली में... ओम् शान्ति।

यह तो बच्चे जानते है, कहते हैं जब हम आपके बने हैं यह पुरानी दुनिया तो खत्म होनी ही है। यह बेहद के रावण की लंका है जो विनाश होनी है। वह जो सीलोन में लंका दिखाते हैं वह तो बात ही बिल्कुल झूठी है। सीलान एक टापू (बेट) है — समुद्र के बीच में। बेहद का बाप समझाते हैं कि यह सारी दुनिया है समुद्र के ऊपर, आलराउन्ड समुद्र है। दिखाते हैं ना — वास्कोडिगामा ने आलराउन्ड चक्र लगाया तो गोया धरती पानी के ऊपर ठहरी हुई है। बेट हो गया ना। यह बेहद की खाड़ी है। रावण का राज्य सारे बेहद के आइलैण्ड पर है। यह बेहद की लंका है। सिर्फ सिलान नहीं है। वह समय तो अब है ना। वह शास्त्रों में कितने गपोड़े लगाये हैं। हम भी समझते थे, शायद ऐसा हुआ होगा। कुछ भी ख्याल नहीं चलता था। विचार करें तब तो ख्याल चले ना। बुद्धि बिल्कुल लॉकप थी। अब बुद्धि का ताला खुला है। मनुष्य तो समझते हैं बन्दर सेना ली, उन्होंने पत्थर उठाये, पुल बनाई, आग लगाई..... क्या-क्या बातें बैठ बनाई हैं। आग तो इस समय सारी दुनिया को लगती है। यह अविनाशी बाप की अविनाशी जन्म भूमि है, इसलिए इनको अविनाशी खण्ड कहा जाता है। बरोबर भारत प्राचीन था, अब तुम्हारी बुद्धि में बैठा है। बरोबर भारत अविनाशी खण्ड है, बाकी जो इस समय खण्ड हैं वह सब खत्म हो जायेंगे, विनाश ज्वाला में। यह विनाश ज्वाला इस यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। लड़ाई शुरू यहाँ से ही हुई है। अभी तो यह छोटी-छोटी रिहर्सल है। तुम्हारी बुद्धि में है कि सारी दुनिया में ही रावणराज्य है। इसका अब अन्त है और राम राज्य की आदि है। यह बातें और किसकी बुद्धि में आ न सकें। तुम थोड़े से ही ब्राह्मण जानते हो। समझते भी हैं कि अभी यह सारी दुनिया खत्म हो जायेगी। हम तुम्हारे गले का हार बन जायेंगे, फिर नई दुनिया में आयेंगे। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्रॉफी हूबहू रिपीट होती है। कितना अच्छा यह चक्र है। कलियुग अन्त और सतयुग आदि, इस समय सभी धर्म भी जरूर हैं। हिस्ट्री मस्ट रिपीट, यानी कलियुग के बाद सतयुग जरूर होना है। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन जरुर आता है। ऐसे हो न सके कि रात न आये। बाप सब राज आकरके

समझाते है। हम एकदम 84 जन्म कैसे लेते है वह भी तो जानना चाहिए। 84 लाख जन्म की तो बात ही नही है। कल्प की आयु हो 5 हजार वर्ष है। वो लोग तो तुमको कहते है कि शास्त्रो मे तो ऐसा है नही, यह तो तुम्हारी कल्पना है। न जानने के कारण तो ऐसे ही कहेंगे ना। शास्त्र तो पढते रहते है, उनका कोई दोष तो है नही। बाबा कहते है सतयुग मे यह शास्त्र, कहानियाँ, नॉवल्स आदि तो होंगी नही। वहाँ तो भारत बिल्कुल सचखण्ड बन जाता है। भारत खण्ड सबसे बडे ते बड़ा तीर्थ है। यहाँ सोमनाथ का मन्दिर कितना भारी है। ऐसा मन्दिर कब, कहाँ भी बन नहीं सकता। फिर भी यह मन्दिर आदि बनेंगे ... जब भक्तिमार्ग शुरू होगा तब बनाते हैं और कोई ... बना न सके। तुम संवत भी बता सकते हो। आज से फलाने टाइम से भक्ति शुरू होगी। पहले लक्ष्मी-नारायण ही पुजारी बनेंगे, सिंगल ताज होगा। शिवबाबा का सोमनाथ मन्दिर बनायेंगे। फिर से मुहम्मद गजनवी आदि आकर लूटेंगे। यह बातें तुम बच्चों को बाप ही बैठ समझाते हैं। कहते भी हैं भगवान आया–गीता का ज्ञान इतना सुनाया जो सारा सागर स्याही बनाओ, सारा जंगल कलम बनाओ तो भी लिख न सके और उन्होने गीता फिर कितनी छोटी बना दी है। गीता लाकेट में भी होती है। वैल्युबुल चीज है ना। इतना लव गीता पर रहता है। बाबा ने इतनी छोटी सोनी डिब्बी में डाल प्रेजन्ट भी दी है। अब तुम बच्चे समझते हो कि ज्ञान का ... अथाह ज्ञान देते हैं और अन्त तक देते ही रहेंगे। हम यह मुरली इक्ट्ठी कर सकेंगे क्या? यह रखने का चार्ज ही नहीं है। शास्त्र आदि तो फिर भी भक्ति मार्ग के काम में आते हैं। हम जो लिखते हैं वह फिर क्या काम में आयेंगे! कहाँ तो हमारी 2-4 हजार मुरलियां, कहाँ उन्हों की करोडों के अन्दाज में गीतायें बनती हैं सब भाषाओं में। सर्वशास्त्र मई शिरोमणी गीता का बहुत मान है। गीता शास्त्र आदि कितने पढते होंगे। बाप समझाते हैं – यह ज्ञान जो तुमको मिलता है यह बिल्कुल ही नया है। इसका पुस्तक तो है नहीं। भगवान राजयोग कैसे सिखाते है। यह अब तुम ब्राह्मण ही जानते हो। तुम्हारे में भी इस ज्ञान के नशे में रहने वाले बहुत थोड़े हैं। आज इस नशे में रहते हैं, कल भूल जाते हैं। बाप को भूल जाते हैं तो ज्ञान को भी भूल जाते हैं। बाप को फारकती दी तो खलास। बाप का बनकर अगर विकार में गये तो गला घुट जायेगा, कुछ भी बोल नहीं सकेंगे। जो बहुत अच्छा-अच्छा प्रचार करते थे वह आज हैं नहीं। कोई ब्रह्माकुमार कुमारी का आपस में मतभेद हुआ तो बाप पर गुस्से हो जाते हे कि बाबा इनको समझाते नहीं। आखरीन पढाई ही छोड देते है। इसलिए बाप कहते है कि महामूर्ख देखना हो तो यहाँ देखो। लिखकर भी देते हैं कि बाबा मै आपका हूँ। आप से हम सदा सुख का वर्सा अविनाशी लेंगे। फिर फारकती दे देते। डायओर्स दे देते है। अच्छी-अच्छी बच्चियां थी आज वह हैं नहीं, तो वन्डर है ना, माया ऐसा डसती है जो बडे-बडे महारथी जिनको हनुमान कहते थे परन्तु वह आज हैं नहीं। अजगर के पेट मे चले गये। मुख से कुछ कह न सके। यह अविनाशी ज्ञान सुना न सके। बापदादा की राय पर टीका-टिप्पणी करने लग पड़ते हैं। बहुत समझाया जाता है कि कुछ सुधरो जाओ, इसमें ही कल्याण है। परन्तु सुधरते नहीं। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे चले गये। आज भी बहुत ऐसे बच्चे है जो किनारे पर खडे हैं। ब्लड से प्रतिज्ञा लिखकर भी छोड देते है। बच्चों को तो बाप की पूरी श्रीमत पर चल बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए।

बाप समझाते रहते है--कुछ भी हो दु:ख-सुख, स्तुति-निंदा आदि कोई करे तुम पढ़ाई को तो ना छोड़ो। कोई किसकी निंदा भी करते हैं क्योंकि बुद्धि में तो ज्ञान है नहीं। जानते नहीं है कि यह छोटा भाई है वा बड़ा। यह तो बाप ही जाने। अपने मुँह मिया मिट्ठू नहीं बनना है। माया बड़ी चंचल है। देह-अभिमान वालों का माथा ही एकदम मूड लेती है। बाबा बच्चों को खबरदार करते रहते हैं। कहाँ न कहाँ माया वार करती रहेगी - अगर श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो। यह कोई कॉमन सतसंग थोड़ेही है।

तुम कितना धीर्य से बैठ समझाते हो। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। कैसे तुम स्वदर्शन चक्रधारी बने हो। बाप कहते हैं ब्राह्मण कुल भूषण स्वदर्शन चक्रधारी। शंख, चक्र, गदा, पदमधारी - तुमको कहते हैं। वह कहेंगे क्या देवताओं की महिमा अपने बच्चों को दे रखी है। बाप कहते हैं हे स्वदर्शन चक्रधारी, हे कमल फूल समान पवित्र बनने वाले, हे गदाधारी--यह बाप ही समझाते हैं। दुनिया क्या जाने। कहते भी हैं सर्व का सद्गति दाता एक है। गाते भी हैं ज्ञान अंजन सतगुरू दिया...अर्थात् ब्रह्मा की रात खत्म होती है। ज्ञान सूर्य प्रगटा, ब्रह्मा की रात पूरी होती फिर दिन शुरू हो जाता है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नया ज्ञान देते हैं। आगे तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे। न आत्मा को, न परमात्मा को, न रचता को और न रचना को जानते थे। बिल्कुल ही तुच्छबुद्धि बन पड़े थे। तुमको क्या बनाया था! तुम स्वर्ग के मालिक थे ना। फिर 84 जन्म लेते-लेते अन्त तो आयेगा ना। अब तुम्हारी चढ़ती कला है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। विवेक भी कहता है कि परमपिता परमात्मा है स्वर्ग का रचयिता, तो हम स्वर्ग में क्यों नहीं हैं! मनुष्यों की बुद्धि में नहीं आता कि भगवान ने तो नई सृष्टि स्वर्ग रचा, जहाँ देवी-देवता राज्य करते थे। 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग था। अब फिर भगवान आये हैं स्वर्ग की स्थापना करने। यह बातें बुद्धि में अच्छी रीति बैठ जाएं तो भी अहो सौभाग्य। माया ऐसी है जो बिल्कुल ही पुरूषार्थ करने नहीं देती। नाक से पकड़ घूंसा मार एकदम बेहोश कर देती है। बॉक्सिंग है ना। बाबा कहते हैं माया एक सेकेण्ड में गिरा देती है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति से सेकेण्ड में जीवनबंध बन पड़ते हैं। फारकती दे देते हैं, खलास। निश्चय हुआ --यह बादशाही लो। संशय हुआ खलास। बड़ा वन्डरफुल खेल है। बाबा कहते हैं अमृतवेले उठ विचार सागर मंथन करो और तो टाइम सारे दिन में मिलता नहीं है। रात को तो वायुमण्डल खराब रहता है। भक्ति भी सवेरे उठकर करते हैं। तुम बच्चों को मालूम है कि बाबा एक दो बजे उठकर मुरली लिखते थे, जो तुम पढ़कर और चलाते थे। फिर बाबा बैठ सुनते थे कि देखें कैसे चलाते हैं। यह सब तो शिवबाबा का ही कमाल था। कितने अच्छे-अच्छे बच्चे थे, चले गये। आज है नहीं। माया ने एकदम [illegible]पित कर दिया। बाप ना वर्सा दे रहे हैं। तो बच्चों को पूरा पुरूषार्थ कर वर्सा लेना चाहिए। अच्छी रीति खुद भी समझते हैं। बाप भी समझते हैं। बाप का हाथ छोड़ देते हैं। सब कहेंगे तुमने बी.के.को छोड़ दिया है। तुमको तो निश्चय था ना कि हम बेहद का वर्सा पा रहे है फिर क्या हुआ जो मुरली भी नहीं सुनते हो। फिर तो बाप को भी नही याद करते होंगे। फिर वह याद आदि सब उड़ जाती है। ऐसी दुर्गति शल किसी बच्चे की न हो। बाप तो समझ सकते है ना -- [illegible] का बच्चा बड़ा खराब हो गया है। अच्छे-अच्छे बच्चे

भी संगदोष में खराब हो पड़ते है। बाबा कहते है कि फर्स्टक्लास बच्चे ही विजय माला के मणके बन सकते हैं। कई बच्चे लिखते है कि बाबा हम आपकी माला का मणका जरूर बनेंगे। बाबा तो कहते हैं तुम बनो – अहो सौभाग्य। बाप भी चलन से समझ जायेंगे। सर्विस से ही बच्चों की वफादारी, फरमानबरदारी सिद्ध होती है। अति मीठा बनना चाहिए। सम्मुख सुनने से वैराग्य आता है। ऐसा फिर कभी नहीं करेंगे, यह करेंगे। यहाँ से बाहर निकला बस खलास। सब भूल जाते हैं। कितनी वन्डरफुल बातें हैं।

बाबा के तो दिन-रात ख्यालात चलते रहते हैं। प्रोजेक्टर मे गोला इतना बडा दिखाई पडना चाहिए जो मनुष्य दूर से ही एकदम अच्छी रीति पढ सकें। बडी दीवारों पर इतना बड़ा दिखाई पड़े। क्लीयर हो। एक-एक चित्र स्लाइड से इतना बड़ा दिखाई पड़े जो सामने कोई भी पढ सके। दो गोले भी इतने बडे दिखाई पडे। यहाँ से भक्ति मार्ग शुरू होता है। पहले होती है–अव्यभिचारी भक्ति, फिर है व्यभिचारी भक्ति। रात को यही ख्यालात बाबा को चलते रहते हैं। हम तो यहाँ बैठे हैं, चित्र वहाँ बन रहे हैं। त्रिमूर्ति भी बहुत बड़ा होना चाहिए–जो कोई भी दूर से पढ सके। बाबा डायरेक्शन तो देते रहते हैं। लिखत भी इनमें क्लीयर हो। ब्रह्मा है सपूत बच्चा। ब्रह्मा से कोई सवाल पूछे तो जवाब नहीं दे सकते हैं क्या? भल शिवबाबा तो जानते हैं परन्तु मैं भी तो समझा सकता हूँ ना। बाबा ने राइटहैण्ड बनाया है। कुछ तो समझा होगा ना।

अच्छा–मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1- अमृतवेले उठ विचार सागर मंथन करना है। कभी भी संशयबुद्धि बन, संगदोष में आकर पढ़ाई नहीं छोड़नी है।

2- माला का मणका बनने के लिए वफादार, फरमानबरदार बनना है। अपनी चलन रॉयल रखनी है। बहुत-बहुत मीठा बनना है।

वरदान:- अपने भाग्य की स्मृति से सदा खुशी में डांस करने वाले खुशनसीब भव

अमृतवेले से रात तक आप ब्राह्मण बच्चों को जो श्रेष्ठ भाग्य मिला है, उस भाग्य की लिस्ट सदा सामने रखो और यही गीत गाते रहो – वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य, जो भाग्य-विधाता ही अपना हो गया। इसी नशे में सदा खुशी की डांस करते रहो। कुछ भी हो जाए, मरने तक की बात भी आ जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। शरीर चला जाए कोई हर्जा नहीं लेकिन खुशी नहीं जाए।

स्लोगन:-

हर्षितमुख रहना है तो साक्षीपन की सीट पर बैठ, दृष्टा बनकर हर खेल को देखते चलो।

9-2-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे — तुम आत्माओं का स्वधर्म शान्ति है, तुम्हारा देश शान्तिधाम है, तुम आत्मा शान्त स्वरूप हो इसलिए तुम शान्ति मांग नहीं सकते"

प्रश्न:- तुम्हारा योगबल कौन-सी कमाल करता है?

उत्तर:- योगबल से तुम सारी दुनिया को पवित्र बनाते हो, तुम कितने थोड़े बच्चे योगबल से यह सारा पहाड़ उठाए सोने का पहाड़ स्थापन करते हो। 5 तत्व सतोप्रधान हो जाते हैं, अच्छा फल देते हैं। सतोप्रधान तत्वों से यह शरीर भी सतोप्रधान होते हैं। वहाँ के फल भी बहुत बड़े-बड़े स्वादिष्ट होते हैं।

ओम् शान्ति। जब ओम् शान्ति कहा जाता है तो बहुत खुशी होनी चाहिए क्योंकि वास्तव में आत्मा है ही शान्त स्वरूप, उसका स्वधर्म ही शान्त है। इस पर सन्यासी भी कहते हैं, शान्ति का तो तुम्हारे गले में हार पड़ा है। शान्ति को बाहर कहाँ ढूँढते हो। आत्मा स्वत: शान्त स्वरूप है। इस शरीर में पार्ट बजाने आना पड़ता है। आत्मा सदा शान्त रहे तो कर्म कैसे करेगी? कर्म तो करना ही है। हाँ, शान्तिधाम में आत्मायें शान्त रहती हैं। वहाँ शरीर है नहीं, यह कोई भी सन्यासी आदि नहीं समझते कि हम आत्मा हैं, शान्तिधाम में रहने वाली हैं। बच्चों को समझाया गया है—शान्तिधाम हमारा देश है, फिर हम सुखधाम में आकर पार्ट बजाते हैं फिर रावण राज्य होता है दु:खधाम में। यह 84 जन्मों की कहानी है। भगवानुवाच है ना अर्जुन प्रति कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। एक को क्यों कहते हैं? क्योंकि एक की गैरन्टी है। इन राधे-कृष्ण की तो गैरन्टी है ना तो इनको ही कहते हैं। यह बाप भी जानते हैं, बच्चे भी जानते हैं कि यह जो सब बच्चे हैं सब तो 84 जन्म लेने वाले नहीं हैं। कोई बीच में आयेंगे, कोई अन्त में आयेंगे। इनकी तो सर्टेन है। इनको कहते हैं—हे बच्चे। तो यह अर्जुन हुआ ना। रथ पर बैठा है ना। बच्चे खुद भी समझ सकते हैं—हम जन्म कैसे लेंगे? सर्विस ही नहीं करते हैं तो सतयुग नई दुनिया में पहले कैसे आयेंगे? इनकी तकदीर कहाँ है। पीछे जो जन्म लेंगे उनके लिए तो पुराना घर होता जायेगा ना। मैं इनके लिए कहता हूँ, जिनके लिए तुमको भी सर्टेन है। तुम भी समझ सकते हो—मम्मा-बाबा 84 जन्म लेते हैं। कुमारका है, जनक है, ऐसे-ऐसे महारथी जो हैं वह 84 जन्म लेते हैं। जो सर्विस नहीं करते हैं तो जरूर कुछ जन्म बाद में आयेंगे। समझते हैं हम तो नापास हो जायेंगे, पिछाड़ी में आ जायेंगे। स्कूल में दौड़ी पहन निशाने तक आकर फिर वापिस लौटते हैं ना। सब एकरस हो न सकें। रेस में ज़रा पाव इंच का भी फर्क पड़ता है तो प्लस में आ जाता है, यह भी अश्व रेस है। अश्व घोड़े को कहा जाता है। रथ को भी घोड़ा कहा जाता है। बाकी यह जो दिखाते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा, उसमें घोड़े को हवन किया, यह सब बातें हैं नहीं। न दक्ष प्रजापिता है, न कोई यज्ञ रचा है। पुस्तकों में भक्ति मार्ग की कितनी दन्त कथायें हैं। उनका नाम ही कथा है। बहुत कथायें सुनते हैं। तुम तो यह पढ़ते हो। पढ़ाई को कथा थोड़ेही कहेंगे। स्कूल में पढ़ते हैं, एम ऑब्जेक्ट रहती है। हमको इस पढ़ाई से यह नौकरी मिलेगी। कुछ न कुछ मिलता है। अभी तुम बच्चों को देही-अभिमानी बहुत बनना है। यही मेहनत है। बाप को याद करने से ही विकर्म

विनाश होंगे। खास याद करना होता है, ऐसे नहीं कि मैं तो शिवबाबा का बच्चा हूँ ना फिर याद क्या करें। नहीं, याद करना है अपने को स्टूडेन्ट समझकर। हम आत्माओं को शिवबाबा पढ़ा रहे हैं, यह भी भूल जाते हैं। शिवबाबा एक ही टीचर है जो सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ सुनाते है, यह भी याद नहीं रहता है। हर एक बच्चे को अपने दिल से पूछना है कि कितना समय बाप की याद ठहरती है? जास्ती टाइम तो बाहरमुखता में ही जाता है। यह याद ही मुख्य है। इस भारत के योग की ही बहुत महिमा है। परन्तु योग कौन सिखलाते हैं—यह किसको पता नहीं है। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। अब कृष्ण को याद करने से तो एक भी पाप नहीं कटेगा क्योंकि वह तो शरीरधारी है। पांच तत्वों का बना हुआ है। उनको याद किया तो गोया मिट्टी को याद किया, 5 तत्वों को याद किया। शिवबाबा तो अशरीरी है इसलिए कहते हैं अशरीरी बनो, मुझ बाप को याद करो।

कहते भी हो—हे पतित-पावन, वह तो एक हुआ ना। युक्ति से पूछना चाहिए—गीता का भगवान कौन? भगवान रचयिता तो एक होता है। अगर मनुष्य अपने को भगवान कहलाते भी हैं तो ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि तुम सब हमारे बच्चे हो। या तो कहेंगे ततत्वम् या कहेंगे ईश्वर सर्वव्यापी है। हम भी भगवान, तुम भी भगवान, जिधर देखता हूँ तू ही तू है। पत्थर में भी तू, ऐसे कह देते। तुम हमारे बच्चे हो, यह कह नहीं सकते। यह तो बाप ही कहते हैं — हे मेरे लाडले रूहानी बच्चों। ऐसे और कोई कह न सके। मुसलमान को अगर कोई कहे मेरे लाडले बच्चों तो थप्पड़ मार दे। यह एक ही पारलौकिक बाप कह सकते हैं। और कोई सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दे न सके। 84 के सीढ़ी का राज़ कोई समझा न सके सिवाए निराकार बाप के। उनका असली नाम ही है शिव। यह तो मनुष्यों ने अथाह नाम रख दिये हैं। अनेक भाषायें हैं। तो अपनी-अपनी भाषा में नाम रख देते हैं। जैसे बाम्बे में बबुलनाथ कहते हैं, परन्तु वह अर्थ थोड़ेही समझते। तुम समझते हो कांटों को फूल बनाने वाला है। भारत में शिवबाबा के हजारों नाम होंगे, अर्थ कुछ नहीं जानते। बाप बच्चों को ही समझाते हैं। उसमें भी माताओं को बाबा जास्ती आगे करते हैं। आजकल फीमेल्स का मान भी है क्योंकि बाप आये हैं ना। बाप माताओं की महिमा ऊंच करते हैं। तुम शिव शक्ति सेना हो, तुम ही शिवबाबा को जानते हो। सच तो एक ही है। गाया भी जाता है सच की बेड़ी हिले डुले, डूबे नहीं। तो तुम सच्चे हो, नई दुनिया की स्थापना कर रहे हो। बाकी झूठी बेड़ियां सब खत्म हो जायेंगी। तुम भी कोई यहाँ राज्य करने वाले नहीं हो। तुम फिर दूसरे जन्म में आकर राज्य करेंगे। यह बड़ी गुप्त बातें हैं जो तुम ही जानते हो। यह बाबा न मिला होता तो कुछ भी नहीं जानते थे। अभी जाना है। यह है युधिष्ठिर, युद्ध के मैदान में बच्चों को खड़ा करने वाला। यह है नानवायोलेन्स, अहिंसक। मनुष्य हिंसा समझ लेते हैं मारामारी को। बाप कहते हैं पहली मुख्य हिंसा तो काम कटारी की है। इसलिए काम महाशत्रु कहा है, इन पर ही विजय पानी है। मूल बात है ही काम विकार की, पतित माना विकारी। विकारी कहा ही जाता है पतित बनने वाले को, जो विकार में जाते हैं। क्रोध करने वाले को ऐसे नहीं कहेंगे कि यह विकारी है। क्रोधी को क्रोधी, लोभी को लोभी कहेंगे। देवताओं को निर्विकारी कहा जाता है। देवतायें निर्लोभी, निर्मोही, निर्विकारी हैं। वह कभी विकार में नहीं जाते। तुमको कहते हैं विकार बिगर बच्चे कैसे होंगे? उन्हों

को तो निर्विकारी मानते हो ना। वह है ही वाइसलेस दुनिया। द्वापर कलियुग है विशश दुनिया। खुद को विकारी, देवताओं को निर्विकारी कहते तो हैं ना। तुम जानते हो हम भी विकारी थे। अब इन जैसा निर्विकारी बन रहे हैं। इन लक्ष्मी-नारायण ने भी याद के बल से यह पद पाया है फिर पा रहे हैं। हम ही देवी-देवता थे, हमने कल्प पहले ऐसे राज्य पाया था, जो गँवाया, फिर हम पा रहे हैं। यही चिंतन बुद्धि में रहे तो भी खुशी रहेगी। परन्तु माया यह स्मृति भुला देती है। बाबा जानते हैं तुम स्थाई याद में रह नहीं सकेंगे। तुम बच्चे अडोल बन याद करते रहो तो जल्दी कर्मातीत अवस्था हो जाए और आत्मा वापिस चली जाए। परन्तु नहीं। पहले नम्बर में तो यह जाने वाला है। फिर है शिवबाबा की बरात। शादी में मातायें मिट्टी के मटके में ज्योति जगाकर ले जाती हैं ना, यह निशानी है। शिवबाबा साजन तो सदा जागती ज्योत है। बाकी हमारी ज्योति जगाई है। यहाँ की बात फिर भक्ति मार्ग में ले गये हैं। तुम योगबल से अपनी ज्योति जगाते हो। योग से तुम पवित्र बनते हो। ज्ञान से धन मिलता है। पढ़ाई को सोर्स ऑफ इनकम कहा जाता है ना। योगबल से तुम खास भारत और आम सारे विश्व को पवित्र बनाते हो। इसमें कन्यायें बहुत अच्छी मददगार बन सकती हैं। सर्विस कर ऊंच पद पाना है। जीवन हीरे जैसे बनाना है, कम नहीं। गाया जाता है फालो फादर मदर। सी मदर फादर और अनन्य ब्रदर्स, सिस्टर्स।

तुम बच्चे प्रदर्शनी में भी समझा सकते हो कि तुमको दो फादर हैं — लौकिक और पारलौकिक। इसमें बड़ा कौन? बड़ा तो जरूर बेहद का बाप हुआ ना। वर्सा उनसे मिलना चाहिए। अभी वर्सा दे रहे हैं, विश्व का मालिक बना रहे हैं। भगवानुवाच—तुमको राजयोग सिखाता हूँ फिर तुम दूसरे जन्म में विश्व के मालिक बनेंगे। बाप कल्प-कल्प भारत में आकर भारत को बहुत साहूकार बनाते हैं। तुम विश्व के मालिक बनते हो इस पढ़ाई से। उस पढ़ाई से क्या मिलेगा? यहाँ तो तुम हीरे जैसा बनते हो 21 जन्म लिए। उस पढ़ाई में रात-दिन का फर्क है। यह तो बाप, टीचर, गुरु एक ही है। तो बाप का वर्सा, टीचर का वर्सा और गुरु का वर्सा सब देते हैं। अब बाप कहते हैं देह सहित सबको भूलना है। आप मुये मर गई दुनिया। बाप के एडाप्टेड बच्चे बने, बाकी किसको याद करेंगे। दूसरों को देखते हुए जैसे कि देखते नहीं। पार्ट में भी आते हैं परन्तु बुद्धि में है—अब हमको घर जाना है फिर यहाँ आकर पार्ट बजाना है। यह बुद्धि में रहे तो भी बहुत खुशी रहेगी। बच्चों को देह भान छोड़ देना चाहिए। यह पुरानी चीज़ यहाँ छोड़नी है, अब वापिस जाना है। नाटक पूरा होता है। पुरानी सृष्टि को आग लग रही है। अन्धे की औलाद अन्धे अज्ञान नींद में सोये पड़े हैं। मनुष्य तो समझेंगे यह सोया हुआ मनुष्य दिखाया है। परन्तु यह अज्ञान नींद की बात है, जिससे तुम जगाते हो। ज्ञान अर्थात् दिन है सतयुग, अज्ञान अर्थात् रात है कलियुग। यह बड़ी समझने की बातें हैं। कन्या शादी करती है तो माता-पिता, सासू-ससुर आदि भी याद आयेगा। उनको भूलना पड़े। ऐसे भी युगल हैं, जो सन्यासियों को दिखाते हैं—हम युगल बनकर कभी विकार में नहीं जाते हैं। ज्ञान तलवार बीच में है। बाप का फरमान है—पवित्र रहना है। देखो रमेश-उषा हैं, कभी भी पतित नहीं बने हैं, यह डर है अगर हम पतित बनें तो 21 जन्मों की राजाई खत्म हो जायेगी। देवाला मार देंगे। ऐसे कोई-कोई फेल हो पड़ते हैं। गन्धर्वी विवाह का नाम तो है ना। तुम जानते हो पवित्र रहने से पद बहुत ऊंच मिलेगा। एक जन्म के लिए पवित्र बनना है।

योगबल से कर्मेन्द्रियों पर भी कन्ट्रोल आ जाता है। योगबल से तुम सारी दुनिया को पवित्र बनाते हो। तुम कितने थोड़े बच्चे योगबल से यह सारा पहाड़ उड़ाए सोने का पहाड़ स्थापन करते हो। मनुष्य थोड़ेही समझते हैं, वह तो गोवर्धन पर्वत पिछाड़ी परिक्रमा देते रहते हैं। यह तो बाप ही आकर सारी दुनिया को गोल्डन एजेड बनाते हैं। ऐसे नहीं कि हिमालय कोई सोने का हो जायेगा। वहाँ तो सोने की खानियाँ भरतू हो जायेंगी। ५ तत्व सतोप्रधान हैं, फल भी अच्छा देते हैं। सतोप्रधान तत्वों से यह शरीर भी सतोप्रधान होते हैं। वहाँ के फल भी बहुत बड़े-बड़े स्वादिष्ट होते हैं। नाम ही है स्वर्ग। तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से ही विकार छूटेंगे। देह-अभिमान आने से विकार की चेष्टा होती है। योगी कभी विकार में नहीं जायेंगे। ज्ञान बल तो है, परन्तु योगी नहीं होगा तो गिर पड़ेगा। जैसे पूछा जाता है--पुरूषार्थ बड़ा या प्रालब्ध? तो कहते हैं पुरूषार्थ बड़ा। वैसे इसमें कहेंगे योग बड़ा। योग से ही पतित से पावन बनते हैं। अब तुम बच्चे तो कहेंगे हम बेहद के बाप से पढ़ेंगे। मनुष्य से पढ़ने से क्या मिलेगा? मास में क्या कमाई होगी? यह तुम एक-एक रत्न धारण करते हो। यह है लाखों रूपयों के। वहाँ पैसे की गिनती नहीं की जाती। अनगिनत धन होता है। सबको अपनी-अपनी खेतियां आदि होती हैं। अब बाप कहते हैं हम तुमको राजयोग सिखलाते हैं। यह है एम ऑब्जेक्ट। पुरूषार्थ करके ऊंच बनना है। राजधानी स्थापन हो रही है। इन लक्ष्मी-नारायण ने कैसे प्रालब्ध पाई, इनकी प्रालब्ध को जान गये तो बाकी क्या चाहिए। अभी तुम जानते हो कल्प 5 हज़ार वर्ष बाद बाप आते हैं, आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। तो बच्चों को सर्विस करने का उमंग होना चाहिए। जब तक कोई को रास्ता नहीं बताया है, खाना नहीं खायेंगे--इतना उल्लास-उमंग हो तब ऊंच पद पा सकते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. ईश्वरीय सर्विस कर अपना जीवन 21 जन्मों के लिए हीरे जैसा बनाना है। मात-पिता और अनन्य भाई-बहिनों को ही फालो करना है।

२. कर्मातीत अवस्था बनाने के लिए देह सहित सबको भूलना है। अपनी याद अडोल और स्थाई बनानी है। देवताओं जैसा निर्लोभी, निर्मोही, निर्विकारी बनना है।

वरदान:- मन्सा शक्ति द्वारा विशाल कार्य में सहयोगी बनने वाले विश्व राज्य अधिकारी भव

प्रकृति को, तमोगुणी आत्माओं के वायब्रेशन को परिवर्तन करना तथा खूने नाहेक वायुमण्डल, वायब्रेशन में स्वयं को सेफ रखना, अन्य आत्माओं को सहयोग देना, नई सृष्टि में नई रचना का योगबल से प्रारम्भ करना--इन सब विशाल कार्यों के लिए मन्सा शक्ति की आवश्यकता है। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी होगी। मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर--अभी इसके अनुभवी बनो तब बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे।

स्लोगन:-

जब बेहद की वैराग्य वृत्ति उत्पन्न हो तब आत्मायें पाप कर्मों के बोझ से मुक्त हों।

"मीठे बच्चे – बाप की सकाश लेने के लिए खुशबूदार फूल बनो, सवेरे-सवेरे उठकर याद में बैठ प्यार से बाबा से मीठी-मीठी बातें करो"

प्रश्न:- बाप को सब बच्चे नम्बरवार याद करते हैं लेकिन बाप किन बच्चों को याद करते हैं?

उत्तर:- जो बच्चे बहुत मीठे हैं। जिन्हें सर्विस के बिना और कुछ सूझता ही नहीं। जो अति प्रेम से बाप को याद करते, खुशी में प्रेम के आंसू बहाते। ऐसे बच्चों को बाप भी याद करते हैं। बाप की नज़र फूलों तरफ जाती है, कहेंगे फलानी आत्मा बड़ी अच्छी है, यह आत्मा जहाँ सर्विस देखती, भागती रहती है, अनेकों का कल्याण करती है। तो बाप उसे याद करते हैं।

ओम् शान्ति। बाप बैठकर सब आत्माओं को समझाते हैं। शरीर भी याद पड़ता तो आत्मा भी याद पड़ती है। शरीर बिगर आत्मा को नहीं याद किया जा सकता। समझा जाता है यह आत्मा अच्छी है, यह बाह्यमुखी है, यह इस दुनिया का सैर आदि करना चाहती है। यह उस दुनिया को भूली हुई है। पहले उनका नाम-रूप सामने आता है। फलाने की आत्मा को याद किया जाता है। फलाने की आत्मा अच्छी सर्विस करती है, इनका बुद्धियोग बाबा के साथ है। इनमें यह यह गुण हैं। पहले शरीर को याद करने से फिर आत्मा याद आती है। पहले शरीर याद आयेगा क्योंकि शरीर बड़ी चीज है ना। फिर आत्मा जो सूक्ष्म बहुत छोटी है, वह याद आयेगी। इन बड़े शरीर की कोई महिमा नहीं की जाती है। महिमा आत्मा की ही की जाती है। इनकी आत्मा अच्छी सर्विस करती है। फलाने की आत्मा इनसे अच्छी है। पहले तो शरीर याद आता है। बाप को तो अनेक आत्माओं को याद करना पड़ता है। शरीर का नाम याद नहीं आता, सिर्फ रूप सामने आता है। फलाने की आत्मा कहने से शरीर जरूर याद पड़ता है। जैसे समझते हो इस दादा के शरीर में शिवबाबा आते हैं। जानते हैं इनके तन में बाबा है। शरीर जरूर याद पड़ेगा। पूछते हैं–हम कैसे याद करें? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें? बहुतों का प्रश्न उठता है। बाबा कहते हैं–याद तो आत्मा को ही करना है। परन्तु शरीर भी जरूर याद आता है। पहले शरीर फिर आत्मा। बाबा इनके शरीर में बैठा है तो जरूर शरीर याद आयेगा। फलाने शरीर वाली आत्मा में यह गुण हैं। बाबा भी देखते रहते हैं–कौन मुझे याद करते हैं, किसमें बहुत गुण हैं, किस-किस फूल में खुशबू है? फूलों से सबका प्यार होता है। गुलदस्ता बनाते हैं। उसमें राजा, रानी, प्रजा भिन्न-भिन्न फूल-पत्ते आदि सब बनाते हैं। बाप की नज़र फूलों की तरफ जायेगी। कहेंगे, फलाने की आत्मा बड़ी अच्छी है। बड़ी सर्विस करती है। आत्म-अभिमान में रह बाप को याद करते रहते हैं। जहाँ सर्विस देखते हैं वहाँ भागते हैं। फिर भी सवेरे में उठकर याद में बैठते होंगे तो किसको याद करते होंगे? शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा? बाबा याद आता

होगा ना। इसमें शिवबाबा है क्योंकि बाप तो अभी नीचे आ गया। मुरली चलाने नीचे आये हैं। इनका अपने घर में तो कोई काम नहीं होगा। वहाँ जाकर क्या करेंगे? इस तन में ही प्रवेश करते हैं। तो पहले जरूर शरीर याद आयेगा फिर आत्मा। फलाने शरीर में जो आत्मा है यह अनन्य अच्छी है। इनको सर्विस बिगर कुछ सूझता नहीं है। बहुत मीठी है। बाबा बैठे रहते हैं, सबको देखते रहते हैं। फलानी बच्ची बहुत अच्छी है, बहुत याद करती है। बांधेली बच्चियों को विकार के लिए कितनी मार मिलती है! कितना प्रेम से याद करती होंगी! जब बहुत याद करती हैं तो खुशी के मारे प्रेम के आंसू भी आ जाते हैं। कभी-कभी वह आंसू गिर भी पड़ते हैं। बाबा को और धन्धा क्या है। सबको याद करते हैं। बहुत बच्चियां याद आती हैं। फलाने की आत्मा में दम नहीं है। बाप को याद नहीं करती। किसको सुख नहीं देती। यह अपना ही कल्याण नहीं करती। बाप तो यही जांच करते रहेंगे। याद करना माना सकाश देना। आत्मा का कनेक्शन परमात्मा के साथ रहता है ना। एक दिन आयेगा जबकि बच्चे योग में बहुत रहेंगे। यह भी किसको याद करेंगे तो झट साक्षात्कार होगा। आत्मा तो है छोटी बिन्दी। साक्षात्कार करें तो भी कोई समझ न सकें फिर भी शरीर ही याद आता है। आत्मा है छोटी परन्तु याद करती है तो उनकी आत्मा पावन बनती जाती है। बगीचे में वैराइटी फूल होते हैं। बाबा भी देखते हैं यह बहुत अच्छा खुशबूदार फूल है, यह इतना नहीं। तो पद भी कम होगा। बाबा के जो मददगार बनते हैं, वही ऊंच पद पाते हैं। वह भी जो बाप को याद करते रहते हैं। ब्राह्मण से ट्रॉन्सफर हो देवता बनते हैं। यह वर्णन भी संगम पर ही कर सकते हैं कि यह दैवी फूल है या आसुरी फूल है? फूल तो सब हैं परन्तु वैराइटी बहुत है। बाबा भी याद करते रहते हैं। टीचर अपने स्टूडेन्ट को याद करेंगे ना। यह कम पढ़ते हैं। दिल में तो समझेंगे ना। यह बाप भी है, टीचर भी है। बाप तो है ही। टीचरपने का जास्ती चलता है। टीचर को तो रोज़ पढ़ाना है। इस पढ़ाई की ताकत से वह पद पाते हैं। सुबह को तुम सब भाई बाप की याद में बैठते हो, वह सब्जेक्ट है याद की। फिर मुरली चलती है, वह है पढ़ाई की सब्जेक्ट। मुख्य है ही योग और पढ़ाई। उनको ज्ञान और विज्ञान भी कहा जाता है। यह ज्ञान-विज्ञान भवन है, जहाँ बाप आकर सिखलाते हैं। ज्ञान से सारे सृष्टि की नॉलेज मिल जाती है। विज्ञान माना तुम योग में रहते हो जिससे तुम पावन बन जाते हो। तुमको अर्थ का पता है। बाप बच्चों को देखते रहते हैं। देही-अभिमानी बनने से ही भूत निकलेंगे। ऐसे नहीं, सबके भूत फट से निकल जायेंगे। हिसाब-किताब जब चुक्तू हो फिर चलन अनुसार ही पद पायेंगे। क्लास ट्रॉसफर होते हैं। इस दुनिया का ट्रांसफर नीचे हो रहा है और तुम्हारा ऊपर हो रहा है। कितना फ़र्क है। वह कलियुगी सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं और तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी, सीढ़ी ऊपर चढ़ते जाते हो। दुनिया तो यही है, सिर्फ़ बुद्धि का काम है। तुम कहते हो हम संगमयुगी हैं। पुरुषोत्तम बनाने लिए बाप को आना पड़ता है। तुम्हारे लिए अब पुरुषोत्तम संगमयुग है। बाकी सब घोर अन्धियारे में हैं। भक्ति को वह बहुत अच्छा समझते हैं क्योंकि ज्ञान का उन्हों को मालूम ही नहीं है। तुमको अभी ज्ञान मिला है, तब तुम समझते हो। ज्ञान की एक

चुटकी से आधाकल्प के लिए हम चढ़ जाते हैं। फिर वहाँ ज्ञान की बात भी नहीं होगी। यह सब बातें महारथी बच्चे ही सुनकर धारण कर और सुनाते रहेंगे। बाकी तो यहाँ से निकले और खलास। कर्म, अकर्म, विकर्म का राज़ भी भगवान् ही समझाते हैं। यह है कल्प का संगमयुग। जबकि पुरानी दुनिया ख़त्म हो नई दुनिया स्थापन होनी है। विनाश सामने खड़ा है। (तुम संगमयुग पर खड़े हो और मनुष्यों के लिए कलियुग चल रहा है। कितना घोर अन्धियारा है। गिरते ही रहते हैं। कोई तो निमित्त भी होगा। वह है रावण।)

इस सभा में वास्तव में कोई पतित बैठ नहीं सकता। पतित वायुमण्डल को खराब करेंगे। अगर कोई छिपकर आकर बैठते हैं तो उनको चोट भी लगती है। एकदम गिर पड़ेंगे। ईश्वरीय सभा में कोई दैत्य आकर बैठते हैं तो झट पता पड़ेगा। पत्थरबुद्धि तो है ही, बाकी भी पत्थरबुद्धि हो जायेगा। सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा। अपने को नुकसान पहुँचायेंगे। कहते हैं हम देखेंगे इनको पता पड़ता है? हमको क्या पड़ी—जो करेगा, सो पायेगा। हमको जानने की जरूरत नहीं। बाप से सदैव सच्चा रहना है। कहते हैं सच तो बिठो नच। सच्चे रहेंगे तो अपनी राजधानी में भी डांस करेंगे। (बाप है ही ट्रुथ। तो बच्चों को भी ट्रुथ बनना चाहिए। बाबा पूछते हैं—शिवबाबा कहाँ है? कहते हैं—इसमें है। परमधाम छोड़कर, दूर देश के रहने वाले आये देश पराये। उनको तो अब बहुत सर्विस करनी है। बाप कहते हैं—मुझे रात-दिन यहाँ सर्विस करनी पड़ती है। सन्देशियों को, भक्तों को साक्षात्कार कराना पड़ता है। है तो यहाँ ही। वहाँ तो कोई सर्विस नहीं। सर्विस बिगर बाबा को सुख न आये। सारी दुनिया की सर्विस करनी है। सब पुकारते हैं बाबा आओ।) कहते हैं मैं इस रथ में आता हूँ। उन्होंने फिर घोड़े गाड़ी बना दी है। अब घोड़े गाड़ी में कृष्ण कैसे बैठेंगे! ऐसे भी नहीं कोई शौक होता है घोड़े-गाड़ी पर बैठने का।

देही-अभिमानी और देह-अभिमानी बनने की बातें संगमयुग पर ही होती हैं और सिवाए बाप के यह बातें और कोई समझा भी नहीं सकते हैं। तुम भी अभी जानते हो। पहले नहीं जानते थे। क्या कोई गुरु ने सिखाया? गुरु तो बहुत किये। कोई ने भी नहीं सिखाया। (बहुत लोग गुरु करते हैं। समझते हैं कोई से शान्ति का रास्ता मिल जाए। बाप कहते हैं शान्ति का सागर तो एक बाप ही है, वह साथ ले जाते हैं।) सुखधाम-शान्तिधाम का किसको पता ही नहीं है। कलियुग में है शूद्र वर्ण। पुरुषोत्तम संगमयुग पर है ब्राह्मण वर्ण। इन वर्णों का भी तुम्हारे सिवाए कोई को पता नहीं है। यहाँ तो सुनते हैं, बाहर निकलने से सब कुछ भूल जाते हैं। धारणा होती नहीं। बाप कहते हैं कहाँ भी जाते हो, बैज पड़ा हो। इसमें लज्जा की बात नहीं है। यह तो बाबा ने बहुत कल्याण के लिए बनाया है। किसको भी समझा कर दो। कोई सेन्सीबुल होगा तो कहेगा इस पर आपका खर्चा हुआ होगा। बोलो—खर्चा तो होता ही है। गरीबों के लिए फ्री है। वह धारणा कर लें तो ऊंच पद पा सकते हैं। गरीब के पास पैसे ही नहीं तो क्या करेंगे। कोई के पास पैसे हैं परन्तु मनहूस हैं। इसने प्रैक्टिकल करके दिखाया। सब कुछ माताओं के हवाले कर दिया। तुम बैठ सब कुछ सम्भालो क्योंकि अब तो यह ज्ञान मिला है कि पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। अन्तकाल जो स्त्री सिमरे....।

बड़ी बिल्डिंग्स आदि होंगी तो अवश्य याद पड़ेंगी। परन्तु थोड़ा भी ज्ञान सुना तो प्रजा में ज़रूर आयेंगे। बाप तो हैं ही गरीब निवाज़। कोई-कोई के पास पैसे होते हैं तो भी मनहूस होते हैं। ऐसे नहीं समझते कि पहला वारिस तो शिवबाबा है। भगवान् वारिस तो भक्ति मार्ग में भी है। ईश्वर अर्थ देते हैं। क्या वह कंगाल है जो उनको देते हैं! समझते हैं ईश्वर के नाम पर गरीबों को देंगे तो ईश्वर एवज में देंगे। दूसरे जन्म में मिलता तो है। कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप को सब कुछ दे दिया, शरीर, मित्र-सम्बन्धी आदि सब कुछ बाबा को समर्पण कर दिया। यह सब कुछ आपका है। इस समय सारी दुनिया पर ग्रहण लगा हुआ है। वह कैसे एक सेकण्ड में छूटता है, काले से गोरे कैसे बनते हैं, यह अब तुम ही जानते हो फिर औरों को समझाते हो। जो कहते हैं—हम अन्दर में समझते हैं परन्तु किसको समझा नहीं सकते हैं, वह भी कोई काम के नहीं। बाप कहते हैं—दे दान तो छूटे ग्रहण। हम तुमको अविनाशी रत्न देते हैं, वह सबको देते जाओ तो भारत पर वा सारी दुनिया पर जो राहू का ग्रहण बैठा हुआ है, वह उतर जाये और बृहस्पति की दशा हो जाये। सबसे अच्छी होती है बृहस्पति की दशा। अब तुम जानते हो भारत ख़ास और आम दुनिया पर राहू का ग्रहण लगा हुआ है। वह कैसे छूटे? यह तो बाप है ना। बाप तुम्हारे से पुराना लेकर नया देते हैं। इसको कहा जाता है बृहस्पति की दशा। मुक्तिधाम में जाने वालों के लिए बृहस्पति की दशा नहीं कहेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सदा खुशी में डांस करने के लिए सच्चे बाप से सदा सच्चा रहना है। कुछ भी छिपाना नहीं है।

२. बाप जो अविनाशी रत्न देते हैं, वह सबको बांटने हैं। साथ-साथ शिवबाबा को अपना वारिस बनाकर सब कुछ सफल करना है। इसमें मनहूस नहीं बनना है।

वरदान:- परमपूज्य बन परमात्म प्यार का अधिकार प्राप्त करने वाले सम्पूर्ण स्वच्छ आत्मा भव

सदा ये स्मृति जीवन में लाओ कि मैं पूज्य आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूँ। ऐसी पूज्य आत्मा ही सर्व की प्यारी है। उनकी जड़ मूर्ति भी सबको प्यारी लगती है। कोई आपस में भल झगड़ते हों लेकिन मूर्ति को प्यार करेंगे क्योंकि उनमें पवित्रता है। तो अपने आपसे पूछो मन-बुद्धि सम्पूर्ण स्वच्छ बनी है, जरा भी अस्वच्छता मिक्स तो नहीं है? जो ऐसे सम्पूर्ण स्वच्छ हैं वही परमात्म प्यार के अधिकारी हैं।

स्लोगन:-

अपनी सेवा को भी बाप के आगे अर्पित कर दो तब कहेंगे समर्पित आत्मा।

बनना। गुणों से जैसा चाहो वैसे कर सकते हो। सो सदैव रूहानी सच्ची सजाई मूर्त हो विश्व की परिक्रमा करने वाले।

(मगन शक्ति अर्थात अपने अनेक टाईटल अर्थात स्वरूप स्मृति मे रखो-अनेक प्रकार के खुशी की प्वाईन्ट्स स्मृति मे रखो, रूहानी नशे के प्वाईन्ट्स स्मृति मे रखो, रचता बाप के परिचय की प्वाईन्ट्स बुध्दी मे रखो, रचना के विस्तार की प्वाईन्ट्स स्मृति मे रखो। याद और अनेक प्रकार के अनुभव और प्राप्तियों की प्वाईन्ट्स को स्मृति मे रखो तो मगन शक्ति का खजाना बड़ा है जो चाहे उसका मनन करो) जो आपकी पसन्दी हो वह पसन्द करो- जो मनन करते मगन अवस्था भी सहज प्राप्त हो जावेगी। परवश के बजाए मायाजीत बनने का वशीकरण मन्त्र सदा साथ रहेगा और माया सदा के लिए नमस्कार करेगी। कलयुग का पहला भक्त आपकी माया होगी। मास्टर भगवान बनो तो भक्त भी बने ना। अगर खुद ही भक्त होंगे तो वह किसका भक्त बने- तो भक्त बनेंगे या मास्टर भगवान बनेंगे- इसका सहज साधन सुनाया। मगन शक्ति को बढ़ाओ। अच्छा।

(बंगाल बिहार का जो तो श्रृंगार करना जानता है, जैसे देवियों को बहुत सजाते है, अपने जड़ चित्रों को सजाने आता है ना। ऐसे स्वयं को सजाना है। इस जोन की भी विशेषता है - जो बाप को अति प्रिय है। ऐसे बच्चे बहुत है- वह कौन ? गरीब भी है और भोलेनाथ के भोले भी है-दोनो ही बाप को अति प्रिय है। इसलिए इस जोन का रूप देखो बड़ा है ना-इस जोन की विशेषता है- इस जोन मे कितने अलग-अलग प्रदेश है -नेपाल भी है तो आसाम भी है, वैरायटी फूलों का गुलदस्ता है सेवा भी अब विस्तार को पाती जा रही है। ((साकार तन को ढूंढा भी यहां से ही है। तो स्थान की विशेषता रही ना।) जैसे गवर्नमेन्ट को किस स्थान से कोई विशेष अमूल्य वस्तु मिलती है तो उस स्थान का महत्व रहता है-नामीग्रामी रहती-है हिस्ट्री मे आ जाती है। ऐसे यह स्थान भी बाप की हिस्ट्री मे विशेष स्थान है।) आगे चलकर इस स्थान का महत्व विश्व मे महत्वपूर्ण होगा-जैसे देहली की विशेषता अपनी है, बाम्बे की अपनी है। इस स्थान का महत्व भी बहुत बड़ा अपना है, इसलिए आगे चलकर और भी इस स्थान को विशेष भूमी की रीति से देखेंगे और सुनेंगे। ऐसे विशेष भूमी के निवासी भी विशेष आत्माये हो। भूमी के साथ आप लोग के भाग्य का भी सब वर्णन करेंगे। अच्छा-)

सदा शक्तिशाली स्वरूप मे स्थिती रह माया दुश्मन को भी अपना भक्त बनाने वाले, सदा सर्व खजाने स्वरूप मे स्थित रहनेवाले, वशीकरण मन्त्र द्वारा माया को वश करने वाले, सदा स्मृति द्वारा समर्थ रहने वाले, सर्वशक्तिवान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

*(पूर्व बंगाल) साकार तन को [illegible] देना भी यहाँ से ही।

हर गुण व शक्ति के अनुभवों में खो जाना अर्थात् खुशनसीब बनना

आज प्यार के सागर बापदादा अपने प्यार स्वरूप बच्चों से मिलन मना रहे हैं। बाप का भी प्यार बच्चों से अति है और बच्चों का भी प्यार बाप से अति है। ये प्यार की डोर बच्चों को भी खींचकर लाती है और बाप को भी खींच कर लाती है। बच्चे जानते हैं कि ये परमात्म प्यार कितना सुखदायी है। अगर एक सेकण्ड भी प्यार में खो जाते हो तो अनेक दुःख भूल जाते हो। सुख के झूले में झूलने लगते हो। ऐसा अनुभव है ना? बापदादा देख रहे हैं कि आत्मायें कितनी साधारण ! दुनिया के हिसाब से, लेकिन भाग्य कितना श्रेष्ठ है ! जो सारे कल्प में चाहे कोई धर्म आत्मा हो, महान् आत्मा हो, लेकिन ऐसा श्रेष्ठ भाग्य किसी का प्राप्त न है, न हो सकता है। तो अति साधारण और अति श्रेष्ठ भाग्यवान। बापदादा को साधारण आत्मायें ही पसन्द हैं। क्यों? बाप स्वयं भी साधारण तन में आते हैं। कोई राजा के तन में या रानी के तन में नहीं आते। कोई धर्म आत्मा, महात्मा के तन में नहीं आते। साधारण तन में स्वयं भी आते हैं और बच्चे भी साधारण ही आते हैं। आज का करोड़पति भी साधारण है। साधारण बच्चों में भावना है। और बाप को क्या चाहिये? भावना चाहिये या देहभान वाले चाहिये? जितना बड़ा होगा उतना भावना नहीं होगी लेकिन भान होगा। तो बाप को भावना का फल देना है। तो भावना किसमें होती है? साधारण आत्माओं में। नामीग्रामी आत्माओं के पास न भावना है, न समय है। तो बाप देख रहे हैं कि कितने साधारण और कितने श्रेष्ठ भावना का फल प्राप्त कर रहे हैं। इसलिये ड्रामानुसार संगमयुग में साधारण बनना ये भी भाग्य की निशानी है। क्योंकि संगम पर ही भाग्यविधाता भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींच रहे हैं और साथ-साथ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी बच्चों को दे दिया है। मिला है कलम? मिला है ना? तो भाग्य की लकीर खींचना आता है? तो कितनी लम्बी लकीर खींची है? छोटी-मोटी तो नहीं खींच ली? जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो। खुली छुट्टी है और सभी को छुट्टी है! चाहे नये हो, चाहे पुराने हो, सप्ताह कोर्स किया, बाप को पहचाना और बाप भाग्य का कलम दे देता है। तो मिला है सबको? कोई रह तो नहीं गया है? पीछे वालों को मिला है? माताओं को मिला है? यही परमात्म प्यार है। प्यार की निशानी क्या होती है? जो जीवन में चाहिये वह अगर कोई किसको देता है तो वही प्यार की निशानी है। तो बाप के प्यार की निशानी है — जो जीवन में चाहिये वो सर्व कामनायें पूर्ण कर देते हैं। सुख-शान्ति तो चाहिये ना! अगर कोई वस्तु देते हैं एक-दो को तो उससे क्या होता है? सुख मिलता है ना? तो बाप सुख क्या देते लेकिन सुख का भण्डार आप सबको बना देते हैं। सुख का भण्डार हो ना! कितना है? स्टॉक है या एक-कमरा, दो कमरा है? भण्डार हो। जैसे बाप सुख का सागर है, नदी और तलाव नहीं है, सागर है, तो बच्चों को भी सुख के भण्डार का मालिक बना देता है। कोई सुख की कमी है क्या? कोई अप्राप्ति है? नहीं है? फिर यह नहीं कहना कि थोड़ी-सी शक्ति दे दो? 'दे दिया' - 'दे दो' कहने की आवश्यकता ही नहीं है। बाप ने दे दिया है सिर्फ उसको कार्य में लगाते [illegible] लगाते नहीं हो इसीलिये होते हुए भी उसका लाभ नहीं ले सकते। कितना बड़ा भाग्य है ! और कितना सहज मिला है ! कोई मेहनत की है क्या? आराम से बैठे हो या एक टांग पर खड़ा तो नहीं होना पड़ता ना? या धूप में खड़ा हो—सेकण्ड के दर्शन के लिये. ऐसे तो नहीं है ना। आराम से बैठे हो ना। नीचे भी प्रेम पर बैठे हो। आराम-आराम से ही सहज श्रेष्ठ भाग्य बना रहे हो। यह नशा है ना? सभी नशे से कहेंगे कि भाग्य विधाता हमारा है। जब भाग्य विधाता आपका हो गया तो भाग्य किसको देगा? भाग्य विधाता को अपना बनाया अर्थात् भाग्य के अधिकार को प्राप्त कर लिया। जिनको नशा है तो सदा [illegible] अनुभव करते हैं कि भाग्य मेरा नहीं होगा तो किसका होगा। क्योंकि भाग्य विधाता ही मेरा है। [illegible]

[redacted]

साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है। साथ भूल जाते हैं तो मुश्किल हो जाता है। लेकिन सभी का वायदा यह है कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे — यही वायदा है ना? कि अकेले रहेंगे अकेले जायेंगे? नहीं ना? साथ हैं और साथ रहेंगे। तो साथ का अनुभव बढ़ाओ। जानते हो कि साथ है, मानते भी हो लेकिन फर्क क्या पड़ता है? जानते भी हो, मानते भी हो लेकिन समय पर उसी प्रमाण चलते नहीं हो। माया का कार्य ये जो कार्य है उसको भूला देता है। लेकिन माया है क्या? बहुत बलवान है? वह बलवान है या आप बलवान हो? कि कभी माया बलवान, कभी आप बलवान? आपकी कमज़ोरी माया है, और कुछ नहीं है। आपकी कमज़ोरी माया बनकर सामने आती है। जैसे शरीर की कमज़ोरी बीमारी बनकर सामने आती है ना, ऐसे आत्मा की कमज़ोरी माया बनकर के सामना करती है। और कुछ भी नहीं है। तो न कमज़ोर बनना है, न माया आनी है। लक्ष्य ही है — मायाजीत जगतजीत। ये लक्ष्य है ना? कितने बार विजयी बने हो? अनगिनत बार फिर भी घबरा जाते हो! कोई नई बात होती है ना तो कहा जाता है — नई बात थी ना, मुझे पता नहीं था इसीलिये घबरा गये। लेकिन एक तरफ कहते हो अनेक बार विजयी बने हैं। फिर क्यों घबराते हो? बाप का प्यार ही ये है कि हर बच्चा श्रेष्ठ आत्मा बन राज्य अधिकारी बने। राज्य अधिकारी बनना, प्रजा अधिकारी तो नहीं बनना है ना? तो राज्य अधिकारी अर्थात् हर कर्मेन्द्रियों जीत। अगर अपने कर्मेन्द्रियों के ऊपर, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर विजय नहीं तो प्रजा पर क्या राज्य करेंगे! अगर ऐसे राजे बने जो अपने ऊपर विजय नहीं पा सकते तो सतयुग भी कलियुग बन जायेगा। इसीलिये ये चेक करो कि मन-बुद्धि-संस्कार कन्ट्रोल में हैं? मन आपको चलाता है या आप मन को चलाने वाले हो? जब ये कम्पलेन करते हो कि मेरा मन आज लगता नहीं, मेरा मन आज भटक रहा है तो ये मनजीत हुए? आज मन उदास है, आज मन और आकर्षण के तरफ जा रहा है — ये विजयी के संकल्प हैं? तो जो स्वयं पर विजय नहीं पा सकते हैं वो विश्व पर कैसे विजय प्राप्त करेंगे! इसलिये चेक करो कर्मेन्द्रियां जीत, मन जीत कहां तक बने हैं? अगर फर्स्ट डिविज़न में आना है तो इस लक्षण से लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हो!

बापदादा ने देखा कि बच्चे उमंग-उत्साह में भी रहते हैं, ज्ञान की जीवन अच्छी भी लगती है, ज्ञान सुनना-सुनाना इसमें भी अच्छे आगे बढ़ रहे हैं लेकिन चलते-चलते अगर कमज़ोरी आती है तो उसका कारण क्या है? विशेष कारण है कि जो कहते हो, जो सुनते हो, उस एक-एक गुण का, शक्ति का ज्ञान के पॉइन्ट्स का अनुभव कम है। मानो सारे दिन में स्वयं भी या दूसरे को भी कितने बार कहते हो — मैं आत्मा हूँ, आप आत्मा हो, शान्त स्वरूप हो, सुख स्वरूप हो, कितने बार स्वयं भी सोचते हो और दूसरों को भी कहते हो। कितने बार कहते होंगे? बहुत बार कहते हो ना। सारे दिन में कितने बार कहते हो! लेकिन चलते-फिरते आत्मिक अनुभूति, ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शान्त स्वरूप की अनुभूति, वो कम होती है। सुनना-कहना ज्यादा है और अनुभूति कम है। और सबसे बड़ी जो अथॉरिटी होती है वो अनुभव की होती है। अनुभव में खो जाओ। जब कहते हो शान्त स्वरूप तो स्वरूप में स्वयं को, दूसरे को शान्ति की अनुभूति हो। अनुभव की अथॉरिटी कम है। एक-एक गुण का वर्णन करते हो, शक्तियों का वर्णन करते हो लेकिन शक्ति वा गुण समय पर अनुभव में आवे। कई तो बोलते भी रहते हैं कि सहनशक्ति धारण करनी चाहिये, सहनशीलता अच्छी है, लेकिन अनुभूति नहीं होती। अनुभूति की कमी होने के कारण जितना चाहते हो ना उतना पा नहीं सकते। अगर सभी से पूछेंगे कि जितना होना चाहिये उतना पुरुषार्थ है तो क्या कहेंगे? जितना होना चाहिये उतना है? हाँ या ना? थोड़े हाँ कहते हैं। तो जितना मिल रहा है उतना जीवन में या कर्म में अनुभव हो। सिर्फ सोचने में अनुभव नहीं हो लेकिन चलन में, कर्म में, शक्तियाँ गुण अनुभव स्वयं को भी हो, दूसरे को भी हो। कहते हो ना कि ज्ञान स्वरूप हैं। स्वरूप कहते हो ना कि ज्ञान सुनाने वाले हो? स्वरूप हो ना? तो स्वरूप तो दिखाई देना चाहिये ना? और स्वरूप कब होता है। स्वरूप कभी-कभी नहीं होता है। अज्ञानकाल के जीवन में देखो किसका क्रोधी स्वरूप है तो जब भी कोई बात होगी तो वो स्वरूप दिखाई देता है ना, छिपता नहीं है चाहे छोटी बात हो या बड़ी बात हो लेकिन जिसका जो स्वरूप होता है वह दिखाई देता है। स्वयं को भी अनुभव होता है और दूसरे को भी अनुभव होता है। क्या कहते हैं ये है ही क्रोधी, इसका संस्कार ही क्रोध का है। तो संस्कार दिखाई

है ना। ऐसे ये ज्ञान स्वरूप, शान्त स्वरूप, सुख स्वरूप अनुभव में आये तो अनुभवीमूर्त – ये है श्रेष्ठ पुरुषार्थ की निशानी। तो अनुभव को बढ़ाओ। जो सुना, जो अनुभव किया। अगर अनुभव नहीं होता है तो उसका कारण ये है कि समय प्रति समय विधि मिलती है उस विधि के ऊपर अटेन्शन कम है। रिवाइज़ नहीं करते हो। जितना ज्ञान को, शक्तियों को, गुणों को रिवाइज़ करते रहेंगे तो रियलाइज़ सहज होगा। रिवाइज़ नहीं करते तो रियलाइजेशन भी कम है। सुना बहुत अच्छा। लेकिन चलते-फिरते रिवाइज़ होना चाहिये। जैसे दुनिया वाले कहते हैं कि कर्म ही योग है। कर्म-योग अलग नहीं मानते। कर्म ही योग मानते हैं। कर्म से योग लगाना, इसी को ही कर्मयोग समझते हैं। लेकिन कर्म और योग दोनों का बैलेन्स चाहिये। कर्म में बिज़ी रहना योग नहीं है। कर्म करते योग का अनुभव होना चाहिये। कर्म में बिज़ी हो जाते हैं तो कर्म ही श्रेष्ठ हो जाता है, योग किनारे हो जाता है। चलते-चलते यही अलबेलापन आता है। तो कर्म में योग का अनुभव होना—इसको कहा जाता है कर्मयोगी। मूल बात है अनुभवी स्वरूप बनो। एक-एक गुण के अनुभव में आ जाओ। शक्ति स्वरूप बन जाओ। आपके स्वरूप से शक्तियाँ दिखाई दें। अभी भी देखो, अगर कोई में कोई शक्ति विशेष होता है तो उसके लिये क्या कहते हो? ये बहुत सहनशील स्वरूप है, इसमें समाने की शक्ति बहुत दिखाई देती है। तो दिखाई देती है तब तो कहते हो ना! कोई में दिखाई देती है, कोई में नहीं और कभी दिखाई देती है, कभी नहीं तो परसेन्टेज कम हुआ ना। तो हर शक्ति, हर गुण, हर ज्ञान की पॉइन्ट्स आपके स्वरूप में अनुभव करें। और वो तब होगा जब पहले स्वयं को अनुभव होगा। अगर स्वयं अनुभवी होगा तो दूसरे को उससे अनुभव स्वतः ही होगा। ऐसे है? स्वरूप में दिखाई देता है? कभी-कभी दिखाई देता है या सदा दिखाई देता है? और जब अनुभव करते हो तो कितनी खुशी होती है! एक सेकण्ड भी अगर किसी गुण या शक्ति का अनुभव होता है तो कितनी खुशी बढ़ जाती है। बढ़ती है ना? और सदा अनुभवी स्वरूप होंगे तो क्या दिखाई देगा? सदा खुशनसीब। सदा चेहरे पर खुशी की झलक, खुशनसीब की झलक अनुभव होगी। तो अनुभव को बढ़ाओ। विधि तो स्पष्ट है ना? अच्छा, सभी खुशनसीब तो हो ही लेकिन विशेष खुशी मनाने आये हो। तो सबको खुशी मिली है?

सब आराम से रहे हुए हो? मन आराम में है तो तन को आराम मिल ही जाता है। ये तो होना ही है, जितना स्थान बढ़ायेंगे उतना कम होना ही है। ये भावी है, उसको क्या करेंगे। और अच्छा है, रिहर्सल हो जाती है, जहाँ बिठाओ, जैसे बिठाओ, जैसे सुलाओ, इसकी रिहर्सल हो जाती है। तो पट में सोना अच्छा है, पटराजा बन गये ना। शास्त्रों में तो पटरानी और पटराजा का बड़ा गायन है, आप तो बहुत सहज बन गये। कोई तकलीफ है? बापदादा और निमित्त आत्मायें सोचते तो यही हैं कि सब आराम से रहें लेकिन अगर ज्यादा संख्या में भी आराम लगता है तो खुशी की बात है। जहाँ भी रहे हुए हो, वहाँ खुश हो? कोई तकलीफ नहीं है, और बुलायें? सिर्फ एक सूचना चली जाये कि जो आने चाहे वो आ जाये! तो क्या करना पड़ेगा? अखण्ड तपस्या करनी पड़ेगी। खुशी की खुराक खाओ और अखण्ड योग करो फिर तो सभी आ सकते हैं। करेंगे? थक नहीं जायेंगे! भूख नहीं लगेगी! सात दिन नहीं खायेंगे? सात दिन खाना नहीं मिलेगा! बापदादा ऐसा हठ कराना नहीं चाहते। सहजयोगी हो ना।

ये परमात्म मिलन कम भाग्य नहीं है! ये परमात्म मिलन का श्रेष्ठ भाग्य कोटों में कोई आप आत्माओं को ही मिलता है! अच्छा! मिल लिया ना! भक्ति में तो जड़ चित्र मिलता है और यहाँ चैतन्य में बाप बच्चों से मिलते भी हैं, रुहरिहान भी करते हैं! तो ये भाग्य कोई कम है! (फिर भी आप सब लक्की हो, समय की गति बदलती जाती है। अभी फिर भी आराम से बैठकर सुन रहे हो। आगे चलकर वृद्धि होगी तो बदलेगा ना, फिर भी आप लक्की हो। क्योंकि टूलेट के टाइम पर नहीं आये हो। लेट के टाइम पर आये हो। तो सब खुश हो? सबसे ज्यादा खुशी किसको है? अच्छा, किसी को कम खुशी है? कम खुशी वाले हाथ उठाओ?)

अच्छा, कौन-से कौन-से ज़ोन आये हैं? महाराष्ट्र वाले हाथ उठाओ। महाराष्ट्र वाले सदा विशेष सन्तुष्ट मणियाँ हैं। इस वरदान को स्वरूप में लाना। और फिर बापदादा दूसरे ग्रुप में पूछेंगे कि महाराष्ट्र ने सन्तुष्टता का स्वरूप दिखाया तो सदा सन्तुष्ट मणि है, असन्तुष्टता का नाम-निशान नहीं। ऐसे है ना महाराष्ट्र? अभी नम्बर लेना इसमें। रिजल्ट बताना कि इस 6 मास में कोई असन्तुष्ट रहा क्या या सन्तुष्ट किया, स्वयं भी सन्तुष्ट दूसरे भी सन्तुष्ट? तो ये पसन्द है महाराष्ट्र को? अगर कोई आपको असन्तुष्ट करे तो क्या करेंगे? फिर तो असन्तुष्ट होंगे ना। करने वाले ने किया ना! आपने तो नहीं किया ना! तो क्या करेंगे? शीतलता धारण करेंगे। वो आग में सेक दे रहा है और आप शीतल रहेंगे? थोड़ा थोड़ा असन्तुष्ट होंगे? नहीं होंगे? देखना। वो असन्तुष्ट को और आप सन्तुष्टता का जल डालो, वो आग जलाये आप पानी

वरदान मिला है, कोई कारण से मिलता है। तो इन्दौ की विशेषता यह है कि जो भी होगा, अच्छा होगा या बुरा होगा, स्पष्टवादी है। अन्दर एक, बाहर दूसरे नहीं है। जो अन्दर है, वो बाहर है। तो स्पष्ट होने के कारण जल्दी में आगे कदम उठा लेते हैं। छिपाने वाले नहीं हैं। तो यह स्पष्टवादी बनने के कारण विशेष अव्यक्त पालना के वरदान के अधिकारी बने हैं और बनते रहेंगे। समझा ! तो आप भी जितने स्पष्टवादी होंगे उतने अनुभव ज्यादा करेंगे। स्पष्टवादी बनना अर्थात् सहज श्रेष्ठ बनना। ये वरदान स्वतः ही मिल जाता है। समझा ?

आन्ध्रप्रदेश :- आन्ध्रा में भी सेन्टर्स तो बहुत हैं ना। आन्ध्रा वाले क्या करेंगे ? आन्ध्रा वाले कमाल करने वाले हैं। (बीच में ही ताली बजा दी) इससे ही सिद्ध होता है कि कमाल करने में होशियार हैं। तो आन्ध्रा वालों को यही कमाल करनी है कि सदा [illegible] ... ... विघ्नों को समाप्त कर उड़ने वाले। अभी उड़ती कला की कमाल आन्ध्रा को दिखानी है। हिम्मत है ? तो 6 मास में पूरे आन्ध्रा ज़ोन में कोई भी विघ्न नहीं आना चाहिये। हो सकता है ? अभी हाँ नहीं करते ! सोच रहे हैं। हिम्मत है आन्ध्रा वाले ? तो हाँ क्यों नहीं करते ? खिटखिट है क्या ? मिटा नहीं सकते ? हाँ या ना करो ना। कर सकते हो ? तो आन्ध्रा को प्राइज़ लेनी चाहिये। 6 मास के बाद आन्ध्रा प्राइज़ लेंगे ? 6 मास के बाद सभी को प्राइज़ देंगे। जो वरदान मिला है, उसमें जो सब पास होंगे उनको प्राइज़ मिलेगी। पहले पास होंगे फिर प्राइज़ मिलेगी। तो सब पास होंगे ना ? हाफ पास तो नहीं ना ? फुल पास होना है ! मातायें बोलो फुल पास। बोलो हाँ जी। और पाण्डव, हाँ जी। फिर यह नहीं कहना कि क्या करें, चाहते नहीं थे, हो गया... भाषा बदली कर देना – हो ही नहीं सकता। इतना निश्चय है ? अच्छा है। नये कमाल करके दिखायेंगे ना। तो बाप कहेंगे पुराने तो पुराने, नये समान बाप होंगे। तो ये वरदान लेना है ना आगे जाने के लिये।

अच्छा, बाकी मधुबन निवासी और ज्ञान सरोवर। बापदादा ने पहले भी कहा तो आबू में सबका याद प्यार देने के लिये पांच मुखी ब्रह्मा है, ब्रह्मावत्स हैं। एक मधुबन है और दूसरा ज्ञान सरोवर है, तीसरा हॉस्पिटल है, चौथा तलहटी है और पांचवां आबू निवासी। तो पांच मुखी ब्रह्मावत्स। पांचों को बापदादा सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले और औरों को भी उड़ाने वाले ऐसा विशेष वरदान कहो, याद-प्यार कहो, विशेष दे रहे हैं। क्योंकि आबू निवासी तो सभी हो गये ना। तो जो मधुबन निवासी है, उन्हों को विशेष उमंग-उत्साह के पंख सदा लगे हुए रहते हैं। उमंग-उत्साह के पंख कभी कमज़ोर नहीं हो। इसका प्रूफ है ज्ञान सरोवर में पंख लग गये हैं ना। जो भी देखता है वो क्या कहता है ? कमाल है। तो उमंग-उत्साह के पंख का प्रैक्टिकल प्रूफ है ज्ञान सरोवर। आप समझते हो इतने में इतना बड़ा बन सकता है ? कॉमन कोई सोच सकता है ? तो ज्ञान सरोवर वाले या मधुबन वाले उमंग उत्साह के पंखों से उड़ाने वाले भी हैं और उड़ने वाले भी हैं। बापदादा ज्ञान सरोवर के सेवाधारियों को विशेष दुआयें भरी याद-प्यार दे रहे हैं। विशेषता है कि निश्चयबुद्धि हैं ना। कितना भी कोई [illegible] ... नम्बरवन हैं। निश्चयबुद्धि हैं ना। ज्ञान सरोवर वाले हाथ उठाओ। बहुत हैं। अच्छा, हमारे विशेष सेवाधारी भी आये हुए हैं। अच्छे हैं, सबकी हिम्मत, सबका उत्साह, कार्य को आगे बढ़ा रहा है, इसलिये बापदादा प्यार की मसाज़ करते रहते हैं। मधुबन वाले अर्थात् सदा ताजा भोजन करने वाले। फैक्स द्वारा या टाइप द्वारा खाने वाले नहीं, ताजा माल खाने वाले। मधुबन वाले तो नीचे होंगे ना। बैठे हैं मधुबन वाले ? नीचे बहुत है। लेकिन बापदादा के सामने शरीर से नीचे हैं, मन से ऊपर हैं। ऐसे तो चारों ओर के बच्चों की दिल की टी.वी. खुली हुई है, उसमें देख रहे हैं। चाहे देश, चाहे विदेश के सभी बच्चे अव्यक्त रूप से मिलन मना रहे हैं। तो देखो आप विशेष लक्की हो जो पहला चांस आप लोगों को मिला है। अच्छा–

सभी सन्तुष्ट हो ना ? सन्तुष्ट हो और रहेंगे भी। सदा या कभी-कभी ? देखना, कहना सहज है ! कहना सहज है या करना सहज है ? अच्छा !

[illegible] ... आत्माओं को सदा [illegible] ...

बाप के डायरेक्ट बच्चे ही डबल पुजा के अधिकारी - वरदान ९।

"बापदादा हरेक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे है। सारी विश्व के अन्दर कोटों मे कोई गाई हुई आत्माए कितनी थोडी सी है, जिन्होने बाप को पाया है। न जाना, लेकीन जानने के साथ-साथ, जिसको पाना था, वो पा लिया। ऐसे बाप के अति स्नेही, सहयोगी बच्चों के भाग्य को देख रहे थे। वैसे सर्व आत्माऐ बच्चे है, लेकीन आप आत्माऐ डायरेक्ट बच्चे हो। शिववंशी ब्रह्माकुमार और कुमारीयाँ हो। सारे विश्व मे जो भी अन्य आत्माए धर्म के क्षेत्र मे या राज्य के क्षेत्र मे महान या नामी-ग्रामी बने है, धर्म पिताये बने है, जगत गुरु कहलाने वाले बने है, लेकीन मात-पिता के सम्बंध से, अलौकिक जन्म और पालना किसी को भी प्राप्त नही होता है। अलौकिक माता-पिता का अनुभव स्वप्न मे भी नही करते। और आप श्रेष्ठ आत्माऐ वा पदमापदमपति आत्माऐ हर रोज माता-पिता की वा सर्व सम्बंधो की याद प्यार लेने के पात्र हो। हर रोज याद-प्यार मिलती है ना। न सिर्फ याद प्या, लेकीन स्वयं सर्वशक्तिवान बाप, आप बच्चों का सेवक बन हर कदम मे साथ निभाता है। अति स्नेह से सिर का ताज बनाकर नयनों का सितारा बनाकर, साथ ले जाते है। ऐसा भाग्य जगतगुरु या धर्मपिता का नही है, क्योंकी आप श्रेष्ठ आत्माए सम्मुख बाप की श्रीमत लेने वाली हो। प्रेरणा द्वारा, व टचिंग द्वारा नही, मुख वंशावली हो। डायरेक्ट मुख द्वारा सुनते हो। ऐसा भग्य किन आत्माओं का है ? मेजारिटी अधिकतर भारतवासी गरीब भोली सी आत्माओं का है। जो ना उम्मीदवार थे की हमे कब बाप मिल सकता है। इतना श्रेष्ठ भाग्य, फिर ऐसे ना उम्मीदवार को ही मिला है। जब कोई ना उम्मीदवार से उम्मीदवार बनता है वा असम्भव से सम्भव बात होती है, तो कितना नशा और खुशी होती है। ऐसा भाग्य आपना सदैव स्मृति मे रहता है।

सारे ड्रामा के अन्दर धर्म की आत्माओं को देखो और अपने को देखो तो महान अन्तर है। पहली बात सुनाई की डायरेक्ट बच्चे हो। माता-पिता वा सर्व सम्बंधो का सुख का अनुभव करने वाले, डायरेक्ट बच्चे होने के कारण, विश्व के राज्य का वर्सा सहज प्राप्त हो जाता है। सृष्टी के आदिकाल सतयुग अर्थात स्वर्ग की सतोप्रधान, सम्पुर्ण प्राप्ति आप आत्माओंको ही प्राप्त होती है। और सर्व आत्माए आती ही मध्यकाल मे है। आप श्रेष्ठ आत्माओंका भोगा हुआ सुख वा राज्य रजोप्रधान रुप मे प्राप्त करते है। जैसे आप आत्माओं को धर्म और राज्य दोनों प्राप्ति है, लेकीन अन्य आत्माओं को धर्म और राज्य नही, राज्य है तो धर्म नही। क्योंकी द्वापर युग से धर्म और राज्य का दोनो पुर अलग-अलग हो जाते है। जिसकी निशानी सारे ड्रामा के अन्दर डबल ताजधारी सिर्फ आप हो। और कोई देखा है ? और विशेषतायें है। संपुर्ण प्राप्ति अर्थात तन-मन-धन, संबंध और प्रकृति के सर्व सुख, जिसमे अप्राप्त कोई वस्तु नही, दुख का नाम-निशान नही-ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ती अन्य कोई आत्मा को प्राप्त नही होती है। डायरेक्ट बच्चे होने के कारण, ऊँचे से ऊँचे बाप की सन्तान होने के कारण, आप आत्माये भी, डबल रुप मे पुजी जाती हो। एक सालिग्राम के रुप मे, दुसरा देवी वा देवता के रुप मे। ऐसे विधि पुर्वक पुज्य, धर्मपिता वा कोई भी नामी-गामी आत्मा नही बनती। कारण ? क्योंकी तुम डायरेक्ट वंशावली हो। समझा कितने भग्यशाली हो, जो स्वयं भगवान आपका भाग्य बाला करते है। तो सदा अपने ऐसे भाग्य को स्मृति मे रखो कमजोरी के गीत नही गाओ। भक्त कमजोरी के गीत गाते है, और बच्चे भग्य के गीत गाते है। तो अपने आप से पुछो की भक्त हुँ वा बच्चा हु। समझा। अपने श्रेष्ठ भाग्य को। अच्छा

ऐसे पदमापदम भाग्यशाली, डारेक्ट बाप की पहली रचना, सर्व संम्बधो के सुख के अधिकारी सर्व प्राप्ती के अधिकारी, राज्यभाग के अधिकारी, डबल पुजा के अधिकारी, बाप के भी सिर के ताजधारी, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

का भोजन है। कान भी मुख का भोजन ही है। कर्म हाथो का,पाव का भोजन है। तो सब का भोजन चाहिए ना। पहले करके पीछे सोचना, इसको क्या कहा जायेगा? डबल समझदार।

सिर्फ यह एक बात सदा अपना निजी संस्कार बना दो। जैसे स्थूल में भी कई आत्माओं के संस्कार होते है ऐसे वैसे कोई चीज़ कब स्वीकार नहीं करेंगे। पहले चेक करेंगे फिर स्वीकार करेंगे। आप तो सब महान पवित्र आत्मायें हो,सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। तो ऐसी आत्मायें बिना चेकिंग के संकल्प को स्वीकार कर दे, वाणी से बोल दे, कर्म को कर दे यह महानता नहीं लगेगी। तो मधुबन निवासियो के लिए सिर्फ एक ही बात है। चेकिंग की मशीनरी तो है ना। अभ्यास ही मशीनरी है।-

मधुबन वालो की महिमा भी बहुत गाते है। अथकपन की खुशबू तो बहुत काल से आती है। जैसे अथक पन की खुशबू आती है यह स्टीफिकेट तो मिला है,इसके साथ और क्या एड करेंगे, जैसे अथक हो वैसे ही सदा एकरस। जब भी रिजल्ट देखें तो सबकी रिजल्ट एकरस अवस्था में एक नम्बर हो। दूसरा तीसरा नम्बर भी नहीं। क्योकि मधुबन है सबको लाइट और माइट देने वाला। अगर लाइट हाउस, माइट हाउस ही हिलता रहेगा तो दूसरों का क्या हाल होगा। मधुबन निवासियो का सब वायुमण्डल बहुत जल्दी चारो ओर फैलता है। यहा की छोटी बात भी बाहर बड़े रूप में पहुंचती है। क्योकि बड़े आदमी हो ना।सदा छत्रछाया में रहने वाले। स्वर्ग में तो प्रालब्ध मिलेगी लेकिन यहा भी काफी प्रालब्ध है। मधुबन निवासियो को सब बना बनाया मिलता है। एक डियुटी बजाई बाकी सब बना बनाया। कहा से आता है, कितना आता है कोई संकल्प की जरूरत ही नहीं। सिर्फ सेवा करो और मेवा खाओ। 36 प्रकार के भोजन भी मधुबन वालो को बार2 मिलते है। तो 36 गुण भी तो धारण करने पड़ेंगे। हरेक मधुबन निवासी पवित्रता की लाइट के ताजधारी तो होना ही है।लेकिन डबल ताज। एक गुणो का ताज दूसरा पवित्रता का ताज। जिस ताज में कम से कम 36 हीरे तो होने ही चाहिए।

आज बापदादा मधुबन निवासियो को खास और सभी को आम गुणो के ताज की क्राउन सेरीमनी करा रहे है। हरेक को जो भी देखे तो ताजधारी देखे। हरेक गुण रूपी रतन चमकता हुआ औरो को भी चमकाने वाला हो। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

सभी लवलीन स्टेज पर स्थित हो ना। एक बाप दूसरा न कोई। इसी अनुभूति में कितना अतिइन्द्रिय सुख है। सर्व गुणो से सम्पन्न श्रेष्ठ स्थिति अच्छी लगती है ना। इसी स्थिति में दिन और रात भी बीत जाए फिर भी सदा इसी में रहने का संकल्प रहेगा। सदा इसी स्मृति में समर्थ आत्मा रहो। अच्छा-

बापदादा निरन्तर बच्चों से मिलन मनाते रहते है और मनाते रहेंगे। अनेक बच्चे होते भी हरेक बच्चे के साथ बाप मिलन मनाते ही है। क्योकि शरीर के बन्धन से मुक्त बाप और दादा दोनो एक सेकेण्ड के अन्दर अनेको को भासना दे सकते हैं। अच्छा-

दीदी जी के साथ:- रायल फैमली बन चुकी है या अभी बन रही है? राज्य कारोबार चलाने वाले निकल चुके है या अभी निकलने है? एक है चलाने वाले एक है कारोबार में आने वाले। जो तख्तनशीन होगे वह राज्य चलाने वाले। और जो सम्बंध में होगे वह है राज्य कारोबार में आने वाले। तो राज्य कारोबार चलाने वाले भी अभी बन रहे है ना। राज्य कारोबार चलाने वालो की विशेषता क्या होगी? तख्त पर तो सब नहीं बैठेंगे। तख्त वालो के सम्बंधी तो बनेंगे लेकिन तख्त पर बैठने वालो की तो लिमिट है ना। रायल फैमली में आने वाले और राज्य सिंहासन पर बैठने वाले उन्हो में भी अन्तर होगा। कहलायेंगे तो वह भी नम्बर वन नम्बर टू विश्व महाराजन की रायल फैमली। लेकिन अन्तर क्या होगा? तख्त नशीन कौन होंगे,उसके भी कोई कायदे होंगे ना। इस पर सोचना।

संगमयुग पर तो दिलतख्त के अधिकारी सबको बाप बनाते है। भविष्य में राजे-महाराजे तो बनेंगे लेकिन फर्स्ट नम्बर वाला तख्त जो फर्स्ट ल०ना० वाला होगा उस तख्तनशीन कौन होंगे? छोटे 2 तख्त और राज्य दरबार तो लगेगी लेकिन विश्व महाराजन

फिर से हमको पवित्र बनाओ हम पतित हैं। पतित को बन्दर कहा जाता है। आगे थोड़ेही समझते थे कि हम बन्दर हैं। अभी समझते हैं यह रावण सम्प्रदाय सब बन्दर हैं। बाबा ही आकर रावण पर जीत प्राप्त कराते हैं। रामराज्य के लिए लायक बनाते हैं। कैसी वन्डरफुल बातें हैं। कब किसकी बुद्धि में आ न सकें। जब तक बाप न आकर समझावें। वेद शास्त्र ग्रंथ आदि कितने हैं। बाबा कहते हैं इन वेदों शास्त्रों से कोई भी हमारे साथ नहीं मिलसकता है। अभी तुम बच्चे समझते हो कि वापिस एक भी जा नहीं सकेंगे। सबको सतोप्रधान, सतो रजो, तमो में आना ही है। अब बाप इस पतित महफिल में आते हैं। कितनी बड़ी महफिल है। बन्दरों की महफिल में आता हूँ। मैं देवताओं की महफिल में कब नहीं आता। जहाँ माल-ठाल 36 प्रकार के भोजन मिल सकते, वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ रोटी भी नहीं मिलती, बच्चों को, उन्हों को आकर गोद लेकर बच्चा बनाकर गोद में लेता हूँ। साहूकारों को गोद में नहीं लेता हूँ। वह अपने ही नशे में चूर रहते हैं। खुद कहते हैं कि हमारे लिए तो स्वर्ग यह ही है। फिर कोई मरता है तो कहते हैं कि स्वर्गवासी हुआ। तो जरूर यह नर्क हुआ ना। तुम क्यों नहीं समझाते हो। अभी अखबार में भी युक्तियुक्त कोई से डलवाते नहीं हैं। यह अक्षर ही सिद्ध करते हैं कि भारतवासी नर्कवासी हैं। परन्तु ऐसे युक्तियुक्त कोई नहीं अखबार में डालता है। बच्चे यह जानते हैं हमको ड्रामा पुरूषार्थ कराते हैं, हम जो पुरूषार्थ करते हैं वह ड्रामा में नूंध है। पुरूषार्थ करना भी जरूर है। ड्रामा पर बैठ नहीं जाना है। हर बात में पुरूषार्थ जरूर करना ही है। कर्मयोगी, राजयोगी हैं ना। वो हैं कर्मसन्यासी हठयोगी। तुम तो सब कुछ करते हो। घर में रहते बाल बच्चों को सम्भालते हो वह तो भाग जाते हैं। अच्छा नहीं लगता है, परन्तु वह पवित्रता भी भारत में चाहिए ना। फिर भी अच्छा है। अभी तो पवित्र भी नहीं रहते हैं। ऐसे नहीं कि कोई पवित्र दुनिया में जा सकते हैं। सिवाए बाप के कोई जा नहीं सकते हैं। अभी तुम जानते हो शान्तिधाम तो हमारा घर है। परन्तु जायें कैसे। बहुत पाप किये हुए हैं। ईश्वर सर्वव्यापी कहना यह बड़ा पाप है। ईश्वर की ग्लानी करते हैं। अब यह किसकी इज्जत गंवाते हैं, शिवबाबा की। कुत्ते-बिल्ली कण2 में वह देते हैं। बाप रिपोर्ट किसको करें। बाप कहते हैं मैं ही समर्थ हूँ। मेरे साथ फिर धर्मराज भी है। यह सबके लिए कयामत का समय है। सब सजायें आदि भोगकर फिर वापिस चले जायेंगे। ड्रामा की बनावट ही ऐसी है सजायें खानी ही हैं जरूर। यह तो सा0 भी होते हैं। गर्भजेल में भी सा0 होता है। तुमने यह2 काम किये हैं फिर उनकी सजा मिलती है तब तो कहते हैं कि अब इस जेल से निकालो। हम फिर ऐसे पाप नहीं करेंगे। बाप यहाँ सम्मुख आकर यह सब बातें सम्मुख समझाते हैं। गर्भ में सजायें खाते हैं, वो ही जेल है। दुःख फील होता है। वहाँ सतयुग में दोनों जेल नहीं होती। यहाँ तो दोनों हैं। वो यह भी कहते हैं कि यह राइट है, वहाँ कोई पाप होता नहीं जो गर्भ में सजा खायें। अब बाप समझाते हैं बच्चे मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी। यह तुम्हारे अक्षर बहुत मानेंगे। भगवान का नाम तो है, सिर्फ भूल की है जो कृष्ण का नाम डाल दिया है। अब बाप भी बच्चों को बैठ समझाते हैं। यह जो सुनते हो सुनकर अखबार में डालो। शिवबाबा इस समय सबको कहते हैं तुम 84 जन्म भोग तमोप्रधान बने हो। अभी फिर मैं राय देता हूँ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। फिर तुम मुक्ति जीवनमुक्ति-धाम में चले जायेंगे। बाप का यह फरमान है मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी। अच्छा- बच्चे कितना समझाकर कितना समझायें.....

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

सूचना:- आप सबको ज्ञात हो कि मीठे बाबुल को अति स्नेही, सदा बापदादा के अंग-संग रहने वाली, आदि रत्न, त्याग-तपस्या की मूर्त- मीठी 'क्वीन मदर' 2 सितम्बर बुद्धवार के दिन दोपहर 3 बजे के करीब मधुबन में अपना यह पुराना शरीर छोड़ 87 वर्ष की आयु पूरी कर पल भर में बाबुल की गोद में चली गई। उनके निमित्त यज्ञ की तरफ से सर्व सेवाकेन्द्रों पर 10 सितम्बर गुरूवार के दिन - मीठा चावल, पूड़ी और जीरे वाले आलू की सब्जी का भोग लगाया जाए- यही भोग सर्व ब्राह्मणों को स्वीकार कराना है।
(विस्तार में दिनचर्या अलग से भेजी जायेगी) ओमशान्ति। BKS

[illegible] है। परन्तु पद का फर्क रहता है। तो अभी तुम बच्चों को सारे विश्व का, इस ड्रामा के चक्र का [illegible] आई [illegible] इसलिये बाप तुमको कहते ही हैं स्वदर्शनचक्रधारी बच्चों। यह अलंकार तुम्हारे हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। सिवाय तुम्हारे और कोई बन न सके। अभी तुमको सारा स्मृति में आता [illegible] [illegible] इसलिये बाबा कहते हैं यह सभी अविनाशी सर्जन के आगे [illegible] तो हल्के हो जावेंगे। बाकी जन्म जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं उसके लिये योग में रहना है। योग से ही पाप कटेंगे। और खुशी भी रहेगी। बाप की याद से ही हम सतोप्रधान बन यह बन जावेंगे। मालूम है हम याद से यह बनेंगे तो कौन याद नहीं करेगा। परन्तु यह भी युद्ध का मैदान है, मेहनत करनी पड़ती है। इतना ऊंच पद पाने लिये मेहनत है। [illegible] भी बच्चों को स्मृति आई कि हम बेहद के बाप से ही ऊंच ते ऊंच वर्सा लेते हैं। कल्प2 तुम ही लेते हो। तुम्हारे पास बहुत आवेंगे। आकर महामंत्र लेंगे मनमनाभव का। इसका अर्थ है [illegible] बाप को याद करो। यह है महामंत्र महान आत्मा बनने लिये। यह कोई [illegible] है नहीं। महात्मा वास्तव में कृष्ण को कहा जाता है। क्योंकि वह पवित्र है। भ्रष्टाचार से पैदा नहीं होता है। भले2 सन्यास [illegible] करते। वहाँ के सन्यासी भल पवित्र बनते हैं फिर भी विकार से ही पैदा होते हैं। देवताएँ [illegible] पवित्र रहते हैं। देवताओं का है प्रवृत्ति मार्ग। यह हैं निवृत्ति मार्ग के। स्त्रीयां तो घरबार छोड़ न सकें यह भी अभी कलियुग में सन्यासियां हो गई है। स्त्रीयों को सन्यासी बनाकर ले जाते हैं। फिर भी उन्हों की पवित्रता पर भारत थमा हुआ है। जैसे पुराने मकान को पोची आदि लगाई जाती है ना। तो जैसे [illegible] नया बन जाता है। यह सन्यासी भी पोचे दे कुछ बचाव करते हैं। परन्तु बाप समझाते हैं वह धर्म ही अलग है। [illegible] बनते हैं। भारत खण्ड में ही इतने देवी देवताओं के मंदिर, भक्ति आदि हैं। यह भी खेल है जिसका [illegible] तुम बताते हो। भक्ति मार्ग के [illegible] यह सभी कुछ चाहिए ना। एक शिव के ही कितने नाम रख दिये हैं। नाम नाम पर मंदिर बनता रहता है। ढेर के ढेर मंदिर हैं। कितना खर्चा होता है फिर भी [illegible] [illegible] हुए हैं। बहुत पैसे लगाते हैं। मूर्तियां टूट-फूट जाती हैं तो फिर बनाते हैं। वहाँ तो मंदिर आदि की दरकार ही नहीं। यह भी अभी स्मृति में आई है कि आधा कल्प भक्ति चलती है। आधा कल्प फिर ज्ञान [illegible] बाप कितनी स्मृति दिलाते हैं इस वेरायटी झाड़ की। सिर्फ कलियुग की आयु ही 40हजार वर्ष हो फिर तो क्रिश्चन आदि की आयु भी बहुत बढ़ जाये। (बाप समझाते हैं क्रिश्चन धर्म की इतनी ही लिमिट [illegible] जानते हैं क्राईस्ट को इतना समय हुआ, फलाना को इतना समय हुआ धर्म स्थापन किये। लेकिन फिर [illegible] कब, वह पता नहीं है। कल्प की आयु ही लम्बी लम्बी कर दी है। अभी तुम जानते हो यह तो विनाश [illegible] हो रहा है। (उन्हों की सांयस। तुम्हारा है सायलेन्स। तुम जितना सायलेन्स में आवेंगे उतना वह विनाश के लिये अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे।) दिन प्रति दिन महीन चीजें बनाते रहते हैं। तुमको अन्दर में खुशी होती है। [illegible] तो हमारे लिये नई दुनिया बनाने आये हैं। तो अभी हम पुरानी दुनिया में थोड़े [illegible] है [illegible] बाबा आप [illegible] स्वर्ग की स्थापना करते हो तो कमाल है। अभी तुमको सारी स्मृति आई है। [illegible] तो स्थापना और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते ही नहीं। तुम जानते हो। तुम कितने [illegible] हो। मनुष्य तो घोर-अंधियारे में हैं। फर्क है ना। ज्ञानअंजन सद्गुरु दिया अज्ञान अंधेर विनाश। भक्ति वाले ज्ञान को नहीं जानते। अभी तुम भक्ति को भी जानते हो तो ज्ञान को भी जानते हो। सारी स्मृति आई है भक्ति कब से [illegible] होती है, फिर कब पूरी होगी (बाप कब ज्ञान देते, पूरा कब होगा सभी याद है। नम्बरवार तो हैं। किसको बहुत स्मृति है किसको कम। जिन्हों को बहुत स्मृति रहती है वह ऊंच पद पा लेते। स्मृति है तब औरों को भी समझाते। वन्डरफुल स्मृति है ना। आगे तुम्हारी बुद्धि में क्या था। भक्ति। जन्म-जन्म [illegible]

... को फिर देवताओं की। और कोई भी यह समझते नहीं हैं। तुमको रचना के आदि मध्य अन्त, भक्ति ... की स्मृति है। आधा कल्प भक्ति करते2 गिरते ही आये हैं। अभी तो दुःख के पहाड़ गिरने हैं। तुम ... को पुरुषार्थ करना है यह दुःख के पहाड़ से पहले ही हम याद की यात्रा से विकर्म विनाश करें। ... को ... तुम्हारे पास हजारों आते हैं। तुम मेहनत करते हो भाई- बहनों को शिक्षा देते हो। ज्ञान और ... है गोया तुम ... रचना को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जान गये हो। जो जितना अच्छी ... हैं वह समझा भी सकते हैं। समझाना तो बच्चों को ही है। गायन भी है राम सोज ... बाप ... हैं ..., बच्चे फिर और भाईयों को समझायेंगे। आत्माओं को समझाते हो। ... में यह ज्ञान बिल्कुल ... है। ... है ... भगवान आकर सभी भक्तों को फल देते हैं। एक बाप के सभी बच्चे हैं। बाप कहते हैं मैं सभी बच्चों को शान्तिधाम सुखधाम ले जाता हूँ कल्प2। यह ज्ञान भी अभी तुमको है। वहां नहीं होगा। तुम पावन ... तो तुमको पावन बनाने लिये बाप तुम पर कितनी मेहनत करते हैं। इसलिये गायन है कुर्बान जाऊं ... जाऊं किस पर? बाप पर। फिर बाप मिसाल भी बताते हैं यह कुर्बान कैसे गया। फालो इस ... करो। यही फिर लक्ष्मी नारायण बनते हैं। अगर इतना उंच पद पाना है तो ऐसे कुर्बान जाना है। साहुकार कुर्बान हो न सके। यहां तो ... स्वाहा करना पड़े। साहुकार को स्मृति जरूर आवेगी। गायन भी है ना ... की ... इतने सभी पैसे कहां करेंगे। कोई लेगा ही नहीं। क्योंकि सभी खत्म हो जानी है। ... क्या करेगा। शरीर सहित सभी कुछ खलास हो जानी है। आप मुये तो मर गई दुनिया। यह धन आदि कुछ भी न रहेगा। बाकी गरुड़ पुराण आदि में तो रोचक बातें डाल दिया है ~~xxx~~ डराने के लिये। बाप कहते हैं यह शास्त्र आदि सभी हैं भक्ति मार्ग के। आधा कल्प भक्ति मार्ग चलता है जब फिर रावण-राज्य होता है। कोई से भी पूछो रावण कब से जलाते हो कहेंगे परमपरा से। और परमपरा से तो रावण होना ही नहीं। मालूम ... तो कह देते हैं परमपरा से। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है रावण-राज्य कब शुरु होता है। रचयिता और रचना की स्मृति आ गई है। अभी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो पाप कटें। एक दो को यही ... देते हो। घूमने आपस में जाओ तो भी यह बातें। सारा झुण्ड तुम्हारा इस याद की यात्रा में चक्र लगावें तो बहुत शान्ति का प्रभाव बहुत पड़ेगा। पादरी लोग भी बहुत साइलेन्स में जाते हैं। क्राईस्ट की याद ... कोई तरफ देखते भी नहीं हैं। तुम तो यहां बहुत याद में रह सकते हो। कोई गोरख-धंधा नहीं। बहुत अच्छा वायुमंडल है। बाहर में तो बहुत ही छी छी वायुमंडल रहता है। इसलिये सन्यासियों के आश्रम भी होते हैं। तुम्हारा तो है ही बेहद का सन्यास। पुरानी दुनिया अभी गई कि गई। यह कब्रस्तान है। फिर परिस्तान लेने, हीरे जवाहरों का बनेगा। यह परिस्तान के मालिक थे ना। अभी नहीं हैं। बाप कहते हैं मैं कल्प2 ... संगम युग आता हूँ। यह सारा चक्र रिपीट होता रहता है। इस समय तुमको सभी स्मृति में है। जब कि बाप ने स्मृति दिलाई है। आगे कुछ भी बुधि में नहीं था। कृष्ण के 84 जन्मों की स्मृति बाप दिलाते हैं। तुम समझाते हो तो बहुत लोग लोग बिगड़ते हैं। क्योंकि वह तो कृष्ण को भगवान समझते हैं ना। जैसे बाप ... गाली खाते हैं तुम भी गाली खाते हो। बाप कहते हैं तुम ने हमको बहुत गाली दी है। अब तुम भी ... इस स्मृति के नशे में जब रहेंगे तो किसको खुशी से समझा भी सकेंगे। स्मृति में रहनी है पर बार ... है। ज्ञान का सागर एक बाप है। शास्त्रों का ज्ञान कोई ज्ञान नहीं। यह भक्ति है। भक्ति अलग है ज्ञान अलग है। भक्ति मार्ग में आधा कल्प धक्के खाने पड़ते हैं भगवान को मिलने लिये। फिर बाप ही आकर भक्ति का फल देते हैं। सभी को स्वर्ग में ले जाते हैं। ... जानते हो सुखधाम आते हैं वाया शान्ति धाम। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

बाप और वर्सा याद है?

(अनोखे लाल)

(५७)

कहते हो तो
[illegible] पता था। पूछा जाता था क्योंकि तुम पवित्र ना [illegible] आ[illegible] क्यों हो। कहता था आज [illegible] देखे [illegible]। पवित्रता अच्छी लगती है परन्तु रह भी नहीं सकता। आखिर पुकार [illegible] [illegible] तो [illegible] बेड़ा गर्क हो जाए गा। बाप बोलते थे। घर में जाने से ही आम [illegible] [illegible] और कोई रास्ता नहीं है। इसलिए [illegible] यहाँ आना पड़ता है। बाप समझाते हैं तुम [illegible] [illegible] तक ऐसे जाते रहेंगे पावन जो बनते हैं उनको पतित बनने से जैसे घृणा आती है [illegible] [illegible] का खाना भी [illegible] नहीं लगता है। बाप ने युक्ति भी बताई है। [illegible] [illegible] होती है। ऐसे तो नहीं नौकरी छोड़ देंगे। फिर युक्ति से चलाना होता है। कोई को [illegible] को [illegible] है, पवित्र कैसे रहेंगे? [illegible] [illegible] नहीं, सन्यासी भी रह नहीं [illegible]। घर बार छोड़ जाते हैं। [illegible] रह सकते हैं। परन्तु यह किस को पता ही नहीं यहाँ पतित पावन परम पिता परमात्मा पढ़ाते [illegible] जाते हैं इसलिए ही विरोध करते हैं। शिव बाबा ब्रह्मा तन में आते हैं, कोई शास्त्र दिखाओ। यह [illegible] में लगा हुआ है। मैं साधारण बूढ़े तन में आता हूँ। जो अपने जन्मों को नहीं जानते यह तो लगा [illegible] तुम क्यों कहते हो कि परमात्मा कैसे मनुष्य तन में आवेंगे। पतित तन में ही आए रास्ता बताये [illegible] भी आए थे और कहा था मामेकम याद करो। चोटी परमधाम में रहते हैं और कहते हैं [illegible] [illegible] कृष्ण का शरीर तो मूल वतन में तो नहीं। आत्मा जो कहे [illegible] एकम याद करो। कृष्ण जो साकार [illegible] [illegible] आ सके। तो बहुत फर्क हुआ ना। सिवाए एक परम पिता परमात्मा के कोई कह ना सके। तो [illegible] कहते [illegible] तन में प्रवेश कर तुम बच्चों को कहता हूँ मामेकम याद करो तो इस योगाग्नि से तुम्हारे पाप [illegible] जायें। इसलिए ही मुझे पतित पावन कहते हैं। पतित पावन जरूर आत्माओं का होगा ना। पतित भी [illegible] ही बनती है। बाप कहते हैं तुम पवित्र आत्मा था तो 16 कला सम्पूर्ण थे। अभी तो [illegible]। बिल्कुल ही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आए तुमको पावन बनाता हूँ। भारत में पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था। अभी अपवित्र प्रवृत्ति [illegible] को भी चैन नहीं। अब बाप कहते हैं दोनों ज्ञान चिता पर बैठो। हर आत्मा को अपने 2 कर्मों [illegible] मिलता है। ऐसे नहीं कि दूसरे जन्म में भी अच्छी पति पत्नी आपस में मिलेंगे? नहीं। इतनी [illegible] [illegible]। यह तो प दादाई की बात है ना। अज्ञान काल में हो सकता है। आपस में बहुत प्रेम है तो उन [illegible] हो सकती है? सो तो है पतित विकारी मार्ग। पति पिछाड़ी पत्नि चिता पर चढ़ जाती है [illegible] पिछाड़ी काम चिता पर चढ़ती हो। यह तो 2 शरीर छोड़ चले जायेंगे। [illegible] चिता पर चढ़ती [illegible] जन्म में भी जाए उन से मिलती है। परन्तु उन को मालूम [illegible] कि आगे जन्म में ऐसे साथ थी [illegible] तुमको मालूम है। बाद में भी यह बातें याद ना रहेंगी। अगर तुम्हारी बुद्धि में सब आक्यूपेशन है। [illegible] [illegible] कहेंगे जरूर। तुम बच्चों को समझाया कि विष्णु को देवता कहेंगे। ब्रह्मा को देवता नहीं कह सकते। [illegible] [illegible] ब्राह्मण [illegible] देवता बनते हैं। [illegible] दिखाते हैं। यह कोई धर्म के नहीं। सूक्ष्म वतन में कोई [illegible] भारत में। अनेक धर्म हैं। [illegible] कोई धर्म नहीं। यह दिखाते हैं। बाद में देवता बनेंगे [illegible] [illegible] होगा। [illegible] बीच का समय है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो [illegible] कहते हैं यह अभी तुमने [illegible] है। शंकर का कोई कनेक्शन नहीं। ब्रह्मा और विष्णु का कनेक्शन है। [illegible] को देवता कहते हैं। [illegible] कहते [illegible] शुद्ध थे। तो यह समझने की बातें हैं। अभी तुम जानते हो [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] तो कहते हैं स्वर्ग गया। अर्थात चैन में गया। बेचैन में पतित रहते हैं। मनुष्य तो [illegible] [illegible] सीखते। साधु सन्त आदि पक्के 2 झूठ बोलते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है सो भी अभी कहते हैं जब [illegible] [illegible] बने हैं। पहले तो [illegible] मुनी कहते थे हम रचता और रचना को नहीं जानते। जैसे तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] है। यह है सब डिटेल की बाते। बाप फिर भी कहते है अपनको सिर्फ आत्मा समझ बापको यादकरे [illegible] विकर्म विनाश होगे। बाकी है डिटेल मे समझाने की बाते। बाप नालेजफुल है तो तुमको भी अपनजैसा नालेजफुल बनायेगे। [illegible] याद से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेगे। यह आत्माओ की रेस है। जो जास्ती यादकरे [illegible] वो जल्दी बनेगे। यह है योग और पढ़ाई की रेस। स्कूलो मे भी रेस होती है नां। देर वालेजिस है। बहुत [illegible] से नमस्कार निकलते है। एक ही पढ़ाई जो लाखो करोड़ो की होती है तो इतने स्कूल भी होगे नां। अब [illegible] पढ़ाई, पढ़ानी है सब को रास्ता बताओ। अन्धो की लाठी बनो। घर2 मे पैगाम पहुंचाना है। तुम [illegible] मैसेन्जर के बच्चे हो। कोई और मैसेन्जर या [illegible] नही। वो तो सिर्फ धर्म स्थापन करते है। पैगाम [illegible] आर देते है तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गए हो अब मुझे याद करो यह श्री मत [illegible] है। मुझे याद करो तो आत्मा पावन बन पावन दुनिया की मालिक बनजायेगी। यह है सच्ची गीता पाठशाला [illegible] [illegible] वाकीसब झूठे है। इनको सच्चे क्यो बोलते हो, क्योकि यह सच्ची2 पाठशाला है। एम [illegible] है मनुष्य से देवता बनने की। आजकल तो मनुष्य है डाग और विचित्र। कितने बच्चे पैदा करते है। [illegible] कुतीये कितने बच्चे पैदा करती है 6-8, उनको थण भी 6-8 होते है। स्त्रियो को तो 2 थण होते है [illegible] स्त्रियो को हो नहीसकते? नही। फिर इतने 4-6 बच्चे कैसे पैदा करते। दो थण और 5-6 बच्चे तो डाग [illegible] हुए नां। बाप फिर डाग से गाड बनाते है। सतयुग मे एक बच्चा होता है। सारी आयु [illegible] बच्चा। रात दिन का फर्क हैनां। सतयुग और कलयुग के मनुष्यो मे। तुम ही देवता थे। तुमही ऐसे असुर बने थे। बाप दृष्टान्त देते है ना। कुते की पूंछ को कितनासरा डालो तो भी सीधा नही होगा। ब्रह्मा भी ऐसे [illegible] भी ज्ञान कार्य मे डालो तो भी फिर वोही कुते [illegible] बन जाते। [illegible] मे चले जाते है। अब बाप कहते है तुम गाड गाडेस स्वर्ग के मालिक [illegible] हो तो यह कुते कुतरीपणां छोड़ दो। [illegible] देवी [illegible] बनो। इस मे मेहनत है। बापको बहुत प्रेम से याद करना है। रात को सोने समय [illegible] बहुत प्यार से याद करो। बाबा हम आपके बन चुके है। बस आप ही हमारे सब कुछ हो। ऐसा बाप याद करते रहेगे तो भी स्वर्ग मे चले जायेगे। बाप को याद करते तो [illegible] बाबा सा० भी करा देते है। पापी [illegible] फालतू सा० का पार्ट चलता है। हमारे मे शिव बाबा आते है यह आता है वो [illegible] माया की [illegible] भक्ति मार्ग मे भी मीरा को कृष्ण का सा० होता था। ऐसे नही [illegible] थी कि [illegible] मे कृष्ण आता। [illegible] की बाते भी बड़ी समझने की है। इससे बड़े घोटाले हो पड़ते है। ध्यान से योग जास्ती गाया हुआ है। [illegible] ज्ञान चाहिए। ज्ञान देते है एक बाप। कहते है मामेकम याद करो तो वर्सा जरूर मिलेगा। [illegible] ज्ञान बाप ही देते है। हे आत्माए मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेगे। वर्सा पा लेगे। [illegible] आता है प्राचीन भारत का योग। बाप से वर्सा जरूर मिलेगा। यह समझ की बात है नां। बाप स्वर्ग की स्थापना करने वाला। तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। कभी भी कोई भोग आदि की बात मे [illegible] बोलते [illegible] भोग [illegible] बोलो शिव बाबा के खजाने मे जमा कर देते है। [illegible] [illegible] को भी बुला कर शुद्ध भोजन खिलाते हो। सच्चा सुख तो इस समय का भोजन ही पावन [illegible] [illegible] कायदा। [illegible] तो पावन है। इसलिए बुलाते है। यहां आते ही [illegible] भाई बहिन से मिलने। बापका बनने से तुम गाड गाडेस बनते हो। अगर बापको कोफती [illegible] [illegible] करते है [illegible] से थोड़ा बहुत सुनते हो तो मजा ही आ जायेगा। कल से कल पद है चंडाल [illegible] आर की सजाई लेने या चंडाल बनने? कोई। इससे मीठुश हो जाते है। अच्छा जो मिले सो ठीक है [illegible] हमने सतोप्रधान थे अब तमोप्रधान बने हा अब बापको याद करो तो सतोप्रधान [illegible]। इसमे [illegible] तकलीफ की बात नही। सिर्फ आत्मा को कहा जाता है अपनी बुद्धि बाप के साथ लगाओ। [illegible] बाप [illegible] शिव बाबा को याद करने तो पाप्णा [illegible] सिर्फ पुकारना नही है। पुकारते है भक्त [illegible] ऐसे सिर्फ [illegible] ना [illegible]। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। अच्छा। मीठे2 सिकीलधे [illegible] नमस्कार बच्चे, बहुत है जो [illegible] नही बनते। तो जमा भी कुछ नही होता। याद करते है वो2 [illegible] [illegible]। [illegible] मे तो बहुत तकलीफ होती है। [illegible]

3

[illegible] हैं। आत्माओं का पिता ब्रह्मा। ब्रह्मा है शिव बाबा का बच्चा। रूहानी बाप और जिस्मानी [illegible] हैं। तुम शिव बाबा के रूहानी बच्चे हो। और जिस्मानी ब्रह्मा के। इनकी आत्मा भी शिव बाबा का [illegible] है। फिर जिस्मानी ब्राह्मणों का बाप है। जिससे यह ब्राह्माकुमार कुमारियाँ निकली। तुम ब्रह्मा [illegible], शिव बाबा के पोते हो। वर्सा इनसे मिलता है। यह भी समझने की बात है। बाबा से कोई भी बच्चे [illegible] ... तो बाबा बतायेंगे। यह पुरानों की बात है। कोई नये2/ले आती है ऐसे [illegible] मिलने से ही एकदम तीर लग जाता है। कई अच्छे2 पत्र लिखते हैं। [illegible] ऐसी बातें सुनाई जो पक्का निश्चय हो [illegible]। अब बाप आये हैं। आप से वरसा लेना [illegible] कभी भी मिले नहीं हैं तो भी ऐसे2 पत्र लिखते हैं। तो समझा जाता है कि यह सिकील[illegible] [illegible] काम बतावें तो झट समझ जाते हैं। जैसे त्रिनगर का सेन्टर अभी [illegible] बच्चों ने पत्र लिखे हैं। बस अब तो मिलने के लिये उत्कंठा में रहते हैं। सिर्फ यह कंगन [illegible] हैं। जो [illegible] धर्म के होंगे वही-आयेंगे। जो श्रीकृष्ण पुरी में आने वाले [illegible] वही [illegible] है संगम। ब्रह्मपुरी= ब्रह्मपुरी नहीं। कोई कोई [illegible]= लिखती है कि यह [illegible] [illegible] उनकी कुमारी कैसे होगी। प्रजापिता ब्रह्मा तो मशहूर है। प्रजा तो यहाँ ही होगी न [illegible] परमपिता परमात्मा शिव की शक्तियाँ। शक्ति मिलती है शिव बाबा से। इनको [illegible] शिव बाबा को करना है। इससे हम पतित से पावन होंगे। इस समय तो सभी [illegible] उदासी सब विश्व में जन्म लेते हैं। भूत पलती सभी आत्मायें हैं। तो सर्वरसभी भूत [illegible] कोई तो झट समझ जाते हैं, कोई तो कहने मात्र बाबा कह देते हैं। नालेज भी बड़ी [illegible] को शक्ति का फल देने के लिये भगवान को आना पड़ता है। बच्चों को आकर पढ़ाते हैं [illegible] बाप हूँ, टीचर भी हूँ, सद्गुरू भी हूँ। सभी को वापस ले जाने के लिये आया हूँ। इस [illegible] लिबरेटर भी कहते हैं। तो प्रेरणा से थोड़े ही करेंगे। बाप तो आते हैं पढ़ाने के लिये। अगर [illegible] भी [illegible] किया और बाप को भूले तो भूलते भूलते आखिर पुरानी दुनिया में चले जायेंगे। [illegible] कैंसल, यह ज्ञान बिल्कुल गुम हो जाता है। बाप ने जो दिया वह वापस ले लेते हैं। बुद्धिवानों [illegible] तो [illegible] या तो ताला खोल देते हैं या तो एकदम बन्द कर देते हैं। और ही ज्यादा [illegible] पड़ते हैं। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। सुनने वालों के नैन चैन से मालूम पड़ता है कि [illegible] धारणा होती है। ऊँच पद पा सकेंगे वा नहीं। बाबा झट समझ जाते हैं। यह समझने [illegible] बुद्धि कहाँ भटकती रहती है। नब्ज देखने वाला भी होशियार चाहिए वह झट समझ जाते [illegible] सकेंगा वा नहीं। नम्बरवार तो है न। सबसे होशियार है भल यह बाबा, ब्रह्मपुत्री। परन्तु [illegible] तो नहीं करेंगे। दूसरा नम्बर में है सरस्वती। इस पढ़ाई पर तो यहाँ ही इम्तहान [illegible] वह होगा अन्त में। अब तो जहाँ जीना है, तहाँ पढ़ते रहना है। सब को कहना है [illegible] अगर कोई पतित समझता है तो बस गोया बाप को पहचाना नहीं है। अच्छा [illegible] बाबा का मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को [illegible] नमस्ते।

...कार की होती है। एक शरीर की होती है दूसरी आत्मा की होती है। ...आत्मा के लिये ... पूछेंगे। वे तो कहते हैं आत्मा निर्लेप है। फिर उनकी तबीयत का पूछो। यहाँ ... की तबीयत तो बहुत खुश रहनी चाहिए। आत्मा को बहुत खुशी होती है। कल्प बाद आकर बाप ... आत्मा की खुशी का पारावार नहीं रहना चाहिए। समझते हैं बाबा आया हुआ है। स्वर्ग तो ... निश्चय है। जब पक्का होकर रह करें फिर भी चला जाये तो भी स्वर्ग में आयेंगे। ... करेंगे। स्वर्ग में तो आना ही है। यह शिव बाबा ... है उनसे पद पाना है। ... बना, शिव बाबा का पोत्रा बना। निश्चय हुआ। बाकी पुरुषार्थ अनुसार ऊँ... नहीं कर सकते वह तो तुम्हारी तकदीर हो गई। पास्ट के ऐसे कर्म किये हुये ... कर सकते हो। ... बाबा क्या कर सकते हैं। ... हर बात कर्म पर मदार रख... बहुत ऊँच पद है। जितना हो ऊँच पुरुषार्थ करेंगे। परन्तु कोई कर्म सामने आते हैं ... कहेंगे तुम्हारे ऐसे कर्म हैं जो तुम घड़ी घड़ी गिर पड़ते हो। मैं तो पूरा ... पुरुषार्थ कर लेना तेरा फर्ज है। उसमें भी जैसा करेगा वैसा पायेगा। स्त्री पुरुष में ... कोई नीचे। उस समय अपना तख्त ... करना है हरेक को। अपनी कमाई ही ... चाहिए उतना करोड़पति बनो। सिर्फ अविनाशी धन का दान करो और कराओ। ... कहते हैं मैं महादानी हूँ। जिससे तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। ... तो यह रत्न ... दान करो। पात्र देख करो। जिनको धारणा हो, रिगार्ड हो उनको दो। यह वेस्ट ... समझाते हैं तुमको धनवान बनाया था फिर तुम कौड़ी जैसे बन पड़े हो। अब फिर ... भक्ति मार्ग में जन्म व जन्म खर्च करते नीचे गिरते आये हो। कितना पुरुषार्थ भी पढ़... बने। परन्तु बनते बनते नीचे ही गिर पड़े। अच्छी पूजा की है तो फल भी हमको ही ... तो उसका फल बाबा देते हैं। परन्तु भक्ति से तो दुर्गति को पाया न। ... करते, पत्थर घिसाते, कौड़ी जैसे बने। फिर भी बनेंगे। यह ड्रामा। भक्ति और ... के लिये है। जो पूज्य थे वही पुजारी बने फिर वही पूज्य बनेंगे। यह बातें शास्त्रों में ... ढूंढी लॉगी तब तो ज्ञान मिलेगा न। (पाण्डवों के लिये दिखाते हैं पहाड़ों पर गल ... की सत्य। ... प्रलय हो गई। बात है यह।) सभी वापिस जाने हैं। बाकी थोड़े बचती ... को बेहद का बाप समझाते हैं। बहुत मीठा हो चलना है। किसको तंग न करो। सर्विस में ... न डालो। रूठने से सर्विस में बाधा पड़ेगा। रूठना, एक दो को नुकसान करना यह अच्छा नहीं। ... चुगलपना बड़ा नुकसानकारी है। पुतीपना से विमुख हो पद भ्रष्ट कर देते। सुनी सुनाई पर ... लगना चाहिए। श्रीमत ले पूछना चाहिए। घुटका न खाना है। कोई भी बात सुनो बाबा से पूछो। ... सुनी सुनाई वाले बाबा खराब कर देते हैं। वेरीफाय कराना चाहिए। पुतलियाँ भी ... उनमें मतभेद न होना चाहिए। हरेक को मददगार बनना है। अच्छा ... बढ़ाना है। सेल्समैन अच्छे हैं। उनको दुकानों पर जाकर सर्विस करनी ... सर्विस करने वालों को दिल में ख्याल न होना चाहिए। मेरी इज्जत जायेगी। कहेंगे यह ... न ... चाहिए। ज्ञान डान्स का शौक होना चाहिए। शौक नहीं तो कुछ काम का नहीं। ... अविनाशी 21 जन्म के लिये तुम धन कमाते हो। डान्स का जिनको शौक नहीं ... डान्स से ही खुशी का जीवन हीरे जैसा बनता है। अच्छा बाप दादा का मीठे2 ... यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

* आज के दिन विशेष ज्ञान सूर्य बाप और ज्ञान-चन्द्रमा माँ का बैकबोन होकर सितारों को विश्व के आकाश में प्रत्यक्ष करने अर्थात् बैकबोन बन बच्चों को विश्व के मैदान में आगे रखने का दिन है। बाप अननोन और बच्चे वेलनोन है।

* आज के दिन ब्रम्हा बाप ने अति प्यारे और अति न्यारेपन का सबूत दिया। बाप समान कर्मातीत अर्थात् कर्म के बन्धन से मुक्त न्यारा बनने का सबूत दिया।

* आज के दिन ब्रम्हा बाप प्रत्यक्ष रूप में करावनहार बाप के साथी बने, करनहार निमित्त बच्चों को बनाया इसलिए बच्चों के दर्पण द्वारा बापदादा के प्रख्यात होने का अर्थात जगत के बच्चों को जगत पिता का परिचय देने का यह विशेष दिन है।

* आज के दिन विशेष ब्रम्हा बाप देह से सूक्ष्म फरिश्ता स्वरूप धारण कर बच्चों को तीव्रगति से ऊंचा उड़ाने के लिए, फरिश्ते रूप से उड़ाने के लिए, सेवा को गति में परिवर्तन करने के लिए ऊंचे वतन निवासी बने।

* आज का दिन तीव्रगति से विश्व कल्याण, विश्व परिक्रमा का कार्य आरम्भ होने का दिन है। आगे बच्चे पीछे बाप -- इसी संकल्प के साकार होने का दिन है।

* सर्व बच्चों को अपनी स्थिति ज्ञान स्तम्भ, शक्ति स्तम्भ, पवित्रता स्तम्भ और शान्ति स्तम्भ बनाने अर्थात स्तम्भ समान अचल अडोल बनने की प्रेरणा देने का दिन है।

* आज के दिन आदि देव ब्रम्हा बाप ने स्वयं साकारी जिम्मेवारियां अर्थात् साकारी रूप से सेवा का ताज, नयनों की दृष्टि द्वारा हाथ में हाथ मिलाते, मुरब्बी बच्चों को अर्पण किया। इसलिए विश्व कल्याण के सेवा की जिम्मेवारी के ताजपोशी का यह विशेष दिन है।

* जैसे ब्रम्हा को आदि में वरदान मिला ततत्वम ऐसे आज के दिन ब्रम्हा बाप भी बच्चों को विशेष ततत्वम का वरदान देते हैं। इसी वरदान को सदा स्मृति में रख सदा समर्थ आत्मा बनो।

* आज के दिन बापदादा शक्ति सेना को सर्व शक्तियों को विल करते हैं, विल पावर्स देते है। विशेष सन शोज फादर की सौगात देते है।

* जैसे ब्रम्हा बाप ने आदि में स्थूल धन बच्चों को विल किया, ऐसे आज के दिन अपनी अलौकिक प्रापर्टी बच्चों को विल की। इसी अलौकिक प्रापर्टी के विल के आधार पर कार्य मे आगे बढ़ने की विल पॉवर प्रत्यक्षरूप दिखा रही है।

* आज का दिन स्नेह और शक्ति का कम्बाइन्ड, वरदानी दिन है क्योंकि स्नेह के साथ शक्ति भी आवश्यक है। जिसमें स्नेह और शक्ति दोनों का बैलेन्स है वही बाप समान बनते है।

* आज के दिन बाप, विशेष ब्रम्हा बाप के संकल्प और आव्हान को आकार रूप देनेवाले डबल विदेशी स्नेही बच्चों को देख हर्षित होते हैं। ब्रम्हा बाप के आव्हान के प्रत्यक्ष फलस्वरूप, सर्व शक्तियों के रस भरे श्रेष्ठ फलों को देख बच्चों को विशेष बधाई और वरदान देते हैं -- "सदा सहज विधि द्वारा वृद्धि को पाते रहो"। जैसे बच्चे हर कदम पे बाप को कमाल गाते हैं, ऐसे बापदादा भी बच्चों को कमाल गाते हैं कि दूरदेशी दूर के धर्म वाले होते हुए भी कितने समीप आ गये है।

* आज का दिन ब्रम्हा बाप का बच्चों को बाप समान भव के वरदान देने का दिन है। ब्रम्हा बाप के अन्तिम संकल्प के बोल था नयनों के इशारे के बोल यही थे - "बच्चे, सदा बाप के सहयोग की विधि द्वारा वृद्धि को पाते रहेंगे" यही अन्तिम बोल, वरदानी बोल प्रत्यक्षफल के रूप में देख रहे हो। ब्रम्हा बाप के अन्तिम वरदान के बीज से निकले हुए साकार स्वरूप आप सब वैरायटी फल हो।

* आज के स्मृति दिवस पर बापदादा सदा यही स्मृति दिला रहे हैं कि बच्चे, दिल से सदा साथ रहो और स्थिति में सदा साक्षी रहो तो मायाजीत का झण्डा लहराता रहेगा। हर परिस्थिति में सदा नथिंग न्यु का पाठ स्मृति में रख, हर कदम में कल्याण समझ निश्चिंत रहना।

* आज के दिन को विशेष वरदान मिला हुआ है- "सदा स्मृति स्वरूप भव"
याद और सेवा दोनों का बैलन्स स्मृति स्वरूप स्वतः बना देगा। बुद्धि में भी बाबा और मुख से भी बाबा। हर कदम विश्व कल्याण की सेवा प्रति हो। संकल्प में याद और कर्म में सेवा हो -- यही ब्राम्हण जीवन है।

* तो ऐसे दिन के महत्व को जानकर साकार बाप के वरदानों के विशेष अधिकारी बनो। जैसे ब्रम्हा बाप के हर कर्म में शिव बाप का प्रत्यक्ष अनुभव करते थे ऐसे अब आपके हर कर्म में ब्रम्हा बाप प्रत्यक्ष दिखाई दे। हर एक आप विशेष आत्माओं की सूरत द्वारा ब्रम्हा बाप को मूर्त अनुभव करें। ब्रम्हाकुमार या ब्रम्हाकुमारी नहीं, लेकिन ब्रम्हा बाप के समान ब्रम्हा बाप को साक्षात् मूर्त अनुभव करें ऐसी सेवा के निमित्त क वरदानी बनो तब शिव शक्ति और साथ में ब्रम्हा बाप ऐसे साक्षात्कार चारों ओर शुरू होंगे। साधारण स्वरूप के बजाए शिवशक्ति स्वरूप दिखाई दे। ब्रम्हा बाप श्रेष्ठ संकल्प की विधि द्वारा वृद्धि मे सदा सहयोगी हैं, इसलिए तीव्रगति से वृद्धि हो रही है। विधि तीव्र है तो वृद्धि भी तीव्र है। अच्छा।

ऐसे सदा बाप के वरदानों से वृद्धि को पाने वाले, सदा एक बाप दूसरा न कोई - ऐसे विशेष स्मृति सो समर्थ भव के वरदान सम्पन्न, सदा ब्रम्हा बाप के समान फरिश्ता भव के वरदानी, ऐसे समान और समीप बच्चों को बापदादा का समर्थ दिवस पर याद प्यार और नमस्ते।

(५७)

बाबा। तुम जो भी देखते हो सतयुग में या यहां यह सभी मनुष्य हैं। सतयुग में है दैवी गुणों वाले, इनको देवता कहा जाता है। कलियुग में आसुरी गुण वाले । बाप को न जानने कारण निधणके बन ते हैं। भगवान आकर फिर फल देते हैं। भगवान क्या देंगे। इनके पास तो है ही स्वर्ग। बाप कहते हैं तुम बच्चों के लिए क्या यादगार ले आऊं। स्वर्ग लाता हूं। बाप बच्चों के लिए सौगात ले आते हैं। 5000 वर्ष आते हैं। लौकिक बाप विलायत से आठ या दस वर्ष बाद आते हैं तो भी क्या ले आते हैं। कस्टम बाद में कितना लगता है। यहां तो तुमको विश्व की बादशाही मिलती है। और कोई तकलीफ की बात ही नहीं। तुम लक्ष्मी का परिचय देते हो। और मनुष्य इन बातों को नहीं समझेंगे। अगर नहीं समझते हैं तो जनावर से बदतर हैं। सिवाय मनुष्यों के और तो कोई भगवान को जानते ही नहीं। एकदम भूल ही गए हैं। भगवान का नाम भी सभी भूले हुए हैं। अभी तुम तो रामराज्य और रावण राज्य को समझ गये हो। यह भक्ति मार्ग यह ज्ञान मार्ग। अभी तुम बच्चों को ज्ञान मार्ग का फल देवी बादशाही मिल रही है। यहां तो यह शरीर आदि छोड़ने हैं। तुमको वहां क्या मिलता है। ऐसा कालेज कब देखा जहां एडवांस बतावें कि तुम यह बनेंगे। अभी तुम बाप को देखते हो। देहधारी मनुष्य देह को ही देखेंगे। तुमको हुकुम मिला हुआ है अपन को आत्मा समझ बाप को देखो। बाप के रहने का स्थान कहां है वह भी तुम जानते हो। बाप भी जानते हैं आत्मा कहां है इस शरीर में। यह है अकाल तख्त। आत्मा तो मृत्यु को नहीं पाती। बाकी छी छी होती है। सोना में खाद पड़ता है तो छी छी जेवर बनते हैं। यह समझाने लिए मिसालदी जाती है। आत्मा ही पतित से पावन बनती है। अभी आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर भी तमोप्रधान है। आयरन एजेड कालीआत्मा अथवा काली दुनिया है। काम चिता पर चढ़ काले बन पड़े हैं। इस समय विष्फुलचूर हो गये हैं। बाप कहते हैं और बच्चे सभी काम चिता पर चढ़ काले बन पड़े हैं। इसलिए इनका नाम ही आयरन एज दुनिया मनुष्यों की होती है। बिगर मनुष्यों के दुनिया थोड़े ही कहेंगे। यह झाड़ बना हुआ है। जिसमें 84 का चक्र फिरता रहता है। अर्थात वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती है। मनुष्यों की होती है या आत्मा होती है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। ऐसे भी नहीं है सभी 84 जन्म भोगते हैं। मैक्सीमम 84-मिनीमम एक। जब यहां एक भी नहीं रहता है तब फिर चले जाते हैं। बड़ा लम्बा हिसाब है। सतयुग आद में है देवताएं। फिर वृधि को पाते हैं। इस हिसाब से सतयुग में कितने थोड़े होंगे। कलियुग में तो ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में बहुत ही थोड़े होते हैं। फिर देवी लायक कैसे बनें अभी तुम समझते हो संगम युग पर ही बनते हैं। इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। पुरुषोत्तम अक्षर तो जरूर लिखो। यह है पुरुषोत्तम बनने का युग। कैसे बनते हैं सो तो तुम ही बता सकते हो। तुम अभी हो पुरुषोत्तम संगम युगी। कलियुगी मनुष्य तो जरा भी नहीं जानते। नाम ही रखा है बन्दरसेना। वास्तव में है रावण की सेना। बाबा इनको बदली करते हैं। तुम अभी चेंज हो रहे हो। विकारी रावण सेनाएं निर्विकारी राम सेना के बन रहे हो। यहां बन कर फिर तुम जायेंगे राजाई में। रुद्र माला विष्णु की माला रुण्ड माला यह निशानियां हैं। बाप समझाते हैं। आत्माओं की है रुद्र माला। कलियुगी मनुष्य यह बातें नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। रुद्र माला जरूर है जिसको सिजरा कहा जाता है। यह है स्प्रीचुअल आत्माओं का सिजरा। यह है जीवात्माओं का जिस्मानी निराकारी। अभी समझाते बुधि में है वह जीवात्माओं का भी बरोबर झाड़ है। जैसे दरबारियों का सिजरा बनाते हैं। यह भी ऐसे हैं। एक से पहले किसने विदाई ने ली। गायन भी है ना आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल .. परमात्मा से पहले कौन विदाई लेती है पार्ट बजाने। यह तो सिर्फ गाते हैं। जानते कुछ भी नहीं। तुम समझते हो हम यहां से जाते हैं। सारी रुद्रमाला को तुम जान गये हो। आदि से अंत तक। सिजरा भी तुम्हारी बुधि में है। इन्द्र-सभा प्रजापिता ब्रह्मा। बेहद की बात है ना। गाया भी जाता है आदम बीबी।

[illegible] और आप को मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन की नालेज है। जो भी अच्छे बच्चे हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उन्हें सारी नालेज है। तुमको बाप ने आप समान नालेजफुल बनाया है। दाकी बनाते [illegible] हो। [illegible] तुम भी नालेजफुल बन जायेंगे। 84 के चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बनते हो। परन्तु पवित्र बनने [illegible] [illegible] नहीं होंगे। पवित्र भी याद की यात्रा से बनेंगे। इस यात्रा को भी [illegible] 50 एक वर्ष लग जाते हैं। कहाँ जाते नहीं हैं। खाते-पीते धंधा आद करते याद की यात्रा में रहते हो। ऐसी याद [illegible] होना है [illegible]। [illegible] [illegible] यात्रा है। गृहस्थ व्यवहार आद में रहते कमल फूल समान पवित्र रहना है। बाप को याद करो ते तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। याद से ही तुम्हारी आत्मा पावन बन जायेगी। बाप को ही तुम पतित पावन कहते हो। तुम्हारी बैटरी डाऊन हो जाती है। फिर याद से भरती भर जायेगी। तुमको [illegible] भी चित्र है। जिस पर समझानी देते हो। पावन को [illegible] बाप से बुध को [illegible] शरीर से [illegible] अलग [illegible] जाते हैं। [illegible] तो बहुत हैं। यहाँ भल सुनते भी हैं परन्तु एक कान से सुना और दूसरे कान से निकल जाता। फिर उनका [illegible] क्या होगा। नापास हो पड़ेंगे। पास होने वालों को [illegible] है। आत्मा भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बनते ही हैं। बाप को आकर समझाना पड़ता है। यह राजधानी स्थापन हो रही है। बाप तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। लड़ाई आद की बात ही नहीं। तभी [illegible] हैं [illegible] हो। [illegible] हो। परन्तु यह तो बाप का ही काम है। [illegible] आद होती है तो पूछ सकते हो वह क्या चाहते हो। [illegible] करते रहते हैं। वह तो जब आत्मायें जाकर [illegible] [illegible] स्वीट होम। सब की सदगति दाता एक बाप ही है। पहले2 बाप को ही पहचानना है। बाप को ही न पहचाने तो याद कैसे करें। पतित से पावन कैसे बनें। पहले2 तो बाप का पूरा निश्चय हो। [illegible] बाप से बेहद का [illegible] की बादशाही मिलता है। इतना भी लिखकर देना। फिर भी न आवे तो समझो पत्थर बुद्धि है। तुम [illegible] पूरा करा दो। पहले2 बाप का परिचय। रचयिता और रचना को न जानने कारण नेती2 [illegible] [illegible] नहीं जानते हैं। देवतायें नास्तिक ठहरे। [illegible] नास्तिक ठहरे। [illegible] देवताओं को नास्तिक कहेंगे नहीं। क्योंकि आस्तिक बन कर राजाई ली है। आस्तिक और नास्तिक यह अक्षर यहाँ ही काम में आते हैं। [illegible] इन अक्षरों का अर्थ कोई नहीं समझते। [illegible] तुमको बाप समझाते हैं। [illegible] सहज है। तुम जानते हो इस ब्रह्मा तन में शिव बाबा समझाते हैं। ब्रह्मा [illegible] [illegible] बहुत जन्मों के अन्त में जब वानप्रस्त अवस्था में जाने का समय होता है [illegible] [illegible] खुद भी वानप्रस्त अवस्था में जाते हैं। सबको भी ले जाते हैं। तुम प्रदर्शनी में म्यूजियम में [illegible] [illegible] जब आते हैं तो पहले2 [illegible] उनको अलफ समझाओ। तो देहरे पर [illegible] आवेगी। बेहद का बाप हमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। बस उनको ही याद करते रहो। जहाँ तहाँ शिव [illegible] याद है [illegible] शिव बाबा को याद करेंगे तो क्या मिलेगा। शिव बाबा को याद किया, राजधानी [illegible] [illegible] अर्थ तो यह है ना। राजधानी तो जरूर स्थापन होनी है। बाप कहते हैं बच्चे बीती को चितवो नहीं। आगे के लिए खबरदार रहना है। कोई भी भूल [illegible] हो। [illegible] कहते हैं बाबा भूल [illegible] आशीर्वाद करो। बाप कहते हैं मैं आशीर्वाद करने [illegible] नहीं हूँ। मैं तो रस्ता बताता हूँ पुरुषार्थ तुमको करना है। चिरंजीव अर्थात् [illegible] जीते रहो। वहाँ तुम्हारी आयु भी बड़ी हो जाती है। अमरलोक है ना। [illegible] से तुम पावन बन जायेंगे। अमरपुरी में काल होता नहीं।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों [illegible] [illegible] याद प्यार [illegible] गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

3-12-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हारा रूहानी योग है एवर प्योर बनने के लिए क्योंकि तुम पवित्रता के सागर से योग लगाते हो, पवित्र दुनिया स्थापन करते हो"

प्रश्न:- निश्चयबुद्धि बच्चों को पहले-पहले कौन-सा निश्चय पक्का होना चाहिए? उस निश्चय की निशानी क्या होगी?

उत्तर:- हम एक बाप के बच्चे हैं, बाप से हमको दैवी स्वराज्य मिलता है यह पहले-पहले पक्का निश्चय चाहिए। निश्चय हुआ तो फौरन बुद्धि में आयेगा कि हमने जो भक्ति की है वह अब पूरी हुई, अब स्वयं भगवान् हमें मिला है। निश्चयबुद्धि बच्चे ही वारिस बनते हैं।

गीत:- ओ दूर के मुसाफिर. . . . . . .

ओम् शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं दूर के मुसाफ़िर तो सब हैं। सब आत्मायें दूर से दूर परमधाम की रहन वाली हैं। यह भी शास्त्रों में है। आत्मा दूर रहती है, जहाँ सूर्य चांद की रोशनी नहीं रहती। मूलवतन और सूक्ष्मवतन में कोई ड्रामा नहीं है। ड्रामा इस स्थूलवतन का है, जिसको ही मनुष्य सृष्टि कहा जाता है। मूलवतन और सूक्ष्मवतन में कोई 84 जन्मों का चक्र नहीं है। चक्र मनुष्य सृष्टि में दिखाया जाता है। मनुष्य सृष्टि क्या चीज़ है, मनुष्य किसका बना हुआ है? मनुष्य में एक तो आत्मा है, दूसरा शरीर है। 5 तत्वों का पुतला बनता है। उसमें आत्मा प्रवेश कर पार्ट बजाती है। तो दूर के वासी तो सब हैं। परन्तु तुम निश्चय करते हो। मनुष्यों में निश्चय नहीं है। बाप ने समझाया है मुझे दूरदेश का रहने वाला कहते हो परन्तु तुम सब आत्माओं का निवास स्थान एक है। उस नाटक में जो पार्ट बजाते हैं उसमें तो हर एक का अपना-अपना घर होता है ना। वहाँ से आकर पार्ट बजाते हैं। यहाँ तुम बच्चे समझते हो हम सब एक ही बाप के बच्चे हैं, एक ही घर परमधाम में रहने वाले हैं। वह है ब्रह्म महतत्व, यह है आकाश तत्व। यहाँ पार्ट बजाते हैं, रात-दिन होता है इसलिए सूर्य-चांद भी हैं। मूलवतन में तो दिन-रात नहीं होता है। यह सूर्य-चांद कोई देवता नहीं हैं। यह तो माण्डवे को रोशन करने वाली बत्तियां हैं। दिन में सूर्य रोशनी देता है, रात में चांद की रोशनी होती है। अभी सब मनुष्य चाहते हैं मुक्तिधाम में जायें। जानते हैं भगवान् ऊपर में रहता है। भगवान् को भी याद करेंगे – हे परमपिता परमात्मा, तो बुद्धि ऊपर चली जायेगी। आत्मा समझती है परन्तु अज्ञान छाया हुआ है। यह भी जानते हैं हम यहाँ के रहने वाले नहीं हैं। हमारा बाप वह है। मुख से ओ गॉड फादर कहते भी हैं। फिर कह देते हैं सब फादर हैं, गॉड सर्वव्यापी है। बच्चों को समझाया है सब तो फादर हैं नहीं। सब आत्मायें आपस में ब्रदर्स हैं। यह न जानने कारण लड़ते-झगड़ते रहते हैं। तुम आत्मायें ब्रदर्स हो, एक बाप की सन्तान बने हो। निश्चय-बुद्धि भी नम्बरवार हैं। लौकिक सम्बन्ध में निश्चय रहता ही है कि बाप से वर्सा पाना है। यहाँ बाप से माया घड़ी-घड़ी मुंह फेर देती है। सर्वशक्तिमान बाप के बनते हो तो माया भी सर्वशक्तिमान होकर लड़ती है। पांच विकारों पर जीत पाने की युद्ध है। युद्ध तो मशहूर है।

बाकी शास्त्रों में जो कौरव-पाण्डव दिखायेहैं वह बात है नहीं। यह रावण के साथ युद्ध बड़ी भारी है। हम चाहते हैं कि बाप की याद में रहकर हम सम्पूर्ण बनें, आत्मा प्योर बनें। और तो कोई भी रास्ता है नहीं सिवाए योग के। और जो भी योग सीखते हैं वह कोई प्योरिटी के लिए नहीं है। वह तो सब स्थूल योग हैं, अल्पकाल के लिए और यह रूहानी योग है एवर प्योर होने के लिए। पवित्रता के सागर के साथ हम योग लगाने से पवित्र बनते हैं। बाप कहते हैं इस योग अग्नि से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म नहीं होते। बुद्धि भी कहती है यह पतित दुनिया है। कोई से भी पूछो – यह सतयुग है या कलियुग? तो इसको सतयुग कोई भी नहीं कहेंगे। सतयुग तो नई दुनिया थी। उसको गोल्डन एज, इसको आइरन एज कहा जाता है। पुरानी दुनिया को कलियुग और नई दुनिया को सतयुग कहा जाता है। ऐसे कह नहीं सकते कि अभी सतयुग भी है तो अभी कलियुग भी है। नहीं, नर्कवासी माना ही नर्कवासी। पुरानी दुनिया को पतित, नई दुनिया को पावन दुनिया कहेंगे। मनुष्यों के लिए ही समझाया जाता है, जानवर थोड़ेही कहेंगे पतित-पावन आओ। कोई से भी पूछो तो कहेंगे यह नर्क है। भारत ही नई दुनिया स्वर्ग था, भारत ही पुरानी दुनिया नर्क है। भारत पर ही जोर देते रहते। दूसरे सब तो बीच में आते हैं। उससे हमारा तैलुक नहीं। हमारा धर्म ही अलग है, जो अब प्रायः लोप हो गया है।

अभी तुम निश्चयबुद्धि बने हो। जानते हो हम एक बाप के बच्चे हैं। बाप से हमको स्वराज्य मिलता है। पहले तो यह पक्का निश्चय चाहिए। ज्ञान सुनते हैं, वह तो ठीक है। प्रजा बन जाती है। बाकी हम बेहद बाप के बच्चे हैं – यह निश्चय हो जाए, समझें हमने भक्ति की है भगवान से मिलने के लिये। अभी भक्ति पूरी होती है। अब भगवान स्वयं आकर मिला है। उनसे सूर्यवंशी स्वराज्य पद मिलता है। हम इतना ऊंच पद पाते हैं। जैसे साहूकार लोग बच्चे को गोद में लेते हैं ना। वह तो एक बच्चा लेते हैं। यहाँ तो बेहद के बाप को अनेक बच्चे चाहिए। कहते हैं जो मेरा बच्चा बनेगा उनको स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। जो मेरा नहीं बनते तो वर्सा ले न सकें। श्रीमत पर ही नहीं चलते। जिनको निश्चय हो जाता है वह तो कहते बाबा आप फिर से आये हो, बस, हम तो आपका हाथ नहीं छोड़ेंगे। बाप बच्चों को समझाते हैं, बच्चे फिर दूसरों को समझाते हैं कि हम पारलौकिक बाप के बच्चे बने हैं। उनकी श्रीमत पर हम चलते हैं, हमको परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। इतने सब बी.के. बने हैं तो जरूर निश्चय है, तो हम भी क्यों न बनें। लिख करके भेज दें कि हम आपके बने हैं। बाप कहेंगे हम कोई दूर थोड़ेही हैं। हम तो यहाँ बैठे हैं, हाजिर हैं। यहाँ प्रैक्टिकल में बैठे हैं। जैसे प्रेजीडेन्ट के लिए कहेंगे कि इस सृष्टि पर हाज़िर है तो इसका मतलब यह नहीं है कि प्रेजीडेन्ट सर्वव्यापी है। ऐसा परमपिता परमात्मा, जिसको सुख कर्ता दु:ख हर्ता कहा जाता है वह सर्वव्यापी नहीं हो सकता। उनकी हाज़िरी में मनुष्य इतने दु:खी कैसे हो सकते? जबकि बाप की गैरहाज़िरी (स्वर्ग) में भी कोई दु:खी नहीं रहता।

बाप ने बच्चों के लिए घोंसला बनाया है। जैसे चिड़िया बच्चों के लिए घोंसला बनाती है, तो बाप भी तुम्हारे लिए तुम्हारे द्वारा ही आखेरा (घोंसला) बनवाते हैं। तुम्हारे ही रहने के लिए स्वर्ग का आखेरा बन रहा है। बाप कहते हैं तुम मेरी मत पर चलेंगे तो स्वर्ग मे राज्य करेंगे।

अगर पूरा निश्चय हो तो एकदम पकड़ लेवें। ऐसे भी नहीं कि यहाँ बैठ जाना है। घरबार तो छोड़ना नहीं है। वह तो घरबार छोड़ते हैं। गुरु को भगवान् समझते हैं। वह कोई जीते जी मरते नहीं है। तुमको तो जीते जी मरकर फिर सतयुग में जीना है। तुम बाप से बेहद का वर्सा लेते हो। जब निश्चय हुआ कि बेहद का बाप पढ़ाते हैं 21 जन्मों का वर्सा देते हैं तो उनकी श्रीमत पर चलना पड़े। बच्चा बना तो बाप डायरेक्शन देंगे। पहले तो एक हफ्ता भट्ठी में बैठो। तुमको रोज़ नॉलेज मिलती रहेगी। सब तो एक जैसे नहीं समझते हैं, हर एक अपने पुरूषार्थ और तकदीर अनुसार पाते है। पुरूषार्थ और तकदीर के ऊपर ही होता है। पता लग जाता है कि तकदीर में क्या है? क्या पद पायेंगे? बाप का बनकर फिर गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। अच्छा, गृहस्थ व्यवहार नहीं है तो जाकर अन्धों की लाठी बनो। सत्य नारायण की कथा सुनाने ज़रूर जाना है।

अब देखो, प्रेम बच्ची सेवा पर गई है। जिन्होंने निमन्त्रण दिया उन्होंने आजयान की, बहुतों से मुलाकत कराई, प्रभावित हुए। परन्तु बाबा कहे — निश्चयबुद्धि एक भी नहीं है कि इन्हों को बेहद का बाप पढ़ाता है, जिससे 21 जन्मों का वर्सा मिलता है। प्रभावित होते हैं परन्तु ऐसे थोड़ेही निश्चय हुआ कि बरोबर ज्ञान का सागर बाप पढ़ा रहे हैं। हाँ, सिर्फ कहेंगे बहुत अच्छा है। जैसे ही बाहर गये फिर ख़लास। कोई बिरला ही पुरूषार्थ करेंगे। भल आपस में सतसंग करेंगे परन्तु जो करेंगे वह भी निश्चयबुद्धि नहीं। हाफ कास्ट कहा जाता है। निश्चय और संशय। अभी कहेंगे बाप पढ़ाते हैं, अभी कहेंगे कि यह कैसे हो सकता है? हाँ, पवित्र बनना अच्छा है परन्तु पवित्रता में रहना बड़ा मुश्किल है। पहले तो निश्चय चाहिए। गदगद होकर लिखे। जैसे बांधेली गोपिकायें पत्र लिखती हैं वैसे छुटेले कभी लिखते थोड़ेही हैं। बाबा लिख देते हैं कि एक को भी निश्चयबुद्धि नहीं बनाया है। हाँ, साधारण प्रजा बनाई, वारिस नहीं बनाया। एक भी निश्चयबुद्धि नहीं बना है। निश्चयबुद्धि ही वारिस बनते हैं। कोई भल निश्चयबुद्धि हैं परन्तु ज्ञान नहीं उठाते हैं तो उसी घराने के अन्दर जाकर दास-दासी बनते हैं। आगे जाकर एक्यूरेट साक्षात्कार होगा। पता भी पड़ेगा कि हम दास-दासी कौन-से नम्बर में बनेंगे? फिर बहुत पछतायेंगे। हम तो श्रीमत पर चले नहीं तब यह हाल हुआ। फिर भी हर हालत में कहेंगे ड्रामा। इनका ड्रामा में ऐसे ही कल्प-कल्पान्तर का पार्ट है। साक्षात्कार होना ही है। पिछाड़ी में रिजल्ट निकलनी है। फिर कहेंगे भावी। हमारी तकदीर में यह था, तुम्हारी पढ़ाई की रिजल्ट आयेगी। यह तो बड़ा भारी स्कूल है। पढ़ाने वाला एक ही है, एक ही पढ़ाई है, एक ही इम्तहान है। टीचर जानते हैं यह स्टूडण्ट कैसा है, सब गैलप करते रहते हैं। आगे चलकर बहुत कुछ पता लग जायेगा। घड़ी-घड़ी तुम ध्यान में चले जायेंगे। जैसे शुरू में जाते थे। आप भी समझते रहते हो, बाप भी समझाते रहते हैं। तुम गफ़लत करते हो, श्रीमत पर नहीं चलते हो। ऐसे चलते-चलते आदत पड़ जाती है। भल तुम पूछो — शिवबाबा हम आपकी श्रीमत पर चलते हैं? बाबा बता देंगे तुम नहीं चलते हो तब तुम्हारी तकदीर ऐसे दिखाई पड़ती है। समझा जाता है अभी दशा खराब है, आगे चलकर खुल भी जाए। कोई काम के हल्के नशे में गिरते हैं। भारत पावन था, श्रेष्ठाचारी था जो अब भ्रष्टाचारी है। उन श्रेष्ठ देवताओं की महिमा तो है

ना। बाप कहते हैं यह है ही आसुरी सम्प्रदाय, मैं आया हूँ दैवी सम्प्रदाय स्थापन करने। यह देवी-देवता धर्म है ऊंच ते ऊंच। बाप ही पतित-पावन है। परन्तु मनुष्य कुछ भी समझते नहीं हैं। जो भी धर्म स्थापन करने आते हैं - पवित्र जरूर बनते हैं। हर एक बात में अच्छे और बुरे होते हैं। कम तकदीर और अच्छी तकदीर वाले हैं। अब यह रावण राज्य खत्म होना है। इस रावण की नगरी को आग लगनी है। तुम राम की सेना बैठे हो। जो इस धर्म के होंगे वह समझते जायेंगे। नम्बरवार समझते हैं। कोई को एक ही तीर जनक मुआफिक लगने से सरेन्डर हो जाते हैं। वह कोई भी बहाना नहीं करेंगे। बहाना इसमें चल न सके। परन्तु माया के तूफान भी बहुत आते हैं। अपने घराने को ही भुला देते हैं कि हम ईश्वरीय सन्तान हैं। तो बच्चों को बहुत मीठा बनना है। काम का जरा भी नशा नहीं चाहिए। काम बडा ही महाशत्रु है। यही सबसे बडी भारी परीक्षा है। बाबा कहते -- बच्चे, इकट्ठे रह पवित्र बनकर दिखाओ। बाप बच्चों की अवस्था को जानते हैं। निश्चयबुद्धि वाले बाप को अपना समाचार देंगे कि बाबा मैं आपको याद करता हूँ, यह आपकी सेवा करता हूँ। सर्विस का समाचार लिखें तब विश्वास रखूँ। सर्विस का सबूत दिखाये तब बाबा समझे इसमें उम्मीद अच्छी दिखाई पड़ती है और फिर यह भी समझना चाहिए कि बाबा अकेला है, हम बच्चे बहुत हैं। ऐसे नहीं, बाबा को रोज़-रोज़ रेसपान्स देना पड़ेगा। नहीं, बाप है ही गरीब निवाज़। दान गरीब को दिया जाता है। यह भारत खण्ड गरीब है। भारत ही साहूकार से गरीब हुआ है। यह किसको भी पता नहीं पडता है। यह भारत ही अविनाशी खण्ड है, जहाँ भगवान् अवतार लेते हैं। भारत सोने की चिड़िया था अर्थात् सर्व सुखों का भण्डार था। जिस सुखधाम में जाने के लिए हम सब पुरूषार्थ कर रहे हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. कोई भी बहाना न कर बाप की श्रीमत पर चलते रहना है। सर्विस का सबूत देना है।

२. हम ईश्वरीय सन्तान हैं, हमारा ऊंच ते ऊंच घराना है, यह भूलना नहीं है। निश्चयबुद्धि बनना और बनाना है।

वरदान:- हर सेकण्ड स्वयं को भरपूर अनुभव कर सदा सेफ रहने वाले स्मृति सो समर्थ स्वरूप भव

बापदादा द्वारा संगमयुग पर जो भी खजाने मिले हैं उनसे स्वयं को सदा भरपूर रखो, जितना भरपूर उतना हलचल नहीं, भरपूर चीज़ में दूसरी कोई चीज़ आ नहीं सकती, ऐसे नहीं कह सकते कि सहनशक्ति वा शान्ति की शक्ति नहीं है, थोड़ा क्रोध या आवेश आ जाता है, कोई दुश्मन जबरदस्ती तब आता है जब अलबेलापन है या डबल लाक नहीं है। याद और सेवा का डबल लाक लगा दो, स्मृति स्वरूप रहो तो समर्थ बन सदा ही सेफ रहेंगे।

स्लोगन:-

विश्व का नव निर्माण करने के लिए अपनी स्थिति निर्मानचित बनाओ।

भी सीखो। सिर्फ इस जन्म के लिए नहीं लेकिन 21 जन्मों के लिए जमा करना है। अगर अभी2 कमाया और खाया तो भविष्य क्या बनेगा। अभी2 कमाया और अभी2 बांटा। नहीं। खाने साद समाना भी चाहिए। फिर बांटना चाहिए। कमाया और बांट दिया तो अपने में शक्ति नहीं रहती है। सिर्फ खुशी रहती है। जो मिला सो बांटा। दान करने की खुशी रहती है। लेकिन उसको स्वयं में समाने की शक्ति नहीं रहती। खुशी के साथ शक्ति भी चाहिए। शक्ति न होने के कारण निर्विघ्न नहीं हो सकते। विघ्नों को पार नहीं कर सकते। छोटे2 विघ्न लगन को डिस्टर्ब कर देते हैं। इसलिए समाने की शक्ति धारण करनी चाहिए। जैसे खुशी की झलक सूरत में दिखाई देती हैं। वैसे शक्ति की झलक भी दिखाई देनी चाहिए। सरलचित बहुत हो लेकिन जितना सरलचित हो उतना ही सहनशील हो? कि सहनशीलता की भी सरलता है? सरलता के साथ समाने की सहन करने की शक्ति भी चाहिए। अगर समाने और सहन करने की शक्ति नहीं तो सरलता बहुत भोला रूप धारण कर देती। और कहाँ2 भोला पन फिर बहुत भारी नुकसान कर देता है। तो ऐसा सरलचित भी नहीं बनना है। बाप को भी भोलानाथ कहते हैं ना। लेकिन ऐसा भोला नहीं है जो सामना न कर सके। भोलानाथ के साथ2 आलमाइटी अथार्टी भी तो है ना। सिर्फ भोलानाथ नहीं है। यहाँ शक्ति स्वरूप भूल सिर्फ भोले बन जाते हैं तो माया का गोला लग जाता है। वर्तमान समय भोलेपन के कारण माया का गोला ज्यादा लग रहा है। ऐसा शक्ति स्वरूप बनना है जो माया सामना करने के पहले ही नमस्कार कर ले। सामना कर न पावे। बहुत सावधान खबरदार होशियार रहना है। अपनी वृति और वायुमण्डल को चेक करो। अपने आपको देखो कि कोई भी वायुमण्डल अपनी वृति को कमजोर तो नहीं करता है! कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन स्वयं की शक्तिशाली वृति वायुमण्डल को परिवर्तन में ला सकती है। अगर वायुमण्डल का वृति के ऊपर असर आ जाता है तो यही भोलापन है। ऐसे भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो ठीक हूँ लेकिन वायुमण्डल का फोर्स आ गया। नहीं। कैसा भी वायुमण्डल विकारी हो लेकिन स्वयं की वृति निर्विकारी होनी चाहिए। जब कहते हो हम पतित पावनियां हैं, पतितों को पावन बनाने वाली हैं। जब आत्माओं को पावन बना सकते हो तो क्या वायुमण्डल को पतित से पावन नहीं बना सकते हो। पावन बनाने वाले वायुमण्डल के वशीभूत नहीं होते। लेकिन वायुमण्डल वृति के ऊपर प्रभाव डाल देता, यह है कमजोरी। हर एक को ऐसा समझना चाहिए कि मुझे अपनी स्वयं की पावरफुल वृति से, जो भी अपवित्र वा कमजोरी का वायुमण्डल है उनको मिटाना है। तुम मिटाने वाले हो न कि वश होने वाले। कोई पतित वायुमण्डल का वर्णन भी नहीं करना चाहिए। वर्णन किया तो जैसे कहावत हैं ना- पाप को देखने वाले पर भी पाप होता है। अगर कोई भी कमजोर या पतित वायुमण्डल का वर्णन भी करते हैं तो यह भी पाप है। क्योंकि उस समय बाप को भूल जाते हो। जहाँ बाप भूल जाता है वहाँ पाप जरूर होता है। बाप याद होगा तो पाप नहीं हो सकता। इसलिए वर्णन भी नहीं करना चाहिए। जबकि बाप का फरमान है तो मुख से सिवाए ज्ञान रतनों के और कोई एक शब्द भी व्यर्थ नहीं निकालना है, वायुमण्डल का वर्णन करना -यह भी व्यर्थ हुआ ना। जहाँ व्यर्थ है वहाँ समर्थ की स्मृति नहीं। समर्थ की स्मृति में रहते हुए कोई भी बोल बोलेंगे तो व्यर्थ नहीं बोलेंगे। ज्ञान रतन ही बोलेंगे। तो वृति को, बोल को भी चेक करो और कर्म को। कर्म में आने से पहले समझ कर फिर कर्म करो। कर्म करने के बाद नहीं सोचो। कोई ऐसे भी समझते हैं कि कर्म कर लिया, पश्चाताप कर लिया, माफी मांग ली, छुट्टी हो गई। लेकिन नहीं। कितनी भी कोई माफी ले लेवे लेकिन जो कोई पाप कर्म हुआ वा व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं है। निशान पड़ ही जाता है। रजिस्टर साफ स्वच्छ नहीं होता। इसलिए ऐसे भी नहीं कहना कि हो गया, माफी ले ली। इस रीति रसम को भी नहीं अपनाना। अपना कर्तव्य है- संकल्प में, वृति में, स्मृति में भी कोई पाप का संकल्प न आये। इसको ही कहा जाता है ब्राह्मण अर्थात् पवित्र। अगर कोई भी अपवित्रता वृति, स्मृति वा संकल्प में भी है तो ब्राह्मण पन की स्थिति में स्थित नहीं हो। सिर्फ कहलाने मात्र हो। इसलिए कदम2 पर सावधान रहो। खुशी के साथ2 शक्तियों को भी साथ रखना है। विशेषताओं के साथ अगर कमजोरी भी होती है तो एक कमजोरी अनेक विशेषताओं

आ न सके। वह आते ही हैं कलियुग में। अपने समय पर आकर धर्म स्थापन करेंगे। नम्बरवार अवतार आते हैं जो आकर अपना2 धर्म स्थापन करते हैं। (पहला नम्बर अवतार है भगवान का। अब निराकार कैसे अवतार ले। बताते हैं मैंने इस चोले का आधार लिया है यह अपने जन्मों को नहीं जानते। शरीर तो इनका है ना। गाया भी जाता है आये देश पराये... और सब अपने देश अपने शरीर में आते हैं। यहाँ धर्म स्थापक दूसरे के शरीर में आ सकते हैं। फिर उनका नाम होता है। पवित्र आत्मा आकर प्रवेश करेगी। जो पहली आत्मा है वह धर्म स्थापन नहीं करेगी। जो आत्मा प्रवेश करेगी वही स्थापना करेगी। सितम आदि पहले वाली आत्मा सहन करती है। जैसे क्राइस्ट की आत्मा आई वह तो सतोप्रधान थी उनको कुछ सहन नहीं करना है। उनको तो पहले सतो में आना है। तो जो पहले आत्मा है वह सहन करती है। दुख तो आत्मा को होता है ना। जब शरीर के साथ है, धर्म राज भी शरीर धारण कराकर सजा देंगे।) आत्मा को फील होता है कि हम सजा खा रहे हैं। इसलिए कहा जाता है पाप आत्मा-पुण्य आत्मा। पाप शरीर पुण्य शरीर नहीं कहा जाता है। सन्यासी तो कह देते हैं आत्मा निर्लेप है। शरीर पर पाप लगता है

अनेक प्रकार के गुरु लोग हैं। बाबा ने बहुत गुरुओं का अनुभव किया है। बाबा हर एक से पूछते रहते थे क्यों सन्यास किया? घरबार कैसे छोड़ा। बतलाते नहीं थे। तो मैं कहता था मैं कैसे समझूँ कि मैं भी कर सकूँगा या नहीं। ऐसी2 बातें करते थे। अभी समझते हैं कि इस अवस्था को पाना है। यह सारा जो भी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है उनकी जड़जड़ीभूत अवस्था है। अभी फिर से नया शुरू होना है। प्रलय तो होती नहीं। शास्त्रों में महाप्रलय दिखाई है वह तो है नहीं। कहते हैं श्रीकृष्ण सागर के पीपल के पत्ते पर आया। यह सब हैं गपोड़े। (बाप कहते हैं मैं तो आता हूँ आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने। हमेशा पहले स्थापना फिर विनाश पालना ऐसे कहना चाहिए। ऐसे नहीं कि पहले स्थापना, पालना पीछे विनाश कहो तो कोई सेन्सीबुल आदमी सुनेगा तो कहेगा यह तोते माफिक पढ़े हुए हैं। स्थापना पालना फिर विनाश कैसे होगा। इसलिए कायदेमुजीब करेक्ट अक्षर बोलने हैं। स्थापना विनाश पालना। अभी ऊँच ते ऊँच बाप की तुमको श्रीमत मिलती है) देते हैं ब्रह्मा के तन द्वारा। यह बाबा का शरीर मुकरर है। सेन्सीबुल जो होंगे उनको कोई भी राय पूछनी होगी तो श्रीमत लेंगे। श्रीमत पर चलने से कभी धोखा नहीं खायेंगे। शिवबाबा की ही श्रीमत है। बाबा दूर थोड़ेही है। बाबा देखते हैं बच्चे रांग चलते हैं वा राइट चलते हैं। हर एक को सर्जन से राय मिल सकती है। यह है सबसे बड़ा सर्जन। कोई भी बात में तकलीफ हो तो बाबा बैठा है। श्रीमत पर चलते रहो। समझो कोई गरीब बच्चा है, धारणा अच्छी है, सर्विसएबुल है परन्तु गरीब है इसलिए आकर मिल नहीं सकता है। ऐसे को टिकेट भी मिल सकती है। बाप तो गरीब निवाज है ना। ऐसे तो बाप को बच्चे चाहिए जो आकर गरीब से गरीब हो वह ऊँच से ऊँच चढ़ जावे।) आजकल सब गरीब हैं। 10-20लाख कुछ भी नहीं हैं। 10-20करोड़ हो तब साहूकार कहा जाए। बाबा ने समझाया है पदमपति यह वर्सा ले नहीं सकेंगे। वह अर्पण हो न सकें। न बाबा एलाउ करेंगे। गरीबों की पाई2 सफल होती है। ऐसी क्या पड़ी है जो साहूकारों का लें.. यह भी पक्का सौदागर है। इसलिए साहूकार आते ही नहीं हैं। बाबा कहते हैं तुम अपनी राजाई सम्भालते रहो। अब तुम जानते हो बाबा आकर सभी वेद शास्त्रों का सार समझाते हैं। यह भी (बाबा ने समझाया है विष्णु को ब्रह्मा बनने में 5हजार वर्ष लगते हैं। और ब्रह्मा से विष्णु निकलने में एक सेकेण्ड और कोई यह बातें समझ न सकें। बाबा कितना अच्छा हिसाब समझाते हैं। विष्णु की नाभी कमल से 84 जन्मों के बाद अभी ब्रह्मा निकला है। अभी ब्रह्मा सरस्वती तो फिर लक्ष्मी नारायण सेकेण्ड हुआ ना। ब्रह्मा से सेकेण्ड में श्री नारायण बन जाते हैं। तुम सेकेण्ड में ब्राह्मण से देवता बन जाते हो। सूर्यवंशी बनेंगे फिर चन्द्रवंशी बनेंगे। यह सारा चक्र बुद्धि में है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा यह टापिक बहुत अच्छी है। सारे चक्र का राज़ इसमें आ जाता है। विष्णु से ब्रह्मा कैसे बनते हैं ब्रह्मा से विष्णु कैसे बनते हैं तुम यह टापिक डालो तो बड़े2 विद्वान पण्डित भाग आयेंगे। सुनने लिए। यह चित्र भी ले जाना है। आज ब्रह्मा कल विष्णु। ब्राह्मण वर्ण सो देवता वर्ण में आ गया। फिर ब्राह्मण वर्ण में आ गया। यह सब बातें सेन्सीबुल बच्चे अच्छी रीति धारण करेंगे और पाइंट लिखते करेक्ट करते रहेंगे।) भाषण जब

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि याद में रहते हैं----

14.6.69 · प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताजी"

"मीठे बच्चे-बाबा आया है तुम्हें ज्ञान रत्न देने, मुरली सुनाने, इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं" (५१)

प्रश्न :- सबसे अच्छा कैरेक्टर कौन सा है, जो तुम इस नालेज से धारण करते हो?

उत्तर :- वाइसलेस बनना यह है सबसे अच्छा कैरेक्टर। तुम्हें नालेज मिली है कि यह सारी दुनिया विशश है, विशश माना ही कैरेक्टरलेस। बाप आया है वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने। वाइसलेस देवतायें कैरेक्टर वाले हैं। कैरेक्टर सुधरते हैं बाप की याद से।

ओमशान्ति। बच्चे तुमको पढ़ाई को कभी भी मिस नहीं करना है। अगर पढ़ाई मिस की तो पद से भी मिस हो जायेंगे। मीठे2 रूहानी बच्चे कहाँ बैठे हैं? गॉडली स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी में। बच्चों को यह भी पता है फिर 5 हजार वर्ष बाद हम इस युनिवर्सिटी में दाखिल होते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो। बाप, बाप भी है टीचर भी है, गुरू भी है। वैसे गुरू की मूर्ति अलग, बाप की अलग, टीचर की अलग होती है। यह मूर्ति एक ही है। परन्तु है तीनो ही अर्थात बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं। मनुष्य की लाइफ में यह 3 मुख्य हैं। बाप टीचर गुरू यही हैं। तीनो पार्ट युद बजाते हैं। एक2 बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी निराली युनिवर्सिटी में सबको ले आकर दाखिल करना चाहिए। जिस युनिवर्सिटी में पढ़ाई अच्छी मिलता है तो पढ़ने वाले दूसरों को कहते हैं इस युनिवर्सिटी में पढ़ो। यहाँ नालेज अच्छी मिलती है और कैरेक्टर भी सुधरते हैं। तुम बच्चों को भी दूसरों को ले आना है। मातायें, माताओं को, पुरूष, पुरूषों को समझायें। देखो यह बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। ऐसे समझाते हो वा नहीं। यह तो हर एक अपनी दिल से पूछे। कब अपने मित्र सम्बन्धियों साथियों को समझाते हैं कि यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरू भी है। सुप्रीम देवी देवता बनाने वाला है। बाप आपसमान बाप नहीं बनाते। बाकी उनकी जो महिमा है उसमें आपसमान बनाते हैं। बाबा का काम है परवरिश करना और प्यार करना। ऐसे बाप को याद करना है जरूर। उनको भेंट और कोई से हो न सके। भल कहते हैं गुरू से शान्ति मिलती है परन्तु यह तो विश्व का मालिक बनाते हैं। ऐसे भी कोई नहीं कहेगा कि हम सब आत्माओं का बाप हूँ। मुसलमान को कोई कह न सके। किसको पता नहीं है कि सभी आत्माओं का बाप कौन हो सकता है। एक है बेहद का बाप, जिसे हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन आदि सब गॉड फादर जरूर कहते हैं। बुद्धि जरूर निराकार तरफ जाती है। यह किसने कहा? आत्मा ने कहा गॉड फादर। तो जरूर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता। सारी दुनिया का जो भी आत्मायें हैं, सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो आश है सब पूर्ण करते हैं। सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें। शान्ति चाहिए। आत्मा को पर पार्ट पड़ता है। रावण राज्य में थक गई है। अंग्रेजी में भी कहते ओ गॉड फादर, लिब्रेट करो। तमोप्रधान बनते2 पार्ट बजाते2 शान्तिधाम चले जायेंगे। फिर पहले सुखधाम में आते हैं, ऐसे नहीं पहले2 आकर विकारी बनते हैं। नहीं। बाप समझाते हैं यह है वेश्यालय। रावण राज्य। इसे रौरव नर्क कहा जाता है। तुमने गरूड़ पुराण देखा नहीं है। बिगर शास्त्र पढ़े, बिगर देखे भी तुम समझ सकते हो। भारत में वा इस दुनिया में कितने शास्त्र, कितने नॉविल्स हो गये हैं। कितनी पढ़ाई की पुस्तकें हैं। शास्त्र आदि सब खत्म हो जायेंगे। बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं यह कभी जलने के नहीं। यह है धारण करने की। जो काम की चीज नहीं होती उसको जलाया जाता है। ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाए। नालेज तुमको मिलती है, जिससे तुम 21 जन्म पद पाते हो। ऐसे नहीं कि इनके कोई शास्त्र है जो जला देंगे। नहीं। यह ज्ञान आपेही प्राय:लोप हो जाता है। यह कोई पढ़ने को किताब आदि नहीं है। ज्ञान विज्ञान भवन नाम भी है, परन्तु उनको पता नहीं कि यह नाम क्यों पड़ा है। इनका अर्थ क्या है? ज्ञान विज्ञान की महिमा कितनी भारी है। वास्तव में ज्ञान विज्ञान भवन नाम मकान पर नहीं डाला जाता। यह नालेज तुम धारण करते हो। ज्ञान अर्थात सृष्टि चक्र। विज्ञान माना शान्तिधाम। ज्ञान से भी तुम तरे जाते हो, विज्ञान में। ज्ञान पढ़ाई के आधार से फिर तुम राज्य करते हो। तुम समझते हो- हम आत्माओं को बाप आकर पढ़ाते हैं। नहीं तो भगवानुवाच गुम हो जाए। भगवान कोई शास्त्र

आत्माओं में पुरूषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं है। ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तियों द्वारा सर्व प्राप्ति कराओ। इसलिए ज्ञान मूर्त से ज्यादा अभी वरदानी मूर्त का पार्ट चाहिए। सुनने की शक्ति भी नहीं है। चलने की हिम्मत नहीं है सिर्फ एक प्यास है कि कुछ मिल जाए- ऐसी अनेक आत्मायें विश्व में भटक रही हैं- उनको पांव अर्थात् हिम्मत भी आपको देनी पड़ेगी। तो हिम्मत का खज़ाना है? अमृत कलश सम्पन्न है? अटूट है? अखण्ड है? स्टॉक लगाया? स्वयं की वृत्ति समाप्त की है- अगर स्वयं की वृत्ति में विघ्न होंगे, तो अन्य आत्माओं को सम्पन्न कैसे बनायेंगे। इसलिए इस वर्ष में अपनी वृत्ति को श्रेष्ठ बनाओ। और जो अन्य को सम्पन्न करो। एक ही भाषा हो- सर्व प्रति संकल्प सम्पन्न के वरदानी भावना और वरदानी मूर्त हो- वरदानों की वर्षा के भाषण हो। जो भी सुनें वह अनुभव करें कि भाषण नहीं लेकिन वरदानों के पुष्पों की वर्षा हो रही है- तब उद्घाटन करेंगे। नये वर्ष की यही नवीनता करना। अच्छा-

ऐसे सदा अमृत कलशधारी, हर संकल्प से वरदानी अनेक आत्माओं को हिम्मत देने वाले, हिम्मते बच्चे मददे बाप, ऐसे फॉलो फादर ब्रह्मा बाप के साथ सदा साथ का पार्ट बजाने वाले ऐसे विजयी रत्नों को, सम्पन्न आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(दीदी जी से) ब्रह्मा को यह संकल्प क्यों उठा- इसका रहस्य समझते हो? ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब फिर कौन रहा? यह भी गुह्य रहस्य है- जब ब्रह्मा ही विदा है तो फिर कौन? इस पर भी रूह-रूहान करना। अब तो वरदानी मूर्त ग्रुप, जिनको कि इन स्थूल रूपों में नहीं लेकिन सदा स्मृति में, सम्पूर्ण स्वरूप में विजय का झण्डा हो- ऐसे विजय का झण्डा लहराने वाला ग्रुप हो। जिसको कहा जाता है रूहानी सेवाधारी ग्रुप- ऐसा ग्रुप अब स्टेज पर यानि विश्व स्टेज पर आने वाला है और सभी की नजर ऑटोमेटिकली जाती है- अभी पर्दे के अन्दर हैं, स्वयं के पुरूषार्थ का पर्दा है- अभी इसी पर्दे से निकल सेवा की स्टेज पर आओ तो विश्व की आत्मायें एक सेकेण्ड में पार्ट धारियों को देख नजर से निहाल हो जायेंगी। ऐसे प्लैन बनाओ ऐसे ग्रुप के मुख से सफलता की आवाज़ निकले। बाप की प्रत्यक्षता करेंगी- अभी तो बैठे भाषण कर रहे हैं- अभी परमात्म बाप द्वारा भाषणों को परिवर्तन करो। इसका सहज साधन है सदा मुख पर या संकल्प में बापदादा- बापदादा की निरन्तर माला के समान स्मृति हो। सबकी एक ही धुन हो बापदादा। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखण्ड धुन हो- जैसे वह अखण्ड धुनी जगाते हैं वैसे यह अखण्ड धुन हो। यही अजपाजाप हो- जब यह अजपाजाप हो जायेगा तो और सब बातें स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी क्योंकि इसमें ही बिज़ी रहेंगे। फुर्सत ही नहीं होगी तो व्यर्थ स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। तो अब सुना कि इस वर्ष में क्या करना है- आज के संकल्प से समय को जानना- सुई तो ब्रह्मा ही है ना। तो सुई कहाँ तक पहुँची है। सफलता से आगे भी बढ़ेगी ना। अच्छा-

विदेशी भाई बहनों से:- डबल विदेशी बच्चों के तीव्र पुरूषार्थ की रफ़्तार को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। विदेशी बच्चों ने अपने असली बाप को, अपने असली देश को, असली धर्म को बहुत अच्छी तरह से पहचान लिया है। अब कल्प पहले भी यही नई धरनियों में सिर्फ बाप के परिचय का बीज पड़ने से फल स्वरूप प्रत्यक्ष हो गए। बापदादा जानते हैं कि इस ग्रुप में कई ऐसे रतन हैं जो बापदादा के गले की माला के मणके हैं। ऐसे मणकों को बाप भी सदा विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने के या विश्व के आगे बच्चों द्वारा बाप प्रत्यक्ष होने के कई दृश्य देख भी रहे हैं- अभी प्रत्यक्ष हो रहे हैं, और आगे चलकर भी होते जायेंगे।

... को वैराग आया हो कह दिया। उनकी महिमा देखो कितनी है। यहाँ तो बहन भाई बनने से भी ... कुतों को दृष्टि जाती है। इसलिए बाबा कहते भाई2समझो। यह है ज्ञान ... की बात। यहाँ तो प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान होने भाई बहन है मा। ... स्त्री को मा कहा। वह है भक्तिमार्ग। यह है ज्ञान मार्ग। बाप बैठ सब बातें समझाते हैं। ... भी तो शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। वह धर्म ही अलग है। निवृतिमार्ग ... पुरुषों के लिए है। वह है हद का वैराग। तुमको तो सारी बेहद की दुनिया से वैराग है। वह है हद की बातें। संगम पर ही बाप आकर बेहद की बातें समझाते हैं। अभी इस पुरानी दुनिया से वैराग करना है। यह बहुत पतित छी2दुनिया है। यहाँ शरीर पावन हो न सके। आत्मा को नया शरीर सतयुग में ही मिल सकता है। भल यहाँ आत्मा पवित्र बनती है परन्तु शरीर फिर भी अपवित्र रहता है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो। यह शरीर खत्म हो जाए। सोने में खाद पड़ती है तो जेवर भी खाद वाला बनता है। खाद निकल जाए तो जेवर भी सच्चा बनेगा। इन ल०ना०की आत्मा और शरीर दोनों सतोप्रधान हैं। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही तमोप्रधान काले हैं। आत्मा काम चिता पर बैठ काली बन गई है। अब नर्क को लात मार रहे हैं। ...वन में यह काला होता है। राम को भी काला बना दिया है। परन्तु क्यों काला बना है उसका पता नहीं। अभी तुम समझते हो देवताओं के चित्र काले बनाये हैं क्योंकि वाम मार्ग में गये हैं। बाप कहते हैं फिर हम आकर सांवरे से गोरा बनाते हैं। यह ज्ञान की सारी ... है। बाकी पानी आदि की बात नहीं। सब काम चिता पर बैठ पतित बन पड़े हैं इसलिए राखी बंधवाई जाती है कि पावन बनने की प्रतिज्ञा करो। बाप कहते हैं हम आत्माओं से बात करते हैं। मैं आत्माओं का बाप हूँ जिसको तुम याद करते आये हो। बाबा आओ। हमको सुखधाम में ले चलो। दुख हरो। कलियुग में होते हैं अपार दुख। बाप समझाते हैं तुम काम चिता पर बैठ काले तमोप्रधान हो गये हो। अब मैं आया हूँ काम चिता से उतार ज्ञान चिता पर बिठाने के लिए। अब पवित्र बन स्वर्ग में चलना है। बाप को याद करना है। बाप कशिश करते हैं। बाबा के पास युगल आते हैं एक को कशिश होती है दूसरे को नहीं होती। पुरुष ने फट से कह दिया हम इस अन्तिम जन्म में पवित्र रहेंगे। काम चिता पर नहीं चढ़ेंगे। ऐसे नहीं कि निश्चय होगा। निश्चय अगर होता तो बेहद बाप को पत्र लिखते हैं। कनेक्शन में रहते। सुना है पवित्र रहते हैं। अपने धन्धे आदि में ही मस्त रहते हैं। बाप की याद ही कहाँ है। ऐसे बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। स्त्री पुरुष का आपस में कितना प्यार होता है। पति को कितना याद करती है। बेहद के बाप को तो सबसे जास्ती याद करना चाहिए। गायन भी है ना प्यार करो चाहे ठुकराओ ... हाथ कब नहीं छोड़ेंगे। ऐसे नहीं यहाँ आकर रहना है। वह तो फिर सन्यास हो गया। घरबार छोड़ यहाँ आकर रहे। तुमको तो कहा जाता है गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनो। यह पहले तो भट्ठी थी जिससे ... तैयार हो निकले। उनका भी बहुत अच्छा वृतान्त है। जो बाप के बन जाते हैं वह फिर अन्दर के बनते हैं। क्योंकि रूहानी सर्विस तो करते नहीं। तो आखिर दास दासियां बनते हैं। फिर पिछाड़ी में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ताज मिल जाता है। उन्हों का भी घराना होता है। प्रजा में नहीं आ सकते। बाहर के आए अन्दर वाले नहीं बन सकते। वल्लभाचारी बाहर वाले को अन्दर कब आने नहीं देते। यह सब समझने की बातें हैं। गीता है भी सेकण्ड की। फिर बाप को ज्ञान सागर क्यों कहा जाता। समझाते ही रहते हैं। पिछाड़ी तक समझाते ही रहेंगे। जब राजधानी स्थापन हो जायेगी। तुम कर्मातीत अवस्था में आ जायेंगे फिर ज्ञान पूरा हो जायेगा। है सेकण्ड की बात। परन्तु फिर समझाना पड़ता है। हद के बाप से हद का वर्सा। बेहद का बाप विश्व का मालिक बना देते हैं। तुम सुखधाम में जायेंगे तो बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। वहाँ तो है ही सुख ही सुख। ... जानते हो बाबा आये हैं। हम नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं। राजयोग की ताकत से। अच्छा–

मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप का रूहानी बच्चों को नमस्ते।

2-10-01/ प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे -- आत्मा और शरीर जो पतित और काले बन गये हैं, बाप की याद से इन्हें पावन बनाओ क्योंकि अब पावन दुनिया में चलना है"

प्रश्न:- भगवान किन बच्चों को मिलता है, बाप ने कौन सा हिसाब बतलाया है?

उत्तर:- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है उन्हें ही भगवान मिलता है। बाबा ने यह हिसाब बतलाया है कि सबसे पहले तुम भक्ति करते हो इसलिए तुम्हें ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलता है, जिससे फिर तुम नई दुनिया में राज्य करते हो। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प मुझे याद किया है अब मैं आया हूँ, तुम्हें भक्ति का फल देने।

गीत:- मरना तेरी गली में....

ओम् शान्ति। बच्चों नें गीत सुना। जब कोई मरते हैं तो बाप के पास जन्म लेते हैं। जानते हो हम आत्मायें हैं। वह हो गई शरीर की बात। एक शरीर छोड़ फिर दूसरे बाप के पास जाते हैं। तुमने 84 साकारी बाप किये हैं। असुल में हो निराकारी बाप के बच्चे। तुम आत्मा परमपिता परमात्मा के बच्चे हो, रहने वाले भी वहाँ के हो, जिसको निर्वाणधाम वा शान्तिधाम कहा जाता है। बाप भी वहाँ रहते हैं। यहाँ तुम आकर लौकिक बाप के बच्चे बनते हो, तो फिर उस बाप को भूल जाते हो। सतयुग में तुम सुखी बन जाते हो, तो उस पारलौकिक बाप को भूल जाते हो। सुख में उस बाप का सिमरण नहीं करते हो। दु:ख में याद करते हो और आत्मा याद करती है। जब लौकिक बाप को याद करती है तो बुद्धि शरीर तरफ रहती है। उस बाबा को याद करेंगे तो कहेंगे ओ बाबा, हैं दोनों बाबा। राइट अक्षर बाप ही है। वह भी फादर, यह भी फादर। आत्मा रूहानी बाप को याद करती है। तो बुद्धि वहाँ चली जाती है। यह बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अभी तुम जानते हो बाबा आया हुआ है, हमको अपना बनाया है। बाप कहते हैं -- पहले-पहले हमने तुमको स्वर्ग में भेजा। तुम बहुत साहूकार थे फिर 84 जन्म ले ड्रामा प्लैन अनुसार अभी तुम दु:खी हो पड़े हो। ड्रामानुसार यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। तुम्हारी आत्मा और यह शरीर रूपी वस्त्र सतोप्रधान थे फिर गोल्डन एज से आत्मा सिलवर एज में आई तो शरीर भी सिलवर में आया फिर कॉपर एज में आये। अभी तो तुम्हारी आत्मा बिल्कुल ही पतित हो गई है, तो शरीर भी पतित है। जैसे 14 कैरेट का सोना कोई पसन्द नहीं करते हैं, काला पड़ जाता है। तुम भी अभी काले आइरन एजेड बन गये हो। अब आत्मा और शरीर जो ऐसे काले बन गये हैं तो फिर पवित्र कैसे बनें। आत्मा पवित्र बने तो शरीर भी पवित्र मिले। वह कैसे होगा? क्या गंगा स्नान करने से? नहीं, पुकारते ही हैं -- हे पतित-पावन आओ। यह आत्मा कहती है तो बुद्धि पारलौकिक बाप तरफ चली जाती है। हे बाबा, देखो बाबा अक्षर ही कितना मीठा है। भारत में ही बाबा-बाबा कहते हैं। अभी तुम आत्म-अभिमानी बन बाबा के बने हो। बाबा कहते हैं मैंने तुमको स्वर्ग में भेजा था, नया शरीर धारण किया था। अब तुम क्या बन गये हो। यह बातें हमेशा अन्दर रहनी चाहिए। बाबा को ही याद करना चाहिए। याद सब

करते हैं ना – हे बाबा, हम आत्मायें पतित बन गई हैं, अब आओ, आकर पावन बनाओ। ड्रामा में यह भी पार्ट है, तब तो बुलाते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार आयेंगे भी तब जब पुरानी दुनिया से नई बनती है। तो जरूर संगम पर ही आयेंगे। तुम बच्चों को निश्चय है – बिलवेड मोस्ट बाबा है। कहते भी हैं स्वीट, स्वीटेस्ट...अब स्वीट कौन है? लौकिक सम्बन्ध में पहले फादर है, जो जन्म देते हैं। फिर है टीचर। टीचर से पढ़कर तुम मर्तबा पाते हो। नॉलेज इज सोर्स आफ इनकम कहा जाता है। ज्ञान है नॉलेज, योग है याद। तो बेहद का किसको पता नहीं है। चित्रों में क्लीयर दिखाया भी है, ब्रह्मा द्वारा स्थापना शिवबाबा कराते हैं। कृष्ण कैसे राजयोग सिखायेगा। राजयोग सिखलाते ही हैं सतयुग के लिए। तो जरूर संगम पर बाप ने सिखाया होगा। सतयुग की स्थापना करने वाला है बाबा। ब्रह्मा द्वारा कराते हैं, करनकरावनहार है ना। वो लोग तो त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं। परन्तु ऊंच ते ऊंच शिव है ना। वह साकार है, वह निराकार है। सृष्टि भी यही है। इस सृष्टि का ही चक्र फिरता है, रिपीट होता रहता है। सूक्ष्मवतन की सृष्टि का चक्र नहीं गाया जाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। गाते भी हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। बीच में जरूर संगमयुग चाहिए नहीं तो कलियुग को सतयुग कौन बनाये! नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने बाप संगम पर ही आते हैं। जितनी पुरानी दुनिया उतना दुःख जास्ती। आत्मा जितना तमोप्रधान बनती जाती है, उतना दुःखी होती है। देवतायें हैं सतोप्रधान। यह तो हाइएस्ट अथॉरिटी गॉड फादरली गवर्मेन्ट है। साथ में धर्मराज़ भी है। बाप कहते हैं– तुम शिवालय में रहने वाले थे, अब है वेश्यालय। तुम पावन थे अब पतित बने हो तो कहते हो हम तो पापी हैं। आत्मा कहती है मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। कोई भी देवता के मन्दिर में जायेंगे तो उनके आगे ऐसे कहेंगे। कहना चाहिए बाप के आगे। उसको छोड़ ब्रदर्स को लगते हैं, यह देवतायें ब्रदर्स ठहरे ना। ब्रदर्स से तो कुछ मिलना नहीं है। भाइयों की पूजा करते-करते नीचे गिरते आये हैं। अब तुम बच्चे जानते हो – बाप आया हुआ है, उससे हमको वर्सा मिलता है। बाकी मनुष्य तो बाप को जानते ही नहीं। सर्वव्यापी कह देते हैं। कोई फिर कहते अखण्ड ज्योति तत्व है। कोई कहते वह नामरूप से न्यारा है। अरे तुम कहते हो अखण्ड ज्योति स्वरूप है, फिर नाम रूप से न्यारा कैसे कहते हो। बाप को न जानने के कारण ही पतित बन पड़े हैं। तमोप्रधान भी बनना ही है। फिर जब बाप आये तब सबको पावन बनाये। आत्मायें निराकारी दुनिया में सब बाप के साथ रहती हैं। फिर यहाँ आकर सतो रजो तमो का पार्ट बजाती हैं। आत्मा ही बाप को याद करती है। बाप आते भी हैं, कहते हैं ब्रह्मा तन का आधार लेता हूँ, यह है भाग्यशाली रथ। बिगर आत्मा रथ थोड़ेही होता है। कहते हैं भागीरथ ने गंगा लाई। अब यह बात तो हो नहीं सकती। परन्तु कुछ भी समझते नहीं कि हम कहते क्या हैं!

अभी तुम बच्चों को समझाया है – यह है ज्ञान वर्षा। इससे क्या होता है? पतित से पावन बनते हैं। गंगा जमुना तो सतयुग में भी होती हैं। कहते हैं कृष्ण जमुना के कण्ठे पर खेलपाल करते हैं। ऐसी कोई बातें हैं नहीं। वह तो सतयुग का प्रिन्स है, उसकी बहुत सम्भाल से पालना होती है क्योंकि फूल है ना। फूल कितने अच्छे सुन्दर होते हैं। फूल से

सभी आकर खुशबू लेते हैं। काँटों से थोड़ेही खुशबू लेंगे। अभी तो है ही काँटों की दुनिया। जंगल को बाप आकर गॉर्डन ऑफ फ्लावर्स बनाते हैं। इसलिए उनका नाम बबुलनाथ भी रख दिया है। काँटों से फूल बनाते हैं। इसलिए महिमा गाते हैं काँटों को फूल बनाने वाला बाबा। अब तुम बच्चों का बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। अभी तुम जानते हो हम बेहद के बाप के बने हैं। अभी तुम्हारा सम्बन्ध उनसे भी है तो लौकिक से भी है। पारलौकिक बाप को याद करने से तुम पावन बनेंगे। आत्मा जानती है, वह हमारा लौकिक बाप और यह पारलौकिक बाप है। भक्ति मार्ग में भी आत्मा जानती है, वह हमारा लौकिक बाप और यह गॉड फादर। अविनाशी बाप को याद करते हैं। वह बाप कब आकर हेविन स्थापन करते हैं, यह किसको पता नहीं है। बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। तो जरूर संगम पर आयेंगे। शास्त्रों में तो कल्प की आयु लाखों वर्ष लिखकर मनुष्यों को बिल्कुल घोर अन्धियारे में डाल दिया है। कहते हैं जो बहुत भक्ति करते हैं उन्हें भगवान मिलता है। तो सबसे जास्ती भक्ति करने वाले को जरूर पहले मिलना चाहिए। बाप ने हिसाब भी बतलाया है। सबसे पहले भक्ति तुम करते हो तुमको ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलना चाहिए, जो फिर तुम ही नई दुनिया में राज्य करो। बेहद का बाप तुम बच्चों को ज्ञान दे रहे हैं, इसमें तकलीफ की कोई बात नहीं है। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प याद किया है। सुख में तो कोई याद करते ही नहीं। अन्त में जब दुःखी हो जाते हैं तब हम आकर सुखी बनाते हैं। अभी तुम बहुत बड़े आदमी बनते हो। चीफ मिनिस्टर, प्राइम मिनिस्टर आदि के बंगले कितने फर्स्टक्लास होते हैं। सारा फर्नीचर ऐसा फर्स्टक्लास होगा। तुम तो कितने बड़े आदमी (देवता) बनते हो। दैवी गुण वाले देवता स्वर्ग के मालिक बनते हो। वहाँ तुम्हारे लिए महल भी हीरों ज्वाहरों के होते हैं। वहाँ तुम्हारा फर्नीचर सोने जड़ित का फर्स्टक्लास होगा।

यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। शिव को रूद भी कहते हैं। जब भक्ति पूरी होती है तो भगवान रूद यज्ञ रचते हैं। सतयुग में यज्ञ अथवा भक्ति की बात ही नहीं। इस समय ही बाप यह अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं, जिसका फिर बाद में गायन चलता है। भक्ति तो सदैव नहीं चलती रहेगी। भक्ति और ज्ञान, भक्ति है रात, ज्ञान है दिन। बाप आकर दिन बनाते हैं, तो बच्चों का भी बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। मोस्ट बिलवेड बाबा है ना। उनसे ज्यादा प्यारी वस्तु कोई हो न सके। आधाकल्प से याद करते आये हैं। बाबा आकर हमारे दुःख हरो। अब बाप आये हैं, समझाते हैं बच्चे, तुम्हें अपने गृहस्थ व्यवहार में रहना ही है। यहाँ बाबा के पास कहाँ तक बैठेंगे। साथ में तो परमधाम में ही रह सकते। यहाँ तो नहीं रह सकते। यहाँ तो नॉलेज पढ़ने की है। नॉलेज पढ़ने वाले थोड़े होते हैं। लाउड स्पीकर पर कभी पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे? लाउड स्पीकर पर रेसपान्ड कैसे दे सकेंगे? इसलिए थोड़े-थोड़े स्टूडेन्ट को पढ़ाते हैं। कॉलेज तो बहुत होते हैं फिर सबके इम्तहान होते हैं। रिजल्ट निकलती है। यहाँ तो एक बाप ही पढ़ाते हैं। यह भी समझाना चाहिए कि दो बाप हैं — लौकिक और पारलौकिक।

"मीठे बच्चे – तुम्हारे पास अविनाशी ज्ञान रत्नों का अथाह खजाना है, तुम उसका दान करो, तुम्हारे दर से कोई भी वापिस नहीं जाना चाहिए"

प्रश्न:- सर्व सम्बन्धों की सैक्रीन बाप अपने बच्चों को कौन सी श्रीमत देते हैं?

उत्तर:- मीठे बच्चे – अपना बुद्धियोग सब तरफ से हटाए एक मुझे याद करते रहो। दुनिया की कोई भी वस्तु, मित्र सम्बन्धी आदि याद न आयें क्योंकि इस समय सब दु:ख देने वाले हैं। विश्व का मालिक बनना है तो जरूर 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करने की मेहनत करनी पड़े। सब कुछ भूल अशरीरी बनो तब हिसाब-किताब चुक्तू हो। मैं सर्व संबंधों की सैक्रीन हूँ।

ओम् शान्ति। बापदादा बच्चों से पूछते हैं कि किसकी याद में बैठे हो? (शिवबाबा की) बुलन्द आवाज में कहना चाहिए – शिवबाबा की याद में बैठे हैं। (तुम बच्चे अर्थात् आत्माओं का कनेक्शन है शिवबाबा से। तुम शिवबाबा के बनते हो इन द्वारा, क्योंकि शिवबाबा इनके द्वारा ही मिलते हैं। यह बीच में दलाल भी कहा जाता है। तुम्हारा दलाल से कोई कनेक्शन नहीं है। यह तो सिर्फ बीच में मारफत है। लेन-देन का सबका हिसाब-किताब बाप से होना है, इनसे नहीं। इनका भी लेन-देन बाप से है। यह भी उस बाप को कहते हैं – बाबा मेरा सब कुछ आपका है। तुम्हें भी एक तो निश्चय यह है कि हम आत्मा हैं और दूसरा यह भी निश्चय है कि हम आत्मायें अभी परमपिता परमात्मा से वर्सा ले रहे हैं।) मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन-मन-धन से हम शिवबाबा के मददगार बनते हैं। यह सब कुछ शिवबाबा को अर्पण किया हुआ है। फिर शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं – ऐसे-ऐसे यह करो। इनको कहा जाता है श्रीमत। बाप खुद कहते हैं मैं इस पुराने तन में प्रवेश करता हूँ। यह भी पतित से पावन बन रहे हैं। यह किसने कहा? शिवबाबा ने। यह भी पावन बन रहे हैं। इनका भी मेरे साथ हिसाब-किताब है। इनके साथ कोई का हिसाब-किताब नहीं। तुम चिट्ठी लिखते हो – शिवबाबा C/O ब्रह्मा। परन्तु माया ऐसी है जो निरन्तर याद करने नहीं देती है। बुद्धियोग घड़ी-घड़ी तोड़ देती है। अगर यही पक्का पुरूषार्थ करेंगे तो फिर दूसरा सब कुछ भूल जायेगा। शरीर भी भूल जायेगा। यह शरीर होगा परन्तु आत्मा को इन सब चीज़ों से नफरत होगी। यह अवस्था जमाने की प्रैक्टिस करनी होती है। अन्त में हमको अपना शरीर भी याद न पड़े। बाप कहते हैं–अपने को अशरीरी समझ मुझ बाप को याद करो। मैं सदैव अशरीरी हूँ, तुम भी अशरीरी थे। फिर तुमने पार्ट बजाया। अभी फिर तुमको पार्ट बजाना है, यह मेहनत है। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात है क्या। मनुष्य ही विश्व का मालिक बन सकता है। यह देवतायें भी मनुष्य हैं। परन्तु इनको दैवीगुण वाले देवता कहा जाता है। लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे, इन्हों को अपने बच्चे होंगे। वही उनको माँ-बाप मानेंगे। परन्तु आजकल मनुष्य अन्धश्रद्धा से इन लक्ष्मी-नारायण को त्वमेव माताश्च पिता...कहते हैं। वास्तव में यह महिमा है शिवबाबा की। देवताओं की महिमा गाते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न...परन्तु उन्हों की पूजा

क्यों करते हैं, यह किसको पता नहीं है। अभी तुम ऐसी महिमा नहीं गायेंगे कि तुम मात-पिता... हाँ तुम जानते हो शिवबाबा वह निराकार परमपिता परमात्मा है। उनसे ही सुख घनेरे मिलते हैं। बाकी जो भी सम्बन्धी आदि हैं उनसे दुःख ही मिलता है। यह तो एक सैक्रीन है, जिससे सर्व सम्बन्ध की रसना मिलती है। इसलिए बाप कहते हैं, बाबा, काका, चाचा आदि सबसे बुद्धियोग हटाए मामेकम् याद करो। तुम गाते भी हो दुःख हर्ता सुख कर्ता... सर्व का सद्‌गति दाता एक ही है, वही हमारा सब कुछ है। लौकिक बाप से भी दुःख मिलता है। बाकी टीचर है जो किसको दुःख नहीं देते। टीचर पास जाकर पढ़ने से तुम शरीर निर्वाह करते हो। हुनर सिखाने वाले भी होते हैं। वह सब अल्पकाल के लिए टीचिंग करते हैं। भक्ति में भी महिमा एक राम अथवा परमपिता परमात्मा की ही करते हैं, उनको ही याद करते हैं। वास्तव में भक्ति भी एक की ही करनी है। वह एक ही तुमको पूज्य बनाते हैं। तुम पहले-पहले एक शिवबाबा की पूजा करते हो। उनको सतोप्रधान भक्ति कहा जाता है। फिर आत्मा भी सतोप्रधान से सतो रजो तमो बनती है। तुम समझते हो हम पुजारी बनते हैं। तुम पहले एक शिव की ही पूजा करते हो फिर कलायें कमती होती जाती हैं। भक्ति भी सतोप्रधान से, सतो रजो तमो बन जाती है। सारा ड्रामा तुम्हारे ऊपर ही बना हुआ है। आपेही पूज्य आपेही पुजारी, जो 84 जन्म पूरे लेते हैं, उनकी ही कहानी है। उनको ही बाप बैठ बताते हैं – तुमने 84 जन्म कैसे लिये हैं। हिसाब ही उनका है। जो पहले-पहले पूज्य देवी-देवता बनते हैं, वही पुजारी बनते हैं। बाप कहते हैं– मैं कल्प-कल्प आकर तुमको पढ़ाता हूँ और देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ, राजयोग सिखाता हूँ। गीता में भूल से कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। भगवान तो एक ही होता है। वह तो कहते ठिक्कर भित्तर, कण-कण में परमात्मा हैं। परन्तु ऐसे तो हो नहीं सकता। भगवान की तो महिमा अपरमअपार है। कहते हैं – हे बाबा तुम्हारी गति मत न्यारी अर्थात् तुम्हारी जो श्रीमत मिलती है, वह सबसे न्यारी है। बाप को कहते ही हैं गति-सद्‌गति दाता परमपिता परमात्मा, तो बुद्धि ऊपर में जाती है। दुःख के टाइम उनकी ही याद आती है। अगर राम-सीता बुद्धि में हो फिर तो सारा रामायण बुद्धि में आ जाए। तुम तो पुकारते ही हो, उस एक बाप को। सिवाए एक बाप के कोई भी साकारी मनुष्य वा आकारी देवता से बुद्धि नहीं लगानी है। पतित-पावन है ही एक बाप। कोई भी सतसंग में जाकर यही गाते हैं – पतित-पावन सीताराम, अर्थ कुछ नहीं। यह सब है – भक्ति मार्ग का गायन। सब रावण की जेल में है। भक्ति मार्ग में बहुत भटकते हैं। यहाँ भटकने की कोई बात नहीं। बाप समझाते हैं, बच्चों को प्वाइंट्स बुद्धि में अच्छी रीति धारण करनी हैं, पढ़ाई रेगुलर करनी है। अगर कोई कारण से सवेरे नहीं आ सकते तो दोपहर को आ जाना चाहिए। किसको तंग भी नहीं करना है। सारा दिन पड़ा है। कोई भी समय जाकर पढ़ना है। यह बच्चियाँ सुबह से लेकर शाम तक सर्विस पर हैं। सारा दिन सर्विस स्टेशन खुले हुए हैं। कोई भी आये, उनको रास्ता बताना है। पहले-पहले तो बताना है – विचार करो तुमको दो बाप हैं। दुःख में पारलौकिक बाप को याद करते हैं ना। अभी शिवबाबा कहते हैं, मामेकम् याद करो। मौत तो सामने खड़ा है। यह

यही महाभारत लड़ाई है। भल बड़े पदमपति, करोड़पति हैं, बड़े-बड़े मकान आदि बनाते हैं परन्तु वह रहने थोड़ेही हैं, यह सब टूट जाने हैं। वह समझते हैं – कलियुग की आयु लाखों वर्ष है। इनको कहा जाता है घोर अन्धियारा। कोई के पास पैसे हैं, पूछते हैं मकान बनायें। बाबा कहेंगे पैसे हैं तो भल बना लो। पैसे भी तो मिट्टी में मिल जाने हैं वह तो टैम्प्रेरी हैं। नहीं तो यह सब पैसे भी चले जायेंगे। कुछ भी रहेगा नहीं, भल बनाओ फिर उसमें गीता पाठशाला का प्रबन्ध रखो। जो तुम्हारे दर पर कोई भी आये उनको भिक्षा ऐसी दो जो उनको एकदम विश्व का मालिक बना दो। तुम्हारे पास अथाह ज्ञान धन है। इतना कोई के पास नहीं है। तुम्हारे पास सबसे साहूकार वह है, जिनके पास बहुत ज्ञान रत्न बुद्धि में भरे हुए हैं। कोई भी आये तो तुम उनकी झोली भर दो। तुम्हारे पास इतना खजाना है। सिर्फ यह बोर्ड लगा दो – आओ तो हम आपको सदा सुखी स्वर्ग का वर्सा पाने का रास्ता बतायें। परन्तु बच्चों में वह नशा नहीं रहता। यहाँ नशा चढ़ता है, बाहर जाने से भूल जाता है। शौक होना चाहिए। कोई भी आये उनको रास्ता बतायें जो बेड़ा पार हो जाए। तुम्हारे पास बहुत भारी धन है। कोई भी भिखारी आये वा लखपति आये तो तुम उनको भी बहुत रत्न दे सकते हो। बाबा यहाँ नशा चढ़ाता है फिर सोडावाटर हो जाता है। बाबा तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भर देते हैं। परन्तु नम्बरवार हैं। किसकी तकदीर में है तो पूरी रीति धारण कर लेते हैं। बाबा कहते हैं–कोशिश कर तुम निरन्तर याद में रहो। ऐसे नहीं कि सेन्टर में जाकर एक जगह बैठना है नहीं, चलते-फिरते जो भी समय मिले बाप को याद करते रहना है। हथ कार डे, दिल अर्थात् बुद्धि का योग बाप के साथ हो। बाप की याद से तुम्हारा बहुत कल्याण होगा। 21 जन्म के लिए तुम साहूकार बन जाते हो। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। भारत स्वर्ग था। अब नर्क है। (b)

बाप कहते हैं– अब मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। बाप को याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा। हमारे जैसा धनवान सृष्टि में कोई नहीं है। बाप ही याद नहीं होगा तो धन कहाँ से आयेगा। स्वर्ग में तो तुम बच्चों को अपार सुख मिलता है। शास्त्रों में तो कितनी दन्त कथायें लिख दी हैं। गाते भी हैं – राम राजा, राम प्रजा...धर्म का उपकार है। फिर कहते राम की सीता चुराई गई, बन्दरों की सेना ली... आगे खुद भी पढ़ते थे, कुछ भी समझते नहीं थे। अब कितना समझ में आता है। कितनी वन्डरफुल बातें लिखी हैं। बाप कहते हैं– मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। त्रिमूर्ति में भी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर दिखाते हैं। परन्तु यह भी समझते नहीं कि विष्णु कौन है। कहाँ के रहने वाले हैं। विष्णु के मन्दिर को नर-नारायण का मन्दिर कहते हैं। परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। विष्णु के यह दो रूप लक्ष्मी-नारायण हैं। जो सतयुग में राज्य करते थे। अभी तुम मनुष्य से देवता बन रहे हो। कोई भी आये तो बोलो यह ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा सबका बाप हुआ। बहुत ढेर की ढेर प्रजा है। नाम तो सुना है ना। भगवान ने ब्रहमा द्वारा ब्राह्मण रचे। बाप ने जरूर बच्चों को वर्सा तो दिया होगा ना। तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम शिवबाबा से वर्सा पाते हो। एक है लौकिक

बाप, दूसरा है पारलौकिक बाप। अब यह तुमको अलौकिक बाप मिला है, यह तो जौहरी था। यह थोड़ेही कुछ जानता था। इनके लिए कहते हैं कि इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म के भी अन्त में इनमें प्रवेश करता हूँ। वानप्रस्थी बनने का रिवाज भी भारत में है। 60 वर्ष के बाद गुरु के पास चले जाते हैं। बाप इनमें प्रवेश कर कहते हैं अब तुमको घर चलना है। मुक्ति सब चाहते हैं परन्तु मुक्ति को जानते कोई भी नहीं। ब्रह्म में लीन तो कोई हो नहीं सकते। यह तो सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है, सबको पार्ट बजाना ही है। कहते हैं वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। 84 जन्मों का पार्ट तुमको बजाना ही है। यह ज्ञान डांस होती है। वो लोग फिर डमरू दिखाते हैं। अब सूक्ष्मवतन वासी शंकर डमरू कैसे बजायेगा।

©

बाप ने समझाया है - तुम बन्दर मिसल थे। तो तुम बन्दरों की सेना ली। तुम्हारे आगे बाबा ज्ञान का डमरू बजा रहे हैं। तुमको ज्ञान देते हैं। अभी तुम्हारी सूरत और सीरत दोनों पलटा रहे हैं। काम-चिता पर बैठ तुम काले हो गये हो। बाबा फिर तुमको ज्ञान-चिता पर बिठाए सूरत और सीरत दोनों पलटाए सांवरे से गोरा बना देते हैं। यहाँ बाबा कितना नशा चढ़ाते हैं। फिर गुम क्यों होना चाहिए। अच्छा –

Imp

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप ने जो अथाह ज्ञान का धन दिया है, उसे धारण कर स्वयं भी साहूकार बनना है और सबको दान भी करना है। जो भी आये उसकी झोली भर देनी है।

२- बाप की याद से ही कल्याण होना है, इसलिए जितना हो सके चलते-फिरते बाप की याद में रहना है। सर्व सम्बन्धों की रसना एक बाप से लेनी है।

वरदान:- सूक्ष्म संकल्पों के बंधन से भी मुक्त बन ऊंची स्टेज का अनुभव करने वाले निर्बन्धन भव

जो बच्चे जितना निर्बन्धन हैं उतना ऊंची स्टेज पर स्थित रह सकते हैं, इसलिए चेक करो कि मन्सा-वाचा व कर्मणा में कोई सूक्ष्म में भी धागा जुटा हुआ तो नहीं है! एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये। अपनी देह भी याद आई तो देह के साथ देह के सम्बन्ध, पदार्थ, दुनिया सब एक के पीछे आ जायेंगे। मैं निर्बन्धन हूँ—इस वरदान को स्मृति में रख सारी दुनिया को माया की जाल से मुक्त करने की सेवा करो।

स्लोगन:-

देही-अभिमानी स्थिति द्वारा तन और मन की हलचल को समाप्त करने वाले ही अचल रहते हैं।

(288)

"मीठे बच्चे – अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए सदा इसी स्मृति में रहो कि हम किसके बच्चे हैं, अगर बाप को भूले तो सुख गुम हो जायेगा"

प्रश्न:- बाप के मिलने की स्थाई खुशी किन बच्चों को रहती है?

उत्तर:- जिन बच्चों ने एक से अपने सर्व सम्बन्ध जोड़े हैं, जो एक बाप की याद में रहने की ही मेहनत करते हैं, किसी देहधारी को याद नहीं करते उन्हें ही स्थाई खुशी रहती है। अगर देहधारी की याद है तो बहुत रोना पड़ेगा। विश्व का मालिक बनने वाले कभी रोते नहीं।

गीत:- बचपन के दिन भुला न देना........

ओम् शान्ति। बाप कहते हैं मीठे बच्चों – हम बेहद के बाप के बच्चे हैं, यह भूलो मत। यह भूले तो अपने को रुला देंगे। छी-छी दुनिया में बुद्धि चली जायेगी। बाप की याद रहने से अतीन्द्रिय सुख भासता है। वह सुख, बाप को भूल जाने से गुम हो जायेगा। हरदम याद रहना चाहिये कि हम बाबा के बच्चे हैं। नहीं तो अपने को रुला देंगे। सब भगवान के बच्चे हैं, सब कहते हैं हे बाबा, हे परम पिता परमात्मा रक्षा करो। परन्तु बाप से रक्षा कब होती है – यह किसको भी पता नहीं है। साधू-सन्त आदि कोई भी नहीं जानते कि बाप से हमको मुक्ति-जीवनमुमक्ति कब मिलनी है क्योंकि भगवान को ही कण-कण में कह दिया है। अब तुम बच्चे बेहद के बाप को जान गये हो। मोस्ट बिलवेड बाप है, उससे प्यारी वस्तु और कोई होती नहीं। ऐसे बाप को न जानना बड़ी भारी भूल है। शिव जयन्ती क्यों मनाते हैं, वह कौन है? यह भी कोई नहीं जानते। बाप कहते हैं तुम कितने बेसमझ बन गये हो। माया रावण ने तुमको क्या बना दिया है! अभी तुम बच्चे जानते हो यह हमारी जन्म भूमि है। मैं हर 5 हज़ार वर्ष के बाद आता हूँ। वह फिर कह देते 40 हज़ार वर्ष बाद जब यह कलियुग पूरा होगा तब आयेंगे। चित्र भी दिखाया जाता है त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति मार्ग नाम भी रखा है परन्तु तीन मूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को कोई नहीं जानते। ब्रह्मा क्या करके गया? विष्णु और शंकर क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं, कुछ भी नहीं जानते। बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। बाप है रचयिता। उनकी यह कितनी बडी रचना है। कितना बेहद का नाटक है। इसमें बेहद के मनुष्य रहते हैं। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले जब सतयुग था, भारत में जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो और कोई राज्य नहीं था। भगवती श्री लक्ष्मी, भगवान श्री नारायण को कहा जाता है। राम-सीता को भी भगवान राम, भगवती सीता कहते हैं। अब यह भगवान नारायण भगवती लक्ष्मी कहाँ से आये? राज्य करके गये हैं। परन्तु उनकी जीवन कहानी तो एक भी नहीं जानते। सिर्फ गाते रहते हैं हे भगवान दुःख हर्ता सुख कर्ता। परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं आता - वह दुःख हर्ता, सुख कर्ता कैसे है। कौन-सा सुख सबको दिया? और कब सबका दुःख हरा? कुछ भी नहीं जानते।

तुम बच्चे अभी यहाँ राजयोग सीख रहे हो – भगवती लक्ष्मी, भगवान नारायण बनने के लिए। जानते हैं भगवती सीता, भगवान राम भी बनने का है। 8 जन्म सतयुग में पूरे

करके फिर राम-सीता के राज्य में आने वाले हैं। 21 जन्म के लिए बेहद की राजाई तुम यहाँ स्थापन कर रहे हो। तुम भगवती भगवान स्वर्ग के मालिक बन रहे हो। स्वर्ग कोई आसमान में नहीं है। यह भी किसको पता नहीं है। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। अच्छा क्या क्रिश्चियन बौद्धी सब हेविन में जायेंगे? वह बाद में आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं। तो फिर वह स्वर्ग में कैसे आ सकते? स्वर्ग किसको कहा जाता, यह भी उनको पता नहीं है। सन्यासी लोग कहते ज्योति ज्योत समाया। कोई फिर कहते निर्वाणधाम गया। निर्वाण में भी तो लोक है ना। वह तो निवास स्थान है। ज्योति ज्योत में लीन होने की बात ही नहीं। ज्योति में मिल जाए तो फिर तो आत्मा ही खत्म हो जाए। खेल ही खत्म हो जाता है। इस ड्रामा से कोई भी आत्मा छूट नहीं सकती। कोई भी मोक्ष को पा नहीं सकते। गीत का अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। न जीवनमुक्ति का अर्थ समझते हैं, न आत्मा-परमात्मा का अर्थ समझते हैं। बाप कहते हैं– तुम्हारी शक्ल तो मनुष्य की है, जो इन देवताओं की भी थी। सतयुग आदि में देवतायें थे। उन्हों का 2500 वर्ष राज्य चला। बाकी 2500 वर्ष की बात है, जिसमें और सब धर्म आते हैं। 5 हज़ार वर्ष के बदले मनुष्य कह देते लाखों वर्ष कल्प वृक्ष की आयु है। परन्तु तुम्हारी बात समझने के लिए भी नहीं आयेंगे। हाँ, आयेंगे भी वही, जिन्होंने कल्प पहले आकर समझा होगा। पहले तो समझाना है – एक है हद का सन्यास, जो सन्यासी लोग घरबार छोड़ जाए जंगल में रहते हैं, पहले-पहले वह सतोप्रधान थे। फिर अब तमोप्रधान बने हैं तो जंगलों से लौटकर आए बड़े-बड़े महल बनाये हैं। इन सन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरूर है। भारत की सेवा की है। यह सन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता। यह भी ड्रामा बना हुआ है। उन्हों में पहले पवित्रता की ताकत थी, जिससे भारत को थमाया है। इन देवताओं का जब राज्य था तो भारत कितना साहूकार था। इन्हों के इतने बड़े-बड़े हीरे-जवाहरों के महल थे। वह सब कहाँ गये? सब नीचे चले गये। लंका और द्वारिका के लिए कहते हैं – समुद्र के नीचे चली गई। अभी तो है नहीं। सोने के महल आदि सब थे ना। जब मन्दिरों आदि में हीरे-जवाहरात लगा सकते हैं, तो वहाँ क्या नहीं होगा! कितनी तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। बाबा फिर से आया हुआ है। कहते हैं बाप को याद करो। याद एक को ही करना है, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। परन्तु वह भूल जाते हैं और देहधारी की याद आ जाती है। देहधारी की याद से तो कुछ भी फायदा नहीं। बाप कहते हैं– मामेकम् याद करो। किसी भी देहधारी को याद नहीं करो। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना.... एक बाप की याद से ही कमाई है। हम शिवबाबा के बच्चे हैं, उनसे वर्सा लेना है। इस समय बाप को याद नहीं किया तो फिर बहुत पछताना पड़ेगा, रोना पड़ेगा। विश्व के मालिक बनने वालों को रोने की क्या दरकार है। तुम बाप को भूलते हो तब ही माया थप्पड़ लगाती है। इसलिए बाबा बार-बार समझाते हैं कि बाप को और वर्से को याद करो। अमरनाथ ने अमरपुरी में एक पार्वती को तो बैठ अमरकथा नहीं सुनाई होगी। जरूर बहुत होंगे। जो भी मनुष्य मात्र हैं सबको बाप समझाते हैं कि अब पतित मत बनो, यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो।

वहाँ स्वर्ग में कोई विकार नहीं होते। अगर वहाँ भी विकार होता तो फिर स्वर्ग और नर्क में फर्क क्या हुआ? देवी-देवताओं की महिमा गाते हैं – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण... हैं। भगवान आकर भगवान-भगवती ही बनायेंगे। सिवाए भगवान के कोई बना न सके। भगवान तो एक ही है। गाया भी जाता है– भगवान-भगवती की राजधानी। यथा राजा-रानी तथा प्रजा भी वही होगी। परन्तु भगवान-भगवती कहा नहीं जाता। इसलिए कहा जाता है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। यह किसको पता नहीं है। इनकी (ब्रह्मा की) आत्मा को भी बाप समझाते हैं। एक बाप की, एक दादा की–दो आत्मायें हैं ना। एक आत्मा 84 जन्म लेती है, दूसरी आत्मा पुनर्जन्म रहित है। बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। एक ही बार आकर सारे विश्व को पवित्र बनाने के लिए हमको राजयोग सिखाते हैं। बाप तुमको समझाते हैं–मैंने इनमें प्रवेश किया है। यह 84 जन्म भोग आये हैं। अब इनके बहुत जन्मों का यह अन्तिम जन्म है। अब मैं निराकार हूँ तो कैसे आकर बच्चों को राजयोग सिखलाऊं? प्रेरणा से तो कुछ हो न सके। कृष्ण भगवानुवाच तो हो न सके। वह कैसे हो सकता है? वह तो है ही सतयुग का प्रिन्स, 16 कला सम्पूर्ण... फिर त्रेता में होते हैं 14 कला सम्पूर्ण, फिर द्वापर में कृष्ण को क्यों ले गये हैं? उनको तो पहले आना चाहिए। बाप समझाते हैं– पहले, बाप को याद करो। नहीं तो माया एकदम थप्पड़ मार देगी। छुईमुई का एक झाड़ होता है। हाथ लगाओ तो मुरझा जाये। तुम्हारा भी ऐसा ही हाल होता है, बाप को याद नहीं किया और खलास। गीत में भी सुना – बचपन के दिन भुला नहीं देना। बाप को भूले तो कहाँ न कहाँ चोट लग जयेगी। बाप कहते हैं– तुम हमारे बच्चे हो ना। यह शरीर तो विष से पैदा हुआ है। वह इनके लौकिक माँ-बाप हैं। यह तो है पारलौकिक बाप और इनको फिर अलौकिक बाप कहा जाता है। यह हद का था, फिर बेहद का बन गया। अभी देखो यह लौकिक बच्ची (निर्मलशान्ता) बैठी है यह लौकिक भी है, अलौकिक भी है, पारलौकिक भी है। बाकी शिवबाबा के तो भाई-बहन हैं नहीं। न लौकिक, न अलौकिक, न पारलौकिक। कितना फर्क है। एक बाप का बच्चा मासी का घर नहीं है। ऐसे बाप से सम्बन्ध जोड़ना है, टाइम लगता है। शिवबाबा को याद में रहना बड़ी मेहनत है। कई 50 वर्ष से रहने वाले भी सारा दिन शिवबाबा को याद भी नहीं करते, ऐसे भी हैं। और सबको भूल एक को याद करना बहुत-बहुत मेहनत है। कोई 1 परसेन्ट याद करते हैं, कोई 2 परसेन्ट, कोई 1/2 परसेन्ट भी मुश्किल याद करते हैं। यह बड़ी भारी मंजिल है। तो बाप समझाते हैं–बचपन को नहीं भूलना। बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। तुम जानते हो हम जीते जी मरकर बाप के आकर बने हैं – नई दुनिया में जाने के लिए। तो तुम्हें स्थाई खुशी रहनी चाहिए, ओहो! हम डबल सिरताज बनेंगे! मनुष्य थोड़ेही जानते हैं कि सतयुग में इन देवताओं को 16 कला सम्पूर्ण और 14 कला सम्पूर्ण क्यों कहते हैं? कुछ भी नहीं जानते हैं। यह भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि फिर भी बनेंगे। यह हठयोग, तीर्थ यात्रा आदि सब फिर भी होंगे। परन्तु इनसे क्या होगा? क्या हेविन में जायेंगे? नहीं, बहुत रिद्धि-सिद्धि से काम करते हैं। रिद्धि-सिद्धि वाले बहुत हैं। हज़ारों मनुष्य उनके पिछाड़ी पड़ते रहते हैं। रिद्धि-सिद्धि से बहुत घड़ियां आदि चीजें निकालते हैं। यह थोड़ेही समझते कि यह अल्पकाल के लिए सब हैं।

C

इसमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है। यह रिद्धि-सिद्धि आदि सीखने की भी किताब होती है। कितने लाखों मनुष्य उनके पिछाड़ी पड़ते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको बाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह नहीं रहेगा। बाप समझाते हैं–तुम अशरीरी आये थे फिर शरीर साथ पार्ट बजाया। अगर 84 लाख का हिसाब-किताब बतायें तो 12 मास लग जायें। हो ही नहीं सकता। 84 जन्मों का हिसाब-किताब बताना तो बिल्कुल सहज है। तुम 84 का चक्र लगाते रहते हो। सूर्यवंशी हैं तो चन्द्रवंशी नहीं। सूर्यवंशी घराना पूरा हुआ फिर चन्द्रवंशी.... बनें।

अभी तुम जानते हो हम हैं ब्राह्मण वंशी फिर देवता वंशी बनना है, इसलिए हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं। फिर सीढ़ी नीचे उतरते-उतरते वैश्य, शूद्र वंशी बनेंगे। अभी अपने 84 जन्मों की स्मृति आई है। यह चक्र भी याद करना पड़े। बाप को याद करने से एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनेंगे। पाप कट जायेंगे। चक्र को जानने से चक्रवर्ती बन जायेंगे। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया कब्रिस्तान बननी है। कुछ भी नहीं रहेगा। खत्म हो जायेगा। राम गयो, रावण गयो.... राम का कितना छोटा परिवार होगा सतयुग में। अभी रावण का कितना बड़ा परिवार है। बच्चे जानते हैं कि यह राजधानी स्थापन हो रही है। हर बात में पुरुषार्थ फर्स्ट है। बाप पुरुषार्थ कराते हैं – बच्चे मुझे याद करो। जिस बाप से अथाह स्वर्ग की बादशाही मिलती है, क्या उनको याद नहीं करेंगे? बाप स्मृति दिलाते हैं कि तुम स्वर्ग के मालिक थे। अब फिर से पुरुषार्थ कर स्वर्ग के मालिक बनो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. कभी भी किसी बात में छुई-मुई नहीं बनना है। ईश्वरीय बचपन को भूल मुरझाना नहीं है। इन आंखों से जो कुछ दिखाई देता है, उसे देखते भी नहीं देखना है।

२. एक बाप की याद में ही कमाई है इसलिए देहधारियों को याद कर रोना नहीं है। बाप और वर्से को याद कर विश्व की बादशाही लेनी है।

वरदान:- एक बाप के लव में लवलीन रह सदा चढ़ती कला का अनुभव करने वाले सफलतामूर्त भव

सेवा में वा स्वयं की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ। ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है तो उसके स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बांध देते हैं। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू का काम करता है। वह रूहानी जादूगर बन जाती है।

स्लोगन:-

योगी तू आत्मा वह है जो अन्तर्मुखी बन लाइट माइट रूप में स्थित रहता है।

(14-6-01) कविता कटींग मुरली original. ओरिजिनल, पृ.2

(63)

कटिंग मुरली :- 14.6.01

20-5-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन (६३)

"मीठे बच्चे – कभी जिस्म (साकार शरीर) को याद नहीं करना है, ऑखों से भल इन्हें देखते हो परन्तु याद सुप्रीम टीचर शिवबाबा को करना है"

प्रश्न:- तुम बच्चे किस एक कायदे को जानने के कारण हार-फूल अभी स्वीकार नहीं कर सकते?

उत्तर:- हम जानते हैं कि जिनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र है, वही हार-फूल के हकदार है। इस कायदे अनुसार हम फूल-हार स्वीकार नहीं कर सकते। बाबा कहते हैं मैं भी तुम्हारे फूल-हार स्वीकार नहीं करता क्योंकि मैं न पूज्य बनता हूँ, न पुजारी। मैं तो तुम्हारा ओबीडियन्ट फादर और टीचर हूँ।

गीत:- *छोड़ भी दे आकाश सिंहासन... ओम् शान्ति।*

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। इस गीत से सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जाता है। याद करते हैं अब भारत बहुत दु:खी है। ड्रामा अनुसार यह सब गीत बने हुए हैं। दुनिया वाले नहीं जानते हैं। बाप आते हैं पतितों को पावन बनाने वा दु:खियों को दु:ख से लिबरेट करने। दु:ख हरकर सुख देने लिए। बच्चे जान गये हैं वही बाप आया हुआ है। बच्चों को पहचान मिल गई है। स्वयं बैठ बतलाते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश कर फिर तुम बच्चों को सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बताता हूँ। सृष्टि एक ही है सिर्फ नई और पुराना होता है। जैसे शरीर बचपन में नया होता है फिर पुराना होता है। नया शरीर, पुराना शरीर – दो चीज़ तो नहीं कहेंगे। है एक ही, सिर्फ नये से पुराना बनता है। वैसे दुनिया एक ही है, नई से अब पुरानी हुई है। नई कब थी – यह फिर कोई भी बता नहीं सकते हैं। बाप आकर समझाते हैं – बच्चे, जब नई दुनिया थी तो भारत नया था। सतयुग कहा जाता है। वही भारत अब पुराना बना है। इसको पुरानी ओल्ड वर्ल्ड कहा जाता है। न्यु वर्ल्ड से फिर ओल्ड बनी है। फिर उनको नया ज़रुर बनना है। नई दुनिया का बच्चों ने साक्षात्कार किया है। अच्छा, उस नई दुनिया के मालिक कौन थे? बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण थे। आदि सनातन देवी-देवतायें मालिक थे। यह बाप बच्चों को समझा रहे हैं। बाप कहते हैं अब निरन्तर यही याद करो। बाप परमधाम से हमको पढ़ाने, राजयोग सिखाने आया हुआ है। महिमा सारी उस एक की ही है। इनकी महिमा कुछ नहीं है। इस समय सब तुच्छ बुद्धि है, कुछ नहीं समझते हैं, इसलिए मैं आता हूँ। तब तो यह गीत भी बना हुआ है। सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। हरेक का पार्ट तो अपना-अपना है। बाप बार-बार कहते हैं देह-अभिमान छोड़ देही-अभिमानी बनो और याद शिवबाबा को करो। ऐसे ही समझो – शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं। ब्रह्मा है ही नहीं। भल इनका रूप इन ऑखों से दिखाई पड़ता है परन्तु तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा के तरफ़ जानी चाहिए। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा इनका शरीर कोई काम का नहीं है। हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है जो इस द्वारा पढ़ाते हैं। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर वह है, याद उनको करना है। कभी भी इस जिस्म को याद नहीं करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है। तो सर्वव्यापी का ज्ञान ठहर भी न सके। बच्चे याद करते हैं फिर से आकर ज्ञान योग सिखाओ। परमपिता परमात्मा के सिवाए तो कोई राजयोग सिखला न सके। तुम

बच्चों की बुद्धि में है कि यह गीता का ज्ञान स्वयं बाप सुनाते हैं फिर यह ज्ञान प्राय:लोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं है। राजधानी स्थापन हो गई, सद्गति हो जाती है। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति में जाने लिए। बाकी वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। मनुष्य जप, तप, दान, पुण्य आदि जो कुछ भी करते हैं सब भक्ति मार्ग की बातें हैं। इससे मुझे कोई मिल नहीं सकता है। आत्मा के पंख टूट गये हैं। पत्थर बन गये हैं। पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना पड़ता है।

बाप कहते हैं अब कितने मनुष्य हैं, सरसों मिसल संसार भरा हुआ है। सब खत्म हो जाने हैं। सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं। नई दुनिया में वैभव बहुत, मनुष्य थोड़े होते हैं। यहां तो इतने मनुष्य हैं जो खाने के लिए भी नहीं मिलता है। पुरानी कलराठी जमीन है। फिर नई हो जायेगी। वहाँ है एवरीथिंग न्यु। नाम ही कितना मीठा है — हेविन, बहिश्त। देवताओं की नई दुनिया। पुराने घर को तोड़ नये में बैठने की दिल होती है ना। अब है नई दुनिया स्वर्ग में आने की तात (लगन)। इस पुराने शरीर की कोई वैल्यु नहीं है। शिवबाबा को तो कोई शरीर है नहीं। बच्चे कहते हैं हार पहनायें। लेकिन इनको हार पहनायेंगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जायेगा। शिवबाबा कहते हैं हमको हार की दरकार नहीं है। तुम ही पूज्य बनते हो। पुजारी भी बनते हो। आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी बनते हो। तो अपने ही चित्र की पूजा करने लग पड़ते हो। बाबा कहते हैं — मैं न पूज्य बनता हूँ, न फूलों आदि की दरकार है। मैं क्यों पहनूँ? इसलिए कब फूल लेते नहीं हैं। तुम जब पूज्य बनो फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनना। मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट ओबीडियन्ट फादर भी हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेन्ट भी हूँ। बड़े-बड़े रॉयल आदमी जब नीचे सही डालते हैं तो लिखते हैं — मेन्टोकरजिन... अपने को लार्ड कभी नहीं लिखते हैं। यहां तो लिखते — श्री श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री फलाना। एकदम 'श्री' अक्षर डाल देते हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं — बच्चे, अब इस शरीर को याद न करो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। सोना 9 कैरेट का होगा तो जेवर भी 9 कैरेट का होगा। सोने में ही खाद पड़ती है। तो आत्मा को निर्लेप नहीं समझना चाहिए। यह ज्ञान तुमको है। सतयुग में 21 जन्म के लिए प्रालब्ध पा लेते हो तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतन वासी। बाप पहले-पहले सूक्ष्म शरीर रचते हैं। यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी अपना पार्ट बजाए फिर वापस चले जायेंगे। निर्वाणधाम ऊंचे ते ऊंचा धाम है। आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊंच है। एक भगवान को सब भक्त याद करते हैं। परन्तु तमोप्रधान बन गये हैं तो बाप को भूल ठिक्कर-भित्तर सबकी पूजा करते हैं। हम जानते हैं जो कुछ चलता है, ड्रामा शूट होता जाता है। ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है, समझो बीच में कोई पंछी आदि उड़ता है तो वही शूटिंग में घड़ी-घड़ी दिखाई देगा। पतंग का उड़ना हुआ, शूट हो गया तो फिर रिपीट होता रहेगा। यह भी ड्रामा सेकण्ड-सेकण्ड रिपीट होता रहता है। शूट होता रहता है। बना बनाया ड्रामा है, तुम एक्टर्स हो। सारे ड्रामा को साक्षी हो देखते हो। एक-एक सेकण्ड ड्रामा अनुसार पास होता रहता है। पत्ता

हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं, पत्ता-पत्ता भगवान के हुक्म पर चलता है। यह सब ड्रामा की नूँध है। इनको अच्छी रीति समझाना पड़ता है। बाप ही आकर राजयोग सिखाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं। चित्र भी कितने अच्छे बने हुए हैं! संगमयुग पर काँटा भी लगा हुआ है। कलियुग अन्त, सतयुग आदि का संगम है। अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं। नई दुनिया में फिर यह नहीं होंगे। तुम बच्चे हमेशा ऐसे समझो बाप हमको पढ़ाते हैं। हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं। भगवानुवाच – मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजे लोग भी इन लक्ष्मी-नारायण को पूजते हैं। तो उन्हों को पूज्य बनाने वाला भी मैं हूँ। पूज्य जो थे वह अब पुजारी हो गये हैं। तुम बच्चे अब समझ गये हो हम सो पूज्य थे, फिर हम सो पुजारी बने। बाबा तो नहीं बनते हैं। तुम भी स्वीकार नहीं कर सकते हो, कायदे अनुसार जिनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं वही हकदार हैं फूलों के। वहाँ स्वर्ग में है ही खुशबूदार फूल। खुशबू लेने लिए फूल होते हैं। हार पहनने के लिए भी फूल होते हैं। बाप कहते हैं अब तुम बच्चे विष्णु के गले का हार बनते हो, नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है। जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है वह करते हैं, करने लग पड़ेंगे। नम्बरवार तो हैं ही। बुद्धि कहती है फलाना बच्चा बहुत सर्विसएबुल है। जैसे दुकान में होता है – सेठ बनते हैं, भागीदार बनते हैं, मैनेजर बनते हैं। यह भी ऐसे है।

तुम बच्चों को मात-पिता पर जीत पानी है। तुम वन्डर खाते हो मात-पिता के आगे कैसे जा सकते हैं। बाप तो बच्चों को मेहनत कर लायक बनाते हैं, तख्त-नशीन बनाने। इसलिए कहते हैं हमारे तख्त पर जीत पहनना। एक दो पर जीत पहनते हैं ना। पुरुषार्थ इतना करो जो नर से नारायण बनो। एम ऑबजेक्ट मुख्य है ही एक। फिर कहते हैं किंगडम स्थापन हो रही है। फिर उसमें वैराइटी पद है। माया को जीतने का पूरा पुरुषार्थ करो। बच्चों आदि को भी प्यार से चलाओ। परन्तु ट्रस्टी होकर रहो। भक्तिमार्ग में कहते थे ना – प्रभु, यह सब कुछ आपका दिया हुआ है। आपकी अमानत आपने ले ली फिर रोने की बात ही नहीं। परन्तु यह है ही रोने की दुनिया। मनुष्य कथायें सुनाते हैं, मोह जीत राजा की भी कथा सुनाते हैं। वहां कोई दु:ख फील नहीं होता है। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। वहां कभी कोई बीमारी होती नहीं। एवरहेल्दी निरोगी काया रहती है। शादी आदि कैसे होती है, क्या ड्रेस पहनते हैं, वहाँ की रस्म-रिवाज कैसे चलती है – यह सब बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। उस समय इतना ज्ञान नहीं था। अब दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों में ताकत बहुत जोर से आती जाती है। यह भी सब पार्ट ड्रामा में गूँधा हुआ है। वन्डर है – परमात्मा में भी कितना भारी पार्ट है। खुद बैठ समझाते हैं – ब्रह्माण्ड में ऊपर बैठ मैं कितना काम करता हूँ! नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ। बहुत निराकार के भी पुजारी होते हैं। परन्तु निराकार परमपिता परमात्मा कैसे आकर पढ़ाते हैं – यह बात गुम कर दी है। गीता में श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। तो निराकार से प्रीत ही टूट गई है। यह तो परमात्मा ने ही सहज राजयोग सिखाया और दुनिया को बताया। दुनिया बदलती रहती है, युग बदलते रहते हैं। इस ड्रामा के चक्र को अब तुम समझ गये हो। मनुष्य कुछ नहीं जानते। सतयुग के देवी-देवताओं को भी नहीं जानते। सिर्फ देवताओं की निशानियाँ रह गई हैं।

बाप समझाते हैं हमेशा ऐसे समझो – हम शिवबाबा के हैं, शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं,

शिवबाबा हमको इस ब्रह्मा तन द्वारा शिक्षा दे रहे हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मजा आता रहेगा। ऐसा गॉड फादर कौन कहलाये। फादर भी है, टीचर भी है। परन्तु वह फादर गुरु भी हो, ऐसा हो नहीं सकता। टीचर हो सकता है। फादर को गुरु कभी नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर भी टीचर था, पढ़ाते थे। हम भी पढ़ते थे। वह है हद का फादर टीचर। यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो सौभाग्य। गॉड फादर पढ़ाते हैं। कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाप है! मीठी चीज़ को याद किया जाता है। जैसे आशिक-माशुक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस, एक दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा के साथ। आत्मा कहती है – बाबा कितना ज्ञान का, प्रेम का सागर है! इस पतित शरीर में आकर कितना हमको ऊंच बनाते हैं। गायन भी है – मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। सेकण्ड में वैकुण्ठ में चले जाते हैं। सेकण्ड में मनुष्य से देवता बन जाते हैं। यह है एम ऑबजेक्ट। इसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए। गुरु नानक ने भी कहा है मूत पलीती कपड़ धोए.. लक्ष्य सोप है ना। बाबा कहते हैं मैं कितना बड़ा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र (आत्मा और शरीर) कितना शुद्ध बनाता हूँ! ऐसा धोबी कभी देखा? आत्मा जो बिल्कुल काली हो गई है उनको योगबल से कितना स्वच्छ बनाता हूँ! तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह काम सारा शिवबाबा का है। उनको ही याद करो। इन ब्रह्मा से मीठा वह है। आत्माओं को कहते हैं तमको इन ऑखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा तुमको इनके द्वारा कौडी से हीरे जैसा बना रहे हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं, भगवान टीचर बन पढ़ाते हैं – इसी स्मृति में रहना है। घर गृहस्थ में रहते पूरा ट्रस्टी बनना है।

२- अभी हार-फूल स्वीकार नहीं करने हैं। विष्णु के गले का हार बनने के लिए माया को जीतने का पुरुषार्थ करना है।

वरदान:- सब कुछ बाप हवाले कर संगमयुगी बादशाही का अनुभव करने वाले अविनाशी राजतिलक अधिकारी भव

आजकल की बादशाही या तो धन दान करने से मिलती है या वोटों से मिलती हैं लेकिन आप बच्चों को स्वयं बाप ने राजतिलक दे दिया। बेपरवाह-बादशाह – यह कितनी अच्छी स्थिति है। जब सब कुछ बाप के हवाले कर दिया तो परवाह किसको होगी? बाप को। लेकिन ऐसे नहीं कि थोड़ा-थोड़ा कहीं अपनी अथॉरिटी को या मनमत को छिपाकर रखा हो। अगर श्रीमत पर हैं तो बाप हवाले हैं। ऐसे सच्चे दिल से सब कुछ बाप हवाले करने वाले डबल लाइट, अविनाशी राजतिलक के अधिकारी बनते हैं।

स्लोगन:-

एक-एक वाक्य महावाक्य हो, कोई भी बोल व्यर्थ न जाए तब कहेंगे मास्टर सतगुरू।

(63) (संग्रहपत्र) कटींग मुरली कटिंग, पे. 2

← ओरिजिनल मुरली - 20.5.98

[illegible] प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन (६३)

"मीठे बच्चे – शिवबाबा तुम्हारे फूल आदि स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि वह पूज्य वा पुजारी नहीं बनते, तुम्हें भी संगम पर फूल हार नहीं पहनने हैं"

प्रश्न:- भविष्य राज्य तख्त के अधिकारी कौन बनते हैं?

उत्तर:- जो अभी मात-पिता के दिलतख्त को जीतने वाले हैं, वही भविष्य तख्तनशीन बनते हैं। ऐसा है बच्चे मात-पिता पर भी विजय प्राप्त करते हैं। मेहनत कर मात-पिता से भी आगे जाते हैं।

गीत:- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन... (कैसेट अमुल्य रत्न 6-B5)

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। इस गीत से सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। याद करते हैं, अब भारत बहुत दुःखी है। ड्रामा अनुसार यह सब गीत बने हैं। दुनिया वाले नहीं जानते। बाप आते हैं पतितों को पावन करने वा दुःखियों को दुःख से लिबरेट कर सुख देने लिए। बच्चे जान गये हैं—वही बाप आया हुआ है। बच्चों को पहचान मिल गई है स्वयं बैठ बतलाते हैं—मैं साधारण तन में प्रवेश कर सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ सुनाता हूँ। सृष्टि एक ही है, सिर्फ नई और पुरानी होती है। जैसे शरीर बचपन में नया होता है फिर पुराना होता है। नया शरीर, पुराना शरीर दो शरीर तो नहीं कहेंगे। है एक ही सिर्फ नये से पुराना बनता है। वैसे दुनिया एक ही है। नये से अब पुरानी होती है। नई कब थी? यह फिर कोई बता न सके। बाप आकर समझाते हैं, बच्चे जब नई दुनिया थी तो भारत नया था। सतयुग कहा जाता था। वही भारत फिर पुराना बना है। इसको पुरानी, ओल्ड वर्ल्ड कहा जाता है। न्यु वर्ल्ड से फिर ओल्ड बनी है फिर उनको नया जरूर बनना है। नई दुनिया का बच्चों ने साक्षात्कार किया है। अच्छा उस नई दुनिया के मालिक कौन थे? बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण वा आदि सनातन देवी-देवता उस दुनिया के मालिक थे। यह बाप बच्चों को समझा रहे हैं। बाप कहते हैं—अब निरन्तर यही याद करो। बाप परमधाम से हमको पढ़ाने आते हैं। राजयोग सिखाने आये हुए हैं। महिमा सारी उस एक की है, इनकी महिमा कुछ नहीं है। इस समय सब तुच्छ बुद्धि हैं, कुछ नहीं समझते। इसलिए मैं आता हूँ तब तो गीत भी बनाया हुआ है। सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। हर एक का पार्ट अपना-अपना है। बाप बार-बार कहते हैं— देह-अभिमान छोड़ तुम आत्म-अभिमानी बनो और आरगन्स द्वारा शिक्षा धारण करो। भल इस बाबा को चलते-फिरते देखते हो परन्तु याद शिवबाबा को करो। ऐसे ही समझो शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं। ब्रह्मा है नहीं। भल इनका रूप इन आंखों से दिखाई पड़ता है। तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा की तरफ जानी चाहिए। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं। हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है। वह इन द्वारा पढ़ाते हैं। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर वह है। याद उनको करना है। कभी भी जिस्म को याद नहीं करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है। बच्चे याद करते हैं फिर से आकर ज्ञान-योग सिखाओ, परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखा न सके। बच्चों की बुद्धि में है वही बैठ गीता का ज्ञान सुनाते हैं फिर यह नॉलेज प्रायःलोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं। राजधानी

स्थापन हो गई। सद्गति हो जाती है। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति होने के लिए। बाकी वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। मनुष्य जप-तप, दान-पुण्य आदि जो कुछ करते हैं, सब भक्ति मार्ग की बातें हैं, इससे मुझे कोई मिल नहीं सकता। आत्मा के पंख टूट गये हैं। पत्थरबुद्धि बन गई है। पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना पड़े। बाप कहते हैं— अब कितने मनुष्य हैं। सरसों मिसल संसार भरा हुआ है। अब सब खत्म हो जाने हैं। सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं। नई दुनिया में वैभव बहुत और मनुष्य थोड़े होंगे। यहाँ तो इतने मनुष्य हैं जो खाने के लिए भी नहीं मिलता है। पुरानी रेतीली जमीन है फिर नई हो जायेगी। वहाँ है ही एवरीथिंग न्यु। नाम ही कितना मीठा है – हेविन, बहिश्त, देवताओं की नई दुनिया। पुरानी को तोड़ नई में बैठने की दिल होती है ना। अब है नई दुनिया, स्वर्ग में जाने की बात। इसमें पुराने शरीर की कोई वैल्यु नहीं है। शिवबाबा को तो कोई शरीर है नहीं।

बच्चे कहते हैं— बाबा को हार पहनायें। परन्तु इनको हार पहनायेंगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जायेगा। शिवबाबा कहते हैं हार की दरकार नहीं है। तुम ही पूज्य बनते हो। पुजारी भी तुम बनते हो। आपेही पूज्य आपेही पुजारी। तो अपने ही चित्र की पूजा करने लगते हैं। बाबा कहते हैं मैं न पूज्य बनता हूँ, न फूल आदि की दरकार है। मैं क्यों यह पहनूँ। इसलिए कभी फूल माला आदि लेते नहीं हैं। तुम पूज्य बनते हो फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनना। मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट बिलवेड ओबीडियन्ट फादर भी हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेन्ट भी हूँ। बड़े-बड़े रॉयल आदमी जब नीचे सही डालते हैं तो लिखते हैं मिन्टो, करजेन आदि... अपने को लार्ड कभी नहीं लिखेंगे। यहाँ तो श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री फलाना। एकदम श्री अक्षर डाल देते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं अब इस शरीर को याद नही करो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। सोना 9 कैरेट होगा तो जेवर भी 9 कैरेट। सोने में ही खाद पड़ती है। आत्मा को कभी निर्लेप नहीं समझना चाहिए। यह ज्ञान तुमको अभी है। तुम आधाकल्प 21 जन्म लिए प्रालब्ध पाते हो तो कितना पुरूषार्थ करना चाहिए! परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। शिवबाबा, ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। बाप पहले सूक्ष्म सृष्टि रचते हैं, निर्वाणधाम ऊंच ते ऊंच धाम है। आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊंच है। एक भगवान को सब भक्त याद करते हैं। परन्तु तमोप्रधान बन गये हैं तो बाप को भूल, ठिक्कर-भित्तर सबकी पूजा करते रहते हैं। हम जानते हैं जो कुछ चलता है ड्रामा शूट होता जाता है। ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है। समझो बीच में कोई पंछी आदि उड़ता है तो वही घड़ी-घड़ी रिपीट होता रहेगा। पतंग उड़ता हुआ शूट हो गया तो फिर-फिर रिपीट होता रहेगा। यह भी ड्रामा का सेकेण्ड-सेकेण्ड रिपीट होता जाता है। शूट होता रहता है। यह बना बनाया ड्रामा है। तुम एक्टर्स हो सारे ड्रामा को साक्षी हो देखते हो। एक-एक सेकेण्ड ड्रामा अनुसार पास होता है। पत्ता हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं पत्ता-पत्ता भगवान के हुक्म से चलता है। नहीं, यह सब ड्रामा में नूँध है। इनको अच्छी रीति समझना पड़ता है। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं। चित्र भी कितने अच्छे बने हुए हैं। संगमयुग पर घड़ी का कांटा भी लगा हुआ है। कलियुग अन्त सतयुग आदि

(२९८)

का संगम है। अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं। नई दुनिया में फिर यह नहीं होंगे। तुम बच्चे हमेशा ऐसे समझो—हमको बाप पढ़ाते हैं, हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं। भगवानुवाच — मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजे लोग भी लक्ष्मी-नारायण को पूजते हैं। तो उन्हों को पूज्य बनाने वाला मैं हूँ। जो पूज्य थे वह अब पुजारी हो गये हैं। तुम बच्चे समझ गये हो हम सो पूज्य थे फिर हम सो पुजारी बने। बाबा तो नहीं बनते हैं। बाबा कहते हैं, न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ। इसलिए मैं न हार पहनता हूँ, न पहनाने पड़ते हैं। फिर हम क्यों फूलों को स्वीकार करें। तुम भी स्वीकार नहीं कर सकते हो। कायदे अनुसार उन देवताओं का हक है, उनकी आत्मा और शरीर पवित्र है। वही हकदार हैं फूलों के। वहाँ स्वर्ग में तो हैं ही खुशबूदार फूल। फूल होते ही हैं खुशबू के लिए। पहनने के लिए भी होते हैं। बाप कहते हैं— अभी तुम बच्चे विष्णु के गले का हार बनते हो। नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है। जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरूषार्थ किया है, अब करते हैं और करने लग पड़ेंगे। नम्बरवार तो हैं। बुद्धि कहती है फलाना बच्चा बहुत सर्विसएबुल है। जैसे दुकान में होता है। सेठ बनते हैं, भागीदार बनते हैं। मैसेन्जर बनते हैं। नीचे वालों को भी लिफ्ट मिलती है। यह भी ऐसे है। तुम बच्चों को भी मात-पिता पर जीत पानी है। तुम वन्डर खाते हो — मात-पिता से आगे कैसे जा सकते हो। बाप तो बच्चों को मेहनत कर लायक बनाते हैं, तख्तनशीन बनाने लिए। इसलिए कहते हैं, अब हमारे दिल रूपी तख्त पर जीत पहनने से, भविष्य के तख्तनशीन बनेंगे। पुरूषार्थ इतना करो, जो नर से नारायण बनो। एम ऑब्जेक्ट मुख्य है ही एक, फिर किंगडम स्थापन हो रही है तो उसमें वैरायटी पद है।

तुम्हें माया को जीतने का पूरा-पूरा पुरूषार्थ करना है। बच्चों आदि को भी भल प्यार से चलाओ। परन्तु ट्रस्टी होकर रहो। भक्ति मार्ग में कहते थे ना— प्रभू यह सब आपका दिया हुआ है। आपकी अमानत आपने ले ली। अच्छा फिर रोने की बात ही नहीं। परन्तु यह तो है ही रोने की दुनिया। मनुष्य कथायें बहुत सुनाते हैं। मोहजीत राजा की कथा भी सुनाते हैं। फिर कोई दुःख फील नहीं होता है। एक शरीर छोड़ जाए दूसरा लिया। वहाँ कभी कोई बीमारी आदि होती नहीं। एवरहेल्दी, निरोगी काया रहती है, 21 जन्म के लिए। बच्चों को सब साक्षात्कार होता है। वहाँ की रसमरिवाज कैसे चलती है, क्या ड्रेस पहनते हैं। स्वयंवर आदि कैसे होते हैं— सब बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। उस समय इतना ज्ञान नहीं था। अब दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों में ताकत बहुत आती जाती है। यह भी सब ड्रामा में नूँधा हुआ है। वन्डर है ना। परमपिता परमात्मा का भी कितना भारी पार्ट है। खुद बैठ समझाते हैं भक्ति मार्ग में भी ऊपर बैठ मैं कितना काम करता हूँ। नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ। बहुत, निराकार के पुजारी भी होते हैं। परन्तु निराकार परमात्मा कैसे आकर पढ़ाते हैं, यह बात गुम कर दी है। गीता में भी कृष्ण का नाम डाल दिया है। तो निराकार से प्रीत ही टूट गई है। यह तो परमात्मा ने ही आकरके सहज योग सिखलाया और दुनिया को बदलाया, दुनिया बदलती रहती है। युग फिरते रहते हैं। इस ड्रामा के चक्र को अभी तुम समझ गये हो। मनुष्य कुछ नहीं जानते। सतयुग के देवी-देवताओं को भी नहीं जानते। सिर्फ देवताओं की निशानियाँ रह गई है। तो बाप समझाते हैं, हमेशा ऐसे समझो हम शिवबाबा के हैं। शिवबाबा

हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा, इस ब्रह्मा द्वारा हमेशा शिक्षा देते हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मज़ा आता रहेगा। ऐसा गॉड फादर कौन? वह फादर भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। कई बाप बच्चों को पढ़ाते भी हैं तो वह जरूर कहेंगे हमारा यह फादर, टीचर है। परन्तु वह फादर गुरू भी हो, ऐसे नहीं होते हैं। हाँ टीचर हो सकता है। फादर को गुरू कभी नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर टीचर भी था, पढ़ाते थे। वह है हद का फादर टीचर। यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो सौभाग्य। गॉड फादर पढ़ाते हैं, कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाबा है। मीठी चीज़ को याद किया जाता है। जैसे आशिक-माशूक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस एक दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा बाप के साथ योग। आत्मा कहती है बाबा कितना ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। इस पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर हमको कितना ऊंच बनाते हैं। गायन भी हैं-- मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। सेकेण्ड में बैकुण्ठ में जाते हैं। सेकेण्ड में मनुष्य से देवता बन पड़ते हैं। यह है एम आब्जेक्ट। उसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए। गुरू नानक ने भी कहा है ना मूत पलीती कपड़ धोए... लक्ष्य सोप है ना। बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र, तुम्हारी आत्मा और शरीर कितना शुद्ध बनाता हूँ। तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह सारा कार्य शिवबाबा का है, उनको ही याद करो। इनसे मीठा वह है। आत्मा को कहते हैं तुमको इन आंखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा इनके द्वारा तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं । अच्छा--

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप के दिल रूपी तख्त पर जीत पाने का पुरूषार्थ करना है। परिवार में ट्रस्टी रहकर प्यार से सबको चलाना है। मोहजीत बनना है।

२- योगबल से आत्मा को स्वच्छ बनाना है। इन आंखों से सब कुछ देखते हुए याद एक बाप को करना है। यहाँ फूल हार स्वीकार न कर खुशबूदार फूल बनना है

वरदान:- सदा मनन द्वारा मगन अवस्था के सागर में समाने का अनुभव करने वाले अनुभवी मूर्त भव

अनुभवों को बढ़ाने का आधार है मनन शक्ति। मनन वाला स्वत: मगन रहता है। मगन अवस्था में योग लगाना नहीं पड़ता लेकिन निरन्तर लगा रहता है, मेहनत नहीं करनी पड़ती। मगन अर्थात् मुहब्बत के सागर में समाया हुआ, ऐसा समाया हुआ जो कोई अलग कर नहीं सकता। तो मेहनत से छूटो, सागर के बच्चे हो तो अनुभवों के तलाब में नहीं नहाओ लेकिन सागर में समा जाओ तब कहेंगे अनुभवी मूर्त।

स्लोगन:-

ज्ञान स्वरूप आत्मा वह है जिसका हर संकल्प, हर सेकण्ड समर्थ हो।

[illegible] शरीर [illegible] 64
[illegible] शरीर [illegible] है।
[illegible] पुरानी [illegible] शरीर [illegible] है।

16.3.90 .. प्रात: क्लास ओम्शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम्हें इस पुरानी दुनिया, पुराने-शरीर से जीते जी मरकर घर जाना है, इसलिए देह अभिमान छोड़ देही अभिमानी बनो" (६४)

प्रश्न-अच्छे2 पुरूषार्थी बच्चों की निशानी क्या होगी? उत्तर:-जो अच्छे2 पुरूषार्थी हैं वह सवेरे2 उठकर देही अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करेंगे। वह एक बाप को याद करने का पुरूषार्थ करेंगे, और कोई देहधारी याद न आये- यह लक्ष्य रहता है। निरन्तर बाप और 84 के चक्र की याद रहे तो अहो सौभाग्य।

ओम्शान्ति। अभी तुम बच्चे जीते जी मरे हुए हो। कैसे मरे हो? देह के अभिमान को छोड़ दिया तो बाकी रही आत्मा। शरीर तो खत्म हो जाता है। आत्मा नहीं मरती। बाप कहते हैं जीते जी अपने को आत्मा समझो और परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाने से आत्मा पवित्र हो जायेगी। जब तक आत्मा बिल्कुल पवित्र नहीं बनी है तब तक पवित्र शरीर मिल न सके। आत्मा पवित्र बन गई तो फिर यह पुराना शरीर आपेही छूट जायेगा। जैसे सर्प की खल आटोमेटिकली छूट जाती है। उनसे ममत्व मिट जाता है, वह जानता है हमको नई खल मिलती है पुरानी उतर जायेगी। हर एक को अपनी2 बुद्धि तो होती है ना। अभी तुम बच्चे समझते हो हम जीते जी इस पुरानी दुनिया से पुराने शरीर से मर चुके हैं फिर तुम आत्मायें भी शरीर छोड़ कहाँ जायेंगी। अपने घर। पहले2 तो यह पक्का याद करना है- हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। आत्मा कहती है- बाबा हम आपके हो चुके, जीते जी मर चुके हैं। अब आत्मा को फरमान मिला हुआ है कि मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यह याद का अभ्यास पक्का चाहिए। आत्मा कहती है- बाबा आप आये हैं तो हम आपके ही बनेंगे। आत्मा मेल है, न कि फीमेल। हमेशा कहते हैं हम भाई2 हैं, ऐसे थोड़े ही कहते हम सब सिस्टर्स हैं, सब बच्चे हैं। सब बच्चों को वर्सा मिलना है। अगर अपने को बच्ची कहेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा। आत्मायें सब भाई2 हैं। बाप सबको कहते हैं- रूहानी बच्चों मुझे याद करो। आत्मा कितनी छोटी है। यह है बहुत महीन समझने की बातें। बच्चों को याद ठहरती नहीं है। सन्यासी लोग दृष्टान्त देते हैं- मैं भैंस हूँ..2.. ऐसे कहने से फिर भैंस बन जाते हैं। अब वास्तव में भैंस कोई होंगे थोड़ेही। बाप तो कहते हैं अपने को आत्मा समझो। यह आत्मा और परमात्मा का ज्ञान तो कोई को है नहीं। इसलिए ऐसी2 बातें कह देते हैं। अब तुमको देही अभिमानी बनना है, हम आत्मा हैं यह पुराना शरीर छोड़ हमको जाए नया लेना है। मनुष्य मुख से कहते भी हैं कि आत्मा स्टार है भ्रकुटी के बीच में रहती है फिर कह देते अंगुष्ठे मिसल है। अब सितारा कहाँ, अंगुष्ठा कहाँ। और फिर मिट्टी के सालिग्राम बैठ बनाते हैं, इतनी बड़ी आत्मा तो हो नहीं सकती। मनुष्य देह अभिमानी हैं ना। तो बनाते भी मोटे रूप में हैं। यह तो बड़ी सूक्ष्म महीनता की बातें हैं। भक्ति भी मनुष्य एकान्त में, कोठी में बैठ करते हैं। तुमको तो गृहस्थ व्यवहार में धन्धे आदि में रहते हुए बुद्धि में यह पक्का करना है- हम आत्मा हैं। बाप कहते हैं- मैं तुम्हारा बाप भी इतनी छोटी बिन्दु हूँ। ऐसे नहीं कि मैं बड़ा हूँ। मेरे में सारा ज्ञान है। आत्मा और परमात्मा दोनो एक जैसे ही हैं। सिर्फ उनको सुप्रीम कहा जाता है। यह ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं- मैं तो अमर हूँ। मैं अमर न होता तो तुमको पावन कैसे बनाऊँ। तुमको स्वीट चिल्ड्रेन कैसे कहूँ। आत्मा ही सब कुछ करती है। बाप आकर देही अभिमानी बनाते हैं। इसमें ही मेहनत है। बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई को याद न करो। योगी तो दुनिया में बहुत हैं। कन्या की सगाई होती है तो फिर पति के साथ योग लग जाता है ना। पहले थोड़ेही था। पति को देखा फिर उनकी याद में रहती है। अब बाप कहते हैं- मामेकम् याद करो और कोई देहधारी को याद नहीं करना है। यह बहुत अच्छी प्रैक्टिस चाहिए। जो अच्छे2 पुरूषार्थी बच्चे हैं वह सवेरे2 उठकर देही अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करेंगे। भक्ति भी सवेरे करते हैं ना। अपने2 ईष्ट देव को याद करते हैं। हनूमान की भी कितनी पूजा करते हैं। इन बातों पर अभी तुमको हंसी आती है। बन्दर कैसे पुल बाँधेंगे। मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल चलती नहीं है। ऐसी2 बातें सुनकर मनुष्य खुश होते हैं। वाह2 करते हैं। दशहरा मनाते हैं। समझते कुछ नहीं। क्रिश्चियन लोग जब कनवर्ट करते हैं तो बहुत ग्लानी की बातें सुनाए अपने धर्म में कनवर्ट कर देते। यह बाप ही आकर समझाते हैं। तुम्हारी बुद्धि बन्दर मिसल हो गई है।

(1) प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है।
(2) [illegible]

16.3.90 -2-

अब फिर तुम देवता बनते हो। अब यह है पतित तमोप्रधान दुनिया। अभी तुम आये हो बेहद के बाप पास। मैं तो पुनर्जन्म रहित हूँ। यह शरीर इस दादा का है। मेरा कोई शरीर का नाम नहीं। मेरा नाम ही है कल्याणकारी शिव। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा कल्याणकारी आकर नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। कितना कल्याण करते हैं। नर्क का एकदम विनाश करा देते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अभी स्थापना हो रही है। यह है प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली। चलते फिरते एक दो को सावधान करना है। मनमनाभव। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। पतित पावन तो बाप हैं ना। उन्होंने भूल से भगवानुवाच के बदले कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। वास्तव में देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता है। सूक्ष्मवतन वासी को भी भगवान नहीं कहा जाता। भगवान निराकार है, उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। उनका नाम है शिव। शिव की पूजा भी बहुत होती है। शिव काशी..2 कहते रहते हैं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के नाम रख दिये हैं। कमाई के लिए अनेक मन्दिर बनाये हैं। (असली नाम है शिव। फिर सोमनाथ रखा है, सोमनाथ सोमरस पिलाते हैं। ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना खर्चा करते हैं। उनके मन्दिर बनाने पर। क्योंकि सोमरस दिया है ना। सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी। यथा राजा रानी तथा प्रजा सब सोमनाथ सोमनाथिनी हैं। तुम सोनी दुनिया में जाते हो।) वहाँ सोने की ईंटें होती हैं। नहीं तो दीवारें आदि कैसे बनें। बहुत सोना होता है। इसलिए उसको सोने की दुनिया कहा जाता है। यह है लोहे, पत्थरों की दुनिया। स्वर्ग का नाम सुनकर ही मुख पानी हो जाता है। (विष्णु के दो रूप लक्ष्मी नारायण अलग2 बनेंगे ना। तुम विष्णुपुरी के मालिक बनते हो।) अभी तुम हो रावण पुरी में। तो अब बाप कहते हैं सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। बाप भी परमधाम में रहते हैं। तुम आत्मायें भी परमधाम में रहती हो। बाप कहते हैं तुमको कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। बहुत सहज है। बाकी हाँ रावण सामने दुश्मन खड़ा है। यह विघ्न डालते हैं। ज्ञान में विघ्न नहीं पड़ते। विघ्न पड़ते हैं याद में। घड़ी2 माया याद भुला देती है। देह अभिमान में ले आती है। बाप को याद करने नहीं देती। यह युद्ध चलती है। बाप कहते हैं तुम कर्मयोगी तो हो ही। अच्छा दिन में याद नहीं कर सकते हो तो रात को याद करो। रात का अभ्यास दिन में काम आयेगा।

निरन्तर स्मृति रहे- जो बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, हम उसे याद करते हैं। बाप की याद और 84 जन्मों के चक्र की याद रहे तो अहो सौभाग्य। औरों को भी सुनाना है- बहनों और भाईयों अब कलियुग पूरा हो सतयुग आता है। बाप आये हैं सतयुग के लिए राजयोग सिखला रहे हैं। कलियुग के बाद सतयुग आना है। एक बाप के सिवाए और कोई को याद नहीं करना है। वानप्रस्थी जो होते हैं वह सन्यासियों का जाए संग करते हैं। वानप्रस्थ वहाँ वाणी की गम नहीं है। आत्मा शान्त रहती है। लीन तो हो नहीं सकती। ड्रामा से कोई भी एक्टर निकल नहीं सकता। यह भी बाप ने समझाया है एक बाप के सिवाए और कोई को याद नहीं करना है। देखते हुए भी याद न करो। यह पुरानी दुनिया तो विनाश हो जानी है, कब्रिस्तान हैं ना। मुर्दों को कभी याद किया जाता है क्या। (बाप कहते हैं यह सब मरे पड़े हैं। मैं आया हूँ पतितों को पावन बनाए ले जाता हूँ। यहाँ यह सब खत्म हो जायेंगे।) आजकल बाम्ब्स आदि जो भी बनाते हैं, बहुत तीखे2 बनाते रहते हैं। कहते हैं यहाँ बैठे जिस पर निशान छोड़ेंगे उस पर ही गिरेंगे। यह युद्ध है फिर से विनाश होना है। भगवान आते हैं नई दुनिया के लिए राजयोग सिखला रहे हैं। यह महाभारत लड़ाई है, जो शास्त्रों में गाई हुई है। बरोबर भगवान आये हैं। स्थापना और विनाश करने। चित्र भी क्लीयर है। तुम सा0 कर रहे हो- हम यह बनेंगे। यहाँ की यह पढ़ाई खत्म हो जायेगी। वहाँ तो बैरिस्टर डॉक्टर आदि की दरकार नहीं होती। तुम तो यहाँ का वर्सा ले जाते हो। हुनर भी सब यहाँ से ले जायेंगे। फर्स्टक्लास बनाने वाले होंगे। तो वहाँ भी बनायेंगे। बाजार आदि तो होगी ना। काम तो चलेगा। यहाँ से सीखा हुआ अक्ल ले जाते हैं। साइन्स से भी अच्छे हुनर सीखते हैं। वह सब वहाँ काम आयेंगे। प्रजा में जायेंगे। तुम बच्चों को तो प्रजा में नहीं आना है। तुम आये ही हो बाबा मम्मा के तख्तनशीन बनने। बाप जो श्रीमत देते हैं, उस पर चलना है। फर्स्टक्लास श्रीमत तो एक ही देते हैं कि मुझे याद करो। तुम्हारे पाप कट जाएं। अपने ऊपर ध्यान रखो। कोई का भाग्य

(5) तुम आये ही हो बाबा मम्मा के तख्तनशीन (302)

अत्याचार भी हो जाता है। कोई कारण निमित्त बन पड़ता है। कोई का पति मर जाता है तो बाबा कहते हैं यह पतियों का पति तो तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। अगर वह होता तो तुम यह ज्ञान थोड़ेही पाती। यह भी अच्छा ही हुआ ना। इसमें तो खुश होना चाहिए। विकार के लिए भी कितनी मारें खाती हैं। अच्छा वह बहुत सताते हैं तब तो नफरत आती है। कुमारियों को भी बाबा कहते हैं शादी तो बरबादी हो जायेगी। इस गटर में मत गिरो। क्या तुम बाप का नहीं मानेंगी, स्वर्ग की महारानी नहीं बनेगी। अपने साथ प्रण करना चाहिए कि हम उस दुनिया में कभी नहीं जायेंगे। उस दुनिया को याद भी नहीं करूँगी। श्मशान को कभी याद करते हैं क्या। यहाँ तो तुम कहते हो कि कहाँ यह शरीर छूटे तो हम अपने स्वर्ग में जायें। अब 84 जन्म पूरे हुए। अब हम अपने घर जाते हैं, औरों को भी यही सुनाना है। यह भी समझते हो बाबा बिगर सतयुग की राजाई कोई दे नहीं सकते। इस रथ को भी कर्मभोग तो होता है ना। बापदादा की भी आपस में कभी रूहरिहान चलती है- यह बाबा कहते हैं बाबा आशीर्वाद कर दो। खांसी के लिए कोई दवाई करो या छू मन्त्र से उड़ा दो। कहते हैं- नहीं, यह तो भोगना ही है। यह तुम्हारा रथ लेता हूँ, उसके एवज में तो देता ही हूँ, बाकी यह तो तुम्हारा हिसाब किताब है। अन्त तक कुछ न कुछ होता रहेगा। तुम्हें आशीर्वाद करें तो सब पर करनी पड़े। आज यह बच्ची यहाँ बैठी है, कल ट्रेन में एक्सीडेंट हो जाता है, मर पड़ती है, बाबा कहेंगे- ड्रामा। ऐसे थोड़ेही कह सकते कि बाबा ने पहले क्यों नहीं बताया। ऐसा कायदा नहीं है। मैं तो आता हूँ पतित से पावन बनाने। यह बतलाने थोड़ेही आया हूँ। यह हिसाब किताब तो तुमको अपना चुक्तू करना है। इसमें आशीर्वाद की बात नहीं। इसके लिए जाओ सन्यासियों के पास। बाबा तो बात ही एक बताते हैं। मुझे बुलाया ही इसलिए है कि हमको आकर नर्क से स्वर्ग में ले जाओ। गाते भी हैं पतित पावन सीताराम। परन्तु अर्थ उल्टा निकाल दिया है। फिर राम की बैठ महिमा करते रघुपति राघो राजा राम। वह पहले अपने ऊपर तो आशीर्वाद कर अपनी स्त्री को तो रावण से छुड़ाये। यह सब भक्ति मार्ग के शास्त्र हैं। बाप कहते हैं इन भक्ति मार्ग में तुमने कितने पैसे गंवाये हैं। एक गीत भी है ना- क्या कौतुक देखा.. देवियों की मूर्तियाँ बनाए पूजा कर फिर समुद्र में डुबो देते हैं। अब समझ में आता है- कितने बेअक्ल हैं। कितने पैसे बरबाद करते हैं। फिर भी यह होगा। सतयुग में तो ऐसा काम होता ही नहीं। ड्रामा को बड़ा अच्छी रीति समझना है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड की नूँध है। कल्प बाद फिर यही बात रिपीट होगी। ड्रामा को बड़ा अच्छी रीति समझना चाहिए। अच्छा कोई जास्ती नहीं याद कर सकते हैं तो बाप कहते हैं सिर्फ अलफ और बे बादशाही को याद करो। अन्दर में यही धुन लगा दो कि हम आत्मा कैसे 84 का चक्र लगाकर आई हैं। चित्र पर बैठ समझाओ, बहुत सहज है। यह है रूहानी बच्चों से रूहरिहान। बाप रूहरिहान करते ही हैं बच्चों से। और कोई से तो कर न सकें। बाप कहते हैं- अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही सब कुछ करती है। बाप याद दिलाते हैं, तुमने 84 जन्म लिये हैं। मनुष्य ही बने हैं। जैसे बाप आर्डीनेन्स निकालते हैं कि विकार में नहीं जाना है। यह भी आर्डीनेन्स निकालते हैं कि किसको रोना नहीं है। सतयुग त्रेता में कभी कोई रोते नहीं। छोटे बच्चे भी नहीं रोते। रोने की हुक्म नहीं। वह है ही हर्षित रहने की दुनिया। उसकी प्रैक्टिस सारी यहाँ करनी है। अच्छा- मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- ।1। बाप से आशीर्वाद मांगने के बजाए याद की यात्रा से अपना सब हिसाब चुक्तू करना है। पावन बनने का पुरूषार्थ करना है। इस ड्रामा को यथार्थ रीति समझना है। ।2। इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी याद नहीं करना है। कर्मयोगी बनना है। सदा हर्षित रहने का अभ्यास करना है। कभी भी रोना नहीं है।

----

(2) यह है ही हर्षित रहने की दुनिया। उसकी प्रेक्टिस सारी यहाँ करनी है।

17.3.90 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है, 84 जन्म लिए हैं, वह तुम्हारे ज्ञान को बड़ी रूचि से सुनेंगे, इशारे से समझ जायेंगे"

प्रश्न :- देवी देवता घराने के नजदीक वाली आत्मा है या दूर वाली, उसकी परख क्या होगी?
उत्तर:- जो तुम्हारे देवता घराने की आत्मायें होंगी, उन्हें ज्ञान की सब बातें सुनते ही जंच जायेंगी, वह मूँझेंगे नहीं। जितना बहुत भक्ति की होगी उतना जास्ती सुनने की कोशिश करेंगे। तो बच्चों को नब्ज देखकर सेवा करनी चाहिए।

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं यह तो बच्चे समझ गये- रूहानी बाप है निराकार, इस शरीर द्वारा बैठ समझाते हैं, हम आत्मा भी निराकार हैं, इस शरीर से सुनते हैं। तो अब दो बाप इकट्ठे हैं ना। बच्चे जानते हैं दोनो बाबा यहाँ हैं। तीसरे बाप को जानते हो परन्तु उनसे फिर भी यह अच्छा है, इनसे फिर वह अच्छा, नम्बरवार हैं ना। तो उस लौकिक से सम्बन्ध निकल बाकी इन दोनो से सम्बन्ध हो जाता है। बाप बैठ समझाते हैं, मनुष्यों को कैसे समझाना चाहिए। तुम्हारे पास मेला प्रदर्शनी में तो बहुत आते हैं। यह भी तुम जानते हो 84 जन्म कोई सब तो नहीं लेते होंगे। यह कैसे पता पड़े यह 84 जन्म लेने वाला है या 10 जन्म लेने वाला है वा 20 जन्म लेने वाला है। अब तुम बच्चे यह तो समझते हो कि जिसने बहुत भक्ति की होगी, शुरू सेलेकर तो उनको फल भी इतना ही जल्दी और अच्छा मिलेगा। थोड़ी भक्ति की होगी और देरी से की होगी तो फल भी इतना थोड़ा और देरी से मिलेगा। यह बाबा सर्विस करने वाले बच्चों के लिए समझाते हैं। बोलो- तुम भारतवासी हो तो बताओ देवी देवताओं को मानते हो? इन ल०ना० का राज्य था ना भारत में। जो 84 जन्म लेने वाला होगा, शुरू से भक्ति की होगी वह झट समझ जायेगा। बरोबर आदि सनातन देवी देवता धर्म था। रूचि से सुनने लग पड़ेंगे। कोई तो ऐसे ही देखकर और चले जाते हैं। कुछ पूछते भी नहीं जैसे कि बुद्धि में बैठता नहीं। तो उनके लिए समझाना चाहिए यह अभी तक यहाँ का नहीं है। ~~आगे चल समझ भी लेवें~~। कोई का समझाने से झट कांध हिलेगा। बरोबर इस हिसाब से तो 84 जन्म ठीक हैं। अगर कहते हैं हम कैसे समझें कि पूरे 84 जन्म लिए हैं, अच्छा 84 नहीं तो 82 देवता धर्म में तो आयें होंगे। देखो इतना बुद्धि में जंचता नहीं है तो समझो यह 84 जन्म लेने वाला नहीं है। दूर वाले कम सुनेंगे। जितना बहुत भक्ति की हुई होगी वह जास्ती सुनने की कोशिश करेंगे। झट खड़ा हो जायेगा। कम समझता है तो समझो यह देरी से आने वाला है। भक्ति भी देरी से की होगी। बहुत भक्ति करने वाला इशारे से समझ जायेगा। ड्रामा रिपीट तो होता है ना। सारा भक्ति पर मदार है। इस (बाबा) ने सबसे नम्बरवन भक्ति की है ना। कम भक्ति की होगी तो फल भी कम मिलेगा। यह सब समझने की बातें हैं। मोटी बुद्धि वाले धारणा कर नहीं सकेंगे। यह मेले प्रदर्शनियां तो होते रहेंगे। सब भाषाओं में निकलेंगी। सारी दुनिया को समझाना है ना। तुम हो सच्चे 2 पैगम्बर और मैसेन्जर। वह धर्म स्थापक तो कुछ भी नहीं करते। न वह गुरू हैं। गुरू कहते हैं परन्तु वह कोई सद्गति दाता थोड़ेही हैं। वह जब आते हैं, उनकी संस्था ही नहीं तो सद्गति किसकी करेंगे। गुरू वह जो सद्गति दे। दुख की दुनिया से शान्तिधाम ले जाये। क्राइस्ट आदि गुरू नहीं वह सिर्फ धर्म स्थापक हैं। उन्हों का और कोई पोजीशन नहीं है। पोजीशन तो उन्हों का है, जो पहले2 सतोप्रधान में फिर सतो रजो तमो में आते हैं। वह तो सिर्फ अपना धर्म स्थापन कर पुनर्जन्म लेते रहेंगे। जब फिर सबकी तमोप्रधान अवस्था होती है तो बाप आकर सबको पवित्र बनाए ले जाते हैं। पावन बना तो फिर पतित दुनिया में नहीं रह सकते। पवित्र आत्मायें चली जायेंगी- मुक्ति में। फिर जीवनमुक्ति में आयेंगी। कहते भी हैं वह लिब्रेटर है, गाइड है। परन्तु इसका भी अर्थ नहीं समझते। अर्थ समझ जाएं तो उनको जान जाएं। सतयुग में भक्ति मार्ग के अक्षर भी बन्द हो जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। जो सब अपना2 पार्ट बजाते रहते हैं। सद्गति को एक भी पा न सके। अभी तुमको यह ज्ञान मिल रहा है। बाप भी कहते हैं मैं कल्प2 कल्प के संगमयुगे आता हूँ। इनको कहा जाता है कल्याणकारी संगमयुग। और कोई युग कल्याणकारी नहीं है। सतयुग और त्रेता के संगम का कोई महत्त्व नहीं। सूर्यवंशी पास्ट हुए फिर चन्द्रवंशी राज्य चलता है। फिर चन्द्रवंशी से वैश्य वंशी बनेंगे तो चन्द्रवंशी पास्ट हो गये। उनके बाद क्या बनें, वह बता

a) ब्रह्मा बाबा १८ जनवरी १९६९ में हार्ट फेल होकर के- शरीर छोड़े थे। (६५)

एक अनोखा अनुभव

Auto-biography of Dada Vishwa Ratan

चैप्टर 6

मातेश्वरी जी का देह-त्याग

24 जून 1965 में प्यारी मम्मा ने अपनी पुरानी देह का त्याग किया और उसके बाद 12 फरवरी 1968 को बम्बई मे भाऊ विश्वकिशोर ने देह का त्याग किया और उनका अन्तिम संस्कार वहाँ बम्बई में हुआ।

बाबा अव्यक्त हुए

18 जनवरी 1969 को प्यारे ब्रह्मा बाबा सवेरे क्लास में नहीं आये। वैसे तो रोज़ सवेरे क्लास में आकर स्वयं ही मुरली सुनाते थे लेकिन उस दिन थोड़ी तबियत ठीक न होने के कारण क्लास में नहीं आये। रोज़ शाम को भी रात्रि क्लास में आते थे। उस दिन दादी कुमारका (दादी प्रकाशमणी) भी मधुबन में थी। वैसे दादी जी गॉमदेवी बम्बई मे रहती थी। लेकिन कुछ दिन पहले बाबा से मिलने के लिए आई थी। बड़ी दीदी (दीदी मनमोहिनी जी) कुछ दिन पहले कानपुर, इलाहाबाद आदि की तरफ सर्विस पर गई हुई थी। दादी प्रकाशमणी को 16-17 जनवरी को ही बम्बई जाना था परन्तु बाबा ने उनको रोका और कहा 2-4 दिन ठहर कर जाना। 18 जनवरी को जैसे ही बाबा तैयार होकर रात्रि क्लास में जाने लगे, तो दादी जी ने बाबा को कहा कि बाबा, आज आपकी तबियत ठीक नहीं है इसलिए आज आप आराम करो, हम क्लास करा लेंगे। बाबा ने कहा ''नहीं बच्ची, मैं सवेरे भी क्लास में नहीं गया और अगर अभी भी नहीं जाऊंगा तो बच्चों को बहुत चिन्ता होगी और सोचते रहेंगे बाबा को क्या हुआ है! इसलिए मैं क्लास में चलता हूँ।'' बाबा ने आधा घण्टा बहुत अच्छी मुरली चलाई और फिर अन्त में याद-प्यार नमस्ते कहने के बाद कहा ''अच्छा अब छुट्टी।'' ये ''छुट्टी'' पहले बाबा कभी नहीं कहते थे। उस दिन ये ''छुट्टी'' अक्षर बोल कर क्लास के बाहर आया। उस समय लगभग रात्रि के नौ बजे थे। मैं भी

[illegible] ने मुझे देखकर कहा "दन्नू, डाक्टर [illegible] और मुझे चेक कर के जाये" मैंने उसी समय जमुनाप्रसाद [illegible] (उन दिनो हमारे पास एक भी कार नहीं थी) [illegible] डाक्टर को यहाँ ले आओ, [illegible] जमुनाप्रसाद भाई उसी समय साइकिल पर गया [illegible] के लिए कहा। उन दिनों में डाक्टर अरोड़ा सिविल [illegible] डाक्टर ने कहा हाँ, बस सिर्फ चाय पीकर [illegible] अपने पलग पर लेट गया। बाबा के कमरे में [illegible] और अन्य थोड़ी बहनें और मैं खड़े थे। मैं बाबा को [illegible] देखा कि बाबा अपना एक हाथ हार्ट पर रखकर कभी [illegible] और कभी बैठ जाता था। मैंने ऐसे अनुभव किया कि बाबा [illegible] और रेस्टलेस फील कर रहा है। मैं जल्दी-जल्दी कमरे से [illegible] कि जमुनाप्रसाद को फोन करूँ कि जल्दी डाक्टर को ले [illegible] मैंने हॉस्पिटल में फोन किया परन्तु वहाँ किसी ने फोन नहीं उठाया। [illegible] डाक्टर के घर में फोन नहीं था। फिर मैंने सरदार नेवन्द सिंह [illegible] दुकान पर फोन किया, जो हास्पिटल के सामने ही थी। वहाँ सरदार जी [illegible] दयाल सिह बैठा था, उसको कहा कि आप जाकर जल्दी ही [illegible] भेजो, बाबा को अधिक तकलीफ है। वह तुरन्त ही डाक्टर के [illegible]। उस समय डाक्टर चाय पी चुके थे और तुरन्त अपने स्कूटर पर [illegible]। मै इसके बीच ही कोरामिन की इन्जेक्शन निकाल कर रखी [illegible] भी उबाल कर रखी थी। मैंने सोचा कि शायद डाक्टर को इस [illegible] की आवश्यकता हो। फिर आकर बाहर गेट पर खड़ा था, उसी [illegible] डाक्टर भी आ गया। मैंने डाक्टर को कहा आप जल्दी ही अन्दर [illegible] बाबा को बहुत दर्द हो रहा है। डाक्टर अन्दर आया, कमरे में [illegible] आते ही बाबा की तकलीफ को देखकर डाक्टर डर गया। डाक्टर

सवेरे भी बाबा को चेक करके गया था, उस समय ऐसा कुछ नहीं था। लेकिन इतने में बाबा की ऐसी हालत देखकर हैरान हो गया। मै भी डाक्टर के साथ ही था तो क्या देखा कि बाबा का बाया हाथ अपने हार्ट पर है और दायां हाथ दादी प्रकाशमणी के हाथों में है, आँखें बन्द हैं। दादी किशनी (दादी प्रकाशमणि की बहन, जो पटना मे रहती है) बाबा के पलंग पर पीछे से बैठकर बाबा को पकड़कर बैठी है क्योंकि लेटे हुए बाबा को अधिक दर्द होता था। ऐसा दृश्य देखकर डाक्टर ने तुरन्त मेरे से कोरामिन इन्जेक्शन लेकर बाबा को इन्जेक्शन लगाई। लेकिन इतने में बाबा तो पहले से ही देह का त्याग कर ऊपर सूक्ष्म वतन में चला गया। फिर तो बाबा को पलंग पर लिटा दिया। डाक्टर को भी बड़ा दुख हो रहा था कि मैंने आने में देरी की। अगर थोड़ा जल्दी आ जाता तो ऐसा नहीं होता। तो "सॉरी" बोल कर *चला गया। डाक्टर अरोड़ा के पहले इस हॉस्पिटल में लेडी डाक्टर थी,* जिसने रिटायर होकर अपनी प्राइवेट हास्पिटल खोली थी। फिर उस लेडी डाक्टर को बुलाया गया, जिससे वह भी आकर चेक करे कि सचमुच बाबा ने देह का त्याग किया है या स्वांस कहां रुका हुआ है। वह भी आई और उसने भी कन्फर्म किया कि बाबा ने शरीर छोड़ दिया है।

फिर तो सारे बंगले में ये सूचना फैल गई और सभी के चेहरे और दिलों में दुख की लहर आने लगी। बाबा नौ बजे क्लास के बाहर आये और साढ़े नौ बजे शरीर छोड़ दिया। आधा घण्टे में ही बाबा जैसे आँख मिचौली का खेल करके सभी बच्चों से न्यारा होकर वतन में चले गये। सभी कहते थे कि बाबा तो बिल्कुल ठीक था, मुरली भी अच्छी चलाई, फिर इतने में क्या हो गया? ऐसे किसी के ख्याल में भी नहीं था कि बाबा ऐसे ही इतने में चले जायेंगे। लेकिन बाबा तो डाक्टर के आने तक भी नहीं रुका। पहले ही न्यारा हो गया।

फिर तो दादी प्रकाशमणि जी सभी सेन्टर्स पर ये सूचना [illegible]

उनसे प्यार गया तो खेल खलास, बाप से वर्सा कैसे पायेंगे। तुम्हारी लड़ाई पुराने दुश्मन से है। कोई को मालूम नहीं है कि रावण से भी कोई युद्ध होती है। कहते हैं सच की नांव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं! तो हिलती कितनी है। दूसरे सतसंगों में तो हिलने की बात ही नहीं है। यहाँ तो माया से युद्ध है। जब तक बाप को नहीं समझा है तब तक भल लिखकर दें, परन्तु तोता कण्ठी वाला नहीं बना है। जंगली तोता आया और गया। अल्फ को समझना है। ऐसे प्रजा तो ढेर है, बाकी राजाई के लिए कोई खड़ा नहीं होता है। बत्ती पर फिदा हो जाए सो बड़ा मुश्किल होता है।

अच्छा - मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- आपस में बहुत प्यार से रहना है, मिलकर राय निकालनी है कि किस युक्ति से हर एक तक बाप का सन्देश पहुंचायें।

२- यह विनाश का समय है इसलिए एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। योग से आत्मा को पावन बनाना है।

(प्यारे साकार बापदादा ने अव्यक्त होने के पूरा एक मास पहले, रात्रि क्लास में शरीर छोड़ने की सहज विधि और कर्मातीत स्थिति की निशानियां सुनाई हैं, वह 17 दिसम्बर 1968 का रात्रि क्लास भेज रहे हैं)

तुम बच्चों को बाप का डायरेक्शन मिला हुआ है कि बच्चे बाप को याद करो। बच्चे कहते हैं बाबा फुर्सत नहीं मिलती है। अब फुर्सत कहाँ चली जाती है? जरूर माया तुम्हारा समय ले लेती है। माया भी जबरदस्त तीखी है, जो तुमको बाप को याद करने की फुर्सत नहीं देती, तब तो कहते हो बाबा सारे दिन में आधा घण्टा, 20 मिनट याद में रहे, कोई मुश्किल ही सारे दिन में दो घण्टा बाप को याद करते होंगे। जो समझते हैं हम 2 घण्टा याद करते हैं, वह हाथ उठाओ। वह स्थूल याद, पुरानी याद तो चलती आती है। यह तो है इनकारपोरियल, इनको अपना ऑख, कान तो है नहीं। बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। अपने को आत्मा समझो। तो बाबा पूछ रहे हैं कि कितना घण्टा याद में रहते हो? बच्चे खेलने जाते हैं तो टीचर को याद करते हैं। घर में पढ़ते हैं तो भी टीचर याद रहता है। तो वह है स्थूल याद। इसमें है थोड़ी डिफीकल्टी, तो बाबा पूछते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को 2 घण्टा जो याद कर सकते हैं, वह हाथ उठाओ। लज्जा नहीं करो, एक्यूरेट बताओ।

तुम यहाँ बैठते हो, बाबा मुरली चलाते हैं तो बुद्धि दूसरे तरफ चली जाती है ना! इतना बुद्धि में धारण भी नहीं होता है। जैसे यहाँ सुबह में एक घण्टा बाबा समझाते हैं, तो क्या वह एक घण्टा बाबा को याद करते हो या बुद्धि बाहर में चली जाती है? बरोबर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बुद्धि कहाँ न कहाँ चली जाती है। सारा नहीं सुनते हैं। अगर सारा बैठ करके सुनें और नोट करते रहें तो बाबा कहेगा हाँ, इनका योग ठीक है। तो सुनते समय अटेन्शन देना है और प्वाइन्ट्स पूरा लिखना है। अगर लिंक टूटेगी तो प्वाइन्ट भूल जायेगी।

बाप समझाते हैं बच्चे, हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा मौत है। इसमें तेरा मेरा फेरा कुछ भी नहीं है। बैठे-बैठे यह गिरा, बेहोश हुआ, खलास। बस। फिर होश में आये ही नहीं। यह बहुत

अच्छा मौत है। बाकी मनुष्य तो रोते पीटते हैं और तुम तो खुश होंगे अरे वाह! इनका मौत बड़ा सहज हुआ, इनको कोई दु:ख नहीं हुआ। अगर मौत हो तो ऐसा हो, नहीं तो दवा, नर्स वह वह बहुत होते हैं ना। इसलिए जो बैठे-बैठे अपनी इस पुरानी जुत्ती को छोड़ दे, कर्मातीत अवस्था हो, ऐसे ही शरीर छोड़े, तो वो सबसे अच्छा है। तुम आगे चल करके देखेंगे, अनायास बाम्बस छूटेंगे और सब बैठे-बैठे चले जायेंगे। चेहरा भी हर्षित होगा। जैसे कभी-कभी अच्छे मौत होते हैं तो देखने वाले कहते हैं कि यह तो जैसे जागता है, यह तो हर्षित है, ऐसे तो कोई कह नहीं सकेंगे कि यह मर गया है। आत्मा हर्षित होके जाती है ना, तो आत्मा में अगर हर्षितपना होगा तो चेहरे पर बाहर से दिखाई तो पड़ेगा ना! आत्मा कोई खत्म तो नहीं होती हैं, आत्मा शरीर छोड़ती है। तो बड़ी खुशी से यह शरीर हंसते हुए छोड़ देगी, इसको कहा जाता है – कर्मातीत अवस्था। वही इतना ऊंच गाये जाते हैं। तुम बच्चों को ऐसे ही जाना है, शरीर की कोई परवाह ही नहीं है, और दूसरी कोई चीज याद नहीं आवे, इसको कहेंगे सबसे मीठा, ओपेहों शरीर छोड़ना। इसलिए सर्प का मिसाल भी देते हैं। सतयुग में ऐसे होता है जो खुशी से शरीर छोड़ते हैं। तो प्रैक्टिस यहाँ से होगी, पीछे वह प्रैक्टिस चलती रहेगी।

तुम बच्चे बाप को कितना प्यार से याद करते हो। अंग्रेजी में कहा जाता है मोस्ट बिलवेड, परम प्रिय, बहुत मीठा। लोगों को तो परमप्रिय, मोस्ट बिलवेड कह नहीं सकते। बाप कहते हैं बच्चे मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, गुरु भी हूँ। तुम कभी टीचर को भूलो तो बाप को याद कर सकते हो। बाबा गाइड है, गाइड को पण्डा भी कहा जाता है। वह दु:ख से लिबरेट करने वाला, शान्तिधाम में ले जाने वाला है, उसके पीछे है सुखधाम। तो तुमको यह ज्ञान घास मिलता है फिर इसको विचार सागर मंथन करते रहो। जैसे गाय का मुख चलता रहता है। तुम्हारा मुख तो चलने की दरकार नहीं है, बाकी अन्दर में सबकुछ याद करना है। जैसे तुम हो, ऐसे हम हैं। हमको तो और भी कम घण्टे मिलते हैं, क्योंकि हमारा बुद्धियोग बाहर में बहुत जाता है, कभी कोई की चिट्ठी आई, फलाने की खिटपिट है, यह है, वह है.. तो सारा दिन उस तरफ बुद्धि जाती है। परन्तु शायद बच्चों से जास्ती बाबा को सहज है क्योंकि बगल में (साथ में) रहता है। जब बाबा भोजन खाने के लिए बैठते हैं तो सोचते हैं, अच्छा मैं बाबा को याद करता हूँ, 2-3 मिनट याद रहती है फिर भूल जाता हूँ। याद हवा मुआफिक उड़ जाती है, बच्चे ट्राय करके देखो। सहज होते भी याद में टाइम तो लगता है ना। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार और गुडनाइट। मीठे मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप की नमस्ते।

वरदान:- अपने आक्यूपेशन की स्मृति से सेवा का फल और बल प्राप्त करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

कोई भी काम करते अपना आक्यूपेशन कभी नहीं भूलो। जैसे पाण्डवों ने गुप्त वेष में नौकरी की लेकिन नशा विजय का था। ऐसे आप भल गवर्मेन्ट सर्वेन्ट हो, नौकरी करते हो लेकिन नशा रहे मैं विश्व कल्याणकारी हूँ तो इस स्मृति से स्वत: समर्थ रहेंगे और सदा सेवा भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। गाया हुआ है भावना का फल मिलता है तो आपकी सेवा-भावना अनेक आत्माओं को शान्ति, शक्ति का फल देगी।

स्लोगन:-

गॉडली स्टूडेण्ट स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो माया आ नहीं सकती।

(६६)

66
68

(a) 1936 में दादा लेखराज की उम्र 50 साल था।

ज्ञानामृत पुस्तिका - 1986

ज्ञानामृत फरवरी 1986 (ज्ञा) 2 फरवरी - 86

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय (१९३६--८६)

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय वर्ष १९८६-८७ को 'स्वर्णिम जयन्ती वर्ष' के रूप में मना रहा है। इस शुभ अवसर पर इस महान् संस्था की उपलब्धियों और साहसपूर्ण कार्यों का अवलोकन और लेखा-जोखा करना यथार्थ होगा। साथ ही इसके प्रगति के मार्ग में पिछले ५० वर्षों में जो बाधाएँ आई हैं तथा जिनका यह संस्था सफलतापूर्वक सामना करते हुए निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ती रही है उन पर भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। यह एक ऐसा अवसर है जबकि यह संस्था जन-जन की आध्यात्मिक जागृति के लिये तथा विश्व में स्थाई सुख-शान्ति की स्थापना के कार्य में तीव्रगति लाने के लिये अनेकानेक कार्यक्रम बनायेगी और भविष्य में भी इस संघर्ष-ग्रस्त विश्व में पवित्रता, शान्ति, प्रेम, न्याय, एकता आदि मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिये उत्साह-पूर्वक कार्य करती रहेगी।

इसकी प्रगति के ६ चरण

इन ५० वर्षों में इस संस्था ने जो महान् प्रगति की है उन्हें ५ प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है।

प्रथम चरण एक पारिवारिक (घरेलू) आध्यात्मिक सत्संग (१९३६--३७)

यह संस्था आरम्भ में एक छोटे से सत्संग के रूप में शुरू हुई जो कि दादा लेखराज के घर पर होता था। दादा हीरे-जवाहरात के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। वे अपनी ईमानदारी और श्रेष्ठ व्यवहार के कारण सम्मानपूर्वक अनेक राज-घरानों में आते-जाते रहते थे। विशेष तौर से उनका नेपाल और उदयपुर के राजघरानों से घनिष्ठ सम्बन्ध था। दादा श्री नारायण के भी परम भक्त थे। बचपन से ही वे उदारचित्त और महादानी थे। जैसे-जैसे वे बड़े होते गये उनकी रुचि श्रीमद्भगवत गीता और अन्य धार्मिक ग्रंथों में बढ़ती गई। वे अपने व्यवहारिक जीवन में धार्मिक शिक्षाओं को धारण करते हुए सात्विक भोजन का सेवन करते थे तथा आध्यात्मिक उन्नति पर विशेष ध्यान रखते थे। इन सभी नियमों का पालन करने से वे अन्तर्मुखी होते गये और स्वयं का आत्म-निरीक्षण करने लगे।

(आखिरकार वह समय भी आ गया जब उन्हें सत्यता का बोध हुआ। उन्हें सन् १९३६ में, जबकि उनकी ५० वर्ष की आयु थी, अनेक दिव्य साक्षात्कार हुए जिनमें उन्होंने देखा कि इस शताब्दी के अन्त तक स्वर्णिम युग की स्थापना होगी तथा इससे पहले इस तमोप्रधान कलियुगी सृष्टि का 'महाविनाश' होगा।) (a) इससे वर्तमान समाज का समस्त ढाँचा ध्वस्त हो जाएगा जो कि अब पूरी तरीके से खोखला भ्रष्टाचारी बन गया है और इसकी जड़ों में दीमक लग चुकी है और अब इसका खड़ा रहना असम्भव हो गया है। दादा ने परमात्मा की 'दिव्य ज्योति' भी देखी और अन्तर्मन से एक आवाज सुनी कि जिस दिव्य ज्योति का साक्षात्कार हुआ है वह आनन्द के सागर 'ज्योति बिन्दु परमात्मा शिव हैं।' उन्हें अन्य भी अनेक साक्षात्कार हुए। वास्तव में उनके जीवन में मोड़ लाने वाली यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना थी। इनसे दादा के जीवन में महान् आध्यात्मिक परिवर्तन आया और उनके सम्पर्क या संबंध में आने वाले व्यक्तियों पर भी बहुत प्रभाव पड़ा क्योंकि उन्हें दादा के चेहरे पर तेज, आँखों में चमक और मस्तक पर पवित्रता का दिव्य प्रभा-मण्डल स्पष्ट नजर आता था।

← (६६)

ज्ञानामृत पुस्तिका – 1992
पृ - 5

'ब्रह्मा' – मानवता की मुक्ति के लिए नियुक्त एक दिव्य पुरुष

| (मूल लेख अंग्रेजी में) |

– माननीय जस्टिस वी.आर. कृष्णा अय्यर,
सेवानिवृत्त न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय, दिल्ली।

इस जिन्दगी की दुनिया में एक असाधारण आत्मा ने मानव शरीर में जन्म लिया। धीरे-धीरे उनका उज्ज्वल व्यक्तित्व [illegible] लगा, उनकी गहरी सूक्ष्म दृष्टि एवं उनका आकृति [illegible] को आकर्षित करने लगी। हीरे के व्यापार से सम्पत्ति की दुनिया में उन्होंने अपने कदम आगे बढ़ाये। सन् 1876 में सिन्ध में लेखराज के नाम से इस कुलीन व्यक्ति ने जन्म लिया। व्यापार में अपनी कुशलता से वे लखपति बन गये। अचानक ही उनमें एक दिव्य परिवर्तन आया और उन्होंने सभी ऐश्वर्यों का त्याग कर दिया। उनके व्यक्तित्व में ज्ञान, [illegible] व साक्षात्कार की दिव्य विधियों द्वारा साधारणता से ऊपर उठने का एवं दिव्य अवतरण का एक अनोखा संगम हुआ जिसने आन्तरिक अंधकार को दूर कर आत्म जागृति की ज्योति जगाई तथा स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की श्रेष्ठ विधि अपनाकर मनुष्यों को इस दुनिया के दुःख-दर्द से मुक्ति दिलाकर कुलीनता, प्रतिष्ठा एवं पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कराया और माताओं-बहनों के मधुर, कोमल स्वभाव एवं आन्तरिक शक्ति को पवित्र बनाकर उन्हें ईश्वरीय कार्य के लिए निमित्त बनाया। हंस समान मीठी और सफेद वस्त्रधारिणी इन बहनों ने सादे जीवन का मिसाल सभी के सामने रखा तथा योग और तपस्या के सत्य सिद्धान्त [illegible] को सिखाए। उनका क्रांतिकारी लक्ष्य था दुनिया को स्वर्ग बनाने का, जिसके लिए परमात्म-शक्ति ने दादा लेखराज को 'प्रजापिता ब्रह्मा' से नामकरण किया। उन्होंने इस [illegible] सेवा के लिए हीरों के धन्धे को छोड़ कर [illegible] में छिपे हुए सच्चे हीरों की खोज में अपना जीवन लगा दिया। जैसे [illegible] एक साधारण मक्खी के पंख मधु में फँस जाने से [illegible] निकल नहीं सकते हैं, उसकी भेंट में मधुमक्खी, मधु को इकट्ठा करके वापस अपने घर की ओर उड़ती है, जहाँ [illegible] एक [illegible] है। इसी प्रकार बाबा ने शिक्षा दी कि अपने आपको जानो, अपनी दिव्यता को पहचानो और अपनी आन्तरिक माया को फलीभूत करने के लिए इस बाह्य दुनिया के फुसलाने वाले वैभवों एवं पद [illegible] का त्याग करो। जिससे सुख-शान्ति प्राप्त [illegible]।

प्रजापिता ब्रह्मा में दिव्य अवतरण की उपस्थिति थी। उन्होंने सर्व धर्म एवं आध्यात्मिक विद्याओं से परे राजयोग की श्रेष्ठ विधि द्वारा बुरे व्यक्तियों को अच्छे में परिवर्तन किया। भक्तों की श्रद्धा को ठेस नहीं पहुँचाया, लेकिन उन्होंने सर्व धर्म पिताओं के महान शिक्षाओं के सार को अपनाते हुए आत्माओं में नयी जागृति लाई [illegible] जबकि फैशन से भरपूर जीवन एवं भोग के नशा आराम [illegible] ने, उपयोग [illegible] देह अभिमान और तामसिक आदतों ने प्रत्येक स्त्री, पुरुष और [illegible] के जीवन को नष्ट कर दिया था। तब ऐसे समय पर उनका पहला कर्तव्य था मानव को देह अभिमान एवं तामसिक आदतों से छुड़ाना तथा मांसाहार या नशीले पदार्थों से बचाना। मनुष्य की स्मृति को दिव्य जीवन के प्रभावशाली स्तर तक उठाना, देह अभिमान से परिवर्तन कर आत्म जागृति लाना जो कि पापों से मुक्त होने का मार्ग है जिसके द्वारा ही मानव-मात्र आन्तरिक आत्मा के सत्य स्वरूप को प्राप्त कर सकते हैं। दादा लेखराज स्वयं सारी मानवता के दिलों का [illegible] बन गये और चाकू के बजाए ज्ञान से [illegible] दिव्यता को दिल में जागृत कर दिया। ऐसे महापुरुष जिन्होंने आध्यात्मिक [illegible] एवं [illegible] विधि को अपनाना, को महान क्रांतिकारी भी कह सकते हैं। वे सच्चे आध्यात्मिक [illegible] में, सारे वैभवों का त्याग कर छोटी-सी शुरुआत से [illegible] में उन्होंने अपना [illegible] स्थापन किया। अपने अनंत विश्वास से, शान्ति की शक्ति से एवं अपनी साकार उपस्थिति से सभी की पालना की तथा घृणा को, विपत्तियों को एवं विनाशक ताकतों को पराजय किया।

30L(a)

Mr. सेवाकरम के बारे में

एक में तीन

ज्ञानामृत

"थ्री-इन-वन" (Three-in-one)

२८ अंक
6 जनवरी 91

☐ ब्र.कु. निर्मल शान्ता, कलकत्ता

इस जगत् में एक ही माध्यम में लौकिक पिता (दादा लेखराज), अलौकिक पिता (ब्रह्मा बाबा) और पारलौकिक पिता (निराकार परमात्मा शिव) को पाने का परम सौभाग्य दादी निर्मल शान्ता जी को मिला है। आपको अति समीपता से भगवान की लीलाएं भी साकार ब्रह्मा द्वारा देखने को मिलीं। आपको ब्रह्मा बाप से रूप और अनेक दिव्य गुण विरासत में मिले हैं जिससे आप एकदम ब्रह्मा बाबा की फोटोस्टेट कॉपी लगती हैं। दादी जी के व्यक्तित्व में एक अवर्णनीय मनमोहकता और व्यवहार में विशेष मधुरता और मृदुता है। आपका हृदय एकदम निर्मल और शान्त है। आप वर्तमान समय इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के जो पूर्व भारत में सेवाकेंद्र हैं, उनका संचालन करती हैं। तो दादी जी के दिव्य अनुभव पाठकों के लाभार्थ उन्हीं के भावों में यहां प्रस्तुत हैं—

सम्पादक

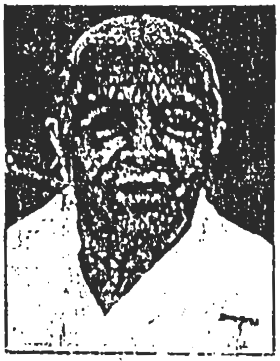

मेरा लौकिक जन्म सन् १९१७ में सिंध के कृपलानी कुल में दादा [redacted] लेखराज जी के यहां हुआ था। मेरे लौकिक पिता एक प्रसिद्ध जौहरी थे, उन्हें हीरे-जवाहरों की अचूक परख थी। उनका भक्ति-भाव इतना परिपक्व था कि व्यापार या घर की कैसी भी परिस्थिति हो, वे एक दिन भी भक्ति और पाठ के नित्य-नियम से नहीं चूकते थे। पिताजी की एक बड़ी बहन थी, उसे कोई बच्चा नहीं था। जन्मते ही उसने मुझे गोद लेकर पालना की। बुआ के पति का तथा बाबा (दादा लेखराज) का जवाहरों का बिज़नैस कलकत्ता में था। जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो पता चला कि बाबा मेरे बाबा हैं और यशोदा उनकी धर्मपत्नी मेरी मां है। मैं दोनों के घर में आना-जाना करती थी। इस तरह मुझे दो माता-पिता थे। जब मैं बड़ी हुई तो बाबा के पास रहने लगी थी।

(C) (b)

बाबा शुरू से ही सतोगुणी वृत्ति के थे। वे घूमने जाते समय मुझे साथ ले जाते थे। बाबा कहते थे कि कन्या सौ ब्राह्मण से भी उत्तम होती है, पवित्र होती है। इसलिए बिज़नैस वाले भी उनको छुआ के व्यापार करते हैं ताकि सफलता मिले।

(C)

बाबा ने मुझे निर्मोही बनाया—बाबा अपनी ही सूझ से ज़ेवरों के नए-नए डिज़ाइन बनाते थे। वे इस कार्य में किसी की नकल न करते थे। बाबा मुझे फर्स्ट क्लास चूड़ी, कंगन, कुंडल, नैकलेस बनाकर पहनाते थे और व्यापारियों के पास जाते समय मुझे साथ ले जाते थे। ग्राहकों को सैंपल दिखाते थे तो वे मुझे पहनी हुई ज्वैलरी देखकर बाबा को कहते थे जैसे आपकी बच्ची ने पहनी है ऐसे ही हमें बनाकर दीजिए। मैं घर में आने के बाद सोते समय ज्वैलरी उतारकर सोती थी तो बाबा उसे उठाकर बेच देते थे।

एक बार बाबा ने बहुत अच्छा ट्यून वाला बकल बनाकर मुझे पहनाया था। तब लंदन की रानी एलिज़ाबेथ बाबा के पास ज्वैलरी खरीदने आई थी। बाबा ने उसे विभिन्न प्रकार के सैंपल दिखाए। अचानक उसकी नज़र मेरे पहने हुए बकल पर गई। तो कहा मुझे आपकी बेबी ने जैसा बकल पहना हुआ है, ऐसा ही चाहिए। बाबा ने कहा ठीक है बनाकर देंगे। रात को सोते समय लेकर अपने पास बकल रख दिया, बाद में रानी को दिया। तीन दिन के बाद बाबा को मैंने जिद्द से कहा कि मुझे वही बाजे वाला बकल चाहिए। तो बाबा ने मैया को बुलाया और कहा कि बच्ची को आज, कल की बासी पूरी खिलाना। मैंने चौंककर कहा—नहीं, मैं बासी पूरी नहीं खाऊंगी। तो बड़े प्यार से कहा कि बच्ची अगर बासी पूरी नहीं खाएगी तो कल के पुराने मॉडल का बकल कैसे पहनेगी? वो तो पुराने फैशन का हो गया। हम भोले-भाले बच्चे बाबा की मान लेते थे और बाबा का व्यापार चलता था। बाबा ने हमें कभी भी डांटा नहीं या मारा नहीं, लेकिन युक्ति से समझाकर खुश रखा।

(C)

बड़ी धूमधाम से मेरी शादी की—बाबा ने मेरा विवाह बहुत ही धूमधाम से सिंध के मुखिया के घर कराया। मेरे ससुराल में सांसारिक सुखों की कोई कमी नहीं थी। मैं उन्हीं सुखों में मस्त रहती थी। मैं वहां चार-पांच वर्ष रही। मैंने एक बेबी को जन्म दिया। बाबा तब कराची में गए थे, बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता हुई थी। मैंने बाबा से मिलने जाना

(d)

"मुझे सच्चा साथी मिल गया"

☐ बी.के. वेदान्ती, अफ्रीका

इस साकार दुनिया में गीता ज्ञान दाता निराकार परमात्मा शिव से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुनने का परम सौभाग्य वेदान्ती बहन जी को प्राप्त हुआ है । आप करुणा तथा दया की साक्षात् मूर्ति हैं । आपके खिले हुए चेहरे से, नयनों से प्यार छलकता रहता है । आपका त्यागी और योगी जीवन प्रेरणास्पद रहा है । आपने हज़ारों मनुष्यात्माओं का प्रभु से मिलन कराकर उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाया है । वर्तमान समय आप ईश्वरीय विश्वविद्यालय के अफ्रीका खण्ड में स्थित शाखाओं का संचालन करती हैं । इस प्रकार सर्वोत्तम ईश्वरीय सेवा व तपस्या में रत वेदान्ती बहन जी के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं—

—सम्पादक

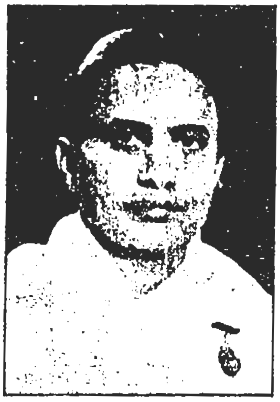

मेरा जन्म सन् १९४५ में गुजरात के एक सम्पन्न ब्राह्मण-परिवार में हुआ । माता-पिता धार्मिक वृत्ति के होने के कारण, मेरी बचपन से ही रुचि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने, सत्संग करने तथा मंदिरों में जाने और साधु-महात्माओं की संगत करने में अधिक थी । अनन्य भक्तों की जीवन-गाथा पढ़ने पर मन में तीव्र लालसा रहती थी कि मैं भी प्रभु-मिलन का अनुभव करूं और उनका साक्षात्कार करूं । उसके लिए मैं देवी-देवताओं की पूजा करना, ईश्वर-प्राप्ति के लिए आवश्यक समझती थी । सदा मन में प्रभु-मिलन की अभिलाषा बनी रहती थी और उसे पाने के लिए कठिन से कठिन त्याग-तपस्या करने को तैयार थी ।

बस एक ही धुन थी । मुझे संसार की बातों में थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं थी । स्कूल की पढ़ाई शुरू की । एम.ए. में मैंने फिलॉसफी (Philosophy) का विषय इसी लक्ष्य से लिया कि मुझे कुछ सत्य मिले । लेकिन आशा निराशा में ही बदलती गई । सदा एक ही धुन रहती थी कि एक बार मुझे भगवान के दर्शन हों । इसी चिंतन से मैं बीमार पड़ी । मुझे अस्पताल में दाखिल किया गया । डॉक्टर भी मेरी बीमारी परख न सके क्योंकि मेरी बीमारी का कारण था भगवान को पाने की चिंता । बीमारी से थककर वापस घर लौटी । घर में भी बिस्तर पर लेटे-लेटे भगवान को उलहने देती रही कि हे भगवान, आखिर तू है कहां? अब नहीं मिलोगे तो मैं मर जाऊंगी । कुछेक मास तक इस स्थिति में तड़पती रही ।

साक्षात्कार से दिव्य जन्म—एक दिन मैंने अपनी छोटी बहन चंद्रिका से कहा कि अब मैं अपने जीवन से थक चुकी हूं । वो स्वयं भगवान की खोज में थी । हम दोनों ने सवेरे ३ बजे उठकर भगवान की आराधना शुरू की । अचानक एक दिन वह ध्यान (Trans) में चली गई और ध्यान में एक लाइट और एक अपरिचित बूढ़े बाबा को देखा । उतने में एक आवाज़ आई कि अब तुम्हें भगवान शीघ्र मिलेगा । जब वह ध्यान से वापस आई तो उसने मुझे धीरज दिया कि लगता है अब शीघ्र ही हमें भगवान दर्शन देंगे । फिर हम उस बूढ़े बाबा को ढूंढते रहे । कुछ दिन के बाद हमारे पड़ोस में श्वेत वस्त्रधारी बहनें आईं । आमंत्रण के बाद हम उनसे मिलने गए । उन्होंने हमें चित्रों द्वारा ज्ञान सुनाया । तो उसमें हमने उस बूढ़े बाबा को देखा जिसे साक्षात्कार में देखा था । हमें पता चला कि भगवान एक निराकार परमात्मा शिव हैं, जो बूढ़े बाबा अर्थात् ब्रह्मा के साकार माध्यम से ब्रह्मा-वत्सों को पढ़ाते हैं, आबू पर्वत पर उनका अवतरण हो चुका है।

आबू पर्वत की ओर—उस दिन से यही लगन थी कि शीघ्रातिशीघ्र आबू जाकर परमात्मा से मिलें । उन दिनों में दादी जानकी जी अहमदाबाद सेवाकेंद्र की संचालिका थीं । दादी जी हमें आबू ले चलीं, जब पांडव भवन में पहुंचे तो वहां का शान्त और पवित्र वातावरण मन को भाने लगा । दो घंटे के बाद हम कमरे में बाबा से मिलने गये । पहली मुलाकात में बाबा ने शक्तिशाली दृष्टि दी और कहा कि "मीठी बच्ची पहुंच गई हो न बाप के पास" । बाबा के इन स्नेह-भरे बोलों ने मेरे जीवन पर एक दिव्य प्रकाश डाला । मेरी बीमारी गायब हो गई और मैं रूहानी शक्ति पाने से नए जीवन का अनुभव कर रही थी।

बाबा ने मेरा नाम वेदान्ती रखा—दूसरे दिन सवेरे विशाल क्लास में सभा के बीच बाबा ने कहा—बच्ची ने लौकिक पढ़ाई में भी शास्त्र पढ़े, [illegible] का सार बाबा का ज्ञान मिल गया तो आज से बच्ची का नाम रंजन के बजाय वेदान्ती होगा ।

जब पहली बार मैंने बहनों को सफेद ड्रैस में देखा तो मैंने सोचा कि मैं ज्ञान में चलूंगी लेकिन सफेद ड्रैस नहीं पहनूंगी। मेरे संकल्प को बाबा ने जान लिया और मुझे सौगात में पूरा सफेद ड्रैस का सैट ही दिया और कहा कि बच्ची जाओ, अभी-अभी पहनकर आओ। बाबा को मैं ना नहीं कह सकी। जब ड्रैस पहनकर बाबा के पास गई तो बाबा ने कहा कि—बच्ची, तुम तो मम्मा जैसी लग रही हो। अब इसी ड्रैस को पहनकर अपने घर जाओ। उस अनुभव ने ही मुझे सच्ची सेवाधारी बना दिया। मुझे ऐसा लगा कि बाबा से मुझे वस्त्र नहीं लेकिन वरदान मिल गया।

उसके बाद जब मैं एम.ए. की परीक्षा देकर बाबा से मिलने गई तो बाबा ने कहा कि बच्ची क्या तुमने अपनी परीक्षा में सच्ची बात लिखी कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है लेकिन निराकार परमात्मा शिव है। वो कॉलेज वाले तो तुमको फ़ेल करेंगे लेकिन बाबा तुमको पास करते हैं। बच्ची, बाबा तुमको डिग्री दे रहा है। एक दिन आएगा कि वो लोग कहेंगे कि बच्ची ने तो सच्ची बात लिखी थी, लेकिन हमने नहीं समझा। बच्ची, निर्भय होकर सेवा करते आगे बढ़ती रहो।

मैं समर्पण हुई—सन् १९६७ में मेरे माता-पिता ने स्व-इच्छा से मुझे समर्पण होने के लिए स्वीकृति दी। तब से ही मैंने अहमदाबाद सेवाकेंद्र पर ईश्वरीय सेवार्थ रहना शुरू किया था। स्वयं के तथा अन्य आत्माओं के जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा में व्यस्त तथा मस्त रहने लगी।

दूसरी बार जब हम सभी लौकिक परिवार सहित बाबा से मिलने गए थे तो लौकिक पिता के आग्रह पर बाबा के साथ फोटो निकालना चाहा तो बाबा ने कहा बच्ची, क्या बाबा के साथ फोटो निकालना चाहते हो, लेकिन जिस बिंदु स्वरूप (शिव परमात्मा) बाप को याद करना है, उसका तो फोटो निकलेगा ही नहीं। जिसका फोटो निकलेगा, उस साकार ब्रह्मा को याद नहीं करना, समझा।

तीसरी बार मैं जब मधुबन में बाबा से मिली तो बाबा ने कहा कि बच्ची तुम मेरी फूल बच्ची हो। मीठी बच्ची, तुम बादल बनकर बरसोगी या ऐसे ही यहां से चली जाओगी। ज्ञान की बरसात अनेक आत्माओं पर करोगी न। एक बार खास बुलाकर मुझसे पूछे—कि बच्ची, तुम शास्त्र पढ़ी हुई हो, तुम बनारस जाकर विद्वानों को ज्ञान सुनाओ, उनकी सेवा करो। तब मैं छोटी थी इसलिए निर्णय नहीं कर सकी। फिर बाबा ने कहा, बच्ची कोई बात नहीं, जहां भी सेवा करना चाहो, करो।

मेरा ध्यान का पार्ट शुरू हुआ—बाबा की स्नेह-भरी दृष्टि ने मुझे ध्यान में जाने की सौगात दी। मैं कई बार ध्यान में जाती रही, सूक्ष्म वतन में संपूर्ण ब्रह्मा के माध्यम से निराकार

मीठे-मीठे बाबा के साथ दादी जानकी, वेदान्ती बहन परिवार सहित।